

॥ श्रीः ॥

श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदासजीविरचित

श्रीरामचरितमानस

[मूल-मञ्जला साइज]

(सचित्र)



गीताप्रेस, गोरखपुर

मुद्रक तथा प्रकाशक

मोतीलाल जालान

गीताप्रेस, गोरखपुर

नम्र निवेदन

गीताप्रेससे श्रीरामचरितमानसका एक सटीक एवं सचित्र संस्करण कुछ अन्य उपयोगी सामग्रियोंके साथ 'कल्याण' के विशेषाङ्कके रूपमें आजसे लगभग सत्ताईस वर्ष पूर्व निकला था। उसमें बहुत-सी न्यूनताएँ होनेपर भी मानसप्रेमी जनताने उसका कितना आदर किया, यह सब लोगोंको विदित ही है। कुछ वर्षोंके अंदर ही उसकी ९८, ६०० प्रतियाँ निकल चुकीं। मानसाङ्क निकालते समय यह विचार था—और उसे सम्पादकीय निवेदनमें व्यक्त भी कर दिया गया था—कि इसके बाद जल्दी ही मानसका एक मूल संस्करण मोटे अक्षरोंमें अलग निकाला जाय, जिसमें पाठभेद आदि दिये जायें तथा आवश्यक टिप्पणियाँ भी रहें और उसके बाद उसके आधारपर मूल तथा सटीक, छोटे-बड़े कई संस्करण निकाले जायें। परंतु इच्छा रहने-पर भी कई कारणोंसे वह संस्करण जल्दी नहीं निकल सका। पहले तो यह आशा थी कि भगवान्‌की कृपासे कदाचित् कहींसे गोस्वामीजीके हाथकी लिखी कोई पूरी ग्रामाणिक प्रति मिल जाय, जिससे शुद्ध-से-शुद्ध पाठ मानस-प्रेमियोंके पास पहुँचाया जा सके; परंतु जब यह आशा जल्दी पूरी होती नहीं देखी गयी, तब मानसाङ्कके पाठको ही एक बार फिरसे देखकर तथा मानसके कतिपय मर्मज्ञोंका परामर्श लेकर उसीमें आवश्यकतानुसार यत्र-तत्र कुछ संशोधन करके छपनेको दे दिया गया।

अभी वह संस्करण छप ही नहीं पाया था कि कई मित्रोंका यह अनुरोध हुआ कि नवीन संवत्सरारम्भके पहले ही श्रीरामचरितमानसका एक गुटका बहुत शीघ्र छापकर तैयार किया जाय, जिसमें नवरात्रमें होने-वाले मानसपारायणके लिये (जिसकी सूचना कई माससे 'कल्याण'में छपी जा रही थी) मानसप्रेमियोंको एक पाठोपयोगी छोटा एवं सज्जा संस्करण मिल जाय। इसलिये जो उतना बड़ा मानसाङ्क नहीं खरीद सकते, उनकी सुविधाके लिये वह गुटका छपा गया। जनताने उसका बहुत अधिक आदर किया। लगभग सत्ताईस वर्षोंमें उसकी बत्तीस लाख बीस हजार प्रतियाँ छप गयीं।

इसी बीचमें पाठभेदवाला मूल मोटे टाइपका संस्करण भी छपकर तैयार हो गया। परंतु उसमें मानस-व्याकरण, गणित और प्राचीन

प्रतियोंके अनेक पाठभेद रहनेसे तथा मोटे टाइप होनेके कारण उसका मूल्य अब रु० ३.७५ है। इसलिये सर्वसाधारणको उसे खरीदनेमें कठिनाई पड़ती थी। इधर गुटकाके टाइप बहुत छोटे होनेसे बहुत-से लोगोंको उसे पढ़नेमें असुविधा रहती है। इसलिये अनेक सज्जनोंने यह आग्रह किया कि एक ऐसा संस्करण निकाला जाय, जिसमें टाइप भी कुछ बड़े हों और दाम भी ठीक-ठीक हों। इसीलिये यह मझले साइजका मूल संस्करण आजसे चौबीस वर्ष पूर्व निकाला गया था जिसकी बारह आवृत्तियोंमें दो लाख इकतालीस हजार टाई सौ प्रतियाँ छप चुकी हैं। यह तेरहवाँ संस्करण मानसप्रेमी पाठकोंके सम्मुख प्रस्तुत है। अबतक कुल मिलाकर मानसकी ४८, ५३, १०० प्रतियाँ गीताप्रेससे छप चुकी हैं।

यों तो हमारा सारा ही प्रयास मूलोंसे भरा है। पूज्य गोस्वामीजीके हाथकी लिखी हुई कोई पूरी प्रामाणिक प्रति प्रयास करनेपर भी न मिल सकनेके कारण सर्वथा शुद्ध पाठका दावा तो हमलोग कर ही नहीं सकते; इसके अतिरिक्त अपनी समझसे पूरी सावधानी बरती जानेपर भी इसमें प्रमादवश प्रफ आदिकी भूलें अवश्य रह गयी होंगी। आशा है कृपालु पाठक हमारी कठिनाइयोंको समझकर इसके लिये हमें क्षमा करेंगे। पाठके सम्बन्धमें हमें इतना ही निवेदन करना है कि जो कुछ सामग्री हमें प्राप्त हो सकी, उसका हमलोगोंने अपनी समझसे ईमानदारीके साथ उपयोग किया है और यथाशक्य प्राचीन पाठकी रक्षा की है।

पाठके सम्बन्धमें हमें पूज्यपाद परमहंस श्रीअवधविहारीदासजी महाराज (नागाबाबा), पूज्य पं० श्रीविजयानन्दजी त्रिपाठी तथा पूज्य पं० श्रीजयरामदासजी 'दीन' रामायणीसे, जो तीनों ही महानुभाव साकेतवासी हो चुके हैं, बहुमूल्य परामर्श प्राप्त हुए। इसके लिये हम उनके हृदयसे कृतज्ञ हैं। पाठके निर्णयमें हमें 'मानसपीयूष'से तथा उसके सम्पादक महात्मा श्रीअंजनीनन्दनशरण शीतलासहायजीसे भी काफी सहायता मिली है, जिसके लिये हम उनके भी विशेष कृतज्ञ हैं।

अन्तमें हम सब लोगोंसे अपनी त्रुटियोंके लिये क्षमा माँगते हैं और भगवान्की वस्तु भगवान्को समर्पित करते हैं।

सं० २०१७ वि०]

श्रीरामचरितमानसकी संक्षिप्त

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
पारायण-विधि ७	अयोध्याकाण्ड	
नवाह्नपारायणके विश्रामस्थान	१०	मंगलाचरण २०३
मासपारायणके विश्रामस्थान	१०	राम-राज्याभिषेककी तैयारी	२०४
रामशलाका प्रश्नावली ११	श्रीसीता-राम-संवाद २३१
बालकाण्ड		श्रीलक्ष्मण-सुमित्रा-संवाद	२३७
मंगलाचरण १७	वन-गमन २४०
श्रीनामवन्दना ३०	केतवका प्रेम २५०
याज्ञवल्क्य-भरद्वाज-संवाद	४४	भरद्वाज-संवाद २५३
सतीका मोह ४६	श्रीराम-बाल्मीकि-संवाद	२६१
शिव-पार्वती-संवाद ७५	चित्रकूट-निवास २६५
नारदका अभिमान ८४	दशरथ-मरण २७५
भनु-शतरूपाका तप ९१	भरत-कौसल्या-संवाद २८०
भानुप्रतापकी कथा ९६	भरतका चित्रकूटके त्रिये	
राम-जन्म ११६	प्रस्थान २९०
त्रिभामित्रकी यज्ञरक्षा १२५	भरत-भरद्वाज-संवाद २९९
पुण्यवाटिका-निरीक्षण १३३	राम-भरत-मिलन ३१५
धनुष-भंग १५०	जनकजीका आगमन ३३१
श्रीसीता-राम-विवाह १७४	श्रीराम-भरत-संवाद ३४१

भरतजीकी विदाई ३५१	लंकाके लिये प्रस्थान ४३१
नन्दिग्राममें निवास ३५३	विभीषणकी शरणागति ४३७
अरण्यकाण्ड		समुद्रपर कोप ४४३
मंगलाचरण ३५७	लंकाकाण्ड	
जयन्तकी कुटिलता ३५८	मंगलाचरण ४४७
श्रीर्माता-अनसूया-मिलन ३६०	सेतुबन्ध ४४८
सुतीक्ष्णजीका प्रेम ३६३	अंगद-रावण-संवाद ४५८
पञ्चवटी-निवास ३६७	लक्ष्मण-मेघनाद-युद्ध ४७७
खर-दूषण-वध ३७६	श्रीरामकी प्रलापलीला ४८०
मारीच-प्रसंग ३७६	कुम्भकर्ण-वध ४८६
सीता-हरण ३७८	मेघनाद-वध ४९०
शवरीपर कृपा ३८३	राम-रावण-युद्ध ४९९
किष्किन्धाकाण्ड		रावण-वध ५०९
मंगलाचरण ३९३	सीताजीकी अग्नि-परीक्षा ५१४
श्रीराम-हनुमान्-भेंट ३९४	अवधके लिये प्रस्थान ५२१
वाल्मि-वध ३९९	उत्तरकाण्ड	
सीताजीकी खोजके लिये ४०६	मंगलाचरण ५२५
बंदरोंका प्रस्थान ४१०	भरत-हनुमान्-मिलन ५२६
हनुमान्-जाम्बवन्त-संवाद ४१०	भरत-मिलाप ५२९
सुन्दरकाण्ड		राम-राज्याभिषेक ५३३
मंगलाचरण ४१३	श्रीरामजीका प्रजाको उपदेश ५५१
लंकामें प्रवेश ४१६	गरुड-मुशुण्डि-संवाद ५६१
सीता-हनुमान्-संवाद ४२०	काकमुशुण्डि-लोमश-संवाद ५८९
लंकादहन ४२७	ज्ञान-भक्ति-निरूपण ५९३
श्रीराम-हनुमान्-संवाद ४२९	रामायणकी आरती ६०८

पारायण-विधि

श्रीरामचरितमानसका विधिपूर्वक पाठ करनेवाले महानुभावोंको पाठारम्भके पूर्व श्रीतुलसीदासजी, श्रीवाल्मीकिजी, श्रीशिवजी तथा श्रीहनुमान्जीका आवाहन-पूजन करनेके पश्चात् तीनों भाइयोंसहित श्रीसीतारामजीका आवाहन, षोडशोपचार-पूजन और ध्यान करना चाहिये । तदनन्तर पाठका आरम्भ करना चाहिये । सबके आवाहन, पूजन और ध्यानके मन्त्र क्रमशः नीचे लिखे जाते हैं—

अथ आवाहनमन्त्रः

तुलसीकनमस्तुभ्यमिहागच्छ शुचिव्रत । नैर्ऋत्य उपविश्येदं
पूजनं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ तुलसीदासाय नमः ॥ १ ॥ श्रीवाल्मीक
नमस्तुभ्यमिहागच्छ शुभप्रद । उत्तरपूर्वयोर्मध्ये तिष्ठ गृहीष्व
मेऽर्चनम् ॥ ॐ वाल्मीकाय नमः ॥ २ ॥ गौरीपते नमस्तुभ्यमिहा-
गच्छ महेश्वर । पूर्वदक्षिणयोर्मध्ये तिष्ठ पूजां गृहाण मे ॥ ॐ गौरी-
पतये नमः ॥ ३ ॥ श्रीलक्ष्मण नमस्तुभ्यमिहागच्छ सहप्रियः । याम्य-
भागे समातिष्ठ पूजनं संगृहाण मे ॥ ॐ श्रीसपत्नीकाय लक्ष्मणाय
नमः ॥ ४ ॥ श्रीशत्रुघ्न नमस्तुभ्यमिहागच्छ, सहप्रियः । पीठस्य
पश्चिमे भागे पूजनं स्वीकुरुष्व मे ॥ ॐ श्रीसपत्नीकाय शत्रुघ्नाय
नमः ॥ ५ ॥ श्रीभरत नमस्तुभ्यमिहागच्छ सहप्रियः । पीठ-
कस्योत्तरे भागे तिष्ठ पूजां गृहाण मे ॥ ॐ श्रीसपत्नीकाय भरताय
नमः ॥ ६ ॥ श्रीहनुमन्मस्तुभ्यमिहागच्छ कृपानिधे । पूर्वभागे
समातिष्ठ पूजनं स्वीकुरु प्रभो ॥ ॐ हनुमते नमः ॥ ७ ॥

अथ प्रधानपूजा च कर्तव्या विधिपूर्वकम् ।

पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा तु ध्यानं कुर्यात्परस्य च ॥ ८ ॥

रक्ताम्भोजदलाभिरामनयनं पीताम्बरालङ्कृतं

दयामाहं द्विभुजं प्रसन्नवदनं धीसीतया शोभितम् ।

कारुण्यामृतसागरं प्रियगणैर्ध्नादिभिर्भावितं
वन्दे विष्णुशिवादिसेव्यमनिशं भक्तेष्टसिद्धिप्रदम् ॥ ९ ॥

आगच्छ जानकीनाथ जानक्या सह राघव ।

गृहाण मम पूजां च वायुपुत्रादिर्युतः ॥ १० ॥

इत्यावाहनम्

सुवर्णरचितं राम दिव्यास्तरणशोभितम् ।

आसनं हि मया दत्तं गृहाण मणिचित्रितम् ॥ ११ ॥

इति षोडशोपचारैः पूजयेत्

ॐ अस्य श्रीमन्मानसरामायणश्रीरामचरितस्य श्रीशिव-
काकभुशुण्डियाज्ञवल्क्यगोस्वामितुलसीदासा ऋषयः श्रीसीता-
रामो देवता श्रीरामनाम वीजं भवरोगहरी भक्तिः शक्तिः मम
नियन्त्रिताशेषविघ्नतया श्रीसीतारामप्रीतिपूर्वकसकलमनोरथ-
सिद्धयर्थं पाठे विनियोगः ।

अथाचमनम्

श्रीसीतारामाय नमः । श्रीरामचन्द्राय नमः ।

श्रीरामभद्राय नमः । इति मन्त्रत्रितयेन आचमनं कुर्यात् ।
श्रीयुगलवीजमन्त्रेण प्राणायामं कुर्यात् ॥

अथ करन्यासः

जग मंगल गुनग्राम राम के । दानि मुकृति धन धरम धाम के ॥

अङ्गुष्ठाभ्यां नमः

राम राम कहि जे जमुहार्ही । तिन्हहि न पापपुंज समुहार्ही ॥

तर्जनीभ्यां नमः

राम सकल नामन्ह ते अधिका । होड नाथ अब खग गन वधिका ॥

मध्यमाभ्यां नमः

उमा दारु जोपित की नाई । सबहि नचावत रामु गोसाई ॥

अनामिकाभ्यां नमः

सन्मुख होइ जीव मोहि जबर्ही । जन्म कोटि अब नासहिं तबर्ही ॥

कनिष्ठिकाभ्यां नमः

मामभिरक्षय रघुकुलनायक । छत बर चाप रुचिर कर सायक ॥
करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

इति करन्यासः

अथ हृदयादिन्यासः

जग मंगल गुनग्राम राम के । इनि मुकुति धन धरम धाम के ॥

हृदयाय नमः ।

राम राम कहि जे जमुहारी । तिन्हहि न पापपुंज समुहारी ॥

शिरसे स्वाहा ।

राम सकल नामन्ह ते अधिका । होउ नाथ अघ खग गन बधिका ॥

शिखायै चपट् ।

उमा दाह जोपिते की नाई । सबहि नचावत रामु गोसाई ॥

कयचाय हुम् ।

सन्मुख होइ जीव मोहि जवहीं । जन्म कोटि अघ नासहि तवहीं ॥

नेत्राभ्यां धौचट् ।

मामभिरक्षय रघुकुलनायक । छत बर चाप रुचिर कर सायक ॥

अस्त्राय फट् ।

इति हृदयादिन्यासः

अथ ध्यानम्

मामवलोक्य पंकजलोचन । कृपा बिलोकनि सोच विमोचन ॥

नील तामरस स्वाम काम भरि । हृदय कंज मकरंद मधुप हरि ॥

जातुधान बरुथ बल भंजन । मुनि सजन रंजन अघ गंजन ॥

भूमुर ससि नव चंद्र बलाहक । असरन सरन दोन जन गाहक ॥

भुजबल विपुल भार महि खंडित । खर दृपन बिराध बध पंडित ॥

रावनारि सुखरूप भूषवर । जय दसरथ कुल कुमुद मुधाकर ॥

सुजस पुरान विदित निगमागम । गावत सुर मुनि संत समागम ॥

कारुणिक व्यलीक मद खंडन । सब विधि कुसल कोसला मंडन ॥

कलि मल भयन नाम ममताहन । तुलसिदास प्रभु पाहि प्रनत जन ॥

इति ध्यानम्

नवाह्नपारायणके विश्राम-स्थान

पहला विश्राम	पृष्ठ	छठा विश्राम
दूसरा "	८१	सातवाँ " ३८
तीसरा "	१३९	आठवाँ " ४५९
चौथा "	१९९	नवाँ " ५३३
पाँचवाँ "	२५७	 ६०७
	३१३		

मासपारायणके विश्राम-स्थान

पहला विश्राम	पृष्ठ	सोलहवाँ. विश्राम	पृष्ठ
दूसरा "	३३	सत्रहवाँ "	२५७
तीसरा "	४९	अठारहवाँ "	२६५
चौथा "	६५	उन्नीसवाँ "	२८५
पाँचवाँ "	८१	बीसवाँ "	३०३
छठा "	९६	इक्कीसवाँ "	३१३
सातवाँ "	१११	बाईसवाँ "	३५५
आठवाँ "	१२६	तेईसवाँ "	३९१
नवाँ "	१३९	चौबीसवाँ "	४११
दसवाँ "	१५४	पच्चीसवाँ "	४४५
ग्यारहवाँ "	१६९	छब्बीसवाँ "	४७४
बारहवाँ "	१८३	सत्ताईसवाँ "	५०५
तेरहवाँ "	२०१	अट्ठाईसवाँ "	५२३
चौदहवाँ "	२१६	उन्तीसवाँ "	५६१
पंद्रहवाँ "	२३१	तीसवाँ "	५९३
सोलहवाँ "	२४६		६०७

श्रीरामशलाका प्रश्नावली

मानसानुरागी महानुभावोंको श्रीरामशलाका प्रश्नावलीका विशेष परिचय देनेकी कोई आवश्यकता नहीं प्रतीत होती, उसकी महत्ता एवं उपयोगितासे प्रायः सभी मानसप्रेमी परिचित होंगे । अतः नीचे उसका स्वरूपमात्र अङ्कित करके उससे प्रश्नोत्तर निकालनेकी विधि तथा उसके उत्तर-फलोंका उल्लेख कर दिया जाता है । श्रीरामशलाका प्रश्नावलीका स्वरूप इस प्रकार है—

सु	प्र	उ	वि	हो	सु	ग	य	सु	नु	वि	घ	धि	इ	द
र	रु	फ	सि	सि	रं	व	है	म	ल	न	ल	य	न	अ
सु	सो	ग	सु	कु	म	स	ग	त	न	इं	ल	धा	व	नौ
त्व	र	न	कु	जो	म	रि	र	र	अ	की	हो	सं	रा	य
पु	सु	थ	सी	जे	इ	ग	भ	सं	क	रे	हो	स	मु	नि
त	र	त	र	म	इ	ह	य	ब	प	चि	स	य	स	तु
म	का	।	र	र	मा	मि	मी	म्हा	।	जा	ह	हो	।	जू
ता	रा	रे	री	ह	का	फ	खा	नि	ई	र	रा	पू	द	ल
नि	को	मि	गो	न	म	ज	य	ने	मनि	क	ज	प	स	ल
हि	स	म	स	रि	ग	द	न	प	म	खि	जि	मनि	त	ज
सि	सु	न	न	कौ	मि	ज	र	ग	धु	ख	मु	का	स	र
गु	क	म	अ	ध	नि	म	ल	।	न	य	ती	न	रि	भ
ना	पु	व	अ	टा	र	ल	का	ए	तु	र	न	नु	व	थ
सि	ह	सु	म्ह	रा	र	सु	दि	र	त	न	प	।	जा	।
र	मा	।	ला	धी	।	री	ज	ह	ही	पा	जू	इं	रा	रे

इस रामशलाका प्रश्नावलीके द्वारा जिस किसीको जब कभी अपने अभीष्ट प्रश्नका उत्तर प्राप्त करनेकी इच्छा हो तो सर्वप्रथम उस व्यक्तिको भगवान् श्रीरामचन्द्रजीका ध्यान करना चाहिये । तदनन्तर श्रद्धा-विश्वासपूर्वक मनसे अभीष्ट प्रश्नका चिन्तन करते हुए

प्रश्नावलीके मनचाहे कोष्ठकमें अँगुली या कोई शलाका रख देना चाहिये और उस कोष्ठकमें जो अक्षर हो उसे अलग किसी कोरे कागज या स्लेटपर लिख लेना चाहिये । प्रश्नावलीके कोष्ठकपर भी ऐसा कोई निशान लगा देना चाहिये जिससे न तो प्रश्नावली गंदी हो और न प्रश्नोत्तर प्राप्त होनेतक कोष्ठक भूल जाय । अब जिस कोष्ठकका अक्षर लिख लिया गया है उससे आगे बढ़ना चाहिये तथा उसके नवें कोष्ठकमें जो अक्षर पड़े उसे भी लिख लेना चाहिये । इस प्रकार प्रति नवें अक्षरके नवें अक्षरको क्रमसे लिखते जाना चाहिये और तबतक लिखते जाना चाहिये, जबतक उसी पहले कोष्ठकके अक्षरतक अँगुली अथवा शलाका न पहुँच जाय । पहले कोष्ठकका अक्षर जिस कोष्ठकके अक्षरसे नवाँ पड़ेगा, वहाँतक पहुँचते-पहुँचते एक चौपाई पूरी हो जायगी, जो प्रश्नकर्ताके अभीष्ट प्रश्नका उत्तर होगी । यहाँ इस बातका ध्यान रखना चाहिये कि किसी-किसी कोष्ठकमें केवल 'आ' की मात्रा (।) और किसी-किसी कोष्ठकमें दो-दो अक्षर हैं । अतः गिनते समय न तो मात्रावाले कोष्ठकको छोड़ देना चाहिये और न दो अक्षरोंवाले कोष्ठकको दो बार गिनना चाहिये । जहाँ मात्राका कोष्ठक आवे वहाँ पूर्वलिखित अक्षरके आगे मात्रा लिख लेना चाहिये और जहाँ दो अक्षरोंवाला कोष्ठक आवे वहाँ दोनों अक्षर एक साथ लिख लेना चाहिये ।

अब उदाहरणके तौरपर इस रामशलाका प्रश्नावलीसे किसी प्रश्नके उत्तरमें एक चौपाई निकाल दी जाती है । पाठक ध्यानसे देखें । किसीने भगवान् श्रीरामचन्द्रजीका ध्यान और अपने प्रश्नका

चिन्तन करते हुए यदि प्रश्नावलीके * इस चिह्नसे संयुक्त 'म' वाले कोष्ठकमें अँगुली या शलका रक्खा और वह ऊपर बताये क्रमके अनुसार अक्षरोंको गिन-गिनकर लिखता गया तो उत्तरस्वरूप यह चौपाई बन जायगी—

हो इ ई सो ई जो रा म* र चि रा खा ।

को क रि त र क ब दा व हिं सा खा ॥

यह चौपाई वालकाण्डान्तर्गत शिव और पार्वतीके संवादमें है । प्रश्नकर्ताको इस उत्तरस्वरूप चौपाईसे यह आशय निकालना चाहिये कि कार्य होनेमें सन्देह है, अतः उसे भगवान्पर छोड़ देना श्रेयस्कर है ।

इस चौपाईके अतिरिक्त श्रीरामशलका प्रश्नावलीसे और भी जितनी चौपाइयाँ बनती हैं, उन सबका स्थान और फलसहित उल्लेख नीचे किया जाता है ।

१—सुन्दु सिय सत्य भसीस हमारी । पूजिहि मन कामना तुम्हारी ॥

स्थान—यह चौपाई वालकाण्डमें श्रीसीताजीके गौरीपूजनके प्रसङ्गमें

है । गौरीजीने श्रीसीताजीको आशीर्वाद दिया है ।

फल—प्रश्नकर्ताका प्रश्न उत्तम है, कार्य सिद्ध होगा ।

२—प्रविस्ति नगर कीजे सब काजा । हृदय राखि फोसलपुर राजा ॥

स्थान—यह चौपाई सुन्दरकाण्डमें हनुमान्जीके लंकामें प्रवेश करनेके

समयकी है ।

फल—भगवान्का स्मरण करके कार्यारम्भ करो, सफलता मिलेगी ।

३—उघरें भंत न होइ निबाह । कलनेमि जिमि रावन राह ॥

स्थान—यह चौपाई वालकाण्डके आरम्भमें सत्संग-वर्णनके प्रसङ्गमें है ।

फल—इस कार्यमें भलाई नहीं है । कार्यकी सफलतामें सन्देह है ।

४-विधि बस सुजन कुसंगत परहीं । फनि मनि सम निज गुन अनुसरहीं ।

स्थान—यह चौपाई भी बालकाण्डके आरम्भमें ही सत्सङ्गवर्णन प्रसङ्गकी है ।

फल—खोटे मनुष्योंका सङ्ग छोड़ दो । कार्य पूर्ण होनेमें संदेह है ।

५-सुद मंगळमय संत समाजू । जिमि जग जंगम तीरथ राजू ॥

स्थान—यह चौपाई बालकाण्डमें संतसमाजरूपी तीर्थके वर्णनमें है ।

फल—प्रश्न उत्तम है, कार्य सिद्ध होगा ।

६-गरल सुधा रिपु करय मितार्ई । गोपद सिंधु अनल सितलाई ॥

स्थान—यह चौपाई श्रीहनुमान्जीके लंकामें प्रवेश करनेके समयकी है ।

फल—प्रश्न बहुत श्रेष्ठ है । कार्य सफल होगा ।

७-बरुन कुबेर सुरेस समीरा । रन सनमुख धरि काह न धीरा ॥

स्थान—यह चौपाई लंकाकाण्डमें रावणकी मृत्युके पश्चात् मन्दोदरीके विलापके प्रसङ्गमें है ।

फल—कार्य पूर्ण होनेमें सन्देह है ।

८-सुफल मनोरथ होडुँ तुम्हारे । रामु लखनु सुनि भए सुखारे ॥

स्थान—यह चौपाई बालकाण्डमें पुष्पवाटिकासे पुष्प लानेपर विश्वामित्र-जीका आशीर्वाद है ।

फल—प्रश्न बहुत उत्तम है । कार्य सिद्ध होगा ।

इस प्रकार रामशलाका प्रश्नावलीसे कुल नौ चौपाइयाँ बनती जिनमें सभी प्रकारके प्रश्नोंके उत्तराशय संनिहित हैं ।

॥ श्रीरामाय नमः ॥

श्रीरामचरितमानस

बालकाण्ड



गीताप्रेस, गोरखपुर

मायामुक्त नारदजी



तव मुनि-अति सभित हरि चरना ।
गहे पाहि प्रनतारति हरना ॥

श्रीरामचरितमानस

प्रथम सोपान

(बालकाण्ड)

श्लोक

चर्णानामर्थसंधानां रसानां छन्दसामपि ।
 मङ्गलानां च कर्त्तारौ वन्दे वाणीविनायकौ ॥ १ ॥
 भवानीशङ्करौ वन्दे अद्वाविश्वासरूपिणौ ।
 याम्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तःस्थमीश्वरम् ॥ २ ॥
 चन्दे बोधमयं नित्यं गुरुं शङ्कररूपिणम् ।
 यमाश्रितो हि वक्रोऽपि चन्द्रः सर्वत्र चन्द्यते ॥ ३ ॥
 सीतारामगुणग्रामपुण्यारण्यविहारिणौ ।
 चन्दे विशुद्धविज्ञानौ कवीश्वरकपीश्वरौ ॥ ४ ॥
 उद्भवस्थितिसंहारकारिणीं क्लेशहारिणीम् ।
 सर्वश्रेयस्करिं सीतां नतोऽहं रामवल्लभाम् ॥ ५ ॥
 यन्मायावशवर्ति विश्वमखिलं ब्रह्मादिदेवासुरा
 यत्सच्चादमृषैव भाति सकलं रज्जौ यथाहेर्षमः ।
 यत्पादप्लवमेकमेव हि भवाम्भोधेस्तितीर्षावतां
 चन्देऽहं तमशेषकारणपरं रामाख्यमीशं हस्मि ॥ ६ ॥

नानापुराणनिगमागमसम्मतं यद्
रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोऽपि ।

स्वान्तःसुखाय तुलसी रघुनाथगाथा-

भाषानिवन्धमतिमञ्जुलमातनोति ॥ ७ ॥

सो०—जो सुमिरत सिधि होइ गन नायक करिवर बदन ।

करउ अनुग्रह सोइ बुद्धि रासि सुभ गुन सदन ॥ १ ॥

मूक होइ वाचाल पंगु चढ़इ गिरिवर गहन ।

जासु कृपाँ सो दयाल द्रवउ सकल कलि मल दहन ॥ २ ॥

नील सरोरुह स्याम तरुन अरुन वारिज नयन ।

करउ सो मम उर घाम सदा छीरसागर सयन ॥ ३ ॥

कुंद इंदु सम देह उमा रमन करुना अयन ।

जाहि दीन पर नेह करउ कृपा मर्दन मयन ॥ ४ ॥

बंदउँ गुरु पद कंज कृपा सिंधु नररूप हरि ।

महामोह तम पुंज जासु बचन रवि कर निकर ॥ ५ ॥

बंदउँ गुरु पद पदुम परागा । सुरुचि सुवास सरस अनुरागा ॥

अमिअ मूरिमय चूरन चारू । समन सकल भव रुज परिवारू ॥

सुकृति संभु तन विमल विभूती । मंजुल मंगल मोद प्रसूती ॥

जन मन मंजु मुकुर मल हरनी । किएँ तिलक गुन गन बस करनी ॥

श्रीगुर पद नख मनि गन जोती । सुमिरत दिव्य दृष्टि हियँ होती ॥

दलन मोह तम सो सप्रकास । बड़े भाग उर आवइ जास ॥

उघरहिँ विमल विलोचन ही के । मिटहिँ दोष दुख भव रजनी के ॥

सुझहिँ राम चरित मनि मानिक । गुपुत प्रगट जहँ जो जेहि खानिक

दो०—जथा सुअंजन अंजि दृग साधक सिद्ध मुजान ।

कौतुक देखत सैल बन मूतल मूरि निधान ॥ १ ॥

गुरु पद रज मृदु मंजुल अंजन । नयन अमिअ दृग दोष विभंजन ॥
 तेहिं करि विमल विवेक विलोचन । वरनउँ राम चरित भव मोचन ॥
 वंदउँ प्रथम महीसुर चरना । मोह जनित संसय सब हरना ॥
 सुजन समाज सकल गुन खानी । करउँ प्रनाम मप्रेम सुवानी ॥
 साधु चरित सुभ चरित कपासू । निरस विसद गुनमय फल जासू ॥
 जो सहि दुख परछिद्र दुरावा । वंदनीय जेहिं जग जस पावा ॥
 मुद मंगलमय संत समाजू । जो जग जंगम तीरथराजू ॥
 राम भक्ति जहँ सुरसरि धारा । सरसइ ब्रह्म विचार प्रचारा ॥
 विधि निपेधमय कलि मल हरनी । करम कथा रविनंदनि वरनी ॥
 हरि हर कथा विराजति बेनी । सुनत सकल मुद मंगल देनी ॥
 घडु विस्वास अचल निज धरमा । तीरथराज समाज सुकरमा ॥
 सबहि सुलभ सब दिन सब देसा । सेवत सादर समन कलेसा ॥
 अकथ अलौकिक तीरथराऊ । देइ सद्य फल प्रगट प्रभाऊ ॥

दो०—सुनि समुझहिं जन मुदित मन मज्जहि अति अनुराग ।

लहहि चारि फल अछत तनु साधु समाज प्रयाग ॥ २ ॥

मजन फल पेरिअ ततकाला । काक होहिं पिक वकड मराला ॥
 सुनि आचरज करै जनि कोई । सतसंगति माहिमा नहिं गोई ॥
 घालमीक नारद घटजोनी । निज निज मुखनि कही निज होनी ॥
 जलचर थलचर नभचर नाना । जे जइ चेतन जीव जहाना ॥
 मति कीरति गति भ्रति भलाई । जव जेहिं जतन जहाँ जेहिं पाई ॥

सो जानव सतसंग प्रभाऊ। लोकहुँ वेद न आन उपाऊ ॥
 विनु सतसंग विवेक न होई। राम कृपा विनु सुलभ न सोई ॥
 सतसंगत मुद मंगल मूला। सोइ फल सिधिसव साधन फूला ॥
 सठ सुधरहिं सतसंगति पाई। पारस परस कुधात सुहाई ॥
 विधि बस सुजन कुसंगत परहीं। फनि मनि सम निज गुन अनुसरहीं ॥
 विधि हरि हर कवि कोविद बानी। कहत साधु महिमा सकुचानी ॥
 सो मो सन कहि जात न कैसैं। साक बनिक मनि गुन गन जैसैं ॥

दो०—बंदउँ संत समान चित हित अनहित नहिं कोइ ।

अंजलि गत सुभ सुमन जिमि सम सुगंध कर दोइ ॥ ३ (क) ॥

संत सरल चित जगत हित जानि सुभाउ सनेहु ।

बालविनय सुनि करि कृपा राम चरन रति देहु ॥ ३ (ख) ॥

बहुरि बंदि खल गन सतिभाएँ। जे विनु काज दाहिनेहु बाएँ ॥
 पर हित हानि लाभ जिन्ह करैं। उजरैं हरष विपाद बसेरैं ॥
 हरि हर जस राकेस राहु से। पर अकाज भट सहसबाहु से ॥
 जे पर दोष लखहिं सहसाखी। पर हित घृत जिन्ह के मन माखी ॥
 तेज कृसानु रोष महिपेसा। अघ अवगुन धन धनी धनेसा ॥
 उदय केत सम हित सवही के। कुंभकरन सम सोवत नीके ॥
 पर अकाजु लागि तनु परिहरहीं। जिमि हिम उपल कृपी दलि गरहीं ॥
 बंदउँ खल जस सेष सरोपा। सहस बदन बरनइ पर दोषा ॥
 पुनि प्रनवउँ पृथुराज समाना। पर अघ सुनइ सहस दस काना ॥
 बहुरि सक्र सम विनवउँ तेही। संतत सुरानीक हित जेही ॥
 वचन बज्र जेहि सदा पिआरा। सहस नयन पर दोष निहारा ॥

दो०—उदासीन अरि मीत हित सुनत जरहि खल रीति ।

जानि पानि जुग जेरि जन विनती करइ मप्रोति ॥ ४ ॥

मैं अपनी दिसि कीन्ह निहोरा । तिन्ह निज ओर न लाउव भोरा ।
 धायस पलिअहि अति अनुरागा । होहि निरामिप कवहुँ कि कागा ।
 बंदउँ संत असजन चरना । दुखप्रद उभय बीच कछु वरना ॥
 विछुरत एक ग्रान हरि लेहीं । मिलत एक दुख दारुन देहीं ॥
 उपजहि एक संग जग मेहीं । जलज जाँक जिमि गुन विलगाहीं
 सुधा सुरा सम साधु असाधु । जनक एक जग जलधि अगाधु ॥
 भल अनभल निज निज करतृती । लहत सुजस अपलोक विभृती ॥
 सुधा सुधाकर सुरसरि साधु । गरल अनल कलिमल सरि व्याधु
 गुन अवगुन जानत सब कोई । जो जेहि भाव नीक तेहि सोई ॥

दो०—भलो भलाइहि पै लहइ लहइ निचाइहि नीचु ।

सुधा सराहिअ अमरतौं गरल सराहिअ मीचु ॥ ५ ॥

खल अघ अगुन साधु गुन गाहा । उभय अपार उदधि अंगगाहा ॥
 तेहि तँ कछु गुन दोष बखाने । संग्रह त्याग न विनु पहिचाने ॥
 भलेउ पोच सब विधि उपजाए । गनि गुन दोष वेद विलगाए ॥
 कहहि वेद इतिहास पुराना । विधि ग्रपंचु गुन अवगुन साना ॥
 दुख सुख पाप पुन्य दिन राती । साधु असाधु सुजाति कुजाती ॥
 दानव देव ऊँच अरु नीच । अमिअ सुजीवनु माहुरु मीचू ॥
 माया ब्रह्म जीव जगदीसा । लच्छि अलच्छि रंक अघनीसा ॥
 कासी मग सुरसरि क्रमनासा । मरु मारव महिदेव गवासा ॥
 सरग नरक अनुराग विरागा । निगमागम गुन दोष विभागा ॥

दो०—जड़ चेतन गुन दोषमय विस्व कोन्ह करतार ।

संत हंस गुन गहहिं पय परिहरि वारि विकार ॥ ६ ॥

अस विवेक जव देइ विधाता । तब तजि दोष गुनहिं मनु राता ॥
 काल सुभाउ करम वरिआई । भलेउ प्रकृति वस चुकइ भलाई ॥
 सो सुधारि हरिजन जिमि लेहीं । दलि दुख दोष विमल जसु देहीं ॥
 खलउ करहिं भल पाइ सुसंगू । मिटइ न मलिन सुभाउ अभंगू ॥
 लखि सुवेष जग वंचक जेऊ । वेष प्रताप पूजिअहिं तेऊ ॥
 उघरहिं अंत न होइ निवाह । कालनेमि जिमि रावन राहू ॥
 किएहुँ कुवेषु साधु सनमानू । जिमि जग जामवंत हनुमानू ॥
 हानि कुसंग सुसंगति लाहू । लोकहुँ वेद विदित सब काहू ॥
 गगन चढ़इ रज पवन प्रसंगा । कीचहिं मिलइ नीच जल संग्गा ॥
 साधु असाधु सदन सुक सारीं । सुमिरहिं राम देहिं गनि गारीं ॥
 धूम कुसंगति कारिख होई । लिखिअ पुरान मंजु मसि सोई ॥
 सोइ जल अनल अनिल संघाता । होइ जलद जग जीवन दाता ॥
 दो०—ग्रह भेषज जल पवन पट पाइ कुजोग सुजोग ।

होहिं कुवस्तु सुवस्तु जग लखहिं सुलच्छन लोग ॥ ७ (क) ॥

सम प्रकास तम पाख दुहुँ नाम भेद विधि कोन्ह ।

ससि सोपक पोपक समुझि जग जस अपजस दीन्ह ॥ ७ (ख) ॥

जड़ चेतन जग जीव जत सकल राममय जानि ।

वंदउँ सब के पद कमल सदा जोरि जुग पानि ॥ ७ (ग) ॥

देव दनुज नर नाग खग प्रेत पितर गंधर्व ।

वंदउँ किंनर रजनिचर कृपा करहु अव सर्व ॥ ७ (घ) ॥

आकर चारि लाख चौरासी। जाति जीव जल थल नभ वासी॥
 सीय राममय सब जग जानीं। करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी॥
 जानि कृपाकर किंकर मोह। सब मिलि करहु छाड़ि छल छोह॥
 निज बुधि बल भरोस मोहि नाहीं। तार्ते विनय करउँ सब पाहीं॥
 करन चहउँ रघुपति गुन गाहा। लघु मति मोरि चरित अग्रगाहा॥
 सुख न एकउ अंग उपाऊ। मन मति रंक मनोरथ राऊ॥
 मति अति नीच ऊँचि रुचि आछी। चहिअ अमिअ जग जुरइ न छाछी
 छमिहहिं सजन मोरि ढिठाई। सुनिहहिं बालबचन मन लाई॥
 जाँ बालक कह तोतरि चाता। सुनहिं मुदित मन पितु अरु माता
 हँसिहहिं कूर कुटिल कुविचारी। जे पर दूपन भूपनधारी॥
 निज कवित्त केहि लाग न नीका। सरस होउ अथवा अति फीका॥
 जे पर भनिति सुनत हरपाहीं। ते घर पुरुष बहुत जग नाहीं॥
 जग बहु नर सर सरिसम भाई। जे निज बाढ़ि चढ़हिं जल पाई॥
 सजन सकृत् सिंधु सम कोई। देखि पूर विधु बाढ़इ जोई॥
 दो०—भाग छोट अभिलापु बड़ करउँ एक विस्वास।

पैहहिं सुख सुनि सुजन सय खल करिहहिं उपहास ॥ ८ ॥

खल परिहास होइ हित मोरा। काक कहहिं कलकंठ कठोरा॥
 हंसहि बक दादुर चातकही। हँसहिं मलिन खल विमल बतकही
 कवित रसिक न राम पद नेह। तिन्ह कहँ सुखद हास रस एह॥
 भाषा भनिति भोरि मति मोरी। हँसिबे जोग हँसैं नहिं खोरी॥
 प्रभु पद प्रीति न सामुझि नीकी। तिन्हहि कथा सुनि लागिहि पूरि

हरि हर पद रति मति न कुतरकी । तिन्ह कहँ मधुर कथा रघुवर की ॥
 राम भगति भूपित जियँ जानी । सुनिहहिँ सुजन सराहि सुवानी ॥
 कवि न होउँ नहिँ वचन प्रवीनू । सकल कलु सब विद्या हीनू ॥
 आखर अरथ अलंकृति नाना । छंद प्रबंध अनेक विधाना ॥
 भाव भेद रस भेद अपारा । कवित दोष गुन विविध प्रकारा ॥
 कवित विवेक एक नहिँ मोरे । सत्य कहउँ लिखि कागद कोरे ॥

दो०—भनिति मोरि सब गुन रहित विस्व विदित गुन एक ।

सो विचारि सुनिहहिँ सुमति जिन्ह के विमल विवेक ॥ ९ ॥

एहि महुँ रघुपति नाम उदारा । अति पावन पुरान श्रुति सारा ॥
 मंगल भवन अमंगल हारी । उमा सहित जेहि जपत पुरारी ॥
 भनिति विचित्र सुकवि कृत जोऊ । राम नाम विनु सोह न सोऊ ॥
 विधुवदनी सब भाँति सँवारी । सोह न वसन बिना बर नारी ॥
 सब गुन रहित कुकवि कृत बानी । राम नाम जस अंकित जानी ॥
 सादर कहहिँ सुनहिँ बुध ताही । मधुकर सरिस संत गुनग्राही ॥
 जदपि कवित रस एकउ नाहीं । राम प्रताप प्रगट एहि माहीं ॥
 सोइ भरोस मोरें मन आवा । केहिँ न सुसंग बड़प्पनु पावा ॥
 धूमउ तजइ सहज करुआई । अगरु प्रसंग सुगंध वसाई ॥
 भनिति भदेस वस्तु भलि वरनी । राम कथा जग मंगल करनी ॥

छं०—मंगल करनि कलि मल हरनि तुलसी कथा रघुनाथ की ।

गति कूर कविता सरित की ज्यो सरित पावन पाथ की ॥

प्रभु सुजस संगति भनिति भलि होइहिँ सुजन मन भावनी ।

भव अंग भूति मसान की सुभिरत सुहावनि पावनी ॥

दो०—प्रिय लागिहि अति सचहि मम भनिति राम जस संग ।

दारु विचारु कि करइ कोउ बंदिअ मलय प्रसंग ॥१०(क)॥

स्याम सुरभि ष्य विसद अति गुनद करहि सब पान ।

गिरा ग्राम्य सिय राम जस गावहि सुनिहि सुजान ॥१०(ख)॥

मनिमानिक मुकुता छवि जैसी । अहि गिरि गज सिर सोह न तैसी

रूप किरीट तरुनी तनु पाई । लहहि सकल सोभा अधिकारि ॥

तैसेहि सुकवि कवित बुध कहहीं । उपजहि अनत अनत छवि लहहीं

भगति हेतु विधि भवन विहारि । सुमिरत सारद आवति धारि ॥

राम चरित सर विनु अन्हवाएँ । सो श्रम जाइ न कोटि उपाएँ ॥

कवि कौविद अस हृदयँ विचारी । गावहि हरि जस कलि मल हारी ॥

कीन्हें प्राकृत जन गुन गाना । सिर घुनि गिरा लगत पछिताना

हृदय सिंधु मति सीप समाना । स्वाति सारदा कहहि सुजाना ॥

जौं वरपइ वर वारि विचारु । होहि कवित मुकुतामनि चारु ॥

दो०—जुगुति वेधि पुनि पोंहिअहि राम चरित वर ताग ।

पहिरहि सज्जन विमल उर सोभा अति अनुराग ॥११॥

जै जनमे कलिकाल कराला । करतव्य वायस वेप मराला ॥

चलत कुपंथ वेद मग छाँड़ि । कपट कलेवर कलि मल भाँड़ि ॥

प्रंचक भगत कहाइ राम के । किंकर कंचन कोह काम के ॥

तिन्ह महुँ प्रथम रेख जग मोरी । धोंग धरमध्वज बंधक धोरी ॥

जौं अपने अवगुन सब कहँऊँ । वाढ़इ कथा पार नहिँ लहँऊँ ॥

जाते में अति अल्प बखाने । थोरें महुँ जानिहिँ सयाने ॥

प्रमुझि विविधि विधि विनती मोरी । कोउ न कथा सुनि देइहि खोरी

हरि हर पद रति मति न कुतरकी । तिन्ह कहँ मधुर कथा रघुवर की ॥
 राम भगति भूपित जियँ जानी । सुनिहहिँ सुजन सराहि सुवानी ॥
 कवि न होउँ नहिँ वचन प्रवीनू । सकल कला सव विद्या हीनू ॥
 आखर अरथ अलंकृति नाना । छंद प्रबंध अनेक विधाना ॥
 भाव भेद रस भेद अपारा । कवित दोष गुन विविध प्रकारा ॥
 कवित विवेक एक नहिँ मो । सत्य कहउँ लिखि कागद कोरे ॥

दो०—भनिति मोरि सव गुन रहित विस्व विदित गुन एक ।

सो विचारि सुनिहहिँ सुमति जिन्ह केँ विमल विवेक ॥ ९ ॥

एहि महँ रघुपति नाम उदारा । अति पावन पुरान श्रुति सारा ॥
 मंगल भवन असंगल हारी । उमा सहित जेहि जपत पुरारी ॥
 भनिति विचित्र सुकवि कृत जोऊ । राम नाम विनु सोह न सोऊ ॥
 विधुवदनी सव भाँति सँवारी । सोह न वसन बिना बर नारी ॥
 सव गुन रहित कुकवि कृत बानी । राम नाम जस अंकित जानी ॥
 सादर कहहिँ सुनिहिँ बुध ताही । मधुकर सरिस संत गुनग्राही ॥
 जदपि कवित रस एकउ नाहीं । राम प्रताप प्रगट एहि साहीं ॥
 सोइ भरोस मोरें मन आवा । केहिँ न सुसंग बड़प्पनु पावा ॥
 धूमउ तजइ सहज करुआई । अगरु प्रसंग सुगंध वसाई ॥
 भनिति भदेस वस्तु भलि वरनी । राम कथा जग मंगल करनी ॥

छं०—मंगल करनि कलि मल हरनि तुलसी कथा रघुनाथ की ।

गति कूर कविता सरित की ज्यों सरित पावन पाथ की ॥

प्रभु सुजस संगति भनिति भलि होइहि सुजन मन भावनी ।

भव अंग भूति मसान की सुमिरत सुहावनि पावनी ॥

दो०—प्रिय लागिहि अति सवहि मम भनिति राम जस संग ।

दारु विचारु कि करइ कोउ बंदिअ मलय प्रसंग ॥१०(क)॥

स्याम सुरभि ष्य विसद अति गुनद करहिं सव पान ।

गिरा ग्राम्य सिय राम जस गावहिं सुनहिं सुजान ॥१०(ख)॥

मनि मानिक मुकुता छवि जैसी । अहि गिरि गज सिर सोह न तैसी
 नृप किरीट तरुनी तनु पाई । लहहिं सकल सोभा अधिकाई ॥
 तैसेहिं सुकवि कवित युध कहहीं । उपजहिं अनत अनत छवि लहहीं
 भगति हेतु विधि भवन विहाई । सुमिरत सारद आवति धाई ॥
 राम चरित सर विनु अन्हवाएँ । सो श्रम जाइ न कोटि उपाएँ ॥
 कवि कोविद अस हृदयँ विचारी । गावहिं हरि जस कलि मल हारी ॥
 कीन्हें प्राकृत जन गुन गाना । सिर धुनि गिरा लगत पछिताना
 हृदय सिंधु मति सीप समाना । स्वाति सारदा कहहिं सुजाना ॥
 जाँ वरपइ घर बारि विचारु । होहिं कवित मुकुतामनि चारु ॥

दो०—जुगुति बेधि पुनि पोहिअहि राम चरित वर ताग ।

पहिरहिं सज्जन विमल उर सोभा अति अनुराग ॥११॥

जे जनमे कलिकाल कराला । करतव वायस बेप मराला ॥
 चलत कुपंथ वेद मग छाँड़ि । कपट कलेवर कलि मल भाँड़ि ॥
 बंधक भगत कहाइ राम के । किंकर कंचन कोह काम के ॥
 तिन्ह महुँ प्रथम रेख जग मोरी । थोंग धरमध्वज बंधक धोरी ॥
 जाँ अपने अवगुन सव कहऊँ । वाढ़इ कथा पार नहिं लहऊँ ॥
 ताते रँ अति अल्प बखाने । थोरे महुँ जानिहहिं सयाने ॥
 समुझि विविधि विधि बिनती मोरी । कोउ न कथा सुनि देइहि खोरी

एतेहु पर करिहहिं जे असंका । मोहि ते अधिक ते जड़ मति रंका ॥
 कवि न होउं नहिं चतुर कहावउं । मति अनुरूप राम गुन गावउं ॥
 कहँ रघुपति के चरित अपारा । कहँ मति मोरि निरत संसारा ॥
 जेहिं मारुत गिरि मेरु उडाहीं । कहहु तूल केहि लेखे माहीं ॥
 समुझत अमित राम प्रभुताई । करत कथा मन अति कदराई ॥

दो०—सारद सेत महेश विधि आगम निगम पुरान ।

नेति नेति कहि जासु गुन करहिं निरंतर गानं ॥ १२ ॥

सब जानत प्रभु प्रभुता सोई । तदपि कहें विनु रहा न कोई ॥
 तहाँ वेद अस कारन राखा । भजन प्रभाउ भाँति बहु भाषा ॥
 एक अनीह अरूप अनामा । अज सच्चिदानंद पर धामा ॥
 व्यापक विश्वरूप भगवाना । तेहिं धरि देह चरित कृत नाना ॥
 सो केवल भगतन हित लागी । परम कृपाल प्रनत अनुरागी ॥
 जेहि जन पर समता अति छोहू । जेहिं करुना करि कीन्ह न कोहू ॥
 गई बहोर गरीब नेवाजू । सरल सबल साहिव रघुराजू ॥
 बुध वरनहिं हरि जस अस जानी । करहिं पुनीत सुफल निज बानी ॥
 तेहिं बल मैं रघुपति गुन गाथा । कहिहउं नाइ राम पद माथा ॥
 मुनिन्ह प्रथम हरि कीरति गई । तेहिं मग चलत सुगम मोहि भाई ॥

दो०—अति अपार जे सरित वर जाँ नृप सेतु कराहिं ।

चढ़ि पिपीलिकउ परम लघु विनु ध्रम पारहि जाहि ॥ १३ ॥

एहि प्रकार बल मनहि देखवाई । करिहउं रघुपति कथा सुहाई ॥
 व्यास आदि कवि पुंगव नाना । जिन्ह सादर हरि सुजस बखाना ॥
 चरन कमल बंदउं तिन्ह केरे । पुरवहुँ सकल मनोरथ मेरे ॥

कालि के कविन्ह करउँ परनामा । जिन्ह बरने रघुपति गुन ग्रामा ॥
 जे प्राकृत कवि परम सयाने । भाषाँ जिन्ह हरि चरित बखाने ॥
 भए जे अहहिं जे होइहहिं आगें । प्रनवउँ सबहि कपट सब त्यागें ॥
 होहु प्रसन्न देहु बरदानू । साधु समाज भनिति सनमानू ॥
 जो प्रबंध बुध नहिं आदरहीं । सो थम वादि बाल कवि करहीं ॥
 कीरति भनिति भूति भलि सोई । सुरसरि सम सब कहँ हित होई ॥
 राम मुकीरति भनिति भदेसा । असमंजस अस मोहि अँदेसा ॥
 तुम्हरी कृपाँ मुलभ सोउ मोरे । सिअनि मुहावनि टाट पटोरे ॥
 दो०—सरल कवित कीरति विमल सोइ आदरहिं सुजान ।

सहज बर विसराइ रिपु जो सुनि करहि बखान ॥१४(क)॥

सो न होइ विनु विमलमति मोहि मति बल अति धोर ।

करहु कृपा हरि जस कहउँ पुनि पुनि करउँ निहोर ॥१४(ख)॥

कवि कौघिद रघुवर चरित मानस मंजु मराल ।

बालयिनय सुनि सुरुचि लखि सो पर होहु कृपाल ॥१४(ग)॥

सो०—बंदउँ मुनि पद कंजु रामायन जेहि निरमयउ ।

सखर सुकोमल मंजु दोष रहित दूपन सहित ॥१४(घ)॥

बंदउँ चारिउ वेद भव चारिधि घोहित सरिस ।

जिन्हहि न सपनेहुँ खेद बरनत रघुवर बिसद जसु ॥१४(ङ)॥

बंदउँ विधि पद रेनु भव सागर जेहि कौन्ह जहँ ।

संत सुवा सति धेनु प्रगटे खल विष चारुनी ॥१४(च)॥

दो०—विबुध विप्र बुध ग्रह बरन बंदि कहउँ कर जोरि ।

होइ प्रसन्न पुरवहु सकल मंजु मनोरथ मोरि ॥१४(छ)॥

पुनि बंदउँ सारद सुरसरिता । जुगल पुनीत

मज्जन पान पाप हर एका। कहत सुनत एक हर अत्रिवेका ॥
 गुर पितु मातु महेस भवानी। प्रनवउँ दीनबंधु दिन दानी ॥
 सेवक स्वामि सखा सिय पी के। हित निरुपधि सब विधि तुलसी के।
 कलि विलोकि जग हित हर गिरिजा। सावर मंत्र जाल जिन्ह सिरिजा।
 अनमिल आखर अरथ न जापू। प्रगट ग्रभाउ महेस प्रतापू ॥
 सो उमेस मोहि पर अनुकूला। करिहि कथा मुद मंगल मूला ॥
 सुमिरि सिवा सिव पाइ पसाऊ। वरनउँ राम चरित चित चाऊ ॥
 भनिति मोरि सिव कृपाँ विभाती। ससि समाज मिलि मनहुँ सुराती
 जे एहि कथहि सनेह समेता। कहिहहि सुनिहहि समुझि सचेता
 होइहहि राम चरन अनुरागी। कलिमल रहित सुमंगल भागी ॥
 दो०—तपनेहुँ साचेहुँ मोहि पर जौ हर गौरि पसाउ ।

तौ फुर होउ जो कहेउँ सब भाषा भनिति प्रभाउ ॥ १५ ॥

बंदउँ अवध पुरी अति पावनि। सरजू सरि कलि कलुष नसावनि ॥
 प्रनवउँ पुर नर नारि बहोरी। ममता जिन्ह पर प्रभुहि न थोरी ॥
 सिय निदक अघ ओष नसाए। लोक विसोक बनाइ बसाए ॥
 बंदउँ कौसल्या दिसि प्राची। कीरति जासु सकल जग माची ॥
 प्रगटेउ जहँ रघुपति ससि चारू। विश्व सुखद खल कमल तुसारू ॥
 दसरथ राउ सहित सब रानी। सुकृत सुमंगल मूरति मानी ॥
 करउँ प्रनाम करम मन वानी। करहु कृपा सुत सेवक जानी ॥
 जिन्हहि विरचि बड़ भयउ विधाता। महिमा अवधि राम पितु माता
 सो०—बंदउँ अवध मुकाल सत्य प्रेम जेहि राम पद ।

विदुरत दीनदयाल प्रिय तनु तून इव परिहरेउ ॥ १६ ॥

प्रनवउँ परिजन सहित विदेह । जाहि राम पद गूढ़ सनेह ॥
 जोग भोग महँ राखेउ गोई । राम बिलोकत प्रगटेउ सोई ॥
 प्रनवउँ प्रथम भरत के चरना । जासु नेम व्रत जाइ न वरना ॥
 राम चरन पंकज मन जासु । लुबुध मधुप इव तजइ न पासु ॥
 वंदउँ लछिमन पद जलजाता । सीतल सुभग भगत सुख दाता ॥
 रघुपति कीरति विमल पताका । दंड समान भयउ जस जाका ॥
 सेप सहस्रसीस जग कारन । जो अवतरेउ भूमि भय टारन ॥
 सदा सो सानुकूल रह मो पर । कृपासिंधु सौमित्रि गुनाकर ॥
 रिपुघ्न पद कमल नमामी । सूर सुशील भरत अनुगामी ॥
 महावीर विनवउँ हनुमाना । राम जासु जस आप बखाना ॥

सो०—प्रनवउँ पवन कुमार खल वन पावक ग्यानधन ।

जासु हृदय आगार बसहिं राम सर चाप धर ॥ १७ ॥

कपिपति रीछ निसाचर राजा । अंगदादि जे कीस समाजा ॥
 वंदउँ सब के चरन मुहाए । अधम सरीर राम जिन्ह पाए ॥
 रघुपति चरन उपासक जेते । खग मृग सुर नर असुर समेते ॥
 वंदउँ पद सरोज सब केरे । जे विनु काम राम के चरे ॥
 मुकसनकादि भगत मुनि नारद । जे मुनिवर विग्यान विसारद ॥
 प्रनवउँ सबहि धरनि धरि सीसा । करहु कृपा जन जानि मुनीसा ॥
 जनकमुता जग जननि जानकी । अतिसय प्रिय कहनानि वन की
 ताके जुग पद कमल मनावउँ । जासु कृपाँ निरमल नति पावउँ ॥
 पुनि मन वचन कर्म रघुनायक । चरन कमल वंदउँ सब लायक ॥
 राजिवनयन धरें धनु सायक । भगत विपति भंजन मुक्त

दो०—गिरा अरथ जल बीचि सम कहिअत भिन्न न भिन्न ।

बंदउँ सीता राम पद जिन्हहि परस प्रिय सिव ॥ १८ ॥

बंदउँ नाम राम रघुवर को। हेतु कृसानु भानु हिमकर को ॥
विधि हरि हर मय वेद प्रान सो। अगुन अनूपम गुन निधान सो ॥
महामंत्र जोइ जपत महेसू। कासीं भुक्ति हेतु उपदेसू ॥
महिमा जासु जान गनराऊ। प्रथम पूजिअत नाम प्रभाऊ ॥
जान आदिकवि नाम प्रतापू। भयउ सुद्ध करि उलटा जापू ॥
सहस नाम सम सुनि सिव बानी। जपि जेई पिय संग भवानी ॥
हरपे हेतु हेरि हर ही को। किय भूपन तिय भूपन ती को ॥
नाम प्रभाउ जान सिव नीको। कालकूट फलु दीन्ह अमी को ॥

दो०—वरषा रितु रघुपति भगति तुलसी सालि सुदास ।

राम नाम वर वरन जुग सावन भादव मास ॥ १९ ॥

आखर मधुर मनोहर दोऊ। वरन विलोचन जन जिय जोऊ ॥
सुमिरत सुलभ सुखद सव काहू। लोक लाहु परलोक निवाहू ॥
कहत सुनत सुमिरत सुठि नीके। राम लखन सम प्रिय तुलसी के ॥
चरनत वरन प्रीति विलगाती। ब्रह्म जीव सम सहज सँघाती ॥
नर नारायन सरिस सुभ्राता। जग पालक विसेपि जन त्राता ॥
भगति सुतिय कल करन विभूषन। जग हित हेतु विमल विधु पूषन
खाद तोष सम सुगति सुधा के। कमठ सेप सम धर वसुधा के ॥
जन मन मंजु कंज मधुकर से। जीह जसोमति हरि हलधर से ॥

दो०—एकु छत्रु एकु मुकुटमनि सब वरननि पर जोड ।

समुझत सरिस नाम अरु नामी । प्रीति परसपर प्रभु अनुगामी ॥
 नाम रूप दुह ईस उपाधी । अकथ अनादि मुसामुझि साथी
 को बड़ छोट कहत अपराधू । मुनि गुन भेदु समुझिहहिं साथू
 देखिअहिं रूप नाम आधीना । रूप ग्यान नहिं नाम विहीना ॥
 रूप विसेष नाम विनु जानें । करतल गत न परहिं पहिचानें ॥
 सुमिरिअ नाम रूप विनु देखें । आवत हृदयँ सनेह विसेपें ॥
 नाम रूप गति अकथ कहानी । समुझत सुखद न परति बखानी
 अगुन सगुन विच नाम सुसारवी । उभय प्रबोधक चतुर दुभापी ॥

दो०—राम नाम मनि दीप घरु जीह देहरीं द्वार ।

तुलसी भीतर बाहेरहुँ जीं चाहसि उजिआर ॥ २१ ॥

नाम जीहँ जपि जागहिं जोगी । विरति विरंचि प्रपंच वियोगी ॥
 ब्रह्मसुखहि अनुभवहिं अनूपा । अकथ अनामय नाम नरूपा ॥
 जाना चहहिं गूढ़ गति जेऊ । नाम जीहँ जपि जानहिं तेऊ ॥
 साधक नाम जपहिं लय लाएँ । होहिं सिद्ध अनिमादिक पाएँ ॥
 जपहिं नामु जन आरत भारी । मिटहिं कुसंकट होहिं सुखारी ॥
 राम भगत जग चारि प्रकारा । मुकृती चारिउ अनघ उदारा ॥
 चहू चतुर कहूँ नाम अधारा । ग्यानी प्रभुहि विसेपि पिआरा ॥
 चहुँ जुग चहुँ श्रुति नाम प्रभाऊ । कलि विसेपि नहिं आन उपाऊ ॥

दो०—सकल कामना होन जे राम भगति रस लीन ।

नाम सुप्रेम पियूप हृद तिन्हहुँ किए मन मीन ॥ २२ ॥

अगुन सगुन दुह ब्रह्म सरूपा । अकथ अगाध अनादि अनूपा ॥
 मोरें मत बड़ नामु दुह तें । किएजेहिं जुगनिजवस ॥ २३ ॥

सकुल रन रावनु मारा। सीय सहित निज पुर पगु धारा ॥
 रामु अवध रजधानी। गावत गुन सुर मुनि वर वानी ॥
 सुमिरत नामु सप्रीती। विनु श्रम प्रबल मोह दलु जीती ॥
 रत सनेहँ मगन मुख अपनें। नाम प्रसाद मोच नहिँ सपनें ॥

१०-वक्ष राम ते नामु वड़ वरदायक वरदानि ।
 रामचरित सत कोटि महँ लिय महेश जियँ जानि ॥ २५ ॥

मासपारायण, पहला विश्राम

नाम प्रसाद संभु अविनासी। साजु अमंगल मंगल रासी ॥
 सुक सनकादि सिद्ध मुनि जोगी। नाम प्रसाद ब्रह्मसुख भोगी ॥
 नारद जानेउ नाम प्रतापू। जग प्रिय हरि हरि हर प्रिय आपू ॥
 नामु जपत प्रभु कीन्ह प्रसादू। भगत सिरोमनि भे प्रह्लादू ॥
 ध्रुवँ सगलानि जपेउ हरि नाऊँ। पायउ अचल अनूपम ठाऊँ ॥
 सुमिरि पवनसुन पावन नामू। अपने वस करि राखे रामू ॥
 अपतु अजामिलु गजु गनिकाऊ। भए मुकुल हरि नाम प्रभाऊ ॥
 कहाँ कहाँ लागि नाम वड़ाई। रामु न सकहिँ नाम गुन गाई ॥

दो०-नामु राम को कल्पतरु कलि कल्याण निधासु ।

जो सुमिरत भयो भोग ते तुलसी तुलसीदामु ॥ २६ ॥

चहुँ जुग तीनि काल तिहुँ लोका। भए नाम जपि जीव विसोका ।
 वेद पुरान संत मत एहू। सकल सुकृत फल राम सनेहू ।
 ध्यानु प्रथम जुग मखविधि दूजे। डापर परितोपत प्रभु पूजे ।
 कलि केवल मल मूल मलीना। पाप पयोनिधि जन मन मीना ।
 नाम कामतरु काल कराला। सुमिरत समन सकल जग जाला ।

श्रौद्धिसुजनजनि जानहिंजन की । कहउँ प्रतीति प्रीति रुचि मन की
 एकु दासगत देखिअ एकू । पावक सम जुग ब्रह्म विवेकू ॥
 उभय अगम जुग सुगम नाम तैं । कहैउँ नामु बड़ ब्रह्म राम तैं ।
 व्यापकू एकू ब्रह्म अविनासी । सत चेतन घन आनँद रासी ।
 अस प्रभु हृदयँ अछत अविकारी । सकल जीव जग दीन दुखारी ॥
 नाम निरूपन नाम जतन तैं । सोउ प्रगटत जिमि मोल रतन तैं ॥
 दो०—निरगुन तैं एहि भाँति बड़ नाम प्रभाउ अपार ।

कहैउँ नामु बड़ राम तैं निज विचार अनुसार ॥ २३ ॥

राम भगत हित नर तनु धारी । सहि संकट किए साधु सुखारी ॥
 नामु सप्रेम जपत अनयासा । भगत होहिं मुद मंगल वासा ॥
 राम एक तापस तिय तारी । नाम कोटि खल कुमति सुधारी ॥
 रिपि हित राम सुकेतु सुता की । सहित सेन सुत कीन्हि विवाकी ॥
 सहित दोष दुख दास दुरासा । दलइ नामु जिमि रवि निसि नासा
 भंजेउ राम आपु भव चापू । भव भय भंजन नाम प्रतापू ॥
 दंडक वनु प्रभु कीन्ह सुहावन । जन मन अमित नाम किएपावन ॥
 निसिचर निकर दले रघुनंदन । नामु सकल कलि कलुष निकंदन ॥

दो०—सवरी गीष सुसेवकनि सुगति दोन्हि रघुनाथ ।

नाम उधारे अमित खल वेद विदित गुन गाथ ॥ २४ ॥

राम सुकंठ विभीषन दोउ । राखे सरन जान सबु कोऊ ॥
 नाम गरीब अनेक नेवाजे । लोक वेद वर विरिद विराजे ॥
 राम भालु कपि कटकु वटोरा । सेतु हेतु श्रमु कीन्ह न थोरा ॥
 नामु लेत भवसिंधु सुखाहीं । करहु विचारु सुजन मन माहीं ॥

गाम सकुल रन रावनु मारा। मीय महिन निज पुर पगु धारा ॥
 राजा रामु अवध रजधानी। गावत गुन मुग मुनि वर शानी ॥
 सेवक सुमिरत नामु मप्रीती। विनु श्रम प्रबल मोह दनु जेती ॥
 फिरत सनेह मगन सुख अपने। नाम प्रमाद मोच नदि मरने ॥
 दो०-अथ राम ने नामु यह वग्दायक वग्दानि ।

रामचरित मन कोटि महें लिय महेंम जियें शनि ॥ ७५ ॥

मामपारायण, पहला चित्राम

नाम प्रमाद मंथु अचिनानी। मातु अमंगल मंगल रानी ॥
 सुक मनकादि निदु मुनि जोगी। नाम प्रमाद श्रदमुख मोती ॥
 नारद जानैत नाम प्रमाद। जग प्रिय हरि हरि हर प्रिय आरा ॥
 नामु अपन प्रनु कान्ह प्रमाद। भगव सिंगेनति न प्रकृत ॥
 युव सगलानि जंपउ हरि नाऊ। पावउ अचरु अदुख दुऊ ॥
 सुमिरि पवनपुत्र पवन नाम। अरन वन करि गणे गद ॥
 अपतु अज्ञानिनु गनु गनिकाऊ। भय नुहुन हरे मन प्रगत ॥
 कहीं कहीं लागि नाम बड़ाटे। गनु नमकहै नल गुन बाटे ॥
 दो०-अथ राम को अद्वयक अदि अलक्ष्मण लिये ।

जो सुखिन्त भसी भोग ने लक्ष्मण लिये ॥ ७६ ॥

चहुं दुग नीनि अल निहू मोका। नर नल जपि जाय विमोका ॥
 वेद श्रुत मंद नत पदु। सकल नुहुत फल राम लोके ॥
 व्यानुदयक हनु मन्त्रविदुते। शान पन्तोपन प्रह सुते ॥
 कलि केवल मल मू मरना। राम लिये न लिये ॥
 नाम अद्वय अल अलाना। न लिये न लिये ॥

राम नाम कलि अभिमत दाता । हित परलोक लोक पितु माता ॥
 नहिं कलि करम न भगति विवेकू । राम नाम अवलंबन एकू ॥
 कालनेमि कलि कपट निधानू । नाम सुमति समरथ हनुमानू ॥
 दो०—राम नाम नरकेसरी कनककसिपु कलिकाल ।

जापक जन प्रहलाद जिमि पालिहि दलि सुरसाल ॥ २७ ॥

भायँ कुभायँ अनख आलसहूँ । नाम जपत मंगल दिसि दसहूँ ॥
 सुमिरि सो नाम राम गुन गाथा । करउँ नाइ रघुनाथहि माथा ॥
 मोरि सुधारिहि सो सब भाँती । जासु कृपा नहिं कृपाँ अघाती ॥
 राम सुस्वामि कुसेवकु मोसो । निज दिसि देखि दयानिधि पोसो ॥
 लोकहुँ ब्रेद सुसाहिव रीती । विनय सुनत पहिचानत प्रीती ॥
 गनी गरीब ग्रामनर नागर । पंडित मूढ़ मलीन उजागर ॥
 सुकवि कुकवि निज मति अनुहारी । नृपहि सराहत सब नर नारी ॥
 साधु सुजान सुसील नृपाला । ईस अंस भव परम कृपाला ॥
 सुनि मनमानहिं सबहि सुवानी । भनिति भगति नति गति पहिचानी ॥
 यह प्राकृत महिपाल सुभाऊ । जान सिरोमनि कोसलराऊ ॥
 रीझत राम सनेह निसोतेँ । को जग मंद मलिनमति मोतेँ ॥

दो०—सठ सेवक की प्रीति रुचि रखिहहिं राम कृपालु ।

उपल किए जलजान जेहिं सचिव सुमति कपि भालु ॥ २८(क) ॥

हौंहु कहावत सवु कहत राम सहत उपहास ।

साहिव सीतानाथ सो सेवक तुलसीदास ॥ २८(ख) ॥

अति बड़ि मोरि ठिठाई खोरी । सुनि अघ नरकहुँ नाक सकोरी ।
 समुझि सहम मोहि अपडर अपनेँ । सो सुधि राम कीन्हि नहिं सपनेँ ।

सुनि अवलोकि सुचित चख चाही। भगति मोरि मति स्वामि सराही
 कहत नसाइ होइ हियँ नीकी। रीझत राम जानि जन जी की ॥
 रहति न प्रभु चित चूक किए की। करत सुरति सय वार हिए की ॥
 जेहि अब बघेउ व्याध जिमि वाली। फिरि सुकंठ सोइ कीन्हि कुचाली
 सोइ करवति विभीषन केरी। सपनेहुँ सो न राम हियँ हेरी ॥
 ते भरतहि भेंटत सनमाने। राजसभाँ रघुवीर बखाने ॥
 दो०—प्रभु तरुतर कपि डार पर ते किए आपु समान ।

तुलसी कहँ न राम से साहिव सोलनिधान ॥२९(क)॥

राम निकड़ रावरी हे सवही को नीक ।

जौ यह साँची हे सदा तौ नीको तुलसीक ॥२९(ख)॥

एहि विधि निज गुन दोष कहि सवहि बहुरि सिरु नाइ ।

बरनउँ रघुवर विसद जसु सुनि कलि कल्प नसाइ ॥२९(ग)॥

जागवलिक जो कथा सुहाई। भरद्वाज मुनिवरहि सुनाई ॥

कहिहउँ सोइ संवाद बखानी। सुनहुँ सकल सजन सुरगु मानी ॥

संभु कीन्ह यह चरित सुहावा। बहुरि कृपा करि उमहि सुनावा ॥

सोइ सिव कागधसुंडिहि दीन्हा। राम भगत अधिकारी चीन्हा ॥

तेहि सन जागवलिक पुनि पावा। तिन्ह पुनि भरद्वाज प्रति गावा ॥

ते भोता चकता समसीला। सवँदरसी जानहि हरिलीला ॥

जानहि तीनि काल निज ग्याना। करतल गत आमलक समाना ॥

औरउ जे हरिभगत सुजाना। कहहि सुनहि समुझहि विधि नाना ॥

दो०—मै पुनि निज गुर सन सुनो कथा सो सूकरसेत ।

समुझी नहि तसि बालपन तव अति रहेउँ अचेत ॥३०(क)॥

श्रोता वक्ता ग्याननिधि कथा राम के गूढ़ ।

किमि समुझौं मैं जीव जड़ कलिमल ग्रसित विमूढ़ ॥२०(ख)॥

तदपि कही गुर वारहिं वारा । समुझि परी कलु मति अनुसारा ॥
 भापावद्ध करवि मैं सोई । मोरें मन प्रबोध जेहि होई ॥
 जस कलु बुधि विवेक बल मेरें । तस कहिहउँ हियँ हरि के प्रेरें ॥
 निज संदेह मोह भ्रम हरनी । करउँ कथा भव सरिता तरनी ॥
 बुध विश्राम सकल जन रंजनि । रामकथा कलि कलुप दिभंजनि ॥
 रामकथा कलि पंगव भरनी । पुनि विवेक पावक कहूँ अरनी ॥
 रामकथा कलि कामद गाई । सुजन सजीवनि मूरि सुहाई ॥
 सोई बसुधातल सुधा तरंगिनि । भय भंजनि भ्रम भेक भुअंगिनि ॥
 असुर सेन सम नरक निकंदिनि । साधु विबुध कुल हित गिरिनंदिनि ॥
 संत समाज पयोधि रमा सी । विख्य भार भर अचल छमा सी ॥
 जम गन मुहँ मसि जग जमुना सी । जीवन मुकुति हेतु जनु कासी ॥
 रामहि प्रिय पावनि तुलसी सी । तुलसिदास हित हियँ हुलसी सी ॥
 सिवप्रिय मेकल सैल सुता सी । सकल सिद्धि सुख संपति रासी ॥
 सदगुन सुरगन अंब अदिति सी । रघुवर भगति प्रेम परमिति सी ॥

दो०—रामकथा मंदाकिनी चित्रकूट चित चारु ।

तुलसी सुभग सनेह वन सिय रघुवीर विहारु ॥ २१ ॥

रामचरित चिंतामनि चारु । संत सुमति तिय सुभग सिंगारु ॥
 जग मंगल गुनग्राम राम के । दानि मुकुति धन धरम धाम के ॥
 सदगुर ग्यान विराग जोग के । विबुध वैद भव भीम रोग के ॥
 जननि जनक सिय राम प्रेम के । वीज सकल व्रत धरम नेम के ॥

समन पाप संताप सोक के । प्रिय पालक परलोक लोक के ॥
 सचिव सुभट भूपति विचार के । कुंभज लोभ उदधि अपार के ॥
 काम कोह कलिमल करिगन के । केहरि सावक जन मन वन के ॥
 अतिथि पूज्य प्रियतम पुरारि के । कामद घन दारिद दवारि के ॥
 मंत्र महामनि विषय व्याल के । मेटत कठिन कुअंक भाल के ॥
 हरन मोह तम दिनकर कर से । सेवक सालि पाल जलधर से ॥
 अभिमत दानि देवतरु वर से । सेवत सुलभ सुखद हरि हर से ॥
 सुकवि सरद नभ मन उडगन से । रामभगत जन जीवन धन से ॥
 सकल सुकृत फल भूरि भोग से । जग हित निरुपधि साधु लोग से ॥
 सेवक मन मानस मराल से । पावन गंग तरंग माल से ॥

दो०—कुपय कुतरक कुचालि कलि कपट दंभ पापंड ।

दहन राम गुन ग्राम जिमि दंधन अनल प्रचंड ॥३२(क)॥

रामचरित राकेस कर सरिस सुखद सब काहु ।

सजन कुमुद चकोर चित हित विसेपि बड़ लाहु ॥३२(ख)॥

कीन्हि प्रस्न जेहि भाँति भवानी । जेहि विधि संकर कहा वखानी ॥
 सो सब हेतु कहव मैं गाई । कथाप्रबंध विचित्र बनाई ॥
 जेहि यह कथा सुनी नहिं होई । जनि आचरजु करै मुनि सोई ॥
 कथा अलौकिक सुनहिं जे ग्यानी । नहिं आचरजु करहिं अस जानी ॥
 रामकथा कै मिति जग नाहीं । असि प्रतीति तिन्ह के मन माहीं ॥
 नाना भाँति राम अवतारा । रामायन सत कोटि अपारा ॥
 कल्पमेद हरि चरित मुहाए । भाँति अनेक मुनीसन्ह गाए ॥
 करिअ न संसय अस उर आनी । सुनिअ कथा सादर रति मानी ॥

श्रोता वक्ता ग्याननिधि कथा राम के गूढ़ ।

किमि समुझौं मैं जीव जड़ कलिमल असित विमूढ़ ॥३०(ख)॥

तदपि कही गुर वारहिं वारा । समुझि परी कछु मति अनुसारौ ॥
 भाषावद्ध करवि मैं सोई । मोरें मन प्रबोध जेहिं होई ॥
 जस कछु बुधि विवेक बल मेरें । तस कहिहउं हियँ हरि के प्रेरें ॥
 निज संदेह मोह भ्रम हरनी । करउं कथा भव सरिता तरनी ॥
 बुध विश्राम सकल जन रंजनि । रामकथा कलि कलुष दिभंजनि ॥
 रामकथा कलि पंनग भरनी । पुनि विवेक पावक कहुँ अरनी ॥
 रामकथा कलि कामद गाई । सुजन सजीवनि मूरि सुहाई ॥
 सोई वसुधातल सुधा तरंगिनि । भय भंजनि भ्रम भेक भुअंगिनि ॥
 असुर सेन सम नरक निकंदिनि । साधु विबुध कुल हित गिरिनंदिनि
 संत समाज पयोधि रमा सी । विश्व भार भर अचल छासा सी ॥
 जम गन मुहँ मसि जग जमुना सी । जीवन मुकुति हेतु जनु कासी ॥
 रामहि प्रिय पावनि तुलसी सी । तुलसिदास हित हियँ हुलसी सी ॥
 सिवप्रिय मेकल सैल सुता सी । सकल सिद्धि सुख संपति रासी ॥
 सदगुन सुरगन अंब अदिति सी । रघुवर भगति प्रेम परमिति सी ॥

दो०—रामकथा मंदाकिनी चित्रकूट चित चारु ।

तुलसी सुभग सनेह वन सिय रघुवीर विहार ॥ ३१ ॥

रामचरित चिंतामनि चारु । संत सुमति तिय सुभग सिंगारु ॥
 जग मंगल गुनग्राम राम के । दानि मुकुति धन धरम धाम के ॥
 सदगुर ग्यान विराग जोग के । विबुध वैद भव भीम रोग के ॥
 जननि जनक सिय राम प्रेम के । वीज सकल व्रत धरम नेम के ॥

समन पाप संताप सोक के । प्रिय पालक परलोक लोक के ॥
 सचिव सुभट भूपति विचार के । कुंभज लोभ उदधि अपार के ॥
 काम कोह कलिमल करिगन के । केहरि सावक जन मन वन के ॥
 अतिथि पूज्य प्रियतम पुरारि के । कामद घन दारिद्र दवारि के ॥
 मंत्र महामनि विषय व्याल के । भेटत कठिन कुअंक भाल के ॥
 हरन मोह तम दिनकर कर से । सेवक सालि पाल जलधर से ॥
 अभिमत दानि देवतरु वर से । सेवत मुलभ सुखद हरि हर से ॥
 सुकवि सरद नभ मन उडगन से । रामभगत जन जीवन धन से ॥
 सकल सुकृत फल भूरि भोग से । जग हित निरुपधि साधु लोग से
 सेवक मन मानस मराल से । पावन गंग तरंग माल से ॥

दो०—कुपय कुतरक कुचालि कलि कपट दंभ पापंड ।

दहन राम गुन ग्राम जिमि इंधन अनल प्रचंड ॥३२(क)॥

रामचरित राकेस कर सरिस सुखद सब काहु ।

सज्जन कुमुद चकोर चित हित विसेपि बड़ लाहु ॥३२(ख)॥

कीन्हि प्रस्न जेहि भाँति भवानी । जेहि विधि संकर कहा परवानी ॥
 सो सब हेतु कहव मैं गाई । कथाप्रबंध विचित्र बनाई ॥
 जेहि यह कथा सुनी नहिं होई । जनि आचरजु करै मुनि सोई ॥
 कथा अलौकिक सुनहिं जे ग्यानी । नहिं आचरजु करहिं असजानी ॥
 रामकथा कै मिति जग नाहीं । असि प्रतीति तिन्ह के मन माहीं ॥
 नाना भाँति राम अवतारा । रामायन सत कोटि अपारा ॥
 कल्पमेद हरि चरित मुहाए । भाँति अनेक मुनीसन्ह गाए ॥
 करिअ न संसय अस उर आनी । सुनिअ कथा सादर रति मानी ॥

सुनि आचरजु न मानेहहिं जिन्ह कें विमल विचार ॥ ३३ ॥

एहि विधि सब संसय करि दूरी । सिर धरि गुर पद पंकज धूरी ॥
 पुनि सबही विनवउँ कर जोरी । करत कथा जेहिं लाग न खोरी ॥
 सादर सिवहि नाइ अब माथा । बरनउँ विसद राम गुन गाथा ॥
 संवत सोरह सै एकतीसा । करउँ कथा हरि पद धरि स्वीसा ॥
 नौमी भौम बार मधु मासा । अवधपुरीं यह चरित प्रकासा ॥
 जेहि दिन राम जनम श्रुति गावहिं । तीरथ सकल तहाँ चलि आ रहिं ॥
 असुर नाग खग नर मुनि देवा । आइ करहिं रघुनायक सेवा ॥
 जन्म महोत्सव रचहिं सुजाना । करहिं राम कल कीरति माना ॥

दो०—मज्जहिं सज्जन वृंद बहु पावन सरजू नीर ।

जपहिं राम धरि ध्यान उर सुंदर त्याम सरीर ॥ ३४ ॥

दरस परस मज्जन अरु पाना । हरइ पाप कह वेद पुराना ॥
 नदी पुनीत अमित महिमा अति । कहि न सकइ सारदा विमलयति ॥
 राम धामदा पुरी सुहावनि । लोक समस्त विदित अति पावनि ॥
 चारि खानि जग जीव अपारा । अवध तजें तनु नहिं संसारा ॥
 सब विधि पुरी मनोहर जानी । सकल सिद्धि प्रद मंगल खानी ॥
 विमल कथा कर कीन्ह अरंभा । सुनत नसाहिं काम मद दंभा ॥
 रामचरितमानस एहि नामा । सुनत श्रवन पाइअ विश्रामा ॥
 मन करि विषय अनल बन जरई । होइ सुखी जौं एहिं सर परई ॥
 रामचरितमानस मुनि भावन । विरचेउ संभु सुहावन पावन ॥
 त्रिविध दोष दुख दारिद दावन । कलि कुचालि कुलि कलुष नसावन ॥

रचि महेस निज मानस राखा । पाइ मुसमउ सिवा संन भाषा ॥
ताते रामचरितमानस वर । धरेउ नाम हियँ हेरि हरपि हर ॥
कहउँ कथा सोइ सुखद सुहाई । सादर सुनहु मुजन मन लाई ॥

दो०—जस मानस जेहि विधि भयउ जग प्रचार जेहि हेतु ।

अथ सोइ कहउँ प्रसंग सव सुमिरि उमा वृषकेतु ॥ ३५ ॥

संभु प्रसाद सुमति हियँ हुलसी । रामचरितमानस कवि तुलसी ॥
करइ मनोहर मति अनुहारी । मुजन सुचित मुनि लेहु सुधारी ॥
सुमति भूमि थल हृदय अगाध । वेद पुरान उदधि घन साधू ॥
वरपहिं राम सुजस घर वारी । मधुर मनोहर मंगलकारी ॥
लीला सगुन जो कहहिं वखानी । सोइ स्वच्छता करइ मल हानी ॥
प्रेम भगति जो वरनि न जाई । सोइ मधुरता सुसीतलताई ॥
सो जल सुकृत सालि हित होई । राम भगत जन जीवन सोई ॥
मेधा महि, गत सो जल पावन । सकिलि श्रवन मग चलेउ सुहावन ॥
भरेउ सुमानस मुखल थिराना । सुखद सीत रुचि चारु चिराना ॥

दो०—सुठि सुंदर संवाद घर विरचे बुद्धि विचारि ।

तेइ एहि पावन सुभग सर घाट मनोहर चारि ॥ ३६ ॥

सप्त प्रबंध सुभग सोपाना । ग्यान नयन निरखत मन माना ॥
रघुपति, महिमा अगुन अवाधा । वरनव सोइ वर वारि अगाधा ॥
राम सीय जस सलिल सुधासम । उपमा वीचि विलास मनोरम ॥
पुरइनि सघन चारु चाँपाई । जुगुति मंजु मनि सीप सुहाई ॥
छंद सोरठा सुंदर दोहा । सोइ वहुंरंग कमल कुल सोहा ॥
अरथ अनूप सुभाव सुभासा । सोइ पराग मकरंद सुवासा ॥

सुकृत पुंज मंजुल अलि माला । ग्यान विराग विचार मराला ।
 धुनि अवरेव कवित गुन जाती । मीन मनोहर ते बहुभाँती ।
 अरथ धरम कामादिक चारी । कहव ग्यान विग्यान विचारी ॥
 नव रस जप तप जोग विरागा । ते सद्र जलचर चारु तड़ागा ॥
 सुकृती साधु नाम गुन गाना । ते विचित्र जल विहग समाना ॥
 संतसभा चहुँ दिसि अवर्राई । श्रद्धा रितु वसंत सम गाई ॥
 भगति निरूपन विविध विधाना । छमा दया दम लता विताना ॥
 सम जम नियम फूल फल ग्याना । हरि पद रति रस वेद वखाना ॥
 औरउ कथा अनेक प्रसंगा । तेइ सुक पिक बहु वरन विहंग्या ॥

दो०—पुलक वाटिका वाग वन सुख सुविहंग विहार ।

माली सुमन सनेह जल सींचत लोचन चारु ॥ ३७ ॥

जे गावहिं यह चरित सँभारे । तेइ एहि ताल चतुर रखवारे ॥
 सदा सुनहिं सादर नर नारी । तेइ सुरवर मानस अधिकारी ॥
 अति खल जे विपई वग कागा । एहि सर निकट न जाहिं अभागा
 संबुक भेक सेवार समाना । इहाँ न विषय कथा रस नाना ॥
 तेहि कारन आवत हियँ हारे । कामी काक वलाक विचारे ॥
 आवत एहिं सर अति कठिनाई । राम कृपा विनु आइ न जाई ॥
 कठिन कुसंग कुपंथ कराला । तिन्ह के वचन बाघ हरि व्याला
 गृह कारज नाना जंजाला । ते अति दुर्गम सैल विसाला ॥
 वन बहु विषम मोह मद माना । नदीं कुतर्क भयंकर नाना ॥

दो०—जे श्रद्धा संवल रहित नहिं संतन्ह कर साथ ।

तिन्ह कहँ मानस अगम अति जिन्हहि न प्रिय रघुनाथ ॥ ३८ ॥

जौं करि कष्ट जाइ पुनि कोई। जातहिं नीद जुड़ाई होई ॥
 जड़ता जाइ विषम उर लागी। गएहुँ न मजन पाव अभागी ॥
 करि न जाइ सर मजन पाना। फिरि आवइ समेत अभिमाना ॥
 जौं बहोरि कोउ पृछन आवा। सर निंदा करि ताहि बुझावा ॥
 सकल विघ्न व्यापहिं नहिं तेही। राम मुकृपाँ विलोकहिं जेही ॥
 सोइ सादर सर मजनु करई। महा घोर त्रयताप न जरई ॥
 ते नर यह सर तजहिं न काऊ। जिन्ह कें राम चरन भल भाऊ ॥
 जो नहाइ चह एहिं सर भाई। सो सतसंग करउ मन लाई ॥
 अस मानस मानस चख चाही। भइ कवि बुद्धि विमल अवगाही ॥
 भयउ हृदयँ आनंद उछाहू। उमगेउ प्रेम प्रमोद प्रवाहू ॥
 चली सुभग कथिता सरिता सो। राम विमल जस जल भरिता सो ॥
 सरजू नाम सुमंगल मूला। लोक वेद मत मंजुल कूला ॥
 नदी पुनीत सुमानस नंदिनि। कलिमल वृन तरु मूल निकंदिनि
 दो०—श्रोता त्रिविध समाज पुर माम नगर दुहुँ कूल।

संतसर्भा अनुपम अवध सकल सुमंगल मूल ॥ ३९ ॥

रामभगति सुरसरितहि जाई। मिली सुकीरति सरजु सुहाई ॥
 सानुज राम समर जसु पावन। मिलेउ महानदु सोन सुहावन ॥
 जुग विच भगति देवधुनि धारा। सोहति सहित सुविरति विचारा ॥
 त्रिविध ताप त्रासक तिमुहानी। राम सरूप सिंधु समुहानी ॥
 मानस मूल मिली सुरसरिही। सुनत सुजन मन पावन करिही ॥
 विच विच कथाविचित्र विभागा। जनु सरि तीर तीर बन वागा ॥
 उमा महेस विवाह वराती। ते जलचर

सुकृत पुंज मंजुल अलि माला । ग्यान विराग विचार मराला ॥
 धुनि अवरैव कवित गुन जाती । मीन मनोहर ते बहुभाँती ॥
 अस्थ धरम कामादिक चारी । कहव ग्यान विग्यान विचारी ॥
 नव रस जप तप जोग विरागा । ते सद जलचर चारु तड़ागा ॥
 सुकृती साधु नाम गुन गाना । ते विचित्र जल विहग समाना ॥
 संतसभा चहुँ दिशि अवर्राई । श्रद्धा रितु वसंत सम गाई ॥
 भगति निरूपन विविध विधाना । छया दया दस लता विताना ॥
 सम जम नियम फूल फल ग्याना । हरि पद रति रस वेद वखाना ॥
 औरउ कथा अनेक प्रसंगा । तेइ सुक पिक बहु वरन विहंगा ॥

दो०—पुलक वाटिका वाग वन सुख सुविहंग विहार ।

माली सुमन सनेह जल सींचत लोचन चारु ॥ ३७ ॥

जे गावहिं यह चरित सँभारे । तेइ एहि ताल चतुर रखवारे ॥
 सदा सुनहिं सादर नर नारी । तेइ सुरवर मानस अधिकारी ॥
 अति खल जे विपई वग कागा । एहि सर निकट न जाहिं अभागा ॥
 संबुक भेक सेवार समाना । इहाँ न विषय कथा रस नाना ॥
 तेहि कारन आवत हियँ हारे । कामी काक वलाक विचारे ॥
 आवत एहिं सर अति कठिनाई । राम कृपा विनु आइ न जाई ॥
 कठिन कुसंग कुपंथ कराला । तिन्ह के वचन वाघ हरि व्याला ॥
 गृह कारज नाना जंजाला । ते अति दुर्गम सैल विसाला ॥
 वन बहु विषम मोह मद माना । नदीं कुतर्क भयंकर नाना ॥

दो०—जे श्रद्धा संवल रहित नहिं संतन्ह कर साथ ।

तिन्ह कहँ मानस अगम अति जिन्हहिं न प्रिय रघुनाथ ॥ ३८ ॥

जौं करि कष्ट जाइ पुनि कोई। जातहिं नीद जुड़ाई होई ॥
 जड़ता जाइ विषम उर लागी। गएहुँ न मजन पाव अभागी ॥
 करि न जाइ सर मजन पाना। फिरि आवइ समेत अभिमाना ॥
 जौं बहोरि कोउ पृछन आवा। सर निंदा करि ताहि बुझावा ॥
 सकल विघ्न व्यापहिं नहिं तेही। राम मुकृपाँ विलोकहिं जेही ॥
 सोइ सादर सर मजनु करई। महा घोर त्रयताप न जरई ॥
 ते नर यह सर तजहिं न काऊ। जिन्ह कें राम चरन भल भाऊ ॥
 जौ नहाइ चह एहिं सर भाई। सो सतसंग करउ मन लाई ॥
 अस मानस मानस चरव चाही। भइ कवि बुद्धि विमल अवगाही ॥
 भयउ हृदयँ आनंद उछाह। उमगउ प्रेम प्रमोद प्रवाह ॥
 चली सुभग कविता सरिता सो। राम विमल जस जल भरिता सो ॥
 सरजू नाम सुमंगल मूला। लोक वेद मत मंजुल कूला ॥
 नदी पुनीत सुमानस नंदिनि। कलिमल तुन तरु मूल निकंदिनि
 दो०—श्रोता त्रिविध समाज पुर ग्राम नगर दुहुँ कूल ।

संतसर्भा अनुपम अवध सकल सुमंगल मूल ॥ ३९ ॥

रामभगति सुरसरितहि जाई। मिली मुकीरति सरजु सुहाई ॥
 सानुज राम समर जसु पावन। मिलेउ महानदु सोन सुहावन ॥
 जुग विच भगति देवधुनि धारा। सोहति सहित सुविरति विचारा ॥
 त्रिविध ताप त्रासक तिम्रहानी। राम सरूप सिंधु समुहानी ॥
 मानस मूल मिली सुरसरिही। सुनत मुजन मन पावन करिही ॥
 विच विच कथा विचित्र विभागा। जनु सरि तीर तीर वन वागा ॥
 उमा महेस विवाह वराती। ते जलचर अगनित बह भाँती ॥

रघुवर जनम अनंद वधाई। भँर तरंग मनोहरताई ॥

दो०—वालचरित चहु वंधु के वनज विपुल बहुरंग ।

नृप रानी परिजन सुकृत मधुकर वारिविहंग ॥ ४० ॥

सीय खयंवर कथा सुहाई। सरित सुहावनि सो छवि छाई ॥

नदी नाव पटु प्रस्न अनेका। केवट कुसल उतर सविवेका ॥

सुनि अनुकथन परस्पर होई। पथिक समाज सोह सरि सोई ॥

घोर धार भृगुनाथ रिसानी। घाट सुवद्व राम वर वानी ॥

सानुज राम विवाह उछाहू। सो सुभ उमग सुखद सब काहू ॥

कहत सुनत हरपहिं पुलकाहीं। ते सुकृती मन मुदित नहाहीं ॥

राम तिलक हित मंगल साजा। परव जोग जनु जुरे समाजा ॥

काई कुमति केकई केरी। परी जासु फल विपति घनेरी ॥

दो०—समन अमित उतपात सब भरतचरित जप जाग ।

कलि अघ खल अवगुन कथन ते जलमल बग काग ॥ ४१ ॥

कीरति सरित छहूँ रितु रूरी। समय सुहावनि पावनि भूरी ॥

हिम हिमसैलसुता सिव व्याहू। सिसिर सुखद प्रभु जनम उछाहू ॥

वरनव राम विवाह समाजू। सो मुद मंगलमय रितुराजू ॥

ग्रीषम दुसह राम वनगवनू। पंथकथा खर आतप पवनू ॥

वरपा घोर निसाचर रारी। सुरकुल सालि सुमंगलकारी ॥

राम राज सुख विनय बड़ाई। विसद सुखद सोइ सरद मुहाई ॥

सती सिरोमनि सिय गुनगाथा। सोइ गुन अमल अनूपम पाथा ॥

भरत सुभाउ सुसीतलताई। सदा एकरस वरनि न जाई ॥

दो०—अवलोकनि बोलनि मिलनि प्रीति परसपर हास ।

भायप भलि चहु बंधु को जल मापुरी सुवास ॥ ४२ ॥

आरति विनय दीनता मोरी । लघुता ललित सुचारि न थोरी ॥
 अद्भुत सलिल मुनत गुनकारी । आस पिआम मनोमल हारी ॥
 राम सुप्रेमहि पोषत पानी । हरत सकल कलि कलुप गलानी ॥
 भव श्रम सोपक तोपक तोषा । समन दुरित दुख दारिद्र दोषा ॥
 काम कोह मद मोह नसावन । विमल त्रिवेक विराग बढ़ावन ॥
 सादर मज्जन पान किए तें । मिटहिं पाप परिताप हिए तें ॥
 जिन्ह एहिं वारि न मानस धोए । ते कायर कलिकाल विगोए ॥
 चूपित निरखि रवि कर भववारी । फिरिहहिं मृग जिमि जीव दुखारी ॥

दो०—मति अनुहारि सुचारि गुन गन गनि मन अन्हवाइ ।

सुमिरि भवानी संकरहि कह कवि कथा सुहाइ ॥ ४३(क) ॥

अव रघुपति पद पंकरुह हियें धरि पाइ प्रसाद ।

कहउँ जुगल मुनियर्य कर मिलन सुभग संवाद ॥ ४३(ख) ॥

भरद्वाज मुनि वसहिं प्रयागा । तिन्हहिराम पद अति अनुरागा ॥
 तापस सम दम दया निधाना । परमारथ पथ परम सुजाना ॥
 माघ मकरगत रवि जब होई । तीरथपतिहिं आव सब कोई ॥
 देव दनुज किंनर नर श्रेणी । सादर मज्जहिं सकल त्रिवेणी ॥
 पूजहिं माधव पद जलजाता । परसि अखय घटु हरपहिं गाता ॥
 भरद्वाज आश्रम अति पावन । परम रम्य मुनिवर मन भावन ॥
 तहाँ होइ मुनि रिपय समाजा । जाहिं जे मज्जन तीरथराजा ॥
 मज्जहिं प्रात समेत उछाहा । कहहिं परसपर हरि गुन गाहा ॥

दो०—ब्रह्म निरूपन धरम विधि बरनहिं तत्त्व विभाग ।

कहहिं भगति भगवंत के संजुत ग्यान विराग ॥ ४४ ॥

एहि प्रकार भरि साध नहाहीं । पुनि सब निज निज आश्रम जाहीं ।
 प्रति संवत अति होइ अनंदा । मकर मज्जि गवनहिं मुनिचुंदा ॥
 एक वार भरि मकर नहाए । सब मुनीस आश्रमन्ह सिधाए ॥
 जागवलिक मुनि परम विवेकी । भरद्वाज राखे पद टेकी ॥
 सादर चरन सरोज पखारे । अति पुनीत आसन बैठारे ॥
 करि पूजा मुनि खुजसु बखानी । बोले अति पुनीत मृदु बानी ॥
 नाथ एक संसउ बड़ सोरें । करगत वेदतत्त्व सबु तोरें ॥
 कहत सो मोहि लागत भय लाजा । जाँ न कहउँ बड़ होइ अकाजा ॥

दो०—संत कहहिं असि नीति प्रभु श्रुति पुरान मुनि गाव ।

होइ न विमल विवेक उर गुर सन किएँ दुराव ॥ ४५ ॥

अस विचारि प्रगटउँ निज मोह । हरहु नाथ करि जन पर छोह ॥
 राम नाम कर अमित प्रभावा । संत पुरान उपनिषद गावा ॥
 संतत जपत संभु अविनासी । सिव भगवान ग्यान गुन रासी ॥
 आकर चारि जीव जग अहहीं । कासीं भरत परम पद लहहीं ॥
 सोपि राम महिमा मुनिराया । सिव उपदेसु करत करि दाया ॥
 रामु कवन प्रभु पूछउँ तोही । कहिअ बुझाइ कृपानिधि मोही ॥
 एक राम अवधेस कुमारा । तिन्ह कर चरित विदित संसारा ॥
 नारि विरहँ दुखु लहेउ अपारा । भयउ रोषु रन रावनु मारा ॥

दो०—प्रभु सोइ राम कि अपर कोउ जाहि जपत त्रिपुरारि ।

सत्यधाम सर्वग्य तुम्ह कहहु विवेकु विचारि ॥ ४६ ॥

जैसे मिट्टे मोर भ्रम भारी। कहहु सो कथा नाथ विस्तारी।
 जागवलिक बोले मुसुकाई। तुम्हहि विदित रघुपति प्रभुताई।
 रामभगत तुम्ह मन क्रम वानी। चतुराई तुम्हारि मैं जानी।
 चाहहु सुनै राम गुन गूढ़। कीन्हिहु प्रसन्न मनहुँ अति मृदा ॥
 तात सुनहु सादर मनु लाई। कहउँ राम के कथा मुहाई ॥
 महामोहु महिपेसु विसाला। रामकथा कालिका कगला ॥
 रामकथा ससि किरन समाना। संत चकोर करहिं जेहि पाना ॥
 ऐसेइ संसय कीन्ह भवानी। महादेव तव कहा बखानी ॥
 दो०—कहउँ सो प्रति अनुहारि अब उमा संभु संवाद ।

॥ भयउ समय जेहि हेतु जेहि सुनु मुनि मिटिहि विपाद ॥ ४७ ॥

एक वार त्रेता जुग माहीं। संभु गए कुंभज रिपि पाहीं ॥
 गंग सती जगजननि भवानी। पूजे रिपि अखिलेश्वर जानी ॥
 रामकथा मुनियर्ज बखानी। सुनी महेश परम सुखु मानी ॥
 पि पूछी हरिभगति सुहाई। कही संभु अधिकारी पाई ॥
 त सुनत रघुपति गुन गाथा। कलु दिन तहाँ रहे गिरिनाथा ॥
 सन विदा मागि त्रिपुरारी। चले भवन सँग दच्छकुमारी ॥
 अवसर भंजन महिभारा। हरि रघुवंस लीन्ह अवतारा ॥
 धचन तजि राजु उदासी। दंडक वन विचरत अविनासी ॥

दरयें विचारत जात हर केहि विधि दरसनु होइ।
 त रूप अवतरेउ प्रभु गएँ जान सधु कोइ ॥४८(क)॥
 दर उर अति छोभु सती न जानहिं मरमु सोइ।
 सी दरसन लोभु मन डरु लोचन लालची ॥

रावन मरन मनुज कर जाचा । प्रभु विधि वचनु कीन्ह चह साचा ॥
 जौं नहिं जाउँ रहइ पछितावा । करत विचारु न वनत वनावा ॥
 एहिं विधि भए सोचवस ईसा । तेही समय जाइ दससीसा ॥
 लीन्ह नीच मारीचहि संग्गा । भयउ तुरत सोइ कपट कुरंग्गा ॥
 करि छलु मूढ़ हरी वैदेही । प्रभु प्रभाउ तस विदित न तेही ॥
 मृग बधि बंधु सहित हरि आए । आश्रमु देखि नयन जल छाए ॥
 विरह विकल नर इव रघुराई । खोजत विपिन फिरत दोउ भाई ॥
 कवहूँ जोग वियोग न जाकें । देखा ग्रगट विरह दुखु ताकें ॥

दो०—अति विचित्र रघुपति चरित जानहिं परमसुजान ।

जे मतिमंद विमोह बस हृदयँ धरहिं कछु आन ॥ ४९ ॥

संभु समय तेहि रामहि देखा । उपजा हियँ अति हरषु विसेपा ॥
 भरि लोचन छवि सिंधु निहारी । कुसमय जानि न कीन्ह चिन्हारी ॥
 जय सच्चिदानंद जग पावन । अस कहि चलेउ मनोज नसावन ॥
 चले जात सिव सती समेता । पुनि पुनि पुलकत कृपानिकेता ॥
 सतीं सो दसा संभु कै देखी । उर उपजा संदेहु विसेपी ॥
 संकरु जगतबंध जगदीसा । सुर नर मुनि सब नावत सीसा ॥
 तिन्ह नृपसुतहि कीन्ह परनामा । कहि सच्चिदानंद परधामा ॥
 भए मगन छवि तासु विलोकी । अजहूँ प्रीति उर रहति न रोकी ॥

दो०—ब्रह्म जो व्यापक विरज अज अकल अनीह अभेद ।

सो कि देह धरि होइ नर जाहि न जानत वेद ॥ ५० ॥

विष्णु जो सुर हित नरतनु धारी । सोउ सर्वग्य जथा त्रिपुरारी ॥
 खोजइ सो कि अग्य इव नारी । ग्यानधाम श्रीपति असुरारी ॥

संभ्रुगिरा पुनि मृषा न होई।सिधु सर्वग्य जान सयु कोई ॥
 अस संसय मन भयउ अपारा।होइ न हृदयँ प्रबोध प्रचारा ॥
 जद्यपि प्रगट न कहेउ भवानी।हर अंतरजामी सब जानी ॥
 सुनहि सती तव नारि सुभाऊ।संमय अस न धरिअ उर काऊ ॥
 जासु कथा कुंभज रिति गई।भगति जासु भँ मुनिहि सुनाई ॥
 सोइ भम इष्टदेव रघुवीरा।सेवन जाहि सदा मुनि धीरा ॥

छं०—मुनि धीर जोगी सिद्ध संतत चिमल मन जेहि ध्यावहीं ।
 कहि नेति निगम पुरान आगम जासु कोरति गावहीं ॥
 सोइ रामु व्यापक भद्र मुचन निकाय पति माया धनी ।
 अयतरेउ अपने भगत हित निजतंत्र नित रघुकुलमनी ॥

सो०—साग न उर उपदेसु जद्यपि कहेउ सिवें चार बहु ।
 बोलें विहसि महेशु हरिमाया वतु जानि जियें ॥ ५? ॥
 जाँ तुम्हरे मन अति संदेह।ताँ किन जाइ परीछा लेह ॥
 तव लागि घँठ अहँउँ बटछाहीं।जव लागि तुम्ह ऐहहु मोहि पाहीं ॥
 जैसेँ जाइ मोह भ्रम भारी।करेहु सो जतनु विवेक विचारी ॥
 चलीं सती सिव आयसु पाई।करहि विचारु करीं का भाई ॥
 इहाँ संभ्रु अस मन अनुमाना।दच्छमुता कहँ नहि कल्याना ॥
 मोरेहु कहँ न संसय जाहो।विधि विपरीत भलाई नाहीं ॥
 होइहि सोइ जो रामरचि राखा।को करि तर्क बदाव साखा ॥
 अस कहि लग जपन हरिनामा।गई सती जहँ प्रभु सुखशामा ॥

दो०—पुनि पुनि हृदयँ विचारु करि धरि सीता कर रूप ।

भाषेँ नैति नैति नैति नैति नैति नैति नैति नैति नैति ॥ ५३ ॥

रावन मरन मनुज कर जाचा । प्रभु विधि वचनु कीन्ह चह साचा ॥
 जौं नहिं जाउँ रहइ पछितावा । करत विचारु न वनत वनावा ॥
 एहिं विधि भए सोचवस ईसा । तेही समय जाइ दससीसा ॥
 लीन्ह नीच मारीचहि संगी । भयउ तुरत सोइ कपट कुरंगा ॥
 करि छलु मूढ़ हरी वैदेही । प्रभु प्रभाउ तस विदित न तेही ॥
 मृग वधि वंधु सहित हरि आए । आश्रमु देखि नयन जल छाए ॥
 विरह विकल नर इव रघुराई । खोजत विपिन फिरत दोउ भाई ॥
 कवहुँ जोग वियोग न जाकें । देखा प्रगट विरह दुखु ताकें ॥

दो०—अति विचित्र रघुपति चरित जानहिं परमसुजान ।

जे मतिमंद विमोह बस हृदयें धरहिं कछु जान ॥ ४९ ॥

संभु समय तेहि रामहि देखा । उपजा हियँ अति हरपु विसेपा ॥
 भरि लोचन छवि सिंधु निहारी । कुसमय जानि न कीन्ह चिन्हारी ॥
 जय सच्चिदानंद जग पावन । अस कहि चलेउ मनोज नसावन ॥
 चले जात सिव सती समेता । पुनि पुनि पुलकत कृपानिकेता ॥
 सतीं सो दसा संभु कै देखी । उर उपजा संदेहु विसेपी ॥
 संकरु जगतबंध जगदीसा । सुर नर मुनि सब नावत सीसा ॥
 तिन्ह नृपसुतहि कीन्ह परनामा । कहि सच्चिदानंद परधामा ॥
 भए मगन छवि तासु विलोकी । अजहुँ प्रीति उर रहति न रोकी ॥

दो०—ब्रह्म जो व्यापक विरज अज अकल अनीह अभेद ।

सो कि देह धरि होइ नर जाहि न जानत वेद ॥ ५० ॥

विष्णु जो सुर हित नरतनु धारी । सोउ सर्वग्य जथा त्रिपुरारी ॥
 खोजइ सो कि अग्य इव नारी । ग्यानधाम श्रीपति असुरारी ॥

संभुगिरा पुनि सृपा न होई।सिव मर्वग्य जान सवु कोई ॥
 अस संसय मन भयउ अपारा।होइ न हृदयँ प्रबोध प्रचारा ॥
 जद्यपि प्रगट न कहेउ भवानी।हर अंतरजामी सब जानी ॥
 सुनहि सती तव नारि सुभाऊ।संसय अस न धरिअ उर काऊ ॥
 जासु कथा कुंभज रिपि गाई।भगति जासु मं मुनिहि सुनाई ॥
 सोइ मम इष्टदेव रघुवीरा।सेवत जाहि सदा मुनि धीरा ॥

छं०—मुनि धीर जोगी सिद्ध संतत विमल मन जेहि ध्यावही ।
 कहि नेति निगम पुरान आगम जासु कोरति गावही ॥
 सोइ रामु व्यापक ब्रह्म भुवन निकाय पति माया धनी ।
 अवतरेउ अपने भगत हित निजतंत्र नित रघुकुलमनी ॥

सो०—लाग न उर उपदेसु जदपि कहेउ सिवें चार बहु ।
 बोले विहसि महेसु हरिमाया बलु जानि जियें ॥ ५१ ॥
 जाँ तुम्हरे मन अति संदेह।तौं किन जाइ परीछा लेह ॥
 तव लागि बैठ अंहउँ बटछाहीं।जब लागि तुम्ह ऐहहु सोहि पाहीं ॥
 जैसें जाइ मोह भ्रम भारी।करेहु सो जतनु विवेक विचारी ॥
 चलीं सती सिव आयसु पाई।करहि विचारु करों का भाई ॥
 इहाँ संभु अस मन अनुमाना।दच्छसुता कहूँ नहिं कल्याणा ॥
 मोरेहु कहे न संमय जाहीं।विधि विपरीत भलाई नाहीं ॥
 होइहि सोइ जो राम रचि राखा।को करि तर्क बदावै साखा ॥
 अस कहि लगे जपन हरिनामा।गई सती जहँ प्रभु सुखधामा ॥

दो०—पुनि पुनि हृदयें विचारु करि धरि सीता कर रूप ।

आगे होइ चलि पंथ तेहिं जेहिं आवत नर भूप ॥ ५२ ॥

लल्लिमन दीग्व उमाङ्गन वेषा । चकित भए भ्रम हृदयँ विसेषा ॥
 कहि न सकत कह्यु अति गंभारा । प्रभु प्रभाउ जानत मति श्रीरा ॥
 सती कपटु जानेउ सुरखासी । सबदरसी सब अंतरजामी ॥
 सुमिरत जाहि मिटइ अग्याना । सोइ सरवग्य रामु भगवाना ॥
 सती कीन्ह चह तहँहुँ दुराऊ । देखहु नारि सुभाव प्रभाऊ ॥
 निज माया बलु हृदयँ बखानी । बोले विहसि रामु मृदु वानी ॥
 जोरि पानि प्रभु कीन्ह प्रनामू । पिता समेत लीन्ह निज नामू ॥
 कहेउ बहोरि कहाँ वृपकेतू । विपिन अकैलि फिरहु केहि हेतू ॥

दो०—राम वचन मृदु गूढ सुनि उपजा अति संकोचु ।

सती सभोत महेस पहिँ चलीँ हृदयँ वड़ सोचु ॥ ५३ ॥

मैं संकर कर कहा न माना । निज अग्यानु राम पर आना ॥
 जाइ उतरु अब देहउँ काहा । उर उपजा अति दारुन दाहा ॥
 जाना राम सतीं दुखु पावा । निज प्रभाउ कह्यु प्रगटि जनावा ॥
 सतीं दीख कौतुकु मग जाता । आगें रामु सहित श्री भ्राता ॥
 फिरि चितवा पाछें प्रभु देखा । सहित बंधु सिय सुंदर वेषा ॥
 जहँ चितवहिँ तहँ प्रभु आसीना । सेवहिँ सिद्ध मुनीस प्रवीना ॥
 देखे सिव त्रिधि विष्णु अनेका । अमित प्रभाउ एक तें एका ॥
 वंदत चरन करत प्रभु सेवा । विविध वेष देखे सब देवा ॥

दो०—सती विधात्री इंदिरा देखीँ अमित अनूप ।

जेहिँ जेहिँ वेष अजादि सुर तेहिँ तेहिँ तन अनुरूप ॥ ५४ ॥

देखे जहँ तहँ रघुपति जेते । सक्तिन्ह सहित सकल सुर तेते ॥
 जीव चराचर जो संसारा । देखे सकल अनेक प्रकारा ॥

पूजहिं प्रभुहि देव बहु वेपा। राम रूप दूमर नहिं देखा ॥
 अवलोकै रघुपति बहुतेरे। सीता महित न वेप घनेरे ॥
 सोइ रघुवर सोइ लछिमनु सीता। देखि मती अति भई मभीता ॥
 हृदय कंप तन मुधि कछु नाहीं। नयन मृदि बँठीं मग माहीं ॥
 बहुरि बिलोकैउ नयन उधारी। कछु न दीख तहँ दच्छकुमारी ॥
 पुनि पुनि नाइ राम पद सीसा। चलीं तहाँ जहँ गंइ गिरीमा ॥
 दो०—गईं समोप महंम तव हँसि पूछी कुसलान ।

लीन्हि परीछा कवन विधि कहहु मत्य मव बात ॥ ५५ ॥

मासपारायण, दूमरा विश्राम

सतीं समुझि रघुवीर प्रभाऊ। भयवस सिव सन कीन्ह दुगाऊ ॥
 कछु न परीछा लीन्हि गोसाईं। कीन्ह प्रनामु तुम्हारिहि नाई ॥
 जो तुम्ह कहा सो मृषा न होई। मोरें मन प्रतीति अति मोई ॥
 तव संकर देखेउ धरि ध्याना। सतीं जो कीन्ह चरित मबु जाना ॥
 बहुरि राममायहि सिरु नावा। प्रेरि मतिहि जेहि झूठ कहावा ॥
 हरि इच्छा भारी बलवाना। हृदयँ विचारत मंभु सुजाना ॥
 सतीं कीन्ह सीता कर वेपा। सिव उग भयउ विपाद विसेपा ॥
 जाँ अब करउँ सती सन प्रीती। मिटइ भगति पबु होइ अनीती ॥
 दो०—परम पुनीत न जाइ तजि किरें प्रेम बइ पापु ।

प्रगटि न कहत महंसु कछु हृदयँ अधिक संतापु ॥ ५६ ॥

तव संकर प्रभु पद सिरु नावा। सुमिरत रामु हृदयँ अस आवा ॥
 एहिं तन सतिहि भेट मोहि नाहीं। सिव संकल्पु कीन्ह मन माहीं ॥
 अस विचारि संकरु मतिधीरा। चले भवन सुमिरत रघुवीरा ॥

चलत गगन भै गिरा सुहाई । जय महेस भलि भगति द्वाई ॥
 अस पन तुम्ह विनु करइ को आना । राम भगत समरथ भगवाना ॥
 सुनि नभगिरा सती उर सोचा । पूछा सिवहि समेत सकोचा ॥
 कीन्ह कवन पन कहहु कृपाला । सत्वधाम प्रभु दीनदयाला ॥
 जदपि सतीं पूछा बहु भाँती । तदपि न कहेउ त्रिपुर आराती ॥

दो०—सतीं हृदयँ अनुमान किय सवु जानेउ सर्वग्य ।

कीन्ह कपटु मैं संभु सन नारि सहज जइ अग्य ॥५७(क)॥

सो०—जलु पय सरिस विकाइ देखहु प्रीति कि रोति भलि ।

विलग होइ रसु जाइ कपट खटाई परत पुनि ॥५७(ख)॥

हृदयँ सोचु समुझत निज करनी । चिंता अमित जाइ नहिं चरनी ॥
 ३ ॥ ३ ॥ सिव परम अगाथा । प्रगट न कहेउ मोर अपराधा ॥
 संकर स्व अवलोकि भवानी । प्रभु मोहि तजेउ हृदयँ अकुलानी ॥
 निज अघ समुझि न कलु कहि जाई । तपइ अवाँ इव उर अधिकारि ॥
 सतिहि ससोच जानि इ ॥ कथा मंदर मख वेन ॥

अब विधि अस नृसिअ नहिं तोही । संकर विमुस्र जिआवसि मोही ॥
 कहि न जाइ कछु हृदय गलानी । मन भहुँ रामहि सुमिर सयानी ॥
 जां प्रभु दीनदयालु कहावा । आरति हरन बेद जसु गावा ॥
 तौ में चिनय करउँ कर जोरी । छूटउ वेगि देह यह मोरी ॥
 जां मोरें सिव चरन सनेह । मन क्रम बचन मत्य त्रतु एह ॥

दो०—ती सखदरसी सुनिअ प्रभु करउ सो धेगि उपाइ ।

होद मरनु जेहिं विनहिं थम हुसह बिपत्ति बिहाइ ॥ ५९ ॥

एहि विधि दुखित प्रजेशकुमारी । अकथनीय दारुन दुखु भारी ॥
 धीतें संवत सहस सतासी । तजी समाधि संभ्रु अविनासी ॥
 राम नाम सिव सुमिरन लागे । जानेउ सतीं जगतपति जागे ॥
 जाइ संभ्रु पद बंदनु कीन्हा । सनमुख संकर आसनु दीन्हा ॥
 लगे कहन हरिकथा रसाला । दच्छ प्रजेश भए तेहि काला ॥
 देखा विधि पिचारि सब लायक । दच्छहि कीन्ह प्रजापति नायक ॥
 बड़ अधिकार दच्छ जव पावा । अति अभिमानु हृदयें तव आवा ॥
 नहिं कोउ अस जनमा जग माहीं । प्रभ्रुता पाइ जाहि मद नाहीं ॥

दो०—दच्छ लिए मुनि घोलि सव करन लगे बड़ जाग ।

नेवते सादर सकल सुर जे पावत सब भाग ॥ ६० ॥

किंनर नाग सिद्ध गंधर्वा । ब्रधुन्ह समेत चले सुर सर्वा ॥
 विष्णु पिरंचि महेसु विहाई । चले सकल सुर जान बनाई ॥
 सतीं विलोके व्योम चिमाना । जात चले सुंदर विधि नाना ॥
 सुर सुंदरी करहिं कल गाना । सुनत श्रवन छटहिं मुनि ध्याना ॥
 पृष्टेउ तव सिवै कहेउ बखानी । पिता जग्य सुनि कछु हरपानी ॥

चलत गगन भै गिरा सुहाई । जय महेस भलि भगति द्वाइ ॥
 अस पन तुम्ह विनु करइ को आना । राम भगत समरथ भगवाना ॥
 सुनि नभगिरा सती उर सोचा । पूछा सिवहि समेत सकोचा ॥
 कीन्ह कवन पन कहहु कृपाला । सत्यधाम प्रभु दीनदयाला ॥
 जदपि सतीं पूछा बहु भाँती । तदपि न कहेउ त्रिपुर आराती ॥
 दो०—सतीं हृदयँ अनुमान किय सबु जानेउ सर्वग्य ।

कीन्ह कपटु मै संभु सन नारि सहज जइ अग्य ॥५७(क)॥

सो०—जलु पय सरिस विकाइ देखहु प्रीति कि रीति भलि ।

विलग होइ रसु जाइ कपट खटाई परत पुनि ॥५७(ख)॥

हृदयँ सोचु समुझत निज करनी । चिंता अमित जाइ नहिं वरनी ॥
 कृपासिंधु सिव परम अगाधा । प्रगट न कहेउ मोर अपराधा ॥
 संकर रुख अवलोकि भवानी । प्रभु मोहि तजेउ हृदयँ अकुलानी ॥
 निज अघ समुझि न कछु कहि जाई । तपइ अयाँ इय उर अधिकारि ॥
 सतिहि ससोच जानि वृषकेतू । कहीं कथा सुंदर सुख हेतू ॥
 वरनत पंथ विविध इतिहासा । बिस्वनाथ पहुँचे कैलासा ॥
 तहँ पुनि संभु समुझि पन आपन । बैठे बट तर करि कमलासन ॥
 संकर सहज सरूपु सम्हारा । लागि समाधि अखंड अपारा ॥

दो०—सती बसहिं कैलास तव अधिक सोचु मन माहिं ।

मरमु न कोऊ जान कछु जुग सम दिवस सिराहिं ॥ ५८ ॥

नित नव सोचु सती उर भारा । कब जैहउँ दुख सागर पारा ॥
 मै जो कीन्ह रघुपति अपमाना । पुनि पति बचनु मृषा करि जाना ॥
 सो फलु मोहि विधाताँ दीन्हा । जो कछु उचित रहा सोइ कीन्हा ॥

अब विधि अस बृद्धिअ नहिं तोही । संकर विमुग्ध जिआवमि मोही ॥
 कहि न जाइ कलु हृदय गलानी । मन महुँ रामहि सुमिर मयानी ॥
 जौं प्रभु दीनदयालु कहावा । आरति हरन बेद जसु गावा ॥
 तौ मैं विनय करउँ कर जोरी । छूटउ बेगि देह यह मोरी ॥
 जौं मोरें सिव चरन सनेह । मन क्रम बचन मरत्य व्रतु एह ॥

दो०—तौ सबदरसी मुनिअ प्रभु करउ सो बेगि उपाइ ।

होइ मरनु जेहि विनहि थम दुसह विपत्ति विहाइ ॥ ५९ ॥

एहि विधि दुखित प्रजेसकुमारी । अकथनीय दारुन दुखु भारी ॥
 वीतें संवत सहस सतासी । तजी समाधि मंभु अविनासी ॥
 राम नाम सिव सुमिरन लागे । जानेउ सर्ती जगतपति जागे ॥
 जाइ संभु पद बंदनु कीन्हा । सनमुख संकर आसनु दीन्हा ॥
 लगे कहन हरिकथा रसाला । दच्छ प्रजेस भए तेहि काला ॥
 देखा विधि विचारि सब लायक । दच्छहि कीन्ह प्रजापति नायक ॥
 बड़ अधिकार दच्छ जव पावा । अति अभिमानु हृदयँ तव आवा ॥
 नहिं कोउ अस जनमाजग माहीं । प्रभुता पाइ जाहि मद नाहीं ॥

दो०—दच्छ लिए मुनि शोति सब करन लगे बड़ जाग ।

नवतें सादर सकल सुर जे पावत मस्र भाग ॥ ६० ॥

किंनर नाग सिद्ध गंधर्वा । बधुन्ह समेत चले सुर सर्वा ॥
 विष्णु विरंचि महेसु विहाई । चले सकल सुर जान बनाई ॥
 सर्ती विलोके त्र्योम विमाना । जात चले सुंदर विधि नाना ॥
 सुर सुंदरी करहिं कल गाना । सुनत श्रवन छूटहिं मुनि प्यला ॥
 पृच्छेउ तव सिवँ कहेउ बखानी । पिता जग्य ॥

जों महेसु मोहि आयसु देहीं । कछु दिन जाइ रहों मिस एहीं ॥
पति परित्याग हृदयँ दुखु भारी । कहइ न निज अपराध विचारी ॥
बोली सती मनोहर वानी । भय संकोच प्रेम रस सानी ॥

दो०—पिता भवन उत्सव परम जों प्रभु आयसु होइ ।

तौ में जाउँ कृपायतन सादर देखन सोइ ॥ ६१ ॥

कहेहु नीक मोरेहुँ मन भावा । यह अनुचित नहिँ नेवत पठावा ॥
दच्छ सकल निज सुता बोलाई । हमरें वयर तुम्हउ विसराई ॥
ब्रह्मसभाँ हम सन दुखु माना । तेहि तें अजहुँ करहिँ अपमाना ॥
जौं विनु बोलें जाहु भवानी । रहइ न सीलु सनेहु न कानी ॥
जदपि मित्र प्रभु पितु गुर गेहा । जाइअ विनु बोलेहुँ न सँदेहा ॥
तदपि विरोध मान जहँ कोई । तहाँ गएँ कल्यानु न होई ॥
भाँति अनेक संभु समुझावा । भावी वस न ग्यानु उर आवा ॥
कह प्रभु जाहु जो विनहिँ बोलाएँ । नहिँ भलि वात हमारे भाएँ ॥

दो०—कहि देखा हर जतन बहु रहइ न दच्छकुमारि ।

दिए मुख्य गन संग तव विदा कोन्ह त्रिपुरारि ॥ ६२ ॥

पिता भवन जब गई भवानी । दच्छ त्रास काहुँ न सनमानी ॥
सादर भलेहिँ मिली एक माता । भगिनीं मिलीं बहुत मुसुकाता ॥
दच्छ न कछु पूछी कुसलाता । सतिहि विलोकि जरे सब गाता ॥
सतीं जाइ देखेउ तव जागा । कतहुँ न दीख संभु कर भागा ॥
तव चित चढ़ेउ जो संकर कहेऊ । प्रभु अपमानु समुझि उर दहेऊ ॥
पाछिल दुखु न हृदयँ अस व्यापा । जस यह भयउ महा परितापा ॥
जद्यपि जग दारुन दुख नाना । सब तें कठिन जाति अवमाना ॥

समुझिसो मतिहि भयउ अतिक्रोधा । वदु विधिजननीं कीन्ह प्रबोधा

दो०—सिव अपमानु न जाइ सहि हृदयें न हांइ प्रबोध ।
सकल सभहि हठि हटकि तव बालीं वचन मकांध ॥ ६३ ॥

सुनहु सभामद सकल मुनिंदा । कही मुनी जिन्ह मंकर निंदा ॥
सो फलु तुरत लहव मव काहँ । भली भाँति पछिताव पिताहँ ॥
संत संभु श्रीपति अपवादा । मुनिअ जहाँ तहँ अमि मरजादा ॥
काटिअ तासु जीभ जो बसाई । श्रवन मूदि न त चलिअ पराई ॥
जगदातमा महसु पुरारी । जगत जनक मव के हितकारी ॥
पेता मंदमति निंदत तेहो । दच्छ मुक मंभव यह देही ॥
जिहडँ तुरत देह तेहि हंतू । उर धरि चंद्रमालि वृषकेनू ॥
स कहि जोग अगिनि तनु जारा । भयउ सकल मग्व हाहाकारा ॥

०—मती मरनु सुनि संभु गन लग्य करन मग्व लीम ।
जग्य विधंस विलोकि भृगु रच्छा कीन्हि मुनीस ॥ ६४ ॥

पार मव मंकर पाए । वीरभद्रु करि कोप पटाए ॥
विधंस जाइ तिन्ह कीन्हा । सकल मुरन्ह विधिवत फलु दीन्हा
विदित दच्छ गति सोई । जसि कलु संभु विमुख के होई ॥
होस सकल जग जानी । ताते में संछेप बग्वानी ॥
त हरि सन वरु मागा । जनम जनम सिव पद अनुरागा ॥
न हिमगिरि गृह जाई । जनमीं पारवती तनु पाई ॥
मा मेल गृह जाई । सकल सिद्धि संपति तहँ छाई ॥
नेन्ह सुआश्रम कीन्हे । उचित वास हिम भृधर दीन्हे ॥

दो०—सदा सुमन फल सहित सब द्रुम नव नाना जाति ।

प्रगटी सुंदर सैल पर मनि आकर बहु भाँति ॥ ६५ ॥

सरिता सब पुनीत जलु बहहीं । खग मृग मधुप सुखी सब रहहीं ॥
 सहज बयरु सब जीवन्ह त्यागा । गिरि पर सकल करहिं अनुरागा ॥
 सोह सैल गिरिजा गृह आएँ । जिमि जनु रामभगति के पाएँ ॥
 नित नूतन मंगल गृह तासू । ब्रह्मादिक गावहिं जसु जासू ॥
 नारद समाचार सब पाए । कौतुकी गिरि गेह सिधाए ॥
 सैलराज बड़ आदर कीन्हा । पद पखारि बर आसनु दीन्हा ॥
 नारि सहित मुनि पद सिरु नावा । चरन सलिल सबु भवनु सिंचावा
 निज सौभाग्य बहुत गिरि बरना । सुता बोलि मेली मुनि चरना ॥

दो०—त्रिकालग्य सर्वग्य तुम्ह गति सर्वत्र तुम्हारि ।

कहहु सुता के दोष गुन मुनिवर हृदयँ विचारि ॥ ६६ ॥

कह मुनि विहसि गूढ़ मृदु वानी । सुता तुम्हारि सकल गुन खानी ॥
 सुंदर सहज सुसील सयानी । नाम उमा अंबिका भवानी ॥
 सब लच्छन संपन्न कुमारी । होइहि संतत पियहि पिआरी ॥
 सदा अचल एहि कर अहिवाता । एहि तें जसु पैहहिं पितु माता ॥
 होइहि पूज्य सकल जग माहीं । एहि सेवत कछु दुर्लभ नाहीं ॥
 एहि कर नामु सुमिरि संसारा । त्रिय चढ़िहहिं पतिव्रत असिधारा ॥
 सैल सुलच्छन सुता तुम्हारी । सुनहु जे अब अवगुन दुइ चारी ॥
 अगुन अमान मातु पितु हीना । उदासीन सब संसय छीना ॥

दो०—जोगी जटिल अकाम मन नगन अमंगल वेप ।

अस स्वामी एहि कहँ मिलिहि परी हस्त असि रेख ॥ ६७ ॥

सुनि मुनि गिरा सत्य जियँ जानी । दुख दंपतिहि उमा हरपानी ॥
 नारदहँ यह भेदु न जाना । दसा एक समुझब बिलगाना ॥
 सकल सखीं गिरिजा गिरि मँना । पुलक सरीर भरे जल नैना ॥
 होइ न मृषा देवरिपि भाषा । उमा सो बचनु हृदयँ धरि राखा ॥
 उपजेउ सिव पद कमल सनेह । मिलन कठिन मन भासँदेह ॥
 जानि कुअवसरु प्रीति दुराई । सखी उछँग बैठी पुनि जाई ॥
 झूठि न होइ देवरिपि बानी । सोचहिँ दंपति सखीं सयानी ॥
 उर धरि धीर कहइ गिरिराऊ । कहहु नाथ का करिअ उपाऊ ॥
 दो०—कह मुनीस हिमयंत सुनु जो विधि लिटा लितार ।

देव दनुज नर नाग मुनि कोउ न मेटनिहार ॥ ६८ ॥

तदपि एक मँ कहउँ उपाई । होइ करै जाँ दैठ सहाई ॥
 जस बरु मँ बरनेउँ तुम्ह पाहीं । मिलिहि उमहि तस संसय नाहीं ॥
 जे जे घर कं दोष बखाने । ते सब सिव पहिँ मँ अनुमाने ॥
 जाँ विवाहु संकर सन होई । दोषउ गुन सम कह सचु कोई ॥
 जाँ अहि सेज संयन हरि करहीं । बुध कलु तिन्ह कर दोषु न धरहीं ॥
 भानु कृसानु सर्प रस खाहीं । तिन्ह कहँ मंद कहत कोउ नाहीं ॥
 सुभ अरु अमुभ सलिल सब बहई । सुरसरि कोउ अपुनीत न कहई ॥
 समरथ कहँ नहिँ दोषु गोसाई । रवि पावक सुरसरि की नाई ॥

दो०—जाँ जस हिसिपा करहिँ नर जड़ विवेक अभिमान ।

परहि कल्प भरि नरक महुँ जीव कि ईस समान ॥ ६९ ॥

सुरसरि जल कृत वारुनि जाना । कबहुँ न संत करहिँ तेहि पाना ॥
 सुरसरि मिलें सो पावन जैसे । ईस अनीसहि अंतरु तैसे ॥

संभु सहज समरथ भगवाना । एहि विवाहँ सब विधिकल्याना ॥
 दुराराध्य पै अहहिं महेश्व । आसुतोप पुनि किएँ कलेश्व ॥
 जौं तपु करै कुमारी तुम्हारी । भाविउ मेटि सकहिं त्रिपुरारी ॥
 जद्यपि वर अनेक जग माहीं । एहि कहँ सिव तजि दूसर नाहीं ॥
 वर दायक प्रनतारति भंजन । कृपासिंधु सेवक मन रंजन ॥
 इच्छित फल विनु सिव अवरार्थे । लहिअ न कोटि जोग जप साथे ॥
 दो०—अस कहि नारद सुमिरि हरि गिरिजहि दीन्हि असीस ।

होइहि यह कल्यान अब संसय तजहु गिरीस ॥ ७० ॥

कहि अस ब्रह्मभवन मुनि गयऊ । आगिल चरित सुनहु जस भयऊ
 पतिहि एकांत पाइ कह मैना । नाथ न में समुझे मुनि बना ॥
 जौं घरु वरु कुलु होइ अनूपा । करिअ विवाहु सुता अनुरूपा ॥
 न त कन्या वरु रहउ कुआरी । कंत उमा मम प्रानपिआरी ॥
 जौं न मिलिहि वरु गिरिजहि जोगू । गिरि जइ सहज कहिहि सबु लोग
 सोइ विचारि पति करेहु विवाह । जेहिं न बहोरि होइ उर दाह ॥
 अस कहि परी चरन धरि सीसा । बोले सहित सनेह गिरीमा ॥
 वरु पावक प्रगटै ससि माहीं । नारद वचनु अन्यथा नाहीं ॥
 दो०—प्रिया सोचु परिहरहु सबु सुमिरहु श्रीभगवान ।

पारवतिहि निरमयउ जेहिं सोइ करिहि कल्यान ॥ ७१ ॥

अब जौं तुम्हहि सुता पर नेह । तौ अस जाइ सिखावनु देह ।
 करै सो तपु जेहिं मिलहिं महेश्व । आन उपायँ न मिटिहि कलेश्व
 नारद वचन सगर्भ सहेतू । सुंदर सब गुन निधि वृषकेतू
 अस विचारि तुम्ह तजहु असंका । सबहि भाँति संकरु अकलंका

मुनि पति वचन हरपि मन मारिं । गई तुगत उठि गिरिजा पाहीं ॥
 उमहि विलोकि नयन भरे वारी । महित मनेह गोद बँटागी ॥
 वारहिं वार लेति उर लाई । गदगद कंठ न कष्ट कहि जाई ॥
 जगत मातु सर्वग्य भवानी । मातु सुखद बोलौं मृदु बानी ॥
 दो०—सुनहि मातु मैं दोग्य अम मपन मुनावउँ नांहि ।
 सुंदर गौर सुधिप्रवर अम उपदेगंड मांहि ॥ ७२ ॥
 करहिं जाइ तपु सैलकुमारी । नागद कहा सो मन्य विचारी ॥
 मातु पितहि पुनि यह मत भावा । तपु सुखप्रद दुख दोष नमावा ॥
 तपवल रचइ प्रपंचु विधाता । तपवल विष्णु सकल जग प्राता ॥
 तपवल संभु करहिं मंधारा । तपवल सेपु धरइ महिभारा ॥
 तप आधार सब सृष्टि भवानी । करहि जाइ तपु अम जियँ जानी ॥
 नत वचन विसमित महतारी । मपन मुनायउ गिरिहि हँकारी ॥
 तु पितहि बहुविधि समुझाई । चलो उमा तप हित हरपाई ॥
 य परिवार पिता अरु माता । भए विकल मुख आव नवाता ॥
 वेदसिरा मुनि जाइ तप सवहि कहा समुझाद ।
 पारयती महिमा मुनत रहे प्रबोधहि पाइ ॥ ७३ ॥
 रि उमा प्रानपति चरना । जाइ विपिन लागीं तपु करना ॥
 कुमार न तनु तप जोगू । पति पद सुमिरि तजेउ सबु भोगू ॥
 व चरन उपज अनुरागा । विसरी देह तपहिं मनु लाग्गा ॥
 महस मूल फल खाए । सागु खाइ सत वरप गवाँए ॥
 भोजनु वारि ब्रतासा । किण कठिन कष्ट दिन उपवासा ॥
 महि परइ सुखाई । तीनि महस

संभु सहज ममरथ भगवाना । एहि विवाहँ सब विधि कल्याना ॥
 दुराराध्य पै अहहिं महेसू । आसुतोप पुनि किएँ कलेसू ॥
 जौं तपु करै कुमारि तुम्हारी । भाविउ मेटि सकहिं त्रिपुरारी ॥
 जद्यपि वर अनेक जग माहीं । एहि कहँ सिव तजि दूसर नाहीं ॥
 वर दायक प्रनतारति भंजन । कृपासिंधु सेवक मन रंजन ॥
 इच्छित फल विनु सिव अवरार्थे । लहिअ न कोटि जोग जप सार्थे ॥
 दो०—अस कहि नारद सुमिरि हरि गिरिजहि दीन्हि असीस ।

होइहि यह कल्यान अव संसय तजहु गिरीस ॥ ७० ॥

कहि अस ब्रह्मभवन मुनि गयऊ । आगिल चरित सुनहु जस भयऊ
 पतिहि एकांत पाइ कह मैना । नाथ न मैं समुझे मुनि बैना ॥
 जौं घरु वरु कुलु होइ अनूपा । करिअ विवाहु सुता अनुरूपा ॥
 न त कन्या वरु रहउ कुआरी । कंत उमा मम प्रानपिआरी ॥
 जौं न मिलिहि वरु गिरिजहि जोगू । गिरि जइ सहज कहिहि सबु लोगू
 सोइ विचारि पति करेहु विवाहू । जेहिं न बहोरि होइ उर दाहू ॥
 अस कहि परी चरन धरि सीसा । बोले सहित सनेह गिरीसा ॥
 वरु पावक प्रगटै ससि माहों । नारद वचनु अन्यथा नाहीं ॥
 दो०—प्रिया सोचु परिहरहु सबु सुमिरहु श्रीभगवान ।

पारवतिहि निरमयउ जेहिं सोइ करिहि कल्यान ॥ ७१ ॥

अब जौं तुम्हहि सुता पर नेहू । तौ अस जाइ सिखावनु देहू ॥
 करै सो तपु जेहिं मिलहिं महेसू । आन उपायँ न मिटिहि कलेसू ॥
 नारद वचन सगर्भ सहेतू । सुंदर सब गुन निधि वृषकेतू ॥
 अस विचारि तुम्ह तजहु असंका । सबहि भाँति संकरु अकलंका ॥

.....
.....
.....
.....

.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....

.....
.....
.....
.....
.....

नि परिहरे सुखानेउ परना । उमहि नामु तव भयउ अपरना ॥
खि उमहि तप खीन सरीरा । ब्रह्मगिरा भै गगन गर्भारा ॥

१०-भयउ मनोरथ सुफल तव सुनु गिरिराजकुमारि ।

परिहरु दुसह कलेस तव अब मिलिहहि त्रिपुरारि ॥ ७४ ॥

अस तपु काहुँन कीन्ह भवानी । भए अनेक धीर मुनि ग्यानी ॥
अब उर धरहु ब्रह्म वर चानी । सत्य सदा संतत सुचि जानी ॥
आबै पिता बोलावन जवहीं । हठ परिहरि घर जाएहु तवहीं ॥
मिलहिं तुम्हहि जव सप्त रिषीसा । जानेहु तव प्रमान चार्गीसा ॥
सुनत गिरा विधि गगन बखानी । पुलक गात गिरिजा हरपानी ॥
उमा चरित सुंदर मैं गावा । सुनहु संभु कर चरित सुहावा ॥
जव तैं सतीं जाइ तनु त्यागा । तव तैं सिव मन भयउ विरागा ॥
जपहिं सदा रघुनायक नामा । जहँ तहँ सुनहिं राम गुन ग्रामा ॥

दो०-चिदानंद सुखधाम सिव विगत मोह नद कान ।

विचरहिं महि धरि हृदयँ हरि सकल लोक अनिराम ॥ ७५ ॥

कतहुँ मुनिन्ह उपदेसहिं ग्याना । कतहुँ राम गुन करहिं बखाना ॥
जदपि अकाम तदपि भगवाना । भगत विरह दुख दुखित सुजाना ॥
एहि विधि गयउ कालु बहु वीती । नित नै होइ राम पद प्रीती ॥
नेमु प्रेमु संकर कर देखा । अविचल हृदयँ भगति कै रेखा ॥
प्रगटे राम कृतग्य कृपाला । रूप सील निधि तेज विसाला ॥
बहु प्रकार संकरहि सराहा । तुम्ह विनु अस व्रतु को निरवाहा ॥
बहुविधि राम सिवहि समुझावा । पारवती कर जन्मु मुनावा ॥
अति पुनीत गिरिजा कै करनी । विस्तर सहित कृपानिधि चरनी ॥

दो०—अब बिनती मम सुनहु सिय जौ मां पर निव नेहु ।

जाइ विद्याहहु सैलजहि यह मोहि मोगे देहु ॥ ७६ ॥

कह सिय जदपि उचित अस नाहीं । नाथ बचन पुनि मैटि न जाहीं
सिर धरि आयसु करिअ तुम्हारा । परम धरमु यह नाथ हमारा ॥
मातु पिता गुर प्रभु कै बानी । बिनहिं विचार करिअ सुभ जानी
तुम्ह सब भाँति परम हितकारी । अग्या सिर पर नाथ तुम्हारी ॥
प्रभु तोपेउ मुनि संकर बचना । भक्ति बिबेक धर्म जुत रचना ॥
कह प्रभु हर तुम्हार पन हरेऊ । अब उर राखेउ जो हम कहेंऊ ॥
अंतरधान भए अस भापी । मंकर सोइ मूरति उर राखी ॥
तवहिं सप्तरिपि सिव पहिं आए । बोले प्रभु अति बचन सुहाए ॥

दो०—पारयतां पहिं जाइ तुम्ह प्रेम परिच्छा लेहु ।

गिरिहि प्रेरि पठएहु भवन दूरि करेहु संदेहु ॥ ७७ ॥

रिपिन्ह गौरि देखी तहँ कैसी । मूरतिमंत तपस्या जैसी ॥
बोले मुनि सुनु सैलकुमारी । करहु कवन कारन तपु भारी ॥
कैहि अत्रराधहु का तुम्ह चहहु । हम सन सत्य मरमु किन कहहु ॥
कहत बचन मनु अति सकुचार्ड । हँसिहहु मुनि हमारि जड़ताई ॥
मनु हट परा न मुनइ सिखावा । चहत बारि पर भीति उटावा ॥
नारद कहा सत्य सोइ जाना । बिनु पंखन्ह हम चहहिं उड़ाना ॥
देखहु मुनि अविबेकु हमारा । चाहिअ सदा सिवहि भरतारा ॥

दो०—सुनत बचन विहसे रिपय गिरिसंभव तव देह ।

नारद करं उपदेसु मुनि कहहु बसेउ किसु गेह ॥ ७८ ॥

दच्छमुतन्ह उपदेसेन्हि जाई । तिन्ह गिरि ॥ ७९ ॥

चित्रकेतु कर घरु उन घाला । कनककसिपु कर पुनि अस हाला ॥
 नारद सिख जे सुनहिं नर नारी । अवसि होहिं तजि भवनु भिखारी ॥
 मन कपटी तन सजन चीन्हा । आपु सरिस सवही चह कीन्हा ॥
 तेहि कें वचन मानि विश्वासा । तुम्ह चाहहु पति सहज उदासा ॥
 निर्गुन निलज कुत्रेप कपाली । अकुल अगेह दिगंबर व्याली ॥
 कहहु कवन सुखु अस वरु पाएँ । भल भूलिहु ठग के बौराएँ ॥
 पंच कहें सिवँ सती विवाही । पुनि अवडेरि मराएन्हि ताही ॥

दो०—अव सुख सोवन सोचु नहिं भोग्य मागि भव खाहिं ।

सहज एकाकिन्ह के भवन कवहुँ कि नारि खटाहिं ॥ ७९ ॥

अजहूँ मानहु कहा हमारा । हम तुम्ह कहूँ वरु नीक विचारा ॥
 अति सुंदर सुचि सुखद सुसीला । गावहिं वेद जासु जस लीला ॥
 दूपन रहित सकल गुन रासी । श्रीपति पुर वैकुण्ठ निवासी ॥
 अस वरु तुम्हहि मिलाउव आनी । सुनत विहसि कह वचन भवानी ॥
 सत्य कहेहु गिरिभव तनु एहा । हठ न छूट छूटै वरु देहा ॥
 कनकउ पुनि पपान तें होई । जारेहुँ सहजु न परिहर सोई ॥
 नारद वचन न मैं परिहरऊँ । वसउ भवनु उजरउ नहिं डरऊँ ॥
 गुर कें वचन प्रतीति न जेही । सपनेहुँ सुगम न सुख सिधि तेही ॥

दो०—महादेव अवगुन भवन विष्णु सकल गुन धाम ।

जेहि कर मनु रम जाहि सन तेहि तेहीं सन काम ॥ ८० ॥

जौ तुम्ह मिलतेहु प्रथम मुनीसा । सुनतिउँ सिख तुम्हारि धरि सीसा ॥
 अव मैं जन्मु संसु हित हारा । को गुन दूपन करै विचारा ॥
 जौ तुम्हरे हठ हृदयँ विसेपी । रहिन जाइ विनु किएँ वरेपी ॥

तौ कौतुकिअन्ह आलसु नार्हीं। वर कन्या अनेक जग माहीं
जन्म कोटि लागि रगर हमारी। वरउँ मंभु न त रहउँ कुआरी।
तजउँ न नारद कर उपदेस। आपु कहहिं मन वार महेशू॥
मैं पा परउँ कहइ जगदंवा। तुम्ह गृह गवनहु भयउ विलंबा॥
देखि प्रेषु बोलै मुनि ग्यानी। जय जय जगदंविक्के भवानी॥

दो०—तुम्ह माया भगवान सिव सकल जगन पितु मातु ।
नाइ चरन सिर मुनि चले पुनि पुनि हरपत गानु ॥ ८१ ॥

जाइ मुनिन्ह हिमवंतु पठाए। करि विनती गिरजहिं गृह ल्याए॥
बहुरि सप्तरीपि सिव पहिं जाई। कथा उमा कै सकल मुनाई॥
भए मगन सिव सुनत सनेहा। हरपि सप्तरीपि गवने गेहा॥
मनु थिर करि तव संभु सुजाना। लगै करन रघुनायक ध्याना॥
गारहु असुर भयउ तेहि काला। भुज प्रताप बल तेज विमाला॥
हिं सब लोक लोकपति जीते। भए देव मुख मंपति रीते॥
जर अमर सो जीति न जाई। हारे सुग करि विविध लराई॥
विरांचि सन जाइ पुकारे। देखे विधि सब देव दुखारे॥

—सब सन कहा बुझाइ विधि दनुव निघन नव होइ ।
मनु मुक संभूत सुत एहि जेनइ रन नोट ॥ ८२ ॥

दृष्टा मुनि करहु उपाई। होइहि ईन्दर जगिहि नहाई॥
नती दच्छ मख देहा। जननी जइ हिनाजल गेहा॥
कैन्ह संभु पनि लागी। निव ननादि बेटे सबु त्यागी॥
असमंजस भारी। तइपि बरु २० उरहु
जाइ सिव पाहीं। करै होइ नकर नव

तब हम जाइ सिवहि सिर नाई। करवाउच विवाहु वरिआई ॥
एहि विधि भलेहिं देवहित होई। मत अति नीक कहइ सबु कोई ॥
अस्तुति सुरन्ह कीन्हि अति हेतू। प्रगटेउ विपमवान झपकेतू ॥

दो०—सुरन्ह कही निज विपति सब सुनि मन कीन्ह विचार ।

संभु विरोध न कुसल मोहि विहसि कहेउ अस मार ॥ ८३ ॥

तदपि करब मैं काजु तुम्हारा। श्रुति कह परम धरम उपकारा ॥
पर हित लागि तजइ जो देही। संतत संत प्रसंसहिं तेही ॥
अस कहि चलेउ सबहि सिरु नाई। सुमन धनुष कर सहित सहार्ई ॥
चलत मार अस हृदयँ विचारा। सिव विरोध ध्रुव मरनु हमारा ॥
तब आपन प्रभाउ विस्तारा। निज वस कीन्ह सकल संसारा ॥
कोपेउ जवहिं वारिचरकेतू। छन महँ मिटे सकल श्रुति सेतू ॥
ब्रह्मचर्ज व्रत संजम नाना। धीरज धरम ग्यान विग्याना ॥
सदाचार जप जोग विरागा। सभय विवेक कटकु सबु भागा ॥

छं०—भागेउ विवेकु सहाय सहित सो सुभट संजुग महि मुरे ।

सदग्रंथ पर्वत कंदरन्हि महँ जाइ तेहि अवसर दुरे ॥

होनिहार का करतार को रखवार जग खरभरु परा ।

दुइ माथ केहि रतिनाथ जेहि कहँ कोपि कर धनु सरु धरा ॥

दो०—जे सजीव जग अचर चर नारि पुरुष अस नाथ ।

ते निज निज मरजाद तजि भए सकल वस काम ॥ ८४ ॥

सब के हृदयँ मदन अभिलापा। लता निहारि नवहिं तरु साखा ॥
नदीं उमगि अंबुधि कहँ धार्ई। संगम करहिं तलाव तलाई ॥
जहँ असि दसा जड़न्ह कैबरनी। को कहि सकइ सचेतन करनी ॥

पसु पच्छी नभ जल थलचारी । भए कामबस समय चिसारी ॥
मदन अंध व्याकुल सब लोका । निसि दिनु नहिं अवलोकहिं कोका
देव दनुज नर किंनर व्याला । प्रेत पिसाच भूत बेताला ॥
इन्ह कै दसान कहैउं वखानी । सदा काम के चेरे जानी ॥
सिद्ध चिरक्त महामुनि जोगी । तेपि कामबस भए बियोगी ॥

छं०—भए कामबस जोगीस तापस पावैरन्हि की को कहे ।

देखहि चराचर नारिमय जे ब्रह्ममय देखत रहे ॥

अबला बिलोकहिं पुरुषमय जगु पुरुष सब अवलामयं ।

हुइ दंड भरि षष्ठांड भोंतर कामकृत कौतुक अयं ॥

सो०—घरी न काहँ घोर सब के मन मनसिज हरे ।

जे राखे रघुघोर ते उवरे तेहि काल महुं ॥ ८५ ॥

उभय घरी अस कौतुक भयऊ । जाँ लगि कामु संभु पहिं गयऊ ॥

सिबहि बिलोकि ससंकेउ मारू । भयउ जथाथिति सचु संसारू ॥

भए तुरत सब जीव सुखारे । जिमि मद उत्तरि गएँ मतवारै ॥

रुद्रहि देखि मदन भय माना । दुराधरप दुर्गम भगवाना ॥

फिरत लाज कष्टु करि नहिं जाई । मरनु ठानि मन रचेसि उपाई ॥

प्रगटेसि तुरत रुचिर रितुराजा । कुमुमित नव तरु राजि बिराजा ॥

वन उपवन बापिका तड़ागा । परम मुभग सब दिसा बिभागा ॥

जहँ तहँ जनु उमगत अनुरागा । देखि मुएहुँ मन मनसिज जागा ॥

छं०—जागइ मनोभव मुएहुँ मन बन सुभगता न परै कही ।

सीतल सुगंध सुमंद मारुत मदन अनल सखा सहो ॥

बिकसे सरन्हि चहु कंज गुंजत पुंज मंजुल मधुररा ।

कलहंस पिक सुक सरस रव करि गान नाचहि अपछरा ॥

दो०—सकल कला करि कोटि विधि हारेउ सेन समेत ।

चली न अचल समाधि सिव कोपेउ हृदय निकेत ॥ ८६ ॥

देखि रसाल विटप वर साखा । तेहि पर चढ़ेउ मदन मन साखा ॥
 सुमन चाप निज सर संधाने । अति रिस ताकि श्रवन लागि ताने
 छाड़े विपम विसिख उर लागे । छूटि समाधि संभु तव जागे ॥
 भयउ ईस मन छोभु विसेपी । नयन उधारि सकल दिसि देखी ॥
 सौरभ पछव मदन विलोका । भयउ कोपु कपेउ त्रैलोका ॥
 तव सिव तीसर नयन उधारा । चितवत कामु भयउ जरि छारा ॥
 हाहाकार भयउ जग भारी । डरपे सुर भए असुर सुखारी ॥
 समुझि कामसुखु सोचहि भोगी । भए अकंटक साधक जोगी ॥

छं०—जोगी अकंटक भए पति गति सुनत रति मुरुछित भई ।

रोदति वदति बहु भौंति करुना करति संकर पहि गई ॥

अति प्रेम करि विनती विविध विधि जोरि कर सन्मुख रही ।

प्रभु आसुतोप कृपाल सिव अवला निरखि बोले सही ॥

दो०—अव तैं रति तव नाथ कर होइहि नामु अनंगु ।

विनु वपु व्यापिहि सवहि पुनि सुनु निज मिलन प्रसंगु ॥ ८७ ॥

जव जदुवंस कृष्ण अवतारा । होइहि हरन महा महिभारा ॥
 कृष्ण तनय होइहि पति तोरा । वचनु अन्यथा होइ न मोरा ॥
 रति गवनी सुनि संकर वानी । कथा अपर अव कहउँ वखानी ॥
 देवन्ह समाचार सब पाए । ब्रह्मादिक वैकुण्ठ सिधाए ॥
 सब सुर विष्णु विरंचि समेता । गए जहाँ सिव कृपानिकेता ॥
 पृथक पृथक तिन्ह कीन्हि प्रसंसा । भए प्रसन्न चंद्र अवतंसा ॥

बोले कृपासिंधु वृषकेतु । कहहु अमर आए केहि हेतु ॥
 कह विधि तुम्ह प्रभु अंतरजामी । तदपि भगति बस विनवउं ग्यामी
 दो०—सकल सुरन्ह के हृदयँ अस संकर परम उछाहु ।

निज नयनन्हि देला चहहिं नाथ तुम्हार विवाहु ॥ ८८ ॥

यह उत्सव देखिअ भरि लोचन । सोइ कलु करहु मदन मद मोचन
 कामु जारि रति कहुँ घरु दीन्हा । कृपासिंधु यह अति भल कीन्हा ॥
 सासति करि पुनि करहिं पसाऊ । नाथ प्रभुन्ह कर सहज सुभाऊ ॥
 पारवतीं तपु कीन्ह अपारा । करहु तामु अब अंगीकारा ॥
 सुनि विधि विनय समुझि प्रभु घानी । ऐसेइ होउ कहा सुखु मानी ॥
 तव देवन्ह दुंदुभीं बजाई । वरपि सुमन जय जय सुर साई ॥
 अबसरु जानि सप्तारिपि आए । तुरतहिं विधि गिरि भवन पठाए ॥
 प्रथम गए जहँ रहीं भवानी । बोले मधुर वचन छल सानी ॥

दो०—कहा हमार न सुनेहु तव नारद के उपदेस ।

अब भा छूट तुम्हार पन जारेउ कामु महेस ॥ ८९ ॥

मासपारायण, तीसरा विधाम

सुनि बोलीं मुमुकाइ भवानी । उचित कहेहु मुनियर विग्यानी ॥
 तुम्हरेँ जान कामु अब जारा । अब लगि संभु रहे सविकारा ॥
 हमरेँ जान सदा मिव जोगी । अज अनवद्य अकाम अभोगी ॥
 जौं में सिव सेये ब्रस जानी । प्रीति समेत कर्म मन घानी ॥
 तौ हमार पन सुनहु मुनीसा । करिहहिं सत्य कृपानिधि ईसा ॥
 तुम्ह जो कहा हर जारेउ मारा । सोइ अति बड़ अवित्रेकु तुम्हारा ॥
 तात अनल कर सहज सुभाऊ । हिमि तेहि निकट जाइ नहिं काऊ ॥

गएँ समीप सो अवसि नसाई। असि मन्मथ महेस की नाई ॥

दो०—हियँ हरपे मुनि वचन सुनि देखि प्रीति विस्वास ।

चले भवानिहि नाइ सिर गए हिमाचल पास ॥ ९० ॥

सबु प्रसंगु गिरिपतिहि सुनावा । मदन दहन सुनि अति दुखु पाव
 बहुरि कहेउ रति कर वरदाना । सुनि हिमवंत बहुत सुखु माना ॥
 हृदयँ विचारि संभु प्रभुताई । सादर मुनिवर लिए बोलाई ॥
 सुदिनु सुनखतु सुघरी सोचाई । वेगि वेदविधि लगन धराई ॥
 पत्री सप्तारिपिन्ह सोइ दीन्ही । गहि पद विनय हिमाचल कीन्ही ॥
 जाइ विधिहि तिन्ह दीन्ही सो पाती । वाचत प्रीति न हृदयँ समाती
 लगन वाचि अज सबहि सुनाई । हरपे मुनि सब सुर समुदाई ॥
 सुमन वृष्टि नभ वाजन वाजे । मंगल कलस दसहुँ दिसि साजे ॥

दो०—लगे सँवारन सकल सुर वाहन विविध विमान ।

होहिँ सगुन मंगल सुभद करहिँ अपछरा गान ॥ ९१ ॥

सिवहि संभु गन करहिँ सिंगारा । जटा मुकुट अहि मौरु सँवारा ॥
 कुंडल कंकन पहिरे व्याला । तन विभूति पट केहरि छाला ॥
 ससि ललाट सुंदर सिर गंगा । नयन तीनि उपवीत भुजंगा ॥
 गरल कंठ उर नर सिर माला । असिव वेप सिव धाम कृपाला ॥
 कर त्रिसूल अरु डमरु विराजा । चले वसहँ चढ़ि वाजहिँ वाजा ॥
 देखि सिवहि सुर त्रिय मुसुकाहीं । वर लायक दुलहिनि जग नाही ॥
 विष्णु विरंचि आदि सुरत्राता । चढ़ि चढ़ि वाहन चले वराता ॥
 सुर समाज सब भाँति अनूपा । नहिँ वरात दूलह अनुरूपा ॥

दो०—विष्णु कहा अस विहसि तब बोलि सकल दिसिराज ।

विलग विलग होइ चलहु सब निज निज सहित समाज ॥ ९२ ॥

वर अनुहारि वरात न भाई । हँसी करँहहु पर पुर जाई ॥

विष्णु वचन सुनि सुर मुमुकाने । निज निज सेन सहित विलगाने ॥

मनहीं मन महेसु मुमुकाहीं । हरि के विंग्य वचन नहिं जाहीं ॥

अति प्रिय वचन सुनत प्रिय केरे । भृंगिहि प्रेरि सकल गन टेरे ॥

सिव अनुसासन सुनि सब आए । प्रभु पद जलज सीस तिन्ह नाए ॥

नाना वाहन नाना बेपा । विहसे सिव समाज निज देखा ॥

कोउ मुखहीन विपुल मुख काहू । विनु पद कर कोउ बहु पद वाहू ॥

विपुल नयन कोउ नयन विहीना । रिष्ट पुष्ट कोउ अति तनखीना ॥

डं०—तन खीन कोउ अति पीन पावन कोउ अपावन गति धरे ।

मूयन कराल कपाल कर सब सद्य सोनित तन भरे ॥

खर स्वान सुअर सूराल मुख गन वेप अगनित को गर्ने ।

बहु जिगस प्रेत पिसाच जोगि जमात यरनत नहिं धरे ॥

सो०—नाचहिं गावहिं गीत परम तरंगी मृत सब ।

देखत अति विपरीत बोलहिं वचन विचित्र विधि ॥ ९३ ॥

जस दूलहु तसि धनी वराता । कौतुक विविध होहिं भग जाता ॥

इहाँ हिमाचल रचेउ विताना । अति विचित्र नहिं जाइ बखाना ॥

सैल सकल जहँ लगि जग माहीं । लघु विमल नहिं बरनि सिराहीं ॥

धन सागर सब नदी तलावा । हिमगिरि सब कहुँ नेवत पटावा ॥

कामरूप सुंदर तन धारी । सहित समाज सहित घर नागी ॥

गए सकल तुहिनाचल गेहा । गावहिं मंगल सहित सनेहा ॥

पथमहि गिरि बहु गृह संवराए । जथा जोगु तहँ बहँ ॥

पुर सोभा अवलोकि सुहाई। लागइ लघु विरंचि निपुनाई ॥

छं०—लघु लाग विधि क्री निपुनता अवलोकि पुर सोभा सही ।

वन वाग कूप तडाग सरिता सुभग संव सक को कही ॥

मंगल विपुल तोरन पताका केतु गृह गृह सोहहीं ।

वनिता पुरुष सुंदर चतुर छवि देखि मुनि मन मोहहीं ॥

दो०—जगदंबा जहँ अवतरी सो पुरु वरनि कि जाइ ।

रिद्धि सिद्धि संपत्ति सुख नित नूतन अधिकाइ ॥ ९४ ॥

नगर निकट वरात सुनि आई। पुर खरभरु सोभा अधिकाई ॥

करि वनाय सजि वाहन नाना। चले लेन सादर अगवाना ॥

हियँ हरपे सुर सेन निहारी। हरिहि देखि अति भए सुखारी ॥

सिख समाज जब देखन लागे। विडरि चले वाहन सब भागे ॥

धरि धीरजु तहँ रहे सयाने। बालक सब लै जीव पराने ॥

गाँ भवन पूछहिं पितु माता। कहहिं वचन भय कंपित गाता ॥

कहिअ काह कहि जाइ न वाता। जम कर धार किधौं वरिआता ॥

वरु वौराह वसहँ असवारा। व्याल कपाल विभूपन छारा ॥

छं०—तन छार व्याल कपाल भूपन नगन जटिल भयंकरा ।

संग भूत प्रेत पिसाच जोगिनि विकट मुख रजनीचरा ॥

जो जिअत रहिहि वरात देखत पुन्य वड़ तेहि कर सही ।

देखिहि सो उमा विवाहु घर घर वात असि लरिकन्ह कही ॥

दो०—समुझि महेस समाज सब जननि जनक मुसुकाहिं ।

बाल बुझाए विविध विधि निडरु होहु डरु नाहिं ॥ ९५ ॥

लै अगवान वरातहि आए। दिए सबहि जनवास सुहाए ॥

मैनाँ सुभ आरती सँवारी। संग सुमंगल गावहिं नारी ॥

कंचन थार सोह वर पानी। परिछन चली हरहि हरपानी ॥
 विकट वेप रुद्रहि जब देखा। अवलन्ह उर भय भयउ विसैया ॥
 भागि भवन पैठी अति त्रासा। गए महेसु जहाँ जनवामा ॥
 मैना हृदयँ भयउ दुखु भारी। लीन्ही बोलि गिरीसकुमारी ॥
 अधिक सनेहँ गोद बैठारी। स्याम सगेज नयन भरे वारी ॥
 जेहि विधि तुम्हहि रूपु अम दीन्हा। तेहिं जड़ वरु वाउर क्रम कीन्हा ॥

छं०—कत कीन्हा वरु वीराह विधि जेहि तुम्हहि सुंदरता दर्द ।

जो फलु चाहिअ सुरतरुहि सो वरवस बवूरहिं लागई ॥

तुम्ह सहित गिरि ते गिरौ पावक जरी जलनिधि महुँ परी ।

परु जाउ अपजसु होउ जग जीवत विवाहु न हीं करी ॥

दो०—भई विकल अवला सकल दुखित देखि गिरिनारि ।

करि बिलापु रोदति घदति सुता सनेहु सँभारि ॥ ९६ ॥

नारद कर मैं काह विगारा। भवनु मोर जिन्ह वसत उजारा ।

अस उपदेसु उमहि जिन्ह दीन्हा। वीरे वरहि लागि तपु कीन्हा ।

साचेहुँ उन्ह केँ मोह न माया। उदासीन धनु धामु न जाया ।

पर घर घालक लाज न भीरा। बाँझ कि जान प्रसव कै पीरा ।

जननिहि विकल विलोकि भवानी। बोली जुत विवेक मृदु धानी ।

अस विचारि सोचहि मति माता। सो न टरइ जो रचइ विधात ।

करम लिखा जाँ वाउर नाह। तौ कत दोसु लगाइअ क ।

तुम्ह सन मिटहिं कि विधि केँ अंका। मातु व्यर्थ जनि लेहु कल ।

छं०—जनि लेहु मातु कलंकु करुना परिहरहु अवसर नहीं ।

जो लिसा लिखार हमरे जाव जहँ पाउव तही ॥

सुनि उमा वचन विनोत कोमल सकल अवला सोचहीं ।

वहु भाँति विधिहि लगाइ दूपन नयन वारि विमोचहीं ॥

दो०—तेहि अवसर नारद सहित अरु रिपि सप्त समेत ।

समाचार सुनि तुहिनगिरि गवने तुरत निकेत ॥ ९७ ॥

तव नारद सबही समुझावा । पूरव कथाप्रसंगु सुनावा ॥

मयना सत्य सुनहु मम वानी । जगदंबा तव सुता भवानी ॥

अजा अनादि सक्ति अविनासिनि । सदा संभु अरधंग निवासिनि ॥

जग संभव पालन लय कारिनि । निज इच्छा लीला वपु धारिनि ॥

जनमीं प्रथम दच्छ गृह जाई । नागु सती सुंदर तनु पाई ॥

तहँहुँ सती संकरहि विवाहीं । कथा प्रसिद्ध सकल जग माहीं ॥

एक बार आवत सिव संगी । देखेउ रघुकुल कमल पतंगी ॥

भयउ मोहु सिव कहा न कीन्हा । भ्रम बस वेपु सीय कर लीन्हा ॥

छं०—सिय वेपु सतीं जो कीन्ह तेहिँ अपराध संकर परिहरिं ।

हर बिरहँ जाइ वहोरि पितु कें जग्य जोगानल जरीं ॥

अब जनमि तुम्हरे भवन निज पति लागि दारुन तपु किया ।

अस जानि संसय तजहु गिरिजा सर्वदा संकर प्रिया ॥

दो०—सुनि नारद के वचन तव सब कर मिटा विपाद ।

छन महुँ ध्यापेउ सकल पुर घर घर यह संवाद ॥ ९८ ॥

तव मयना हिमवंतु अनंदे । पुनि पुनि पारवती पद वंदे ॥

नारि पुरुष सिसु जुवा सयाने । नगर लोग सब अति हरषाने ॥

लगे होन पुर मंगलगाना । सजे सबहिँ हाटक घट नाना ॥

भाँति अनेक भई जेवनारा । सपसास्र जस कछु व्यवहारा ॥

जेवनार कि जाइ बखानी । वसहिं भवन जेहिं मातु भवानी ॥
 दादर बोले सकल बराती । विष्णु विरंचि देव सब जाती ॥
 वेविधि पाँति बैठी जेवनारा । लागे परसन निपुन सुआरा ॥
 नारिचंद्र सुर जेवँत जानी । लगीं देन गारीं मृदु वानी ॥

छं०—गारीं मधुर स्वर देहि सुंदरि विग्य वचन सुनावहीं ।
 भोजनु करहिं सुर अति विलंबु विनोदु सुनि सचु पावहीं ॥
 जेवँत जो घदघो अनंदु सो मुख कोटिहँ न परे कस्यो ।
 अचवाँइ दीन्हे पान गवने वास जहँ जाकां रख्यो ॥

दो०—बहुरि मुनिन्ह हिमवंत कहुँ लगन सुनाई आइ ।
 समय विलोकि विवाह कर पठए देव बोलाइ ॥ ९९ ॥

बोलि सकल सुर सादर लीन्हे । सबहि जथोचित आसन दीन्हे ॥
 बेदी वेद विधान सँवारी । मुभग सुमंगल गावहिं नारी ॥
 सिंघासन अति दिव्य सुहावा । जाइ न बरनि विरंचि बनावा ॥
 बैठे सिंघ विग्रह सिरु नाई । हृदयँ सुमिरि निज प्रभु रघुगई ॥
 बहुरि मुनीसन्ह उमा बोलाई । करि सिंगारु सर्बी लँ आई ॥
 देखत रूपु सकल सुर मोहे । बरनँ छवि अस जग कवि कोहे ॥
 जगदंजिका जानि भव भामा । सुरन्ह मनहिं मन कीन्ह प्रनाम ॥
 सुंदरता मरजाद भवानी । जाइ न कोटिहँ घदन बखानी ॥

छं०—कोटिहँ घदन नहिं वनै बरनत जग जननि सोभा महा ।
 सकुचहि कहत युति सेप सादर मंदमति तुलसी कहा ॥
 छविखानि मातु भवनि गवनी मध्य मंडप सिंघ जहाँ ।
 अवलोकिसकहि न सकुचपति पद कमल मनु मधुकरु तहाँ ॥

दो०—मुनि अनुसासन गनपतिहि पूजउ संगु भवानि ।

कोउ मुनि संसय करै जनि सुर अनादि जियें जानि ॥१०॥

जसि विवाह कै विधि श्रुति गाई । महामुनिन्ह सो सब करवाई ।

गहि गिरीस कुस कन्या पानी । भवहि समरपीं जानि भवाने ॥

पानिग्रहन जब कीन्ह महेसा । हियें हरये तव सकल सुरेसा ॥

वेदमंत्र मुनिवर उचरहीं । जय जय जय संकर सुर करहीं ॥

वाजहिं वाजन विविध विधाना । सुमनवृष्टि नभ भै विधि नाना ॥

हर गिरिजा कर भयउ विवाह । सकल भुवन भरि रहा उछाह ॥

दासीं दास तुरग रथ नागा । घेनु वसन मनि वस्तु विभागा ॥

अन्न कनक भाजन भरि जाना । दाइज दीन्ह न जाइ बखाना ॥

छं०—दाइज दियो बहु भाँति पुनि कर जोरि हिममूधर कश्यो ।

का देखैं पूरनकाम संकर चरन पंकज गहि रखां ॥

सिखें कृपासागर तसुर कर संतोपु सब भाँतिहिं कियो ।

पुनि गहे पद पाथोज मयनाँ प्रेम परिपूरन हियां ॥

दो०—नाथ उमा मम ग्रान सम रहकिंकरी करेहु ।

छमेहु सकल अपराध जब होइ प्रसन्न वरु देहु ॥१०॥

बहु विधि संभु सासु समुझाई । गवनी भवन चरन सिरु नाई ॥

जननीं उमा बोलि तव लीन्ही । लै उछंग सुंदर सिख दीन्ही ॥

करेहु सदा संकर पद पूजा । नारिधरमु पति देउ न दूजा ॥

बचन कहत भरे लोचन बारी । बहुरि लाइ उर लीन्हि कुमारी ॥

कत विधि सृजीं नारि जग माहीं । पराधीन सपनेहुँ सुगु नाहीं ॥

भै अति प्रेम विकल महतारी । श्रीरजु कीन्ह कुसमय विचारी ॥

पुनि पुनि मिलति परति गहि चरना । परमप्रेम कछु जाइ न वरना ॥
सब नारिन्ह मिलि भेटि भवानी । जाइ जननि उर पुनि लपटानी ॥

छं०—जननिहि बहुरि मिलि चली उचित असीस सब काहें दई ।
फिरि फिरि विलोकति मातु तन तब सखीं लै सिव पहि गई ॥
जाचक सकल संतोपि संकरु उना सहित भवन चलें ।
सब अमर हरपे सुमन वरपि नितान नभ वाजे भले ॥

दो०—चले संग... हिमवंतु तब पहुँचावन अति हेतु ।
त्रिविध भौंति परितोपु करि विदा कीन्ह वृषकेतु ॥१०२॥

तुरत भवन आए गिरिराई । सकल सैल सर लिए बोलाई ॥
आदर दान विनय बहुमाना । सब कर विदा कीन्ह हिमवाना ॥
जबहिं संभु कैलासहिं आए । सुर सब निज निज लोक सिधाए
जगत मातु पितु संभु भवानी । तेहिं सिंगारुन कहउँ बखानी ॥
करहिं त्रिविध विधि भोग विलासा । गनन्ह समेत बसहिं कैलासा ॥
हर गिरिजा विहार नित नयऊ । एहि विधि विपुल काल चलि गयऊ
तब जनमेउ पटवदन कुमारा । तारकु असुर समर जेहिं मारा ॥
आगम निगम प्रसिद्ध पुराना । पन्मुख जन्मु सकल जग जाना ॥

छं०—जगु जान पन्मुख जन्मु कर्म प्रतापु पुरुपारथु महा ।
तेहि हेतु मैं वृषकेतु सुत कर चरित सँछ्यहिं कहा ॥
यह उमा संभु विवाहु जे नर नारि कहहि जे गावहीं ।
कल्याण काज विवाह मंगल सर्वदा सुसु पावहीं ॥

दो०—चरित सिंधु गिरिजा रमन वेद न पावहि पारु ।
करने तुलसीदासु किमि जति मतिमंद गंधौर ॥१०३॥

संभु चरित सुनि सरस सुहावा । भरद्वाज मुनि अति सुखु पावा ॥
 बहु लालसा कथा पर वादी । नयनन्हि नीरु रोमावलि टाढ़ी ॥
 प्रेम विवस मुख आव न बानी । दसा देखि हरपे मुनि ग्यानी ॥
 अहो धन्य तव जन्मु मुनीसा । तुम्हहि प्राण सम प्रिय गौरीसा ॥
 सिव पद कमल जिन्हहिरति नार्हीं । रामहि ते सपनेहुँ न सोहार्हीं ॥
 विनु छल विखनाथ पद नेहू । राम भगत कर लच्छन एहू ॥
 सिव सम को रघुपति व्रतधारी । विनु अष तजी सती असि नारी ॥
 पनु करि रघुपति भगति देखार्ई । को सिव सम रामहि प्रिय भाई ॥

दो०—प्रथमहि मैं कहि सिव चरित वृझा मरमु तुम्हार ।

सुचि सेवक तुम्ह राम के रहित समस्त विकार ॥१०४॥

मैं जाना तुम्हार गुन सीला । कहउँ सुनहुँ अव रघुपति लीला ॥
 सुनु मुनि आजु समागम तोरें । कहि न जाइ जस सुखु मन मारें ॥
 राम चरित अति अमित मुनीसा । कहि न सकहिँ सत कोटि अहीसा
 तदपि जथाश्रुत कहउँ बखानी । सुमिरि गिरापति प्रभु धनुपानी ॥
 सारद दारुनारि सम स्वामी । रामु मूत्रधर अंतरजामी ॥
 जेहि पर कृपा करहिँ जनु जानी । कवि उर अजिर नचावहिँ बानी ॥
 प्रनवउँ सोइ कृपाल रघुनाथा । वरनउँ विसद तासु गुन गाथा ॥
 परम रम्य गिरिवरु कलासू । सदा जहाँ सिव उमा निवासू ॥

दो०—सिद्ध तपोधन जोगिजन सुर किंनर मुनिवृंद ।

बसहिँ तहाँ सुकृती सकल सेवहिँ सिव सुखकंद ॥१०५॥

हरि हर विमुख धर्म रति नार्हीं । ते नर तहँ सपनेहुँ नहिँ जाहीं ॥
 तेहि गिरि पर बट बिटप विसाला । नित नूतन सुंदर सब काला ॥

त्रिविध समीर मुसीतलि छाया । सिव विग्राम विटप श्रुति गाया ॥
 एक वार तेहि तर प्रभु गयऊ । तरु त्रिलोकि उर अति सुखु भयऊ
 निज कर दासि नागरिपु छाला । बैठे सहजहि संभु कृपाला ॥
 कुंद इंद्रु दर गौर सरीरा । भुज प्रलंब परिधन मुनिचीरा ॥
 तरुन अरुन अंबुज सम चरना । नख दुति भगत हृदय तम हरना ॥
 भुजग भूति भूपन त्रिपुरारी । आननु सरद चंद छवि हारी ॥
 दो०—जटा मुकुट सुरसरित सिर लोचन नलिन विसाल ।

नीलकंठ लावन्यनिधि सोह बालविषु भाल ॥१०६॥

बैठे सोह कामरिपु कैसैं । धरें सरीरु सांतरसु जैसैं ॥
 पारवती भल अबसरु जानी । गढ़ें संभु पहिं मातु भवानी ॥
 जानि प्रिया आदरु अति कीन्हा । वाम भाग आसनु हर दीन्हा ॥
 बैठीं सिव समीप हरपाई । पूरुव जन्म कथा चित आई ॥
 पति हियैं हेतु अधिक अनुमानी । विहसि उमा बोलीं प्रिय बानी ॥
 कथा जो सकल लोक हितकारी । सोइ पूछन चह सैलकुमारी ॥
 त्रिखनाथ मम नाथ पुरारी । त्रिभुवन महिमा विदित तुम्हारी ॥
 चर अरु अचर नाग नर देवा । सकल करहिं पद पंकज सेवा ॥
 दो०—प्रभु समरथ सर्वग्य सिव सकल कला गुन धाम ।

जोग ग्यान वैराग्य निधि प्रनत कलपतरु नाम ॥१०७॥

जौं मो पर प्रसन्न सुखरासी । जानिअ सत्य मोहि निज दासी ॥
 तौ प्रभु हरहु मोर अग्याना । कहि रघुनाथ कथा विधि नाना ॥
 जासु भवनु सुरतरु तर होई । सहि कि दरिद्र जनित मोई ॥
 ससिभूषन अस हृदय विचारी । हरहु नाथ

प्रभु जे मुनि परमारथवादी । कहहिं राम कहूँ ब्रह्म अनादी ॥
 सेस मारदा वेद पुराना । सकल करहिं रघुपति गुन गाना ॥
 तुम्ह पुनि राम राम दिन राती । सादर जपहु अनंग आराती ॥
 रामु सो अवध नृपति सुत सोई । की अज अगुन अलग्न गति कोई ॥

दो०—जों नृप तनय न ब्रह्म किमि नारि विरहें गति भोरि ।

देखि चरित महिमा नुनत ब्रमति बुद्धि अति मोरि ॥१०८॥

जों अनीह व्यापक विभु कोऊ । कहहु बुझाह नाथ मोहि सोऊ ॥
 अग्य जानि रिस उर जनि धरहु । जेहि विधि मोह मिटै सोइ करहु ॥
 मैं वन दीखि राम प्रभुताई । अति भय विकल न तुम्हहि सुनाई
 तदपि मलिन मन बोधु न आवा । सो फलु भली भाँति हम पावा ॥
 अजहूँ कह्यु संसउ मन मोरें । करहु कृपा विनवउँ कर जोरें ॥
 प्रभु तव मोहि बहु भाँति प्रबोधा । नाथ सो समुझि करहु जनि क्रोधा
 तव कर अस विमोह अब नाहीं । राम कथा पर रुचि मन माहीं ॥
 कहहु पुनीत राम गुन गाथा । भुजगराज भूपन सुरनाथा ॥

दो०—बंदउँ पद धरि धरनि सिरु विनय करउँ कर जोरि ।

वन बसि कीन्हे चरित अपारा । कहहु नाथ जिमि रावन मारा ॥
राज वैठि कीन्हीं बहु लीला । सकल कहहु संकर सुखमीला ॥

दो०—बहुरि कहहु करुनायतन कीन्हे जो अचरज राम ।

प्रजा सहित रघुवंसमनि किमि गवनं निज धाम ॥ ११० ॥

पुनि प्रभु कहहु सो तत्र बखानी । जेहिं विग्यान मगन मुनि ग्यानी
भगति ग्यान विग्यान विरामा । पुनि सब बरनहु सहित विभागा ॥
औरउ राम रहस्य अनेका । कहहु नाथ अति विमल विवेका ॥
जो प्रभु में पूछा नहिं होई । सोउ दयाल राखहु जनि गोई ॥
तुम्ह त्रिभुवन गुर वेद बखाना । आन जीव पाँवर का जाना ॥
प्रल उमा के सहज मुहाई । छल विहीन मुनि सिव मन भाई ॥
हर हियँ रामचरित सब आए । प्रेम पुलक लोचन जल छाए ।
श्रीरघुनाथ रूप उर आवा । परमानंद अमित सुख पावा ।

दो०—मगन ध्यानरस दंड जुग पुनि मन बाहर कीन्हे ।

रघुपति चरित महेस तत्र हरपित बरने लीन्हे ॥ १११ ॥

शूरेउ सत्य जाहि विनु जानें । जिमि भुलंग विनु रजु पहिचानें ।
जेहि जानें जग जाइ हेराई । जागें जथा सपन भ्रम जाई ।
वंदउँ बालरूप सोइ राम । सब सिधि मुलभ जपत जिगु नाम ।
मंगल भवन अमंगल हारी । द्रवउ सो दसरथ अजिर विहारी ।
करि प्रनाम रामहि त्रिपुरारी । हरपि मुधा सम गिरा उचारी ॥
धन्य धन्य गिरिराजकुमारी । तुम्ह समान नहिं कौउ उपकारी ॥
पूछेहु रघुपति कथा प्रसंगा । सकल लोक जग पावनि गंगा ॥
तुम्ह रघुवीर चरन अनुगामी । कीन्दिहु प्रल जगत हित लागी ॥

अग्य अकोविद अंध अभागी। काई विषय मुकुर मन लागी ॥
 लंपट कपटी कुटिल विसेपी। सपनेहुँ संतसभा नहिं देखी ॥
 कहहिं तेाँ वेद असंमत बानी। जिन्ह कें सज्ञ लाभ नहिं हानी ॥
 मुकुर मलिन अरु नयन विहीना। राम रूप देखहिं किमि दीना ॥
 जिन्ह कें अगुन नसगुन विवेका। जल्पहिं कल्पित वचन अनेका ॥
 हरिमाया बस जगत भ्रमाहीं। तिन्हहि कहत कछु अघटित नाहीं ॥
 बातुल भूत विषस मतवारे। ते नहिं बोलहिं वचन विचारे ॥
 जिन्ह कृत महामोह मद पाना। तिन्ह कर कहा करिअ नहिं काना ॥

सो०—अस निज हृदयँ विचारि तजु संसय भजु राम पद ।
 सुनु गिरिराज फुमारि भ्रम तम रधि कर वचन मम ॥११५॥

अगुनहि अगुनहि नहिं कछु भेदा। गावहिं मुनि पुरान बुध वेदा ॥
 अगुन अरूप अलख अज जोई। भगत प्रेम बस सगुन सो होई ॥
 अगुन रहित सगुन सोइ कैसैं। जलु हिम उपल विलग नहिं जैसैं ॥
 सु नाम भ्रम तिमिर पतंगा। तेहि किमि कहिअ विमोह प्रसंगा ॥
 सच्चिदानंद दिनेसा। नहिं तहँ मोह निसा लवलेसा ॥
 प्रकासरूप भगवाना। नहिं तहँ पुनि विग्यान विहाना ॥
 विपाद ग्यान अग्याना। जीव धर्म अहमिति अभिमाना ॥
 ज्ञ व्यापक जग जाना। परमानंद परेस पुराना ॥

रूप प्रसिद्ध प्रकास निधि प्रगट परावर नाथ ।
 मुकुलमनि मम स्वामि सोइ कहि सिवै नायउ माथ ॥११६॥

नहिं समुझहिं अग्यानी। प्रभु पर मोह धरहिं जड प्रानी ॥
 न घन पटल निहारी।

दो०—राम कृपा तें पारवति सपनेहुँ तव मन माहिं ।

सोक मोह संदेह भ्रम मम विचार कछु नाहिं ॥ ११२ ॥

तदपि असंका कीन्हिहु सोई । कहत सुनत सब कर हित होई ॥

जिन्ह हरिकथा सुनी नहिं काना । श्रवन रंघ्र अहिभवन समाना ॥

नयनन्हि संत दरस नहिं देखी । लोचन मोर पंख कर लेखा ॥

ते सिर कटु तुंवारी समतूला । जे न नमत हरि गुर पद मूला ॥

जिन्ह हरि भगति हृदयँ नहिं आनी । जीवत सब समान तेइ प्राणी ॥

जो नहिं करइ राम गुन गाना । जीह सो दादुर जीह समाना ॥

कुलिस कठोर निठुर सोइ छाती । सुनि हरिचरित न जो हरपाती ॥

गिरिजा सुनहु राम कै लीला । सुर हित दनुज विमोहन सीला ॥

दो०—रामकथा सुरधेनु सम सेवत सब सुख दानि ।

सत समाज सुरलोक सब को न सुनै अस जानि ॥ ११३ ॥

रामकथा सुंदर कर तारी । संसय विहग उड़ावनिहारी ॥

रामकथा कलि विटप कुठारी । सादर सुनु गिरिराजकुमारी ॥

राम नाम गुन चरित सुहाए । जनम करम अगनित श्रुति गाए ॥

जथा अनंत राम भगवाना । तथा कथा कीरति गुन नाना ॥

तदपि जथा श्रुत जसि मति मोरी । कहिहउँ देखि प्रीति अति तोरी ॥

उमा प्रसन्न तव सहज सुहाई । सुखद संतसंमत मोहि भाई ॥

एक वात नहिं मोहि सोहानी । जदपि मोहवस कहेहु भवानी ॥

तुम्ह जो कहा राम कोउ आना । जेहि श्रुति गाव धरहिं मुनि ध्याना ॥

दो०—कहहिं सुनहिं अस अधम नर असे जे मोह पिसाच ।

पापंडी हरि पद विमुख जानहिं झूठ न साच ॥ ११४ ॥

अग्य अक्रोचिद् अंध अभागी । काई विषय मुकुर मन लागी ॥
 लंपट कपटी कुटिल विसेपी । सपनेहुँ संतसभा नहिं देखी ॥
 कहहिं ते वेद असंमत चानी । जिन्ह कें सज्ञ लाभ नहिं हानी ॥
 मुकुर मलिन अरु नयन विहीना । राम रूप देखहिं किमि दीना ॥
 जिन्ह कें अगुन नसगुन विवेका । जल्पहिं कल्पित वचन अनेका ॥
 हरिमाया बस जगत भ्रमाहीं । तिन्हहि कहत कछु अधटित नाहीं ॥
 वातुल भूत बिसस मतवारे । ते नहिं बोलहिं वचन विचारे ॥
 जिन्ह कृत महामोह मद पाना । तिन्ह कर कहा करिअ नहिं काना ॥
 सो०—अस निज हृदयें विचारि तजु संतस्य भजु राम पद ।

सुनु गिरिराज कुमारी अम तम रवि कर बचन मम ॥११५॥
 सगुनहि अगुनहि नहिं कछु भेदा । गावहिं मुनि पुरान बुध वेदा ॥
 अगुन अरूप अलख अज जोई । भगत प्रेम बस सगुन सो होई ॥
 जो गुन रहित सगुन सोई कैसैं । जलु हिम उपल विलग नहिं जैसें ॥
 जासु नाम भ्रम तिमिर पतंगा । तेहि किमि कहिअ विमोह प्रसंगा ॥
 राम सच्चिदानंद दिनेसा । नहिं तहें मोह निसा लवलेसा ॥
 सहज प्रकासरूप भगवाना । नहिं तहें पुनि विग्यान विहाना ॥
 हरष विषाद ग्यान अग्याना । जीव धर्म अहमिति अभिमना ॥
 राम ब्रह्म व्यापक जग जाना । परमानंद परम सुखाना ॥

दो०—पुरुष प्रसिद्ध प्रकास निधि प्रगट परावर न

रघुकुलमनि मम स्वामि सोई कहि सिवें नाकर न ॥११६॥

निज भ्रम नहिं समुझहिं अन्याना ।

चितव जो लोचन अंगुलि लाएँ । प्रगट जुगल ससि तेहि के भाएँ ॥
 उमा राम विपइक अस मोहा । नभ तम धूम धूरि जिमि सोहा ॥
 विषय करन सुर जीव समेता । सकल एक तें एक सचेता ॥
 सब कर परम प्रकासक जोई । राम अनादि अवधपति सोई ॥
 जगत प्रकास्य प्रकासक रामू । मायाधीस ग्यान गुन धामू ॥
 जासु सत्यता तें जड़ माया । भास सत्य इव मोह सहाया ॥
 दो०—रजत सीप महुँ भास जिमि जथा भानु कर वारि ।

जदपि मृषा तिहुँ काल सोइ भ्रम न सकइ कोउ टारि ॥११७॥

एहि विधि जग हरि आश्रित रहई । जदपि असत्य देत दुख अहई ॥
 जौं सपनें सिर काटै कोई । विनु जागें न दूरि दुख होई ॥
 जासु कृपाँ अस भ्रम मिटि जाई । गिरिजा सोइ कृपाल रघुराई ॥
 आदि अंत कोउ जासु न पावा । मति अनुमानि निगम अस गावा
 विनु पद चलइ सुनइ विनु काना । कर विनु करम करइ विधि नाना
 आनन रहित सकल रस भोगी । विनु वानी वकता बड़ जोगी ॥
 तन विनु परस नयन विनु देखा । ग्रहइ व्रान विनु वास असेपा ॥
 असि सब भाँति अलौकिक करनी । महिमा जासु जाइ नहिं बरनी ॥

दो०—जेहि इमि गावहिं वेद बुध जाहि धरहिं मुनि ध्यान ।

सोइ दसरथ सुत भगत हित कोसलपति भगवान ॥११८॥

कासीं मरत जंतु अवलोकी । जासु नाम बल करउँ विसोकी ॥
 सोइ प्रभु मोर चराचर स्वामी । रघुवर सब उर अंतरजामी ॥
 विवसहुँ जासु नाम नर कहहीं । जनम अनेक रचित अध दहहीं ॥
 सादर सुमिरन जे नर करहीं । भव वारिधि गोपद इव तरहीं ॥

राम सो परमात्मा भवानी । तहँ भ्रम अति अविहित तव वानी ॥
अस संसय आनत उर माहीं । ग्यान विराग सकल गुन जाहीं ॥
सुनि सिव के भ्रम भंजन वचना । मिटि गँ सब कृतरक कँ रचना ॥
भइ रघुपति पद प्रीति प्रतीती । दाखन असंभावना कीती ॥

दो०—सुनि पुनि प्रभु पद कमल गहि जोरि पंकरुह पानि ।

बोली गिरिजा वचन वर मनहुँ प्रेम रस सानि ॥११९॥

ससि कर सम सुनि गिरा तुम्हारी । मिटा मोह सरदातप भारी ॥
तुम्ह कृपाल सबु संसउ हरेऊ । राम स्वरूप जानि मोहि परेऊ ॥
नाथ कृपाँ अब गयउ विपादा । सुखी भयउँ प्रभु चरन प्रसादा ॥
अब मोहि आपनि किंकरि जानी । जदपि सहज जड़ नारि अयानी ॥
प्रथम जो मैं पूछा सोइ कहहू । जाँ मो पर प्रसन्न प्रभु अहहू ॥
राम ब्रह्म चिनमय अविनासी । सर्व रहित सब उर पुर वासी ॥
नाथ धरेउ नरतनु केहि हेतू । मोहि समुझाइ कहहू धृपकेतू ॥
उमा वचन सुनि परम विनीता । रामकथा पर प्रीति पुनीता ॥

दो०—हियँ हरपे कामारि तव संकर सहज सुजान ।

बहु विधि उमहि प्रसंसि पुनि थोले कृपानिधान ॥१२०(क)॥

नवाह्नपारायण, पहला विश्राम

मासपारायण, चौथा विश्राम

सो०—सुनु सुभ कथा भवानी रामचरितमानस धिमल ।

कहा भुसुंढि बखानि सुनो विहग नावकं गरुड ॥१२०(ख)॥

सो संवाद-उदार जेहि विधि भा जागें कहव ।

००—सुनहु राम अवतार चरित परम सुंदर अनघ ॥१२०(ग)॥

हरि गुन नाम अपार कथा रूप जगनित अनित ।

मैं निज मति अनुसार कहउँ उमा सादर सुनहु ॥१२०(ब)॥

सुनु गिरिजा हरिचरित सुहाए । विपुल विसद निगमागम गाए ॥
हरि अवतार हेतु जेहि होई । इदमित्थं कहि जाइ न सोई ॥
राम अतर्क्य बुद्धि मन बानी । मत हमार अस सुनहि सयानी ॥
तदपि संत मुनि वेद पुराना । जस कछु कहहिं स्वमति अनुमाना ॥
तस मैं सुमुखि सुनावउँ तोही । समुझि परइ जस कारन सोही ॥
जब जब होइ धरम कै हानी । चाढ़हिं असुर अधम अभिमानी ॥
करहिं अनीति जाइ नहिं बरनी । सीदहिं विप्र घेनु सुर धरनी ॥
तब तब प्रभु धरि विविध सरीरा । हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा ॥

श्लो०—असुर नारि यापहिं सुरन्ह राखहिं निज श्रुति तेतु ।

जग विस्तारहिं विसद जस राम जन्म कर हेतु ॥१२१॥

मोइ जस गाइ भगत भव तरहीं । कृपासिंधु जन हित तनु धरहीं ॥
राम जनम के हेतु अनेका । परम विचित्र एक तैं एका ॥
जनम एक दुइ कहउँ बखानी । सावधान सुनु सुमति भवानी ॥
डारपाल हरि के प्रिय दोऊ । जय अरु विजय जान सब कोऊ ॥
विप्र श्राप तैं दूनड भाई । तामस असुर देह तिन्ह पाई ॥
कनककासिपु अरु हाटकलोचन । जगत विदित सुरपति मद मोचन ॥
विजई समर वीर विख्याता । धरि बराह वपु एक निपाता ॥
होइ नरहरि दूसर पुनि मारा । जन प्रहलाद सुजस विस्तारा ॥

श्लो०—भए नित्ताचर जाइ तेइ महावीर बलवान ।

कुंभकरन रावन सुभेट सुर विजई जग जान ॥१२२॥

सुकुत न भए हते भगवाना । तीनि जनम द्विज वचन प्रधाना ॥
 एक वार तिन्ह के हित लागी । धरेउ सरीर भगत अनुरागी ॥
 कस्यप अदिति तहाँ पितु माता । दसरथ कौसल्या विख्याता ॥
 एक कल्प एहि विधि अवतारा । चरित पवित्र किए संसारा ॥
 एक कल्प सुर देखि दुखारे । समर जलंधर सन सब हारे ॥
 संभु कीन्ह संग्राम अपारा । दनुज महाबल मरइ न मारा ॥
 परम सती असुराधिप नारी । तेहिं बल ताहि न जितहिं पुरारी ॥

दो०—छल करि टारैउ तासु मत प्रमु सुर कारज कीन्ह ।

जब तेहिं जानेउ मरम तब थाप कोप करि दीन्ह ॥१२३॥

तासु थाप हरि दीन्ह प्रमाना । कौतुकनिधि कृपाल भगवाना ॥
 तहाँ जलंधर रावन भयऊ । रन हति राम परम पद दयऊ ॥
 एक जनम कर कारन एहा । जेहि लागि राम धरी नरदेहा ॥
 प्रति अवतार कथा प्रभु केरी । सुनु मुनि वरनी कविन्ह धनेरी ॥
 नारद थाप दीन्ह एक वारा । कल्प एक तेहि लागि अवतारा ॥
 गिरिजा चकित भई सुनि धानी । नारद विष्णुभगत पुनि ग्यानी ॥
 कारन कवन थाप मुनि दीन्हा । का अपराध रमापति कीन्हा ॥
 यह प्रसंग मोहि कहहु पुरारी । मुनि मन मोह आचरज भारी ॥

दो०—बोले विहसि महेस तब ग्यानी भूद न कोइ ।

जेहि जस रघुपति करहि जब सो तस तेहि छन होइ ॥१२४(क)॥

सो०—कहवैं राम गुन गाथ भरद्वाज सादर सुनहु ।

भवं भंजन रघुनाथ भजु तुलसी तजि मान मद ॥१२४(ख)॥

हिमगिरि गुहा एक अति पवनि । चह समीप सुरसरी सुहावनि ॥

आश्रम परम पुनीत सुहावा । देखि देवरिपि मन अति भावा ।
 निरखि सैल सरि विपिन विभागा । भयउ रमापति पद अनुरागा ।
 सुमिरत हरिहि थाप गति वाधी । सहज विमल मन लागि समाधी ।
 मुनि गति देखि सुरेस डेराना । कामहि बोलि कीन्ह सनमाना ।
 सहित सहाय जाहु मम हेतू । चलेउ हरपि हियँ जलचरकेतू ।
 सुनासीर मन महुँ असि त्रासा । चहत देवरिपि मम पुर वासा ।
 जे कामी लोलुप जग माहीं । कुटिल काक इव सवहि डेराहीं ।

दो०—सूख हाड लै भाग सठ त्वान निरखि मृगराज ।

छीनि लेइ जनि जान जड़ तिमि सुरपतिहि न लाज ॥१२५॥

तेहि आश्रमहिँ मदन जव गयऊ । निज मायाँ वसंत निरमयऊ ॥
 कुसुमित विविध विटप बहुरंगा । कूजहिँ कोकिल गुंजहिँ भृंगा ॥
 चली सुहावनि त्रिविध बयारी । काम कृसानु वदावनिहारी ॥
 रंभादिक सुरनारि नवीना । सकल असमसर कला प्रवीना ॥
 करहिँ गान बहु तान तरंगा । बहुविधि क्रीडहिँ पानि पतंगा ॥
 देखि सहाय मदन हरपाना । कीन्हेसि पुनि प्रपंच विधि नाना ॥
 काम कला कछु मुनिहि न व्यापी । निज भयँ डरेउ मनोभव पापी ॥
 सीम कि चाँपि सकइ कोउ तासू । वड़ रखवार रमापति जासू ॥

दो०—सहित सहाय समीत अति मानि हारि मन मेन ।

गहेसि जाइ मुनि चरन तव कहि सुठि आरत वैन ॥१२६॥

भयउ न नारद मन कछु रोषा । कहि प्रिय वचन काम परितोषा ॥
 नाइ चरन सिरु आयसु पाई । गयउ मदन तव सहित सहाई ॥
 मुनि सुसीलता आपनि करनी । सुरपति सभौ जाइ सब वरनी ॥

सुनि सब कें मन अचरजु आवा । मुनिहि प्रसंसि हरिहि सिरु नावा ॥
 तव नारद गवने सिव पाहीं । जिता काम अहमिति मन माहीं ॥
 मार चरित संकरहि सुनाए । अतिप्रिय जानि महंस सिखाए ॥
 धार धार विनवउं मुनि तोही । जिमि यह कथा सुनायहु मोही ॥
 तिमि जनि हरिहि सुनावहु कवहुँ । चलेहुँ प्रसंग दुराएहु तवहुँ ॥

दो०—संभु दीन्ह उपदेश हित नहि नारदहि सोहान ।

भरद्वाज कौतुक सुनहु हरि इच्छा बलवान ॥१२७॥

राम कीन्ह चाहहि सोइ होई । करं अन्यथा अस नहि कोई ॥
 संभु बचन मुनि मन नहि भाए । तव विरंचि के लोक सिधाए ॥
 एक धार करतल वर चीना । गावत हरि गुन गान प्रचीना ॥
 छीरसिंधु गवने मुनिनाथा । जहुँ वस थीनिवास श्रुति माथा ॥
 हरपि मिले उठि रमानिकेता । बैठे आसन रिपिहि समेता ॥
 बोले चिहसि चराचर राया । बहुते दिनन कीन्हि मुनि दाया ॥
 काम चरित नारद सब भाये । जद्यपि प्रथम वरजि सिवें राखे ॥
 अति प्रचंड रघुपति कै माया । जेहि न मोह अस को जग जाया ॥

दो०—रुद्र धदन करि बचन मृदु बोले श्रीभगवान ।

तुम्हरे सुमिरन ते मिटहि मोह मार मद मान ॥१२८॥

सुनु मुनि मोह होइ मन ताकें । ग्यान विराग हृदय नहि जाकें ॥
 ब्रह्मचरज व्रत रत मतिधीरा । तुम्हहि कि करइ मनोभव पीरा ॥
 नारद कहेउ सहित अभिमाना । कृपा तुम्हारि सकल भगवाना ॥
 करुनानिधि मन दीख विचारो । उर अंकुरेउ गरव तरु भारी ॥
 बेगि सो मैं डारिहुँ उखारी । पन हमार सेवक हितकारी ॥

मुनि कर हित मम कौतुक होई । अवसि उपाय करवि में सोई ॥
 तव नारद हरि पद सिर नाई । चले हृदयँ अहमिति अधिकारै ॥
 श्रीपति निज माया तव प्रेरी । मुनहु कठिन करनी तेहि केरी ॥

दो०—विरचेउ मग महुँ नगर तेहिँ सत जांजन विस्तार ।

श्रीनिवासपुर तें अधिक रचना विविध प्रकार ॥१२९॥

वसहिँ नगर सुंदर नर नारी । जनु बहु मनसिज रति तनुधारी ॥
 तेहिँ पुर वसइ सीलनिधि राजा । अगनित हय गय सेन समाजा ॥
 सत सुरेस सम विभव विलासा । रूप तेज बल नीति निवासा ॥
 विश्वमोहनी तासु कुमारी । श्री विमोह जिसु रूपु निहारी ॥
 सोइ हरिमाया सब गुन खानी । सोभा तासु कि जाइ बखानी ॥
 करइ स्वयंवर सो नृपवाला । आए तहँ अगनित महिपाला ॥
 मुनि कौतुकी नगर तेहिँ गयऊ । पुरवासिन्ह सब पृच्छत भयऊ ॥
 सुनि सब चरित भूप गृहँ आए । करि पूजा नृप मुनि बैठाय ॥

दो०—आनि देखाई नारदहि भूपति राजकुमारि ।

कहहु नाथ गुन दोष सब एहि कें हृदयँ विचारि ॥१३०॥

देखि रूप मुनि विरति विसारी । बड़ी वार लागि रहे निहारी ॥
 लच्छन तासु विलोकि भुलाने । हृदयँ हरप नहिँ प्रगट बखाने ॥
 जो एहि वरइ अमर सोइ होई । समरभूमि तेहिँ जीत न कोई ॥
 सेवहिँ सकल चराचर ताही । बरइ सीलनिधि कन्या जाही ॥
 लच्छन सब विचारि उर राखे । कळुक बनाइ भूप सन भाषे ॥
 सुता सुलच्छन कहि नृप पाहीं । नारद चले सोच मन माहीं ॥
 करौं जाइ सोइ जतन विचारी । जेहि प्रकार मोहि वरै कुमारी ॥

जप तप कछु न होइ तेहि काला । हे विधि मिलइ कवन विधि वाला

दो०—एहि अवसर चाहिअ परम सोभा रूप विसाट ।

जो विलोकि सीसै कुअरि तव मेलै जयमाल ॥१३१॥

हरि मन मार्गां सुंदरतार्इ । होइहि जात गहरु अति भाई ॥

मोरें हित हरि सम नहिं कोऊ । एहि अवसर सहाय सोइ होऊ ॥

बहुविधि विनय कीन्हि तेहि काला । प्रगटेउ प्रभु कौतुकी कृपाला ॥

प्रभु विलोकि मुनि नयन जुड़ाने । होइहि काजु हिउँ हरपाने ॥

अति आरति कहि कथा सुनार्इ । करहु कृपा करि होहु सहार्इ ॥

आपन रूप देहु प्रभु मोही । आन भाँति नहिं पावां ओही ॥

जेहि विधि नाथ होइ हित मोरा । करहु सो बेगि दास मैं तोरा ॥

निज माया बल देखि विसाला । हियँ हँसि बोले दीनदयाला ॥

दो०—जेहि विधि होइहि परम हित नारद सुनहु तुम्हार ।

सोइ हम करव न आन कछु वचन न मृपा हमार ॥१३२॥

कुपथ माग रुज व्याकुल रोगी । घँदन देइ सुनहु मुनि जोगी ॥

एहि विधि हित तुम्हार मैं ठयऊ । कहि अस अंतरहित प्रभु भयऊ ॥

माया विवस भए मुनि मूढ़ा । समुझी नहिं हरि गिरा निगूढ़ा ॥

गवने तुरत तहाँ रिपिरार्इ । जहाँ स्वयंवर भूमि बनार्इ ॥

निज निज आसन बैठे राजा । बहु वनाव करि सहित समाजा ॥

मुनि मन हरप रूप अति मोरें । मोहि तजि आनहिं वरिहि न भोरें ॥

मुनि हित कारन कृपानिधाना । दीन्ह कुरूप न जाइ बखाना ॥

सो चरित्र लखि काहुँ न पावा । नारद जानि सबहिं सिर नावा ॥

मुनि कर दिन मम कौतुक होई । अपनि उपाय करि भैं सोई ॥
 तप नारद हरि पद गिर नाई । चले हृदयै अहमिति अधिकाई ॥
 श्रीपति निज माया तप प्रेरी । गुनदू कटिन कानी भेदि बेरी ॥

श्लो०- विरभेउ मय मयुं नगर भेदि मय जंजन विचार ।

सोनिनामपुर मे अधिर स्वयं विधि प्रसर ॥१२९॥

बसहि नगर सुंदर नर नारी । तनु बहू मनसिन्न रति सनुपाठी ॥
 तेहि पुर बसइ सीलनिधि राजा । अगनिन हय मय सैन समाजा ॥
 सत सुरंस सम विभव विलासा । मय मंत्र पद नीति निवासा ॥
 पितृमांहीनी तायु कुमारी । श्री विमोह जियु रूप निहारी ॥
 सोइ हरिमाया मय गुन खानी । सोभा तायु कि जह पावानी ॥
 करइ व्यंभर सो नृपबाला । प्राण सह अगनिन महिबाला ॥
 मुनि कौतुकी नगर तेहि मयऊ । पुरबासिन्ह मय पूछा भयऊ ॥
 मुनि सय चरित भूप गृह आण । करि पूजा नृप मुनि पैठाण ॥

श्लो०-आनि देखाई नारदहि मुनि तपकुमारि ।

कहहु नाम गुन शंभ मय एहि के हृदयै विचारी ॥१३०॥

देखि रूप मुनि विरति पिपारी । बड़ी पार लगि रहं निहारी ॥
 लच्छन तायु पिलोकि भुलाने । हृदयै हरप नहि प्रगट पाखाने ॥
 जो एहि परइ अमर सोइ होई । ममभूमि तेहि जीत न कोई ॥
 सेवहि सकल चराचर नाई । परइ सीलनिधि कन्या जाही ॥
 लच्छन सय पिचारि उर राखे । कलुक बनाइ मूप मन भाषे ॥
 सुता सुलच्छन कहि नृप पाही । नारद चले सोन मन माही ॥
 करौ जाइ सोइ जतन विचारी । जेहि प्रकार सोहि बर कुमारी ॥

जप तप कछु न होइ तेहि काला । हे विधि मिलइ कवन विधि वाल

दो०—एहि अवसर चाहिअ परम सोभा रूप विसाल ।
जो विलोकि रीझै कुअरि तव मेलै जयमाल ॥१३१॥

हरि सन मागौ सुंदरताई । होइहि जात गहरु अति भाई ॥
मोरें हित हरि सम नहिं कोऊ । एहि अवसर सहाय सांड होऊ ॥
बहुविधि विनय कीन्हि तेहि काला । प्रगटेउ प्रभु काँतुकी कृपाला ॥
प्रभु विलोकि मुनि नयन जुड़ाने । होइहि काजु हिँएँ हरपाने ॥
अति आरति कहि कथा सुनाई । करहु कृपा करि होहु सहाई ॥
आपन रूप देहु प्रभु मोही । आन भाँति नहिं पावाँ ओही ॥
जेहि विधि नाथ होइ हित मोरा । करहु सो वेगि दास मैं तोरा ॥
निज माया बल देखि विसाला । हिँयँ हँसि बोले दीनदयाला ॥

दो०—जेहि विधि होइहि परम हित नारद सुनहु तुम्हार ।
सोइ हम करव न आन कछु बचन न मृपा हमार ॥१३२॥

कुपथ माग रुज व्याकुल रोगी । वेद न देइ सुनहु मुनि जोगी ॥
एहि विधि हित तुम्हार मैं ठयऊ । कहि अस अंतरहित प्रभु भयऊ ॥
माया विवस भए मुनि मूढ़ा । समुझी नहिं हरि गिरा निगूढ़ा ॥
बने तुरत तहाँ रिपिराई । जहाँ स्वयंवर भूमि बनाई ॥
ज निज आसन बँठे राजा । बहु बनाव करि सहित ममाजा ॥
ने मन हरप रूप अति मोरें । मोहि तजि आनहि वरिहि न भोरें ॥
ने हित कारन कृपानिधाना । दीन्ह कुरूप न जाइ बखाना ॥
चरित्र लखि काहुँ न पावा । नारद जानि सबहिँ सिर नावा ॥

पुनि जल दांख रूप निज पावा । नदपि हृदय मंनोप न अदा ॥
 फरकत अधर कोप मन माहीं । मपादि चले कमलापाति पाहीं ॥
 देहउँ थाप कि मग्निहउँ जाई । जगत मोरि उपहाम करगई ॥
 बीचहिं पंथ मिले दनुजार्गी । मंग रमा मोई राजकुमारी ॥
 बोले मधुर वचन मुग्माई । मुनि कहँ चले विकल की नाई ॥
 सुनत वचन उपजा अति क्रोधा । माया वम न रहा मन घोधा ॥
 पर संपदा मकहु नहिं देखी । तुम्हें इगिया कपट विवेपी ॥
 मथत मिथु रुद्रहि योगायहु । मुग्न्ह प्रेरि विष पान करायहु ॥
 दो०—जसुर सुरा विष संकहि आपु रमा मनि चारु ।

स्वारथ सायक कुटिल तुम्ह मदा कपट व्यवहार ॥ १३६ ॥

परम स्वतंत्र न सिर पर कोई । भावइ मनहि करहु तुम्ह मोई ॥
 भलेहि मंद मंदेहि भल करहु । विसमय हरप न हियँ कष्टु धरहु ॥
 डहकि डहकि परिचेहु सब काह । अति असंक मन मदा उछाह ॥
 करम सुभासुभ तुम्हहि न बाधा । अब लागि तुम्हहि न काहँ माथा ॥
 भले भवन अब वापन दीन्हा । पावहुगे फल आपन कीन्हा ॥
 बंचेहु मोहि जवनि धरि देहा । सोइ तनु धरहु थाप मम एहा ॥
 कपि आकृति तुम्ह कीन्हि हमारी । करिहिहिं कीम महाय तुम्हारी ॥
 मम अपकार कीन्ह तुम्ह भारी । नारि विरहँ तुम्ह होय दुखारी ॥

दो०—थाप सीस धरि हरपि हियँ प्रमु बहु विनती कीन्हि ।

निज माया के प्रवलता करपि कृपानिधि लीन्हि ॥ १३७ ॥

जव हरि माया दूर निवारी । नहिं तहँ रमा न राजकुमारी ॥
 तव मुनि अति सभित हरि चरना । गहे पाहि प्रनतारति हरना ॥

मृषा होउ मम श्राप कृपाला । मम इच्छा कह दीनदयाला ॥
 मैं दुर्वचन कहे बहुतेरे । कह मुनि पाप मिटिहिं किमि मेरे ॥
 जपहु जाइ संकर सत नामा । होइहि हृदयँ तुरत विश्रामा ॥
 कोउ नहिं सिव समान प्रिय मोरें । असि परतीति तजहु जनि भोरें ॥
 जेहि पर कृपा न करहिं पुरारी । सो न पाव मुनि भगति हमारी ॥
 अस उर धरि महि विचरहु जाई । अवन तुम्हहि माया निअराई ॥

दो०—बहुविधि मुनिहि प्रवोधि प्रभु तव भए अंतरधान ।

सत्यलोक नारद चले करत राम गुन गान ॥१३८॥

हर गन मुनिहि जात पथ देखी । विगतमोह मन हरप विसेपी ॥
 अति सभित नारद पहिं आए । गहि पद आरत वचन सुनाए ॥
 हर गन हम न विप्र मुनिराया । बड़ अपराध कीन्ह फल पाया ॥
 श्राप अनुग्रह करहु कृपाला । बोले नारद दीनदयाला ॥
 निसिचर जाइ होहु तुम्ह दोऊ । वैभव विपुल तेज बल होऊ ॥
 भुजबल विख जितव तुम्ह जहिआ । धरिहिं विष्णु मनुज तनु तहिआ ॥
 समर भरन हरि हाथ तुम्हारा । होइहु मुकुत न पुनि संसारा ॥
 चले जुगल मुनि पद सिर नाई । भए निसाचर कालहि पाई ॥

दो०—एक कल्प एहि हेतु प्रभु लीन्ह मनुज अवतार ।

सुर रंजन सज्जन सुखद हरि भंजन भुवि भार ॥१३९॥

एहि विधि जनम करम हरि केरे । सुंदर सुखद विचित्र घनेरे ॥
 कल्प कल्प प्रति प्रभु अवतरहीं । चारु चरित नाना विधि करहीं ॥
 तव तव कथा मुनीसन्ह गाई । परम पुनीत प्रबंध बनाई ॥
 विविध प्रसंग अनूप बखाने । करहिं न सुनि आचरजु सयाने ॥

हरि अनंत हरिकथा अनंता । कहहिं सुनहिं बहुविधि सब संता ॥
 रामचंद्र के चरित सुहाए । कल्पकोटि लगी जाहिं न गाए ॥
 यह प्रसंग मैं कहा भवानी । हरिमायाँ मोहहिं मुनि ग्यानी ॥
 प्रभु कौतुकी प्रनत हितकारी । सेवत सुलभ सकल दुख हारी ॥

।सो०—सुर नर मुनि कोउ नाहि जेहि न मोह माया प्रयत्न ।

। अस विचारि मन माहि भजिअ महामाया पतिहि ॥१४०॥

अपर हेतु सुनु सैलकुमारी । कहउँ विचित्र कथा विस्तारी ॥
 जेहि कारन अज अगुन अरूपा । ब्रह्म भयउ कोसलपुर भूपा ॥
 जो प्रभु विपिन फिरत तुम्ह देखा । यंधु समेत धरें मुनिबेपा ॥
 जासु चरित अबलोकि भवानी । सती सरीर रहिहु बौरानी ॥
 अजहुँ न छापा मिटति तुम्हारी । तासु चरित सुनु भ्रम रूज हारी ॥
 लीला कीन्हि जो तेहि अवतारा । सो सब कहिहुँ मति अनुसारा ॥
 भरद्वाज सुनि संकर बांनी । सकुचि सप्रेम उमा सुसुकानी ॥
 लगे बहुरि वरन वृषकेतु । सो अवतार भयउ जेहि हेतु ॥

।सो०—सो मैं तुम्ह सन कहउँ सब सुनु मुनीस मन लाए ।

। राम कथा कलि मल हरनि मंगल करनि मुहाड ॥१४१॥

स्वार्थमू मनु अरु सतरूपा । जिन्ह तें मैं नरसृष्टि अनूपा ॥
 दंपति धरम आचरन नीका । अजहुँ गाव थुति जिन्ह कैलीका ॥
 नृप उच्चानपाद सुत तासु । ध्रुव हरिभगत भयउ सुत जासु ॥
 लघु सुत नाम प्रियत्रत ताही । वेद पुरान प्रसंमहिं जाही ॥
 देवहृति पुनि तासु कुमारी । जो मुनि कर्दम क प्रिय नारी ॥
 आदिदेव प्रथम दीनटयाला । लख धरोउ जेहि कपिल कृपाला ॥

मृषा होउ मम श्राप कृपाला । मम इच्छा कह दीनदयाला ॥
 मैं दुर्वचन कहे बहुतेरे । कह मुनि पाप मिटिहि किमि मेरे ॥
 जपहु जाइ संकर सत नामा । होइहि हृदयँ तुरत विश्रामा ॥
 कोउ नहिं सिव समान प्रिय मोरें । असि परतीति तजहु जनि भोरें ॥
 जेहि पर कृपा न करहिं पुरारी । सो न पाव मुनि भगति हमारी ॥
 अस उर धरि महि विचरहु जाई । अत्र न तुम्हहि साया निअराई ॥

दो०—बहुविधि मुनिहि प्रबोधि प्रभु तव भए अंतरधान ।

सत्यलोक नारद चले करत राम गुन गान ॥१३८॥

हर गन मुनिहि जात पथ देखी । विगतमोह मन हरष विसेपी ॥
 अति समीत नारद पहिं आए । गहि पद आरत वचन सुनाए ॥
 हर गन हम न विप्र मुनिराया । बड़ अपराध कीन्ह फल पाया ॥
 श्राप अनुग्रह करहु कृपाला । बोले नारद दीनदयाला ॥
 निसिचर जाइ होहु तुम्ह दोऊ । वैभव विपुल तेज बल होऊ ॥
 भुजबल विस्व जितव तुम्ह जहिआ । धरिहहिं विष्णु मनुज तनु तहिआ ॥
 समर मरन हरि हाथ तुम्हारा । होइहहु मुकुत न पुनि संसारा ॥
 चले जुगल मुनि पद सिर नाई । भए निसाचर कालहि पाई ॥

दो०—एक कल्प एहि हेतु प्रभु लीन्ह मनुज अवतार ।

सुर रंजन सज्जन सुखद हरि भंजन भुवि भार ॥१३९॥

एहि विधि जनम करम हरि केरे । सुंदर सुखद विचित्र धनेरे ॥
 कल्प कल्प प्रति प्रभु अवतरहीं । चारु चरित नाना विधि करहीं ॥
 तव तव कथा मुनीसन्ह गाई । परम पुनीत प्रबंध बनाई ॥
 विविध प्रसंग अनूप बखाने । करहिन सुनि आचरजु सयाने ॥

हरि अनंत हरिकथा अनंता । कहहिं मुनिहिं बहुविधि सब संता ॥
 रामचंद्र के चरित सुहाए । कल्पकोटि लगि जाहिं न गाए ॥
 यह प्रसंग मैं कहा भवानी । हरिमायाँ मोहहिं मुनि ग्यानी ॥
 प्रह्व कौतुकी प्रनत हितकारी । सेवत मुलभ सकल दुख हारी ॥

सो०—सुर नर मुनि कोउ नाहिं जेहि न मोह माया प्रबल ।

अस विचारि मन माहिं भजिअ महामाया पतिहि ॥१४०॥

अपर हेतु मुनु सैलकुमारी । कहउँ विचित्र कथा विस्तारी ॥
 जेहि कारन अज अगुन अरूपा । ब्रह्म भयउ कोसलपुर भूपा ॥
 जो प्रभु विपिन फिरत तुम्ह देखा । वंधु समेत धरं मुनिबेपा ॥
 जामु चरित अवलोकि भवानी । सती सरीर गहिहु वौरानी ॥
 अजहुँ न छाया मिटति तुम्हारी । तासु चरित मुनु भ्रम रुज हारी ॥
 लीला कीन्हि जो तेहि अवतारा । सो सब कहिहुँ मनि अनुसार ॥
 भद्राज मुनि संकर वांनी । सकुचि सप्रेम उमा मुसुकानी ॥
 लगे बहुरि वरनै वृषकेतू । सो अवतार भयउ जेहि हेतू ॥

सो०—सो मैं तुम्ह सन कहउँ, सबु मुनु मुनीस मन लाट ।

राम कथा कलि मल हरनि मंगल करनि मुहाट ॥१४१॥

स्वयंभू-मुनु अरु सतरूपा । जिन्ह तेँ भँ नरमृष्टि अनूपा ॥
 दंपति धरम आचरन नीका । अजहुँ गाव श्रुनि जिन्ह कैलीकर ॥
 रूप उत्तानपाद सुत तासु । ध्रुव हरिभगत भयउ मुन जानू ॥
 लघु सुत नाम प्रियव्रत ताही । वेद पुरान प्रमंनहिं जाही ॥
 देवहृति पुनि तासु कुमारी । जो मुनि कर्दम के प्रिय नाग ॥
 आदिदेव प्रह्व दीनदयाला । लठर धरेउ जेहि कपिल कृपाला ॥

सांख्य सास्त्र जिन्ह प्रगट बखाना । तत्त्व विचार निपुन भगवाना ।
तेहिं मनु राज कीन्ह बहु काला । प्रभु आयसु सब विधि प्रतिपाला ।
सो०—होइ न विषय विराग भवन वसत भा चौधपन ।

हृदयँ बहुत दुख लाग जनम गयउ हरिभगति विनु ॥१४२॥

बरवस राज सुतहि तव दीन्हा । नारि समेत गवन बन कीन्हा ॥
तीरथ वर नैमिष विख्याता । अति पुनीत साधक सिधि दाता ॥
बसहिं तहाँ मुनि सिद्ध समाजा । तहँ हियँ हरपि चलेउ मनु राजा ॥
पंथ जात सोहहिं मतिधीरा । ग्यान भगति जनु धरें सरीरा ॥
पहुँचे जाइ धेनुमति तीरा । हरपि नहाने निरमल नीरा ॥
आए मिलन सिद्ध मुनि ग्यानी । धरम धुरंधर नृपारिपि जानी ॥
जहँ जहँ तीरथ रहे सुहाए । मुनिन्ह सकल सादर करवाए ॥
कृस सरीर मुनिपट परिधाना । सत समाज नित सुनहिं पुराना ॥

दो०—द्वादस अच्छर मंत्र पुनि जपहिं सहित अनुराग ।
वासुदेव पद पंकरह दंपति मन अति लाग ॥१४३॥

करहिं अहार साक फल कंदा । सुमिरहिं ब्रह्म सच्चिदानंदा ॥
पुनि हरि हेतु करन तप लागे । वारि अधार मूल फल त्यागे ॥
उर अभिलाप निरंतर होई । देखिअ नयन परम प्रभु सोई ॥
प्रभुन अखंड अनंत अनादी । जेहि चितहिं परमारथवादी ॥
पति नेति जेहि वेद निरूपा । निजानंद निरूपाधि अनूपा ॥
भु विरंचि विष्णु भगवाना । उपजहिं जासु अंस तें नाना ॥
सेउ प्रभु सेवक वस अहई । भगत हेतु लीलातनु गहई ॥
यह वचन सत्य श्रुति भाषा । तौ हमार पूजिहि अति ॥

दो०—एहि विधि बीते बरष पट सहस चारि आहार ।

संवत सप्त सहस्र पुनि रहे समीर अधार ॥ १४४ ॥

बरष सहस दस त्यागेउ सोऊ । ठाढ़े रहे एक पद दोऊ ॥

विधि हरि हर तप देखि अपारा । मनु समीप आए बहु वारा ॥

मागहु बर बहु भाँति लोभाए । परम धीर नहिँ चलहिँ चलाए ॥

अस्थिमात्र होइ रहे सरीरा । तदपि मनाग मनहिँ नहिँ पीरा ॥

प्रभु सर्वग्य दास निज जानी । गति अनन्य तापस नृप रानी ॥

मागु मागु बरु भै नभ बानी । परम गभीर कृपामृत सानी ॥

मृतक जिआवनि गिरा सुहाई । श्रवन रंभ्र होइ उर जव आई ॥

हृष्टपुष्ट तन भए मुहाए । मानहुँ अवहिँ भजन ते आए ॥

दो०—श्रवन सुषा सम वचन सुनि पुलक प्रकलित गात ।

घोले मनु करि दंडवत प्रेम न हार्यँ समात ॥ १४५ ॥

मुनु सेवक सुरतरु सुरधेनु । विधि हरि हर बंदित पद रेनु ॥

सेवत गुलभ सकल सुख दायक । प्रनतपाल सचराचर नायक ॥

जाँ अनाथ हित हम पर नेह । ताँ प्रसन्न होइ यह बर देह ॥

जो सरूप बस सिव मन माहीं । जेहि कारन मुनि जतन कराहीं ॥

जो भुसुंढि मन मानस हंसा । सगुन अगुन जेहि निगम प्रसंसा ॥

देखहिँ हम सो रूप भरि लोचन । कृपा करहु प्रनतारति मोचन ॥

दंपति वचन परम प्रिय लागे । मृदुल विनीत प्रेम रस पागे ॥

भगत बछल प्रभु कृपानिधाना । त्रिस्ववास प्रगटे भगवाना ॥

दो०—नील सरोरुह नील मनि नील नीरपर स्याम ।

लाजहिँ तन सोभा निरखि कोटि कोटि सत काम ॥ १४६ ॥

सरद मयंक बदन छवि सींवा । चारु कपोल चिबुक दर ग्रीवा ॥
 अधर अरुन रद सुंदर नासा । विधु कर निकर विनिंदक हासा ॥
 नव अंबुज अंबक छवि नीकी । चितवनि ललित भावँती जी की ॥
 भृकुटि मनोज चाप छवि हारी । तिलक ललाट पटल दुतिकारी ॥
 कुंडल मकर मुकुट सिर भ्राजा । कुटिल केस जनु मधुप समाजा ॥
 उर श्रीवत्स रुचिर वनमाला । पदिक हार भूपन मनिजाला ॥
 केहरि कंधर चारु जनेऊ । बाहु विभूपन सुंदर तेऊ ॥
 करि कर सरिस सुभग भुजदंडा । कटि निपंग कर सर कोदंडा ॥

दो०—तड़ित विनिंदक पीत पट उदर रेख वर तीनि ।

नाभि मनोहर लेति जनु जमुन भवँर छवि छीनि ॥१४७॥

पद राजीव बरनि नहिं जाहीं । मुनि मन मधुप बसहिं जेन्ह माहीं
 वाम भाग सोभति अनुकूला । आदिसक्ति छविनिधि जगमूला
 जासु अंस उपजहिं गुनखानी । अगनित लच्छि उमा ब्रह्मानी ॥
 भृकुटि विलास जासु जग होई । राम वाम दिसि सीता सोई ॥
 छविसमुद्र हरि रूप विलोकी । एकटक रहे नयन पट रोकी ॥
 चितवहिं सादर रूप अनूपा । तृप्ति न मानहिं मनु सतरूपा ॥
 हरप विवस तन दसा भुलानी । परे दंड इव गहि पद पानी ॥
 सिर परसे प्रभु निज कर कंजा । तुरत उठाए करुनापुंजा ॥

दो०—बोले कृपानिधान पुनि अति प्रसन्न मोहि जानि ।

मागहु वर जोइ भाव मन महादानि अनुमानि ॥१४८॥

सुनि प्रभु वचन जोरि जुग पानी । धरि धीरजु बोली मृदु बानी ॥
 नाथ देखि पद कमल तुम्हारे । अब पूरे सब काम हमारे ॥

एक लालसा बड़ि उर माहीं । सुगम अगम कहि जात सो नाहीं ।
 तुम्हहि देत अति सुगम गोसाईं । अगम लाग मोहि निज कृपनाईं ॥
 जथा दरिद्र विबुधतरु पाई । बहु संपति भागत सकुचाई ॥
 तासु प्रभाउ जान नहि सोई । तथा हृदय मम संसय होई ॥
 सो तुम्ह जानहु अंतरजामी । पुरवहु मोर मनोरथ स्वामी ॥
 सकुच बिहाइ मागु नृप मोही । मोरें नहि अदेय कछु तोही ॥

दो०—दानि सिरोमनि कृपानिधि नाथ कहउँ सतिभाउ ।

चाहउँ तुम्हहि समान सुत प्रभु सन कवन दुराउ ॥१४९॥

देखि प्रीति सुनि बचन अमोले । एवमस्तु करुनानिधि बोले ॥
 आपु सरिस खोजों कहँ जाई । नृप तव तनय होव मैं आई ॥
 सतरूपहि विलोकि कर जोरें । देखि मागु बरु जो रुचि तोरें ॥
 जो बरु नाथ चतुर नृप मागा । सोइ कृपाल मोहि अति प्रिय लागा
 प्रभु परंतु सुठि होति दिठाई । जदपि भगत हित तुम्हहि सोहाई
 तुम्ह ब्रह्मादि जनक जग स्वामी । ब्रह्म सकल उर अंतरजामी ॥
 अस समुझत मन संसय होई । कहा जो प्रभु प्रवान पुनि सोई ॥
 जे निज भगत नाथ तव अहहीं । जो सुख पावहिं जो गति लहहीं ॥

दो०—सोइ सुख सोइ गति सोइ भगति सोइ निज चरन सनेहु ।

सोइ विवेक सोइ रहनि प्रभु हमहि कृपा करि देहु ॥१५०॥

सुनि मृदु गूढ़ रुचिर वर रचना । कृपासिंधु बोले मृदु बचना ॥
 जो कछु रुचि तुम्हरे मन माहीं । मैं सो दीन्ह सब संसय नाहीं ॥
 मातु विवेक अलौकिक तोरें । कवहुँ न मिटिहि मोरें ॥
 बंदि चरन मनु कहेउ बहोरी । अवर एक ॥

सुत विपद्क तव पद रति होऊ । मोहि वड़ मूढ़ कहै किन कोऊ ॥
 मनि त्रिनु फनि जिमि जल त्रिनु मीना । मम जीवनं तिमि तुम्हहि अर्धीना ॥
 अस वरु मागि चरन गहि रहेऊ । एवमस्तु करुनानिधि कहेऊ ॥
 अव तुम्ह मम अनुसासन मानी । वसहु जाइ सुरपति रजधानी ॥
 सो०—तहँ करि भोग विसाल तात गएँ कछु काल पुनि ।

होइहहु अवघ भुआल तव मैं होव तुम्हार सुत ॥१५१॥

इच्छामय नरवेष सँवारें । होइहउँ प्रगट निकेत तुम्हारें ॥
 अंसन्ह सहित देह धरि ताता । करिहउँ चरित भगत सुखदाता ॥
 जे सुनि सादर नर वड़भागी । भव तरिहहिँ ममता मद त्यागी ॥
 आदिसक्ति जेहिँ जग उपजाया । सोउ अवतरिहि मोरि यह माया ॥
 पुरउव मैं अभिलाष तुम्हारा । सत्य सत्य पन सत्य हमारा ॥
 पुनि पुनि अस कहि कृपानिधाना । अंतरधान भए भगवाना ॥
 दंपति उर धरि भगत कृपाला । तेहिँ आश्रम निवसे कछु काला ॥
 समय पाइ तनु तजि अनयासा । जाइ कीन्ह अमरावति वासा ॥

दो०—यह इतिहास पुनीत अति उमहि कही वृषकेतु ।

भरद्वाज सुनु अपर पुनि राम जनम कर हेतु ॥१५२॥

मासपारायण, पाँचवाँ विश्राम

सुनु मुनि कथा पुनीत पुरानी । जो गिरिजा प्रति संभु वखानी ॥
 विश्व विदित एक कैंकय देख । सत्यकेतु तहँ वसइ नरेसु ॥
 धरम धुरंधर नीति निधाना । तेज प्रताप सील बलवाना ॥
 तेहि कैं भए जुगल सुत वीरा । सब गुन धाम महा रनधीरा ॥

राज धनी जो जेठ सुत आही। नाम प्रतापभानु अम्र ताही ॥
अपर सुतहि अरिर्मर्दन नामा। भुजबल अतुल अचल संग्रामा ॥
भाइहि भाइहि परम समीती। सकल दोष छल वरजित प्रीती ॥
जेठे सुतहि राज नृप दीन्हा। हरि हित आपु गवन वन कीन्हा ॥

दो०—जब प्रतापरवि भयउ नृप फिरी दोहाई देत ।

प्रजा पाल अति वेदविधि कतहुँ नहीं अब लेत ॥१५३॥

नृप हितकारक सचिव सयाना। नाम धरमरुचि सुक समाना ॥
सचिव सयान बंधु बलभीरा। आपु प्रतापपुंज रनधीरा ॥
सेन संग चतुरंग अपारा। अमित मुभट सब समर जुझारा ॥
सेन विलोकि राउ हरपाना। अरु वाजे गहगहं निसाना ॥
विजय हेतु कटकई बनाई। मुदिन साधि नृप चलेउ वजाई ॥
जहँ तहँ परीं अनेक लराई। जीते सकल भूप वरिआई ॥
सप्त दीप भुजबल बस कीन्हे। लै लै दंड छाडि नृप दीन्हे ॥
सकल अवनि मंडल तेहि काला। एक प्रतापभानु महिपाला ॥

दो०—स्ववस-विश्व करि पाहुवल निज पुर कीन्ह प्रवेशु ।

अरथ धरम कामादि सुख सेवइ समयें नरेसु ॥१५४॥

भूप प्रतापभानु बल पाई। कामधेनु भै भूमि मुहाई ॥
सब दुख वरजित प्रजा मुखारी। धरमसील मुंदर नर नारी ॥
सचिव धरमरुचि हरि पद प्रीती। नृप हित हेतु सिखव नित नीती ॥
गुर गुर संत पितर महिदेवा-करइ सदा नृप सब कै सेवा ॥
भूप धरम जे वेद बखाने। सकल करइ सादर सुख माने ॥
दिन प्रति देइ विविध विधि दाना। सुनइ साखे ब्रह्मदे

नाना बापीं कूप तड़ागा। सुमन बाटिका सुंदर बागा ॥
बिप्रभवन सुरभवन सुहाए। सब तीरथन्ह विचित्र बनाए ॥

दो०—जहँ लगी कहे पुरान श्रुति एक एक सब जाग ।

बार सहस्र सहस्र नृप किए सहित अनुराग ॥१५५॥

हृदयँ न कछु फल अनुसंधाना। भूप विबेकी परम सुजाना।
करइ जे धरम करम मन बानी। वासुदेव अर्पित नृप ग्यानी।
चढ़ि बर बाजि बार एक राजा। मृगया कर सब साजि समाजा।
बिंध्याचल गभीर बन गयऊ। मृग पुनीत बहु मारत भयऊ।
फिरत बिपिन नृप दीख बराहू। जनु बन दुरेउ ससिहि ग्रसि राहू।
बड़ बिधु नहिं समात मुख माहीं। मनहुँ क्रोध बस उगिलत नाहीं।
कोल कराल दसन छवि गाई। तनु विसाल पीवर अधिकाई।
घुरुघुरात हय आरौ पाएँ। चकित बिलोकत कान उठाएँ।

दो०—नील महोधर सिखर सम देखि विसाल बराहु ।

चपरि चलेउ हय सुटुकि नृप हाँकि न होइ निबाहु ॥१५६॥

आवत देखि अधिक रव बाजी। चलेउ बराह मरुत गति भाजी।
तुरत कीन्ह नृप सर संधाना। महि मिलि गयउ बिलोकत बान।
तकि तकि तीर महीस चलावा। करि छल सुअर सरीर बचावा।
प्रगटत दुरत जाइ मृग भागा। रिस बस भूप चलेउ संग लागा।
गयउ दूरि घन गहन बराहू। जहँ नाहिन गज बाजि निबाहू।
अति अकेल बन बिपुल कलेसू। तदपि न मृग मग तजइ नरेसू।
कोल बिलोकि भूप बड़ धीरा। भागि पैठ गिरिगुहाँ गभीरा।
अगम देखि नृप अति पछिताई। फिरेउ महाबन परेउ भुलाई।

दो०—रोद खिन्न छुड़ित तृपित राजा याजि समेत ।

सोजत न्याकुल सरित सर जठ त्रिनु भयउ अचेत ॥१५७॥

फिरत विपिन आश्रम एक देखा । तहँ वस नृपति कपट मुनिवेपा ॥
 जामु देस नृप लीन्ह छड़ाई । समर सेन तजि गयउ पराई ॥
 समय प्रतापभानु कर जानी । आपन अति असभय अनुमानी ॥
 गयउ न गृह मन बहुत गलानी । मिला न राजहि नृप अभिमानी ॥
 रिस उर मारि रंक जिमि राजा । विपिन वसइ तापस के साजा ॥
 तामु समीप गवन नृप कीन्हा । यह प्रतापरवि तेहि तव चीन्हा ॥
 राउ तृपित नहिं सो पहिचाना । देखि मुवेप महामुनि जाना ॥
 उतरि तुरग तैं कीन्ह प्रनामा । परम चतुर न कहेउ निज नामा ॥

दो०—नृपति तृपित विलोकि तेहि सरवर दीन्ह देखाइ ।

मजन पान समेत हय कीन्ह नृपति हरपाइ ॥१५८॥

गँ श्रम सकल सुखी नृप भयऊ । निज आश्रम तापस लै गयऊ ॥
 आसन दीन्ह अस्त रवि जानी । पुनि तापस बोलेउ मृदु बानी ॥
 को तुम्ह कस बन फिरहु अकेलें । सुंदर जुवा जीव परहेलें ॥
 चक्रवर्ति के लच्छन तोरें । देखत दया लागि अति मोरें ॥
 नाम प्रतापभानु अवनीसा । तामु सचिव मैं सुनहु मुनीसा ॥
 फिरत अहेरें परेउँ भुलाई । बहें भाग देखेउँ पद आई ॥
 हम कहँ दुर्लभ दरस तुम्हारा । जानत हीं कछु भल होनिहारा ॥
 कह मुनि तात भयउ अंधिआरा । जोजन सचरि नगरु तुम्हारा ॥

दो०—निसा घोर गंभीर बन पंथ न सुनहु सुजान ।

वसहु आजु अस जानि तुम्ह जाएहु होत विद्वान ॥

तुलसी जसि भवतव्यता तैसी मिलइ सहाइ ।

आपुन आवइ ताहि पहि ताहि तहाँ लै जाइ ॥१५९(ख)॥

भलेहिं नाथ आयसु धरि सीसा । बाँधि तुरग तरु बैठ महीसा ॥
 नृप बहु भाँति प्रसंसेउ ताही । चरन बंदि निज भाग्य सराही ॥
 पुनि बोलेउ मृदु गिरा सुहाई । जानि पिता प्रभु करउँ ठिठाई ॥
 मोहि मुनीस सुत सेवक जानी । नाथ नाम निज कहहु बखानी ॥
 तेहि न जान नृप नृपहि सो जाना । भूप सुहृद सो कपट सयाना ॥
 वैरी पुनि छत्री पुनि राजा । छल बल क्रीन्ह चहइ निज काजा ॥
 समुझि राजसुख दुखित अराती । अवाँ अनल इव सुलगइ छाती ॥
 सरल वचन नृप के सुनि काना । वयर सँभारि हृदयँ हरपाना ॥

दो०—कपट वोरि वानी मृदुल बोलेउ जुगुति समेत ।

नाम हमार भिखारि अब निर्धन रहित निकेत ॥१६०॥

कह नृप जे विग्यान निधाना । तुम्ह सारिखे गलित अभिमाना ॥
 सदा रहहिं अपनपौँ दुराएँ । सब विधि कुसल कुवेप बनाएँ ॥
 तेहि तें कहहिं संत श्रुति टेरें । परम अकिंचन प्रिय हरि केरें ॥
 तुम्ह सम अधन भिखारि अगेहा । होत विरंचि सिवहि संदेहा ॥
 जोसि सोसि तव चरन नमामी । सो पर कृपा करिअ अब खासी ॥
 सहज ग्रीति भूपति कै देखी । आपु विषय विस्वास विसेपी ॥
 सब प्रकार राजहि अपनाई । बोलेउ अधिक सनेह जनाई ॥
 सुनु सतिभाउ कहउँ महिपाला । इहाँ बसत बीते बहु काला ॥

दो०—अब लगि मोहि न मिलेउ कोउ मैं न जनावउँ काहु ।

लोकमान्यता अनल सम कर तप कानन दाहु ॥१६१(क)॥

सो०—तुलसी देखि सुवेणु मूजहि मूढ न चतुर नर ।

मुंदर केकिहि पेशु वचन सुधा मय असन अहि ॥१६१(ख)॥

ताते गुपुत रहउं जग माहीं । हरि नजि किमपि प्रयोजन नाहीं ॥
 प्रभु जानत सब विनहिं जनाएँ । कहहु कवनि सिधि लोक रिझाएँ ॥
 तुम्ह मुचि गुमति परम प्रिय मोरें । प्रीति प्रतीति मोहि पर तोरें ॥
 अथ जाँ तात दुरावउं तोही । दारुन दौष घटइ अति मोही ॥
 जिमि जिमि तापसु कथइ उदासा ॥ तिमि तिमि नृपहि उपज विम्यासा
 देखा म्वस कर्म मन बानी । नव बोला तापम घगघ्यानी ॥
 नाम हमार एकतनु भाई । गुनि नृप बोलेउ पुनि सिरु नाई ॥
 कहहु नाम कर अरथ बखानी । मोहि सेवक अति आपन जानी ॥

दो०—आदिसृष्टि उपजी जगहि तव उत्पति भै मोरि ।

नाम एकतनु हेतु तेहि देह न धरी बहोरि ॥१६२॥

जनि आचरजु कहहु मन माहीं । सुत तप ते दुर्लभ कछु नाहीं ॥
 तपवल ते जग सृजइ विधाता । तपवल विष्णु भए परिव्राता ॥
 तपवल संभु करहिं संवारा । तप ते अगम न कछु मंसारा ॥
 भयउ नृपहि गुनि अति अनुरागा । कथा पुरातन कहैं सो लागा ॥
 कर्म धरम इतिहास अनेका । कहइ निरूपन विरति विवेका ॥
 उद्भव पालन प्रलय कहाजी । कहैमि अमित आचरज बखानी ॥
 गुनि महीप तापस वस भयऊ । आपन नाम कहन तव लयऊ ॥
 कह तापस नृप जानउं तोही । कीन्हहु कपट लाग भल मोही ॥

सो०—मुनु महीस जसि नोति जहें तहें नाम न कहहि नृपे ।

मोहि मोहि पर अति प्रीति सोइ चरता विचारि तप ॥ ३ ॥

नाम तुम्हार प्रताप दिनेसा । सत्यकेतु तव पिता नरेसा ॥
 गुर प्रसाद सब जानिअ राजा । कहिअ न आपन जानि अकाजा ॥
 देखि तात तव सहज सुधार्ई । ग्रीति प्रतीति नीति निपुनार्ई ॥
 उपजि परी ममता मन मोरें । कहउँ कथा निज पूछे तोरें ॥
 अब प्रसन्न मैं संसय नाहीं । मागु जो भूप भाव मन माहीं ॥
 सुनि सुवचन भूपति हरषाना । गहि पद विनय कीन्हि विधि नाना
 कृपासिंधु मुनि दरसन तोरें । चारि पदारथ करतल मोरें ॥
 प्रभुहि तथापि प्रसन्न विलोकी । मागि अगम वर होउँ असोकी ॥

दो०—जरा मरन दुख रहित तनु समर जितै जनि कोउ ।

एकछत्र रिपुहीन महि राज कल्प सत होउ ॥१६४॥

कह तापस नृप ऐसेइ होऊ । कारन एक कठिन सुनु सोऊ ॥
 कालउ तुअ पद नाइहि सीसा । एक विप्रकुल छाड़ि महीसा ॥
 तपवल विप्र सदा वरिआरा । तिन्ह के कोप न कोउ रखवारा ॥
 जाँ विप्रन्ह बस करहु नरेसा । तौ तुअ बस विधि विष्णु महेसा ॥
 चल न ब्रह्मकुल सन वरिआई । सत्य कहउँ दोउ भुजा उठार्ई ॥
 विप्र थाप विनु सुनु महिपाला । तोर नास नहिं कवनेहुँ काला ॥
 हरषेउ राउ वचन सुनि तास्र । नाथ न होइ मोर अब नास्र ॥
 तव प्रसाद प्रभु कृपानिधाना । मो कहूँ सर्व काल कल्याणा ॥

दो०—एवमस्तु कहि कपटमुनि घोला कुटिल बहोरि ।

मिलव हमार भुलाव निज कहहु त हमहि न खोरि ॥१६५॥

तातें मैं तोहि वरजउँ राजा । कहें कथा तव परम अकाजा ॥
 छठें श्रवन यह परत कहानी । नास तुम्हार सत्य मम बानी ॥

यह प्रगटें अथवा द्विजश्रापा। नास तोर सुनु भानुप्रतापा ॥
 आन उपायँ निधन तव नाहीं। जाँ हरि हर कोपहिँ मन माहीं ॥
 सत्य नाथ पद गहि नृप भाषा। द्विज गुर कोप कहहु को राखा ॥
 राखइ गुर जाँ कोप बिधाता। गुर विरोध नहिँ कोउ जग त्राता ॥
 जाँ न चलव हम कहे तुम्हारें। होउ नास नहिँ सोच हमारें ॥
 एकहिँ डर डरपत मन मोरा। प्रभु महिदेव श्राप अति घोरा ॥
 दो०—होहिँ विप्र बस कवन विधि कहहु कृपा करि सोउ ।

तुम्ह तजि दीनदयाल निज हितू न देखउँ कोउ ॥१६६॥

सुनु नृप विविध जतन जग माहीं। कष्टसाध्य पुनि होहिँ कि नाहीं ॥
 अइइ एक अति सुगम उपाई। तहाँ परंतु एक कठिनाई ॥
 मम आधीन जुगुति नृप सोई। मोर जाव तव नगर न होई ॥
 आजु लगें अरु जब तैं भयऊँ। काहू के गृह ग्राम न गयऊँ ॥
 जाँ न जाउँ तव होइ अकाजू। बना आइ असमंजस आजू ॥
 सुनि महीस बोलेउ मृदु बानी। नाथ निगम असि नीति बखानी
 षडे सनेह लघुन्ह पर करहीं। गिरि निज सिरनि सदा वृन धरहीं
 जलधि अगाध मौलि बह फेनु। संतत धरनि धरत सिर रेनु ॥

दो०—अस कहि गहे नरेस पद स्वामी होहु कृपाल ।

मोहि लागि हस सहिअ प्रभु सज्जन दीनदयाल ॥१६७॥

जानि नृपहि आपन आधीना। बोला तापस कपट प्रवीना ॥
 सत्य कहउँ भूपति सुनु तोही। जग नाहिन दुर्लभ कछु मोही ॥
 अवसि काज मैं करिहउँ तोरा। मन तन वचन भगत तैं मोरा ॥
 जोग जुगुति तप मंत्र प्रभाऊ। फलइ तबहिँ जब करिअ दुराऊ ॥

जौ नरसः मैं करौ रसोई । तुम्ह परसहु मोहि जान न कोई
अन्न सो जोइ जोइ भोजन करई । सोइ सोइ तव आयसु अनुसरई
पुनि तिन्ह के गृह जेवई जोऊ । तव वस होइ भूप सुनु सोऊ
जाइ उपाय रचहु नृप एह । संव्रत भरि संकल्प करहु

दो०—नित नूतन द्विज सहस सत बरेहु सहित परिवार ।

मैं तुम्हरे संकल्प लागि दिनहिं करवि जेवनार ॥१६८॥

एहि विधि भूप कष्ट अति थोरें । होइहहिं सकल विप्र वस तोरें ।
करिहहिं विप्र होम मख सेवा । तेहिं प्रसंग सहजेहिं वस देवा ।
और एक तोहि कहउँ लखाऊ । मैं एहिं वेप न आउव काऊ ।
तुम्हरे उपरोहित कहूँ राया । हरि आनव मैं करि निज माया ।
तपवल तेहि करि आपु समाना । रखिहउँ इहाँ वरप परवाना ॥
मैं धरि तासु वेपु सुनु राजा । सब विधि तोर सँवारव काजा ।
गै निसि बहुत सयन अब कीजे । मोहि तोहि भूप भेंट दिन तीजे ॥
मैं तपवल तोहि तुरग समेता । पहुँचैहउँ सोवतहि निकेता ॥

दो०—मैं आउव सोइ वेपु धरि पहिचानहु तव मोहि

जब एकांत बोलाइ सब कथा सुनावौ तोहि ॥१६९॥

सयन कीन्ह नृप आयसु मानी । आसन जाइ बैठ छलग्यानी ॥
श्रमित भूप निद्रा अति आई । सो किमि सोव सोच अधिकाई ॥
कालकेतु निसिचर तहँ आवी । जेहिं सुकर होइ नृपहि सुलावा ॥
परम मित्र तापस नृप केरा । जानइ सो अति कपट घनेरा ॥
तेहि के संत सुत अरु दस भाई । खल अति अजय देव दुखदाई ॥
प्रथमहिं भूप समर सब मारे । विप्र संत सर देवि दखारे ॥

तेहि खल पाछिल बयरु सँभारा । तापस नृप मिलि मंत्र विचारा ॥
जेहि रिपु छय सोइ रचेन्हि उपाऊ । भात्री वस न जान कछु राऊ ॥
दो०—रिपु तेजसी अकेल अपि लघु करि गनिअ न ताहु ।

अजहुँ देत दुख रवि ससिहि सिर अवसेपित राहु ॥१७०॥

तापस नृप निज सखहि निहारी । हरपि मिलेउ उटि भयउ मुखारी ॥
मित्रहि कहि सब कथा सुनाई । जातुधान थोला सुख पाई ॥
अब साधेउँ रिपु सुनहु नरेसा । जाँ तुम्ह कीन्ह मोर उपदेसा ॥
परिहरि सोच रहहु तुम्ह सोई । विनु औपध विआधि विधि खोई ॥
कुल समेत रिपु मूल बहाई । चाँथें दिवस मिलव सँ आई ॥
तापस नृपहि बहुत परितोपी । चला महाकपटी अतिरोपी ॥
भानुप्रतापहि वाजि समेता । पहुँचाएसि छन माझ निकेता ॥
नृपहि नारि पहि सयन कराई । हयगृहँ बाँधेसि वाजि बनाई ॥
दो०—राजा के उपरोहितहि हरि लै गयउ बहोरि ।

लै राखेसि गिरि सोह महुँ मायाँ करि मति भोरि ॥१७१॥

आपु विरचि उपरोहित रूपा । परेउ जाइ तेहि सेज अनूपा ॥
जागेउ नृप अनभएँ विहाना । देखि भवन अति अचरजु माना ॥
मुनिं महिमा मत्त महुँ अनुमानी । उठेटे गवँहि जेहि जान न रानी ॥
कानन गयउ वाजि चढ़ि तेहीं । पुर नर नारि न जानेउ केहीं ॥
गएँ जाम जुग मृपति आवा । घर घर उत्सव वाज बधावा ॥
उपरोहितहि देख जव राजा । चक्रित बिलोक सुमिरि सोइ काजा ॥
जुग सम नृपहि गए दिन तीनी । कपटी मुनि पद रह मति लीनी ॥
समय जानि उपरोहित आवा । नृपहि मते सब कहि समझावा ॥

जौ नरेस मैं करौ रसोई। तुम्ह परसहु मोहि जान न कोई ॥
 अन्न सो जोइ जोइ भोजन करई। सोइ सोइ तव आयसु अनुसरई ॥
 पुनि तिन्ह के गृह जेवई जोऊ। तव वस होइ भूप सुनु सोऊ ॥
 जाइ उपाय रचहु नृप एहू। संवत भरि संकल्प करेहू ॥

दो०—नित नूतन द्विज सहस सत चरेहु सहित परिवार ।

मैं तुम्हरे संकल्प लागि दिनहिं करवि जेवनार ॥१६८॥

एहि विधि भूप कष्ट अति थोरें। होइहहिं सकल विप्र वस तोरें ॥
 करिहहिं विप्र होम मख सेवा। तेहिं प्रसंग सहजेहिं वस देवा ॥
 और एकर तोहि कहउँ लखाऊ। मैं एहिं वेप न आउव काऊ ॥
 तुम्हरे उपरोहित कहूँ राया। हरि आनव मैं करि निज माया ॥
 तपवल तेहि करि आपु समाना। रखिहउँ इहाँ वरप परवाना ॥
 मैं धरि तासु वेपु सुनु राजा। सब विधि तोर सँवारव काजा ॥
 गै निसि बहुत सयन अव कीजे। मोहि तोहि भूप भेंट दिन तीजे ॥
 मैं तपवल तोहि तुरग समेता। पहुँचैहउँ सोवतहि निकेता ॥

दो०—मैं आउव सोइ वेपु धरि पहिचानेहु तव मोहि ।

जव एकांत बोलाइ सब कथा सुनावी तोहि ॥१६९॥

सयन कीन्ह नृप आयसु मानी। आसन जाइ बैठ छलग्यानी ॥
 श्रमित भूप निद्रा अति आई। सो किमि सोव सोच अधिकाई ॥
 कालकेतु निसिचर तहँ आवा। जेहिं स्वर होइ नृपहि शुलावा ॥
 परम मित्र तापस नृप केरा। जानइ सो अति कपट घनेरा ॥
 तेहि के सत सुत अरु दस भाई। खल अति अजय देव दुखदाई ॥
 प्रथमहिं भूप समर सब सारै। विप्र संत सुर देखि दुखारै ॥

तेहिं खल पाछिल वयरु सँभारा । तापस नृप मिलि मंत्र विचारा ॥
 जेहिं रिपु छय सोइ रचेन्हि उपाऊ । भावी वस न जान कछु राऊ ॥
 दो०—रिपु तेजसी अकेल अपि लघु करि गनिअ न ताहु ।

अजहुँ देत दुख रवि ससिहि सिर अवसेपित राहु ॥१७०॥

तापस नृप निज सखहि निहारी । हरपि मिलेउ उठि भयउ सुखारी ॥
 मित्रहि कहि सब कथा सुनाई । जातुधान बोला सुख पाई ॥
 अब साधेउँ रिपु सुनहु नरेसा । जौं तुम्ह कीन्ह मोर उपदेसा ॥
 परिहरि सोच रहहु तुम्ह सोई । विनु औपध विआधि विधि खोई ॥
 कुल समेत रिपु मूल बहाई । चाँथें दिवस मिलव मै आई ॥
 तापस नृपहि बहुत परितोपी । चला महाकपटी अतिरोपी ॥
 भानुप्रतापहि वाजि समेता । पहुँचाएसि छन माझ निकेता ॥
 नृपहि नारि पहिं सयन कराई । हयगृहँ बाँधेसि वाजि बनाई ॥

दो०—राजा के उपरोहितहि हरि लै गयउ बहोरि ।
 लै राखेसि गिरि खोह महुँ मायाँ करि मति भोरि ॥१७१॥

आपु विरचि उपरोहित रूपा । परेउ जाइ तेहि सेज अनूपा ॥
 जागेउ नृप अनभएँ विहाना । देखि भवन अति अचरजु माना ॥
 मुनिमहिमा मन महुँ अनुमानी । उठेउ गवँहि जेहिं जान न रानी ॥
 कानन गयउ वाजि चढ़ि तेहीं । पुर नर नारि न जानेउ केहीं ॥
 गएँ जाम जुग भूपति आवा । घर घर उत्सव वाज वधावा ॥
 उपरोहितहि देख जवँ राजा । चकित विलोक मुमिरि सोइ काजा ॥
 जुग सम नृपहि गएँ दिन तीनी । कपटी मुनि पद रह मति लीनी ॥
 समय जानि उपरोहित आवा । नृपहि मते सब कहि समझावा ॥

दो०—नृप हरपेउ पहिचानि गुरु अम बस रहा न चेत ।

बरे तुरत सत सहस बर विप्र कुटुंब समेत ॥१७२॥

उपरोहित जेवनार बनाई। छरस चारि विधिजसि श्रुति गाई॥

मायामय तेहिं कीन्हि रसोई। विंजन बहु गनि सकइ न कोई॥

विविध मृगन्ह कर आमिष राँधा। तेहि महुँ विप्र माँसु खल साँधा॥

भोजन कहुँ सब विप्र बोलाए। पद परवारि सादर बैठाए॥

परुसन जबहिं लाग महिपाला। भै अकासवानी तेहि काला॥

विप्रबृंद उठि उठि गृह जाहू। है बडि हानि अन्न जनि खाहू॥

भयउ रसोई भूसुर माँसु। सब द्विज उठे मानि विस्वासु॥

भूप विकल मति मोहँ भुलानी। भावी बस न आव मुख बानी॥

दो०—बोले विप्र सकोप तव नहिं कछु कीन्ह विचार ।

जाइ निसाचर होहु नृप मूढ़ सहित परिवार ॥१७३॥

छत्रबंधु तैं विप्र बोलाई। घालै लिए सहित समुदाई॥

ईस्वर राखा धरम हमारा। जैहसि तैं समेत परिवारा॥

संवत मध्य नास तव होऊ। जलदाता न रहिहि कुल कोऊ॥

नृप सुनि श्राप विकल अति त्रासा। भै बहोरि बर गिरा अकासा॥

विप्रहु श्राप विचारि न दीन्हा। नहिं अपराध भूप कछु कीन्हा॥

चकित विप्र सब सुनि नभ बानी। भूप गयउ जहँ भोजन खानी॥

तहँ न असन नहिं विप्र सुआरा। फिरेउ राउ मन सोच अपारा॥

सब असंग महिसुरन्ह सुनाई। त्रसित परेउ अवनीं अकुलाई॥

दो०—भूपति भावी मिटइ नहिं जदपि न दूषन तोर ।

किँ अन्यथा होइ नहिं विप्रश्राप अति घोर ॥१७४॥

अस कहि सय महिदेव सिधाए । समाचार पुरलोगन्ह पाए ॥
 सोचहिं दूपन दैवहि देहीं । विरचत हंस काग किय जेहीं ॥
 उपरोहितहि भवन पहुँचाई । असुर तापसहि खबरि जनाई ॥
 तेहिं खल जहँ तहँ पत्र पठाए । सजि सजि सेन भूप सब धाए ॥
 घेरेन्हि नगर निसान बजाई । विविध भाँति नित होइ लराई ॥
 जूझे सकल सुभट करि करनी । बंधु समेत परेउ नृप धरनी ॥
 सत्यकेतु कुल कोउ नहिं चाँचा । विप्रश्राप किमि होइ असाँचा ॥
 रिपु जिति सब नृप नगर बसाई । निज पुर गवने जय जसु पाई ॥
 दो०—भरद्वाज सुनु जाहि जब होइ विधाता धाम ।

धूरि मेरुसम जनक जम ताहि च्यालसम दाम ॥१७५॥

काल पाइ मुनि सुनु सोइ राजा । भयउ निसाचर सहित समाजा ॥
 दस सिर ताहि धीस भुजदंडा । रावन नाम बीर बरियंडा ॥
 भूप अनुज अरिमर्दन नामा । भयउ सो कुंभकरन बलधामा ॥
 सचिव जो रहा धरमरुचि जास । भयउ विमात्र बंधु लघु तास ॥
 नाम विभीषन जेहि जग जाना । विष्णुभगत विग्यान निधाना ॥
 रहे जे सुत सेवक नृप केरे । भए निसाचर घोर घनेरे ॥
 कामरूप खल जिनस अनेका । कुटिल भयंकर विगत चिबेका ॥
 कृपा रहित हिंसक सब पापी । बरनि न जाहिं बिस्य परितापी ॥

दो०—उपजे अदपि पुलस्त्यकुल पावन अमल अनूप ।

तदपि महीसुर आप घस भए सकल अवरूप ॥१७६॥

कीन्ह विविध तप तीनिहुँ भाई । परम उग्र नहिं बरनि सो जाई ॥
 गयउ निकट तप देखि विधाता । मागहु बर

करि विनती पद गहि दससीसा । बोलेउ वचन सुनहु जगदीसा ॥
 हम काहू के मरहिं न मारें । बानर मनुज जाति दुइ बारें ।
 एवमस्तु तुम्ह बड़ तप कीन्हा । मैं ब्रह्माँ मिलि तेहि वर दीन्हा ।
 पुनि प्रभु कुंभकरन पहिं गयऊ । तेहि बिलोकि मन विसमय भयै
 जाँ एहिं खल नित करव अहारू । होइहि सब उजारि संसारू ।
 सारद प्रेरि तासु मति फेरी । मागेसि नीद मास पट केरी ।
 दो०—गए विभीषन पास पुनि कहेउ पुत्र वर मांगु ।

तेहिं मागेउ भगवंत पद कमल अमल अनुरागु ॥१७७

तिन्हहि देइ वर ब्रह्म सिधाए । हरपित ते अपने गृह आए ॥
 मय तनुजा मंदोदरि नामा । परम सुंदरी नारि ललामा ॥
 सोइ मयँ दीन्हि रावनहि आनी । होइहि जातुधानपति जानी ॥
 हरपित भयउ नारि भलि पाई । पुनि दोउ बंधु विआहेसि जाई ॥
 गिरि त्रिकूट एक सिंधु मझारी । विधि निर्मित दुर्गम अति भारी ।
 सोइ मय दानवँ बहुरि संवारा । कनक रचित मनिभवन अपारा ॥
 भोगावति जसि अहिकुल वासा । अमरावति जसि सकनिवासा ॥
 तिन्ह तें अधिक रम्य अति वंका । जग विख्यात नाम तेहि लंका ॥

दो०—साईं सिंधु गभीर अति चारिहुँ दिसि फिरि आँव ॥

कनक कोट मनि खचित दृढ़ वरनि न जाइ वचाव ॥१७८(क)

हरि प्रेरित जेहिं कल्प जोइ जातुधानपति होइ ।

सूर प्रतापी अतुलवल दल समेत वस सोइ ॥१७८(ख)

रहे तहाँ निसिचर शेट भारे । ते सत्र सुरन्ह समर संवारे
 अय तहँ रहहिं सक के प्रेरे । रच्छक कोटि जच्छपति केरे ।

दसमुख कतहुँ खवरि असि पाई । सेन साजि गढ़ घेरेसि जाई ॥
 देखि विकट भट बडि कटकाई । जच्छ जीव लै गए पराई ॥
 फिरि सब नगर दसानन देखा । गयउ सोच मुख भयउ विसेपा ॥
 सुंदर सहज अगम अनुमानी । कीन्हि तहाँ रावन रजधानी ॥
 जेहि जस जोग वाँटि गृह दीन्हे । मुखी सकल रजनीचर कीन्हे ॥
 एक चार कुबेर पर धावा । पुष्पक जान जीति लै आवा ॥

दो०—कौतुकी कौलास पुनि लीन्हैसि जाइ उठाइ ।

मनहुँ तौलि निज बाहुबल चला बहुत सुख पाइ ॥१७९॥

सुख संपति सुत सेन सहार्इ । जय प्रताप बल बुद्धि घड़ाई ॥
 नित नूतन सब बाढ़त जाई । जिमि प्रतिलाभ लोभ अधिकाई ॥
 अतिबल कुंभकरन अस आता । जेहि कहूँ नहिं प्रतिभट जग जाता
 करइ पान सोवइ पट मासा । जागत होइ तिहूँ पुर त्रासा ॥
 जां दिन प्रति अहार कर सोई । विश्व बेगि सब चौपट होई ॥
 समर धीर नहिं जाइ बखाना । तेहि सम अमित धीर बलवाना ॥
 धारिदनाद जैठ सुत ताम्ब । भट महुँ प्रथम लीक जग जाम्ब ॥
 जेहि न होइ रन सनमुख कोई । सुरपुर नितहिं परावन होई ॥

दो०—कुमुरा अरुपन कुलिसरद धूमकेतु अतिकाय ।

एक एक जग जीति सक ऐसे सुभट निकाय ॥१८०॥

कारूप जानहिं सब माया । सपनेहुँ जिन्ह कंधरमन दाया ॥
 दसमुख बँट सभाँ एक धारा । देखि अमित आपन परिवारा ॥
 सुत समूह जन परिजन नाती । गनै को पार निसाचर जाती ॥
 सेन विलोकि सहज अभिमानी । बोला वचन क्रोध मद सानी ॥

सुनहु सकल रजनीचर जूथा। हमरे वैरी विबुध बरूथा ॥
 ते सनमुख नहिं करहिं लराई। देखि सबल रिपु जाहिं पराई ॥
 तेन्ह कर मरन एक विधि होई। कहउँ बुझाई सुनहु अब सोई ॥
 द्विजभोजन मख होम सराधा। सब कै जाइ करहु तुम्ह बाधा ॥

दो०—छुधा छीन बलहीन सुर सहजेहिं मिलिहहिं आइ ।

तव मारिहउँ कि छाड़िहउँ भली भाँति अपनाइ ॥१८१॥

मेघनाद कहूँ पुनि हँकरावा। दीन्ही सिख बलु बयरु बड़ावा ॥
 जे सुर समर धीर बलवाना। जिन्ह कें लखि कर अभिमाना ॥
 तिन्हहि जीति रन आनेसु वाँधी। उठि सुत पितु अनुसासन काँधी ॥
 एहि विधि सबही अग्या दीन्ही। आपुनु चलेउ गदा कर लीन्ही ॥
 चलत दसानन डोलति अबनी। गर्जत गर्भ स्रवहिं सुर रवनी ॥
 रावन आवत सुनेउ सकोहा। देवन्ह तके मेरु गिरि खोहा ॥
 दिगपालन्ह के लोक सुहाए। सने सकल दसानन पाए ॥
 पुनि पुनि सिंघनाद करि भारी। देइ देवतन्ह गारि पचारी ॥
 रन मद मत्त फिरइ जग धावा। प्रतिभट खोजत कतहुँ न पावा ॥
 रवि ससि पवन बरुन धनधारी। अगिनि काल जम सब अधिकारी ॥
 किंनर सिद्ध मनुज सुर नागा। हठि सबही के पंथहिं लागा ॥
 ब्रह्मसृष्टि जहँ लगि तनुधारी। दसमुख बसवतीं नर नारी ॥
 आयसु करहिं सकल भयभीता। नवहिं आइ नित चरन विनीता ॥

दो०—भुजवल विस्व

मंडलीक मां

देव जन्तु गंधर्व नर किंनर नाग कुमारी ।

जीति वरी निज बाहुबल बहु सुंदर बर नारि ॥ १८२ (ख) ॥

इंद्रजीत सन जो कह्यु कहेऊ । सो सब जनु पहिलेहिं करि रहेऊ ॥
 प्रथमहिं जिन्ह कह्यु आयसु दीन्हा । तिन्ह कर चरित सुनहु जो कीन्हा
 देखत भीमरूप सब पापी । निसिचर निकर देव परितापी ॥
 करहिं उपद्रव असुर निकाया । नाना रूप धरहिं करि माया ॥
 जेहि विधि होइ धर्म निर्मूला । सो सब करहिं वेद प्रतिकूला ॥
 जेहिं जेहिं देस घेनु द्विज पात्रहिं । नगर गाउँ पुर आगि लगावहिं ॥
 सुभ आचरन कतहुँ नहिं होई । देव विप्र गुरु मान न कोई ॥
 नहिं हरिभगति जग्य तप ग्याना । सपनेहुँ सुनिअ न वेद पुराना ॥

छं०—जप जोग विरागा तप मख भागा श्रवन सुनइ दससीसा ।

आपुन उठि धायइ रहे न पावइ धरि सब चालइ खीसा ॥

अस अष्ट अचारा भा संसारा धर्म सुनिअ नहिं कना ।

तेहि बहुविधि प्राप्तइ देस निकासइ जो कह वेद पुराना ॥

सो०—वरनि न जाइ अनीति घोर निसाचर जो करहिं ।

हिंसा पर अति प्रीति तिन्ह के पापहि कवनि मिति ॥ १८३ ॥

• मासपारायण, छठा विश्राम

बाढ़े खल बहु चोर जुआरा । जे लंपट परधन परदारा ॥

मानहिं मातु पिता नहिं देवा । साधुन्ह सन करवावहिं सेवा ॥

जिन्ह के यह आचरन भवानी । ते जानेहु निसिचर सब प्रानी ॥

अतिसय देखि धर्म के ग्लानी । परम समीत धरा अकुलानी ॥

गिरि सरि सिंधु भार नहिं मोही । जस मोहि गरुअ एक परद्रोही ॥

गगन ब्रह्मवानी मुनि काना । तुरत फिरे सुर हृदय जुड़ाना ॥
 तब ब्रह्माँ धरनिहि समुझावा । अभय भई भरोस जियँ आवा ॥
 दो०—निज लोकहि विरंचि गे देवन्ह इहइं सिखाइ ।

वानर तनु धरि धरि महि हरि पद सेवहु जाइ ॥१८७॥

गए देव सब निज निज धामा । भूमि सहित मन कहँ विश्रामा ॥
 जो कछु आयसु ब्रह्माँ दीन्हा । हरपे देव बिलंब न कीन्हा ॥
 बनचर देह धरी छिति माहीं । अतुलित बल प्रताप तिन्ह पाहीं ॥
 गिरितरु नख आयुध सब वीरा । हरि मार्ग चितवहि मतिधीरा ॥
 गिरि कानन जहँ तहँ भरि पूरी । रहे निज निज अनीक रचि रूरी ॥
 यह सब रुचिर चरित मैं भाषा । अब सो सुनहु जो वीचहि राखा ॥
 अवधपुरीं रघुकुलमनि राज । वेद विदित तेहि दसरथ नाऊँ ॥
 धरम धुरंधर गुननिधि ग्यानी । हृदयँ भगति मति सारँगपानी ॥
 दो०—कौसल्यादि नारि प्रिय सब आचरन पुनीत ।

पति अनुकूल प्रेम इह हरि पद कमल विनीत ॥१८८॥

एक वार भूपति मन माहीं । भै गलानि मोरें सुत नाही ॥
 गुर गृह गयउ तुरत महिपाला । चरन लागि करि विनय विसाला ॥
 निज दुख सुख सब गुरहि सुनायउ कहि बसिष्ठ बहुविधि समुझायउ
 धरहु धीर होइहहिं सुत चारी । त्रिभुवन विदित भगत भव हारी ॥
 सृंगी रिपिहि बसिष्ठ बोलावा । पुत्रकाम सुभ जग्य करावा ॥
 भगति सहित मुनि आहुति दीन्हें । प्रगटे अग्नि चरु कर लीन्हें ॥
 जो बसिष्ठ कछु हृदयँ विचारा । सकल काजु भा सिद्ध तुम्हारा ॥
 यह हवि वाँटि देहु नृप जाई । जथा जोग जेहि भाग वनाई ॥

दो०-उर हृदय नर नरक नरक नरक सुनुमड ।

जननीं नरक नर हृदय न हृदयं नरक ॥१८९॥

नरकै गत्यं त्रिषु नाति वेत्तुं । अमन्यादि तदां चलि अर्द्ध ॥
 अथ भगवत् अमन्यादि दान्हा । उभय भाग आवे कर कीन्हा ॥
 कैंकई कैं नृ नो दयऊ । शोभो उभय भाग पुनि भयऊ ॥
 कैंकन्या कैंकई दाय धरि । दान्हा सुनिवादि मन प्रयत्न करि ॥
 एहि विवि गननादि नव नली । मई हृदय हरपिन सुख भारी ॥
 जा दिन ते हरि गनहि अर । नरक लोक सुख नंरति छाप ॥
 नंदिर नई नंद गनहि गली । सोमा श्रील तेव की खानी ॥
 सुख हुन कलुक कलु चलि गयऊ देहि प्रभु प्रगट सो अवसर भयऊ

दो०-अंग लगत-दह कर निधि मकल भए अनुरत ।

नर. अर कल हंनुन गन जनम सुगम ॥१९०॥

नामी निधि मयु नंस पुनीता । मुकल पल्ल अभिजिन हरिप्रीता ॥
 मय्यादिवम अनि मोन न शाना । पवन कल लोक विश्रामा ॥
 सोनल मंद सुगनि बह झाऊ । हरपिन सुर सुकन म...
 वन कृपुनिन नागिन नागिना...
 सो अवसर विरति स्व जना । चले मकल सु...
 गगन विभल सुकल सुर जया । गवहि गुन...
 वरगहि सुमन सुअनुति मारी । गहगहि गगन...
 अस्तुति करहि नाग मुनि देवा । बहविधि

दो०-सुर सपूह विनती करि पदुंवे नित्र निव

... उपनिवास प्रभु प्रगटे कमिल लोक

गगन ब्रह्मवानी सुनि काना । तुरत फिरे सुर हृदय जुड़ाना ॥
 तब ब्रह्माँ धरनिहि समुझावा । अभय भई भरोस जियँ आवा ॥
 दो०—निज लोकहि विरंचि गे देवन्ह इहइं सिखाइ ।

चानर तनु धरि धरि महि हरि पद सेवहु जाइ ॥१८७॥

गए देव सब निज निज धामा । भूमि सहित मन कहूँ विश्रामा ।
 जो कछु आयसु ब्रह्माँ दीन्हा । हरपे देव विलंब न कीन्हा ।
 बनचर देह धरी छिति माहीं । अतुलित बल प्रताप तिन्ह पाहीं ।
 गिरि तरु नख आयुध सब चीरा । हरि मारग चितवहिं मतिधीरा ।
 गिरि कानन जहँ तहँ भरि पूरी । रहे निज निज अनीक रचि रूरी ।
 यह सब रुचिर चरित मैं भाषा । अब सो सुनहु जो बीचहिं राखा ।
 अवधपुरीं रघुकुलमनि राज । वेद विदित तेहि दसरथ नाऊँ ।
 धरम धुरंधर गुननिधि ग्यानी । हृदयँ भगति मति सारंगपानी ।
 दो०—कौसल्यादि नारि प्रिय सब आचरन पुनीत ।

पति अनुकूल प्रेम इह हरि पद कमल विनीत ॥१८८॥

एक वार भूपति मन माहीं । भै गलानि मोरें सुत नाहीं ।
 गुरगृह गयउ तुरत महिपाला । चरन लागि करि विनय विसाल ।
 निज दुख सुख सब गुरहि सुनायउ कहि बसिष्ठ बहुनिधि समुझाय ।
 धरहु धीर होइहहिं सुत चारी । त्रिभुवन विदित भगत भयहारी ।
 सृंगी रिषिहि बसिष्ठ बोलावा । पुत्रकाम सुभ जग्य करावा ।
 भगति सहित मुनि आहुति दीन्हें । प्रगटे अगिनि चरु कर लीन्हें ।
 जो बसिष्ठ कछु हृदयँ विचारा । सकल काजु भा सिद्ध तुम्हारा ।
 यह हवि वाँटि देहु नृप जाई । जथा जोग जेहि भाग वनाई ।

दो०-तय. अदस्यः भए पावक सकल समहि समुदाइ ।

परमानंद मगन नृप हरप न हृदयें समाइ ॥१८९॥

तवहिं रायें प्रिय नारि बोलइ । कौसल्यादि तहाँ चलि आई ॥
 अर्ध भाग कौसल्यहि दीन्हा । उभय भाग आधे कर कीन्हा ॥
 कैकेई कहें नृप सो दयऊ । रघो सो उभय भाग पुनि भयऊ ॥
 कौसल्या कैकेई हाथ धरि । दीन्ह मुमित्रहि मन प्रसन्न करि ॥
 एहि विधि गर्भसहित सव नारी । भई हृदयें हरपित सुख भारी ॥
 जा दिन तें हरि गर्भहि आए । सकल लोक सुख संपत्ति छाप ॥
 मंदिर महँ सव राजहि रानी । सोभा सील तेज की खानी ॥
 सुख जुत कलुक काल चलि गयऊ जेहि प्रभु प्रगट सो अवसर भयऊ

दो०-जोग लगन-ग्रह यार तिथि सकल भए अनुकूल ।

चर-अरु-अचर-हर्षवृत राम जनम सुखमूल ॥१९०॥

नौमी तिथि मधु मांस पुनीता । सुकल पच्छे अभिजित हरिप्रीता ॥
 मध्यदिवस अति सीत न घामा । पावन काल लोक विश्रामा ॥
 सीतल मंद सुरभिं घह बाऊं । हरपित सुर संतन मन चाऊ ॥
 बन कुमुमित गिरिगने मनिआरा । खवहिं सकल सरिताऽमृतधारा ॥
 सो अवसर विरंचि जव जाना । चले सकल सुर साजि विमाना ॥
 गगन बिमल संकुल सुर जूया । गावहिं गुन गंधर्व वरुया ॥
 वरपहिं सुमन सुअंजलि साजी । गहगहिं गगन दुंदुभी बाजी ॥
 अस्तुति करहिं नाग मुनि देवा ॥ बहुविधि लावहिं निज निज सेवा

दो०-सुर-सपूह-विनती-करि । पहुँचे निज-निज-धाम ॥

॥ ११॥ जगनिवास प्रभु प्रगटे अतिल लोक विश्राम ॥१९१॥

छं०—भर प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी ।

हरपित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप विचारी ॥

लोचन अभिरामा तनु घनस्यामा निज आयुष मुञ्ज चारी ।

भूषण वनमाला नयन विसाला सोभासिंधु स्तरारी ॥

कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी केहि विधि करौ अनंता ।

माया गुन ग्यानातीत अमाना वेद पुरान भवता ॥

करुना सुख सागर सब गुन आगर जेहि गावहि श्रुति संता ।

सो मम हित लागी जन अनुरागी भयउ प्रगट श्रीकंता ॥

ब्रह्मांड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति वेद कहे ।

मम उर सो वासो यह उपहासी सुनत धीर मति धिर न रहे ॥

उपजा जब ग्याना प्रभु मुसुकाना चरित बहुत विधि कोन्ह चहे

कहि कथा सुहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहे ॥

माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा ।

कीजे सिसुलीला अति प्रियसीला यह सुख परम अनूपाती ।

सुनि वचन सुजाना रोदन ठना होइ बालक सुरभूपा ।

यह चरित जे गावहि हरिपद पावहि ते न परहि भवकृपा ॥

दो०—विप्र घेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार ।

निज इच्छा निर्मित तनु माया गुन जो पार ॥१२२॥

सुनि सिसु रुदन परम प्रिय बानी । संभ्रम चलि आई सब रानी ।

हरपित जहँ तहँ धाई दासी । आनंद भगन सकल पुरवासी ।

दसरथ पुत्रजन्म सुनि काना । मानहुँ ब्रह्मानंद समान ।

परम प्रेम मन पुलक सरीरा । चाहत उठन करत मति धीरा ।

जाकर नाम सुनत सुभ होई । ओरें गृह आवा प्रभु सोई ।

परमानंद पूरि मन राजा । कहां बोलै वजावहु राजा ॥
गुर बसिष्ट कहै गयउ हँकारा । आए द्विजन सहित नृपद्वारा ॥
अनुपम बालक देखेन्हि जई । रूप रासि गुन कहि न सिराई ॥

दो०—नंदीमुख सराध करि जातकरम सब कीन्ह ।

हाटक धेनु बसिन मनि नृप विप्रन्ह कहै दीन्ह ॥ १९३ ॥

ध्वज पताक तारन पुर छावा । कहिन जाइ जेहि भाँति घनावा ॥
सुमनबृष्टि अकास ते होई । ब्रह्मानंद मगन सब लोई ॥
बृद बृद मिलि चली लोगाई । सहज सिंगार कियँ उठि धाई ॥
कनक कलस मंगल भरि थारा । गावत पैठहिं भूप दुआरा ॥
करि आरति नेबछावरि करहीं । बार बार सिसु चरनन्हि परहीं ॥
भागध सत बदिगन गायक । पावन गुन गावहिं रघुनायक ॥
सर्वस दान दीन्ह सब काह । जेहि पावा राखा नहिं ताह ॥
मृगमद चंदन कुंकुम फीचा । मची सकल वीधिन्ह विच भीचा ॥

दो०—गृह गृह वाज बंधाव सुभ प्रगटे सुपमा कंद ।

हरपयंत सब जेहैं । तहैं नगर नारि नर बृंद ॥ १९४ ॥

कैकयमुता सुमित्रा दोऊ । सुंदर सुत जनमत भे जोऊ ॥
वह सुख संपति समय समाजा । कहि न सकइ सारद अहिराजा ॥
अबंधपुरी सोहई एहि भाँती । प्रसुहि मिलन आई जनु राती ॥
देखि भानु जनु मन सकुचानी । तदपि वनी संध्या अनुमानी ॥
अगर धूप बहु जनु अधिआरी । उइइ अवीर मनहुं अरुनारी ॥
मंदिर मनि समूह जनु ताता । नृप गृह कलस सोइदु उदारा ॥
भवन वेदधुनि अति मृदु चानी । जनु खग मुखर समय जनु सानी ॥

कौतुक देखि पतंग भुलाना। एक मास तेई जात न जाना ॥

दो०—मास दिवस कर दिवस भा मरम न जानइ कोइ।

रथ समेत रवि थाकेउ निसा कवन विधि होइ ॥१९५॥

यह रहस्य काहूँ नहिं जाना। दिनमनि चले करत गुनगाना ॥

देखि महोत्सव सुर मुनि नागा। चले भवन वरनत निज भागा ॥

औरउ एक कहउं निज चोरी। सुनु गिरिजा अति दृढ मति तोरी

काकभुसुंड़ि संग हम दोऊ। मनुज रूप जानइ नहिं कोऊ ॥

परमानंद प्रेमसुख फूले। वीथिन्ह फिरहिं मगन मन भूले ॥

यह सुभ चरित जान पै सोई। कृपा राम कै जापर होई ॥

तेहि अवसर जो जेहि विधि आवा। दीन्ह भूप जो जेहि मन भावा

मज रथ तुरग हेम गो हीरा। दीन्हे नृप नानाविधि चीरा ॥

दो०—मन संतोषे सवग्नि के जहूँ तहूँ देहि असीस।

सकल तनय चिर जीवहुँ तुलसिदास के ईस ॥१९६॥

कछुक दिवस बीते एहि भाँती। जात न जानिअ दिन अरु राती।

नामकरण कर अवसरु जानी। भूप बोलि पठए मुनि ग्यानी।

करि पूजा भूपति अस भाषा। धरिअ नाम जो मुनि गुनि राखा।

इन्ह के नाम अनेक अनूपा। मै नृप कहव स्वमति अनुरूपा।

जो आनंद सिंधु सुखरासी। सीकर तें त्रैलोक सुपासी।

सो सुख धाम राम अस नामा। अखिल लोक दासक विश्रामा।

बिख भरन पोषन कर जोई। ताकर नाम भरत अस होई

जाके सुमिरन तें रिपु नासा। नाम सत्रुहन वेद प्रकासा

दो०—लच्छन घाम राम प्रिय सकल जगत आधार ।

गुरु बसिए तेहि राखा लछिमन नाम उदार ॥१९७॥

धरे नाम गुरु हृदय विचारी । वेद तत्व नृप तव सुत चारी ॥
 मुनि धन जन सरयस सित्र प्राना । बाल केलि रस तेहि मुख माना ॥
 बारेहि ते निज हित पति जानी । लछिमन राम चरन रति मानी ॥
 भरत सत्रुहन दूनउ भाई । प्रभु सेवक जसि प्रीति बड़ाई ॥
 स्याम गौर सुंदर दोउ जोरी । निरखहि छवि जननी तृन तोरी ॥
 चारिउ सील रूप गुन धामा । तदपि अधिक मुखसागर रामा ॥
 हृदय अनुग्रह इंदु प्रकासा । स्रवत किरन मनोहर हासा ॥
 फवहूँ उछंग कवहूँ वर पलना । मातु दुलारइ कहि प्रिय ललना ॥

दो०—व्यापक मग्न निरंजन निर्गुन बिगत विनोद ।

सो अज प्रेम भगति बस कौसल्या के गोद ॥१९८॥

काम फोटि छवि स्याम सरीरा । नील कंज वारिद गंभीरा ॥
 अरुन चरन पंकज नख जोती । कमल दलन्हि बैठे जनु मांती ॥
 रेख कुलिस ध्वज अंकुस सोहे । नूपुर धुनि मुनि मुनि मन मोहे ॥
 कटि किंकिनी उदर ग्रंथ रेखा । नाभि गंभीर जान जेहि देखा ॥
 भुज विसाल भूपन जुत भूरी । हियँ हरि नख अति सोभा रूरी ॥
 उर मनिहार पदिक की सोभा । विप्र चरन देखत मन लोभा ॥
 कंबु कंठ अति चिबुक मुहाई । आनन अमित मदन छत्रि छाई ॥
 दुइ दुइ दसन अधर अरुनारें । नासा तिलक को चरन पारे ॥
 सुंदर श्रवन सुचारु कपोला । अति प्रिय मधुर तोतरे बोला ॥
 चिकन कच कुंचित गम्भूआरे । बहू प्रकार रचि मातु सँवारे ॥

पीत झगुलिआ तनु पहिराई। जानु पाति विचरनि मोहि भाई ॥
रूप सकहिं नहिं कहि श्रुति सेवा। सो जानइ सपनेहुँ जेहि देखा ॥

दो०—सुख संदोह मोह पर ज्ञान गिरा गोनीत ।

दंपति परम प्रेम बस कर सिनु चरित पुनीत ॥१९९॥

एहि विधिराम जगत पितु माता। कोसलपुर वासिन्ह सुखदाता ॥
जिन्ह रघुनाथ चरन रति मानी। तिन्ह की यह गति प्रगट भवानी ॥
रघुपति विमुख जतन कर कोरी। कवन सकइ भत्रं बंधन छोरी ॥
जीव चराचर बस कै राखे। सो माया प्रभु सो भय भाखे ॥
भृकुटि विलास नचावइ ताही। अस प्रभु छाड़ि भजिअ कहु काही ॥
मन क्रम बचन छाड़ि चतुराई। भजत कृपा करिहिं रघुराई ॥
एहि विधि सिसुविनोद प्रभु कीन्हा। सकलनगरवासिन्ह सुख दीन्हा ॥
लै उलंग कबहुँक हलरावै। कबहुँ पालनें घालि झुलावै ॥

दो०—प्रेम मगन कौसल्या निसि दिन जात न जान ।

सुत सनेह बस माता बालचरित कर गान ॥२००॥

एक बार जननी अन्हवाए। करि सिंगार पलनाँ पौढ़ाए ॥
निज कुल इष्टदेव भंगवाना। पूजा हेतु कीन्ह अस्नाना ॥
करि पूजा नैवेद्य चढ़ावा। आपु गई जहँ पाक बनावा ॥
बहुरि मातु तहवाँ चलि आई। भोजन करत देख सुत जाई ॥
गै जननी सिसु पहिं भयभीता। देखा बाल तहाँ पुनि सूता ॥
बहुरि आइ देखा सुत सोई। हृदय कंप मन धीर न होई ॥
इहाँ उहाँ दुइ बालक देखा। मतिभ्रम मोर कि आन विसेपा ॥
देखि राम जननी अकुलानी। प्रभु हँसि दीन्ह मधुर मुसुकानी ॥

दो०-देवरावा मातहि निज अङ्गन रूप अगड ।

रोम रोम प्रति लागे कोट कोट बयड ॥२०१॥

अगनित रधि सभि मित्र चतुरानना बहुगिरि मरित मिधु महि कानन
काल कर्म गुन ग्यान सुभाऊ । मोउ देखा जो मुना न काऊ ॥
देखी माया मय विधि गादी । अनि मभीन जोरें कर टादी ॥
देखा जीय नचावह जाही । देखी भगनि जां छांगइ नाही ॥
तन पुलकित मुख वचन न आवा । नयन मृदि चरननि मिरु नावा ॥
विसमयवत देखि महतागी । भए बहुरि मिगुरूप म्वगती ॥
अंस्तुति करि न जाइ भय माना । जगत पिता स मुत करि जाना ॥
हरि जननी बहुविधि ममुझाई । यह जनि कतहुँ कहमि मुनु माई ॥

दो०-बार बार कौसल्या विनय करइ कर जांरि ।

अव जनि कयहे व्यापै प्रभु मोहि माया नांरि ॥२०२॥

बालचरित हरि बहुविधि कीन्हा । अति अनंद दासन्ह कहँ दीन्हा ॥
कलुक काल धीतें सब भाई । बड़े भए परिजन सुखदाई ॥
चूड़ाकरन कीन्ह गुरु जाई । विग्रन्ह पुनि दछिना बहु पाई ॥
परम मनोहर चरित अपारा । करत फिरत चारिउ सुकुमारा ॥
मन क्रम वचन अगोचर जोई । दसरथ अजिर विचर प्रभु मोई ॥
भोजन करत बोल जव राजा । नहि आवत तजि बाल ममाजा ॥
कौसल्या जव बोलन जाई । दुमुकु दुमुकु प्रभु चलहि पराई ॥
निगम नेति सिव अंत न पावा । ताहि धरें जननी हठि धावा ॥
धूसर धूरि भरें तनु आए । भूपति विहमि गोद घंटाए ॥

पीत झगुलिआ तनु पहिराई । जानु पानि बिचरनि मोहि भाई ॥
रूप सकहि नहि कहि श्रुति सेपा । सो जानइ सपनेहुँ जेहि देखा ॥

दो०—सुख संदोह मोह पर ग्यान गिरा गोतीत ।
दंपति परम प्रेम बस कर सिनु चरित पुनीत ॥१९९॥

एहि विधिराम जगत पितु माता । कोसलपुर वासिन्ह सुखदाता ॥
जिन्ह रघुनाथ चरन रति मानी । तिन्ह की यह गति प्रगट भवानी
रघुपति विमुख जतन कर कोरी । कवन सकइ भव वंधन छोरी ॥
जीव चराचर बस कै राखे । सो माया प्रभु सो भय भाखे ॥
भृकुटि विलास नचावइ ताही । अस प्रभु छाड़ि भजिअ कहु काही
मन क्रम बचन छाड़ि चतुराई । भजत कृपा करिहहि रघुराई ॥
एहि विधि सिसुविनोद प्रभु कीन्हा । सकलनगरवासिन्ह सुख दीन्ह
लै उछंग कबहुँक हलरावै । कबहुँ पालनै घालि झुलावै ॥

दो०—प्रेम मगन कौसल्या निसि दिन जात न जान ।

सुत सनेह बस माता बालचरित कर गान ॥२००॥

एक बार जननी अन्हवाए । करि सिंगार पलनाँ पौढाए ॥
निज कुल इष्टदेव भगवाना । पूजा हेतु कीन्ह अस्नाना ॥
करि पूजा नैबेद्य चढ़ावा । आपु गई जहँ पाक बनावा ॥
बहुरि मातु तहवाँ चलि आई । भोजन करत देख सुत जाई ॥
गै जननी सिसु पहि भयभीता । देखा बाल तहाँ पुनि सूता ॥
बहुरि आई देखा सुत सोई । हृदय कंप मन धीर न होई ॥
इहाँ उहाँ दुइ बालक देखा । मतिभ्रम मोर कि आन विसेपा ॥
देखि राम जननी अकुलानी । प्रभु हँसि दीन्ह मधुर मुसुकानी ॥

दो०—भोजन करत चपल चित इत उत अवसरु पाइ ।

भाजि चले किलकत मुख दधि ओदन लपटाइ ॥२०३॥

बालचरित अति सरल सुहाए । सारद सेप संभु श्रुति गाए ॥

जिन्ह कर मन इन्ह सन नहिं राता । ते जन वंचित किए विधाता ॥

भए कुमार जबहिं सब भ्राता । दीन्ह जनेऊ गुरु पितु माता ॥

गुरगृहँ गए पढ़न रघुराई । अल्प काल विद्या सब आई ॥

जाकी सहज स्वास श्रुति चारी । सो हरि पढ़ यह कौतुक भारी ॥

विद्या विनय निपुन गुन सीला । खेलहिं खेल सकल नृपलीला ॥

करतल वान धनुष अति सोहा । देखत रूप चराचर मोहा ॥

जिन्ह वीथिन्ह बिहरहिं सब भाई । थकित होहिं सब लोग लुगाई ॥

दो०—कोसलपुर वासी नर नारि वृद्ध अरु बाल ।

प्राणहु ते प्रिय लागत सब कहुँ राम कृपाल ॥२०४॥

बंधु सखा संग लेहिं बोलाई । बन मृगया नित खेलहिं जाई ॥

पावन मृग मारहिं जियँजानी । दिन प्रति नृपहि देखवहिं आनी ॥

जे मृग राम वान के मारे । ते तनु तजि सुरलोक सिधारे ॥

अनुज सखा संग भोजन करहीं । मातु पिता अग्या अनुसरहीं ॥

जेहि विधि सुखी होहिं पुर लोगा । करहिं कृपानिधि सोइ संजोगा ॥

वेद पुरान सुनहिं मन लाई । आपु कहहिं अनुजन्ह समुझाई ॥

प्रातकाल उठि कै रघुनाथा । मातु पिता गुरु नावहिं माथा ॥

आयसु मागि करहिं पुर काजा । देखि चरित हरषइ मन राजा ॥

दो०—व्यापक अकल अनीह अज निर्गुन नाम न रूप ।

भगत हेतु नाना विधि करत चरित्र अनूप ॥२०५॥

यह सब चरित कहा मैं गाई। आगिलि कथा सुनहु मन लाई ॥
 विश्वामित्र महामुनि ग्यानी। वसहिं विपिन मुभ आश्रम जानी ॥
 जहँ जप जग्य जोग मुनि करहौं। अति भारीच सुवाहुहि डरही ॥
 देखत जग्य निसाचर धावहिं। करहिं उपद्रव मुनि दुख पावहिं ॥
 गाधितनय मन चिंता व्यापी। हरि विनु मरहिं न निसिचर पापी
 तव मुनिवर मन कीन्ह विचारा। प्रभु अवतरेउ हरन महि भरा ॥
 एहँ मिस देखौं पद जाई। करि विनती आनीं दौउ भाई ॥
 ग्यान विराग सकल गुन अयना। सो प्रभु मैं देखव भरि नयना ॥
 दो०—बहुबिधि करत मनोरथ जात लागि नहि धार ।

१। करि मज्जन सरळ जल गए भूप दरवार ॥२०६॥

मुनि आगमन सुना जब राजा। मिलन गयउ लँ विप्र समाजा ॥
 करि दंडवत मुनिहि सनमानी। निज आसन बैठारेन्हि आनी ॥
 चरन परवारि कीन्हि अति पूजा। मो सम आजु धन्य नहिं दूजा ॥
 विविध भाँति भोजन करवावा। मुनिवर हृदयँ हरप अति पावा ॥
 पुनि चरननि मेले सुत चारी। राम देखि मुनि देह बिसारी ॥
 भए मंगन देखत मुख सोभा। जनु चंकोर पूरन ससि लोभा ॥
 तव मन हरपि वचन कह राऊ। मुनि अस कृपा न कीन्हिहु काऊ
 केहि कारन आगमन तुम्हारा। कहहु सो करत न लावउँ धारा ॥
 अमर समूह सतावहिं मोही। मैं जाचन आयउँ नृप तोही ॥
 अनुज समेत देहु रघुनाथा। निसिचर वध मैं होव सनाथा ॥

दो०—देहु भूप मन हरपित तजहु मोह जग्यान ।

धर्म सुजस प्रभु तुम्ह कौ इन्ह कहैं अति कल्याण

दो०—भोजन करत चपल चित इत उत अवसरु पाइ-।

भाजि चले किलकत मुख दधि ओदन लपटाइ ॥२०३॥

बालचरित अति सरल सुहाए । सारद सेप संभु श्रुति गाए ।
जिन्ह कर मन इन्ह सन नहिं राता । ते जन वंचित किए विधाता ।
भए कुमार जबहिं सब भ्राता । दीन्ह जनेऊ गुरु पितु माता
गुरगृहँ गए पढ़न रघुराई । अल्प काल विद्या सब आई
जाकी सहज स्वास श्रुति चारी । सो हरि पढ़ यह कौतुक भारी
विद्या विनय निपुन गुन सीला । खेलहिं खेल सकल नृपलीला
करतल वान धनुष अति सोहा । देखत रूप चराचर मोहा
जिन्ह वीथिन्ह विहरहिं सब भाई । थकित होहिं सब लोग लुगाई

दो०—कोसलपुर वासी नर नारि वृद्ध अरु बाल ।

प्रानहु ते प्रिय लागत सब कहँ राम कृपाल ॥२०४॥

बंधु सखा सँग लेहिं बोलाई । वन मृगया नित खेलहिं जाई
पावन मृग मारहिं जियँ जानी । दिन प्रति नृपहि देखविहिं आनि
जे मृग राम वान के मारे । ते तनु तजि सुरलोक सिधारे
अनुज सखा सँग भोजन करहीं । मातु पिता अग्या अनुसरहीं
जेहि विधि सुखी होहिं पुर लोगा । करहिं कृपानिधि सोइ संजोग
वेद पुरान सुनहिं मन लाई । आपु कहहिं अनुजन्ह समुझाई
प्रातकाल उठि कै रघुनाथा । मातु पिता गुरु नावहिं माथा
आयसु मागि करहिं पुर काजा । देखि चरित हरषइ मन राज

दो०—व्यापक अकल अनीह अज निर्गुन नाम न रूप ।

भगत हेतु नाना विधि करत चरित्र अनूप ॥२०॥

यह सब चरित कहा मैं गई। आगिलि कथा सुनहु मन लाई ॥
 विस्वामित्रः महामुनि ग्यानी। वसहिं विपिन सुभ आश्रम जानी ॥
 जहँ जप जग्य जोग मुनि करहों। अति मारीच सुधाहुहि डरहों ॥
 देखत जग्य निसाचर धावहिं। करहिं उपद्रव मुनि दुख पावहिं ॥
 गाधितनय मन चिंता व्यापी। हरि विनु मरहिं न निसिचर पापी
 तब मुनिवर मन कीन्ह विचारा। प्रभु अवतरेउ हरन महि भारा ॥
 एहँ मिस देखौं पद जाई। करि विनती आनां दोउ भई ॥
 ग्यान विराग सकल गुन अयना। सो प्रभु मैं देखव भरि नयना ॥
 दो०—बहुविधि करत मनोरथ जात लागि नहिं धार ।

करि मंजन सरळ जल गए भूप दरवार ॥२०६॥

मुनि आगमन सुना जव राजा। मिलन गयउ लँ विप्र समाजा ॥
 करि दंडवत मुनिहि सनमानी। निज आसन बैठारेन्हि आनी ॥
 चरन पखारि कीन्हि अति पूजा। मो सम आजु धन्य नहिं दूजा ॥
 विविध भाँति भोजन करवावा। मुनिवर हृदयँ हरप अति पावा ॥
 पुनि चरननि मेले सुत चारी। राम देखि मुनि देह विसारी ॥
 भए मंगन देखत मुख सोभा। जनु चक्रोर पूरन ससि लोभा ॥
 तब मन हरपि वचन कहूँ राऊ। मुनि अस कृपा न कीन्हिहु काऊ
 केहि कारन आगमन तुम्हारा। कहहुँ सो करत न लावउँ चारा ॥
 असुर समूह सतावहिं मोही। मैं जाचन आयउँ नृप तोही ।
 अनुज समेत देहु रघुनाथा। निसिचर वध मैं होय सनाथा ।

दो०—देहु भूप मन हरपित तजहु मोह जन्पान ।

धर्म सुजस प्रभु तुम्ह कौ इन्ह कहैं अति ॥

-आयुषं सर्वं समर्पि कै प्रभु निज आश्रम आनि ।
 कंद मूल फल भोजन दीन्ह भगति हित जानि ॥ २०९ ॥
 त कहा मुनि सन रघुराई । निर्भय जग्य करहु तुम्ह जाई ॥
 म करन लागे मुनि झारी । आपु रहे मख कीं रखवारी ॥
 मुनि मारीच निसाचर क्रोही । लैं सहाय धावा मुनिद्रोही ॥
 बिनु फर वान राम तेहि मारा । सत जोजन गा सागर पारा ॥
 पावक सर सुवाहु पुनि मारा । अनुज निसाचर कटकु संधारा ॥
 मारि असुर द्विज निर्भयकारी । अस्तुति करहिं देव मुनि झारी ॥
 तहँ पुनि कछुक दिवस रघुराया । रहे कीन्हि विप्रन्ह पर दाया ॥
 भगति हेतु यहु कथा पुराना । कहे विप्र जद्यपि प्रभु जाना ॥
 तब मुनि सादर कहा बुझाई । चरित एक प्रभु देखिज जाई ॥
 धनुषजग्य मुनि रघुकुल नाथा । हरपि चले मुनियर के साथे ॥
 आश्रम एक दीख भग महीं । स्वग मृग जीव जंतु तहँ नाहीं ॥
 पूछा मुनिहि सिला प्रभु देखी । सकल कथा मुनि कहा यिसेपी ॥
 दो०-गौतम नारि आप बस उपल देह धरि धीर ।
 चरन कमल रज चाहति कृपा करहु रघुवीर ॥ २१० ॥
 छं०-परसत पद पावन सोक नसावन प्रगट भई तपपुंज सही ।
 देसत रघुनायक जन सुख दायक सनमुख हांड फर जोरि रही ।
 अति प्रेम अधीरा पुलक सरीरा मुख नहि आवइ वचन फही ।
 अतिसय बड़भागी चरनन्हि लागी जुगल नयन जलधार चही ।
 घोरबु मन कीन्ह प्रभु कहैं चीन्ह रघुपति कृपा भगति ।
 अति निर्मल बानी अस्तुति ठानी न्यानगम्य जय रघु ।

मैं नारि अपावन अमु जग पावन रावन रिपु जन सुखदाई ।
 राजीव विलोचन भव भय मोचन पाहि पाहि सरनहि आई ॥
 मुनि श्राप जो दीन्हा अति भल कोन्हा परम अनुग्रह मै माना ।
 देखेउँ भरि लोचन हरि भवमोचन इहइ लाभ संकर जाना ॥
 विनती प्रभु सोरी मैं मति भोरी नाथ न मागउँ वर आना ।
 पद कमल परागा रस अनुरागा सम मन मधुप कर पाना ॥
 जेहि पद सुरसरिता परम पुनीता प्रगट भई सिव सोस धरी ।
 सोई पद पंकज जेहि पूजत अज मम सिर धरेउ कृपालु हरी ॥
 एहि भाँति सिधारी गौतम नारी वार वार हरि चरन परी ।
 जो अति मन भावा सो वरु पावा गै पतिलोक अनंद भरी ॥
 दो०—अस प्रभु दीनबंधु हरि कारन रहित दयाल ।
 तुलसिदास सठ तेहि भजु छाडि कपट जंजाल ॥२११॥

मासपारायण, सातवाँ विश्राम

चले राम लछिमन मुनि संगी । गए जहाँ जग पावनि गंगा
 गाधिसूनु सब कथा सुनाई । जेहि प्रकार सुरसरि महि आई
 तब प्रभु रिषिन्ह समेत नहाए । विविध दान महि देवन्हि पाए
 हरपि चले मुनि बृंद सहाया । बेगि विदह नगर निअराया
 पुर रम्यता राम जब देखी । हरपे अनुज समेत विसेषी
 वापीं कूप सरित सर नाना । सलिल सुधासमनि सोपान
 गुंजत मंजु मत्त रस भृंगा । कूजत कल बहुवरन विहंग
 वरन वरन विकसे बनजाता । त्रिविध समीर सदा सुखदात
 दो०—सुमन वाटिका वाग बन विपुल विहंग निवास ।
 फूलत फलत सुपल्लवत सोहत पुर चहुँ पास ॥२१२॥

वनद न वरनत नगर निकार्ड। जहाँ जाइ मन तहँई लोभाई ॥
 चारु बजारु विचित्र अँवारी। मनिमय विधि जनु स्वकर सँवारी
 धनिक बनिक घर धनद समाना। बँटे सकल वस्तु लँ नाना ॥
 चौहट सुंदर गलीं मुहाई। संतत रहहिं मुगंध सिंचाई ॥
 मंगलमय मंदिर सब कैरे। चित्रित जनु रतिनाथ चितेरे ॥
 पुर नर नारि सुभग सुचि संता। धरमसील ग्यानी गुनवंता ॥
 अति अनूप जहँ जनक निवास। विथकहिं विबुध विलोकि विलास
 होत चकित चित कोट विलोकी। सकल भुवन सोभा जनु रोकी ॥

दो०—पवल घाम मनि पुरट पट सुघटित नाना भौंति ।

सिय निवास सुंदर सदन सोभा किमि कहि जाति ॥२१३॥

सुभग द्वार सब कुलिस कपाटा। भूप भीर नट मागध भाटा ॥
 बनी विमाल बाजि गज साला। हय गय रथ संकुल सब काला ॥
 सर सचिव सेनप बहुतेरे। नृपगृह सरिस सदन सब कैरे ॥
 पुर बाहेर सर सरित समीपा। उतरे जहँ तहँ विपुल महीपा ॥
 देखि अनूप एक अँवराई। सब सुपास सब भाँति मुहाई ॥
 कौमिक कहेंउ मोर मनु माना। इहाँ रहिअ रघुवीर मुजाना ॥
 भलेहिं नाथ कहि कृपानिकेना। उतरे तहँ मुनिवृंद समेता ॥
 विस्वामित्र महामुनि आए। समाचार मिथिलापति पाए ॥

दो०—संग सचिव सुचि मूरि भट मूसुर वर गुर ग्याति ।

चले मिलन मुनिनाथकहि मुदित राउ एहि भाँति ॥२१४॥

कीन्ह प्रनामु चरन धरि माथा। दीन्हि जित ॥
 विप्रवृंद सब सादर वंदे। जानि भाग्य ॥

कूसल प्रसन्न कहि बारहि चारा । बिस्वामित्र नृपहि वैठारा ॥
 तेहि अवसर आए दोउ भाई । गए रहे देखन फुलवाई ॥
 स्याम गौर मृदु बयस किसोरा । लोचन सुखद विस्व चित चोरा ॥
 उठे सकल जब रघुपति आए । बिस्वामित्र निकट वैठाए ॥
 भए सब सुखी देखि दोउ भ्राता । बारि विलोचन पुलकित गाता ॥
 मूरति भधुर मनोहर देखी । भयउ विदेहु विदेहु विसेषी ॥
 दो०—प्रेम मगन मनु जानि नृपु करि विवेकु धरि धीर ॥

बोलेउ मुनि पद नाइ सिरु गदगद गिरा गभीर ॥२१५॥

कहहु नाथ सुंदर दोउ बालक । मुनिकुल तिलक कि नृपकुल पालक ॥
 ब्रह्म जो निगम नेति कहि गावा । उभय बेष धरि की सोइ आवा ॥
 सहज विरागरूप मनु मोरा । थकित होत जिमि चंद चकोरा ॥
 ताते प्रभु पूछउ सतिभाऊ । कहहु नाथ जनि करहु दुराऊ ॥
 इन्हहि विलोकत अति अनुरागा । बरवस ब्रह्मसुखहि मन त्यागा ॥
 कह मुनि विहसि कहेहु नृप नीका । बचन तुम्हार न होइ अलीका ॥
 ए प्रिय सबहि जहाँ लगि प्राणी । मन मुसुकाहिं रामु सुनि बानी ॥
 रघुकुल मनि दसरथ के जाए । मम हित लागि नरेस पठाए ॥

दो०—रामु लखनु दोउ बंधुवर रूप सील बल धाम ।
 मख राखेउ सब साखि जगु जिते असुर संग्राम ॥२१६॥

मुनि तव चरन देखि कह राऊ । कहि न सकउं निज पुन्य प्रभाऊ ॥
 सुंदर स्याम गौर दोउ भ्राता । आनंदहु के आनंद दाता ॥
 इन्ह कै प्रीति परसपर पावनि ॥ कहि न जाइ मन भाव सुहावनि ॥
 सुनहु नाथ कह मुदित विदेहु । ब्रह्म जीव इव सहज सनेहु ॥

मुनि पुनि प्रभुहि चितव नरनाह । पुलक गात उर अधिक उछाह ॥
 मुनिहि प्रसंसि नाइ पद सीसू । चलेउ लवाइ नगर अघनीसू ॥
 सुंदर सदन सुखद सब काला । तहाँ वामु लँ दीन्ह भुआला ॥
 करि पूजा सब विधि सेवकाई । गयउ राउ गृह विदा कराई ॥

दो०—रिपय संग रघुवंस मनि करि भोजनु विधामु ।
 बैठ प्रभु भ्राता सहित दिवसु रहा भरि जामु ॥२१७॥
 लखन हृदयँ लालसा विसेपी । जाइ जनकपुर आइअ देखी ॥
 प्रभु भयवहुरि मुनिहि सकुचाहीं । प्रगट न कहहिं मनहिं मुसुकाहीं ॥
 राम अनुज मन की गति जानी । भगत बछलता हियँ झुलसानी ॥
 परम विनीत सकुचि मुसुकाई । बोले गुर अनुसासन पाई ॥
 नाथ लखनु पुरु देखन चहहीं । प्रभु सकौच डर प्रगट न कहहीं ॥
 जाँ राउर आयसु मैं पावौं । नगर देखाइ तुरत लँ आवौं ॥
 मुनि मुनीसु कह वचन सप्रीती । कस न राम तुम्ह राखहु नीती ॥
 धरम सेतु पालक तुम्ह ताता । प्रेम विवस सेवक सुखदाता ॥

दो०—जाइ देखि आवहु नगर सुख निधान दोउ भाइ ।
 करहु सुफल सब के नयन सुंदर वदन देखाइ ॥२१८॥
 मुनि पद कमल वंदि दोउ भ्राता । चले लोक लोचन सुखदाता
 बालक वृंद देखि अति सोभा । लगे संग लोचन मनु लोभ
 पीत वसन परिकर कटि भाथा । चारु चाप सर सोहत हार
 तन अनुहरत मुचंदन खोरी । स्यामल गौर मनोहर जो
 केहरि कंधर चाहु विसाला । उर अति रुचिर नागमनि म
 सुभग सोन सरसीरुह लोचन । वदन मयंक तापत्रय मो

कानन्हि कनक फूल छवि देहीं। चितवत चितहि चोरि जनु लेहीं।
चितवनि चारु भृकुटि बर बाँकी। तिलक रेखा सोभा जनु चाँकी।

दो०—रुचिर चौतनी सुभग सिर मेचक कुंचित केस।

नेख सिख सुंदर धंधु दोउ सोभा सकल सुदेस ॥२१९॥

देखन नगरु भूपसुत आए। समाचार पुरवासिन्ह पाए ॥

धाए धाम काम सब त्यागी। मनहुँ रंक निधि लूटन लागी ॥

निरखि सहज सुंदर दोउ भाई। होहिं सुखी लोचन फल पाई ॥

जुबती भवन झरोखन्हि लागीं। निरखहिं राम रूप अनुरागी ॥

कहहिं परसपर बचन सप्रीती। सखि इन्ह कोटि काम छवि जीती ॥

सुर नर असुर नाग मुनि माहीं। सोभा असि कहुँ सुनिअति नाहीं ॥

विष्णु चारि भुज विधि मुख चारी। बिकट वेप मुख पंच पुरारी ॥

अपर देउ अस कोउ न आही। यह छवि सखी पटतरिअ जाही ॥

दो०—वय किसोर सुषमा सदन त्याम गौर सुख घाम।

अंग अंग पर चारिअहिं कोटि कोटि सत काम ॥२२०॥

कहहु सखी अस को तनुधारी। जो न मोह यह रूप निहारी ॥

कोउ सप्रेम बोली मृदु बानी। जो मैं सुना सो सुनहु सयानी ॥

ए दोऊ दसरथ के ढोटा। बाल मरालन्हि के कल जोटा ॥

मुनि कौसिक मख के रखवारे। जिन्ह रन अजिर निसाचर मारे ॥

स्याम गात कल कंज विलोचन। जो मारीच सुभुज मृदु मोचन ॥

कौसल्या सुत सो सुख खानी। नामु राम धनु सायक पानी ॥

गौर किसोर वेषु बर काछें। कर सर चाप राम के पाछें ॥

लछिमनु नामु राम लघु आता। सुनु सखि तासु सुमित्रा माता ॥

दो०—विप्रकाजु करि बंधु दोउ मग मुनिवधू उधारि ।

आए देखन चापमख मुनि हरपी सब नारि ॥२२१॥

देखि राम छवि कोउ एक कहई । जोगु जानकिहि यह वरु अहई ॥

जाँ सखि इन्हहि देख नरनाह । पन परिहारि हठि करइ विवाह ॥

कोउ कह ए भूपति पहिचाने । मुनि समेत मादर सनमाने ॥

सखि परंतु पनु राउ न तजई । विधि वस हठि अविचेकहि भजई ॥

कोउ कह जाँ भल अहइ विधाता । सब कहँ मुनिअ उचित फलदाता ॥

ताँ जानकिहि मिलिहि वरु एह । नाहिन आलि इहाँ संदेह ॥

जाँ विधि वस अस वनै सँजोगू । ताँ कृतकृत्य होइ सब लोगू ॥

सखि हमरें आरति अति तातें । कयहुँक ए आवहिँ एहि नातें ॥

दो०—नाहि त हम कहँ सुनहु सखि इन्ह कर दरसनु दूरि ।

यह संपटु तब होइ जब पुन्य पुराकृत भूरि ॥२२२॥

बोली अपर कहेहु सखि नीका । एहिँ विआह अति हित सबहीका ॥

कोउ कह संकर चाप कठोरा । ए स्यामल मृदुगात किसोरा ॥

सबु असमंजस अहइ सयानी । यह सुनि अपर कहइ मृदु बानी ॥

सखि इन्ह कहँ कोउ कोउ अस कहहीं । बड़ प्रभाउ देखत लघु अहहीं ॥

परमि जासु पद पंकज धूरी । तरी अहल्या कृत अघ भूरी ॥

सो कि रहिहि विनु सिवधनु तारें । यह प्रतीति परिहारिअ न भारें ॥

जेहिँ विरंचि रचि सीय सँवारी । तेहिँ स्यामल वरु रचेउ विचारी ॥

तासु वचन मुनि सब हरपानी । ऐसेइ होउ कहहिँ मृदु बानी ॥

दो०—हियें हरपहि वरपहि सुमन सुमुखि सुलोचनि वृंद ।

जाहि जहाँ जहँ बंधु दोउ तहँ तहँ परमानं

पुर पूरव दिसि गे दोउ भाई । जहँ धनुमख हित भूमि बनाई ॥
 अति विस्तार चारु गच ठारी । विमल वेदिका रुचिर सँवारी ॥
 चहुँ दिसि कंचन मंच बिसाला । रचे जहाँ बैठहिँ महिपाला ॥
 तेहि पाछें समीप चहुँ पासा । अपर मंच मंडली बिलासा ॥
 कछुक ऊँचि सब भाँति सुहाई । बैठहिँ नगर लोग जहँ जाई ॥
 तिन्ह के निकट बिसाल सुहाए । धवल धाम बहुवरन बनाए ॥
 जहँ बैठे देखहिँ सब नारी । जथाजोगु निज कुल अनुहारी ॥
 पुर बालक कहि कहि मृदु बचना । सादर प्रभुहिँ देखावहिँ रचना ॥

दो०—सब सिसु एहि मिस प्रेमबस परसि मनोहर गात ।

तन पुलकहिँ अति हरषु हियँ देखि देखि दोउ भ्रात ॥२२४॥

सिसु सब राम प्रेमबस जाने । प्रीति समेत निकेत बखाने ॥
 निज निज रुचि सब लेहिँ बोलाई । सहित सनेह जाहिँ दोउ भाई ॥
 राम देखावहिँ अनुजहिँ रचना । कहि मृदु मधुर मनोहर बचना ॥
 लव निमेष महँ भुवन निकाया । रचइ जासु अनुसासन माया ॥
 भगति हेतु सोइ दीनदयाला । चितवत चकित धनुष मखसाला ॥
 कौतुक देखि चले गुरु पाहीं । जानि बिलंबु त्रास मन माहीं ॥
 जासु त्रास डर कहँ डर होई । भजन प्रभाउ देखावत सोई ॥
 कहि बातें मृदु मधुर सुहाई । किए बिदा बालक बरिआई ॥

दो०—सभय सप्रेम विनीत अति सकुच सहित दोउ भाइ ।

गुर पद पंकज नाइ सिर बैठे आयसु पाइ ॥२२५॥

निसि प्रवेस मुनि आयसु दीन्हा । सबहीं संध्याबंदनु कीन्हा ॥
 कहत कथा इतिहास पुरानी । रुचिररजनि जुग जाम सिरानी ॥

मुनिवर सयन कीन्हि तव जई। लगे चरन चापन दोउ भाई॥
जिन्ह के चरन सरोरुह लागी। करत विविध जप जोग विरारी॥
तेइ दोउ बंधु प्रेम जनु जीते। गुर पद कमल पलोटत प्रीते॥
बार बार मुनि अग्या दीन्ही। रघुवर जाइ सयन तव कीन्ही॥
चापत चरन लखनु उर लाएँ। सभय सप्रेम परम मचु पाएँ॥
पुनि पुनि प्रभु कह सोवहु ताता। पाँदें धरि उर पद जलजाता॥

दो०—उठे लखनु निसि थिगत मुनि अरुनसिखा धुनि कान ।

गुर तैं पहिलेहि जगतपति जागे रामु सुजान ॥२२६॥

सकल साँच करि जाइ नहाए। नित्य निवाहि मुनिहि सिर नाए॥
समय जानि गुर आयसु पाई। लेन प्रखन चले दोउ भाई॥
भूप बागु बर देखेउ जई। जहँ वसंत रितु रही लोभाई॥
लागे विटप मनोहर नाना। वरन वरन बर बेलि विताना॥
नव पहलव फल सुमन सुहाए। निज संपति सुर रूख लजाए॥
चातक कोकिल कीर चकोरा। कूजत विहग नटत कल मोरा॥
मध्य बाग सरु सोह सुहावा। मनि सोपान विचित्र बनावा॥
धिमल शलिलु सरसिज बहुरंगा। जलखग कूजत गुंजत भृंगा॥

दो०—बागु तड़ागु विलोकि प्रभु हरये बंधु समेत ।

परम रम्य आरामु यहु जो रामहि सुरस देत ॥२२७॥

चहुँ दिसि चितइ पूँछि मालीगन। लगे लेन दल फूल मुदित मन॥
तेहि अवसर सीता तहँ आई। गिरिजा पूजन जननि पठाई॥
संग सखी सब सुभग सयानीं। गावहिं गीत मनोहर बानीं॥
सर समीप गिरिजा गृह सोहा। वरनि न जाइ देखि मनु मोहा॥

मञ्जु करि सर सखिन्ह समेता । गई मुदित मन गौरि निकंता ॥
 पूजा कीन्हि अधिक अनुरागा । निज अनुरूप सुभग वरु मागा ॥
 एक सखी सिय संगु विहाई । गई रही देखन फुलवाई ॥
 तेहिं दोउ बंधु विलोके जाई । प्रेम विवस सीता पहि आई ॥

दो०—तासु दसा देखी सखिन्ह पुलक गात जलु नैन ।

कहु कारनु निज हरप कर पूछहिं सब मृदु वैन ॥२२८॥

देखन वागु कुअँर दुइ आए । वय किसोर सब भाँति सुहाए ॥
 स्याम गौर किमि कहौं बखानी । गिरा अनयन नयन विनु बानी ॥
 सुनि हरपीं सब सखीं सयानी । सिय हियँ अति उतकंठा जानी ॥
 एक कहइ नृपसुत तेइ आली । सुने जे मुनि संग आए काली ॥
 जिन्ह निज रूप मोहनी डारी । कीन्हे खवस नगर नर नारी ॥
 वरनत छवि जहँ तहँ सब लोगू । अवसि देखिअहिं देखन जोगू ॥
 तासु वचन अति सियहि सोहाने । दरस लागि लोचन अकुलाने ॥
 चली अग्र करि प्रिय सखि सोई । प्रीति पुरातन लखइ न कोई ॥

दो०—सुमिरि सीय नारद वचन उपजी प्रीति पुनीत ।

चकित विलोकति सकल दिसि जनु सिसु मृगी समीत ॥२२९॥

कंकन किंकिनि नूपुर धुनि सुनि । कहत लखन सन रामु हृदयँ गुनि ॥
 मानहुँ मदन दुंदुभी दीन्ही । मनसा विख विजय कहँ कीन्ही ॥
 अस कहि फिरि चितए तेहि ओरा । सिय मुख ससि भए नयन चकोरा ॥
 भए विलोचन चारु अचंचल । मनहुँ सकुचि निमि तजे दिगंचल ॥
 देखि सीय सोभा सुखु पावा । हृदयँ सराहत बचनु न आवा ॥
 जनु विरंचि सब निज निपुनाई । विरचि विख कहँ प्रगटि देखाई ॥

रता कहूँ सुंदर करई। छविगृहँ दीपसिखा जनु बरई ॥
उपमा कवि रहे जुठारी। केहि पटतराँ विदेहकुमारी ॥

दो०-सिय सोभा हियँ वरनि प्रमु आपनि दमा विचारि ।
बोलें सुचि मन अनुज सन वचन समय अनुहारि ॥२३०॥

भात जनकतनया यह सोई। धनुपजग्य जेहि कारन होई ॥
पूजन गौरि सखाँ लें आई। करत प्रकामु फिरइ फुलवाइ ॥
जामु विलोकि अलौकिक सोभा। सहज पुनीत मोर मनु छोभा ॥
साँ सघु कारन जान विधाता। फरकहिँ सुभद अंग सुनु भ्राता ॥
रघुबंसिन्ह कर सहज सुभाऊ। मनु कुपंथ पगु धरइ न काऊ ॥
मोहि अतिसय प्रतीति मन केरी। जेहिँ सपनेहुँ परनारि न हेरी ॥
जिन्ह केँ लहहिँ न रिपुरन पीठी। नहिँ पावहिँ परतिय मनु डींठी ॥
मंगन लहहिँ न जिन्ह केँ नाहीं। ते नरवर थोरें जग माहीं ॥

दो०-करत बतकही अनुज सन मन सिय रूप लोभान ।
मुस सरोज मकरंद छवि करइ मधुप इव पान ॥२३१॥

चितवति चकित चहँ दिसि सीता। कहँ गएँ नृपकिसोर मनु चिंता
जहँ विलोक मृग सायक नैनी। जनु तहँ वरिस कमल सित श्रेनी
लता ओट तव सखिन्ह लखाए। खामल गौर किसोर मुहाए ॥
देखि रूप लोचन ललचाने। हरपे जनु निज निधि पहिचाने।
थके नयन रघुपति छवि देखें। पलकन्हिँ परिहराँ निमेषे।
अधिक मनेहँ देह भँ भोरी। सरदं मसिहिँ जनु चितव चको।
लोचन मग रामहि उर आनी। दीन्हे पलक कपाट सयानी।
सखि मसिन्ह प्रेमवस जानी। कहिन सकहिँ कछु मन सकुन

दो०—लताभवन तें प्रगट भे तेहि अवसर दोउ भाइ ।

निकसे जनु जुग विमल विधु जलद पटल बिलगाइ ॥२३२॥

सोभा सीवँ सुभग दोउ वीरा । नील पीत जलजाभ सरीरा ॥
मोरपंख सिर सोहत नीके । गुच्छ वीच विच कुसुम कली के ॥
भाल तिलक श्रमबिंदु सुहाए । श्रवन सुभग भूपन छवि छाए ॥
विकट भृकुटि कच घूघरवारे । नव सरोज लोचन रतनारे ॥
चारु चिबुक नासिका कपोला । हास बिलास लेत मनु मोला ॥
मुखछवि कहि न जाइ मोहि पाहीं । जो विलोकि बहु काम लजाहीं ॥
उर मनि माल कंबु कल गीवा । काम कलभ कर भुज बलसीवा ॥
सुमन समेत बाम कर दोना । सावँर कुअँर सखी सुठि लोना ॥

दो०—केहरि कटि पट पीत धर सुषमा सील निधान ।

देखि भानुकुलभूषनहि वितरा सखिन्ह अपान ॥२३३॥

धरि धीरजु एक आलि सयानी । सीता सन बोली गहि पानी ॥
बहुरि गौरि कर ध्यान करेहू । भूपकिसोर देखि किन लेहू ।
सकुचि सीयँ तब नयन उधारे । सनमुख दोउ रघुसिंघ निहारे ।
नख सिख देखि राम कै सोभा । सुमिरि पिता पनु मनु अति छो
परवस सखिन्ह लखी जव सीता । भयउ गहरु सब कहहिं समीता ।
पुनि आउब एहि वेरिआँ काली । अस कहि मन विहसी एक आल
गूढ़ गिरा सुनि सिध सकुचानी । भयउ बिलंबु मातु भय मानी ।
धरि बडि धीर रामु उर आने । फिरी अपनपउ पितुवस जाने ।

दो०—देखन मिस मृग विहंग तरु फिरइ बहोरि बहोरि ।

निरखि निरखि रघुवीर छवि वाढ़इ प्रीति न थोरि ॥२३४॥

नि कठिन सिवचाप विम्वरति । चली राखि उर स्यामल मूर्ति ॥
 भु जय जात जानकी जानी । मुग्ध सनेह सोभा गुन ग्वानी ॥
 रम प्रेममय मृदु मसि कीन्ही । चारु चित्त भीर्ती लिंगि लीन्ही
 गई भवानी भवन बहोरी । वंदि चरन बोली कर जोरी ॥
 जय जय गिरिवरराज किसोरी । जय महेश मुख चंद चकोरी ॥
 जय गजवदन पडानन माता । जगत जननि दामिनि दुति गाता
 नहिं तव आदि मध्य अवसाना । अमित प्रभाउ वेदु नहिं जाना ॥
 भव भव विभव पराभव कारिनि । विख विमोहनि म्यवस विहारिनि

दो०—पतिदेयता सुतीय महुँ मातु प्रथम तव रेल ।
 महिमा अमित न सकहि कहि सहस सारदा संप ॥२३५॥
 सेवत तोहि सुलभ फल चारी । वरदायनी पुरारि पिआरी ॥
 देवि पूजि पद कमल तुम्हारे । सुर नर मुनि सब होहि सुखारे ॥
 मोर मनोरथु जानहु नीकें । बसहु सदा उर पुर सबही कें ॥
 कीन्हेउँ प्रगट न कारन तेहीं । अस कहि चरन गहे वंदेहीं ॥
 विनय प्रेम बस भई भवानी । खसी माल मूर्ति मुमुकानी ॥
 सादर मियँ प्रसादु सिर धरेऊ । बोली गौरि हरपु हियँ भरेऊ ॥
 मुनु सिय सत्य असीस हमारी । पूजिहि मन कामना तुम्हारी ॥
 नारद वचन सदा सुचि साचा । सो बरु मिलिहि जाहिं मनु रा

छं०—मनु जाहि राचेउ मिलिहि सो बरु सहज सुंदर साँवरो ।
 करुना निधान सुजान सोलु सनेहु जानत रावरो ॥
 एहि भौंति गौरि असीस मुनि सिय सहित हियँ हरपी अली ॥
 तुलसी भवनिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली ॥

सो०—जाति गौरि अनुकूल सिव हिय हरपु न जाइ कहि ।

गंजुल मंगल मूल वाम अंग फरकन लगे ॥२३६॥

हृदयँ सराहत सीय लोनाई । गुर समीप गवने दोउ भाई ॥
 राम कहा सब कौसिक पाहीं । सरल सुभाउ छुअत छल नाही ॥
 सुमन पाइ मुनि पूजा कीन्ही । पुनि असीस दुहु भाइन्ह दीन्ही ॥
 सुफल मनोरथ होहुँ तुम्हारे । रामु लखनु सुनि भए सुखारे ॥
 करि भोजनु मुनिवर बिग्यानी । लगे कहन कछु कथा पुरानी ॥
 विगत दिवसु गुरु आयसु पाई । संध्या करन चले दोउ भाई ॥
 प्राची दिसि ससि उयउ सुहावा । सिय मुख सरिस देखि सुखु पावा ॥
 बहुरि बिचारु कीन्ह मन माहीं । सीय बदन सम हिमकर नाही ॥

दो०—जनम सिंधु पुनि बंधु विषु दिन मलीन सकलंक ।

सिय मुख समता पाव किमि चंडु वापुरो रंक ॥२३७॥

घटइ वढइ विरहिनि दुखदाई । ग्रसइ राहु निज संधिहि पाई ॥
 कोक सोकप्रद पंकज द्रोही । अवगुन बहुत चंद्रमा तोही ॥
 बँदेही मुख पटतर दीन्हे । होइ दोषु बड़ अनुचित कीन्हे ॥
 सिय मुख छवि विधु व्याज बखानी । गुर पहिं चले निसा वडि जानी ॥
 करि मुनि चरन सरोज प्रनामा । आयसु पाइ कीन्ह विश्रामा ॥
 विगत निसा रघुनायक जागे । बंधु बिलोकि कहन अस लागे ॥
 उयउ अरुन अवलोकहु ताता । पंकज कोक लोक सुखदाता ॥
 बोले लखनु जोरि जुग पानी । प्रभु प्रभाउ सचक मत्त लानी ॥

नृप सब नखत करहिं उजिआरी । टारि न मकहिं चाप तम भारी ॥
 कमल कोक मधुकर खग नाना । हरपे सकल निम्ना अवमाना ॥
 ऐसेहिं प्रभु सब भगत तुम्हारे । होइहहिं दूटें धनुष सुखारे ॥
 उषड भानु विनु श्रम तम नासा । दुरे नखत जग तेजु प्रकामा ॥
 रवि निज उदय व्याज रघुराया । प्रभु प्रतापु सब नृपन्ह दिखाया ॥
 तब भुज बल महिमा उदघाटी । प्रगटी धनु विघटन पणिपाटी ॥
 बंधु वचन सुनि प्रभु मुमुकाने । होइ सुचि सहज पुनीत नहाने ॥
 नित्यक्रिया करि गुरु पहिं आए । चरन सरोज सुभग मिर नाए ॥
 सतानंदु तब जनक बोलाए । कौंसिक मुनि पहिं तुरत पटाए ॥
 जनक विनय तिन्ह आइ सुनार्द । हरपे बोलि लिए दोउ भाई ॥
 दो०—सतानंद पद बंदि प्रभु बैठे गुर पहिं जाइ ।

बलहु तात मुनि कहेउ तब पठवा जनक बोलाए ॥२३९॥

मांसपारायण, आठवाँ विश्राम

नवाह्नपारायण, दूसरा विश्राम

मीय स्वयंवरु देग्विअ जाई । ईसु काहि धीं देइ बड़ाई ॥
 लखन कहा जम भाजनु सोई । नाथ कृपा तब जापर होई ॥
 हरपे मुनि सब मुनि वर धानी । दीन्हि अमीस सबहिं सुखु मानी ॥
 पुनि मुनिवृंद समेत कृपाला । देखन चले धनुषमख साला ॥
 रंगभूमि आए दोउ भाई । अमि सुधि सब पुरवासिन्ह पाई ॥
 चले सकल गृह काज विमारी । बाल जुवान जरठ नर नारी ॥
 देखी जनक भीर भ भारी । मुचि सेवक सब सिंग दैजारी ॥

सो०—जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरपु न जाइ कहि ।

मंजुल मंगल मूल वाम अंग फरकन लगे ॥२३६॥

हृदयँ सराहत सीय लोनाई। गुर समीप गवने दोउ भाई ॥
 राम कहा सबु कौसिक पाहीं। सरल सुभाउ छुअत छल नाहीं ॥
 सुमन पाइ मुनि पूजा कीन्ही। पुनि असीस दुहु भाइन्ह दीन्ही ॥
 सुफल मनोरथ होहुँ तुम्हारे। रामु लखनु सुनि भए सुखारे ॥
 करि भोजनु मुनिवर विग्यानी। लगे कहन कछु कथा पुरानी ॥
 विगत दिवसु गुरु आयसु पाई। संध्या करन चले दोउ भाई ॥
 प्राची दिसि ससि उयउ सुहावा। सिय मुख सरिस देखि सुखु पावा
 बहुरि विचारु कीन्ह मन माहीं। सीय बदन सम हिमकर नाहीं ॥

दो०—जनम सिंधु पुनि वंधु विषु दिन मलीन सकलंक ।

सिय मुख समता पाव किमि चंडु वापुरां रंक ॥२३७॥

घटइ बढइ विरहिनि दुखदाई। ग्रसइ राहु निज संधिहिं पाई ॥
 कोक सोकप्रद पंकज द्रोही। अवगुन बहुत चंद्रमा तोही ॥
 वैदेही मुख पटतर दीन्हे। होइ दोषु बड़ अनुचित कीन्हे ॥
 सिय मुख छवि विधु व्याज बखानी। गुर पहिं चले निसा बडिं जानी
 करि मुनि चरन सरोज प्रनामा। आयसु पाइ कीन्ह विश्रामा ॥
 विगत निसा रघुनायक जागे। वंधु विलोकि कहन अस लागे ॥
 उयउ अरुन अवलोकहु ताता। पंकज कोक लोक सुखदाता ॥
 बोले लखनु जोरि जुग पानी। प्रभु प्रभाउ सूचक मृदु वानी ॥

दो०—अरुनोदयँ सकुचे कुमुद उडगन जोति मलीन ।

जिमि तुम्हार आगमन सुनि भए नृपति बलहीन ॥२३८॥

नृप सब नखत करहिं उजिआरी । टारि न सकहिं चाप तम भारी ॥
 कमल कोक मधुकर खग नाना । हरये सकल निम्ना अवसाना ॥
 ऐसेहिं प्रभु सब भगत तुम्हारे । हाइहहिं टूटें धनुष सुखारे ॥
 उयउ भानु विनु श्रम तम नासा । दुरे नखत जग तेजु प्रकासा ॥
 रवि निज उदय व्याज रघुराया । प्रभु प्रतापु सब नृपन्ह दिखाया ॥
 तय भुज बल महिमा उदघाटी । प्रगटी धनु विघटन परिपाटी ॥
 बंधु बचन सुनि प्रभु मुसुकाने । होइ सुचि सहज पुनीत नहाने ॥
 नित्यक्रिया करि गुरु पहिं आए । चरन सरोज सुभग सिर नाए ॥
 सतानंदु तय जनक बोलाए । कौंसिक मुनि पहिं तुरत पठाए ॥
 जनक विनय तिन्ह आइ मुनाई । हरये बोलि लिए दोउ भाई ॥
 दो०-सतानंद पद बंदि प्रभु बैठे गुरु पहिं जाइ ।

बलहु तात मुनि कहेंउ तय पठवा जनक बोलाइ ॥२३९॥

मासपारायण, आठवाँ विश्राम

नवाह्नपारायण, दूसरा विश्राम

सीय स्वयंवर देखिअ जाई । ईसु काहि धीं देइ बड़ाई ॥
 लखन कहा जस भाजनु सोई । नाथ कृपा तव जापर होई ॥
 हारये मुनि सब मुनि बर बानी । दीन्हि असीस सबहिं सुखु मानी ॥
 पुनि मुनिवृंद समेत कृपाला । देखन चले धनुषमख साला ॥
 रंगमूमि आए दोउ भाई । अस्मि मुधिसव पुरवासिन्ह पाई ॥
 चले सकल गृह काज विमारी । बाल जुवान जरठ नर नारी ॥
 देखी जनक भीर भँ भारी । सुचि सेवक सब लिए हँकारी ॥

तुरत सकल लोगन्ह पहिं जाहू । आसन उचित देहु सब काहू ॥

दो०—कहि मृदु वचन विनीत तिन्ह वैठारे नर नारि ।

उत्तम मध्यम नीच लघु निज निज थल अनुहारि ॥२४०॥

राजकुअँर तेहि अवसर आए । मनहुँ मनोहरता तन छाए ॥

गुन सागर नागर वर वीरा । सुंदर स्यामल गौर सरीरा ॥

राज समाज विराजत रूरे । उडगन महुँ जनु जुग विधुपूरे ॥

जिन्ह कें रही भावना जैसी । प्रभु मूरति तिन्ह देखी तैसी ॥

देखहि रूप महा रनधीरा । मनहुँ वीर रसु धरें सरीरा ॥

डरे कुटिल नृप प्रभुहि निहारी । मनहुँ भयानक मूरति भारी ॥

रहे असुर छल छोनिय बेपा । तिन्ह प्रभु प्रगट कालसम देखा ॥

पुरवासिन्ह देखे दोउ भाई । नरभूपन लोचन सुखदाई ॥

दो०—नारि विलोकहि हरषि हियँ निज निज रुचि अनुरूप ।

जनु सोहत सिंगार धरि मूरति परम अनूप ॥२४१॥

विदुषन्ह प्रभु विराटमय दीसा । बहु मुख कर पग लोचन सीसा ॥

जनक जाति अवलोकहि कैसेँ । सजन सगे प्रिय लागहि जैसेँ ॥

सहित विदेह बिलोकहि रानी । सिसुसम प्रीति नजाति बखानी ॥

जोगिन्ह परम तत्त्वमय भाषा । सांत सुद्ध सम सहज प्रकासा ॥

हरिभगतन्ह देखे दोउ भ्राता । इष्टदेव इव सब सुख दाता ॥

रामहि चितव भायँ जेहि सीया । सो सनेहु सुखु नहिं कथनीया ॥

उर अनुभवति न कहि सक सोऊ । कवन प्रकार कहै कवि कोऊ ॥

एहि विधि रहा जाहि जस भाऊ । तेहि तस देखेउ कोसलराऊ ॥

दो०—राजत राज समाज महँ कोसलराज कितोर ।

सुंदर स्यामल गौर तन विम्व विलोचन चोर ॥२४२॥
 सहज मनोहर मूरति दोऊ । कोटि काम उपमा लघु सोऊ ॥
 सरद चंद निंदक मुख नीके । नीरख नयन भावते जी के ॥
 चितवनि चारु मार मनु हरनी । भावति हृदय जाति नहिं बरनी ॥
 कल कपोल श्रुति कुंडल लोला । चिबुक अधर सुंदर मृदु बोला ॥
 कुमुदबंधु कर निंदक हाँसा । भृकुटी विकट मनोहर नासा ॥
 भाल विसाल तिलक झलकाहों । कच विलोकि अलि अबलिलजाहीं ॥
 पीत चौतनीं सिरन्हि सुहाई । कुसुम कर्लीं विच बीच बनाई ॥
 रेवें रुचिर कंधु कल गीवाँ । जनु त्रिभुवन सुपमा की सीवाँ ॥

दो०—कुंजर मनि कंठा कलित उरन्हि तुलसिका माल ।

वृषभ कंध केहरि टवनि बल निधि बाहु विसाल ॥२४३॥

कटि तूनीर पीत पट बाँधें । कर सर धनुष वाम धर काँधे ॥
 पीत जग्य उपवीत सुहाए । नख सिख मंजु महाछवि छाए ॥
 देखि लोग सब भए सुखारे । एकटक लोचन चलत न तारे ॥
 हरषे जनकु देखि ढोउ भाई । मुनि पद कमल गहं तय जाई ॥
 करि बिनती निज कथा सुनाई । रंग अबनि सब मुनिहि देखे जाई ॥
 बहँ जहँ जाहिँ कुअँर बर दोऊ । तहँ तहँ चकित चितव सधु कोऊ ॥
 निज निज रुख रामहि सधु देखा । कोउ न जान कछु मरमु विसैया ॥
 भलि रचना मुनि नृप सन कहेऊ । राजाँ मुदित महामुख लहेऊ ॥

दो०—सब मंचन्ह ते मंचु एक सुंदर विसद विलास ।

मुनि समेत दोउ बंधु तहँ चैतरे महिपास ॥२०॥

प्रभुहि देखि सब नृप हियँ हारे । जनु राकेस उदय भएँ तारे ॥
 असि प्रतीति सब के मनमाहीं । राम चाप तोरव सक नाहीं ॥
 विनु भंजेहुँ भव धनुषु बिसाला । मेलिहि सीय राम उर माला ॥
 अस बिचारि गवनहु धर भाई । जसु प्रतापु बलु तेजु गयाई ॥
 बिहसे अपर भूप सुनि बानी । जे अविवेक अंध अभिमानी ॥
 तोरेहुँ धनुषु व्याहु अवगाहा । विनु तोरें को कुअँरि बिआहा ॥
 एक बार कालउ किन होऊ । सिय हित समर जितव हम मोऊ ॥
 यह सुनि अवर महिप मुसुकाने । धरमसील हरिभगत सयाने ॥

सो०—सीय विआहवि राम गरव दूरि करि नृपन्ह के ॥

जीति को सक संग्राम दसरथ के रन बाँकुरे ॥२४५॥

व्यर्थ मरहु जनि गाल बजाई । मन मोदकन्हि किं भूख बुताई ॥
 सिख हमारि सुनि परमपुनीता । जगदंबा जानहु जियँ सीता ॥
 जगत पिता रघुपतिहि बिचारी । भरि लोचन छवि लेहु निहारी ॥
 सुंदर सुखद सकल गुन रासी । ए दौड बंधु संभु उर बासी ॥
 सुधा समुद्र समीप बिहाई । मृगजलु निरखि मरहु कत धाई ॥
 करहु जाइ जा कहूँ जोइ भावा । हम तौ आजु जनम फलु पावा ॥
 अस कहि भले भूप अनुरागे । रूप अनूप बिलोकन लागे ॥
 देखहिँ सुर नभ चढ़े विमाना । बरषहिँ सुमन करहिँ कल गाना ॥

दो०—जानि सुअवसरु सीय तव पठई जनक बोलाइ ।

चतुर सखीँ सुंदर सकल सादर चलीँ लवाइ ॥२४६॥

सिय सोभा नहिँ जाइ बखानी । जगदंबिका रूप गुन खानी ॥
 उपमा सकल मोहि लघु लागीं । प्राकृत नारि अंग अनुरागीं ।

सिय वरनिअ तेइ उपमा देई। कुकवि कहाइ अजगु को लेई ॥
 जाँ पटतरिअ तीय सम सीया। जग असि जुवति कहाँ कमनीया ॥
 गिरा मुखर तन अरध भवानी। रति अति दुखित अतनु पति जानी
 विय वारुनी बंधु प्रिय जेही। कहिय रमासम किमि वेदेही ॥
 जाँ छवि मुधा पयोनिधि होई। परम रूपमय कच्छपु मोई ॥
 सोभा रजु मंदरु सिंगारू। मथै पानि पंकज निज मारू ॥
 दो०—गहि विधि उपजै लच्छि जव सुंदरता मुख मूल ।

तदपि संकोच समेत कवि कहहि सीय समतूल ॥२४७॥
 चलीं संग लं सर्वां सयानी। गावत गीत मनोहर वानी ॥
 सोह नवल तनु सुंदर सारी। जगत जननि अतुलिन छवि भारी
 भूपन सकल सुदेस सुहाए। अंग अंग रचि सखिन्ह घनाए ॥
 रंगभूमि जव सिय पगु धारी। देखि रूप मोहे नर नारी ॥
 हरपि सुरन्ह दुंदुर्भी बंजाई। वरपि प्रखन अपछरा गाई ॥
 पानि सरोज सोह जयमाला। अबचट चितए सकल भुआला ॥
 सीय चकित्त चित रामहि चाहा। भए मोहवस सब नरनाहा ॥
 मुनि समीप देखे दोउ भाई। लगे ललकि लोचन निधि पाई ॥

दो०—गुरजन लाज समाजु बड़ देखि सीय सकुचानि ।
 लागि विलोकन सखिन्ह तन रघुवीरहि उर आनि ॥२४८॥
 राम रूपु अरु सिय छवि देखें। नर नारिन्ह परिहरिं निमेषें ॥
 सोचहिं सकल कहत सकुचाहीं। विधिसन चिनय करहिं मन माहीं
 हरु विधि बेगि जनक जड़ताई। मति हमारि असि देहि सुहाई ॥
 बिनु बिचार पनु तजि नरनाह। सीय राम कर

जगु भल कहिहि भाव सब काहू । हठ कीन्हें अंतहुँ उर दाहू ।
 एहिँ लालसाँ मगन सब लोगू । बरु साँवरो जानकी जोगू ।
 तत्र वंदीजन जनक बोलाए । विरिदावली कहत चलि आए ।
 कह नृपु जाइ कहहु पन मोरा । चले भाट हियँ हरपु न थोरा ।

दां०—बोले वंदी बचन वर सुनहु सकल महिपाल ।

पन विदेह कर कहहिँ हम भुजा उठाइ विसाल ॥२४९॥

नृप भुजबलु विधु सिवधनु राहू । गरुअ कठोर विदित सब काहू ॥
 रावनु बानु महाभट भारे । देखि सरासन गवँहिँ सिधारे ॥
 सोइ पुरारि कोदंडु कठोरा । राज समाज आजु जोइ तोरा ॥
 त्रिभुवन जय समेत वैदेही । विनहिँ विचार बरइ हठि तेही ॥
 सुनि पन सकल भूप अभिलाषे । भटमानी अतिसय मन माखे ॥
 परिकर बाँधि उठे अकुलाई । चले इष्टदेवन्ह सिर नाई ॥
 तमकि ताकि तकि सिवधनु धरहीं । उठइ न कोटि भाँति बलु करहीं ॥
 जिन्ह के कलु विचारु मन माहीं । चाप समीप महीप न जाहीं ॥

दो०—तमकि धरहिँ धनु मूढ़ नृप उठइ न चलहिँ लजाइ ।

मनहुँ पाइ भट बाहुबलु अधिकु अधिकु गरुआइ ॥२५०॥

भूप सहस दस एकहि वारा । लगे उठावन टरइ न टारा ॥
 डगइ न संभु सरासनु कैसैं । कामी बचन सती मनु जैसैं ॥
 सब नृप भए जोगु उपहासी । जैसैं विनु विराग संन्यासी ।
 कीरति विजय बीरता भारी । चले चाप कर बरवस हारी ।
 श्रीहत भए हारि हियँ राजा । बैठे निज निज जाइ समाजा ।
 नृपन्ह बिलोकि जनकु अकुलाने । बोले बचन रोष जनु साने ।

दीप दीप के भूपति नाना । आए सुनि हम जो पनु ठाना ॥
देव दनुज धरि मनुज सरीरा । विपुल वीर आए रनधीरा ॥
दो०—कुअरि मनोहर विजय बढि कीरति अति कमनीय ।

॥ पावनिहार विरंचि जनु रचेउ न धनु दमनीय ॥२५१॥

कहहु काहि यहु लासु न भावा । काहुँ न संकर चाप चढ़ावा ॥
रहउ चढ़ाउय तोरव भाई । तिलु भरि भूमि न सके छड़ाई ॥
अब जनि कोउ माखै भट मानी । वीर विहीन मही मैं जानी ॥
तजहु आस निज निज गृह जाह । लिखा न विधि बँदेहि विवाह ॥
सुकुतु जाह जाँ पनु परिहरऊँ । कुअरि कुआरि रहउ का करऊँ ॥
जाँ जनतेउँ विनु भट भुवि भाई । तौ पनु करि होतेउँ न हँसाई ॥
जनक वचन सुनि सव नर नारी । देखि जानकिहि भए दुखारी ॥
माखे लखनु कुटिल भईं भँहि । रदपट फरकन नयन रिसाँहि ॥

दो०—कहि न सकत रघुवीर डर लगे वचन जनु धान ।

नाइ राम पद कमल सिरु बोले गिरा प्रमान ॥२५२॥

रघुवंसिन्ह महुँ जहँ कोउ होई । तेहिँ समाज अस कहइ न कोई ॥
फही जनक लसि अनुचित्त धानी । विद्यमान रघुकुल मनि जानी ॥
सुनहु भानुकुल पंकज भानू । कहउँ मुभाउ न कहु अभिमानू ॥
जाँ तुम्हारि अनुसासन पावौं । कंदुक इव ब्रह्मांड उठावौं ॥
काचे घट जिमि डारां फोरी । सकउँ मेरु मूलक जिमि तोरी ॥
तव प्रताप महिमा भगवाना । को वापुरो पिनाक पुराना
नाथ जानि अस आयमु होऊ । कौतुकु करौ विलोकिए सोऊ
कमल नाल जिमि चाप चढ़ावौं । जो जन सत

दो०--तोरोँ छत्रक दंड जिमि तव प्रताप बल नाथ ।

जौ न करौँ प्रभु पद सपथ कर न धरौँ धनु भाथ ॥२५३॥

लखन सकोप बचन जे बोले । डगमगानि महि दिग्गज डोले ॥
 सकल लोग सब भूप डेराने । सिय हियँ हरषु जनकु सकुचाने ॥
 गुर रघुपति सब मुनि मन माहीं । मुदित भए पुनि पुनि पुलकाहीं ॥
 सयनहिँ रघुपति लखनु नेवारे । प्रेम समेत निकट बैठारे ॥
 विस्वामित्र समय सुभ जानी । बोले अति सनेहमय बानी ॥
 उठहु राम भंजहु भवचापा । मेटहु तात जनक परितापा ॥
 सुनि गुरु बचन चरन सिरु नावा । हरषु बिषादु न कछु उर आवा ॥
 ठाढ़े भए उठि सहज सुभाएँ । ठवनि जुवा मृगराजु लजाएँ ॥

दो०--उदित उदयगिरि मंच पर रघुवर बालपतंग ।

विकसे संत सरोज सब हरषे लोचन भृंग ॥२५४॥

नृपन्ह केरि आसा निसि नासी । बचन नखत अवली न प्रकासी ॥
 मानी महिय कुमुद सकुचाने । कपटी भूप उलूक लुकाने ॥
 भए विसोक कोक मुनि देवा । बरिसहिँ सुमन जनावहिँ सेवा ॥
 गुर पद बंदि सहित अनुरागा । राम मुनिन्ह सन आयसु मागा ॥
 सहजहिँ चले सकल जग स्वामी । मत्त मंजु वर कुंजर गामी ॥
 चलत राम सब पुर नर नारी । पुलक पूरि तन भए सुखारी ॥
 बंदि पितर सुर सुकृत सँभारे । जौ कछु पुन्य प्रभाउ हमारे ॥
 तौ सिवधनु मृनाल की नाई । तोरहुँ रामु गनेस गोसाई ॥

दो०--रामहि प्रेम समेत लखि सखिन्ह समीप बोलाइ ।

सीता मातु सनेह बस बचन कहइ विलखाइ ॥२५५॥

सखि सव कौतुकु देखनिहारे । जेउ कहावत हितू हमारे ॥
 कोउ न बुझाइ कहइ गुर पाहीं । ए बालक असि हठ भलि नाहीं ॥
 रावन बान छुआ नहिं चापा । हारे सकल भूष करि दापा ॥
 सो धनु राजकुअँर कर देहीं । बाल मराल कि मंदर लेहीं ॥

सयानप सकल सिरानी । सखि विधि गति कहु जाति न जानी ॥
 चतुर सखी मृदु बानी । तेजवंत लघु गनिअ न रानी ॥
 हँ कुंभज कहँ सिंधु अपारा । सोपेउ सुजसु सकल मंसारा ॥
 मंडल देखत लघु लागा । उदयँ तामु तिभुवन तम भागा ॥

०-मंत्र परम लघु जासु बस विधि हरि हर सुर सर्व ।

महामत्त गजराज कहँ वस कर अंकुस स्वर्ष ॥२५६॥

कुसुम धनु सायक लीन्है । सकल भुवन अपनें वस कीन्है ॥
 तजिअ संसउ अस जानी । भंजव धनुपु राम मुनु रानी ॥
 धवन मुनि भँ परतीती । मिटा विपादु धरी अति प्रीती ॥
 रामहि विलोकि बँदेही । सभय हृदयँ विनवति जेहि तेही ॥

मन मनाव अकुलानी । होहु प्रसन्न महेस भवानी ॥
 सफल आपनि सेवकाई । करि हितु हरहु चाप गरुआई ॥
 १५५ वरदायक देवा । आजु लगें कीन्हिउँ तुअ सेवा ॥
 १५६ चार विनती मुनि मोरी । करहु चाप गुरुता अति धोरी ॥

०-देसि देसि रघुवीर तन सुर मनाव धरि धीर ।

भरे विलोचन प्रेमं जल पुलकावली सरिर ॥२५७॥

कै निरखि नयन भरि सोभा । पितु पनु सुमिरि बहुरि मनु छोभा
 तात दारुनि हठ ठानी । समुझत नहिं कछु लाघु न हानी ॥

सचिव सभय सिख देइ न कोई । बुध समाज वड़ अनुचित होई ॥
 कहँ धनु कुलिसहु चाहि कठोरा । कहँ स्यामल मृदुगात किसोरा ॥
 विधि केहि भाँति धरौँ उर धीरा । सिरस सुमन कन बेधिय हीरा ॥
 सकल सभा कै मति भै भोरी । अब मोहि संभुचाप गति तोरी ॥
 निज जड़ता लोगन्ह पर डारी । होहि हरुअ रघुपतिहि निहारी ॥
 अति परिताप सीय मन माहीं । लव निमेष जुग सय सम जाहीं ॥

दो०—प्रभुहि चितइ पुनि चितव महि राजत लोचन लोल ।

खेलत मनसिज मीन जुग जनु बिधु मंडल डोल ॥२५८॥

गिरा अलिनि मुख पंकज रोकी । प्रगट न लाज निसा अवलोकी ॥
 लोचन जलु रह लोचन कोना । जैसेँ परम कृपन कर सोना ॥
 सकुची व्याकुलता बड़ि जानी । धरि धीरजु प्रतीति उर आनी ॥
 तन मन वचन मोर पनु साचा । रघुपति पद सरोज चितु राचा ॥
 तौ भगवानु सकल उर वासी । करिहि मोहि रघुवर कै दासी ॥
 जेहि कें जेहि पर सत्य सनेह । सो तेहि मिलइ न कलु संदेह ॥
 प्रभु तन चितइ प्रेम तन ठाना । कृपानिधान राम सधु जाना ॥
 सियहि विलोकि तकेउ धनु कैसैं । चितव गरुरु लघु व्यालहि जैसेँ ॥

दो०—लखन लखेउ रघुवंसमनि ताकेउ हरं कोदंडु ।

पुलकि गात बोले वचन चरन चापि ब्रह्मांडु ॥२५९॥

भृगुपति केरि गरव गरुआई। सुर मुनिवरन्ह केरि कदराई ॥
 सिय कर सोचु जनक पछितावा। रानिन्ह कर दारुन दुख दावा ॥
 संभुचाप चढ़ बोहितु पाई। चढ़े जाइ सब संगु बनाई ॥
 राम बाहुबल सिंधु अपारु। चहत पारु नहिं कोउ कड़हारु ॥

१०-राम बिलोके लोग सब विप्र लिखे से देखि ।

चितई सीय हृषायतन जानी बिकल विसेपि ॥ २६० ॥

देखी विपुल विकल चंदेही। निमिष विहात कल्प सम तेही ॥

चारि विनु जो तनु त्यागा। सुएँ करइ का सुधा तड़ागा ॥

वरपा सब कृपी सुखानें। समय चुकें पुनि का पछितानें ॥

जियँ जानि जानकी देखी। प्रभु पुलके लखि प्रीति विसेपी ॥

मनहिं मन कीन्हा। अति लाघवँ उठाइ धनु लीन्हा ॥

दामिनि जिमि जव लयऊ। पुनि नभ धनु मंडल सम भयऊ ॥

चढ़ावत खंचत गाढ़ें। काहुँ न लखा देख सधु ठाढ़ें ॥

छन राम मध्य धनु तोरा। भरे भुवन घुनि घोर कठोरा ॥

भरे भुवन घोर कठोर रर रवि वांमि तजि मारगु चले ।

विक्रमहि दिग्गज डोल महि अहि कोल कूरुम कउमले ॥

नुर अमुर मुनि कर कान दोन्हें परल बिकल विचारही ।

कोदंड खंडेउ राम तुलसी जयति वचन उचारही ॥

०-संरु चापु जहानु सागर रचुवर बाहुयतु ।

बूड़ सो सकल समाजु चढ़ा जो प्रयमहि मोह बस ॥ २६१ ॥

दोउ चापखंड महि डारे। देखि लोग सब भए सुंखारे ॥

पयोनिधि पावन। प्रेम चारि अत्रगाहु सुहावन ॥

सचिव सभय सिख देइ न कोई । बुध समाज बड़ अनुचित
 कहँ धनु कुलिसहु चाहि कठोरा । कहँ स्यामल मृदुगात किस
 विधि केहि भाँति धरौं उर धीरा । सिरस सुमन कँन बेधिअ ह
 सकल सभा कै मति भँ भोरी । अब मोहि संभुचाप गति त
 निज जड़ता लोगन्ह पर डारी । होहि हरुअ रघुपतिहि निह
 अति परिताप सीय मन माहीं । लव निमेष जुग सय सम ज
 दो०- प्रभुहि चितइ पुनि चितव महि राजत लोचन लोल ।

लेलन ननसिज मीन जुग जनु विधु मंडल डोल ॥२

गिरा अलिनि मुख पंकज रोकी । प्रगट न लाज निसा अवलो
 लोचन जलु रह लोचन कोना । जैसे परम कृपन कर से
 सकुची व्याकुलता बड़ि जानी । धरि धीरजु प्रतीति उर अ
 तन मन बचन मोर पनु साचा । रघुपति पद सरोज चितुरा
 तौ भगवानु सकल उर बासी । करिहि मोहि रघुबर कै द
 जेहि कें जेहि पर सत्य सनेहू । सो तेहि मिलइ न कलु सं
 प्रभु तन चितइ प्रेम तन ठाना । कृपानिधान राम सबु ज
 सियहि बिलोकि तकेउ धनु कैसे । चितव गरु लघु व्याला

दो०-लखन लखेउ रघुबंसमनि ताकेउ हर कोदंडु ।

पुलकि गात बोले बचन चरन चापि ब्रह्मांडु ॥३

दिसिकुंजरहु कमठ अहि कोला । धरहु धरनि धरि धीर न ड
 रामु चहहि संकर धनु तोरा । होहु सजग सुनि आयसु म
 चाप समीप रामु जब आए । नर नारिन्ह सुर सुकृत मन
 सब कर संसउ अरु अग्यानु । मंदे महीपन्ह कर अभिम

भृगुपति केरि गरव गरुअई। मुर मुनिवरन्ह केरि कदराई ॥
 सिय कर सोचु जनक पछितावा। रानिन्ह कर दारुन दुख दावा ॥
 संभुचाप बह बोहितु पाई। चढ़े जाइ सब संगु धनाई ॥
 राम चाहुबल सिंधु अपारु। चहत पारु नहिं कोउ कढ़हारु ॥

दो०—राम बिलोके लोग सब चित्र लिखे से देखि ।

चितई सीय हृषायतन जानी विकल विसेपि ॥ २६० ॥

देखी विपुल विकल बँदेही। निमिप विहात कलप सम तेही ॥
 वृषित वारि विनु जो तनु त्यागा। मुएँ करइ का सुधा तड़ागा ॥
 का. वरपा सब कृपी मुखानें। समय चुकें पुनि का पछितानें ॥
 अस जियँ जानि जानकी देखी। प्रभु पुलके लखि प्रीति विसेपी ॥
 गुरहि प्रनामु मनहिं मन कीन्हा। अति लाषवँ उठाइ धनु लीन्हा ॥
 दमकेउ दामिनि जिमि जव लयऊ। पुनि नभ धनु मंडल सम भयऊ
 लेत चढ़ावत खँचत गाढ़ें। काहुँ न लखा देख सच्चु ठाढ़ें ॥
 तेहि छन राम मध्य धनु तोरा। भरे भुवन धुनि घोर कठोरा ॥

छं०—भरे भुवन घोर कठोर रव रवि चात्रि तजि मारगु चले ।

निफाहि दिग्गत्र डोल महि अहि फोल कूरुष कउमले ॥

गुर असुर मुनि कर कान दीन्हें एकल विकल विचारही ।

फोदंड संडेउ राष तुलसी जयति वचन उचारही ॥

सो०—संकर चापु जहावु सागरु रघुवर घाहुशतु ।

बूड़ सो सगळ समाजु चढ़ा जो प्रथमाहि मोह बस ॥ २६१ ॥

प्रभु दाउ : चापरखंड महि टारे। देखि लोग सब भए सुखारे ॥

कौमिकरूप पयोनिधि पावने। प्रेम वारि अरगाहु सुखवन

रामरूप राकेसु निहारी । बद्ध बीचि पुलकावलि भारी ॥
 वाजे नभ गहगहे निसाना । देवबंधू नाचहिं करि गाना ॥
 ब्रह्मादिक सुर सिद्ध मुनीसा । प्रभुहि प्रसंसहिं देहिं असीसा ॥
 बरिसहिं सुमन रंग बहु माला । गावहिं किंनर गीत रसाला ॥
 रही भुवन भरि जय जय बानी । धनुषभंग धुनि जात न जानी ॥
 मुदित कहहिं जहँ तहँ नर नारी । भंजेउ राम संभुधनु भारी ॥

दो०—बंदी मागध सूतगन बिरुद बद्धहिं मतिधीर ।

करहिं निछावरि लोग सब हय गय धन मनि चीर ॥ २६२ ॥

झाँझि मृदंग संख सहनाई । भेरि ढोल दुंदुभी सुहाई ।
 बाजहिं बहु बाजने सुहाए । जहँ तहँ जुवतिन्ह मंगल गाए ॥
 सखिन्ह सहित हरषी अति रानी । सखत धान परा जनु पानी ॥
 जनक लहेउ सुखु सोच बिहाई । पैरत थकें थाह जनु पाई ।
 श्रीहत भए भूप धनु टूटे । जैसे दिवस दीप छबि छटे ।
 सीय सुखहि बरनिअ केहि भाँती । जनु चातकी पाइ जलु खाती ।
 रामहि लखनु बिलोकत कैसें । ससिहि चकोर किसोरकु जैसें ।
 सतानंद तव आयसु दीन्हा । सीताँ गमनु राम पहिं कीन्हा ।

दो०—संग सखी सुंदर चतुर गावहिं मंगलचार ।

गवनी बाल मराल गति सुषमा अंग अपार ॥ २६३ ॥

सखिन्ह मध्य सिय सोहति कैसें । छविगन मध्य महाछवि जैसें ।
 कर सरोज जयमाल सुहाई । बिख बिजय सोभा जेहि छाई ।
 तन सकोचु मन परम उछाहू । गूढ़ प्रेमु लखि परइ न काहू ।
 जाइ समीप राम छवि देखी । रहि जनु कुँअरि चित्र अवरेशी ॥

चतुर सखीं लखि कहा बुझाई। पहिरावहु जयमाल सुहाई ॥
 सुनत जुगल कर माल उठाई। प्रेम विवस पहिराइ न जाई ॥
 सोहत जनु जुग जलज सनाला। ससिहि सभित देत जयमाला ॥
 गावहिं छवि अवलोकिसहेली। सियँ जयमाल राम उर भेली ॥

सो०—रघुवर उर जयमाल देखि देव घरिपहिं सुमन ।

सकुचे सकल भुआल जनु बिलोकि रवि कुमुदगन ॥२६४॥

पुर अरु व्योम बाजने बाजे। खल भए मलिन साधु सय राजे ॥
 सुर किंनर नर नाग मुनीसा। जय जय जय कहि देहिं असीसा ॥
 नाचहिं गावहिं विबुध वधुटीं। वार वार कुसुमांजलि छुटीं ॥
 जहँ तहँ विप्र वेदधुनि करहीं। पंदी विरिदावलि उधरहीं ॥
 महि पाताल नाक जसु व्यापा। राम वरी सिय भंजेउ चापा ॥
 करहिं आरती पुर नर नारी। देहिं निछावरि बित्त बिसारी ॥
 सोहति सीय राम कै जोरी। छवि सिंगारु मनहुँ एक ठोरी ॥
 सखीं कहहिं प्रभुपद गहु सीता। करति न चरन परस अति भीता ॥

दो०—गौतम तिय गति सुरति करि नहिं परसति पग पानि ।

मन विहसे रघुवंममनि प्रीति अलौकिक जाणि ॥२६५॥

तब सिय देखि भूप अभिलापे। कूर कपूत मूढ़ मन माखे ॥
 उठि उठि पहिरि सनाह अभागे। जहँ तहँ गाल बजावन लागे ॥
 लेहु छड़ाइ सीय कह कोऊ। धरि बाँधहु नृप बालक दोऊ ॥
 तोरें धनुषु चाड़ नहिं सरई। जीवत हमहि कुअरि को बरई ॥
 जाँ विदेहु कछु करै सहाई। जीतहु समर सहित दोउ भाई ॥
 साधु भूप बोले सुनि बानी। राजसमाजहि लाज लजानी ॥

बलु प्रतापु वीरता बड़ाई। नाक पिनाकहि संग सिधाई ॥
सोइ सरता कि अब कहूँ पाई। असि बुधि तौ विधि मुहँ मसि लाई

दो०—देखहु रामहि नयन भरि तजि इरिषा महु कोहु ।

लखन रोषु पावकु प्रबल जानि सलभ जनि होहु ॥२६६॥

बैनतेय बलि जिमि चह कागू। जिमि ससु चहै नाग अरि भागू ॥
जिमि चह कुसल अकारन कोही। सब संपदा चहै सिवद्रोही ॥
लोभी लोलुप कलं कीरति चहई। अकलंकता कि कामी लहई ॥
हरिपद बिमुख परम गति चाहा। तस तुम्हार लालचु नर नाहा ॥
कोलाहलु सुनि सीय सकानी। सखीं लवाइ गई जहँ रानी ॥
रामु सुभायँ चले गुरु पाहीं। सिय सनेहु वरनत मन माहीं ॥
रानिन्ह सहित सोचबस सीया। अब धौं विधिहि काह करनीया ॥
भूप बचन सुनि इत उत तकहीं। लखनु राम डर बोलि न सकहीं ॥

दो०—अरुन नयन भृकुटी कुटिल चितवत नृपन्ह सकोप ।

मनहुँ मत्त गजगन निरखि सिंधकिसोरहि चोप ॥२६७॥

खरभरु देखि बिकल पुर नारीं। सब मिलि देहिं महीपन्ह गारीं ॥
तेहि अवसर सुनि सिवधनु भंगा। आयउ भृगुकुल कमल पतंगा ॥
देखि महीप सकल सकुचाने। बाज झपट जनु लवा लुकाने ॥
गौरि सरीर भूति भल आजा। भाल बिसाल त्रिपुंड बिराजा ॥
सीस जटा ससिवदनु सुहावा। रिसबस कलुक अरुन होइ आवा ॥
भृकुटी कुटिल नयन रिस राते। सहजहुँ चितवत मनहुँ रिसाते ॥
चूपभ कंध उर बाहु बिसाला। चारु जनेउ माल मृगछाला ॥

कटि मुनिवसन तून दुइ बाँधे । धनु सर करकुठारु कल काँधे ॥

दो०—सांत घेषु करनी कठिन वरनि न जाइ सरूप ।

घरि मुनितनु जनु वीर रसु आयउ जहँ सब भूप ॥२६८॥

देखत भृगुपति घेषु कराला । उठे सकल भय विकल भुआला ॥

पितु समेत कहि कहि निज नामा । लगे करन सब दंड प्रनामा ॥

जेहि सुभायँ चितवहिँ हितु जानी । सो जानइ जनु आइ खुटानी ॥

जनक बहोरि आइ सिरु नावा । सीय बोलाइ प्रनामु करावा ॥

आसिप दीन्हि सखीं हरपानीं । निज समाज लँ गइँ सयानीं ॥

विश्यामिश्रु मिले पुनि आई । पद सरोज मेले दोउ भाई ॥

रामु लखनु दसरथ के ढोटा । दीन्हि असीस देखि भल जोटा ॥

रामहि चितइ रहे थकिलोचन । रूप अपार मार मद मोचन ॥

दो०—बहुरि विलोकि विदेह सन कहहु काह अति भीर ।

पूँछत जानि अजान जिमि व्यापेउ कोपु सरिीर ॥२६९॥

समाचार कहि जनक मुनाए । जेहि कारण महीप सब आए ॥

मुनत वचन फिरि अनत निहारे । देखे चापखंड महि डारे ॥

अति रिरा बोले वचन कठोरा । कहु जइँ जनक धनुष कँठोरा ॥

वेगि देखाउ मूढ़ न त आजू । उलटुँ महि जहँलहि तव राजू ॥

अति डरु उतरु देत नृपु नाहीं । कुटिल भूप हरपे मन माहीं ॥

सुर मुनि नाग नगर नर नारी । सोचहिँ सकल त्रास उर भारी ॥

मन पछिताति सीय महतारी । विधि अब सँवरी चात विगारी ॥

भृगुपति कर सुभाउं मुनि सीता । अरथ नियेप कल्प सन पीता ॥

दो०—सभय विलोके लोग सब जानि जानकी भीर ।

हृदयें न हरषु विषादु कछु बोले श्रीरघुवीरु ॥२७०॥

मासपारायण, नवाँ विश्राम

नाथ संभुधनु भंजनिहारा । होइहि केउ एक दास तुम्हारा ॥
 आयसु काह कहिअ किन मोही । सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही ॥
 सेवकु सो जो करै सेवकाई । अरि करनी करि करिअ लराई ॥
 सुनहु राम जेहिं सिवधनु तोरा । सहसबाहु सम सो रिपु मोरा ॥
 सो विलगाउ विहाइ समाजा । न त मारे जैहहिं सब राजा ॥
 सुनि मुनिबचन लखन मुसुकाने । बोले परसुधरहि अपमाने ॥
 बहु धनुहीं तोरीं लरिकाई । कबहुँ न असि सिस् कीन्हि गोसाई ॥
 एहि धनु पर ममता केहि हेतू । सुनि रिसाइ कह भृगुकुलकेतू ॥

दो०—रे नृप बालक काल वस बोलत तोहि न सँभार ।

धनुही सम तिपुरारि धनु विदित सकल संसार ॥२७१॥

लखन कहा हँसि हमरें जाना । सुनहु देव सब धनुष समाना ॥
 का छति लाभ जून धनु तोरें । देखा राम नयन के भोरें ॥
 छुअत दूट रघुपतिहु न दोष । मुनि विनु काज करिअ कत रोष ॥
 बोले चितइ परसु की ओरा । रे सठ सुनेहि सुभाउ न मोरा ॥
 बालकु बोलि बधउं नहिं तोही । केवल मुनि जड़ जानहि मोही ॥
 बाल ब्रह्मचारी अति कोही । विस्व विदित छत्रियकुल द्रोही ॥
 भुजबल भूमि भूप विनु कीन्ही । विपुल वार महिदेवन्ह दीन्ही ॥
 सहसबाहु भुज छेदनिहारा । परसु विलोकु महीपकुमारा ॥

दो०—मातु पितहि जनि सोचवस करसि महीसकितोर ।

गर्भन्ह के अर्भक दलन परसु मोर अति घोर ॥२७२॥

बिहसि लखनु बोले मृदु बानी । अहो मुनीसु महा भटमानी ॥
 पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारु । चहत उड़ावन फूँकि पहारु ॥
 इहाँ कुम्हड़वतिया धोउ नाही । जे तरजनी देखि मरि जाहीं ॥
 देखि कुठारु सरासन वाना । भँकलु कहा सहित अभिमाना ॥
 भृगुसुत समुझि जनेउ बिलोकी । जाँ कलु कहहु सहउँ रिस रोकी ॥
 सुर महिसुर हरिजन अरु गाई । हमरें कुल इन्ह पर न सुराई ॥
 वधें पापु अपकीरति हारें । मारतहुँ पा परिअ तुम्हारें ॥
 कोटि कुलिस सम वचनु तुम्हारा । व्यर्थ धरहु धनु वान कुठारा ॥

दो०—जो बिलोकि अनुचित कहेउँ छमहु महामुनि धीर ।

मुनि सरोष भृगुवंसमनि बोले गिरा गभीर ॥२७३॥

कांसिक गुनहु मंद यहु बालकु । कुटिल कालवस निज कुल घालकु
 भानु वंस राकेस कलंकु । निपट निरंकुस अचुध असंकु ॥
 काल कवलु होइहि छन माहीं । कहउँ पुकारि खोरि मोहि नाही ॥
 तुम्ह हटकहु जाँ चहहु उवारा । कहि प्रतापु बलु रोपु हमारा ॥
 लखन कहेउ मुनि सुजसु तुम्हारा । तुम्हहि अछत को बरनै पारा ॥
 अपने मुँह तुम्ह आपनि करनी । वार अनेक भाँति बहु बरनी ॥
 नहिँ संतोषु त पुनि कलु कहहु । जनि रिस रोकि दुसह दुख सहहु ॥
 वीरवती तुम्ह धीर अछोभा । गारी दैत न पावहु सोभा ॥

दो०—सूर समर करनी करहि कहि न जनावहि आपु ।

बिद्यमान रन पाइ रिपु कायर क्यहि प्रतापु ॥२७४॥

दो०—सभय बिलोके लोग सब जानि जानकी भीरु ।
हृदयँ न हरषु विषादु कछु बोले श्रीरघुवीरु ॥२७०॥

मासपारायण, नवाँ विश्राम

नाथ संभुधनु भंजनिहारा । होइहि केउ एक दास तुम्हारा ।
आयसु काह कहिअ किन मोही । सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही ।
सेवकु सो जो करै सेवकाई । अरि करनी करि करिअ लराई ।
सुनहु राम जेहिं सिवधनु तोरा । सहसबाहु सम सो रिपु मोरा ।
सो बिलगाउ विहाइ समाजा । न त मारे जैहहिं सब राजा ।
सुनि मुनिबचन लखन मुसुकाने । बोले परसुधरहि अपमाने ।
बहु धनुहीं तोरीं लरिकाई । कवहुँ न असि रिस कीन्हि गोसाई ।
एहि धनु पर ममता केहि हेतू । सुनि रिसाइ कह भृगुकुलकंतू ।
दो०—रे नृप बालक काल वस बोलत तोहि न सँभार ।

धनुही सम त्रिपुरारि धनु विदित सकल संसार ॥२७१॥

लखन कहा हँसि हमरें जाना । सुनहु देव सब धनुष समाना ॥
का छति लाभु जून धनु तोरें । देखा राम नयन के भोरें ॥
छुअत दूट रघुपतिहु न दोस्र । मुनि विनु काज करिअ कत रोस्र ॥
बोले चितइ परसु की ओरा । रे सठ सुनेहि सुभाउ न मोरा ॥
बालकु बोलि बधउँ नहिं तोही । केवल मुनि जड़ जानहि मोही ॥
बाल ब्रह्मचारी अति कोही । बिस्व विदित छत्रियकुल द्रोही ॥
भुजबल भूमि भूप विनु कीन्ही । बिपुल बार महिदेवन्ह दीन्ही ॥
सहसबाहु भुज छेदनिहारा । परसु बिलोकु महीपकुमारा ॥

दो०—मातु पितहि जनि सोचवस करसि महीसकिसोर ।

गर्भन्ह के अर्भक दलन परसु मोर अति घोर ॥२७२॥

बिहसि लखनु बोले मृदु बानी । अहो मुनीमु महा भटमानी ॥
 पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारू । चहत उड़ावन फूँकि पहारू ॥
 इहाँ कुम्हड़वतिया धोउ नाहीं । जे तरजनी देखि मरि जाहीं ॥
 देखि कुठारू सरासन बाना । मैं कछु कहा सहित अभिमाना ॥
 भृगुसुत समुझि जनेउ चिलोकी । जां कछु कहहु सहउँ रिस रोकी ॥
 सुर महिसुर हरिजन अरु गाई । हमरें कुल इन्ह पर न सुराई ॥
 वधें पापु अपकीरति हारें । मारतहूँ पा परिअ तुम्हारें ॥
 कौटिकुलिस सम वचनु तुम्हारा । व्यर्थ धरहु धनु बान कुठारा ॥

दो०—जो विलोकि अनुचित कहेउँ छमहु महामुनि धीर ।

मुनि सरोष भृगुवंसमनि बोले गिरा गभीर ॥२७३॥

कांसिक सुनहु मंद यहु बालकु । कुटिल कालवस निज कुल बालकु
 भानु वंस राकेस कलंकु । निपट निरंकुस अबुध असंकु ॥
 काल कबलु होइहि छन माहीं । कहउँ पुकारि खोरि मोहि नाहीं ॥
 तुम्ह हटकहु जाँ चहहु उवारा । कहि प्रतापु बलु रोपु हमारा ॥
 लखन कहेउ मुनि सुजसु तुम्हारा । तुम्हहि अछत को बरनै पारा ॥
 अपने मुँह तुम्ह आपनि करनी । वार अनेक भाँति बहु बरनी ॥
 नहिं संतोपु त पुनि कछु कहहु । जनि रिस रोकि दुसह दुख सहहु ॥
 वीरवती तुम्ह धीर अछोभा । गारी दैत न पावहु सोभा ॥

दो०—सूर समर करनी करहि कहि न जनावहि आपु ।

विद्यमान रन पाइ रिपु कायर क्यहि प्रतापु ॥२७४॥

तुम्ह तौ कालु हाँक जनु लावा । बार बार मोहि लागि बोलावा ॥
 सुनत लखन के बचन कठोरा । परसु सुधारि धरेउ कर घोरा ॥
 अब जनि देइ दोसु मोहि लोगू । कटुवादी बालकु वधजोगू ॥
 बाल बिलोकि बहुत मैं बाँचा । अब यहु मरनिहार भा साँचा ॥
 कौसिक कहा छमिअ अपराधू । बाल दोष गुन गनहिं न साधू ॥
 खर कुठार मैं अकरुन कोही । आगें अपराधी गुरुद्रोही ॥
 उतर देत छोड़उँ विनु मारें । केवल कौसिक सील तुम्हारें ॥
 न त एहि काटि कुठार कठोरें । गुरहि उरिन होतेउँ श्रम थोरें ॥

दो०—गाधिसूनु कह हृदयँ हँसि मुनिहि हरिअरइ सूझ ।

॥ अयमय खाँड़ न ऊखमय अजहुँ न वूझ अवूझ ॥२७५॥

लखन मुनि सीलु तुम्हारा । को नहिं जान विदित संसारा ॥
 ता पितहि उरिन भए नीकें । गुर रिनु रहा सोचु बड़ जीकें ॥
 सो जनु हमरेहि माथे काढ़ा । दिनचलि गए व्याज बड़ बाढ़ा ॥
 अब आनिअ व्यवहरिआ बोली । तुरत देउँ मैं थैली खोली ॥
 सुनि कटु बचन कुठार सुधारा । हाय हाय सब सभा पुकारा ॥
 भृगुवर परसु देखावहु मोही । विप्र विचारि बचउँ नृपद्रोही ॥
 मिले न कवहुँ सुभट रन गाढ़े । द्विज देवता घरहि के बाढ़े ॥
 अनुचित कहि सब लोग पुकारे । रघुपति सयनहिं लखनु नेवारो ॥

दो०—लखन उतर आहुति सरिस भृगुवर कोपु कसानु ।

वदत देखि जल सम बचन बोले रघुकुलभानु ॥२७६॥

नाथ करहु बालक पर छोह । सूध दूधमुख करिअ न कोह ।
 जौ पै प्रभु प्रभाउ कछु जाना । तौ कि वरावरि करत अयाना ।

षों लरिका कछु अचगरि करहीं । गुर पितु मातु मोद मन भरहीं ॥
 करिअ कृपा सिशु सेवक जानी । तुम्ह राम सील धीर गुनि ग्गानी
 राम घचन गुनि कछुक जुड़ाने । फदि कछु लखनु पदुरि सुगुफाने
 हँसत देखि नख सिख रिस न्यापी । राम तोर धाता पढ़ पापी ॥
 गौर सरीर स्वाम मन माहीं । फालकूटमुख पगमुख नाहीं ॥
 सहज टेंद अनुदरह न तोही । नीचु भीचु राम देख न मोही ॥
 दो०—सरान कहेउ हँसि सुनहु गुनि भेषु पाप कर गूरा ।

जेहि मस जन अनुभित करहि परहि बिल प्रतिपूत ॥२७७॥

भँ तुम्हार अनुचर सुनिराया । परिहरि फोषु करिअ अप दयागा ॥
 टूट चाप नहिं जुरिहि रिसाने । पँठिअ होइहि पाग पिराने ॥
 जों अति प्रिय तों करिअ उपाई । जोरिअ फोउ पढ़ गुनी मोलाई ॥
 मोलत लखनहिं जनकु छेराहीं । मए करहु अनुचिरा भल नाहीं ॥
 थर थर फाँपहिं पुर नर नारी । छोट कुमार खांट पढ़ भारी ॥
 भृगुपति गुनि गुनि निरभय पानी । रिग तन जरइ होइ पल दानी ॥
 मोले रामहि देइ निहोरा । घचउं विचारि पँधु लघु तोरा ॥
 मनु गलीन तनु सुंदर फेमें । बिप रस भरा फनक पदु जैमें ॥
 दो०—गुनि लछिमन बिहरो पदुरि गयन तरेरे राम ।

गुर समीप गयने राफुनि परिहरि पानी पाय ॥२७८॥

अति पिनीत गृह सीराल पानी । मोले रामु जोरि जुग पानी ॥
 गुनहु नाथ तुम्ह सहज गुजाना । फालक कषणु करिअ नहिं फाना
 पररे ॥ फालकू पकू गुभाऊ । इन्दहि न मंत विदुपहिं फाऊ ॥
 रोहिं नाहीं कछु फाज पिगारा । अपराभी शँ नाथ तुम्हारा ॥

तुम्ह तौ कालु हाँक जनु लावा । वार वार मोहि लागि बोलावा ॥
 सुनत लखन के वचन कठोरा । परसु सुधारि धरेउ कर घोरा ॥
 अब जनि देइ दोसु मोहि लोगू । कटुवादी बालकु बधजोगू ॥
 बाल विलोकि बहुत मै बाँचा । अब यहु मरनिहार भा साँचा ॥
 कौसिक कहा छमिअ अपराधू । बाल दोष गुन गनहि न साधू ॥
 खर कुठार मै अकरुन कोही । आगें अपराधी गुरुद्रोही ॥
 उतर देत छोड़उँ विनु मारें । केवल कौसिक सील तुम्हारें ॥
 न त एहि काटि कुठार कठोरें । गुरहि उरिन होतेउँ श्रम थोरें ॥

दो०—गाधिसूनु कह हृदयें हँसि मुनिहि हरिअरइ सूझ ।

अयमय खाँड़ न ऊखमय अजहुँ न बूझ अवूझ ॥२७५॥

हेउ लखन मुनि सीलु तुम्हारा । को नहिं जान विदित संसारा ॥
 ! ! पितहि उरिन भए नीकें । गुर रिनु रहा सोचु बड़ जीकें ॥
 सो जनु हमरेहि माथे काढ़ा । दिन चलि गए व्याज बड़ बाढ़ा ॥
 अब आनिअ व्यवहरिआ बोली । तुरत देउँ मै थैली खोली ॥
 सुनि कटु वचन कुठार सुधारा । हाय हाय सब सभा पुकारा ॥
 भृगुवर परसु देखावहु मोही । विप्र विचारि वचउँ नृपद्रोही ॥
 मिले न क्वहुँ सुभट रन गाढ़े । द्विज देवता घरहि के वाढ़े ॥
 अनुचित कहि सब लोग पुकारे । रघुपति सयनहिं लखनु नेवारे ॥

दो०—लखन उतर आहुति सरिस भृगुवर कोपु कसानु ।

बढ़त देखि जल सम वचन बोले रघुकुलभानु ॥२७६॥

नाथ करहु बालक पर छोहू । सूत्र दूधमुख करिअ न कोहू ॥
 जाँ पै प्रभु प्रभाउ कछु जाना । तौ कि वरावरि करत अग्राना ॥

जों लरिका कलु अचगरि करहीं । गुर पितु मातु मोद मन भरहीं ॥
 करिअ कृपा सिमु सेवक जानी । तुम्ह सम सील धीर मुनि ग्यानी
 राम वचन मुनि कलुक जुड़ाने । कहि कलु लखनु बहुरि मुसुकाने
 हँसत देखि नख सिख रिस व्यापी । राम तोर भ्राता बड़ पापी ॥
 गौर सरीर स्याम मन माहीं । कालकूटमुख पयमुख नाहीं ॥
 सहज टेढ़ अनुहरइ न तोही । नीचु मीचु सम देख न मोही ॥
 दो०—लखन कहेउ हँसि सुनहु मुनि कोषु पाप कर मूल ।

जहि बस जन अनुचित करहिं चरहिं विस्व प्रतिफूल ॥२७७॥

में तुम्हार अनुचर मुनिराया । परिहरि कोषु करिअ अब दाया ॥
 टूट चाप नहिं जुरिहि रिसाने । बँठिअ होइहिं पाय पिराने ॥
 जों अति प्रिय ठौं करिअ उपाई । जोरिअ कोउ बड़ गुनी बोलाई ॥
 बोलत लखनहिं जनकु डेराहीं । मष्ट करहु अनुचित भल नाहीं ॥
 थर थर काँपहिं पुर नर नारी । छोट कुमार खोट बड़ भारी ॥
 भृगुपति मुनि सुनि निरभय बानी । रिस तन जरइ होइ बल हानी ॥
 बोले रामहिं टेढ़ निहोरा । बचउं विचारि बंधु लघु तोरा ॥
 मनु मलान तनु सुंदर कैसें । विष रस भरा कनक घडु जैसें ॥
 दो०—सुनि लछिमन विहसे बहुरि नयन तररे राम ।

गुर समीप गवने सकुचि परिहरि बानी चाम ॥२७८॥
 अति विनीत मृदु मीतल बानी । बोले रामु जोरि जुग पानी ॥
 सुनहु नाथ तुम्ह सहज मुजाना । बालक वचनु करिअ नहिं काना
 बरै ॥ बालक एक सुभाऊ । इन्हहिं न संत विदूषहिं काऊ ॥
 तेहिं नाहीं कलु काज विगारा । अपराधी मैं नाथ तुम्हारा ॥

कृपा कोपु बधु बंधव गोसाईं । मो पर करिअ दास की नाईं ॥
 कहिअ बेगि जेहि विधि रिस जाईं । मुनिनायक सोइ करौं उपाईं ॥
 कह मुनि राम जाइ रिस कैसें । अजहुँ अनुज तव चितव अनैसें
 एहि कें कंठ कुठारु न दीन्हा । तौ मैकाह कोपु करि कीन्हा ॥
 दो०—गर्भ स्रवहिं अवनिय रवनि सुनि कुठार गति घोर ।

परसु अछत देखउँ जिवत वैरी भूपकिसोर ॥२७९॥

बहइ न हाथु दहइ रिस छाती । भा कुठारु कुंठित नृपघाती ॥
 भयउ वाम विधि फिरेउ सुभाऊ । मोरे हृदय कृपा कसि काऊ ॥
 आजु दया दुखु दुसह सहावा । सुनि सौमित्रि विहसि सिरु नावा
 ७ कृपा मूरति अनुकूला । बोलत वचन झरत जनु फूला ॥
 पै कृपाँ जरिहिं मुनि गाता । क्रोध भएँ तनु राख विधाता ॥
 देखु जनक हठि बालकु एह । कीन्ह चहत जइ जमपुर गेह ॥
 बेगि करहु किन आँखिन्ह ओटा । देखत छोट खोट नृप ढोटा ॥
 विहसे लखनु कहा मन माहीं । भूदें आँखि कतहुँ कोउ नाहीं ॥
 दो०—परसुरामु तव राम प्रति बोले उर अति क्रोधु ।

संनु सरासनु तोरि तट करसि हमार प्रबोधु ॥२८०॥

बंधु कहइ कटु संमत तोरें । तू छल विनय करसि कर जोरें ॥
 करु परितोषु मोर संग्रामा । नाहिं त छाड़ कहाउव रामा ॥
 छलु तजि करहि समरु सिवद्रोही । बंधु सहित न त मारउँ तोही ॥
 भृगुपति बकहिं कुठार उटाएँ । मन मुसुकाहिं रामु सिर नाएँ ॥
 गुनह लखन कर हम पर रोषु । कतहुँ सुधाइहु ते बड़ दोषु ॥
 टेढ़ जानि सब बंदइ काह । बक्र चंद्रमहि ग्रसइ न राह ॥

कहेउ रिस तजिअ मुनीसा। कर कुठारु आगें यह सीसा ॥
हैं रिस जाइ करिअ सोइ स्वामी। मोहि जानिअ आपन अनुगामी

१०-प्रभुहि सेवकहि समरु कस तजहु विप्रवर रोसु।
बेषु विलोकें कहेसि कछु बालकह नहि दोसु ॥२८१॥
देखि कुठार वान धनु धारी। भँलरि कहि रिस वीरु विचारी ॥
नाम जान पै तुम्हहि न चीन्हा। वंम सुभायँ उतरु तेहि दीन्हा ॥
जैं तुम्ह औतेहु मुनि की नाई। पद रज मिर मिमु धरत गोसाईं
छमहु चूक अनजानत केरी। चाहिअ विप्र उर कृपा घनेरी ॥
हमहि तुम्हहि सरिवरि कसि नाथा। कहहु न कहाँ चरन कहँ माथा ॥
राम मात्र लघु नाम हमारा। परसु सहित बड़ नाम तोहारा ॥
देव एकु गुनु धनुष हमारें। नव गुन परम पुनीत तुम्हारें ॥
सब प्रकार हम तुम्ह सन हारे। छमहु विप्र अपराध हमारें ॥
श्री०-बार. बार मुनि विप्रवर कहा राम सन राम।
बोले भृंगुपति सरुप हसि तहँ वंशु सम पाम ॥२८२॥

निपटहि द्विज करि जानहि मोही। मैं जस विप्र सुनावउँ तोही ॥
चाप सुवा सर आहुति जानू। कोपु मोर अति घोर कृमानू।
समिधि सेन चतुरंग सुहाई। महा महीप भए परसु आई
मैं एहि परसु काटि बलि दीन्हे। समर जाग्य जप कोटिन्ह कीन्हे
मोर प्रभाउ विदित नहि तोरें। बोलसि निदरि विप्र के भोरे
भंजेउ चापु दापु बड़ बाड़ा। अहमिति मनहुँ जीति जगु ट
राम कहा मुनि कहहु विचारी। रिस अति बड़ि लघु चूक ह
अत्रतहि टूट पिनाक पुराना। मैं केहि हेतु करौं अभिम

दो०—जौं हम निदरहि विप्र वदि सत्य सुनहु भृगुनाथ ।

तौ अस को जग सुभटु जेहि भय बस नावहि साथ ॥२८३॥

देव दनुज भूपति भट नाना । समबल अधिक होउ बलवाना ॥

जौं रन हमहि पचारै कोऊ । लरहिं सुखेन कालु किन होऊ ॥

छत्रिय तनु धरि ससर सकाना । कुल कलंकु तेहिं पावर आना ॥

कहउं सुभाउ न कुलहि प्रसंसी । कालहु डरहिं न रन रघुवंसी ॥

विप्रवंस कै असि प्रभुताई । अभय होइ जो तुम्हहि डेराई ॥

सुनि मृदु गूढ वचन रघुपति के । उधरे पटल परसुधर मति के ॥

राम रमापति कर धनु लेह । खैचहु मिटै मोर संदेह ॥

देत चापु आपुहिं चलि गयऊ । परसुराम मन विसमय भयऊ ॥

दो०—जाना राम प्रभाउ तव पुलक प्रफुलित गात ।

जोरि पानि बोले वचन हृदयँ न प्रेमु अमात ॥२८४॥

जय रघुवंस वनज वन भानू । गहन दनुज कुल दहन कृसानू ॥

जय सुर विप्र धेनु हितकारी । जय मद मोह कोह भ्रम हारी ॥

विनय सील करुना गुन सागर । जयति वचन रचना अति नागरा ॥

सेवक सुखद सुभग सब अंगा । जय सरीर छवि कोटि अनंगा ॥

करौं काह मुख एक प्रसंसा । जय महेस मन मानस हंसा ॥

अनुचित बहुत कहेउं अग्याता । छमहु छमामंदिर दोउ आता ॥

कहि जय जय जय रघुकुलकेतू । भृगुपति गए वनहि तप हेतू ॥

अपभयँ कुटिल महीप डेराने । जहँ तहँ कायर गवँहि पराने ॥

दो०—देवन्ह दीन्हीं दुंदुभी प्रमु पर वरपहि फूल ।

हरपे पुर नर नारि सब मिटी मोहमय सूल ॥२८५॥

अति गहगहे वाजने वाजे । सवहिं मनोहर मंगल साजे ॥
 जूथ जूथ मिलि मुमुखि मुनयनीं । करहिं गान कल कोकिलवयनीं ॥
 मुखु विदेह कर वरनि न जाई । जन्मदरिद्र मनहुं निधि पाई ॥
 विगत प्रास भइ सीय मुखारी । जनु विघु उदयँ चकोरकुमारी ॥
 जनक कीन्ह कौसिकहि प्रनामा । प्रभु प्रसाद धनु भंजउ रामा ॥
 मांहि कृतकृत्य कीन्ह दुहुं भाई । अथ जो उचित मां कहिअ गोमाई ॥
 कह मुनि मुनु नरनाथ प्रवीना । रहा विवाहु चाप आधीना ॥
 टूटतहीं धनु भयउ विवाह । सुरनरनाग विदित मय काह ॥

दो०—तदापि जाइ तुम्ह करहु अब जया बंस व्यवहार ।

पूषि विप्र कुलवृद्ध गुर वेद विदित आचार ॥२८६॥

दूत अबधपुर पठवहु जाई । आनहिं नृप दसरथहि बोलाई ॥
 मुदित राउ कहि भलेहिं कृपाला । पठए दूत बोलि तेहि काला ॥
 यहुरि महाजन सकल बोलाए । आइ सवन्हि सादर सिर नाए ॥
 हाट घाट मंदिर पुरवासा । नंगरु सँवाराहु चारिहुं पासा ॥
 हरंपि चले निज निज गृह आए । पुनि परिचारक बोलि पठाए ॥
 रचहु विचित्र वितान घनाई । सिर धरि बचन चले सचु पाई ॥
 पठए बोलि शुनी तिन्ह नाना । जे वितान विधि कुसल मुजाना ॥
 विधिहि बंदि तिन्ह कीन्ह अरंभा । बिरचे कनरु कदलि के खंभा ॥

दो०—हरित मनिन्ह के पत्र फल पदुमराग के फूल ।

रचना देखि विचित्र अति मनु विरंचि कर मूल ॥२८७॥

बेनु हरित मनिमय सच कीन्हे । सरल सपरत्र प
 कनक कलित अहिवेलि घनाई । लखि नहिं "

तेहि के रचि पचि बंध बनाए । बिच बिच मुकुता दाम सुहाए ॥
 मानिक मरकत कुलिस पिरोजा । चीरि कोरि पचि रचे सरोजा ॥
 किए भृंग बहुरंग बिहंगा । गुंजहिं कूजहिं पवन प्रसंगा ॥
 सुर प्रतिमा खंभन गढ़ि काढ़ीं । मंगल द्रव्य लिएँ सब ठाढ़ीं ॥
 चौकें भाँति अनेक पुराई । सिंधुर मनिमय सहज सुहाई ॥

दो०—सौरभ पल्लव सुभग सुठि किए नीलमनि कोरि ।

हेम बौर मरकत घवरि लसत पाटमय डोरि ॥२८८॥

रचे रुचिर वर बंदनिवारे । मनहुँ मनोभवेँ फंद सँवारे ॥
 मंगल कलस अनेक बनाए । ध्वज पताक पट चमर सुहाए ॥
 दीप मनोहर मनिमय नाना । जाइ न वरनि बिचित्र विताना ॥
 जेहिं मंडप दुलहिनि बैदेही । सो वरनै असि मति कवि केही ॥
 दूलहु रामु रूप गुन सागर । सो वितानु तिहुँ लोक उजागर ॥
 जनक भवन केँ सोभा जैसी । गृह गृह प्रति पुर देखिअ तैसी ॥
 जेहिं तेरहुति तेहि समय निहारी । तेहि लघु लगहिं भुवन दस चारी ॥
 जो संपदा नीच गृह सोहा । सो विलोकि सुरनायक मोहा ॥

दो०—वसइ नगर जेहिं लच्छि करि कपट नारि धर त्रेपु ।

तेहि पुर केँ सोभा कहत सकुचहि सारद त्रेपु ॥२८९॥

पहुँचै दूत राम पुर पावन । हरषे नगर विलोकि सुहावन ॥
 भूप द्वार तिन्ह खवरि जनाई । दसरथ नृप सुनि लिएँ बोलाई ॥
 करि प्रनामु तिन्ह पाती दीन्ही । मुदित महीप आपु उठि लीन्ही ॥
 वारि विलोचन बाँचत पाती । पुलक गात आई भरि छाती ॥
 रामु लखनु उर कर वर चीठी । रहि गए कहत न खाटी मीठी ॥

तेहि के रचि पचि बंध बनाए । विच विच मुकुता दाम सुहाए
 मानिक मरकत कुलिस पिरोजा । चीरि कोरि पचि रचे सरोजा
 किए भृंग बहुरंग विहंगा । गुंजहिं कूजहिं पवन प्रसंगा
 सुर प्रतिमा खंभन गढ़ि काढ़ीं । मंगल द्रव्य लिएँ सब ठाढ़ीं
 चौकें भाँति अनेक पुराईं । सिंधुर मनिमय सहज सुहाईं
 दो०—सौरभ पल्लव सुभग सुठि किए नीलमनि कोरि ।

हेम चौर मरकत घवरि लसत पाटमय डोरि ॥२८०

रचे रुचिर बर वंदनिवारे । मनहुँ मनोभवं फंद सँवारे
 मंगल कलस अनेक बनाए । ध्वज पताक पट चमर सुहाए
 दीप मनोहर मनिमय नाना । जाइ न वरनि विचित्र विताना
 जेहिं मंडप दुलहिनि वैदेही । सो वरनै असि मति कबि केही
 दूलहु रामु रूप गुन सागर । सो वितानु तिहुँ लोक उजागर
 जनक भवन केँ सोभा जैसी । गृह गृह प्रति पुर देखिअ तैसी
 जेहिं तेरहुति तेहि समय निहारी । तेहि लघु लगहिं भुवन दस च
 जो संपदा नीच गृह सोहा । सो विलोकि सुरनायक मोह
 दो०—वसइ नगर जेहिं लच्छि करि कपट नारि वर वेषु ।

तेहि पुर केँ सोभा कहत सकुचहि सारद सेषु ॥२८१

पहुँचे दूत राम पुर पावन । हरषे नगर विलोकि सुहावन
 भूप द्वार तिन्ह खवरि जनाई । दसरथ नृप सुनि लिए बोला
 करि प्रनामु तिन्ह पाती दीन्ही । मुदित महीप आपु उठि लीन्ही
 वारि विलोचन बाँचत पाती । पुलक गात आई भरि छार्ती
 रामु लखनु उर कर बर चीठी । रहि गए कहत न खाटी मीठी

पुनि धरि धीर पत्रिका बाँची । हरपी सभा वात मुनि साँची ॥
 खेलत रहे तहाँ मुधि पाई । आए भरतु सहित हित भाई ॥
 पूछत अति सनेहँ सकुचाई । तात कहाँ तें पाती आई ॥

दो०—कुसल प्रानप्रिय बंधु दोउ अहहि कहहु केहिँ देस ।

मुनि सनेह साने वचन बाची बहुरि नरेंत ॥२९०॥

मुनि पाती पुलके दोउ आता । अधिक सनेहु समात न गाता ॥
 प्रीति पुनीत भरत केँ देखी । सकल सभाँ मुगु लहेउ विसेपी ॥
 तय नृप दूत निकट बँटारे । मधुर मनोहर वचन उचारे ॥
 भँआ कहहु कुसल दोउ वारे । तुम्ह नीकेँ निज नयन निहारे ॥
 स्वामल गौर धरें धनु भाधा । वय किसोर काँसिक मुनि साथ ॥
 पहिचानहु तुम्ह कहहु मुभाऊ । प्रेम विवस पुनि पुनि कह राऊ ॥
 जा दिन तें मुनि गए लवाई । तय तें आजु साँचि मुधि पाई ॥
 कहहु विदेह कवन विधि जाने । मुनि प्रिय वचन दूत मुमुकाने ॥

दो०—सुनहु महीपति मुकुट मनि तुम्ह सम घन्य न कोउ ।

रामु लखनु जिन्ह के तनय विस्व विभूषन दोउ ॥२९१॥

पूछन जोगु न तनय तुम्हारे । पुरुषसिंघ तिहु पुर उजिआरे ॥
 जिन्ह केँ जस प्रताप केँ आगे । ससि मलीन रवि सीतल लागे ॥
 तिन्ह कहँ कहिअ नाथ किमि चीन्हें । देखिअ रवि कि दीप कर लीन्हें ॥
 सीय स्वयंवर भूप अनेका । समिटे मुभट एक तें एका ॥
 संभु सरासनु काहुँ न टारा । हारे सकल वीर बरिआरा ॥
 तीनि लोक महँ जे भटमानी । सभ केँ सकति संभु धनु भानी ॥
 सकइ उठाइ सरासुर मेरु । सोउ हियँ हारि गयउ करि फेरु ॥

जेहि कौतुक सिवसैलु उठावा । सोउ तेहि सभाँ पराभउ पावा ।

दो०—तहाँ राम रघुवंस मनि सुनिअ महा नहिपाल ।

भंजेउ चाप प्रयास विनु जिमि गज पंकज नाल ॥२९२॥

सुनि सरोष भृगुनायकु आए । बहुत भाँति तिन्ह आँखि देखाए ।
देखिराम बलु निज धनु दीन्हा । करि बहु विनय गवनु बन कीन्हा
राजन रामु अतुलबल जैसेँ । तेज निधान लखनु पुनि तैसेँ ।
कंपहिं भूप बिलोकत जाकेँ । जिमि गज हरि किसोर के ताकेँ ।
देव देखि तव वालक दोऊ । अब न आँखि तर आवत कोऊ ।
दूत वचन रचना प्रिय लागी । प्रेम प्रताप वीर रस पागी ।
सभा समेत राउ अनुरागे । दूतन्ह देन निछावरि लागे ।
कहि अनीति ते मूदहिं काना । धरमु विचारि सबहिं सुखु माना ।

दो०—तव उठि भूप वसिष्ट कहूँ दीन्हि पत्रिका जाइ ।

कथा सुनाई गुरहि सब तांदर दूत बोलाइ ॥२९३॥

सुनि बोले गुर अति सुखु पाई । पुन्य पुरुष कहूँ महि सुख छाई ।
जिमि सरिता सागर महुँ जाहीं । जद्यपि ताहि कामना नाहीं ।
तिमि सुख संपति विनहिं बोलाएँ । धरमसील पहिं जाहिं सुभाएँ ।
तुम्ह गुर विप्र घेनु सुर सेवी । तसि पुनीत कौसल्या देवी ।
सुकृती तुम्ह समान जग माहीं । भयउ न है कोउ होनेउ नाहीं ।
तुम्ह ते अधिक पुन्य बड़ कतकेँ । राजन राम सरिस सुत जाकेँ ।
वीर विनीत धरम व्रत धारी । गुन सागर वर वालक चारी ।
तुम्ह कहूँ सर्व काल कल्याणा । सजहु वरात बजाइ निसाना ।

—चलहु बेगि सुनि गुर वचन भलेहि नाथ सिरु नाइ ।

भूपति गवने भवन तव दूतन्ह वासु देवाइ ॥२९४॥

जा सयु रनिवास बोलाई । जनक पत्रिका वाचि सुनाई ॥

नि संदेसु सकल हरपानी । अपर कथा सब भूप बखानी ॥

म प्रफुल्लित राजहि रानी । मनहुँ सिखिनि मुनि वारिद बानी

मुदित असीस देहि गुर नारी । अति आनंद मगन महतारी ॥

लेहि परस्पर अति प्रिय पाती । हृदयँ लगाइ जुड़ावहि छाती ॥

राम लखन कै कीरति करनी । वारहि वार भूपवर धरनी ॥

मुनि प्रसादु कहि द्वार सिधाए । रानिन्ह तव महिदेव बोलाए ॥

दिए दान आनंद समेता । चले विप्रवर आसिप देता ॥

सो०—जाचक लिए हँकारि दीन्हि निछवरि कोटि विधि ।

चिरु जीवहुँ सुत चारि चक्रवर्ति दसरत्य के ॥२९५॥

कहत चले पहिरे पट नाना । हरपि हनें गहगहे निसाना ॥

समाचार सब लोगन्ह पाए । लागे घर घर होन बधाए ॥

भुवन चारि दस भरा उछाह । जनकमुता रघुवीर बिआह ॥

मुनि मुभ कथा लोग अनुरागे । मग गृह गलीं सवारन लागे ॥

जद्यपि अवध सदैव सुहावनि । राम पुरी मंगलमय पावनि ॥

तदपि प्रीति कै प्रीति सुहाई । मंगल रचना रची बनाई ॥

घ्वज पताक पट चामर चारु । छाया परम विचित्र बजारु ॥

कनरु कलस तोरन मनिजाला । हरद दूध दधि अच्छटत माला ॥

दो०—पंगलमय निज निज भवन लोगन्ह रचे बनाइ ।

पीयी सीची चतुरसम चौके चारु पराइ ॥२९६॥

जहँ तहँ जूथ जूथ मिलि भामिनि।सजि नव सप्त सकल दुति दामिनि
विधुबदनीं मृग सावक लोचनि। निज सरूप रति मानु विमोचनि
गावहिं मंगल मंजुल बानीं। सुनि कल ख कलकंठि लजानीं
भूप भवन किमि जाइ बखाना। विख विमोहन रचेउ विताना ॥
मंगल द्रव्य मनोहर नाना। राजत वाजत विपुल निसाना ॥
कतहुँ विरिद बंदी उच्चरहीं। कतहुँ वेद धुनि भूसुर करहीं ॥
गावहिं सुंदरि मंगल गीता। लै लै नामु रामु अरु सीता ॥
बहुत उछाहु भवनु अति थोरा। मानहुँ उमगि चला चहु ओरा ॥

दो०—सोभा दसरथ भवन कइ को कवि बरनै पार।

जहाँ सकल सुर सीस मनि राम लीन्ह अवतार ॥२९७॥

भूप भरत पुनि लिए बोलाई। हय गय स्यंदन साजहु जाई ॥
चलहु बेगि रघुवीर बराता। सुनत पुलक पूरे दोउ भ्राता ॥
भरत सकल साहनी बोलाए। आयसु दीन्ह मुदित उठि धाए ॥
रचि रुचि जीन तुरग तिन्ह साजे। बरन बरन वर वाजि विराजे।
सुभग सकल सुठि चंचल करनी। अय इव जरत धरत पग धरनी।
नाना जाति न जाहिं बखाने। निदरि पवनु जनु चहत उड़ाने।
तिन्ह सब छयल भए असवारा। भरत सरिस बय राजकुमारा।
सब सुंदर सब भूषनधारी। कर सर चाप तून कटि भारी।

दो०—छरे छबीले छयल सब सूर सुजान नबीन।

जुग पदचर असवार प्रति जे असिकला प्रबीन ॥२९८॥

वाँधे विरद वीर रन गाढ़े। निकसि भए पुर बाहेर ठाढ़े।
फेरहिं चतुर तुरग गति नाना। हरपहिं सुनि सुनि पनव निसान

रथ सारथिन्ह विचित्र बनाए। ध्वज यत्नाक मनि भूपन लाए ॥
 चरै चारु किंकिनि घुनि करहीं। भानु जान मोभा अपहरहीं ॥
 सायंकरन अगनित हय होते। ते तिन्ह गथन्ह मागधिन्ह जाते ॥
 सुंदर सकल अलंकृत मोहें। जिन्हहि विलांकन घुनि मन मोहें
 जे जल चलहि थलहि की नाईं। टाप न बृह बेग अधिकाईं ॥
 अस्त्र सस्त्र सयु साजु बनाईं। रथी सारथिन्ह लिए बोलार्थ ॥

श्लो०—चदि चदि रथ बाहेर नगर लागी जुगन बगल ।

होत सगुन सुंदर सबहि जो जेहि कागज जात ॥२९९॥

कलित करिषरन्धि परीं अँवारीं। कहिन जाहिं जेहि भाँति मँवारीं
 चले मत्त गज घंटा विराजी। मनहुँ सुभग सावन घन राजी ॥
 शहन अपर अनेक विधाना। सित्रिका सुभग सुग्वासन जाना
 तिन्ह चदि चले विप्रवर घंटा। जनु तनु धरें सकल श्रुति छंटा ॥
 मागध घत घंदि गुनगायक। चले जान चदि जो जेहि लायक ॥
 वेसर ऊँट वृषभ बहु जाती। चले वस्तु भरि अगनित भाँती ॥
 कोटिन्ह काँवरि चले कहारा। विविध वस्तु को बरन पारा ॥
 चले सकल सेवक समुदाईं। निज निज साजु समानु बनाईं ॥

श्लो०—सब के उर निर्भर हरषु पूरित पुटक सरीर ।

कवहिं देखिये नयन भरि रामु लखनु दोउ वीर ॥३००॥

गरजहिं गज घंटा घुनि घोरा। रथ स्व बाजि हिंस चहु ओरा ॥
 निदरि घनहि घुर्मरहिं निमाना। निज पराइ कलु सुनिअ न काना
 महा भीर भूपति के द्वारें। रज होइ जाइ पपान पवारें ॥
 चढ़ी अटारिन्ह देखहिं नारीं। लिए आरती मंगल थारीं

गावहिं गीत मनोहर नाना । अति आनंदु न जाइ बखाना ॥
 तव सुमंत्र दुइ स्यंदन साजी । जोते रवि हय निदक बाजी ॥
 दोउ रथ रुचिर भूप पहिं आने । नहिं सारद पहिं जाहिं बखाने ॥
 राज समाजु एक रथ साजा । दूसर तेज पुंज अति भ्राजा ॥

दो०—तेहिं रथ रुचिर बसिष्ठ कहूँ हरषि चढ़ाइ नरेसु ।

आपु चढ़ेउ स्यंदन सुमिरि हर गुर गौरि गनेसु ॥३०१॥

सहित बसिष्ठ सोह नृप कैसैं । सुर गुर संग पुरंदर जैसैं ॥
 करि कुल रीति वेद विधि राऊ । देखि सवहि सब भाँति बनाऊ ॥
 सुमिरि रामु गुर आयसु पाई । चले महीपति संख बजाई ॥
 हरषे विबुध विलोकि वराता । बरपहिं सुमन सुमंगल दाता ॥
 भयउ कोलाहल हय गय गाजे । व्योम वरात बाजने बाजे ॥
 सुर नर नारि सुमंगल गाई । सरस राग बाजहिं सहनाई ॥
 घंट घंटी धुनि वरनि न जाहीं । सरव करहिं पाइक फहराहीं ।
 करहिं विदूषक कौतुक नाना । हास कुसल कल गान सुजाना ।

दो०—नुरग नचावहिं कुअँर वर अकनि मृदंग निसान ।

नागर नट चितवहिं चकित डगहिं न ताल बँधान ॥३०२॥

वनइ न वरनत वनी वराता । होहिं सगुन सुंदर सुभदाता ।
 चारा चापु वाम दिसि लेई । मनहुँ सकल मंगल कहि देई ।
 दाहिन काग सुखेत सुहावा । नकुल दरसु सब काहुँ पावा ॥
 सानुकूल वह त्रिविध बयारी । सघट सवाल आव बर नारी ॥
 लोवा फिरि फिरि दरसु देखावा । सुरभी सनमुख सिसुहि पिआवा
 मृगमाला फिरि दाहिनि आई । मंगलगन जनु दीन्हि देखाई ॥

छेमकरी कह छेम विसेपी । स्यामा वाम मुतरु पर देखी ॥
सनमुख आयउद्धि अरु मीना । कर पुन्तक दृइ विप्र प्रवीना ॥

दो०—मंगलमय कल्याणमय अभिमत फल दातार ।

अनु सब साचे होन हित भए सगुन एक वार ॥३३०॥

मंगल सगुन सुगम सब ताके । सगुन ब्रह्म सुंदर सुत जाके ॥
राम सरिस बरु दुलहिनि सीता । समधी दसरथु जनक पुनीता ॥
मुनि अस व्याहु सगुन सब नाचे । अब कीन्हे विरंचि हम साँचे ॥
एहि विधि कीन्हे घरात पयाना । हय गय गाजहिं हने निसाना ॥
आगत जानि भानुकुल केतू । सरितन्हि जनक बंधाए सेतू ॥
बीच बीच घर घास बनाए । सुरपुर सरिस संपदा छाए ॥
असन सयन बर वसन मुहाए । पावहिं सब निज निज मन भाए ॥
नित नूतन मुख लखि अनुकूले । सकल यरातिन्ह मंदिर भूले ॥

दो०—आगत जानि घरात बर सुनि गहगहे निसान ।

सजि गज रथ पदचर तुरग लेन चले अगवान ॥३०४॥

मासपारायण, दसवाँ विश्राम

कनक कलस भरि कोपर थारा । भाजन ललित अनेक प्रकारा ॥
भरे मुधासम सब पकवाने । नाना भाँति न जाहिं बखाने ॥
फल अनेक बर वस्तु मुहाई । हरपि भेंट हित भूप पठाई ॥
भूपन वसन महामनि नाना । खग मृग हय गय बहुविधि जाना ॥
मंगल सगुन सुगंध मुहाए । बहुत भाँति महिपाल पठाए ॥
दधि चिउरा उपहार अपारा । भरि भरि काँवरि चले कहारा ॥

अगवानन्ह जब दीखि बराता । उर आनंदु पुलक भर गाता ॥
देखि बनाय सहित अगवाना । मुदित बरातिन्ह हने निमाना ॥

दो०—हरषि परसपर मिलन हित कछुक चले वगमेल ।

जनु आनंद समुद्र दुइ मिलत विहाइ सुबेल ॥३०५॥

बरषि सुमन सुर सुंदरि गावहिं । मुदित देव दुंदुभीं बजावहिं ॥
बस्तु सकल राखीं नृप आगें । विनय कीन्हि तिन्ह अति अनुरागें
प्रेम समेत रायँ सबु लीन्हा । भै बकसीस जाचकन्हि दीन्हा ॥
करि पूजा मान्यता बड़ाई । जनवासे कहँ चले लवाई ॥
बसन विचित्र पाँवड़े परहीं । देखि धनदु धन महु परिहरहीं ॥
अति सुंदर दीन्हेउ जनवासा । जहँ सब कहँ सब भाँति सुपासा ॥
जानी सियँ बरात पुर आई । कछु निज महिमा प्रगटि जनाई ॥
हृदयँ सुमिरि सब सिद्धि बोलाई । भूप पहुनई करन पठाई ॥

दो०—सिधि सब सिय आयसु अकनि गई जहाँ जनवास ।

लिँएँ संपदा सकल सुख सुरपुर भोग विलास ॥३०६॥

निज निज वास बिलोकि बराती । सुरसुख सकल सुलभ सब भाँती
विभव भेद कछु कोउ न जाना । सकल जनक कर करहिं बखाना ॥
सिय महिमा रघुनायक जानी । हरषे हृदयँ हेतु पहिचानी ॥
पितु आगमनु सुनत दोउ भाई । हृदयँ न अति आनंदु अमाई ॥
सकुचन्ह कहि न सकत गुरु पाहीं । पितु दरसन लालचु मन माहीं ॥
विस्वामित्र विनय बड़ि देखी । उपजा उर संतोषु बिसेषी ॥
हरषि बंधु दोउ हृदयँ लगाए । पुलक अंग अंबक जल छाए ॥
चले जहाँ दसरथु जनवासे । मनहुँ सरोवर तकेउ पिआसे ॥

जनक सुकृत मूरति वैदेही । दसरथ सुकृत राम धरें देही ॥
 इन्ह सम काहुँ न सिव अवराधे । काहुँ न इन्ह समान फल लाधे ॥
 इन्ह सम कोउ न भयउ जग माहीं । है नहिं कतहुँ होनेउ नाहीं ॥
 हम सब सकल सुकृत कै रासी । भए जग जनमि जनक पुर वासी ॥
 जिन्ह जानकी राम छवि देखी । को सुकृती हम सरिस विसेपी ॥
 पुनि देखव रघुवीर विआहू । लेव भली विधि लोचन लाहू ॥
 कहहिं परसपर कोकिलवयनीं । एहि विआहँ बड़ लाभु सुनयनीं ॥
 वड़ें भाग विधि वात बनाई । नयन अतिथि होइहहिं दोउ भाई ॥

दो०—बारहिं वार सनेह बस जनक बोलाउव सीय ।

लेन आइहहिं बंधु दोउ कोटि काम कमनीय ॥३१०॥

विविध भाँति होइहि पहुनाई । प्रिय न काहि अस सासुर माई ॥
 तव तव राम लखनहि निहारी । होइहहिं सब पुर लोग सुखारी ॥
 सखि जस राम लखन कर जोटा । तैसेइ भूप संग दुइ ढोटा ॥
 स्याम गौर सब अंग सुहाए । ते सब कहहिं देखि जे आए ॥
 कहा एक मैं आजु निहारे । जनु विरंचि निज हाथ सँवारे ॥
 भरतु रामही की अनुहारी । सहसालखि न सकहिं नर नारी ॥
 लखनु सत्रुसदनु एकरूपा । नख सिख ते सब अंग अनूपा ॥
 मन भावहिं मुख वरनि न जाहीं । उपमा कहूँ त्रिभुवन कोउ नाहीं ॥

छं०—उपमा न कोउ कह दास तुलसी कतहुँ कवि कोविद कहैं ।

बल विनय विद्या सील सोभा सिंधु इन्ह से एइ अहैं ॥

पुर नारि सकल पसारि अंचल विधिहि वचन सुनावहीं ।

व्याहिअहुँ चारिउ भाइ एहिं पुर हम सुमंगल गावहीं ॥

सुरन्ह सुमंगल अवसरु जाना । वरषहिं सुमन बजाइ निसाना ॥
 सिव ब्रह्मादिक विबुध वरूथा । चढ़े विमानन्हि नाना जूथा ॥
 प्रेम पुलक तन हृदयँ उछाहू । चले विलोकन राम विआहू ॥
 देखि जनकपुरु सुर अनुरागे । निज निज लोक सवहिं लघु लागे ॥
 चितवहिं चकित विचित्र विताना । रचना सकल अलौकिक नाना ॥
 नगर नारि नर रूप निधाना । सुघर सुधरम सुसील सुजाना ॥
 तिन्हहि देखि सव सुर सुरनारीं । भए नखत जनु विधु उजिआरीं ॥
 विधिहि भयउ आचरजु विसेपी ; निज करनी कछु कतहुँ न देखी ॥

दो०—सिवँ समुझाए देव सव जनि आचरज मुलाहु ।

हृदयँ विचारहु धीर धरि सिय रघुवीर विआहु ॥ ३१४ ॥

जिन्ह कर नामु लेत जग माहीं । सकल अमंगल मूल नसाहीं ॥
 करतल होहिं पदारथ चारी । तेइ सिय रामु कहेउ कामारी ॥
 एहि विधि संभु सुरन्ह समुझावा । पुनि आगें वर वसह चलावा ॥
 देवन्ह देखे दसरथु जाता । महामोद मन पुलकित गाता ॥
 साधु समाज संग महिदेवा । जनु तनु धरें करहिं सुख सेवा ॥
 सोहत साथ सुभग सुत चारी । जनु अपवरग सकल तनुधारी ॥
 मरकत कनक वरन वर जोरी । देखि सुरन्ह भै प्रीति न थोरी ॥
 पुनि रामहि विलोकि हियँ हरषे । नृपहि सराहि सुमन तिन्ह वरषे ॥

दो०—राम रूपु नख सिख सुभग वारहिं वार निहारि ।

पुलक गात लोचन सजल उमा समेत पुरारि ॥ ३१५ ॥

केकि कंठ दुति स्यामल अंगा । तड़ित विनिंदक वसन सुरंगा ॥
 व्याह विभूषन विविध बनाए । मंगल सव सव भाँति सुहाए ॥

सरद त्रिमल विधु बदन सुहावन । नयन नवल राजीव लजावन ॥
 सकल अलौकिक सुंदरआई । कहि न जाइ मनहीं मन भाई ॥
 बंधु मनोहर सोहहि संगी । जात नचावत चपल तुरंगा ॥
 राजकुअर वर बाजि देखावहिं । बंस प्रसंसक विरिद गुनावहिं ॥
 जेहि तुरंग पर रामु विराजे । गति विलोकि खगनायकु लाजे ॥
 कहि न जाइ सय भाँति सुहावा । बाजि वेषु जनु काम बनावा ॥

छं०—अनु बाजि वेषु बनाइ मनसिजु राम हित अति सोहई ।
 आपनें वय बल रूप गुन गति सकल भुवन विमोहई ॥
 जगमगत ओनु जराय जोति सुमांति मनि मानिक लगें ।
 किंकिनि ललाम लगामु ललित विलोकि मुर नर मुनि टगे ॥

दो०—प्रमु मनसहि लयलोचन मनु चलत बाजि छवि पाव ।
 भूपित उड़गन तडित धनु जनु वर बरहि नचाय ॥ ३१६ ॥
 जेहि वर बाजि रामु असवारा । तेहि सारदउ न बरन पारा ॥
 संकरु राम रूप अनुरागे । नयन पंचदस प्रतिप्रिय लागे ॥
 हरि हित सहित रामु जय जोहे । रमा समेत रमापति मोहे ॥
 निरखि राम छवि विधि हरपाने । आठइ नपन जानि पछिताने ॥
 मुर सेनप उर बहुत उछाह । विधि ते डेवइ लोचन लाह ॥
 रामहि चितव मुरेस मुजाना । गाँतम थापु परम हित माना ॥
 देव सकल मुरपतिहि सिहाहीं । आजु पुरंदरसम कोठ नाहीं ॥
 मुदित देवगन रामहि देखी । नृपसमाज दुहुँ हरपु विसेपी ॥

छं०—अति हरपु राजसमाज दुहु दिसि दुंदुभी बाजहिं धनी ।
 वरपहिं सुमन मुर हरपि कहि जय जयति जय रघुकुलमनी ॥

एहि भाँति जानि वरात आवत वाजने बहु बाजहीं ।

रानी सुआसिनि वोलि परिछनि हेतु मंगल साजहीं ॥

दो०—सजि आरती अनेक विधि मंगल सकल सँवारि ।

चलीं मुदित परिछनि करन गजगामिनि बर नारि ॥३१७॥

विधुवदनीं सब सब मृगलोचनि । सब निज तन छत्रि रति मट्टु मोचनि

पहिरेँ बरन बरन बर चीरा । सकल विभूषन सजैँ सरीरा ॥

सकल सुमंगल अंग बनाएँ । करहिँ गान कलकंठि लजाएँ ॥

कंकन किंकिनि नूपुर बाजहिँ । चालि बिलोकि काम गज लाजहिँ

बाजहिँ वाजने विविध प्रकारा । नभ अरु नगर सुमंगलचारा ॥

सची सारदा रमा भवानी । जे सुरतिय सुचि सहज सयानी ॥

कपट नारि बर वेष बनाई । मिलीं सकल रनिवासहिँ जाई ॥

करहिँ गान कल मंगल बानीं । हरष विवस सब काहुँ न जानीं ॥

छं०—को जान केहि आनंद वस सब ब्रह्म बर परिछन चली ।

कल गान मधुर निसान वरपहिँ सुमन सुर सोभा भली ॥

आनंदकंदु बिलोकि दूलहु सकल हियँ हरषित भई ।

अंभोज अंबक अंबु उमगि सुअंग पुलकावलि छई ॥

दो०—जो सुखु भा सिय मातु मन देखि राम बर वेषु ।

सो न सकहिँ कहि कल्प मत सहस सारदा सेपु ॥३१८॥

नयन नीरु हटि मंगल जानी । परिछनि करहिँ मुदित मन रानी ॥

वेद विहित अरु कुल आचारु । कीन्ह भली विधि सब व्यवहारु ॥

पंच सबद धुनि मंगल गाना । पट पाँवड़े परहिँ विधि नाना ॥

करि आरती अरघु तिन्ह दीन्हा । राम गमनु मंडप तब कीन्हा ॥

दसरथु सहित समाज विराजे । विभव विलोकि लोकपति लाजे ॥
समयँ समयँ मुर वरपहिं फूला । सांति पढ़हिं महिमुर अनुकूला ॥
नभ अरु नगर कोलाहल होई । आपनि पर कछु सुनइ न कोई ॥
एहि विधि रामु मंडपहिं आए । अरघु देइ आसन बैठाए ॥

छं०—बैठारि आसन आरती करि निरखि घरु सुगु पावहीं ।
मनि घसन गुपन भूरि चारहिं नारि मंगल गावहीं ॥
मन्नादि सुरवर विप्र येव धनाइ कौतुक देखहीं ।
अल्लोकिरघु कुल कमल रवि छवि सुफल जीवन लेखहीं ॥

दो०—नाऊ चारी भाट नट राम निछावरि पाइ ।
मुदित असीसहिं नाइ सिर हरपु न हृदयँ समाइ ॥२१॥

मिले जनकु दसरथु अति प्रीतीं । करि वैदिक लौकिक सब रीतीं ॥
मिलत महा दोउ राज विराजे । उपमा खोजि खोजि कवि लाजे ॥
लही न कतहुँ हारि हियँ मानी । इन्ह सम एइ उपमा उर आनी ॥
सामध देखि देव अनुरागे । सुमन वरपि जसु गावन लागे ॥
जगु विरंचि उपजावा जव तैं । देखे सुने ब्याह बहु तव तैं ॥
सकल भाँति सम साजु समाजू । सम समधी देखे हम आजू ॥
देव गिरा मुनि सुंदर साँची । प्रीति अलौकिक दुहुँ दिसि माची ॥
देत पाँवड़े अरघु मुहाए । सादर जनकु मंडपहिं ल्याए ॥

छं०—मंडपु विलोकि विचित्र रचनों रुचिरतों मुनि मन हरे ।
निज पानि जनक सुजान सब कहुँ आनि सिंघासन धरे ॥
कुल इष्ट सरिस बसिष्ट पूजे विनय करि आसिप लही ।
कौंसिकहिं पूजत परम प्रीति किरीति तो न परे कही ॥

दो०—बामदेव आदिक रिषय पूजे मुदित महीस ।
दिए दिव्य आसन सवहि सब सन लही असीस ॥३२०॥

बहुरि कीन्हि कोसलपति पूजा । जानि ईस सम भाउ न दूजा ।
कीन्हि जोरि कर विनय वड़ाई । कहि निज भाग्य विभव बहुताई ।
पूजे भूपति सकल बराती । समधी सम सादर सब भाँती ॥
आसन उचित दिए सब काहू । कहौं काह मुख एक उछाहू ॥
सकल वरात जनक सनमानी । दान मान विनती बर वानी ॥
विधि हरि हरु दिसिपति दिनराऊ । जे जानहिं रघुवीर प्रभाऊ ॥
कपट विप्र बर वेप बनाएँ । कौतुक देखहिं अति सच्चु पाएँ ॥
पूजे जनक देव सम जानें । दिए सुआसन बिनु पहिचानें ॥

छं०—पहिचान को केहि जान सवहि अपान सुधि भोरी भई ।

आनहु कंडु विलोकि दूलहु उभय दिसि आनँदमई ॥

सुर लखे राम सुजान पूजे मानसिक आसन दए ।

अवलोकि सीलु सुभाउ प्रभु को विवुध मन प्रमुदित भए ॥

दो०—रामचंद्र मुख चंद्रु छवि लोचन चारु चकोर ।

करत पान सादर सकल प्रेमु प्रमोदु न थोर ॥३२१॥

समउ विलोकि वसिष्ठ बोलाए । सादर सतानंदु सुनि आए ॥

गि कुअँरि अब आनहु जाई । चले मुदित मुनि आयसु पाई ॥

नी सुनि उपरोहित वानी । प्रमुदित सखिन्ह समेत सयानी ॥

प्र बधू कुलवृद्ध बोलाई । करि कुल रीति सुमंगल गाई ॥

रि वेप जे सुर बर बामा । सकल सुभायँ सुंदरी स्यामा ॥

हहि देखि सुखु पावहिं नारीं । बिनु पहिचानि प्रानहु ते प्यारीं ॥

वार वार सनमानहिं रानी। उमा रमा सारद सम जानी ॥
सीय सँवारि समाजु बनाई। मुदित मंडपहिं चलीं लवाई ॥

छं०—चलि ल्याइ सीतहिं सखीं सादर सजि सुमंगल भामिनी।
नवसप्त साजे सुंदरीं सब मत्त कुंजर गामिनी ॥
फल गान मुनि मुनि ध्यान त्यागहिं काम कोकिल लाजहीं।
मंजीर नूपुर कलित कंकन ताल गति बर वाजहीं ॥

दो०—सोहति यनिता वृंद महुँ सहज सुहावनि सीय।
छवि ललना गन मध्य जनु सुपमा तिय कमनीय ॥३२२॥

सिय सुंदरता बरनि न जाई। लघु मति बहुत मनोहरताई ॥
आशत दीखि बरातिन्ह सीता। रूप रासि सब भाँति पुनीता ॥
सबहिं मनहिं मन किए प्रनामा। देखि राम भए पूरनकामा ॥
हरपे दसरथ सुतन्ह समेता। कहिन जाइ उर आनँदु जैता ॥
सुर प्रनामु करि बरिसहिं फूला। मुनि असीस धुनि मंगल मूला ॥
गान निसान कोलाहलु भारी। प्रेम प्रमोद मगन नर नारी ॥
एहि विधि सीय मंडपहिं आई। प्रमुदित सांति पढ़हिं मुनिराई ॥
तेहि अवसर कर विधि व्यवहारू। दुहुँ कुलगुर सब कीन्ह अचारू ॥

छं०—आचारु करि गुर गौरि गनपति मुदित विप्र पुजावहीं।
सुर प्रगटि पूजा लेहिं देहिं असोस अति सुखु पावहीं ॥
मधुपर्क मंगल द्रव्य जो जेहि समय मुनि मन महुँ चहैं।
भरे फनक कोपर फलस सो तब लिएहिं परिचारक रहैं ॥ १ ॥
कुल रीति प्रीति समेत रवि कहिं देत सबु सादर कियो।
एहि भाँति देव पुजाइ सीतहिं सुभग सिधासनु दियो ॥

सिय राम अवलोकनि परस्पर प्रेम्मे काहु न लखि परै ।

मन बुद्धि वर बानी अगोचर प्रगट कवि कैसें करै ॥ २

दो०—होम समय तनु घरि अनलु अति सुख आहुति लेहिं ।

बिप्र वेष घरि वेद सब कहि विवाह विधि देहिं ॥३२३

जनक पाटमहिषी जग जानी । सीय मातु किमि जाइ बखानी
सुजसु सुकृत सुख सुंदरताई । सब समेटि बिधि रची बनाई
समउ जानि मुनिवरन्ह बोलाई । सुनत सुआसिनि सादर ल्याई
जनक बाम दिसि सोह सुनयना । हिमगिरि संग बनी जनु मयना
कनक कलस मनि कोपर रुरे । सुचि सुगंध मंगल जल पूरे
निज कर मुदित रायँ अरु रानी । धरे राम के आगे आनी
पढ़हिं वेद मुनि मंगल बानी । गगनसुमन झरि अवसरु जानी
वरु विलोकि दंपति अनुरागे । पाय पुनीत पखारन लागे ।

छं०—लागे पखारन पाय पंकज प्रेम तन पुलकावली ।

नभनगर गाननिसान जय धुनि उमगि जनु चहुँदिसि चली ॥

जे पद सरोज मनोज अरि उर सर सदैव विराजहीं ।

जे सकृत सुमिरत विमलता मन सकल कलि मल भाजहीं ॥

जे परसि मुनिवनिता लही गति रही जो पातकमई ।

मकरंदु जिन्हको संभु सिर सुचिता अवधि सुर वरनई ॥

करि मधुप मन मुनि जोगिजन जे सेइ अभिमत गति लहैं ।

ते पद पखारत भाग्यभाजनु जनकु जय जय संव कहैं ॥

वर कुअँरि करतल जोरि साखोचारु दोउ कुलगुर करैं ।

भयो पानिगहनु विलोकि विधि सुर मनुज मुनि आनँद भरैं ॥

सुखमूल दूलहु देसि दंपति पुलक तन हुलस्यो हियो ।
 करि लोक वेद विधानु कन्यादानु नृपभूषन कियो ॥ ३ ॥
 हिमवंत जिमि गिरिजा महेसहि हरिहि श्री सागर दर्ई ।
 तिमि जनक रामहि सिय समरपी विस्व कल कीरति नई ॥
 प्यो करै विनय विदेहु कियो विदेहु मूरति सावैरी ।
 करि होमु विषिवत गाँठि जोरी होन लागी भावैरी ॥ ४ ॥

दो०—जय घुनि चंदी वेद घुनि मंगल गान निसान ।
 सुनि हरपहि चरपहि विबुध सुरतरु सुमन सुजान ॥३२४॥

कुअरु कुअरि कल भावैरि देहीं । नयन लाभु सब सादर लेहीं ॥
 जाइ न परनि मनोहर जोरी । जो उपमा कलु कहीं सो थोरी ॥
 राम सीय सुंदर प्रतिछाहीं । जगमगात मनि खंभन माहीं ॥
 मनहुँ मदन रति धरि बहु रूपा । देखत राम बिआहु अनूपा ॥
 दरस लालसा सकुच न थोरी । प्रगटत दुरत बहोरि बहोरी ॥
 भए मगन सब देखनिहारै । जनक समान अपान विसारे ॥
 प्रशुद्धित मुनिन्ह भावैरी फेरी । नेगसहित सब रीति निवेरी ॥
 राम सीय सिर सेंदुर देहीं । सोभा कहि न जाति विधि केहीं ॥
 अरुन पराग जलजु भरि नीकें । ससिहि भूप अहि लोभ अमी कें ॥
 बहुरि वसिष्ठ दीन्ह अनुसासन । बरु दुलहिनि बैठे एक आसन ॥

छं०—बैठे परासन रामु जानकि मुदित मन दसरथु भए ।

तनु पुलक पुनि पुनि देसि अपने सुहत सुरतरु फल नए ॥

भरि भुषन रहा उछाहु राम विचाहु भा सबहीं कहा ।

कैहि भौंति चरनि सिरात रसना एक यहु मंगलु महा ॥-

तव जनक पाइ वसिष्ठ आयसु व्याह साज सँवारि कै ।
 मांडवी श्रुतकीरति उरमिला कुअँरि लई हँकारि कै ॥
 कुसकेतु कन्या प्रथम जो गुन सील सुख सोभामई ।
 सब रीति प्रीति समेत करि सो व्याहि नृप भरतहि दर्ई ॥ २ ॥
 जानकी लघु भगिनी सकल सुंदरि सिरोमनि जानि कै ।
 सो तनय दीन्ही व्याहि लखनहि सकल विधि सनमानि कै ॥
 जेहि नामु श्रुतकीरति सुलोचनि सुमुखि सब गुन आगरी ।
 सो दर्ई रिपुसूदनहि भूपति रूप सील उजागरी ॥ ३ ॥
 अनुरूप वर दुलहिनि परस्पर लखि सकुच हियँ हरपहीं ।
 सब मुदित सुंदरता सराहहिँ सुमन सुर गन वरषहीं ॥
 पुंदरीं सुंदर वरन्ह सह सब एक मंडप राजहीं ।
 जनु जीव उर चारिउ अवस्था विभुन सहित विराजहीं ॥ ४ ॥

दो०—मुदित अवधपति सकल सुत वधुन्ह समेत निहारि ।

जनु पाए महिपाल मनि क्रियन्ह सहित फल चारि ॥३२५॥

जसि रघुवीर व्याह विधि वरनी । सकल कुअँर व्याहे तेहिँ करनी ॥
 कहि न जाइ कल्लु दाइज भूरी । रहा कनक मनि मंडपु पुरी ॥
 कंबल बसन विचित्र पटोरे । भाँति भाँति बहु मोल न थोरे ॥
 गजरथ तुरग दास अरु दासी । घेनु अलंकृत कामदुहा सी ॥
 बस्तु अनेक करिअ किमि लेखा । कहि न जाइ जानहिँ जिन्ह देखा ॥
 लोकपाल अवलोकि सिहाने । लीन्ह अवधपति सबु सुखु माने ॥
 दीन्ह जाचकन्हि जो जेहि भावा । उवरा सो जनवासेहिँ आवा ॥
 तब कर जोरि जनकु मृदु बानी । बोले सब बरात सनमानी ॥

०-सनमानि सकल बरात आदर दान विनय बड़ाइ कै ।
 प्रमुदित महा मुनि वृंद वंदे पूजि प्रेम लड़ाइ कै ॥
 सिरु नाइ देव मनाइ सब सन कहत कर संपुट किएँ ।
 सुर साधु चाहत भाउ सिंधु कि तोष जल अंजलि दिएँ ॥ १ ॥
 कर जोरि जनकु बहोरि बंधु समेत कोसलराय सों ।
 धोले मनोहर घयन सानि सनेह सील सुभाय सों ॥
 संबंध राजन रावरें हम बड़े अथ सब विधि भए ।
 एहि राज साज समेत सेरु जानिये विनु गय लए ॥ २ ॥
 ए दारिका परिचारिका करि पालिबी करुना नई ।
 अपराधु छमियो धोलि पठए बहुत हौं ढीठ्यो कई ॥
 पुनि भानुकुलमूपन सकल सनमान निधि समधी किए ।
 कहि जाति नहिं विनती परस्पर प्रेम परिपूरन हिए ॥ ३ ॥
 वृंदारका गन सुमन धरिसहि राउ जनवासेहि चले ।
 हुंदुभी जय धुनि वेद धुनि नभ नगर कौतूहल भले ॥
 तब सखी मंगल गान करत मुनीस आयसु पाइ कै ।
 दूलह हुलहिनिन्ह सहित सुंदरि चलीं कोहबर त्याइ कै ॥ ४ ॥

दो-पुनि पुनि रामहि चितव सिय सकुचति मनु सकुचै न ।
 हरत मनोहर मीन छवि प्रेम पिआसे नैन ॥३२६॥

मासपारायण, ग्यारहवाँ विश्राम

स्याम सरीरु सुभायँ मुहावन । सोभा कोटि मनोज लजावन ॥
 जावक जुत पद कमल मुहाए । मुनि मन मधुप रहत जिन्ह छाए ॥
 पीत पुनीत मनोहर धोती । हरति बालरवि दामिनि जोती ॥

कल किंकिनि कटि सूत्र मनोहर । बाहु विसाल विभूषण सुंदर ॥
 पीत जनेउ महाछवि देई । कर मुद्रिका चोरि चितु लेई ॥
 सोहत व्याह साज सब साजे । उर आयत उरभूषण राजे ॥
 पिअर उपरना काखासोती । दुहुँ आँचरन्हि लगे मनि मोती ॥
 नयन कमल कल कुंडल काना । वदनु सकल सौंदर्ज निधाना ॥
 सुंदर भृकुटि मनोहर नासा । भाल तिलकु रुचिरता निवासा ॥
 सोहत मौरु मनोहर माथे । मंगलमय मुकुता मनि गाथे ॥

छं०—गाथे महामनि मौर मंजुल अंग सब चित चोरहीं ।
 पुर नारि सुर सुंदरीं वरहि विलोकि सब तिन तोरहीं ॥ १ ॥
 मनि वसन भूषण वारि आरति करहि मंगल गावहीं ।
 सुर सुमन वरिसहि सूत मागध वंदि सुजसु सुनावहीं ॥ २ ॥
 कोहवरहि आने कुअँर कुअँरि सुआसिनिन्ह सुख पाइ कै ।
 अति प्रीति लौकिक रीति लागीं करन मंगल गाइ कै ॥
 लहकौरि गौरि सिखाव रामहि सीय सन सारद कहैं ।
 रनिवासु हास विलास रस वस जन्म को फलु सब लहैं ॥ ३ ॥
 निज पानि मनि महुँ देखिअति मूरति सुरूपनिधान की ।
 चालति न भुजवल्ली विलोकनि विरह भय वस जानकी ॥
 कौतुक विनोद प्रमोदु प्रेम न जाइ कहि जानहि अली ।
 वर कुअँरि सुंदर सकल सखीं लवाइ जनवासेहि चली ॥ ४ ॥
 तेहि समय सुनिअ असीस जहँतहँ नगर नभ आनँदु महा ।
 चिरु जिअहुँ जोरीं चारु चारुयो मुदित मत्त सबहीं कहा ॥
 जोगींद्र सिद्ध मुनीस देव विलोकि प्रभु दुंदुभि हनी ।
 चले हरषिवरषि प्रसून निज निज लोक जय जय जय भनी ॥ ५ ॥

दो०—सहित वधूटिन्ह कुअँर सत्र तव आप पितु पास ।

साँभा मंगल मोद भरि उमगेउ जनु जनवास ॥३२७॥

पुनि जेवनार भई बहु भाँती । पठए जनक बोलाइ बराती ॥

परन पाँवड़े बसन अनूपा । मुतन्ह समेत गवन कियो भूपा ॥

सादर सब के पाय पखारे । जथाजोगु पीढ़न्ह बँठारे ॥

धोए जनक अवधपति चरना । सीलु सनेहु जाइ नहिँ बरना ॥

बहुरि राम पद पंकज धोए । जे हर हृदय कमल महुँ गोए ॥

तीनिउ भाइ राम सम जानी । धोए चरन जनक निज पानी ॥

आमन उचित सबहि नृप दीन्हे । बोलि सूपकारी सब लीन्हे ॥

सादर लगे परन पनवारे । कलक कील मनि पान सँवारे ॥

दो०—सूपोदन सुरभी सरपि सुंदर स्वाडु पुनीत ।

छन महुँ सब के परसि गे चतुर सुआर विनीत ॥३२८॥

पंच कवल करि जेवन लागे । गारि गान सुनि अति अनुरागे ॥

भाँति अनेक परे पकवाने । सुधा सरिस नहिँ जाहिँ बखाने ॥

परसन लगे सुआर सुजाना । विंजन विविध नाम को जाना ॥

चारि भाँति भोजन विधि गार्ह । एक एक विधि बरनि न जाई ॥

छरस रुचिर विंजन बहु जाती । एक एक रस अगनित भाँती ॥

जेवँत देहिँ मधुर घुनि गारी । लै लै नाम पुरुष अरु नारी ॥

समय मुहावनि गारि विराजा । हँसत राउ सुनि सहित समाजा ॥

एहि विधि सबहीं भोजनु कीन्हा । आदर सहित आचमनु दीन्हा ॥

दो०—देइ पान पूजे जनक दसरथु सहित समाज ।

जनवासेहि गवने मुदित सकल भूप सिरताज ॥३२९॥

नित नूतन मंगल पुर माहीं । निमिष सरिस दिन जामिनि जाहीं
 वड़े भोर भूपतिमनि जागे । जाचक गुन गन गावन लागे ॥
 देखि कुअँर वर वधुन्ह समेता । किमि कहि जात मोदु मन जेता ॥
 प्रातक्रिया करि गे गुरु पाहीं । महाप्रमोदु प्रेमु मन माहीं ॥
 करि प्रनामु पूजा कर जोरी । बोले गिरा अमिअँ जनु बोरी ॥
 तुम्हरी कृपाँ सुनहु मुनिराजा । भयउँ आजु मैँ पूरनकाजा ॥
 अब सब विप्र बोलाइ गोसाईँ । देहु धेनु सब भाँति बनाईँ ॥
 सुनि गुर करि महिपाल वड़ाई । पुनि पठए मुनि वृंद बोलाई ॥
 दो०—वामदेउ अरु देवरिषि वालमीकि जाबालि ।

आए मुनिवर निकर तव कौसिकादि तपसालि ॥३३०॥

दंड प्रनाम सबहि नृप कीन्हे । पूजि सप्रेम वरासन दीन्हे ॥
 चारि लच्छ वर धेनु मगाईँ । कामसुरभि सम सील सुहाईँ ॥
 सब विधि सकल अलंकृत कीन्हीं । मुदित महिष महिदेवन्ह दीन्हीं
 करत विनय बहु विधि नरनाहू । लहेउँ आजु जग जीवन लाहू ॥
 पाइ असीस महीसु अनंदा । लिए बोलि पुनि जाचक वृंदा ॥
 कनक वसन मनि हय गय स्यंदन । दिए बूझि रुचि रविकुलनंदन ॥
 चले पढ़त गावत गुन गाथा । जय जय जय दिनकर कुल नाथा
 एहि विधि राम विआह उछाहू । सकइ न वरनि सहस मुख जाहू ॥
 दो०—वार वार कौसिक चरन सीसु नाइ कह राउ ।

यह सबु सुनि मुनिराज तव कृपा कटाच्छ पसाउ ॥३३१॥

सनेहु

विदा अ

। नृप सब भाँति सराह विभूती ॥

। राखहिँ जनकु सहित अनुरागा ॥

नित नूतन आदरु अधिकार्ई। दिन प्रति सहस भॉति पहुनार्ई॥
 नित नव नगर अनंद उलाहू। दसरथ गवनु सोहाइ न काहू॥
 बहुत दिवस बीते एहि भाँती। जनु सनेह रजु बंधे वराती॥
 कौसिक सतानंद तब जाई। कहा विदेह नृपहि समुझार्ई॥
 अब दसरथ कहँ आयसु देहू। जघपि छाड़ि न सकहु सनेहू॥
 भलेहिं नाथ कहि सचिव बोलाए। कहि जय जीव मीस तिन्ह नाए
 दो०—अवधनाथु चाहत चलन भीतर करहु जनाउ ।

भए प्रेमयस सचिव मुनि विप्र सभासद राउ ॥३३२॥

पुरवासी मुनि चलिहि वराता। बूझत विकल परस्पर वाता॥
 सत्य गवनु मुनि सब बिलखाने। मनहुँ साँझ सरमिज सकुचाने॥
 जहँ जहँ आवत बसे वराती। तहँ तहँ सिद्ध चला बहु भाँती॥
 विविध भाँति मेवा पकवाना। भोजन साजु न जाइ बखाना॥
 भरि भरि बसहँ अपार कहारा। पठई जनक अनेक सुसारा॥
 तुरग लाख रथ सहस पचीसा। सकल सँवारे नख अरु सीसा॥
 मत्त सहस दस सिंघुर साजे। जिन्हहि देखि दिसिकुंजर लाजे
 कनक बसन मनि भरि भरि जाना। महिर्षी धेनु वस्तु विधि नाना॥

दो०—दाइज अमित न सकिअ कहि दीन्ह विदेहँ बहोरि ।

जो अवलोकत लोकरपति लोक संपदा योरि ॥३३३॥

सबु समाजु एहि भाँति बनार्ई। जनक अवधपुर दीन्ह पठार्ई॥
 चलिहि वरात सुनत सब रानीं। विकल मीनगन जनु लघु पानीं॥
 पुनि पुनि सीय गोद करि लेहीं। देइ असीस सिखावनु देहीं॥
 होएहु संतत पियहि पिआरी। चिरुअहियात

सासु ससुर गुर सेवा करेहू । पति रुख लखि आयसु अनुसरेहू ।
 अति सनेह बस सखीं सयानी । नारि धरम सिखवहिं मृदु बानी ।
 सादर सकल कुअँरि समुझाई । रानिन्ह बार बार उर लाई ।
 बहुरि बहुरि भेटहिं महतारीं । कहहिं बिरंचि रचीं कत नारीं ।
 दो०—तेहि अवसर भाइन्ह सहित रामु भानु कुल केतु ।

चले जनक मंदिर मुदित विदा करावन हेतु ॥३३४॥

चारिउ भाइ सुभायँ सुहाए । नगर नारि नर देखन धाए ।
 कोउ कह चलन चहत हहिं आजू । कीन्ह विदेह विदा कर साजू ।
 लेहु नयन भरि रूपनिहारी । प्रिय पाहुने भूप सुत चारी
 को जानै केहिं सुकृत सयानी । नयन अतिथि कीन्हे विधि आनी
 मरनसीलु जिमि पाव पिऊपा । सुरतरु लहै जनम कर भूखा ।
 पाव नारकी हरिपदु जैसें । इन्ह कर दरसनु हम कहँ तैसें ।
 निरखि राम सोभा उर धरहू । निज मन फनि मूरति मनि करहू ।
 एहि विधि सबहि नयन फलु देता । गए कुअँर सब राज निकेता ।

दो०—रूप सिंधु सब बंधु लखि हरषि उठा रनिवासु ।

करहिं निछावरि आरती महा मुदित मन सासु ॥३३५॥

देखि राम छबि अति अनुरागीं । प्रेम बिबस पुनि पुनि पद लागीं ।
 रही न लाज प्रीति उर छाई । सहज सनेहु बरनि किमि जाई ।
 भाइन्ह सहित उबटि अन्हवाए । छरस असन अति हेतु जेवाँए ।
 बोले रामु सुअवसरु जानी । सील सनेह सकुचमय बानी ।
 राउ अवधपुर चहत सिधाए । विदा होन हम इहाँ पठाए ।
 मातु मुदित मन आयसु देहू । बालक जानि करब नित नेहू ।

मुनत बचन भिलखेउ रनिवाध । धोलि न सकहि प्रेमपस साध ॥
हृदयै लगाइ कुअरि सब लीन्ही । पतिन्ह सांपि विनती अति कीन्ही

छं०—अरि विनय सिय रामहि समरपो जोरि फर पुनि पुनि कहे ।
बलि जाउँ तात सुजान तुम्ह कहुं विदित गति राध की अहे ॥
परिवार पुरजन मोहि राजहि प्रानप्रिय सिय जानिषी ।
तुलसीस सीतु सनेहु लगि निज किं करो करि मानिषी ॥

सो०—तुम्ह परिपूरन काम जान सिरीमनि भावपिय ।
जन गुन गाहक राम दोष दहन कहनायतन ॥३३६॥

अस कहि रही चरन गहि रानी । प्रेम पंक जलु गिग ममानी ॥
सुनि सनेहसानी वर धानी । बहुविधि राम गारु मनमानी ॥
राम विदा भागत कर जांग । कोन्ह प्रनायु यहारि यहांग ॥
पाइ असीस बहुरि सिरु नई । भाइन्ह सहिन चले रचुराई ॥
भंडु मपुर मुरति उर आनी । भइं सनेह मिथिल मप मानी ॥
पुनि धीरजु धरि कुअरि हँकारि । वात वात भंडाई मरुमारी ॥
पहुंचावहि किरि मिलहि बहांग । बड़ी परम्पर प्राणि न धांग ॥
पुनि पुनि मिलतु सविन्ह विन्हाई । वात प्रच्छ त्रिभिधेनु मरुमारी ॥

दो०—येमविचम नर नारि सब मसिन्ह सहिन गनिगाम् ।
मानहुं कान्ह विन्हेनु कच्छो विरहे विषाम् ॥३३७॥

सुक सारिकर जलनरी बल्ल । कलह विद्वान्दिगाम् पदल्लः
व्याकुल कइदि क्यो बँदेडी । मुनिधंरु पांशुमरु कँरी
भए विबल मग मृग पाँइ मौरि । नरुत्र मृगा कँरी कँरी
बधु समेत बल्ल नरु बल्ल । कँरी कँरी कँरी कँरी

सीय विलोकिं धीरता भागी। रहे कहावत परम विरागी ॥
 लीन्हि रायँ उर लाइ जानकी। मिटी महामरजाद ग्यान की ॥
 समुझावत सब सचिव सयाने। कीन्ह विचारुन अवसर जाने ॥
 वारहिं वार सुता उर लाई। सजि सुंदर पालकीं मगाई ॥

दो०—प्रेमविवस परिवारु सवु जानि सुलगन नरेस ।

कुअँरि चढाई पालकिन्ह सुमिरे सिद्धि गनेस ॥३३८॥

बहुविधि भूप सुता समुझाई। नारिधरमु कुलरीति सिखाई ॥
 दासीं दास दिए बहुतेरे। सुचि सेवक जे प्रिय सिय केरे ॥
 सीय चलत व्याकुल पुरवासी। होहिं सगुन सुभ मंगल रासी ॥
 भूसुर सचिव समेत समाजा। संग चले पहुँचावन राजा ॥
 समय विलोकि वाजने वाजे। रथ गज वाजि बरातिन्ह साजे ॥
 दसरथ विप्र बोलि सब लीन्हे। दान मान परिपूरन कीन्हे ॥
 चरन सरोज धूरि धरि सीसा। मुदित महीपति पाइ असीसा ॥
 सुमिरि गजाननु कीन्ह पयाना। मंगलमूल सगुन भए नाना ॥

दो०—सुर प्रसून वरषहिं हरषि करहिं अपछरा गान ।

चले अवधपति अवधपुर मुदित वजाइ निसान ॥३३९॥

नृप करि विनय महाजन फेरे। सादर सकल मागने टेरे ॥
 भूपन वसन वाजि गज दीन्हे। प्रेम पोषि ठाढ़े सब कीन्हे ॥
 वार वार विरिदावलि भापी। फिरे सकल रामहि उर राखी ॥
 बहुरि बहुरि कोसलपति कहहीं। जनकु प्रेम बस फिरै न चहहीं ॥
 पुनि कह भूपति बचन सुहाए। फिरिअ महीस दूरि बड़ि आए ॥
 राउ बहोरि उतरि भए ठाढ़े। प्रेम प्रवाह बिलोचन बाढ़े ॥

तव विदेह बोलै कर जोरी । वचन सनेह सुधाँ जनु बोरी ॥
 करौं कवन विधि विनय बनाई । महाराज मोहि दीन्हि बड़ाई ॥
 दो०—कोसलपति समधी सजन सनमाने सब भाँति ।

मिलनि परसपर विनय जति प्रीति न हृदयें सभाति ॥३४०॥

मुनि मंडलिहि जनक सिरु नावा । आसिरवाहु सवहि सन पावा ॥
 सादर पुनि भेटे जामाता । रूप सील गुन निधिसव भ्राता ॥
 जोरि पंकरुह पानि मुहाए । बोले वचन प्रेम जनु जाए ॥
 राम करौं केहि भाँति प्रसंसा । मुनि महेस मन मानस हंसा ॥
 करहि जोग जोगी जेहि लागी । कोहु मोहु ममता महु त्यागी ॥
 व्यापकु ब्रह्म अलखु अधिनासी । चिदानंदु निरगुन गुनरासी ॥
 मन समेत जेहि जान न घानी । तरकि न सकहि सकल अनुमानी
 महिमा निगमु नेति कहि कहई । जो तिहुँ काल एकरस रहई ॥

दो०—नवन विषय मो कहूँ भयउ सो समस्त सुख मूल ।

सबह लाभु जग जीव कहँ भएँ ईसु अनुकूल ॥३४१॥

सवहि भाँति मोहि दीन्हि बड़ाई । निज जन जानि लीन्ह अपनाई ॥
 होहि सहस दस सारद सेपा । करहि कल्पकोटिक भरि लेखा ॥
 मोर भाग्य राउर गुन गाथा । कहिन सिराहिँ सुनहु रघुनाथा ॥
 मैं कलु कहउँ एक बल मोरें । तुम्ह रीझहु सनेह सुठि थोरें ॥
 वार वार मागउँ कर जोरें । मनु परिहरें चरन जनि भोरें ॥
 मुनि वर वचन प्रेम जनु पोषे । पूरनकाम रामु परितोषे ॥
 करि वर विनय समुर सनमाने । पितु कौसिक वसिष्ठ सम जाने ॥
 विनती बहुरि भरत सन कीन्ही । मिलि सप्रेमु पुनि आसिष दीन्ही ॥

दो०—मिले लखन रिपुसूदनहि दीन्हि असीस महीस ।

भए परसपर प्रेमवस फिरि फिरि नावहि सीस ॥३४२॥

वार वार करि विनय बड़ाई । रघुपति चले संग सब भाई ॥
जनक गहे कौसिक पद जाई । चरन रेनु सिर नयनन्ह लाई ॥
सुनु मुनीस वर दरसन तोरें । अगमु न कछु प्रतीति मन मोरें ॥
जो सुखु सुजसु लोकपति चहहीं । करत मनोरथ सकुचत अहहीं ॥
सो सुखु सुजसु सुलभ मोहि स्वामी । सब सिधि तव दरसन अनुगामी
कीन्हि विनय पुनि पुनि सिरु नाई । फिरे महीसु आसिपा पाई ॥
चली वरात निसान बजाई । मुदित छोट बड़ सब समुदाई ॥
रामहि निरखि ग्राम नर नारी । पाइ नयन फलु होहिं सुखारी ॥

दो०—बीच बीच वर वास करि मग लोगन्ह सुख देत ।

अवघ समीप पुनीत दिन पहुँची आइ जनेत ॥३४३॥

हने निसान पनव वर बाजे । भेरि संख धुनि हय गय गाजे ॥
झाँझि विरव डिंडिमीं सुहाई । सरस राग बाजहिं सहनाई ॥
पुर जन आवत अकनि वराता । मुदित सकल पुलकावलि गाता ॥
निज निज सुंदर सदन सँवारे । हाट वाट चौहट पुर द्वारे ॥
गलीं सकल अरगजाँ सिंचाई । जहँ तहँ चौकें चारु पुराई ॥
बना बजारु न जाइ बखाना । तोरन केतु पताक बिताना ॥
सफल पूगफल कदलि रसाला । रोपे बकुल कदंब तमाला ॥
लगे सुभग तरु परसत धरनी । मनिमय आलवाल कल करनी ॥

दो०—विविध भाँति मंगल कलस गृह गृह रचे सँवारि ।

सुर ब्रह्मादि सिहाहिं सब रघुवर पुरी निहारि ॥३४४॥

भूप भवतु तेहि अवसर सौदा । रचना देखि मदन मनु मोहा ॥
 मंगल सगुन मनोहरताई । रिधि सिधि सुख संपदा सुहाई ॥
 जनु उछाह सब सहज सुहाए । तनु धरि धरि दसरथ गृह छाए ॥
 देखन हेतु राम वंदेही । कहहु लालसा होहि न केही ॥
 जूथ जूथ मिलि चलीं सुआसिनि । निज छवि निदरहि मदन बिआसिनि
 सकल सुमंगल सजें आरती । गावहिं जनु बहु बेप भारती ॥
 भूपति भवन कोलाहलु होई । जाइ न चरनि समउ सुखु सोई ॥
 कौसल्यादि राम महतारीं । प्रेमबिबस तन दसा विसारीं ॥
 दो०-दिग दान विग्रह विपुल पूजि गनेस पुरारि ।

प्रमुदित परम दरिद्र जनु पाइ पदारथ चारि ॥३४५॥

मोद प्रमोद बिबस सब माता । चलहिं न चरन सिधिल भए गाता
 राम दरस हित अति अनुगर्गी । परिछनि साजु सजन सब लागीं ॥
 विविध विधान वाजने वाजे । मंगल मुदित सुमित्रीं साजे ॥
 हरद दूष दधि पछव फूला । पान पूगफल मंगल मूला ॥
 अच्छन अंकुर लोचन लाजा । मंजुल मंजरि तुलसि पिराजा ॥
 छुहं पुरट घट सहज सुहाए । मदन सकुन जनु नीइ घनाए ॥
 सगुन सुगंध न जाहिं बखानी । मंगल सकल सजहिं सब रानी ॥
 रचीं आरतीं बहूत विधाना । मुदित करहिं कल मंगल गाना ॥
 दो०-कनक थार भरि मंगलहि कयउ कन्हि लिपें यात ।

बली मुदित परिछनि करन पुटक पछवित यात ॥३४६॥

धूप धूम नक्षु मेचक भयऊ । मावन घन धर्मइ जनु टयऊ ॥
 सुरतरु सुमन माल सुरवरपहिं ।

मंजुल मनिमय बंदनिवारे। मनहुँ पाकरिपु चाप सँवारे।
 प्रगटहिँ दुरहिँ अटन्ह पर भामिनि। चारु चपल जनु दमकहिँ दामिनि।
 दुंदुभि धुनि घन गरजनि घोरा। जाचक चातक दादुर मोरा ॥
 सुर सुगंध सुचि बरपहिँ बारी। सुखी सकल ससि पुर नर नारी ॥
 समउ जानि गुर आयसु दीन्हा। पुर प्रवेशु रघुकुलमनि कीन्हा ॥
 सुमिरि संभु गिरिजा गनराजा। मुदित महीपति सहित समाजा ॥

दो०—होहिँ सगुन बरपहिँ सुमन सुर दुंदुभी वजाइ।
 विवुध बधू नाचहिँ मुदित मंजुल मंगल गाइ ॥३४७॥

मागध सूत बंदि नट नागर। गावहिँ जसु तिहु लोक उजागर।
 जय धुनि विमल वेद बर वानी। दस दिसि सुनिअ सुमंगल सानी
 विपुल बाजने बाजन लागे। नभ सुर नगर लोग अनुरागे ॥
 बने बराती बरनि न जाहीं। महा मुदित मन सुख न समाहीं ॥
 पुरवासिन्ह तब राय जोहारे। देखत रामहि भए सुखारे ॥
 करहिँ निछावरि मनिगन चीरा। वारि बिलोचन पुलक सरीरा ॥
 आरति करहिँ मुदित पुर नारी। हरषहिँ निरखि कुअँर बर चारी ॥
 सिविका सुभग ओहार उधारी। देखि दुलहिनिन्ह होहिँ सुखारी ॥

दो०—एहि विधि सवही देत सुखु आए राजदुआर।
 मुदित मातु परिछनि करहिँ वधुन्ह समेत कुमार ॥३४८॥

रहिँ आरती वारहिँ वारा। प्रेमु प्रमोदु कहै को पारा।
 न मनि पट नाना जाती। करहिँ निछावरि अगनित भाँती।
 न्ह समेत देखि सुत चारी। परमानंद मगन महतारी ॥
 पुनि सीय राम छवि देखी। मुदित सफल जग जीवन लेखी ॥

सखीं सीय मुख पुनि पुनि चाही । गान करहिं निज सुकृत सराही ॥
 वरपहिं सुमन छनहिं छन देवा । नाचहिं गावहिं लावहिं सेवा ॥
 देखि मनोहर चारिउ जोरीं । मारद उपमा सकल ढँढोरीं ॥
 देत न चर्नाहिं निपट लघु लागीं । एकटक रहीं रूप अनुरागीं ॥

दो०-निगम नीति कुल रीति करि अरघ पौवडे देत ।

बधुन्ह सहित मुत परिछि सब चली ल्वाइ निकेत ॥३४९॥

चारि सिंघासन सहज मुहाए । जनु मनोज निज हाथ बनाए ॥
 तिन्ह पर कुअँरि कुअँर बँठारें । सादर पाय पुनीत परवारें ॥
 धूप दीप नैवेद वेद विधि । पूजे वर दुलहिनि मंगलनिधि ॥
 बार्हिं चार आरती करहीं । व्यजन चारु चामर सिर ढरहीं ॥
 वस्तु अनेक निछावरि होहीं । भरीं प्रमोद मातु सब सोहीं ॥
 पावा परम तच्च जनु जोगीं । अमृतु लहेउ जनु संतत रोगीं ॥
 जनम रंक जनु पारस पावा । अंधहि लोचन लाभु मुहावा ॥
 मूक वदन जनु सारद छाई । मानहुँ समर सर जय पाई ॥

दो०-गृहि सुख ते सत कोटि गुन पावहिं मातु अनंदु ।

भाइन्ह सहित धिआहि घर आए रघुकुलचंद्र ॥३५०(क)॥

लोक रीति जननीं करहिं वर दुलहिनि सकुचाहि ।

मोदु विनोदु धिलोकि वद रामु मनहिं मुसुकाहि ॥३५०(ख)॥

देव पितर पूजे विधि नीकी । पूजां सकल वासना जी की ॥
 सत्रहि बंदि मागहिं वरदाना । भाइन्ह सहित राम कल्याणा ॥
 अंतरहित मुर आसिप देहीं । मुदित मातु अंचल भरि लेहीं ॥
 भूपति बोलि वराती लीन्हे । जान वसन मुनि भूपन दीन्हे ॥

आयसु पाइ राखि उर रामहि । मुदित गए सब निज निज धामहि ।
 पुर नर नारि सकल पहिराए । घर घर बाजन लगे बधाए ॥
 जाचक जन जाचहिं जोइ जोई । प्रमुदित राउ देहिं सोइ सोई ।
 सेवक सकल बजनिआ नाना । पूरन किए दान सनमाना ।
 दो०—देहिं असीस जोहारि सब गावहिं गुन गन गाथ ।

तव गुर भूसुर सहित गृहँ गवनु कीन्ह नरनाथ ॥३५१॥

जो बसिष्ट अनुसासन दीन्ही । लोक वेद विधि सादर कीन्ही ।
 भूसुर भीर देखि सब रानी । सादर उठीं भाग्य बड़ जानी ।
 पाय परवारि सकल अन्हवाए । पूजि भली विधि भूप जेवाँए ।
 आदर दान प्रेम परिपोषे । देत असीस चले मन तोषे ।
 बहु विधि कीन्ही गाधिसुत पूजा । नाथ मोहि सम धन्य न दूजा ।
 कीन्ही प्रसंसा भूपति भूरी । रानिन्ह सहित लीन्ही पग धूरी ।
 भीतर भवन दीन्ह बर वास । मन जोगवतरह नृपु रनिवास ।
 पूजे गुर पद कमल बहोरी । कीन्ही बिनय उर प्रीति न थोरी ।
 दो०—बधुन्ह समेत कुमार सब रानिन्ह सहित महीसु ।

पुनि पुनि बंदत गुर चरन देत असीस मुनीसु ॥३५२॥

बिनय कीन्ही उर अति अनुरागें । सुत संपदा राखि सब आगें ।
 नेगु मागि मुनिनायक लीन्हा । आसिरवाहु बहुत विधि दीन्हा ।
 उर धरि रामहि सीय समेता । हरपिकीन्ह गुर गवनु निकेता ।
 विप्रवधू सब भूप बोलाई । चैल चारु भूपन पहिराई ।
 बहुरि बोलाइ सुआसिनि लीन्हीं । रुचि विचारि पहिरावनि दीन्हीं ।
 नेगी नेग जोरा सब लेहीं । रुचि अनुरूप भूपमनि देहीं ।

प्रेय पाहुने पूज्य जे जाने। भूपति भली भाँति सनमाने ॥
देव देखि रघुवीर विवाह। चरपि प्रसन्न प्रसंसि उछाह ॥

दो०—चले नितान बजाइ सुर निज निज पुर सुख पाइ ।

कहत परसपर राम जसु प्रेम न हृदयें समाइ ॥३५३॥

सय विधिसचहिसमदि नरनाह। रहा हृदयें भरि पूरि उछाह ॥
जहँ रनिवासु तहाँ पगु धारे। सहित बहृटिन्ह कुअँर निहारे ॥
लिण गोद करि मोद समेता। को कहिसकइ भयउ सुगु जेता ॥
बधू सप्रेम गोद बँटारीं। बार बार हियँ हरपि दुलारीं ॥
देखि समाजु मुदित रनिवास। सब कें उर अनंद कियो बास ॥
कहेउ भूप जिमि भयउ बिबाह। सुनि सुनि हरषु होत सय काह ॥
जनक राज गुन सीलु बड़ाई। प्रीति रीति संपदा सुहाई ॥
बहुविधि भूप भाट जिमि बरनी। रानीं सब प्रमुदित सुनि करनी ॥

दो०—मुतन्ह ममेत नहाइ नृप चोलि विप्र गुर ग्याति ।

भोजन कीन्ह अनेक विधि, घरी पंच गइ राति ॥३५४॥

मंगलगान करहिं वर भामिनि। भँ मुखमूल मनोहर जामिनि ॥
अँचइ पान मय काहँ पाए। मग सुगंध भूपित छवि छाए ॥
रामहि देखि रजायसु पाई। निज निज भवन चले सिर नाई ॥
प्रेमु प्रमोदु विनोदु बड़ाई। समउ ममाजु मनोहरताई ॥
कहिन सकहिं मत सारदु सेसु। वेद विरंचि महेस गनेसु ॥
सो मँ कहीं कवन विधि बरनी। भूमिनागु सिर धरइ कि धरनी ॥
नृप सब भाँति सचहिसनमानी। कहि मृदु वचन बोलाइ रानी ॥
बधू लरिकनीं पर घर आई। राखेहु नयन पलक की

दो०—लरिका श्रमित उनीद वस सयन करावहु जाई ।

अस कहि गे विश्रामगृहँ राम चरन चित्तु लाई ॥३५५॥

भूप वचन सुनि सहज सुहाए । जरित कनक मनि पलंग डसाए ॥

सुभग सुरभि पय फेन समाना । कोमल कलित सुपेती नाना ॥

उपबरहन बर वरनि न जाहीं । स्रग सुगंध मनिमंदिर माहीं ॥

रतनदीप सुठि चारु चँदोवा । कहत न बनइ जान जेहि जोवा ॥

सेज रुचिर रचि रामु उठाए । प्रेम समेत पलंग पौढाए ॥

अग्या पुनि पुनि भाइन्ह दीन्ही । निज निज सेज सयन तिन्ह कीन्ही ॥

देखि स्याम मृदु मंजुल गाता । कहहिं सप्रेम वचन सब माता ॥

मारग जात भयावनि भारी । केहि विधि तात ताड़का मारी ॥

दो०—घोर निसाचर विकट भट समर गनहिं नहिं काहु ।

मारे सहित सहाय किमि खल मारीच सुवाहु ॥३५६॥

मुनि प्रसाद बलि तात तुम्हारी । ईस अनेक करवरें टारी ॥

मख रखवारी करि दुहुँ भाई । गुरु प्रसाद सब विद्या पाई ॥

मुनितिय तरी लगत पग धूरी । कीरति रही भुवन भरि पूरी ॥

कमठ पीठि पवि कूट कठोरा । नृप समाज सहूँ सिव धनु तोरा ॥

विश्व विजय जसु जानकि पाई । आए भवन व्याहि सब भाई ॥

सकल अमानुप करम तुम्हारे । केवल कौसिक कृपाँ सुधारे ॥

आजु सुफल जग जनमु हमारा । देखि तात विधुवदन तुम्हारा ॥

जे दिन गए तुम्हहि विनु देखें । ते विरंचि जनि पारहिं लेखें ॥

दो०—राम प्रतोपी मातु सब कहि विनीत चर वैन ।

सुमिरि संभु गुर विप्र पद किए नीदवस नैन ॥३५७॥

नीदउँ वदन सोह मुठि लोना । मनहुँ साँझ सरसीरुह सोना ॥
 घर घर करहि जागरन नारीं । देहि परसंपर मंगल गारीं ॥
 पुरी विराजति राजति रजनी । रानी कहहि विलोकहु सजनी ॥
 सुंदर बंधुन्ह सामु लँ सोई । फनिकन्ह जनु सिरमनि उर गोई ॥
 प्रात पुनीत काल प्रभु जाग । अरुनचूड़ घर बोलन लागे ॥
 वंदि मागधन्हि गुनगन गाए । पुरजन द्वार जोहारन आए ॥
 वंदि विप्र सुर गुर पितु माता । पाइ असीस मुदित सब भ्राता ॥
 जननिन्ह सादर वदन निहारे । भूपति मंग द्वार पगु धारे ॥

दो०—कीन्हि सोच सय सहज सुचि सरित पुनीत नहाइ ।

प्रातकिया करि तात पहि आए चारिउ भाइ ॥३५८॥

नवाह्नपारायण, तीसरा विश्राम

भूप विलोकि लिए उर लई । बंटे हरपि रजायसु पाई ॥
 देखि रामु सब सभा जुड़ानी । लोचन लाभ अवधि अनुमानी ॥
 पुनि बसिष्टु मुनि काँसिकु आए । मुभग आसनन्हि मुनि घंटाए ॥
 सुतन्ह समेत पूजि पद लागे । निरखि रामु दोउ गुर अनुरागे ॥
 कहहि बसिष्टु धरम इतिहासा । मुनहिं महीसु सहित रनिवासा ॥
 मुनि मन अगम गाधिसुत करनी । मुदित बसिष्टु विपुल विधि वरनी
 बोलै वामदेउ सब साँची । कीरति कलित लोक तिहुँ माची ॥
 मुनि आनंदु भयउ सब काह । राम लखन उर अधिक उछाह ॥

दो०—मंगल मोद उछाह नित जाहि दिवस एहि भौंति ।

उमगी अवध अनंद भरि अधिक अधिक अधिकाति ॥३५९॥

दो०—लरिका श्रमित उनीद वस सयन करावहु जाइ ।

अस कहि गे विश्रामगृहँ राम चरन चितु लाइ ॥३५५॥

भूप वचन सुनि सहज सुहाए । जरित कनक मनि पलंग डसाए ॥

सुभग सुरभि पय फेन समाना । कोमल कलित सुपेती नाना ॥

उपवरहन वर वरनि न जाहीं । स्रग सुगंध मनिमंदिर माहीं ॥

रतनदीप सुठि चारु चँदोवा । कहत न बनइ जान जेहि जोवा ॥

सेज रुचिर रचि रामु उठाए । प्रेम समेत पलंग पौढ़ाए ॥

अग्या पुनि पुनि भाइन्ह दीन्ही । निज निज सेज सयन तिन्ह कीन्ह ॥

देखि स्याम मृदु मंजुल गाता । कहहि सप्रेम वचन सब माता ॥

मारग जात भयावनि भारी । केहि विधि तात ताड़का मारी ॥

दो०—घोर निसाचर विकट भट समर गनहि नहि काहु ।

मारे सहित सहाय किमि खल मारीच सुचाहु ॥३५६॥

मुनि प्रसाद बलि तात तुम्हारी । ईस अनेक करवरे टारी ॥

मख रखवारी करि दुहुँ भाई । गुरु प्रसाद सब विद्या पाई ॥

मुनितिय तरी लगत पग धूरी । कीरति रही भुवन भरि पूरी ॥

कमठ पीठि पवि कूट कठोरा । नृप समाज सहुँ सिव धनु तोरा ॥

विस्व विजय जसु जानकि पाई । आए भवन व्याहि सब भाई ॥

सकल अमानुष करम तुम्हारे । केवल कौसिक कृपाँ सुधारे ॥

आजु सुफल जग जनमु हमारा । देखि तात विधुवदन तुम्हारा ॥

जे दिन गए तुम्हहि विनु देखें । ते बिरंचि जनि पारहि लेखें ॥

दो०—राम प्रतोपी मातु सब कहि विनीत वर वैन ।

सुमिरि संभु गुर विप्र पद किए नीदवस नैन ॥३५७॥

नीदुँ वदन मोह मुटि लोना । मनहुँ माँज मग्गीरुह मोना ॥
 वर घर करहिं जागन नार्गी । देहिं परमपर मंगल गार्गी ॥
 पुरी विगजति गजनि रजनी । गर्नी कर्हाहिं विलोकहु मजनी ॥
 मुंदर वधुन्ह मासु लै सोटी । फनिकन्ह जनु मिरमनि उर गांटी ॥
 प्रात पुनीत काल प्रभु जागे । अरुनचुड वर बोलन लागे ॥
 बंदि मागधन्हि गुनगन गाए । पुरजन द्वार जांहागन आए ॥
 बंदि विप्र गुर गुर पितु माता । पाइ अर्घ्याय मृदिन सब भ्राना ॥
 — सिद्धार्थ । अपनि मंग द्वार पगु धारं ॥

सुदिन सोधि कल कंकन छोरे। मंगल मोद विनोद न थोरे ॥
 नित नव सुखु सुर देखि सिहाहीं। अवध जन्म जाचहिं विधि पाहीं।
 विस्वामित्रु चलन नित चहहीं। राम सप्रेम विनय बस रहहीं ॥
 दिन दिन सयगुन भूपति भाऊ। देखि सराह महामुनिराऊ ॥
 मागत विदा राउ अनुरागे। सुतन्ह समेत ठाढ़ भे आगे ॥
 नाथ सकल संपदा तुम्हारी। मैं सेवकु समेत सुत नारी ॥
 करब सदा लरिकन्ह पर छोहू। दरसनु देत रहब मुनि मोहू ॥
 अस कहि राउ सहित सुत रानी। परेउ चरन मुख आव न बानी ॥
 दीन्हि असीस विप्र बहु भाँती। चले न प्रीति रीति कहि जाती ॥
 रामु सप्रेम संग सब भाई। आयसु पाह फिरे पहुँचाई ॥

दो०—राम रूपु भूपति भगति व्याहु उछाहु अनंदु ।

जात सराहत मनहिं मन मुदित गाधिकुलचंद्रु ॥३६०॥

वामदेव रघुकुल गुर ग्यानी। बहुरि गाधिसुत कथा बखानी।
 सुनि मुनि सुजसु मनहिं मन राऊ। वरनत आपन पुन्य प्रभाऊ।
 बहुरे लोग रजायसु भयऊ। सुतन्ह समेत नृपति गृहँ गयऊ।
 जहँ तहँ राम व्याहु सबु गावा। सुजसु पुनीत लोक तिहँ छावा।
 आए व्याहि रामु घर जब तें। बसइ अनंद अवध सब तब तें ॥
 प्रभु विवाहँ जस भयउ उछाहू। सकहिं न बरनि गिरा अहिनाहू ॥
 कविकुल जीवनु पावन जानी। राम सीय जसु मंगल खानी ॥
 तेहि ते मैं कछु कहा बखानी। करन पुनीत हेतु निज बानी ॥

छं० निज गिरा पावनि करन कारन राम जसु तुलसी कह्यो

रघुवीर चरित अपार वारिधि पारु कवि कौन लह्यो

उपवीत व्याह उद्याह मंगल सुनि जे सादर गावहीं ।

वैदेहि राम प्रसाद ते जन सर्वदा सुखु पावहीं ॥

सो०—सिय रघुवीर विवाहु जे सप्रेम गावहि मुनिहि ।

तिन्ह कहूँ सदा उद्याहु मंगलायतन राम जसु ॥३६१॥

भासपारायण, चारहवाँ विश्राम

इति श्रीमद्रामचरितमानसे सकलकलिकल्पविध्यंसने

प्रथमः सोपानः समाप्तः ।

(बालकाण्ड समाप्त)



राम-भरत-मिलन



वरवस लिए उठाइ उर लाए कृपानिधान ।
भरत राम की मिलनि लखि विसरे सबहि अपान ॥

श्रीगणेशाय नमः

श्रीजानकीवत्सभो विजयते

श्रीरामचरितमानस

द्वितीय सोपान

(अयोध्याकाण्ड)

श्लोक

यस्याङ्गे च विभाति भृधस्तुता देवापगा मस्तके
भाले बालविधुर्गले च गरलं यस्मोरसि व्यालराट् ।
सौऽयं भृतिविभूषणः सुरवरः सर्वाधिपः सर्वदा
शर्वः सर्वगतः शिवः शशिनिभः श्रीशङ्करः पातु माम् ॥१॥
प्रसन्नतां या न गताभिपेकतस्तथा न मस्ते वनवासदुःखतः ।
भ्रुवाम्बुजश्री रघुनन्दनस्य मे सदास्तु सा मञ्जुलमङ्गलप्रदा ॥२॥
नीलाम्बुजश्यामलकोमलाङ्गं सीतासमारोपितशामभागम् ।
पाणौ महासायकचारुचापं नमामि रामं रघुवंशनाथम् ॥३॥

दो०-श्रीगुरु चरन सरोज रज निज मनु मुकुरु सुधारि ।

वरनडै रघुवर विमल जसु जो दासकु फल चारि ॥

जव तें रामु व्याहि घर आए । नित नव मंगल मोद कथाए ॥
भुवन चारिदस भूधर भारी । सुकृत भेष बरषहिं मुख चारी ॥

रिधि सिधि संपति नदीं सुहाई । उमगि अवध अंबुधि कहूँ आई ॥
 मनिगन पुर नर नारि सुजाती । सुचि अमोल सुंदर सब भाँती ॥
 कहिन जाइ कछु नगर बिभूती । जनु एतनिअ बिरंचिकरतूती ॥
 सब विधिसब पुर लोग सुखारी । रामचंद मुख चंदु निहारी ॥
 मुदित मातु सब सखीं सहेली । फलित बिलोकि मनोरथ वेली ॥
 राम रूपु गुन सीलु सुभाऊ । प्रमुदित होइ देखि सुनि राऊ ॥
 दो०—सब केँ उर अभिलाषु अस कहहिं मनाइ महेसु ।

आप अछत जुवराज पद रामहि देउ नरेसु ॥ १ ॥

एक समय सब सहित समाजा । राजसभाँ रघुराजु बिराजा ॥
 सकल सुकृत मूरति नरनाहू । राम सुजसु सुनि अतिहि उछाहू ॥
 नृप सब रहहिं कृपा अभिलाषेँ । लोकप करहिं प्रीति रुख राखेँ ॥
 ६. तीनि काल जग माहीं । भूरि भाग दसरथ सम नाहीं ॥

रामु सुत जासू । जो कछु कहिअ थोर सबु तासू ॥
 रायँ सुभायँ मुकुरु कर लीन्हा । बदनु बिलोकि मुकुटु सम कीन्हा ॥
 श्रवन समीप भए सित केसा । मनहुँ जरठपनु अस उपदेसा ॥
 नृप जुवराजु राम कहूँ देहू । जीवन जनम लाहु किन लेहू ॥
 दो०—यह विचारु उर आनि नृप सुदिनु सुअवसरु पाइ ।

प्रेम पुलकि तन मुदित मन गुरहि सुनायउ जाइ ॥ २ ॥

कहइ भुआलु सुनिअ मुनिनायक । भए राम सब विधि सब लायक ॥
 सेवक सचिव सकल पुरवासी । जे हमारे अरि मित्र उदासी ॥
 सबहि रामु प्रिय जेहि विधि मोही । प्रभु असीस जनु तनु धरि सोही ॥
 विप्र सहित परिवार गोसाईं । करहिं छोहु सब रौरिहि नाई ॥

जे गुर चरन रेनु सिर धरहीं। ते जनु सकल विभव बस करहीं॥
मोहि सम यहु अनुभयउ न दूजें। सबु पायउ रज पावनि पूजें॥
अघ अभिलाषु एकु मन मोरें। पूजिहि नाथ अनुग्रह तोरें॥
मुनि प्रसन्न लखि सहज सनेह। कहेउ नरेस रजायसु देह॥

दो०—राजन राउर नामु जसु सय अभिमत दातार ।

फल अनुगामी महिप मनि मन अभिलाषु तुम्हार ॥ ३ ॥

सब विधि गुरु प्रसन्न जियँ जानी। बोलेउ राउ रहँसि मृदु बानी ॥
नाथ रामु करिअहिँ जुपराजु। कहिअ कृपा करि करिअ समाजु ॥
मोहि अछत यहु होइ उछाह। लहहिँ लोग सब लोचन लाह ॥
प्रभु प्रसाद सिव सबइ निवारिँ। यह लालसा एकु मन मारिँ ॥
पुनि न सोच तनु रहउ किजाऊ। जेहिँ न होइ पाछें पछिताऊ ॥
मुनि मुनि दसरथ वचन मुहाए। मंगल मोद मूल मन भाए ॥
सुनु नृपजासु विमुख पछिताहीं। जासु भजन धिनु जरनि न जाहीं ॥
भयउ तुम्हार तनय सोइ स्वामी। रामु पुनीत प्रेम अनुगामी ॥

दो०—बेगि विलंबु न करिअ नृप साजिअ सबुइ समाजु ।

सुदिन सुमंगलु तबहिँ जय रामु होहिँ जुपराजु ॥ ४ ॥

मुदित महीपति मंदिर आए। सेवक सचिव सुमंघु बोलाए ॥
कहि जय जीव सीस तिन्ह नाए। भूप सुमंगल वचन मुनाए ॥
जाँ पाँचहिँ मत लागै नीका। करहु हरषि हियँ रामहिँ टीका ॥
मंत्री मुदित सुनत प्रिय बानी। अभिमत विखँ परेउ जनु पानी ॥
बिनती सचिव करहिँ कर जोरी। जिअहु जगतपति बरिस करोरी ॥
जग मंगल भल काजु विचारा। बेगिअ नाथ, न लाइअ

नृपहि मोदु सुनि सचिव सुभाषा । बढत बौड़ जनु लही सुसाखा ॥

दो०—कहेउ भूप मुनिराज कर जोड़ जोड़ आयसु होइ ।

राम राज अभिषेक हित बेगि करहु सोइ सोइ ॥ ५ ॥

हरपि मुनीस कहेउ मृदु वानी । आनहु सकल सुतीरथ पानी ॥
 औपध मूल फूल फल पाना । कहे नाम गनि मंगल नाना ॥
 चामर चरम बसन बहु भाँती । रोम पाट पट अगनित जाती ॥
 मनिगन मंगल वस्तु अनेका । जो जग जोगु भूप अभिषेका ॥
 वेद विदित कहि सकल विधाना । कहेउ रचहु पुर विविध विताना ॥
 सफल रसाल पूगफल केरा । रोपहु वीथिन्ह पुर चहुँ फेरा ॥
 रचहु मंजु मनि चौकें चारू । कहहु बनावन बेगि बजारू ॥
 पूजहु गनपति गुर कुलदेवा । सब विधि करहु भूमिसुर सेवा ॥

दो०—ध्वज पताक तोरन कलस सजहु तुरग रथ नाग ।

सिर धरि मुनिवर वचन सबु निज निज काजहि लाग ॥ ६ ॥

जो मुनीस जेहि आयसु दीन्हा । सो तेहिं काजु प्रथम जनु कीन्हा ॥
 विप्र साधु सुर पूजत राजा । करत राम हित मंगल काजा ॥
 सुनत राम अभिषेक सुहावा । बाज गहागह अवध बधावा ॥
 राम सीय तन सगुन जनाए । फरकहिं मंगल अंग सुहाए ॥
 पुलकि सप्रेम परसपर कहहीं । भरत आगमनु सूचक अहहीं ॥
 भए बहुत दिन अति अवसेरी । सगुन प्रतीति भेंट प्रिय केरी ॥
 भरत सरिस प्रियको जग माहीं । इहइ सगुन फल दूसर नाहीं ॥
 रामहि बंधु सोच दिन राती । अंडन्हि कमठ हृदउ जेहि भाँती ॥

दो०—एहि अवसर मंगलु परम सुनि रहँसेउ रनियासु ।

सोभत लखि बिधु बढत जनु वारिधि योचि विलासु ॥ ७ ॥

प्रथम जाइ जिन्ह वचन मुनाए । भूपन बसन भूरि तिन्ह पाए ॥
 प्रेम पुलकि तन मन अनुरागी । मंगल कलस सजन सब लागी ॥
 चौकें चारु मुमित्राँ पूरी । मनिमय विविध भाँति अति रूरी
 आनँद मगन राम महतारी । दिए दान बहु विप्र हँकारी ॥
 पूर्जाँ ग्रामदेवि सुर नागा । कहेउ यहोरि देन बलिभागा ॥
 जेहि विधि होइ राम कल्यानू । देहु दया करि सो बरदानू ॥
 गावहि मंगल कोकिलवयनीं । बिधुवदनीं मृगसावकनयनीं ॥

दो०—राम राज अभिषेकु सुनि हियँ हरपे नर नारि ।

लगे सुमंगल सजन सब विधि अनुकूल विचारि ॥ ८ ॥

तव नरनाहँ बसिपट्ट बोलाए । रामधाम सिख देन पठाए ॥
 गुर आगमनु सुनत रघुनाथा । द्वार आइ पद नायउ भाथा ॥
 सादर अरघ देइ घर आने । सोरह भाँति पूजि सनमाने ॥
 गहे चरन सिय सहित बहोरी । बोले रामु कमल कर जोरी ॥
 सेवक सदन स्वामि आगमनू । मंगल मूल अमंगल दमनू ॥
 तदपि उचित जनु बोलि सप्रीती । पठइअ काज नाथ असि नीती ॥
 प्रभुता तजि प्रभु कीन्ह सनेह । भयउ पुनीत आजु यहु गेह ॥
 आयमु होइ सो कर्म गोसाई । सेवकु लहइ स्वामि सेवकाई ॥

दो०—सुनि सनेह साने वचन मुनि रघुवरहि प्रसंस ।

राम कस न तुम्ह कहहु अस हंस बंस अवतंस ॥ ९ ॥

वरनि राम गुन सीलु सुभाऊ । बोले प्रेम पुलकि सुनि

भूप सजेउ अभिषेक समाजू । चाहत देन तुम्हहि जुवराजू ॥
 राम करहु सब संजम आजू । जौ विधि कुसल निबाहै काजू ॥
 गुरुसिख देइ राय पहिं गयऊ । राम हृदयँ अस विसमउ भयऊ ॥
 जनमे एक संग सब भाई । भोजन सयन केलि लरिकाई ॥
 करनवेध उपवीत विआहा । संग संग सब भए उछाहा ॥
 विमल वंस यहु अनुचित एकू । वंधु बिहाइ बड़ेहि अभिषेकू ॥
 प्रभु सप्रेम पछितानि सुहाई । हरउ भगत मन कै कुटिलाई ॥
 दो०—तेहि अवसर आए लखन मगन प्रेम आनंद ।

सनमाने प्रिय वचन कहि रघुकुल कैरव चंद ॥ १० ॥

बाजहिं बाजने विविध विधाना । पुर प्रमोदु नहिं जाइ बखाना ॥
 भरत आगमनु सकल मनावहिं । आवहुँ बेगि नयन फलु पावहिं ॥
 हाट वाट घर गलीं अथाई । कहहिं परसपर लोग लोगाई ॥
 कालि लगन भलि केतिक बारा । पूजिहि विधि अभिलाषु हमारा ॥
 कनक सिंघासन सीय समेता । बैठहिं रामु होइ चित चैता ॥
 सकल कहहिं कव होइहि काली । विघन मनावहिं देव कुचाली ॥
 तिन्हहि सोहाइ न अवध बधावा । चोरहि चंदिनि राति न भावा ॥
 सारद बोलि विनय सुर करहीं । वारहिं बार पाय लै परहीं ॥
 दो०—विपति हमारि विलोकि वडि मातु करिअ सोइ आजु ।

रामु जाहिं वन राजु तजि होइ सकल सुरकाजु ॥ ११ ॥

सुनि सुर विनय ठाढ़ि पछिताती । भइँ सरोज विपिन हिमराती ॥
 देखि देव पुनि कहहिं निहोरी । मातु तोहि नहिं थोरिउ खोरी ॥
 विसमय हरप रहित रघुराऊ । तुम्ह जानहु सब राम प्रभाऊ ॥

जीव करम बस सुख दुख भागी । जाइअ अवध देव हित लागी ॥
 वार वार गहि चरन सँकोची । चली विचारि विबुध मति पोची
 ऊँच निवासु नीचि करतूती । देखिन मकहिं पराइ विमूती ॥
 आगिल काजु विचारि वहोगी । करिहहिं चाह कुसल कवि मोरी ॥
 हरपि हृदयँ दसरथ पुर आई । जनु ग्रह दग्गा दुग्गह दुखदाई ॥
 दो०—नामु मंथरा मंदमति चेरी कैवड केरि ।

अजस पेठारी ताहि करि गई गिरा मति फेरि ॥ १२ ॥

दीख मंथरा नगरु घनावा । मंजुल मंगल वाज वधावा ॥
 पूछेसि लोगन्ह काह उछाह । राम निलकु मुनि भा उर दाह ॥
 करइ विचारु कुबुद्धि कुजाती । होइ अकाजु कवनि विधि राती ॥
 देखि लागि मधु कुटिल किराती । जिमि गवँ तफइ लेउँ केहि भौती
 भरत मातु पहिं गइ बिलखानी । का अनमनि हमि कह हँसि रानी
 उत्तरु देइ न लेइ उसाध । नारि चरिन करि ढारइ आँध ॥
 हँसि कह रानि गालु बड़ तोरें । दीन्ह लग्न मिय अस मन मोरें
 तबहुँ न बोल चेरि बड़ि पापिनि । छाड़इ म्याम कारि जनु साँपिनि ॥
 दो०—सभय रानि कह कहसि किन कुसल रामु महिपालु ।

लदानु भरतु रिपुदमनु सुनि भा कुवरी उर सालु ॥ १३ ॥

कत सिख देइ हमहि कोउ माई । गालु करव केहि कर बडुपाई ॥
 रामहि छाड़ि कुसल केहि आजू । जेहि जनेमु देइ बुवागू ॥
 भयउ काँसिलहि विधि अनि दाहिन । देखन गरव रहत उ
 देखहु कस न जाइ नव सोभा । जो अवलोकि मोर
 पतु विदेस न सोचु तुम्हारें । जानति हहु बडु

बीद बहुत प्रिय सेज तुराई । लखहु न भूप कपट चतुराई ॥
 सुनि प्रिय वचन मलिन मनु जानी । झुकी रानि अब रहु अरगानी ॥
 धुनि अस कबहुँ कहसि घरफोरी । तब धरि जीभ कढ़ावउँ तोरी ॥

दो०—काने खारे कूबरे कुटिल कुचाली जानि ।

तिय विसेषि पुनि चेरि कहि भरतमातु मुसुकानि ॥ १४ ॥

प्रियवादिनि सिख दीन्हिउँ तोही । सपनेहुँ तो पर कोपु न मोही ॥
 सुदिनु सुमंगल दायकु सोई । तोर कहा फुर जेहि दिन होई ॥
 जेठ स्वामि सेवक लघु भाई । यह दिनकर कुल रीति सुहाई ॥
 राम तिलकु जौ साँचेहुँ काली । देउँ मागु मन भावत आली ॥
 कौसल्या सम सब महतारी । रामहि सहज सुभायँ पिआरी ॥
 मो पर करहिं सनेहु विसेपी । मैं करि प्रीति परीछा देखी ॥
 जौ विधि जनमु देइ करि छोहू । होहुँ राम सिय पूत पुतोहू ॥
 आन तें अधिक रामु प्रिय मोरें । तिन्ह कें तिलक छोभु कस तोरें ॥

दो०—भरत सपथ तोहि सत्य कहु परिहरि कपट दुराड ।

हरष समय विसपड करसि कारन मोहि सुनाउ ॥ १५ ॥

एकहिं वार आस सब पूजी । अब कछु कहव जीभ करि दूजी ॥
 फोरै जोगु कपारु अभागा । भलेउ कहत दुख रउरेहि लागा ॥
 कहहिं झूठि फुरि बात बनाई । ते प्रिय तुम्हहि करुइ मैं माई ॥
 हसहुँ कहवि अब ठकुरसोहाती । नाहिं त मौन रहव दिनु राती ॥
 करि कुरूप विधि परबस कीन्हा । ववा सो लुनिअ लहिअ जो दीन्हा ॥
 कोउ नृप होउ हमहि का हानी । चेरि छाड़ि अब होव कि रानी ॥
 वारै जोगु सुभाउ हमारा । अनभल देखि न जाइ तुम्हारा ॥

ताते कछुक घात अनुसारी । छमिअ देवि बड़ि चूरु हमारी ॥

दो०—गूढ कपट प्रिय बचन सुनि तीय अघरबुधि रानि ।

मुरमाया बस वैरिनिहि सुहृद जानि पतिआनि ॥ १६ ॥

सादर पुनि पुनि पूँछति ओही । सवरी गान भृगी जनु मोही ॥

तसि मति फिरी अहह जसि भाची । रहसी चेरि घात जनु फाची ॥

तुम्ह पूँछहु मैं कहत डेराऊँ । धरेहु मोर घरफोरी नाऊँ ॥

सजि प्रतीति बहुविधि गड़ि छोली । अत्रथ साढ़साती तव घोली ॥

प्रिय सिय रामु कहा तुम्ह रानी । रामहि तुम्ह प्रिय सो फुरि बानी ॥

रहा प्रथम अब ते दिन बीते । समउ फिरें रिपु होहिं पिरिते ॥

भानु कमल कुल पोपनिहारा । विनु जल जारि करइ सोइ छारा ॥

जरि तुम्हारि चह सवति उखारी । रूँधहु करि उपाउ घर धारी ॥

दो०—तुम्हहि न सोचु सोहाग बल निज बस जानहु राउ ।

मन मलीन मुह मीठ नृपु राउर सरल सुभाउ ॥ १७ ॥

धतुर गंभीर राम महतारी । बीचु पाइ निज बान सँवारी ॥

पठए भरत भूप ननिअउरें । राम मातु मत जानब रउरें ॥

सेवाहिं सकल सवति मोहि नीकें । गरबित भरत मातु बल पी कें ॥

सलु तुम्हार काँसिलहि माई । कपट चतुरं नहिं होइ जनई ॥

राजहि तुम्ह पर प्रेमु विसेपी । सवति मुभाउ सकइ नहिं देतो ॥

रवि प्रपंचु भूपहि अपनई । राम निलक हिन लगन धर्ये ॥

बह कुल उचिन राम कहूँ टीका । सवहि सोइइ मोहि सुनि देतो ॥

बागिलि बान समुझि डरु माई । देउ देउ ॥ १७ ॥

दो०—रचि पचि कोटिक कुटिलपन कीन्हसि कपट प्रबोधु ।

कहिसि कथा सत सवति कै जेहि विधि वाढ़ विरोधु ॥ १८ ॥

भावी बस प्रतीति उर आई। पूँछ रानि पुनि सपथ देवाई ॥
 का पूँछहु तुम्ह अवहुँ न जाना । निज हित अनहित पसु पहिचाना ॥
 भयउ पाखु दिन सजत समाजू। तुम्ह पाई सुधि मोहि सन आजू ॥
 खाइअ पहिरिअ राज तुम्हारें । सत्य कहें नहिँ दोषु हमारें ॥
 जौँ असत्य कछु कहब बनाई । तौ विधि देखहिँ हमहिँ सजाई ॥
 रामहिँ तिलक कालि जौँ भयऊ । तुम्ह कहूँ विपति बीजु विधि बयउ
 रेख खँचाइ कहउँ बलु भाषी । भामिनि भइहु दूध कइ मारवी ॥
 जौँ सुत सहित करहु सेवकाई । तौ घर रहहु न आन उपाई ॥

दो०—कद्रूँ विनतहि दीन्ह दुखु तुम्हहिँ कौसिलौँ देव ।

भरतु बंदिगृह सेइहहिँ लखनु राम के नेव ॥ १९ ॥

कैकयसुता सुनत कहु बानी । कहि न सकइ कछु सहमि सुखानी
 तन पसेउ कदली जिमि काँपी । कुबरीं दसन जीभ तव चाँपी ॥
 कहि कहि कोटिक कपट कहानी । धीरजु धरहु प्रबोधिसि रानी ॥
 फिरा करमु प्रिय लागि कुचाली । बकिहिँ सराहइ मानि मराली ॥
 सुनु मंथरा बात फुरि तोरी । दहिनि आँखि नित फरकइ मोरी
 दिन प्रति देखउँ राति कुसपने । कहउँ न तोहिँ मोह बस अपने ॥
 काह करौँ सखि सुध सुभाऊ । दाँहिन बाम न जानउँ काऊ ॥

दो०—अपनेँ चलत न आजु लागि अनभल काहुक कीन्ह ।

केहिँ अष एकहि वार मोहिँ दैअँ दुसह दुखु दीन्ह ॥ २० ॥

नैहर जनमु भरब वरु जाई । जिअत न करबि सवति सेवकाई ॥

अरि वस दैउ जिआवत जाही । मरनु नीक तेहि जीवन चाही ॥
 दीन वचन कह बहुविधि रानी । सुनि कुवरीं तियमाया ठानी ॥
 अस कस कहहु मानि मन ऊना । सुखु सोहायु तुम्ह कहुँ दिन दूना
 जेहि राउर अति अनभल ताका । सोइ पाइहि यहु फलु परिपाका ॥
 जब ॥ कुमत सुना मैं स्वामिनि । भूख न वासर नीद न जामिनि ॥
 पूँछेउँ गुनिन्ह रेख तिन्ह खाँची । भरत भुआल होहि यह साँची ॥
 भामिनि करहु त कहीं उपाऊ । है तुम्हरीं सेवा वस राऊ ॥
 दो०—परउँ कूप तुअ वचन पर सकुँ पूत पति त्यागि ।

कहसि मोर दुखु देखि बड़ कसन करव हित लागि ॥ २१ ॥

कुवरीं करि कयुली कँकेई । कपट छुरी उर पाहन टेई ॥
 लखइ न रानि निकट दुखु कँसें । चरइ हरित तिन बलि पमु जैसें ॥
 सुनत पात मृदु अंत कठोरी । देति मनहुँ मधु माहुर घोरी ॥
 यहइ चेरि सुधि अहइ कि नाहीं । स्वामिनि कहिहु कथा मोहि पाहीं
 दुइ धरदान भूप सन थाती । मागहु आजु जुड़ावहु छाती ॥
 सुतहि राजु रामहि वनवायु । देहु लेहु सब सवति हुलाम्ब ॥
 भूपति राम सपथ जब करई । तव मागेहु जेहि बचनु न टरई ॥
 होइ अक्रान्तु आजु निसि धीतें । बचनु मोर प्रिय मानेहु जी तें ॥

दो०—बड़ कुघातु करि पातकिनि कहेसि कोपशुहँ जाहु ।

काजु सँचारेहु सजग सधु सहसा जनि पतिआहु ॥ २२ ॥

कुवरिहि रानि प्रानप्रिय जानी । चार चार बड़ि बुद्धि बखानी ॥
 तोहि सम हित न मोर संसारा । बहे जात कइ भइसि अधारा ॥
 जाँ विधि पुरव मनोरथु काली । करौं तोहि चख पूतरि आली ।

बहुविधि चेरिहि आदरुं देई। कोपभवन गवनी कैकई ॥
 विपति वीजु वरपा रितु चैरी। भुईं भइ कुमति कैकई केरी ॥
 पाइ कपट जलु अंकुर जामा। वर दोउ दल दुख फल परिनामा ॥
 कोप समाजु साजि सबु सोई। राजु करत निज कुमति विगोई ॥
 राउर नगर कोलाहलु होई। यह कुचालि कष्टु जान न कोई ॥

दो०—प्रमुदित पुर नर नारि सब सजहिं सुमंगलचार ।

एक प्रविसहिं एक निर्गमहिं भीर भूप दरवार ॥ २३ ॥

बाल सखा सुनि हियँ हरपाहीं। मिलि दस पाँच राम पहिं जाहीं ॥
 प्रभु आदरहिं प्रेसु पहिचानी। पूँछहिं कुसल खेम मृदु वानी ॥
 फिरहिं भवन प्रिय आयसु पाई। करत परसपर राम बड़ाई ॥
 को रघुवीर सरिस संसारा। सीलु सनेहु निवाहनिहारा ॥
 जेहि जेहि जोनि करम बस भ्रमहीं। तहँ तहँ ईसु देउ यह हमहीं ॥
 सेवक हम स्वामी सियनाहू। होउ नात यह ओर निवाहू ॥
 अस अभिलापु नगर सब काहू। कैकयसुता हृदयँ अति दाहू ॥
 को न कुसंगति पाइ नसाई। रहइ न नीच मतेँ चतुराई ॥

दो०—साँझ समय सानंद नृपु गयउ कैकई गेहँ ।

गवनु निठुरता निकट किय जनु धरि देह सनेहँ ॥ २४ ॥

कोपभवन सुनि सकुचेउ राजु। भय बस अगहुड़ परइ न पाऊ ॥
 सुरपति वसइ वाहँबल जाकेँ। नरपति सकल रहहिं रुख ताकेँ ॥
 सो सुनि तिय रिस गयउ सुखाई। देखहु काम प्रताप बड़ाई ॥
 खल कुलिस असि अँगवनिहारे। ते रतिनाथ सुमन सर मारे ॥
 सभय नरेसु प्रिया पहिं गयऊ। देखि दसा दुखु दारुन भयऊ ॥

भूमि सयन पट्ट मोट पुराना। दिए डारि तन भूपन नाना ॥
कुमतिहि कसि कुवेपता फाथी। अनअहिवातु छच जनु भापी ॥
जाइ निकट नृपु कह मृदु बानी। प्रानप्रिया केहि हेतु रितानी ॥

छं०-केहि हेतु रानि रिसानि परसत पानि पतिहि गंगारई ।
मानहुँ सरोव भुअंग भायिनि विषम भौंति निहारई ॥
दोउ वासना रसना दसन थर मरम टाहर देगई ।
तुलसी नृपति भवतव्यता वम काम कौनुक लेगई ॥

सो०-घार घार कह राउ मुनुनि गुलांचनि विकरषनि ।
कारन मोहि मुनाउ गङ्गायिनि नित्र कौप थर ॥२५॥

अनहित तोर प्रिया केई कीन्हा। केहि दृष्टि मिर केहि जसु चह लीन्हा
फहु केहि रंकहि कर्म नगेह। कहु केहि नृरदि निकार्या देख ॥
सकउँ तोर अरि अमरुड मार्ग। कहु केहि यमूँ ना नागि ॥
जानसि मोर सुभाउ बगेन्। मनु नर अन्नन चंद चकौरु ॥
प्रिया प्रान सुत मरुप्रनु करे। पानेन प्रदा मकरु वल मोरे ॥
जाँ कहु कहीं कपटु करि देही। नदिनि गल मरुप्र सुन थोटी ॥
विहसि मागु मनभावति ह्यः। नृपुन मरुदि मनोहर गाना ॥
धरि कुयरी नृगुनि विरै देहु। देहि प्रिया पण्डिति कृतेपु ॥

सो०-कहु सुनि मरु सुनि कहु कहु विहसि देही भदिमंद ।
नृपुन मरुदि विरै देहु मरु विरै देहु देह सुनि
पुनि कहु कहु मरुदि विरै देहु। देह सुनि कहु मरुदेव
मानिनि मरुदेव मरुदेव। देह सुनि कहु मरुदेव
मरुदेव देह कहु मरुदेव मरुदेव मरुदेव

दलकि उठेउ सुनि हृदउ कठोरू । जनु छुइ गयउ पाक वरतोरू ॥
 ऐसिउ पीर विहसि तेहिं घोई । चोर नारि जिमि प्रगटिन रोई ॥
 लखहिं न भूप कपट चतुराई । कोटि कुटिल मनि गुरू पढ़ाई ॥
 जद्यपि नीति निपुन नरनाहू । नारिचरित जलनिधि अवगाहू ॥
 कपट सनेहु वढ़ाइ वहोरी । बोली विहसि नयन मुहु सोरी ॥

दो०—मागु मागु पै कहहु पिय कवहुँ न देहु न लेहु ।

देन कहेहु वरदान दुइ तेउ पावत संदेहु ॥२७॥

जाने उँ मरमु राउ हँसि कहई । तुम्हहि कोहाव परम प्रिय अहई ॥
 थाती राखि न मागिहु काऊ । विसरि गयउ मोहि भोर सुभाऊ ॥
 झूठेहुँ हमहि दोषु जनि देहू । दुइ कै चारि मागि मकु लेहू ॥
 रघुकूल रीति सदा चलि आई । प्रान जाहुँ वरु बचनु न जाई ॥
 नहिं असत्य सम पातक पुंजा । गिरिसमहोहिं कि कोटिक गुंजा ॥
 सत्यसूल सब सुकृत सुहाए । वेद पुरान विदित मनु गाए ॥
 तेहि पर राम सपथ करि आई । सुकृत सनेह अवधि रघुराई ॥
 वात वढ़ाइ कुमति हँसि बोली । कुमत कुबिहग कुलह जनु खोली ॥

दो०—भूप मनोरथ सुभग वनु सुख सुविहंग समाजु ।

भिल्लिनि जिमि छाड़न चहति वचनु भयंकरु वाजु ॥२८॥

सासपारायण, तेरहवाँ विश्राम

सुनहु प्रानप्रिय भावत जी का । देहु एक वर भरतहि टीका ॥
 मागउँ दूसर वर कर जोरी । पुरवहु नाथ मनोरथ सोरी ॥
 तापस्य वेप विसेपि उदासी । चौदह वरिस रामु वनवासी ॥

सुनि मृदु वचन भूप हियँ सोहू । ससि कर छुअत विकल जिमि कोहू
 गयउ सहमि नहिँ कछु कहि आवा । जनु सचान वन झपटेउ लावा
 विवरन भयउ निपट नरपाल । दामिनि हनेउ मनहुँ तरु ताल ॥
 मायें हाथ मृदि दोउ लोचन । तनु धरि सोचु लाग जनु सोचन ॥
 मोर मनोरथु सुरतरु फूला । फरत करिनि जिमि हतेउ समूला ॥
 अवध उजारि कीन्हि कैकेई । दीन्हिसि अचल विपति कै नेई ॥
 दो०—कवनेँ अवसर का भयउ गयउँ नारि विस्वास ।

जोग सिद्धि फल समय जिमि जतिहि अविद्या नास ॥ २९ ॥

एहि विधि राउ मनहिँ मन झाँखा । देखि कुभाँति कुमति मन माखा
 भरतु कि राउर पूत न होंही । आनेहु मोल बेसाहि कि मोही ॥
 जो सुनि सरु अस लाग तुम्हारें । काहे न बोलहु वचनु सँभारें ॥
 देहु उतरु अनु करहु कि नाहीं । सत्यसंध तुम्ह रघुकुल माहीं ॥
 देन कहेहु अब जनि घरु देहु । तजहु सत्य जग अपजसु लेहु ॥
 सत्य सराहि कहेहु वरु देना । जानेहु लेइहि मागि चवेना ॥
 सिबि दधीचि बलि जो कछु भापा । तनु धनु तजेउ वचन पनु राखा
 अति कहु वचन कहति कैकेई । मानहुँ लोन जरे पर देई ॥
 दो०—धरम धुरंधर धीर धरि नयन उघारे रायें ।

सिरु धुनि तीन्हि उसास असि मारेसि मोहि कुठायें ॥ ३० ॥

आगेँ दीखि जरत रिस भारी । मनहुँ रोष तरवारि उघारी ॥
 मूठि कुबुद्धि धार निठुराई । धरी कूवरीं सान बनाई ॥
 लखी महीप कराल कठोरा । सत्य कि जीवनु लेइहि मोरा ॥
 बोलै राउ कठिन करि छाती । वानी सविनय तासु सोहाती ॥

प्रिया वचन कस कहसि कुभाँती । भीर प्रतीति प्रीति करि हाँती ॥
 मोरें भरतु रामु दुइ आँखी । सत्य कहउँ करि संकरु साखी ॥
 अवसि दूतु मैं पठइव प्राता । ऐहहिं वेगि सुनत दोउ भ्राता ॥
 सुदिन सोधि सबु साजु सजाई । देउँ भरत कहुँ राजु बजाई ॥

दो०—लोभु न रामहि राजु कर बहुत भरत पर प्रीति ।

मैं बड़ छोट विचारि जियँ करत रहेउँ नृपनीति ॥ ३१ ॥

राम सपथसत कहउँ सुभाऊ । राममातु कछु कहेउ न काऊ ॥
 मैं सबु कीन्ह तोहि विनु पूँछें । तेहि तें परेउ मनोरथु छूँछें ॥
 रिस परिहरु अव मंगल साजू । कछु दिन गएँ भरत जुवराजू ॥
 एकहि बात मोहि दुखु लागा । वर दूसर असमंजस मागा ॥
 अजहूँ हृदउ जरत तेहि आँचा । रिस परिहास कि साँचेहुँ साँचा ॥
 कहुँ तजि रोषु राम अपराधु । सबु कोउ कहइ रामु सुठि साधु ॥
 तुहूँ सराहसि करसि सनेहू । अब सुनि मोहि भयउ संदेहू ॥
 जासु सुभाउ अरिहि अनुकूला । सो किमि करिहि मातु प्रतिकूला ॥

दो०—प्रिया हास रिस परिहरहि मागु विचारि विवेकु ।

जेहि देखौँ अब नयन भरि भरत राज अभिषेकु ॥ ३२ ॥

जिए मीन बरु वारि विहीना । मनि विनु फनिकु जिए दुख दीना
 कहउँ सुभाउ न छलु मन माहीं । जीवनु मोर राम विनु नाहीं ॥
 समुझि देखु जियँ प्रिया प्रवीना । जीवनु राम दरस आधीना ॥
 सुनि मृदु वचन कुमति अति जरई । मनहुँ अनल आहुति घृत परई ॥
 कहइ करहु किन कोटि उपाया । इहाँ न लागिहि राउरि माया ॥
 देहु कि लेहु अजसु करि नाहीं । मोहि न बहुत प्रपंच सोहाहीं ॥

रामु साधु तुम्ह साधु सयाने । राममातु भलि सब पहिचाने ॥
जस कौसिलाँ मोर भल ताका । तस फलु उन्हहि देउँ करि साका ॥
दो०-होत प्रातु मुनिवेष धरि जौ न रामु वन जाहिं ।

मोर मरनु राउर अबस नृप समुझिअ मन माहिं ॥ ३३ ॥

अस कहि कुटिल भई उठि ठाढ़ी । मानहुँ रोष तरंगिनि घाढ़ी ॥
पाप पहार प्रगट भइ सोई । भरी क्रोध जल जाइ न जोई ॥
दोउ घर कूल कठिन हठ धारा । भवँर कृवरी वचन प्रचारा ॥
ढाहत भूपरूप तरु मूला । चली विपति वारिधि अनुकूला ॥
लखी नरेस बात फुरि साँची । तिय मिस मीचु सीस पर नाची ॥
गहि पद विनय कीन्ह वैठारी । जनि दिनकर कुल होसि कुठारी ॥
मागु माथ अवहीं देउँ तोही । राम विरहँ जनि मारसि मोही ॥
रागु राम कहँ जेहि तेहि भाँती । नाहिं त जरिहि जनम भरि छाती ॥

दो०-देखी व्याधि असाध नृपु परेउ धरनि धुनि माय ।

कहत परम आरत वचन राम राम रघुनाथ ॥ ३४ ॥

व्याकुल राउ सिधिल सब गाता । करिनि कलपतरु मनहुँ निपाता ॥
फँटु सख मुख आव न बानी । जनु पाठीनु दीन विनु पानी ॥
पुनि कह कहु कठोर कैकेई । मनहुँ घाय महुँ माहुर देई ॥
जौ अंतहुँ अस करतवु रहेऊ । मागु मागु तुम्ह कहिं चल कहेऊ ॥
दुइ कि होइ एक समय भुआला । हँसव ठठाइ फुलाउव गाला ॥
दानि कहाउव अरु कृपनाई । होइ कि खेम कुसल रौताई ॥
छाड़हु वचनु कि धीरजु धरहु । जनि अबला जिमि करुना करहु ॥
तनु तिय वनय धामु धनु धरनी । सत्यसंध कहँ तनु सम बरनी ॥

ले पहर भूपु नित जागा । आजु हमहि बड़ अचरजु लागा ॥
 सुमंत्र जगावहु जाई । कीजिअ काजु रजायसु पाई ॥
 सुमंत्रु तव राउर माहीं । देखि भयावन जात डेराहीं ॥
 साइ जनु जाइ न हेरा । मानहुँ विपति विपाद वसेरा ॥
 कोउ न ऊतरु देई । गए जेहि भवन भूप कैंकेई ॥
 कीज्य जीव वैठ सिरु नाई । देखि भूप गति गयउ सुखाई ॥
 सोनिकल विबरन महि परेऊ । मानहुँ कमल मूळ परिहरेऊ ॥
 श्रित सभित सकइ नहिँ पूँछी । बोली असुभ भरी सुभ छूठी ॥

दो०—रती न राजहि नीद निति हेतु जान जगदीसु ।

रामु रामु रति भोरु किय कहइ न मरमु महीसु ॥ ३८ ॥
 कहहु रामहि बेगि बोलाई । समाचार तव पूँछहु आई ॥
 कोउ सुमंत्रु राय रुख जानी । लखी कुचालि कीन्हि कछु रानी ॥
 शेष विकल मग परइ न पाऊ । रामहि बोलि कहिहि का राज ॥
 शं धरि धीरजु गयउ दुआरें । पूँछहिँ सकल देखि मनु मारें ॥
 समाधानु करि सो सभही का । गयउ जहाँ दिनकर कुल टीका ॥
 राम सुमंत्रहि आवत देखा । आदरु कीन्ह पिता सम लेखा ॥
 निरखि बदनु कहि भूप रजाई । रघुकुलदीपहि चलेउ लेखाई ॥
 रामु कुभाँति सचिव संग जाहाँ । देखि लोग जहँ तहँ विलखाहीं ॥

दो०—जाइ दीख रघुवंसमनि नरपति निपट कुसाजु ।

सहमि परेउ लखि सिधनिहि मनुहुँ वृद्ध गगराजु ॥ ३९ ॥
 सखहिँ अधर जरइ सयु अंगू । मनहुँ दीन मनिहीन भुअंगू ॥
 मरुप समीप दीखि कैंकेई । मानहुँ मीचु घरीं गनि लेई ॥

करुनामय मृदु राम सुभाऊ । प्रथम दीख दुख सुना न काऊ ॥
 तदपि धीर धरि समउ विचारी । पूँछी मधुर बचन महतारी ॥
 मोहि कहु मातु तात दुख कारन । करिअ जतन जेहिं होइ निवारन ॥
 सुनहु राम सबु कारनु एहू । राजहि तुम्ह पर बहुत सनेह ॥
 देन कहेन्हि मोहि दुइ वरदाना । मागेउँ जो कछु मोहि सोहाना ॥
 सो सुनि भयउ भूप उर सोचू । छाड़ि न सकहिं तुम्हार संकोचू ॥
 दो०—सुत सनेहु इत बचनु उत संकट परेउ नरेसु ।

सकहु त आयसु धरहु सिर मेटहु कठिन कलेसु ॥ ४० ॥

निधरक बैठि कहइ कहु बानी । सुनत कठिनता अति अकुलानी ॥
 जीभ कमान बचन सर नाना । मनहुँ महिप मृदु लच्छ समाना ॥
 जनु कठोरपनु धरें सरीरू । सिखइ धनुपविद्या वर वीरू ।
 सबु प्रसंगु रघुपतिहि सुनाई । बैठि मनहुँ तनु धरि निटुराई ।
 मन मुसुकाइ भानुकुल भानू । राम सहज आनंद निधानू ।
 बोले बचन विगत सब दूपन । मृदु मंजुल जनु बाग विभूषन ।
 सुनु जननी सोइ सुतु बड़भागी । जो पितु मातु बचन अनुरागी ॥
 तनय मातु पितु तोपनिहारा । दुर्लभ जननि सकल संसारा ।
 दो०—मुनिगन मिलनु विसेपि बन सवहि भँति हित मोर ।

तेहि महँ पितु आयसु बहुरि संमत जननी तोर ॥ ४१ ॥

भरतु प्रानप्रिय पावहिं राजू । विधि सब विधि मोहि सनमुख आज
 जौं न जाउँ वन ऐसेहु काजा । प्रथम गनिअ मोहि मूढ़ समाजा ।
 सेवहिं अरँडु कलपतरु त्यागी । परिहरि अमृत लेहिं विषु मागी ।
 तेउन पाइअस समउ चुकाहीं । देखु विचारि मातु मन माहीं ।

अंत्र एक दुखु मोहि विसेपी । निपट विकल नरनायकु देखी ॥
 धोरिहिं रात पितहि दुख भारी । होति प्रतीति न मोहि महतारी ॥
 राउ धीर गुन उदधि अगाध । भा मोहि तें कछु बड़ अपराध ॥
 जातें मोहि न कहत कछु राऊ । मोरि सपथ तोहि कहु सतिभाऊ ॥

दो०—सहज सरल रघुबर बचन कुमति फुटिल करि जान ।

चलइ जोक जल बकगति जघपि सलिलु समान ॥ ४२ ॥

रहसी रानि राम रुख पाई । बोली कपट सनेहु जनार्ई ॥
 सपथ तुम्हार भरत कै आना । हेतु न दूसर में कछु जाना ॥
 तुम्ह अपराध जोगु नहिं ताता । जननी जनक बंधु सुखदाता ॥
 राम सत्य सयु जो कछु कहह । तुम्ह पितु मातु बचन रत अहह ॥
 पितहि बुझाइ कहहु बलि सोई । चाँथेपन जेहिं अजसु न होई ॥
 तुम्ह सम सुअन सुकृत जेहिं दीन्है । उचित न तामु निरादरु कीन्है ॥
 लागहिं कुमुख बचन सुभ कैसे । मगहँ गयादिक तीरथ जैसे ॥
 रामहि मातु बचन सब भाए । जिमि सुरसरि गत सलिल सुहाए ॥

दो०—गइ मुहछा रामहि सुमिरि नृप फिरि करवट लीन्ह ।

सचिय राम आगमन कहि धिनय समय तम कीन्ह ॥ ४३ ॥

अवनिप अकनि रामु पशु धारे । धरि धीरजु तब नयन उघारे ॥
 सचियँ संभारि राउ बैठारे । चरन परत नृप रामु निहारे ॥
 लिए सनेह विकल उर लाई । गँ मनि मनहुँ फनिक फिरि पाई ॥
 रामहि चितइ रहैउ नरनाह । चला विलोचन वारि प्रवाह ॥
 सोक विवस कछु कहै न पारा । हृदयँ लगावत वारहिं वारा ॥
 विधिहि मनाव राउ मन माहीं । जेहिं रघुनाथ न कानन जाहीं ॥

सुमिरि महेसहि कहइ निहोरी । विनती सुनहु सदासिव मोरी ॥

आसुतोष तुम्ह अचढर दानी । आरति हरहु दीन जनु जानी ॥

दो०—तुम्ह प्रेरक सब के हृदयँ सो मति रामहि देहु ।

वचनु मोर तजि रहहिं घर परिहरि सीलु सनेहु ॥ ४४ ॥

अजसु होउ जग सुजसु नसाऊ । नरक परौं वरु सुरपुरु जाऊ ।

सब दुख दुसह सहावहु मोही । लोचन ओट रामु जनि होही ।

अस मन गुनइ राउ नहिं बोला । पीपर पात सरिस मनु डोला ।

रघुपति पितहि प्रेमवस जानी । पुनि कछु कहिहि मातु अनुमानी ।

देस काल अवसर अनुसारी । बोले वचन विनीत बिचारी ।

तात कहउँ कछु करउँ ढिठाई । अनुचितु छमव जानि लरिकाई ।

अति लघु वात लागि दुखु पावा । काहुँ न मोहि कहि प्रथम जनाव ।

देखि गोसाइँहि पूँछिउँ माता । सुनि प्रसंगु भए सीतल गाता ।

दो०—मंगल समय सनेह वस सोच परिहरिअ तात ।

आयसु देइअ हरषि हियँ कहि पुलके प्रमु गात ॥ ४५ ॥

धन्य जनमु जगतीतल तासु । पितहि प्रमोदु चरित सुनि जासु ।

चारि पदारथ करतल ताकेँ । प्रिय पितु मातु प्रान सम जाकेँ ।

आयसु पालि जनम फलु पाई । ऐहउँ वेगिहिं होउ रजाई ।

विदा मातु सन आवउँ मागी । चलिहउँ वनहि बहुरि पग लागी ।

अस कहि राम गवनु तव कीन्हा । भूप सोक वस उतरु न दीन्हा ।

नगर व्यापि गइ वात सुतीछी । छुअत चढ़ी जनु सब तन बीछी ।

सुनि भए विकल सकल नर नारी । बेलि ब्रिटप जिमि देखि दवा ।

जो जहँ सुनइ धुनइ सिरु सोई । वड़ विपादु नहिं धीरजु होई ।

दो०—मुख सुखाहि लोचन सत्रहि सोकु न हृदयें समाइ ।

मनहुँ करुन रस कटकई उतरी अवध बजाइ ॥ ४६ ॥

मिलेहि माझ विधि बात बेगारी । जहँ तहँ देहि कैकइहि गारी ॥

एहि पापिनिहि बृषि का परेऊ । छाइ भवन पर पावकु धरेऊ ॥

निज कर नयन काढ़ि चह दीखा । डारि मुधा त्रिपु चाहत चीखा ॥

कुटिल कठोर कुचुडि अभागी । भइ रघुवंस वेनु बन आगी ॥

पालव बैठि पेहु एहि काटा । सुख महुँ सोक ठाडु धरि ठाटा ॥

सदा रामु एहि प्रान समाना । कारन कवन कुटिलपनु ठाना ॥

सत्य कहहि कयि नारि सुभाऊ । सब विधि अगहु अगाध दुराऊ ॥

निज प्रतिबिंबु बरुकु गहि जाई । जानि न जाइ नारि गति भाई ॥

दो०—काह न पावकु जारि सक का न समुद्र समाइ ।

का न करै अबला प्रबल केहि जग कालु न लाइ ॥ ४७ ॥

का सुनाइ विधि काह मुनावा । का देखाइ चह काह देखावा ॥

एक कहहि भल भूप न कीन्हा । बरु विचारि नहि कुमतिहि दीन्हा

जो हठि भयउ सकल दुख भाजनु । अबला विवस ग्यानु गुनु गा जनु

एक धरम परमिति पहिचाने । नृपहि दोसु नहि देहि सयाने ॥

मिषि दर्धीचि हरिचंद कहानी । एक एक सन कहहि बखानी ॥

एक भरत कर संमत कहहीं । एक उदास भायँ मुनि रहहीं ॥

कान मूदि कर रद गहि जीहा । एक कहहि यह बात अलीहा ॥

सुकृत जाहि अस कहत तुम्हारे । रामु भरत कहुँ प्रानपिआरे ॥

दो०—चंडु चवै घरु अनल कन सुधा होइ विपतूल ।

सपनेहुँ कबहुँ न करहि किछु भरतु राम प्रतिचूल ॥ ४८ ॥

एक विधातहि दूपनु देहीं। सुधा देखाइ दीन्ह विपु जेहीं ॥
 खरभरु नगर सोचु सब काहू। दुसह दाहु उर मिटा उछाहू ॥
 विप्रबधू कुलमान्य जठेरी। जे प्रिय परम कैकई केरी ॥
 लगीं देन सिख सीलु सराही। बचन बानसम लागहिं ताही ॥
 भरतु न मोहि प्रिय राम समाना। सदा कहहु यहु सत्रु जगु जाना ॥
 करहु राम पर सहज सनेहू। केहिं अपराध आजु बनु देहू ॥
 कबहुँ न कियहु सवति आरेसू। प्रीति प्रतीति जान सबु देसू ॥
 कौसल्याँ अब काह बिगारा। तुम्ह जेहि लागि वज्र पुर पारा ॥

दो०—सीय कि पिय सँगु परिहरिहि लखनु कि रहिहहिं धाम ।

राजु कि भूँजव भरत पुर नृपु कि जिइहि विनु राम ॥४९॥

अस बिचारि उर छाड़हु कोहू। सोक कलंक कोठि जनि होहू ॥
 भरतहि अवसि देहु जुबराजू। कानन काह राम कर काजू ॥
 नाहिन रामु राज के भूखे। धरम धुरीन विषय रस रूखे ॥
 गुर गृह बसहुँ रामु तजि गेहू। नृप सन अस बरु दूसर लेहू ॥
 जौं नहिं लगिहहु कहें हमारे। नहिं लागिहि कलु हाथ तुम्हारे ॥
 जौं परिहास कीन्हि कलु होई। तौ कहि प्रगट जनावहु सोई ॥
 राम सरिस सुत कानन जोगू। काह कहिहि सुनि तुम्ह कहूँ लोगू ॥
 उठहु वेगि सोइ करहु उपाई। जेहि विधि सोकु कलंकु नसाई ॥

छं०—जेहि भाँति सोकु कलंकु जाइ उपाय करि कुल पालही ।

हटि फेरु रामहि जात बन जनि वात दूसरि चालही ॥

जिमि भानुविनु दिनु प्रान विनु तनु चंद विनु जिमि जामिनी।

तिमि अवध तुलसी दास प्रभु विनु समुझि घौं जियँ भामिनी ॥

सो०—ससिन्ह सिखावनु दीन्ह सुनत मधुर परिनाम हित ।

तेइँ कछु कान न कीन्ह कुटिल प्रबोधी कूचरी ॥ ५० ॥

उतरु न देइ दुसह रिस रूखी । मृगिन्ह चितव जनु वाधिनि भूखी
व्याधि असाधि जानि तिन्ह त्यागी । चलीं कहत मतिमंद अभागी ॥

राजु करत यह दैअं बिगोई । कीन्हेसि अस जस करइ न कोई ॥
एहि विधि विलपहिं पुर नर नारीं । देहिं कुचालिहि कोटिक गारीं ॥

जरहिं विपम जर लैहिं उसासा । कवनि राम विनु जीवन आमा ॥
विपुल वियोग प्रजा अहूलानी । जनु जलचर गन म्रवत पानी ॥

अति विपाद बस लोग लोगाईं । गए मातु पहिं रामु गोसाईं ॥
मुख प्रसन्न चित चौगुन चाऊ । मिटा मोचु जनि राखै राऊ ॥

दो०—नव गयंडु रघुवीर मनु राजु अलान समान ।

छूट जानि बन गवनु सुनि उर अनंदु अधिकान ॥ ५१ ॥

रघुकुलतिलक जोरि दोउ हाथा । मुदित मातु पद नायउ माथा ॥
दीन्हि असीस लाइ उर लीन्है । भूपन बसन निछावरि कीन्है ॥

बार बार मुख चुंभति माता । नयन नेह जलु पुलकित गाता ॥
गोद राखि पुनि हृदयँ लगाए । म्रवत प्रेमरस पयद सुहाए ॥

प्रेमु प्रमोदु न कछु कहि जाई । रंक धनद पदवी जनु पाई ॥
सादर सुंदर बदनु निहारी । बोली मधुर बचन महतारी ॥

कहहु तात जननी बलिहारी । कवहिं लगन मुद मंगलकारी ॥
सुकृत सील सुख सीवँ सुहाई । जनम लाभ कइ अवधि अघाई ॥

दो०—त्रेहि चाहत नर नारि सच अति आरत एहि भौंति ।

जिमि चातक चातकि तृपित वृष्टि सरद रितु स्वाति ॥ ५२ ॥

तात जाउँ बलि बेगि नहाहू । जो मन भाव मधुर कछु खाहू ॥
 पितु समीप तब जाएहु भैया । भइ बड़ि बार जाइ बलि मैआ ॥
 मातु वचन सुनि अति अनुकूला । जनु सनेह सुरतरु के फूला ॥
 सुख मकरंद भरे श्रियमूला । निरखि राम मनु भवँरु न भूला ॥
 धरम धुरीन धरम गति जानी । कहेउ मातु सन अति मृदु बानी ॥
 पिताँ दीन्ह मोहि कानन राजू । जहँ सब भाँति मोर बड़ काजू ॥
 आयसु देहि मुदित मन माता । जेहिँ मुद मंगल कानन जाता ॥
 जनि सनेह बस डरपसि भोरें । आनँदु अंब अनुग्रह तोरें ॥

दो०—वरप चारिदस विपिन वसि करि पितु वचन प्रमान ।

आइ पाय पुनि देखिहउँ मनु जनि करसि मलान ॥ ५३ ॥

वचन विनीत मधुर रघुवर के । सर सम लगे मातु उर करके ॥
 सहमि सुखि सुनि सीतलि बानी । जिमि जवास परें पावस पानी ॥
 कहि न जाइ कछु हृदय विपादू । मनहुँ मृगी सुनि केहरि नादू ॥
 नयन सजल तन थर थर काँपी । माजहि खाइ मीन जनु मापी ॥
 धरि धीरजु सुत बदनु निहारी । गदगद वचन कहति महतारी ॥
 तात पितहि तुम्ह प्रानपिआरे । देखि मुदित नित चरित तुम्हारे ॥
 राजु देन कहँ सुभ दिन साधा । कहेउ जान बन केहिँ अपराधा ॥
 तात सुनावहु मोहि निदानू । को दिनकर कुल भयउ कृसानू ॥
 दो०—निरखि राम रुख सचिवसुत कारनु कहेउ वृझाइ ।

सुनि प्रसंगु रहि मूक जिमि दसा बरनि नहिँ जाइ ॥ ५४ ॥

राखि न सकइ न कहि सक जाहू । दुहँ भाँति उर दारुन दाहू ॥
 लिखत सुधाकर गाँलिखि राहू । विधि गति बाम सदा सब काहू ॥

धरम सनेह उभयँ मति धेरी। भइ गति साँप छुछुंदरि केरी ॥
 राखउँ सुतहि करउँ अनुरोधू। धरमु जाइ अरु वंधु विरोधू ॥
 कहउँ जान बन ताँ बड़ि हानी। संकट सोच विवस भइ रानी ॥
 बहुरि समुझि तिय धरमु सयानी। रामु भरतु दोउ सुत सम जानी ॥
 सरल सुभाउ राम महतारी। बोली बचन धीर धरि भारी ॥
 तात जाउँ बलि कीन्हेंहु नीका। पितु आयसु सब धरमकटोका ॥

दो०—राजु देन कहि दोन्ह धनु मोहि न तो दुख लेसु ।

तुम्ह धिनु भरतहि मूपतिहि प्रजहि प्रचंड कलेसु ॥ ५५ ॥

जाँ केवल पितु आयसु ताता। ताँ जनि जाहु जानि बड़ि माता ॥
 जाँ पितु मातु कहेंउ बन जाना। ताँ कानन सत अवध समाना ॥
 पितु बनदेव मातु बनदेवी। खग मृग चरन सरोरुह सेवी ॥
 अंतहुँ उचित नृपहि बनवास। बय विलोकि हियँ होइ हराँस ॥
 बड़भागी धनु अवध अभागी। जो रघुवंसतिलक तुम्ह त्यागी ॥
 जाँ सुत कहीं संग मोहि लेह। तुम्हरे हृदयँ होइ संदेह ॥
 पूत परम प्रिय तुम्ह सबही के। प्रान प्रान के जीवन जी के ॥
 वै तुम्ह कहहु मातु बन जाऊँ। मैं सुनि बचन बँठि पछिताऊँ ॥

दो०—यह विचारि नहि करउँ हठ सूट सनेहु वदाइ ।

मानि मातु कर नात बलि सुरति बिसरि जनि जाइ ॥ ५६ ॥

देव पितर सब तुम्हहि गोसाईं। राखहुँ पलकनयन की नाई ॥
 अवधि अंधु प्रिय परिजन मीना। तुम्ह करुनाकर धरम धुरीना ॥
 अस विचारि सोइ करहु उपाई। सबहि जिअत जेहिं भेंटहु आई ॥
 जाहु सुखेन बनहि बलि जाऊँ। करि अनाथ जन परिजन गाऊँ ॥

सब कर आजु सुकृत फल बीता । भयउ कराल कालु विपरीता ॥
 बहुविधि विलपि चरन लपटानी । परम अभागिनि आपुहि जानी ॥
 दारुन दुसह दाहु उर व्यापा । वरनि न जाहिं विलाप कलापा ॥
 राम उठाइ मातु उर लाई । कहि मृदु वचन वहु रि समुझाई ॥
 दो०—समाचार तेहि समय सुनि सीय उठी अकुलाइ ।

जाइ सासु पद कमल जुग बंदि बैठि सिरु नाइ ॥ ५७ ॥

दीन्हि असीस सासु मृदु बानी । अति सुकुमारि देखि अकुलानी ॥
 बैठि नमितमुख सोचति सीता । रूप रासि पति प्रेम पुनीता ॥
 चलन चहत वन जीवननाथू । केहि सुकृती सन होइहि साथू ॥
 कीं तनु प्रान कि केवल प्राना । विधि करतवु कछु जाइ न जाना ॥
 चारु चरन नख लेखति धरनी । नूपुर मुखर मधुर कबि बरनी ॥
 मनहुँ प्रेम बस विनती करहीं । हमहि सीय पद जनि परिहरहीं ॥
 मंजु विलोचन मोचति वारी । बोली देखि राम महतारी ॥
 तात सुनहु सिय अति सुकुमारी । सास ससुर परिजनहि पिआरी ॥

दो०—पिता जनक भूपाल मनि ससुर भानुकुल भानु ।

पति रविकुल कैरव त्रिपिन विधु गुन रूप निधानु ॥ ५८ ॥

मैं पुनि पुत्रवधू प्रिय पाई । रूप रासि गुन सील सुहाई ॥
 नयन पुतरि करि प्रीति वढ़ाई । राखेउँ प्रान जानकिहिं लाई ॥
 कलपवेलि जिमि बहुविधि लाली । सींचि सनेह सलिल प्रतिपाली ॥
 फूलत फलत भयउ विधि वामा । जानि न जाइ काह परिनामा ॥
 पलंग पीठ तजि गोद हिंडोरा । सियँ न दीन्ह पगु अत्रनि कठोरा ॥
 जिअन मूरि जिमि जोगवत रहऊँ । दीप वाति नहिं टारन कहऊँ ॥

सोई सिय चलन चहति वन साथी । आयसु काह होइ रघुनाथा ॥
चंद किरन रस रसिक चकोरी । रवि सुख नयन सकइ किमि जोरी
दो०—करि केहरि निसिचर चरहि दुष्ट जंतु वन भूरी ।

बिष बाटिकों कि सोह सुत सुभग सजीवनि मूरी ॥ ५९ ॥

वन हित कोल किरात किसोरी । रचीं बिरंचि विषय सुख भोरी ॥
पाहन कृमि जिमि कठिन सुभाऊ । तिन्हहि कलेसु न कानन काऊ ॥
कं तापस तिय कानन जोगू । जिन्ह तप हेतु तजा सब भोगू ॥
सिय वन बसिहि तात केहि भाँती । चित्र लिखित कपि देखि डेराती
सुरसर सुभग वनज वन चारी । डार जोगु कि हंसकुमारी ॥
अस विचारि जस आयसु होई । मैं सिख देउँ जानकिहि सोई ॥
जां सिय भवन रहै कह अंबा । मोहि कहँ होइ बहुत अवलंबा ॥
मुनि रघुवीर मातु प्रिय वानी । सील सनेह सुधाँ जनु मानी ॥

दो०—कहि प्रिय वचन विवेकमय कोन्हि मातु परितोष ।

लंगे प्रबोधन जानकिहि प्रगटि विपिन गुन दोष ॥ ६० ॥

मासपारायण, चौदहवाँ विश्राम

मातु समीप कहत सकुचार्ही । बोले समउ समुझि मन माहीं ॥
राजकुमारि सिखावनु सुनह । आन भाँति जियँ जनि कलु गुनह
आपन मोर नीक जाँ चहह । बचनु हमार मानि गृह रहह ॥
आयसु मोर सामु सेवकाई । सब विधि भामिनि भवन भलाई ॥
एहि ते अधिक धरमु नहिँ दूजा । सादर सामु समुर पद पूजा ॥
जय जय मातु करिहि सुधि मोरी । होइहि प्रेम बिकल मति भोरी ॥

तव तव तुम्ह कहि कथा पुरानी । सुंदरि समुझाएहु मृदु बानी ॥
कहउँ सुभायँ सपथ सत मोही । सुमुखि मातु हित राखउँ तोही ॥

दो०—गुर श्रुति संमत धरम फलु पाइअ विनहिं कलेस ।

हठ बस सब संकट सहे गालव नहुप नरेस ॥ ६१ ॥

मैं पुनि करि प्रवान पितु बानी । बेगि फिरब सुनु सुमुखि सयानी
दिवस जात नहिं लागिहि बारा । सुंदरि सिखवनु सुनहु हमारा ॥
जौँ हँठ करहु प्रेम बस बामा । तौ तुम्ह दुखु पाउब परिनामा ॥
काननु कठिन भयंकरु भारी । घोर घामु हिम वारि बयारी ॥
कुस कंटक मग काँकर नाना । चलब पयादेहिं बिनुपदत्राना ॥
चरन कमल मृदु मंजु तुम्हारे । मारग अगम भूमिधर भारे ॥
कंदर खोह नदीं नद नारे । अगम अगाध न जाहिं निहारे ॥
भालु बाध वृक केहरि नागा । करहिं नाद सुनि धीरजु भागा ॥

दो०—भूमि सयन बलकल वसन असनु कंद फल मूल ।

ते कि सदा सब दिन मिलहिं सवुइ समय अनुकूल ॥ ६२ ॥

नर अहार रजनीचर चरहीं । कपट वेष विधि कोटिक करहीं ॥
लागइ अति पहार कर पानी । विपिन विपति नहिं जाइ बखानी ॥
व्याल कराल बिहग बन घोरा । निसिचर निकर नारि नर चोरा ॥
डरपहिं धीर गहन सुधि आएँ । मृगलोचनि तुम्ह भीरु सुभाएँ ॥
हंसगवनि तुम्ह नहिं बन जोगू । सुनि अपजसु मोहि देइहि लोगू ॥
मानस सलिल सुधाँ प्रतिपाली । जिअइ कि लवन पयोधि मराली ॥
नव रसाल बन बिहरनसीला । सोह कि कोकिल विपिन करीला ॥
रहहु भवन अस हृदयँ बिचारी । चंदबदनि दुखु कानन भारी ॥

दो०—सहज सुहृद गुर स्वामि सिख जो न करइ सिर मनि ।

सो पछिताइ अघाइ उर अयसि होइ हित हानि ॥ ६३ ॥

सुनि मृदु वचन मनोहर पिय के । लोचन ललित भरे जल सिय के ॥
सीतल सिख दाहक भइ कैसैं । चकइहि सरद चंद निसि जसैं ॥
उतरु न आय बिकल बंदेही । तजन चहत मुचिं स्वामि सनेही ॥
घरयस रोकि विलोचन वारी । धरि धीरजु उर अवनिकुमारी ॥
लागि सासु पग कह कर जोरी । छमयि देवि बड़ि अचिनय मोरी ॥
दीन्हि प्रानपति मोहि सिख सोई । जेहि विधि मोर परम हित होई ॥
मैं पुनि समुझि दीखि मन माहीं । पिय बियोग सम दुखु जग नाहीं ॥
दो०—प्राननाथ करुनायतन सुंदर सुखद सुजान ।

तुम्ह बिनु रघुकुल कुमुद विधु सुरपुर नरक समान ॥ ६४ ॥

मातु पिता भगिनी प्रिय भाई । प्रिय परिवारु सुहृद समुदाई ॥
सासु सगुर गुर सजन महाई । सुत सुंदर सुसील सुखदाई ॥
जहँ लगि नाथ नेह अरु नाते । पिय बिनु तियहि तरनिहु ते ताते ॥
तनु धनु धामु धरनि पुर राजू । पति बिहीन सत्रु सांक समाजू ॥
भोग रोगसम भूषन भारू । जम जातना सरिस संसारू ॥
प्राननाथ तुम्ह बिनु जग माहीं । मो कहूँ सुखद कतहुँ कछु नाहीं ॥
जिय बिनु देह नदी बिनु वारी । तसिअ नाथ पुरुष बिनु नारी ॥
नाथ सकल सुख साथ तुम्हारें । सरद बिमल विधु बदनु निहारें ॥
दो०—ज्ञग मृग परिजन नगरु वनु चलकल विमल दुकूल ।

नाथ साथ सुरसदन सम परनमाल सुख मूल ॥ ६५ ॥

वनदेवीं वनदेव उदारा । करिहहिं सासु सगुर सम सारा ॥

कुस किसलय माथरी मुहाई । प्रभु संग मंजु मनोज तुराई ॥
 कंद मूल फल अमिअ अहारू । अवध सौध सत सरिस पहारू ॥
 छिनु छिनु प्रभु पद कमल विलोकी । रहिहउँ मुदित दिवस जिमि कोकी
 वन दुख नाथ कहे बहुतेरे । भय विपाद परिताप घनेरे ॥
 प्रभु वियोग लवलस समाना । सब मिलि होहिं न कृपानिधाना ॥
 अस जियँ जानि सुजान सिरोमनि । लेइअ संग मोहि छाड़िअ जनि
 विनती बहुत करौं का स्वामी । करुनामय उर अंतरजामी ॥

दो०—राखिअ अवध जो अवधि लागि रहत न जनिअहिं प्रान ।

दोनबंधु सुंदर सुखद सोल सनेह निधान ॥ ६६ ॥

मोहि मग चलत न होइहि हारी । छिनु छिनु चरन सरोज निहारी ॥
 सबहि भाँति पिय सेवा करिहौं । मारग जनित सकल श्रम हरिहौं ॥
 पाय परवारि बैठि तरु छाहीं । करिहउँ बाउ मुदित मन माहीं ॥
 श्रम कन सहित स्याम तनु देखें । कहँ दुख समउ प्रानपति पखें ॥
 सम महि तन तरुपल्लव डासी । पाय पलोटिहि सब निसि दासी ॥
 बार बार मृदु मूरति जोही । लागिहि तात बयारि न मोही ॥
 को प्रभु संग मोहि चितवनिहारा । सिंघबधुहि जिमि ससक सिआरा
 मैं सुकुमारि नाथ बन जोगू । तुम्हहि उचित तप मो कहँ भोगू ॥

दो०—ऐसेउ वचन कठोर सुनि जौं न हृदउ बिलगान ।

तौ प्रभु विषम त्रियोग दुख सहिहहिं पावँर प्रान ॥ ६७ ॥

अस कहि सीय विकल भइ भारी । बचन वियोगु न सकी सँभारी ॥
 देखि दसा रघुपति जियँ जानां । हठि राखें नहिं राखिहि प्राना ॥
 कहेउ कृपाल भानुकुलनाथा । परिहरि सोचु चलहु बन साथी ॥

नहिं त्रिपाद कर अवसरु आजू । वेगि करहु वन गवन समाजू ॥
 कहि प्रिय वचन प्रिया समुझाई । लगे मातु पद आसिप पाई ॥
 वेगि प्रजा दुख भेटव आई । जननी निठुर विसरि जनि जाई ॥
 फिरिहि दसा विधिबहुरि कि मारी । देखिहउं नयन मनोहर जोरी ॥
 गुदिन सुपरी तात कर होइहि । जननी जिअत बदन विधु जोइहि ॥

दो०—बहुरि बच्छ कहि लालु कहि रघुपति रघुवर तात ।

कबहि बांलाइ लगाइ हियै हरपि निरखिहउं गात ॥ ६८ ॥

लखि सनेह कातरि महतारी । वचनु न आव रिक्कल भइ भारी ॥
 राम प्रबोधु कीन्ह विधि नाना । समउ सनेहु न जाइ बखाना ॥
 तव जानकी सामु पग लागी । मुनिअ माय में परम अभागी ॥
 सेवा समय दैअ वनु दीन्हा । मोर मनोरथु सफल न कीन्हा ॥
 तजव छोभु जनि छाड़िअ छोह । करसु कठिन कछु दोगु न मोह ॥
 मुनि सिय वचन सामु अकुलानी । दसा कवनि विधि कहीं गवानी ॥
 धारहिं वार लाइ उर लीन्ही । धरि धीरजु सिख आसिप दीन्ही ॥
 अचल हांड अहियातु तुम्हारा । जव लागि गंग जमुन जल धारा ॥

दो०—सीतहि सामु असीस सिख दीन्हि अनेक प्रकार ।

चली नाइ पद पदुप सिरु अति हित चारहि वार ॥ ६९ ॥

समाचार जव लछिमन पाए । व्याकुल विलख बदन उठि धाए ॥
 कंप पुलक तन नयन सर्नारा । गहे चरन अति प्रेम अधीरा ॥
 कहि न सकत कछु चितवत टाढ़े । मीनु दीन जनु जल तें काढ़े ॥
 सोचु हृदय विधि का होनिहारा । मनु मुखु सुकृतु सिरान हमारा ॥
 मो कहूँ काह कहव रघुनाथा । रखिहहिं भवन कि लेहहिं साथा ॥

राम बिलोकि बंधु कर जोरें । देह गेह सब सन तनु तोरें ॥
 बोले बचनु राम नय नागर । सील सनेह सरल सुख सागर ॥
 तात प्रेम बस जनि कदराहू । समुझि हृदयँ परिनाम उछाहू ॥

दो०—मातु पिता गुरु स्वामि सिख सिर धरिं करहिं सुभायँ ।

लहेउ लाभु तिन्ह जनम कर नतरु जनमु जग जायँ ॥ ७० ॥

अस जियँ जानि सुनहु सिख भाई । करहु मातु पितु पद सेवकाई ॥
 भवन भरतु रिपुसूदन नार्हीं । राउ वृद्ध मम दुखु मन माहीं ॥
 मैं बन जाउँ तुम्हहि लेइ साथा । होइ सबहि बिधि अवध अनाथा ॥
 गुरु पितु मातु प्रजा परिवारू । सब कहूँ परइ दुसह दुख भारू ॥
 रहहु करहु सब कर परितोषू । नतरु तात होइहि वड़ दोषू ॥
 जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी । सो नृपु अत्रसि नरक अधिकारी ॥
 रहहु तात असि नीति बिचारी । सुनत लखनु भए व्याकुल भारी ॥
 सिअरें बचन सुखि गए कैसें । परसत तुहिन तामरसु जैसें ॥

दो०—उतरु न आवत प्रेम बस गहे चरन अकुलाइ ।

नाथ दासु मैं स्वामि तुम्ह तजहु त काह वसाइ ॥ ७१ ॥

दीन्हि मोहि सिख नीकि गोसाईं । लागि अगम अपनी कदराई ॥
 नरवर धीर धरम धुर धारी । निगम नीति कहूँ ते अधिकारी ॥
 मैं सिसु प्रभु सनेहँ प्रतिपाला । मंदरु मेरु कि लेहिं मराला ॥
 गुर पितु मातु न जानउँ काहू । कहउँ सुभाउ नाथ पतिआहू ॥
 जहँ लागि जगत सनेह सगाई । प्रीति प्रतीति निगम निजु गाई ॥
 मोरें सबइ एक तुम्ह स्वामी । दीनबंधु उर अंतरजामी ॥
 धरम नीति उपदेसिअ ताही । कीरति भति मगति पिय ताही ॥

मन क्रम वचन चरन रत होई । कृपासिंधु परिहरिअ कि सोई ॥

दो०—करुनासिंधु मुबंधु के सुनि मृदु वचन विनीत ।

तमुझाए उर लाइ प्रमु जानि सनेहें समीत ॥ ७२ ॥

मागहु विदा मातु सन जाई । आवहु बेगि चलहु वन भाई ॥

मुदित भए सुनि रघुवर बानी । भयउ लाभ बढ गइ बड़ि हानी ॥

हरपित हृदयें मातु पहिं आए । मनहुँ अंध फिरि लोचन पाए ॥

जाइ जननि पग नायउ माथा । मनु रघुनंदन जानकि साथा ॥

पूँछे मातु मलिन मन देखी । लखन कही सब कथा विसेपी ॥

गई सहमि सुनि वचन कठोरा । मृगी देखि दव जनु चहुँ ओरा ॥

लखन लखेउ भा अनरथ आज् । एहिं सनेह वस करष अकाज् ॥

मागत विदा सभय सकुचार्हीं । जाइ संग विधिकहिहि कि नाहीं ॥

दो०—समुझि सुमित्रों राम सिय रूपु सुसीतु तुभाउ ।

नृप सनेहु लखि धुनेउ सिरु पापिनि दीन्ह कुदाउ ॥ ७३ ॥

धीरजु धरेउ कुअवसर जानी । सहज मुहद बोली मृदु बानी ॥

तात तुम्हारि मातु बँदेही । पिता रामु सय भाँति सनेही ॥

अवध तहाँ जहँ राम निवास । तहँई दिवमु जहँ भानु प्रकास ॥

जों प सीय रामु वन जाहीं । अवध तुम्हार काजु कछु नाहीं ॥

गुर पितु मातु बंधु सुर साई । सेइअहिं सकल प्रान की नाई ॥

रामु प्रानप्रिय जीवन जी के । स्वारथ रहित सखा सप ही के ॥

पूजनीय प्रिय परम जहाँ तें । सब मानिअहिं राम के नातें ॥

अस जियँ जानि संग वन जाह । लेहु तात जग जीवन लाह ॥

दो०—भूरि भाग भाजनु भयहु मोहि समेत बलि जाउँ ।

जौं तुम्हरे मन छाडि छलु कीन्ह राम पद टाउँ ॥ ७४ ॥

पुत्रवती जुवती जग सोई । रघुपति भगतु जासु सुतु होई ॥

नतरु बाँझ भलि बादि बिआनी । राम विमुख सुत तें हित जानी ॥

तुम्हरेहिं भाग रामु बन जाहीं । दूसर हेतु तात कलु नाहीं ॥

सकल सुकृत कर बड़ फलु एहू । राम सीय पद सहज सनेहू ॥

रागु रोषु इरिषा महु मोहू । जनि सपनेहुँ इन्ह के बस होहू ॥

सकल प्रकार विकार विहाई । मन क्रम वचन करेहु सेवकाई ॥

तुम्ह कहूँ बन सब भाँति सुपासू । संग पितु मातु रामु सिय जासू ॥

जेहिं न रामु बन लहहिं कलेसू । सुत सोइ करेहु इहइ उपदेसू ॥

छं०—उपदेसु यहु जेहि तात तुम्हरे राम सिय सुख पावहीं ।

पितु मातु प्रिय परिवार पुर सुख सुरति बन विसरावहीं ॥

तुलमी प्रभुहि सिख देइ आयसु दीन्ह पुनि आसिप दई ।

रति होउ अविरल अमल सिय रघुवीर पद नित नित नई ॥

सो०—मातु चरन सिरु नाइ चले तुरत संकित हृदयँ ।

बागुर विपम तोराइ मनहुँ भाग मृगु भाग बस ॥ ७५ ॥

गए लखनु जहँ जानकिनाथू । भे मन मुदित पाइ प्रिय साथू ॥

बंदि राम सिय चरन सुहाए । चले संग नृपमंदिर आए ॥

कहहिं परसपर पुर नर नारी । भलि बनाइ विधि वात विगारी ॥

तन कृस मन दुखु वदन मलीने । विकल मनहुँ माखी मधु छीने ॥

कर मीजहिं सिरु धुनि पछिताहीं । जनु विनु पंख विहग अकुलाहीं ॥

भइ बडि भीर भूप दरबारा । वरनि न जाइ विषादु अपारा ॥

एहि विधि राम सबहि समुझावा । गुर पद पदुम हरपि सिरु नावा ॥
 गनपति गौरि गिरीसु मनाई । चले असीस पाइ रघुराई ॥
 राम चलत अति भयउ विपाद । सुनि न जाइ पुर आरत नाद ॥
 कुन्तगुन लंक अवध अति सोकू । हरप विपाद विषस सुरलोकू ॥
 गइ मुरुछा तब भूपति जागे । बोलि सुमंशु कहन अस लागे ॥
 राम चले वन प्रान न जाहीं । केहि मुख लागि रहत तन माहीं ॥
 एहि तें कवन ० यथा बलवाना । जो दुखु पाइ तजहिं तनु प्राना ॥
 पुनि धरि धीर कहइ नरनाह । लै रघु संग सखा तुम्ह जाह ॥

०—सुठि सुकुमार कुमार दोउ जनकगुता सुकुमारि ।

चदाइ देराराइ वनु फिरहु गएँ दिव पारि ॥ ८१ ॥

धीर दोउ भाई । सत्यसंध दृढगत रघुराई ॥

कुमार ० । फेरिअ प्रभु मिथिलेस किरासी ॥

० । डेराई । कहेहु मोरि सिख अवसरु पाई ॥

सँदेस । पुत्रि फिरिअ वन घहुत कलेस ॥

० । रहेहु जहाँ रुचि होइ तुम्हारी ॥

० । फिरइ त होइ प्रान अवलंघा ॥

० । कछु न बसाइ भएँ विधि घामा ॥

० । रामु लखनु सिय आनि देखाऊ ॥

अति वेग घनाइ ।

० दोउ भाइ ॥ ८२ ॥

० रथ रामु चदाए ॥

० । सिरु नाई ॥

दो०—सिख सीतलि हित मधुर मृदु सुनि सीतहि न सोहानि ।

सरद चंद चंदिनि लगत जनु चकई अकुलानि ॥ ७८ ॥

सीय सकुच बस उतरु न देई । सो सुनि तमकि उठी कैकेई ॥
 मुनि पट भूषन भाजन आनी । आगें धरि बोली मृदु बानी ॥
 नृपहि प्रानप्रिय तुम्ह रघुबीरा । सील सनेह न छाड़िहि भीरा ॥
 सुकृतु सुजसु परलोकु नसाऊ । तुम्हहि जान बन कहिहिन काऊ ॥
 अस बिचारि सोइ करहु जो भावा । राम जननि सिख सुनि सुखु पाव ॥
 भूपहि बचन बानसम लागे । करहिं न प्रान पयान अभागे ॥
 लोग बिकल मुरुछित नरनाहू । काह करिअ कछु सूझ न काहू ॥
 रामु तुरत मुनि वेषु बनाई । चले जनक जननिहि सिरु नाई ॥

दो०—सजि बन साजु समाजु सवु बनिता बंधु समेत ।

बंदि विप्र गुर चरन प्रभु चले करि सवहि अचेत ॥ ७९ ॥

निकसि बसिष्ट द्वार भए ठाढ़े । देखे लोग बिरह दव दाढ़े ॥
 कहि प्रिय बचन सकल समुझाए । विप्र बृंद रघुवीर बोलाए ॥
 गुर सन कहि बरषासन दीन्हे । आदर दान विनय बस कीन्हे ॥
 जाचक दान मान संतोषे । मीत पुनीत प्रेम परितोषे ॥
 दासीं दास बोलाइ बहोरी । गुरहि सौंपि बोले कर जोरी ॥
 सब कै सार सँभार गोसाईं । करबि जनक जननी की नाई ॥
 चारहिं बार जोरि जुग पानी । कहतरामु सब सन मृदु बानी ॥
 सोइ सब भाँति मोर हितकारी । जेहिं तें रहै भुआल सुखारी ॥

दो०—मातु सकल मोरे विरहैं जेहिं न होहि दुख दीन ।

सोइ उपाउ तुम्ह करेहु सव पुर जन परम प्रवीन ॥ ८० ॥

एहि विधि राम सवहि समुझावा । गुर पद पदुम हरपि सिरु नावा ॥
 गनपति गौरि गिरीसु मनाई । चले असीस पाइ रघुराई ॥
 राम चलत अति भयउ विपादू । सुनि न जाइ पुर आरत नादू ॥
 कुसगुन लंक अवध अति सोकू । हरप विपाद विवस सुरलोकू ॥
 गइ मुरुछा तव भूपति जागे । वोलि सुमंत्रु कहन अस लागे ॥
 रामु चले वन प्रान न जाहीं । केहि सुख लागि रहत तन माहीं ॥
 एहि तें कवन यथा बलवाना । जो दुखु पाइ तजहिं तनु प्राना ॥
 पुनि धरि धीर कहइ नरनाहू । लै रथु संग सखा तुम्ह जाहू ॥

दो०—सुठि सुकुमार, कुमार दोउ जनकसुता सुकुमारि ।

रथ चढ़ाइ देखराइ वनु फिरहु गएँ दिन चारि ॥ ८१ ॥

जौं नहिं फिरहिं धीर दोउ भाई । सत्यसंध दृढ़व्रत रघुराई ॥
 तौ तुम्ह विनय करेहु कर जोरी । फेरिअ प्रभु मिथिलेस किसोरी ॥
 जव सिय कानन देखि डेराई । कहेहु मोरि सिख अवसरु पाई ॥
 सासु सगुर अस कहेउ सँदेख । पुत्रि फिरिअ वन बहुत कलेख ॥
 पितुगृह कवहुँ कवहुँ ससुरारी । रहेहु जहाँ रुचि होइ तुम्हारी ॥
 एहि विधि करेहु उपाय कदंबा । फिरइ न होइ प्रान अवलंबा ॥
 नाहिं त भोर मरनु परिनामा । कछु न बसाइ भाँँ विधि वामा ॥
 अस कहि मुरुछि परा महि राऊ । रामु लखनु सिय आनि देखाऊ ॥

दो०—पाइ रजायसु नाइ सिरु रथु अति वेग बनाइ ।

गयउ जहाँ बाहेर नगर सीय सहित दोउ भाइ ॥ ८२ ॥

तत्र सुमंत्र नृप वचन सुनाए । करि विनती रथ रामु चढ़ाए ॥
 चढ़ि रथ सीय सहित दोउ भाई । चले हृदयँ अवधहि सिरु नाई ॥

दो०—सिख सीतलि हित मधुर मृदु सुनि सीतहि न सोहानि ।

सरद चंद चंदिनि लगत जनु चकई अकुलानि ॥ ७८ ॥

सीय सकुच बस उतरु न देई । सो सुनि तमकि उठी कैकेई ॥
 मुनि पट भूषन भाजन आनी । आगें धरि बोली मृदु बानी ॥
 नृपहि प्रानप्रिय तुम्ह रघुवीरा । सील सनेह न छाड़िहि भीरा ॥
 सुकृतु सुजसु परलोकु नसाऊ । तुम्हहि जान बन कहिहिन काऊ ॥
 अस विचारि सोइ करहु जो भावा । राम जननि सिख सुनि सुखु पावा ॥
 भूपहि वचन वानसम लागे । करहिं न प्रान पयान अभागे ॥
 लोग विकल मुरुछित नरनाहू । काह करिअ कछु सझ न काहू ॥
 रामु तुरत मुनि वेषु वनाई । चले जनक जननिहि सिरुनाई ॥

दो०—सजि बन साजु समाजु सवु वनिता वंधु समेत ।

वंदि विप्र गुर चरन प्रभु चले करि सवहि अचेत ॥ ७९ ॥

निकसि वसिष्ठ द्वार भए ठाढ़े । देखे लोग विरह दव दाढ़े ॥
 कहि प्रिय वचन सकल समुझाए । विप्र वृंद रघुवीर बोलाए ॥
 गुर सन कहि वरपासन दीन्हे । आदर दान विनय बस कीन्हे ॥
 जाचक दान मान संतोषे । मीत पुनीत प्रेम परितोषे ॥
 दासी दास बोलाइ बहोरी । गुरहि सौंपि बोले कर जोरी ॥
 सब कै सार सँभार गोसाईं । करवि जनक जननी की नाई ॥
 वारहिं वार जोरि जुग पानी । कहत रामु सब सन मृदु बानी ॥
 सोइ सब भाँति मोर हितकारी । जेहिं तें रहै भुआल सुखारी ॥

दो०—मातु सकल मोरे विरहैं जेहिं न होहिं दुख दीन ॥

सोइ उपाउ तुम्ह करेहु सब पुर जन परम प्रवीन ॥ ८० ॥

एहि विधि राम सवहि समुझावा । गुर पद पदुम हरपि सिरु नावा ॥
 गनपति गौरि गिरीसु मनाई । चले असीस पाइ रघुराई ॥
 राम चलत अति भयउ विपाद । सुनि न जाइ पुर आरत नाद ॥
 कुसगुन लंक अवध अति सोक । हरप विपाद विवस सुरलोक ॥
 गइ मुरुछा तव भूपति जागे । वोलि सुमंत्र कहन अस लागे ॥
 रामु चले वन प्रान न जाहीं । केहि सुख लागि रहत तन माहीं ॥
 एहि तें कवन व्यथा बलवाना । जो दुखु पाइ तजहिं तनु प्राना ॥
 पुनि धरि धीर कहइ नरनाह । लै रघु संग सखा तुम्ह जाह ॥

दो०—सुठि सुकुमार कुमार दोउ जनकशुता सुकुमारि ।

रथ चढाइ देसराइ वनु फिरेहु गएँ दिन चारि ॥ ८१ ॥

जौ नहिं फिरहिं धीर दोउ भाई । सत्यसंध दृढग्रत रघुराई ॥
 तौ तुम्ह विनय करेहु कर जोरी । फेरिअ प्रभु मिथिलेस किसोरी ॥
 जय सिय कानन देखि डेराई । कहेहु मोरि सिख अवसरु पाई ॥
 सासु ससुर अस कहेउ सँदेख । पुत्रि फिरिअ वन बहुत कलेख ॥
 पितुगृह क्यहुँ क्यहुँ समुरारी । रहेहु जहाँ रुचि होइ तुम्हारी ॥
 एहि विधि करेहु उपाय कदंबा । फिरइ त होइ प्रान अवलंबा ॥
 नाहिं त मोर मरनु परिनामा । कछु न बसाइ भएँ विधि चामा ॥
 अस कहि मुरुछि परा महि राऊ । रामु लखनु सिय आनि देखाऊ ॥

दो०—पाइ रजायसु नाइ सिरु रघु अति वेग चनाइ ।

गयउ जहाँ बाहेर नगर सीय सहित दोउ भाइ ॥ ८२ ॥

तव सुमंत्र नृप वचन सुनाए । करि विनती रथ रामु चढाए ॥
 चढ़ि रथ सीय सहित दोउ भाई । चले हृदयँ अवधहि सिरु नाई ॥

सीलु सनेहु छाड़ि नहिं जाई। असमंजस वस भे रघुराई ॥
 लोग सोग श्रम वस गए सोई। कलुक देवमार्यो मति मोई ॥
 जवहिं जाम जुग जामिनि वीती। राम सचिव सन कहेउ सप्रीती ॥
 खोज मारि रघु हाँकहु ताता। आन उपायँ वनिहि नहिं वाता ॥
 दो०—राम लखन सिय जान चदि संभु चरन सिरु नाइ ।

सचिवँ चलायउ तुरत रघु इत उत खोज दुराट ॥ ८५ ॥

जागे सकल लोग भएँ भोरु। गे रघुनाथ भयउ अति सोरु ॥
 रथ कर खोज कतहुँ नहिं पावहिं। राम राम कहि चहुँ दिसि धावहिं ॥
 मनहुँ धारिनिधि बूढ़ जहाजू। भयउ विकल बड़ बनिक समाजू ॥
 एकहि एक देहिं उपदेसू। तजे राम हम जानि कलेसू ॥
 निंदहिं आपु सराहहिं मीना। धिग जीवनु रघुवीर विहीना ॥
 जाँपे प्रिय वियोगु विधिकीन्हा। तौ कस मरनु न मार्गे दीन्हा ॥
 एहि विधिकरत प्रलाप कलापा। आए अवध भरे परितापा ॥
 विपम वियोगु न जाइ घखाना। अवधि आस सब राखहिं प्राणा ॥
 दो०—राम दरस हित नेम धत लगे करन नर नारि ।

मनहुँ कोक कोकी कमल दीन विहीन तमारि ॥ ८६ ॥

सीता सचिव सहित दोउ भाई। संगवेरपुर पहुँचे जाई ॥
 उतरे राम देवसरि देखी। कीन्ह दंडवत हरपु बिसेपी ॥
 लखन सचिवँ सियँ किए प्रनामा। सबहि सहित सुगु पायउ रामा ॥
 गंग सकल मुद मंगल मूला। सब सुख करनि हरनि सब सुला ॥
 कहि कहि कोटिक कथा प्रसंगा। रामु विलोकहिं गंग तरंगा ॥
 सचिवहि अनुजहि प्रियहि सुनाई। विबुध नदी महिमा अधिकारी ॥

मज्जनु कीन्ह पंथ श्रम गयऊ । सुचि जलु पिअत मुदित मन भय
सुमिरत जाहि मिटइ श्रम भारु । तेहि श्रम यह लौकिक व्यवहारु ।

दो०—सुद्ध सच्चिदानंदमय कंद भानुकुल केतु ।

चरित करत नर अनुहरत संसृति सागर सेतु ॥ ८७ ॥

यह सुधि गुहँ निपाद जब पाई । मुदित लिए प्रिय बंधु बोलाई ।
लिए फल मूल भेंट भरि भारा । मिलन चलेउ हियँहरषु अपारा ।
करि दंडवत भेंट धरि आगें । प्रभुहि विलोक्त अति अनुरागें ।
सहज सनेह विवस रघुराई । पूँछी कुसल निकट वैठाई ।
नाथ कुसल पद पंकज देखें । भयउँ भागभाजन जन लेखें ।
देव धरनि धनु धामु तुम्हारा । मैं जनु नीचु सहित परिवारा ।
कृपा करिअ पुर धारिअ पाऊ । थापिय जनु सबु लोगु सिहाऊ ।
कहेहु सत्य सबु सखा सुजाना । मोहि दीन्ह पितु आयसु आना ।

दो०—वरप चारिदस वासु बन मुनि व्रत वेषु अहारु ।

ग्राम वासु नहिँ उचित सुनि गुहहि भयउ दुखु भारु ॥ ८८ ॥

राम लखन सिय रूप निहारी । कहहिँ सप्रेम ग्राम नर नारी ।
ते पितु मातु कहहु सखि कैसे । जिन्ह पठए बन बालक ऐसे ।
एक कहहिँ भल भूपति कीन्हा । लोयन लाहु हमहि विधि दीन्हा ।
तब निपादपति उर अनुमाना । तरु सिंसुपा मनोहर जाना ।
लै रघुनाथहिँ ठाउँ देखावा । कहेउ राम सब भाँति सुहावा ।
पुरजन करि जोहारु घर आए । रघुवर संध्या करन सिधाए ।
गुहँ सँवारि साँथरी डसाई । कुस किसलयमय मृदुल सुहाई ।
सुचि फल मूल मधुर मृदु जानी । दोना भरि भरि राखेसि पानी ।

दो०—सिय सुमंत्र आता सहित कंद मूल फल साइ ।

सयन कीन्ह रघुवंसमनि पाय पलोत्त भाइ ॥ ८९ ॥

उठे लखनु प्रभु सोवत जानी । कहि सचिवहि सोवन मृदु वानी ॥
 कलुक दूरि सजि बान सरासन । जागन लगे बैठि वीरासन ॥
 गुहँ बोलाइ पाहरू प्रतीती । ठावँ ठावँ राखे अति प्रीती ॥
 आपु लखन पहिँ बैठेउ जाई । कटि भाथी मर चाप चढ़ाई ॥
 सोवत प्रभुहि निहारि निपादु । भयउ प्रेम वस हृदयँ विपादु ॥
 तनु पुलकित जलु लोचन बहई । बचन सप्रेम लखन मन कहई ॥
 भूपति भवन सुभायँ सुहावा । सुरपति सदनु न पटतर पावा ॥
 मनिमय रचित चारु चौधारे । जनु रतिपति निज हाथ सँवारे ॥

दो०—सुनि सुविचित्र सुभोगमय सुमन सुगंध सुवास ।

पलँग मंजु मनिदीप जहँ सब विधि सकल मुपास ॥ ९० ॥

विविध वसन उपधान तुराई । छीर फेन मृदु त्रिसद सुहाई ॥
 तहँ सिय रामु सयन निसि करहीं । निज छवि रति मनोज महु हरहीं ॥
 ते सिय रामु साथरीं सोए । श्रमित वसन विनु जाहिँ न जाए ॥
 मातु पिता परिजन पुरवासी । सखा सुसील दास अरु दासी ॥
 जोगबहिँ जिन्हहि प्राण की नाई । महि सोवत तेइ राम गोसाई ॥
 पिता जनक जग विदित प्रभाऊ । समुर सुरेश सखा रघुराऊ ॥
 रामचंद्रु पति सो बँदेही । सोवत महि विधि वामन केही ॥
 सिय रघुवीर कि कानन जोगू । करम प्रधान सत्य कह लोगू ॥

दो०—कैकयनंदिनि मंदमति कठिन कुटिलपनु कीन्ह ।

जेहि रघुनंदन जानकिहि सुसं अवसर दुखु दीन्ह ॥ ९१ ॥

मज्जनु कीन्ह पंथ श्रम गयऊ । सुचि जलु पिअत मुदित मन भयऊ
सुमिरत जाहि मिटइ श्रम भारू । तेहि श्रम यह लौकिक व्यवहारू ॥

दो०—सुद्ध सच्चिदानंदमय कंद भानुकुल केतु ।

चरित करत नर अनुहरत संसृति सागर सेतु ॥ ८७ ॥

यह सुधि गुहँ निपाद जब पाई । मुदित लिए प्रिय बंधु बोलाई ॥
लिए फल मूल भेंट भरि भारा । मिलन चलेउ हियँहरषु अपारा ॥
करि दंडवत भेंट धरि आगें । प्रभुहि विलोकत अति अनुरागें ॥
सहज सनेह विवस रघुराई । पूँछी कुसल निकट बैठाई ॥
नाथ कुसल पद पंकज देखें । भयउँ भागभाजन जन लेखें ॥
देव धरनि धनु धामु तुम्हारा । मैं जनु नीचु सहित परिवारा ॥
कृपा करिअ पुर धारिअ पाऊ । थापिय जनु सबु लोगु सिहाऊ ॥
कहेहु सत्य सबु सखा सुजाना । मोहि दीन्ह पितु आयसु आना ॥

दो०—वरप चारिदस वासु वन मुनि व्रत वैपु अहारू ।

ग्राम वासु नहिँ उचित सुनि गुहहि भयउ दुखु भारू ॥ ८८ ॥

राम लखन सिय रूप निहारी । कहहिँ सप्रेम ग्राम नर नारी ॥
ते पितु मातु कहहु सखि कैसे । जिन्ह पठए वन बालक ऐसे ॥
एक कहहिँ भल भूपति कीन्हा । लोयन लाहु हमहि विधि दीन्हा ॥
तब निपादपति उर अनुमाना । तरु सिंसुपा मनोहर जाना ॥
लै रघुनाथहिँ ठाउँ देखावा । कहेउ राम सब भाँति सुहावा ॥
पुरजन करि जोहारू घर आए । रघुवर संध्या करन सिधाए ॥
गुहँ सँवारि साँथरी डसाई । कुस किसलयमय मृदुल सुहाई ॥
सुचि फल मूल मधुर मृदु जानी । दोना भरि भरि राखेसि पानी ॥

दो०—सिय सुमंत्र आता सहित कंद मूल फल खाइ ।

सयन कीन्ह स्वयंसमनि पाय पलोटत भाइ ॥ ८९ ॥

उठे लखनु प्रभु सोवत जानी । कहि सचिवहि सोवन मृदु वानी ॥
 कछुक दूरि सजि वान सरासन । जागन लगे बैठि वीरासन ॥
 गुहँ शोलाइ पाहरू प्रवीती । ठावँ ठावँ राखे अति प्रीती ॥
 आपु लखन पहिँ बैठेउ जाई । कटि भाथी मर चाप चढ़ाई ॥
 सोवत प्रभुहि निहारि निपाडू । भयउ प्रेम बस हृदयँ विपाडू ॥
 तनु पुलकित जळु लोचन बहई । वचन सप्रेम लखन मन कहई ॥
 भूपति भवन सुभायँ सुहावा । सुरपति सदनु न पटतर पावा ॥
 मनिमय रचित चारु चौवारे । जनु रतिपति निज हाथ सँवारे ॥

दो०—सुधि सुविचित्र सुभोगमय सुमन सुगंध सुवास ।

पहँग मंजु मनिदोष जहँ सय विधि सकल सुपास ॥ ९० ॥

विधिध वसन उपधान सुराई । छीर फेन मृदु विसद सुहाई ॥
 नहँ सिय रामु सयन निसि करहीं । निज छवि रति मनोज मदु हरहीं ॥
 ते सिय रामु साथरीं सोए । श्रमित वसन विनु जाहिँ न जोए ॥
 मातु पिता परिजन पुरवासी । सखा सुसील दास अरु दासी ॥
 जोगवहिँ जिन्हहि प्रान की नाई । महि सोवत तेइ राम गोसाई ॥
 पिता जनक जग विदित प्रभाऊ । ससुर सुरेस सखा रघुराऊ ॥
 रामचंदु पति सो वैदेही । सोवत महि विधि वामन केही ॥
 सिय रघुवीर कि कानन जोगू । करम प्रधान सत्य कह लोगू ॥

दो०—कैकयनंदिनि मंदमति कठिन कुटिलपनु कीन्ह ।

जेहि रघुनंदन जानकिहि सुख अंतर दुरु दीन्ह ॥ ९१ ॥

भइ दिनकर कुल विटप कुठारी । कुमति कीन्ह सब बिख दुखारी ।
 भयउ विषादु निषादहि भारी । राम सीय महि सयन निहारी ॥
 बोले लखन मधुर मृदु बानी । ग्यान विराग भगति रस सानी ॥
 काहु न कोउ सुख दुख कर दाता । निज कृत करम भोग सबु आता
 जोग वियोग भोग भल मंदा । हित अनहित मध्यम भ्रम फंदा ॥
 जनमु मरनु जहँ लगि जग जालू । संपति विपति करमु अरु कालू ॥
 धरनि धामु धनु पुर परिवारू । सरगु नरकु जहँ लगि व्यवहारू ॥
 देखिअ सुनिअ गुनिअ मन माहीं । मोह मूल परमारथु नाहीं ॥

दो०—सपनें होइ भिखारि नृपु रंकु नाकपति होइ ।

जागें लामु न हानि कछु तिमि प्रपंच जियँ जोइ ॥ ९२ ॥

अस विचारि नहिं कीजिअ रोसू । काहुहि वादि न देइअ दोसू ॥
 मोह निसाँ सबु सोवनिहारा । देखिअ सपन अनेक प्रकारा ॥
 एहिं जग जामिनि जागहिं जोगी । परमारथी प्रपंच वियोगी ॥
 जानिअ तबहिं जीव जग जागा । जव सब विषय विलास विरागा ॥
 होइ विवेकु मोह भ्रम भागा । तव रघुनाथ चरन अनुरागा ॥
 सखा परम परमारथु एहू । मन क्रम वचन राम पद नेहू ॥
 राम ब्रह्म परमारथ रूपा । अविगत अलख अनादि अनूपा ॥
 सकल विकार रहित गतभेदा । कहि नित नेति निरूपहिं वेदा ॥

दो०—भगत भूमि भूसुर सुरभि सुर हित लागि कृपाल ।

करत चरित घरि मनुज तनु सुनत मिटहिं जग जाल ॥ ९३ ॥

मासपारायण, पंद्रहवाँ विश्राम

सखा समुझि अस परिहरि मोह । सिय रघुवीर चरन रत होह ॥
 कहत राम गुन भा भिनुसारा । जागे जग मंगल सुखदारा ॥
 सकल सौच करि राम नहावा । सुचि सुजान बट छीर भगावा ॥
 अनुज सहित सिर जटा बनाए । देखि सुमंत्र नयन जल छाए ॥
 हृदय दाहु अति बदन मलीना । कह कर जोरि वचन अति दीना ॥
 नाथ कहेउ अस कोसलनाथा । लै रयु जाहु राम केँ साथा ॥
 बनु देखाइ सुरसरि अन्हवाई । आनेहु फेरि वेगि दौउ भाई ॥
 लखनु रामु सिय आनेहु फेरी । संसय सकल संकोच निवेरी ॥

दो०—नृप अस कहेउ गोसाईं जस कहइ करी बलि सोइ ।

करि बिनती पायन्ह परेउ दीन्ह बाल जिमि रोइ ॥ ९४ ॥

चात कृपा करि कीजिअ सोई । जातें अवध अनाथ न होई ॥
 मंत्रिहि राम उठाइ प्रबोधा । तात धरम मतु तुम्ह सभु सोधा ॥
 सियि दधीच हरिचंद नरेसा । सहे धरम हित कोटि कलेसा ॥
 रंतिदेव बलि भूप सुजाना । धरमु धरेउ सहि संकट नाना ॥
 धरमु न दूसर सत्य समाना । आगम निगम पुरान बखाना ॥
 मै सोइ धरमु सुलभ करि पावा । तजें तिहूँ पुर अपजमु छावा ॥
 संभावित कहूँ अपजस लाह । मरन कोटि सम दारुन दाह ॥
 तुम्ह सन तात बहुत का कहऊँ । दिगँ उतरु फिरि पातकु लहऊँ ॥

दो०—पितु पद गहि कहि कोटि नति विनय करब कर जोरि ।

चिंता कचनिहु बात केँ तात करिअ जनि मोरि ॥ ९५ ॥

तुम्ह पुनि पितु सम अति हित मोरें । विनती करउँ तात कर जोरें
 सब बिधि सोइ करतव्य तुम्हारें । दुख न पाव पितु सोच हमारें

सुनि रघुनाथ सचिव संबादू। भयउ सपरिजन बिकल निपादू ॥
 पुनि कछु लखन कही कटु बानी। प्रभु वरजे बड़ अनुचित जानी ॥
 सकुचि राम निज सपथ देवाई। लखन सँदेसु कहिअ जनि जाई ॥
 कह सुमंत्रु पुनि भूप सँदेसु। सहिन सकिहि सिय विपिन कलेर
 जेहि बिधि अवध आव फिरि सीया। सोइ रघुवरहि तुम्हहि करनीया
 नतरु निपट अवलंब बिहीना। मै न जिअव जिमि जल बिनु मीना
 दो०—मइकेँ ससुरेँ सकल सुख जवहिँ जहाँ मनु मान ।

तहँ तव रहिहि सुखेन सिय जव लगि विपति बिहान ॥ ९६ ॥

विनती भूप कीन्ह जेहि भाँती। आरति प्रीति न सो कहि जाती ॥
 पितु सँदेसु सुनि कृपानिधाना। सियहि दीन्ह सिख कोटि बिधाना
 सासु ससुर गुर प्रिय परिवारू। फिरहु त सब कर मिटै खभारू ॥
 सुनि पति वचन कहति वैदेही। सुनहु प्रानपति परम सनेही ॥
 प्रभु करुनामय परम बिवेकी। तनु तजि रहति छाँह किमि छेँकी
 प्रभा जाइ कहँ भानु विहाई। कहँ चंद्रिका चंदु तजि जाई ॥
 पतिहि प्रेममय विनय सुनाई। कहति सचिव सन गिरा सुहाई ॥
 तुम्ह पितु ससुर सरिस हितकारी। उतरु देउँ फिरि अनुचित भारी
 दो०—आरति बस सनमुख भइउँ विलगु न मानव तात ।

आरजसुत पद कमल विनु वादि जहाँ लगि नात ॥ ९७ ॥

पितु वैभव विलास मै डीठा। नृप मनि मुकुट मिलित पद पीठा ॥
 सुख निधान अस पितु गृह मोरें। पिय बिहीन मन भाव न भोरें ॥
 ससुर चक्रवइ कोसलराऊ। भुवन चारिदस प्रगट प्रभाऊ ॥
 आगें होइ जेहि सुरपति लेई। अरध सिंघासन आसनु देई ॥

ससुरु एतादृश अवध निवास । प्रिय परिवारु मातु सम सासु ॥
विनु रघुपति पद पदुम परागा । मोहि केउ सपनेहुँ सुखद न लागी
अगम पंथ वनभूमि पहारा । करि केहरि सर सरित अपारा ॥
कोल किरात कुंग व्रिहंगा । मोहि सब सुखद प्रानपति संगी ॥

दो०—सासु समुर सन मोरि हुँति विनय करवि परि पायँ ।

मोर सोचु जनि करिअ कछु मँ वन सुखी सुभायँ ॥ ९८ ॥

प्राननाथ प्रिय देवर साथी । चीर घुरीन धरें धनु भाथा ॥
नहिं मग भ्रमु भ्रमु दुख मन मोरें । मोहिलगि सोचु करिअ जनि भौरें
मुनि मुमंत्रु सिय सीतलि बानी । भयउ विकल जनु फनि मनि हानी
नयन दृक्ष नहिं सुनइ न काना । कहि न सकइ कछु अति अकूलाना
राम प्रबोधु कीन्ह बहु भौंती । तदपि होति नहिं सीतलि छाती ॥
जतन अनेक साथ हित कीन्हें । उचित उतर रघुनंदन दीन्हें ॥
मेटि जाइ नहिं राम रजाई । कठिन करम गति कछु न बसाई ॥
राम लखन सिय पद सिरु नाई । फिरेउ वनिक जिमि मूर गवाई ॥

दो०—रघु हाँकेउ हय राम तन हेरि हेरि हिहिनाहिं ।

देखि निपाद विपादवस धुनहिं सीस पछिताहिं ॥ ९९ ॥

जासु वियोग विकल पसु ऐसैं । प्रजा मातु पितु जिइहहिं कैसैं ॥
व्रवस राम मुमंत्रु पटाए । सुरसरि तीर आपु तत्र आए ॥
मागी नाव न केवहु आना । कहइ तुम्हार भरमु मैं जाना ॥
चरन कमल रज कहँ सबु कहई । मानुष करनि मूरि कछु अहई ॥
शुभत सिला भइ नारि सुहाई । पाहन तें न काठ कठिनाई ॥
वरनिउ मुनि धरिनी होइ जाई । वाट परइ मोरि नाव उड़ाई ॥

एहिं प्रतिपालउँ सबु परिवारू । नहिं जानउँ कछु अउर कवारू ॥
जौं प्रभु पार अवसि गा चहहू । मोहि पद पदुम पखारन कहहू ॥

छं०—पद कमल घोड़ चढ़ाइ नाव न नाथ उतराईं चहौं ।

मोहि राम राउरि आन दसरथ सपथ सब साची कहौं ॥

वरु तीर मारहुँ लखनु पै जव लगि न पाय पखारिहौं ।

तव लगि न तुलसीदास नाथ कृपाल पारु उतारिहौं ॥

सो०—सुनि केवट के वैन प्रेम लपेटे अटपटे ।

विहसे करुनाएन चितइ जानकी लखन तन ॥ १०० ॥

कृपासिंधु बोले मुसुकाई । सोइ करु जेहिं तव नाव न जाई ॥

त्रेगि आनु जल पाय पखारू । होत विलंबु उतारहि पारू ॥

जासु नाम सुमिरत एक वारा । उतरहिं नर भवसिंधु अपारा ॥

सोइ कृपालु केवटहि निहोरा । जेहिं जगु क्रिय तिहु पगहु ते थोरा ॥

पद नख निरखि देवसरि हरपी । सुनि प्रभु वचन मोहँ मति करपी ॥

केवट राम रजायसु पावा । पानि कठवता भरि लेइ आवा ॥

अति आनंद उमगि अनुरागा । चरन सरोज पखारन लागा ॥

वरपि सुमन सुर सकल सिहाहीं । एहि सम पुन्यपुंज कोउ नाहीं ॥

दो०—पद पखारि जलु पान करि आपु सहित परिवार ।

पितर पारु करि प्रभुहि पुनि मुदित गयउ लेइ पार ॥ १०१ ॥

उतरि ठाढ़ भए सुरसरि रेता । सीय रामु गुह लखन समेता ।

केवट उतरि दंडवत कीन्हा । प्रभुहि सकुच एहि नहिं कछु दीन्हा ।

पिय हिय की सिय जाननिहारी । मनि छुदरी मन मुदित उतारी ।

कहेउ कृपाल लेहि उतराई । केवट चरन गहे अकुलाई ।

नाथ आजु मैं काह न पावा । मिटे दोष दुख दारिद दावा ॥
 बहुत काल मैं कीन्हि मजूरी । आजु दीन्हि विधि वनि भलि भूरी ॥
 अब कलु नाथ न चाहिअ मोरें । दीनदयाल अनुग्रह तोरें ॥
 फिरती वार मोहि जो देवा । सो प्रसादु मैं सिर धरि लेवा ॥

दो०—बहुत कीन्ह प्रभु लखन सियें नहि कहु कैयदु लेइ ।

विदा कीन्ह करुनायतन भगति विमल वरु देइ ॥१०२॥

तव मज्जनु करि रघुकुलनाथा । पूजि पारथिव नायउ माथा ॥
 सियें सुरसरिहि कहेउ कर जोरी । मातु मनोरथ पुरउषि मोरी ॥
 पति देवर सँग कुसल बहोरी । आइ करं जेहि पूजा तोरी ॥
 मुनि सिय विनय प्रेम रस सानी । भइ तव विमल वारि वर पानी ॥
 मुनु रघुवीर प्रिया वैदेही । तव प्रभाउ जग विदित न केही ॥
 लोचन होहि विलोकत तोरें । तोहि सेवहि सब सिधि कर जोरें ॥
 तुम्ह जो हमहि बड़ि विनय सुनाई । कृपा कीन्हि मोहि दीन्हि पढ़ाई ॥
 तदपि देवि मैं देवि असीसा । सफल होन हित निज धामीसा ॥

दो०—ग्राननाथ देवर सहित कुसल कोराला आइ ।

पूजिहि सब मनकामना मुजसु रहिहि जग छाइ ॥१०३॥

गंग वचन मुनि मंगल मूला । मुदित सीय सुरसरि अनुकूला ॥
 तव प्रभु गुहाहि कहेउ घर जाइ । मुनन मृग मृगु भा उर दाइ ॥
 दीन वचन गुह कह कर जोरी । विनय मुनइ रघुकुलमनि मोरी ॥
 नाथ नाथ रहि पंगु देखवाई । करि दिन चारि चरन सेवकाई ॥
 जेहि वन जाइ रहव रघुवाइ । परनकृप्य मैं करवि सुदाइ ॥
 तव मोहि कहुँ जसि देव रजाइ । सोइ करिहुँ रघुवीर दोदाइ ॥

सहज सनेह राम लखि तासू । संग लीन्ह गुह हृदयँ हुलासू ॥
पुनि गुहँ ग्याति बोलि सब लीन्हे । करि परितोपु विदा तब कीन्हे ॥

दो०—तव गनपति सिव सुमिरि प्रभु नाइ सुरसरिहि माथ ।

सखा अनुज सिय सहित वन गवनु कीन्ह रघुनाथ ॥१०४॥

तेहि दिन भयउ विटपतर बासू । लखन सखाँ सब कीन्ह सुपासू ॥
प्रात प्रातकृत करि रघुराई । तीरथराजु दीख प्रभु जाई ॥
सचिव सत्य श्रद्धा प्रिय नारी । माधव सरिस मीतु हितकारी ॥
चारि पदारथ भरा भँडारू । पुन्य प्रदेश देस अति चारू ॥
छेत्रु अगम गढु गाढ सुहावा । सपनेहुँ नहिँ प्रतिपच्छिन्ह पावा ॥
सेन सकल तीरथ वर वीरा । कलुष अनीक दलन रनधीरा ॥
संगमु सिंहासनु सुठि सोहा । छत्रु अखयवटु मुनि मनु मोहा ॥
चवँर जमुन अरु गंग तरंगा । देखि होहिँ दुख दारिद भंगा ॥

दो०—सेवहिँ सुकृती साधु सुचि पावहिँ सब मनकाम ।

बंदी वेद पुरान गन कहहिँ विमल गुन ग्राम ॥१०५॥

को कहि सकइ प्रयाग प्रभाऊ । कलुष पुंज कुंजर मृगराऊ ॥
अस तीरथपति देखि सुहावा । सुख सागर रघुवर सुखु पावा ॥
कहि सिय लखनहि सखहि सुनाई । श्रीमुख तीरथराज बड़ाई ॥
करि प्रनामु देखत वन वागा । कहत महातम अति अनुरागा ॥
एहि विधि आइ विलोक्री वेनी । सुमिरत सकल सुसंगल देनी ॥
मुदित नहाइ कीन्हि सिव सेवा । पूजि जथाविधि तीरथ देवा ॥
तव प्रभु भरद्वाज पहिँ आए । करत दंडवत मुनि उर लाए ॥
मुनि मनु मोद न कळ कहि जाई । ब्रह्मानंद राशि जन पाई ॥

दो०—दीन्हि असीस मुनीस उर अति अनंदु अस जानि ।

लोचन गोचर सुकृत फल मनहुँ किए विधि आनि ॥१०६॥

कुसल प्रसन्न करि आसन दीन्हे । पूजि प्रेम परिपूरन कीन्हे ॥
 कंद मूल फल अंकुर नीके । दिए आनि मुनि मनहुँ अमी के ॥
 सीय लखन जन सहित सुहाए । अति रुचि राम मूल फल खाए ॥
 भए विगतश्रम रामु मुखारे । भरद्वाज मृदु वचन उचारे ॥
 आजु सुफल तपु तीरथ त्यागू । आजु सुफल जप जोग विरागू ॥
 सफल सकल सुभ साधन साजू । राम तुम्हहि अवलोकत आजू ॥
 लाभ अवधि सुख अवधि न दूजो । तुम्हरेँ दरस आस सब पूजी ॥
 अब करि कृपा देहु घर एहू । निज पद सरसिज सहज सनेहू ॥

दो०—करम वचन मन छादि छलु जब लगि अनु न तुम्हार ।

तप लगि सुसु सपनेहुँ नहीं किएँ कोटि उपचार ॥१०७॥

मुनि मुनि वचन रामु सकुचाने । भाव भगति आनंद अधाने ॥
 तब रघुवर मुनि मुजसु सुहावा । कोटि भाँति कहि सबहि सुनावा
 सो बड़ सो सब गुन गन गेहू । जेहि मुनीस तुम्ह आदर देहू ॥
 मुनि रघुवीर परसपर नबहीं । वचन अगोचर सुखु अनुभवहीं ॥
 यह मुधि पाइ प्रयाग निवासी । बटु तापस मुनि सिद्ध उदासी ॥
 भरद्वाज आश्रम सब आए । देखन दसरथ सुअन सुहाए ॥
 राम प्रनाम कीन्ह सब कहाहू । मुदित भए लहि लोचन लाहू ॥
 देहि असीस परम मुगु पाई । फिरे सराहत सुंदरताई ॥

दो०—राम कीन्ह विधाम निसि प्रात प्रयाग नहाइ ।

चले सहित सिय लखन जन मुदित मुनिहि सिरु नाइ ॥१०८॥

राम सप्रेम कहेउ मुनि पाहीं। नाथ कहिअ हम केहि मग जाहीं॥
 मुनि मन बिहसि राम सन कहहीं। सुगम सकल मग तुम्ह कहूँ अहहीं
 साथ लागि मुनि सिष्य बोलाए। सुनि मन मुदित पचासक आए॥
 सबन्हि राम पर प्रेम अपारा। सकल कहहिं मगु दीख हमारा॥
 मुनि बटु चारि संग तब दीन्हे। जिन्ह बहु जनम सुकृत सब कीन्हे
 करि प्रनामु रिपि आयसु पाई। प्रमुदित हृदयँ चले रघुराई॥
 ग्राम निकट जब निकसहिं जाई। देखहिं दरसु नारि नर धाई॥
 होहिं सनाथ जनम फलु पाई। फिरहिं दुखित मनु संग पठाई॥
 दो०—विदा किए बटु विनय करि फिरे पाइ मन काम।

उतरि नहाए जमुन जल जो सरीर सम त्याम ॥१०९॥

सुनत तीरबासी नर नारी। धाए निज निज काज विसारी॥
 लखन राम सिय सुंदरताई। देखि करहिं निज भाग्य बड़ाई॥
 अति लालसा बसहिं मन माहीं। नाउँ गाउँ बूझत सकुचाहीं॥
 जे तिन्ह महुँ बयबिरिध सयाने। तिन्ह करि जुगुति रामु पहिचाने॥
 सकल कथा तिन्ह सबहि सुनाई। बनहि चले पितु आयसु पाई॥
 सुनि सविपाद सकल पछिताहीं। रानी रायँ कीन्ह भल नाहीं॥
 तेहि अवसर एक तापसु आवा। तेजपुंज लघुब्रयस सुहावा॥
 कबि अलखित गति बेपु बिरागी। मन क्रम बचन राम अनुरागी॥
 दो०—सजल नयन तन पुलकि निज इष्टदेउ पहिचानि।

परेउ दंड जिमि धरनितल दसा न जाइ बखानि ॥११०॥

राम सप्रेम पुलकि उर लावा। परम रंक जनु पारसु पावा॥
 मनहुँ प्रेम परमारथु दोऊ। मिलत धरें तन कह सब कोऊ॥

बहुरि लखन पायन्ह सोइ लागी । लीन्ह उठाइ उमगि अनुरागी ॥
 पुनि सिय चरन धरि धरि सीसा । जननि जानि सिसु दीन्हि असीसा
 कीन्ह निपाद दंडवत तेही । मिलेउ मुदित लखिरामसनेही ॥
 पिअत नयन पुट रूपु पियूषा । मुदित सुअसनु पाइ जिमि भूखा
 ते पितु मातु कहहु सखि कैसे । जिन्ह पठए वन बालक ऐसे ॥
 राम लखन सिय रूपु निहारी । होहिं सनेह विकल नर नारी ॥
 दो०-तब रघुबीर अनेक विधि सखहि सिखावनु दीन्ह ।

राम रजायसु सीस धरि भवन गवनु तेई कीन्ह ॥१११॥

पुनि सियँ राम लखन कर जोरी । जमुनहि कीन्ह प्रनाम्य बहोरी ॥
 चले ससीय मुदित दोउ भाई । रचितनुजा कइ करत बढ़ाई ॥
 पथिक अनेक मिलहिं मग जाता । कहहिं सप्रेम देखि दोउ भ्राता ॥
 राज लखन सब अंग तुम्हारे । देखिसोचु अति हृदय हमारे ॥
 मारग चलहु पयादेहि पाएँ । ज्योतिषु अठ हमारे भाएँ ॥
 अगमु पंयु गिरि कानन भारी । तेहि महुँ साथ नारि सुकुमारी ॥
 करि केहरि वन जाइ न जोई । हम संग चलहिं जो आयसु होई ॥
 जाव जहाँ लगि तहुँ पहुँचाई । फिरव बहोरि तुम्हहि सिरु नाई ॥
 दो०-एहि विधि पूँछहिं प्रेम बस पुलक गात जतु नैन ।

शुपासिषु फेरहिं तिन्हहि कहि विनीत मृदु वैन ॥११२॥

जे पुर गाँव बसहिं मग माहीं । तिन्हहि नाग सुर नगर सिहाहीं ॥
 केहि सुकृती केहि धरीं बसाए । धन्य पुन्यमय परम सुहाए ॥
 जहुँ जहुँ राम चरन चलि जाहीं । तिन्ह समान अमरावति नाहीं ॥
 पुन्यपुंज मग निकट निवासी । तिन्हहि सराहिं सुरपुरवासी ॥

जे भरि नयन बिलोकहिं रामहि । सीता लखन सहित धनस्यामहि ।
जे सर सरित राम अवगाहहिं । तिन्हहि देव सर सरित सराहहिं ।
जेहि तरु तर प्रभु बैठहिं जाई । करहिं कलपतरु तासु बड़ाई ॥
परसि राम पद पदुम परागा । मानति भूमि भूरि निज भागा ॥
दो०—छाँह करहिं घन विवुधगन वरषहिं सुमन सिहाहिं ।

देखत गिरि वन विहग मृग रामुं चले मग जाहिं ॥११३॥

सीता लखन सहित रघुराई । गाँव निकट जब निकसहिं जाई ॥
सुनि सब बाल वृद्ध नर नारी । चलहिं तुरत गृहकाजु बिसारी ॥
राम लखन सिय रूप निहारी । पाइ नयनफलु होहिं सुखारी ॥
सजल बिलोचन पुलक सरीरा । सब भए मगन देखि दोउ बीरा ॥
चरनि न जाइ दसा तिन्ह केरी । लहि जनु रंकन्ह सुरमनि ढेरी ॥
एकन्ह एक बोलि सिख देहीं । लोचन लाहु लेहु छन एहीं ॥
रामहि देखि एक अनुरागे । चितवत चले जाहिं संग लागे ॥
एक नयन मग छवि उर आनी । होहिं सिथिल तन मन बर बानी ॥

दो०—एक देखि बट छाँह भलि डासि मृदुल तृन पात ।

कहहिं गवाँइअ छिनुकु श्रमु गवनव अवहिं कि प्रात ॥११४॥

एक कलस भरि आनहिं पानी । अँचइअ नाथ कहहिं मृदु बानी ॥
सुनि प्रियवचन प्रीति अतिदेखी । राम कृपाल सुसील बिसेपी ॥
जानी श्रमित सीय मन माहीं । धरिक बिलंबु कीन्ह बट छाहीं ॥
मुदित नारि नर देखहिं सोभा । रूप अनूप नयन मनु लोभा ॥
एकटक सब सोहहिं चहुँ ओरा । रामचंद्र मुख चंद्र चकोरा ॥
तरुन तमाल वरन तनु सोहा । देखत कोटि मदन मनु मोहा ॥

दामिनि वरन लखन सुठिनीके । नख सिख सुभग भावते जी के ॥
मुनिपट कटिन्ह कसैं तूनीरा । सोहहिं कर कमलनि धनु तीरा ॥

दो०—जटा मुकुट सीसनि सुभग उर भुज नयन विसाल ।

सरद परव त्रिधु वदन वर लसत स्वेद कन जाल ॥११५॥

वरनि न जाइ मनोहर जोरी । सोभा बहुत थोरि मति मोरी ॥
राम लखन सिय मुंदरताई । सब चितवहिं चित मन मति लाई ॥
थके नारि नर प्रेम पिआसे । मनहुँ मृगी मृग देखि दिआ से ॥
सीय समीप ग्रामतिय जाहीं । पूँछत अति सनेहँ सकुचाहीं ॥
घार घार सब लागहिं पाएँ । कहहिं वचन मृदु सरल सुभाएँ ॥
राजकुमारि विनय हम करहीं । तिय सुभायँ कलु पूँछत डरहीं ॥
स्वामिनि अविनय छमवि हमारी । बिलगु न मानव जानि गवाँरी ॥
राजकुअँर दोउ सहज सलोने । इन्ह तें लही दुति मरकत सोने ॥

दो०—स्यामल गौर किसोर वर सुंदर सुपमा ऐन ।

सरद सर्यरीनाथ मुखु सरद सरोरुह नैन ॥११६॥

मासपारायण, सोलहवाँ विश्राम

नवाह्नपारायण, चौथा विश्राम

कोटि मनोज लजावनिहारे । सुमुखि कहहु कोआहिं तुम्हारे ॥
सुनि सनेहमय मंजुल बानी । सकुची सियमन महुँ मुसुकानी ॥
तिन्हहि विलोकि विलोकति धरनी । दुहुँ सकोच सकुचति वर वरनी ॥
सकुचि सप्रेम बाल मृग नयनी । बोली मधुर वचन पिकवयनी ॥
सहज सुभाय सुभग तन गोरे । नामु लखनु लघु देवर सोरे ॥

बहुरि बदनु बिधु अंचल ढाँकी । पिय तन चितइ भौंह करि बाँकी ।
खंजन मंजु तिरीछे नयननि । निज पति कहेउ तिन्हहि सियँ सयन
भई मुदित सब ग्रामबधूटीं । रंकन्ह राय रासि जनु लूटीं ।

दो०—अति सप्रेम सिय पायँ परि बहुविधि देहिं असीस ।

सदा सोहागिनि होहु तुम्ह जब लगि महि अहि सीस ॥११७

पारवती सम पतिप्रिय होहू । देवि न हम पर छाड़ब छोहू ।
पुनिपुनि विनय करिअ कर जोरी । जौँ एहि मारग फिरिअ बहोरी ।
दरसनु देव जानि निज दासी । लखीं सीयँ सब प्रेम पिआसी ।
मधुर बचन कहि कहि परितोषीं । जनु कुमुदिनीं कौमुदीं पोषीं ।
तवहिं लखन रघुवर रुख जानी । पूँछेउ मगु लोगन्हि मृदु बानी ।
सुनत नारि नर भए दुखारी । पुलकित गात विलोचन बारी ।
मिटा मोदु मन भए मलीने । विधि निधि दीन्ह लेत जनु छीने ।
समुझि करमगति धीरजु कीन्ह ॥ सोधि सुगम मगु तिन्ह कहि दीने ॥

दो०—लखन जानकी सहित तव गवनु कीन्ह रघुनाथ ।

फेरे सब प्रिय बचन कहि लिए लाइ मन साथ ॥११८

फिरत नारि नर अति पछिताहीं । दैअहि दोषु देहिं मन माहीं ।
सहित विपाद परसपर कहहीं । विधि करतव उलटे सब अहहीं ।
निपट निरंकुस निठुर निसंकू । जेहिं ससि कीन्ह सरुज सकलं व
रुख कलपतरु सागरु खारा । तेहिं पठए वन राजकुमारा ।
जौँ पै इन्हहि दीन्ह वनबासू । कीन्ह बादि विधि भोग बिलासू ।
ए विचरहिं मग बिनु पदत्राना । रचे बादि विधि बाहन नाना ।
ए महि परहिं डासि कुस पाता । सुभग सेज कत सृजत विधाता ।

तस्वर वास इन्हहि विधि दीन्हा । धवल धाम रचि रचि श्रमु कीन्हा
दो०—जौ ए मुनि पट घर जटिल मुंदर सुठि सुकुमार ।

विधि भौंति भूपन बसन वादि किए करतार ॥११९॥

जाँ ए कंद मूल फल खाहीं । वादि मुधादि असन जग माहीं ॥
एक कहहि ए सहज सुहाए । आपु प्रगट भए विधि न बनाए ॥
जहँ लगि वेद कही विधि करनी । श्रवन नयन मन गोचर बरनी ॥
देखहु खोजि भुअन दस चारी । कहँ अस पुरुष कहाँ असि नारी ॥
इन्हहि देखि विधि मनु अनुरागा । पटतर जोग बनायँ लागा ॥
कीन्ह बहुत श्रम ऐक न आए । तेहिँ इरिपावन आनि दुराए ॥
एक कहहिँ हम बहुत न जानहिँ । आपुहि परम धन्य करि मानहिँ ॥
तै पुनि पुन्यपुंज हम लेखे । जे देखहिँ देखिहहिँ जिन्ह देखे ॥

दो०—एहि विधि कहि कहि बचन प्रिय लेहिँ नयन भरि नीर ।

किमि चलिहहिँ मारग अगम सुठि सुकुमार सरीर ॥१२०॥

नारि सनेह विकल बस होहीं । चकई साँझ समय जनु सोहीं ॥
मृदु पद कमल कठिन मगु जानी । गहवरि हृदयँ कहहिँ बर बानी ॥
परसत मृदुल चरन अरुनारे । सकुचति महि जिमि हृदय हमारे ॥
जाँ जगदीस इन्हहि वनु दीन्हा । कस न सुमनमय मारगु कीन्हा ॥
जाँ मागा पाइअ विधि पाहीं । ए रखिअहिँ सखि आँखिन्ह माहीं
जे नर नारि न अवसर आए । तिन्ह सिय रामु न देखन पाए ॥
सुनि सुरूपु वृझहिँ अकुलाई । अब लगि गए कहाँ लगि भाई ॥
समरथ धाइ त्रिलोकहिँ जाई । प्रमुदित फिरहिँ जनमफलु पाई ॥

दो०—अबला बालक वृद्ध जन कर मीजहिं पछिताहिं ।

होहिं प्रेमवस लोग इमि रामु जहाँ जहँ जाहिं ॥१२१॥

गावँ गावँ अस होइ अनंदू। देखि भानुकुल कैरव चंदू ॥
जे कछु समाचार सुनि पावहिं । ते नृप रानिहि दोसु लगावहिं ॥
कहहिं एक अति भल नरनाहू । दीन्ह हमहि जोइ लोचन लाहू ॥
कहहिं परसपर लोग लोगार्इ । वातें सरल सनेह सुहार्इ ॥
ते पितु मातु धन्य जिन्ह जाए । धन्य सो नगरु जहाँ तें आए ॥
धन्य सो देसु सैलु वन गाऊँ । जहँ जहँ जाहिं धन्य सोइ ठाऊँ ॥
सुखु पायउ विरंचि रचि तेही । ए जेहि के सब भाँति सनेही ॥
राम लखन पथि कथा सुहार्इ । रही सकल मग कानन छार्इ ॥

दो०—एहि विधि रघुकुल कमल रवि मग लोगन्ह सुख देत ।

जाहिं चले देखत विपिन सिय सौमित्रि समेत ॥१२२॥

आगें रामु लखनु वने पाछें । तापस वेप विराजत काछें ॥
उभय बीच सिय सोहति कैसैं । ब्रह्म जीव विच माया जैसैं ॥
बहुरि कहउँ छवि जसि मन बसई । जनु मधु मदन मध्य रति लसई ॥
उपमा बहुरि कहउँ जियँ जोही । जनु बुध विधु विच रोहिनि सोही ॥
प्रभु पद रेख बीच विच सीता । धरति चरन मग चलति सभीता ॥
सीय राम पद अंक बराएँ । लखनचलहिं मगु दाहिन लाएँ ॥
राम लखन सिय प्रीति सुहार्इ । बचन अगोचर किमि कहि जाई ॥
खग मृग मगन देखि छवि होहीं । लिए चोरि चित राम बटोहीं ॥

दो०—जिन्ह जिन्ह देखे पथिक प्रिय सिय समेत दोउ भाइ ।

भव मगु अगमुं अनंदु तेइ विनु अम रहे सिराइ ॥१२३॥

अजहँ जासु उर सपनेहँ काऊ । वसहँ लखनु मिय रामु बटाऊ ॥
 राम धाम पथ पाइहि सोई । जो पथ पाव कवहँ मुनि कोई ॥
 तव रघुवीर श्रमित सिय जानी । देखि निकट बटु सीतल पानी ॥
 तहँ वसि कंद मूल फल खाई । प्रात नहाइ चले रघुराई ॥
 देखत वन सर सैल मुहाए । बालमीकि आश्रम प्रभु आए ॥
 राम दीख मुनि वासु मुहावन । सुंदर गिरि काननु जलु पावन ॥
 सरनि सरोज बिटप वन फूले । गुंजत मंजु मधुप रस भूले ॥
 खग मृग पिपुल कोलाहल करहीं । विरहित वर मुदित मन चरहीं ॥

दो०—सुधि सुंदर आश्रमु निरखि हरपे राजिवनेन ।

मुनि रघुवर आगमनु मुनि आगे आयउ लेन ॥१२४॥

मुनि कहँ राम दंडवत कीन्हा । आसिरवादु विप्रवर दीन्हा ॥
 देखि राम छवि नयन जुड़ाने । करि सनमानु आश्रमहिं आने ॥
 मुनिवर अतिथि प्रानप्रिय पाए । कंद मूल फल मधुर मगाए ॥
 मिय सौमित्रि राम फल खाए । तव मुनि आश्रम दिए मुहाए ॥
 बालमीकि मन आनँदु भारी । मंगल मूरति नयन निहारी ॥
 तव कर कमल जोरि रघुराई । बोले वचन श्रवन सुखदाई ॥
 तुम्ह त्रिकाल दरसी मुनिनाथा । बिस्व वदर जिमि तुम्हरे हाथा ॥
 अंस कहि प्रभु सब कथा बखानी ! जेहि जेहि भाँति दीन्ह वनु रानी

दो०—तात वचन पुनि मातु हित भाइ भरत अस राउ ।

मो कहँ दरस तुम्हार प्रभु सवु मम पुन्य प्रभाउ ॥१२५॥

देखि पाय मुनिराय तुम्हारे । भए सुकृत सब सुफल हमारे ॥
 अब जहँ राउर आयसु होई । मुनि उदवेगु न पावै कोई ।

मुनि तापस जिन्ह तें दुखु लहहीं । ते नरेस विनु पावक दहहीं ॥
 मंगल मूल विप्र परितोषू । दहइ कोटि कुल भूसुर रोषू ॥
 अस जियँ जानि कहिअ सोइ ठाऊँ । सिय सौमित्रि सहित जहँ जाऊँ ॥
 तहँ रचि रुचिर परन तन साला । बासु करौं कलु काल कृपाला ॥
 सहज सरल सुनि रघुवर बानी । साधु साधु बोले मुनि ग्यानी ॥
 कस न कहहु अस रघुकुल केतू । तुम्ह पालक संतत श्रुति सेतू ॥

छं०—श्रुति सेतु पालक राम तुम्ह जगदीस माया जानकी ।
 जो सृजति जगु पालति हरति रुख पाइ कृपानिधानकी ॥
 जो सहससीसु अहीसु महिधरु लखनु सचराचर धनी ।
 सुर काज धरि नरराज तनु चले दलन खल निसिचर अनी ॥

सो०—राम सरूप तुम्हार वचन अगोचर बुद्धिपर ।
 अविगत अकथ अपार नेति नेति नित निगम कह ॥१२६॥

जगु पेखन तुम्ह देखनिहारे । विधि हरि संभु नचावनिहारे ॥
 तेउ न जानहिं मरमु तुम्हारा । औरु तुम्हहि को जाननिहारा ॥
 सोइ जानइ जेहि देहु जनाई । जानत तुम्हहि तुम्हइ होइ जाई ॥
 तुम्हरिहि कृपाँ तुम्हहि रघुनंदन । जानहिं भगत भगत उर चंदन ॥
 चिदानंदमय देह तुम्हारी । विगत विकार जान अधिकारी ॥
 नर तनु धरेहु संत सुर काजा । कहहु करहु जस प्राकृत राजा ॥
 राम देखि सुनि चरित तुम्हारे । जइ मोहहिं बुध होहिं सुखारे ॥
 तुम्ह जो कहहु करहु सबु साँचा । जस काछिअ तस चाहिअ नाचा ॥

दो०—पूँछेहु मोहि कि रहौं कहँ मैं पूँछत सकुचाउँ ।
 जहँ न होहु तहँ देहु कहि तुम्हहि देखावौं ठाउँ ॥१२७॥

मुनि मुनि वचन प्रेम रस साने । सकुचि राम मन महँ मुसुकाने ॥
 वालमीकि हँसि कहहिं बहोरी । बानी मधुर अमिअ रस बोरी ॥
 सुनहु राम अब कहउँ निकेता । जहाँ बसहु सिय लखन समेता ॥
 जिन्ह के श्रवन समुद्र समाना । कथा तुम्हारि सुभग सरि नाना ॥
 भरहिं निरंतर होहिं न पूरे । तिन्ह के हिय तुम्ह कहँ गृह रूरे ॥
 लोचन चातक जिन्ह करि राखे । रहहिं दरस जलधर अभिलापे ॥
 निदरहिं सरित सिंधु सर भारी । रूप बिंदु जल हाँहिं मुखारी ॥
 तिन्ह के हृदय सदन सुखदायक । बसहु बंधु सिय सह रघुनायक ॥

दो०—जसु तुम्हार मानस विमल हंसिनि जीहा जासु ।

मुक्ताहल गुन गन चुनइ राम बसहु हियँ तासु ॥१२८॥

प्रभु प्रसाद सुचि सुभग सुवासा । सादर जासु लहइ नित नासा ॥
 तुम्हहि निवेदित भोजन करहीं । प्रभु प्रसाद पट भूपन धरहीं ॥
 सीस नवहिं सुर गुरु द्विज देखी । प्रीति सहित करि विनय विसेपी ॥
 कर नित करहिं राम पद पूजा । राम भरोस हृदयँ नहिं दूजा ॥
 चरन राम तीरथ चलि जाहीं । राम बसहु तिन्ह के मन माहीं ॥
 मंत्रराजु नित जपहिं तुम्हारा । पूजहिं तुम्हहि सहित परिवारा ॥
 तरपन होम करहिं विधि नाना । विप्र जेवाँइ देहिं बहु दाना ॥
 तुम्ह तें अधिक गुरहि जियँ जानी । सकल भायँ सेवहिं सनमानी ॥

दो०—सबु करि मागहि एक फलु राम चरन रति होउ ।

तिन्ह के मन मंदिर बसहु सिय रघुनंदन दोउ ॥१२९॥

काम कोह मद मान न मोहा । लोभ न छोभ न राग न द्रोहा ॥
 जिन्ह के कपट दंभ नहिं माया । तिन्ह के हृदय बसहु रघुराया ॥

सब के प्रिय सब के हितकारी । दुख सुख सरिस प्रसंसा गारी
 कहहिं सत्य प्रिय बचन विचारी । जागत सोवत सरन तुम्हारी
 तुम्हहि छाड़ि गति दूसरि नाहीं । राम बसहु तिन्ह के मन माहीं
 जननी सम जानहिं परनारी । धनु पराव विप तें विप भारी
 जे हरपहिं पर संपति देखी । दुखित होहिं पर विपति विसेपी
 जिन्हहि राम तुम्ह प्रानपिआरे । तिन्ह के मन सुभ सदन तुम्हारे
 दो०—स्वामिं सखा पितु मातु गुर जिन्ह के सब तुम्ह तात ।

मन मंदिर तिन्ह कें बसहु सीय सहित दोउ भ्रात ॥१३०

अवगुन तजि सब के गुन गहहीं । विप्र धेनु हित संकट सहहीं
 नीति निपुन जिन्ह कइ जग लीका । घर तुम्हार तिन्ह कर मनु नीव
 गुन तुम्हार समुझइ निज दोसा । जेहि सब भाँति तुम्हार भरोसा
 राम भगत प्रिय लागहिं जेही । तेहि उर बसहु सहित वैदेही
 जाति पाँति धनु धरमु बड़ाई । प्रिय परिवार सदन सुखदाई
 सब तजि तुम्हहि रहइ उर लाई । तेहि के हृदयँ रहहु रघुराई
 सरगु नरकु अपवरगु समाना । जहँ तहँ देख धरें धनु बाना
 करम बचन मन राउर चेरा । राम करहु तेहि कें उर डेरा
 दो०—जाहि न चाहिअ कवहुँ कछु तुम्ह सन सहज सनेहु ।

बसहु निरंतर तासु मन सो राउर निज गेहु ॥१३१

एहि विधि मुनिवर भवन देखाए । बचन सप्रेम राम मन भाए
 कह मुनि सुनहु भानुकुलनायक । आश्रम कहउँ समय सुखदायक
 चित्रकूट गिरि करहु निवास । तहँ तुम्हार सब भाँति सुपास
 सैल सुहावन कानन

नदी पुनीत पुरान बखानी । अत्रिप्रिया निज तपवल आनी ॥
सुरसरि धार नाउँ मंदाकिनि । जो सब पातक पोतक डाकिनि ॥
अत्रिआदि मुनिवर बहु बसहीं । करहिं जोग जप तप तन कसहीं ॥
चलहु सफल श्रमसब कर करहु । राम देहु गौरव गिरिवरहु ॥

दो०—चित्रकूट महिमा अमित कही महामुनि गाड ।

जाइ नहाए सरित वर सिय समेत दोउ भाइ ॥१३२॥

रघुवर कहेउ लखन भल घाटू । करहु कतहुँ अब ठाहर ठाटू ॥
लखन दीख पय उतर करारा । चहुँ दिसि फिरेउ धनुष जिमि नारा ॥
नदी पनच सर सम दम दाना । सकल कलुष कलि साउज नाना ॥
चित्रकूट जनु अचल अहेरी । चुकइ न घात मार मुठभेरी ॥
अस कहि लखन ठाउँ देखरावा । थलु विलोकि रघुवर सुखु पावा ॥
रमेउ राम मनु देवन्ह जाना । चले सहित सुर थपति प्रधाना ॥
कोल किरात बेप सब आए । रचे परन तन सदन सुहाए ॥
परनि न जाहिं मंजु दुइ साला । एक ललित लघु एक विसाला ॥

दो०—लखन जानकी सहित प्रमु राजत रुचिर निकेत ।

सोह मदनु मुनि घेप जनु रति रितुराज समेत ॥१३३॥

मासपारायण, सत्रहवाँ विश्राम

अमर नाग किंनर दिसिपाला । चित्रकूट आए तेहि काला ॥
राम प्रनामु कीन्ह सब काह । मुदित देव लहि लोचन लाह ॥
घरपि सुमन कह देव समाजू । नाथ सनाथ भए हम आजू ॥
करि विनती दुख दुसह सुनाए । हरपित निज निज सदन सिधा ॥

चित्रकूट रघुनंदनु छाए । समाचार सुनि सुनि मुनि आए ॥
 आवत देखि मुदित मुनिवृंदा । कीन्ह दंडवत रघुकुल चंदा ॥
 मुनि रघुवरहि लाइ उर लेहीं । सुफल होन हित आसिप देहीं ॥
 सिय सौमित्रि राम छवि देखहिं । साधन सकल सफल करि लेखहिं
 दो०—जथाजोग सनमानि प्रभु विदा किए मुनिवृंद ।

करहिं जोग जप जाग तप निज आश्रमन्हि सुछंद ॥ १३४ ॥

यह सुधि कोल किरातन्ह पाई । हरषे जनु नव निधि घर आई ॥
 कंद मूल फल भरि भरि दोना । चले रंक जनु लूटन सोना ॥
 तिन्ह महँ जिन्ह देखे दोउ भ्राता । अपर तिन्हहि पूँछहिं मगु जाता
 कहत सुनत रघुबीर निकाई । आइ सबन्हि देखे रघुराई ॥
 करहिं जोहारु भेंट धरि आगे । प्रभुहि विलोकहिं अति अनुरागे
 चित्र लिखे जनु जहँ तहँ ठाढ़े । पुलक सरीर नयन जल बाढ़े ॥
 राम सनेह मगन सब जाने । कहि प्रिय बचन सकल सनमाने ॥
 प्रभुहि जोहारि बहोरि बहोरी । बचन विनीत कहहिं कर जोरी ॥

दो०—अब हम नाथ सनाथ सब भए देखि प्रभु पाय ।

भाग हमारें आगमनु राउर कोसलराय ॥ १३५ ॥

धन्य भूमि बन पंथ पहारा । जहँ जहँ नाथ पाउ तुम्ह धारा ॥
 धन्य बिहग मृग काननचारी । सफल जनम भए तुम्हहि निहारी
 हम सब धन्य सहित परिवारा । दीख दरसु भरि नयन तुम्हारा ॥
 कीन्ह वासु भल ठाउँ विचारी । इहाँ सकल रितु रहव सुखारी ॥
 हम सब भाँति करव सेवकाई । करि केहरि अहि बाध बराई ॥
 बन बेहड़ गिरि कंदर खोहा । सब हमारु प्रभु पग पग जोहा ॥

तहँ तहँ तुम्हहि अहेर खेलाउव । सर निरझर जलठाउँ देखाउव ॥
हम सेवक परिवार समेता । नाथ न सकुचव आयसु देता ॥

दो०—वेद वचन मुनि मन अगम ते प्रभु करुना ऐन ।

वचन किरातन्ह के सुनत जिमि पितु बालक वैन ॥? ३६॥

रामहि केवल प्रेमु पिआरा । जानि लेउ जो जाननिहारा ॥
राम सकल बनचर तव तोपे । कहि मृदु वचन प्रेम परिपोपे ॥
विदा किए सिर नाइ सिधाए । प्रभु गुन कहत सुनत घर आए ॥
एहि विधि सिय समेत दोउ भाई । बसहिं विपिन सुर मुनि सुखदाई
जय तें आइ रहे रघुनायकु । तत्र तें भयउ बनु मंगलदायकु ॥
फूलहिं फलहिं घिटप विधि नाना । मंजु बलित वर बेलि बिताना ॥
सुरतरु सरिस सुभायँ सुहाए । मनहुँ विबुधवन परिहरि आए ॥
गुंज मंजुतर मधुकर श्रेणी । त्रिविध बयारि बहइ सुख देनी ॥

दो०—नीलकंठ कलकंठ सुक चातक चक्र चकोर ।

भौंति भौंति धोलहिं विहग श्रवन सुखद चित चोर ॥? ३७॥

करि केहरि कपि कोल कुरंगा । विगतवर विचरहिं सब संगी ॥
फिरत अहेर राम छवि देखी । होहिं मुदित मृगवृंद विसेपी ॥
विबुध विपिन जहँ लगि जग माहीं । देखि रामबनु सकल सिहाहीं
सुरसरि सरसइ दिनकर कन्या । मेकलसुता गोदावरि धन्या ॥
सब सर सिंधु नदीं नद नाना । मंदाकिनि कर करहिं बखाना ॥
उदय अस्त गिरि अरु कंलासू । मंदर मेरु सकल सुरवासू ॥
सैल हिमाचल आदिक जेते । चित्रकूट जमु गावहिं तेते ॥
विधि मुदित मन सुखु न समार्इ । श्रम विनु विपुल बडार्इ ।

दो०—चित्रकूट के बिहग मृग बेलि बिटप तृन जाति ।

पुन्य पुंज सब घन्य अस कहहि देव दिन राति ॥१३८॥

नयनवंत रघुवरहि बिलोकी । पाइ जनम फल होहि बिसोकी ॥

परमि चरन रज अचर सुखारी । भए परम पद के अधिकारी ॥

सो वनु सैलु सुभायँ सुहावन । मंगलमय अति पावन पावन ॥

महिमा कहिअ कवनि बिधि तासू । सुखसागर जहँ कीन्ह निवासू ॥

पय पयोधि तजि अवध बिहाई । जहँ सिय लखनु रामु रहे आई ॥

कहि न सकहिँ सुपमा जसि कानन । जौँ सत सहस होहि सहसानन

सो मैं वरनि कहौँ बिधि केहीं । डाबर कमठ कि मंदर लेहीं ॥

सेवहिँ लखनु करम मन वानी । जाइ न सीलु सनेहु बखानी ॥

दो०—छिनु छिनु लखि सिय राम पद जानि आपु पर नेहु ।

करत न सपनेहुँ लखनु चितु वंधु मातु पितु गेहु ॥१३९॥

राम संग सिय रहति सुखारी । पुर परिजन गृह सुरति बिसारी ॥

छिनु छिनु पिय विधु वदनु निहारी । प्रमुदित मनहुँ चकोरकुमारी ॥

नाह नेहु नित बढ़त बिलोकी । हरपित रहति दिवस जिमि कोकी ॥

सिय मनु राम चरन अनुरागा । अवध सहस सम वनु प्रिय लागा ॥

सीय लखन जेहि विधिसुखुलहहीं । मोड़ रघुनाथ करहि सोइ कहहीं
 कहहि पुरातन कथा कहानी । सुनहिं लखनु सिय अति सुखु मानी
 जव जव रामु अवध सुधि करहीं । तव तव वारि विलोचन भरहीं ॥
 सुमिरि मातु पितु परिजन भाई । भरत सनेहु सीलु सेवकाई ॥
 कृपासिंधु प्रभु होहिं दुखारी । धीरजु धरहिं कुसमठ विचारी ॥
 लखि सिय लखनु विकलहोइजाहीं । जिमि पुरुषहि अनुसर परिछाहीं
 प्रिया बंधु गति लखि रघुनंदनु । धीर कृपाल भगत उर चंदनु ॥
 लगे कहन कछु कथा पुनीता । सुनि सुखु लहहिं लखनु अरु सीता ॥

दो०—रामु लखन सीता सहित सोहत परन निकेत ।

जिमि वासव वस अमरपुर सची जयंत समंत ॥१४१॥

जोगवहिं प्रभु सिय लखनहि कैसैं । पलक विलोचन गोलक जैसैं ॥
 सेवहिं लखनु सीय रघुवीरहि । जिमि अखिवेकी पुरुष सरीरहि ॥
 एहि विधि प्रभु वन वसहिं मुखारी । खग मृग सुर तापस हितकारी
 कहें राम वन गवनु सुहावा । सुनहु सुमंत्र अवध जिमि आवा ॥
 फिरेउ निपादु प्रभुहि पहुँचाई । सचिव सहित रथ देखेसि आई ॥
 मंत्री विकल विलोकि निपादू । कहि न जाइ जस भयउ विपादू ॥
 राम राम सिय लखन पुकारी । परेउ धरनितल व्याकुल भारी ॥
 देखि दखिन दिसि हय हिहिनाहीं । जनु विनु पंख विहग अकुलाहीं

दो०—नहिं तून चरहि न पिअहिं जतु मोचहिं लोचन वारि ।

व्याकुल भए निपाद सव रघुवर वाजि निहारि ॥१४२॥

धरि धीरजु तव कहइ निपादू । अव सुमंत्र परिहरहु विपादू ॥
 तुम्ह पंडित परमारथ ग्याता । धरहु धीरलखि विमुख विधाता ॥

विविधि कथा कहि कहि मृदु बानी । रथ बैठारेउ बरवस आनी ॥
 सोक सिथिल रथु सकइ न हाँकी । रघुवर विरह पीर उर वाँकी ॥
 चरफराहिं मग चलहिं न घोरे । बन मृग मनहुँ आनि रथ जोरे ॥
 अटुकि परहिं फिरि हेरहिं पीछें । राम वियोगि विकल दुख तीछें ॥
 जो कह रामु लखनु वैदेही । हिंकरि हिंकरि हित हेरहिं तेही ॥
 वाजि विरह गति कहि किमि जाती । विनु मनि फनिक विकल जेहि भाँती ॥

दो०—भयउ निपादु विपाद बस देखत सचिव तुरंग ।

बोलि सुसेवक चारि तव दिए सारथी संग ॥१४३॥

गुह सारथिहि फिरेउ पहुँचाई । विरहु विपादु वरनि नहिं जाई ॥
 चले अवध लेइ रथहि निपादा । होहिं छनहिं छन मगन विपादा ॥
 सोच सुमंत्र विकल दुख दीना । धिग जीवन रघुवीर बिहीना ॥
 रहिहि न अंतहुँ अधम सरीरु । जसु न लहेउ विछुरत रघुवीरु ॥
 भए अजस अघ भाजन प्राणा । कवन हेतु नहिं करत पयाना ॥
 अहह मंद मनु अवसर चूका । अजहुँ न हृदय होत दुइ टूका ॥
 मीजि हाथ सिरु धुनि पछिताई । मनहुँ कृपन धन रासि गवाँई ॥
 विरिद बाँधि वर बीरु कहाई । चलेउ समर जनु सुभट पराई ॥

दो०—विप्र विवेकी वेदविद समत साधु सुजाति ।

जिमि धोखें मदपान कर सचिव सोच तेहि भाँति ॥१४४॥

जिमि कुलीन तिय साधु सयानी । पतिदेवता करम मन बानी ॥
 रहै करम बस परिहरि नाहू । सचिव हृदयँ तिमि दारुन दाहू ॥
 लोचन सजल डीठि भइ थोरी । सुनइ न श्रवन विकल मति भोरी ॥
 सखहिं अधर लागि मुहँ लाटी । जिउ न जाइ उर अवधि कपाटी ॥

विवरन भयउ न जाइ निहारी । मारेसि मनहुँ पिता महतारी ॥
हानि गलानि विपुल मन व्यापी । जमपुर पंथ सोच जिमि पापी ॥
बचनु न आव हृदयँ पछिताई । अवध काह मैं देखव जाई ॥
राम रहित रथ देखिहि जोई । सकुचिहि मोहि विलोकत सोई ॥

दो०—धाइ पूँछिहहि मोहि जब विकल नगर नर नारि ।

उतरु देव मै सचहि तव हृदयँ बज्रु वैठारि ॥१४५॥

पुछिहहि दीन दुखित सच माता । कहव काह मैं तिन्हहि विधाता ॥
पूँछिहि जबहि लखन महतारी । कहिहउँ कवन सँदेस मुखारी ॥
राम जननि जब आइहि धाई । सुमिरि बच्छु जिमि धेनु लवाई ॥
पूँछत उतरु देव मैं तेही । गे वनु राम लखनु वदेही ॥
जाइ पूँछिहि तेहि ऊतरु देवा । जाइ अवध अब यहु सुखु लेवा ॥
पूँछिहि जबहि राउ दुख दीना । जिवनु जासु रघुनाथ अधीना ॥
देहउँ उतरु कौनु मुहु लाई । आयउँ कुसल कुअर पहुँचाई ॥
सुनत लखन सिय राम सँदेस । तन जिमि तनु परिहरिहि नरेस ॥

दो०—हृदउ न विदरेउ पंक जिमि विद्युरत प्रीतमु नीरु ।

जानत हौं मोहि दोन्ह विधि यहु जातना सरीरु ॥१४६॥

एहि विधि करत पंथ पछितावा । तमसा तीर तुरत रथु आवा ॥
विदा किए करि विनय निपादा । फिरे पायँ परि विकल विपादा ॥
पैठत नगर सचिव सकुचाई । जनु मारेसि गुर चाँभन गाई ॥
वैठि विटप तर दिवसु गवाँवा । साँझ समय तत्र अवसरु पावा ॥
अवध प्रवेशु कीन्ह अँधिआरें । पैठ भवन रथु राखि दुआरें ॥
जिन्ह जिन्ह समाचार सुनि पाए । भूप द्वार रथु देखन आए ॥

रथु पहिचानि विकल लखि घोरे । गरहिं गात जिमि आतप ओरे ।
नगर नारि नर ब्याकुल कैसें । निघटत नीर मीनगन जैसें ।

दो०—सचिव आगमनु सुनत सवु विकल भयउ रनिवासु ।

भवनु भयंकरो लाग तेहि मानहुँ प्रेत निवासु ॥१४७॥

अति आरति सब पूँछहिं रानी । उतरु न आव विकल भइ बानी ।
सुनइ न श्रवन नयन नहिं सूझा । कहहु कहाँ नृपु तेहि तेहि बूझा ।
दासिन्ह दीख सचिव विकलाई । कौसल्या गृहँ गई लवाई ।
जाइ सुमंत्र दीख कस राजा । अमिअरहित जनु चंडु विराजा ।
आसन सयन बिभूपन हीना । परेउ भूमितल निपट मलीना ।
लेइ उसासु सोच एहि भाँती । सुरपुर तें जनु खँसेउ जजाती ।
लेत सोच भरि छिनु छिनु छाती । जनु जरि पंख परेउ संपाती ।
राम राम कह राम सनेही । पुनि कह राम लखन बैदेही ।

दो०—देखि सचिवैं जय जीव कहि कीन्हेउ दंड प्रनासु ।

सुनत उठेउ ब्याकुल नृपति कहु सुमंत्र कहँ रामु ॥१४८॥

भूप सुमंत्रु लीन्ह उर लाई । बूड़त कछु अधार जनु पाई ।
सहित सनेह निकट बैठारी । पूँछत राउ नयन भरि वारी ।
राम कुसल कहु सखा सनेही । कहँ रघुनाथु लखनु बैदेही ।
आने फेरि कि बनहि सिधाए । सुनत सचिव लोचन जल छाए ।
सोक विकल पुनि पूँछ नरेख । कहु सिय राम लखन संदेख ।
राम रूप गुन सील सुभाऊ । सुमिरि सुमिरि उर सोचत राऊ ।
राउ सुनाइ दीन्ह बनबास । सुनि मन भयउ न हरपु हराँस ।
सो सुत विछुरत गए न प्राना । को पापी बड़ मोहि समाना ।

दो०—सखा रामु सिय लखनु जहँ तहाँ मोहि पहुँचाउ ।

नाहि त चाहत चलन अब प्रान कहउँ सतिभाउ ॥१४९॥

पुनि पुनि पूँछत मंत्रिहि राजु । प्रियतम सुअन सँदेस सुनाऊ ॥
करहि सखा सोइ बेगि उपाऊ । रामु लखनु सिय नयन देखीऊ ॥
सचिव धीर धरि कह मृदु बानी । महाराज तुम्ह पंडित ग्यानी ॥
धीर सुधीर धुरंधर देवा । साधु समाजु सदा तुम्ह सेवा ॥
जनम मरन सब दुख सुख भोगा । हानि लाभु प्रिय मिलन वियोगा ॥
काल करम बस होहिँ गोसाईं । बरबस राति दिवस की नाई ॥
सुख हरपहिँ जड़ दुख विलखाहीं । दौड सम धीर धरहिँ मन माहीं ॥
धीरज धरहु विवेकु विचारी । छाड़िअ सोच सकल हितकारी ॥

दो०—प्रथम बासु तमसा भयउ दूसर सुरसरि तीर ।

न्हाइ रहे जलपानु करि सिय समेत दोउ धीर ॥१५०॥

केवट कीन्हि बहुत सेवकाई । सो जामिनि सिंगरौर गवाँई ॥
होत प्रात बट छीरु मगाया । जटा मुकुट निज सीस बनावा ॥
राम सखाँ तव नाव मगाई । प्रिया चढ़ाई चढ़े रघुराई ॥
लखन बान धनु धरे बनाई । आपु चढ़े प्रभु आयसु पाई ॥
विकल विलोकि मोहि रघुवीरा । बोले मधुर बचन धरि धीरा ॥
तात प्रनामु तात सन कहेहू । वार वार पद पंरुज गहेहू ॥
करवि पायँ परि विनय बहोरी । तात करिअ जनि चिंता मोरी ॥
वन मग मंगल कुसल हमारें । कृपा अनुग्रह पुन्य तुम्हारें ॥

छं०—तुम्हरे अनुग्रह तात कानन जात सब सुखु पाइहौ ।

प्रतिपालि आयमु कुसल देखन पाय पुनि फिरि आइहौ ॥

रथु पहिचानि विकल लखि घोरे । गरहिं गात जिमि आतप ओरे ॥
नगर नारि नर व्याकुल कैसें । निघटत नीर मीनगन जैसें ॥

दो०—सचिव आगमनु सुनत सवु विकल भयउ रनिवासु ।

भवनु भयंकरु लाग तेहि मानहुँ प्रेत निवासु ॥१४७॥

अति आरति सव पूँछहिं रानी । उतरु न आव विकल भइ बानी ॥
सुनइ न श्रवन नयन नहिं सूझा । कहहु कहाँ नृपु तेहि तेहि वृझा ॥
दासिन्ह दीख सचिव विकलाई । कौसल्या गृहँ गई लवाई ॥
जाइ सुमंत्र दीख कस राजा । अमिअ रहित जनु चंडु विराजा ॥
आसन सयन विभूपन हीना । परेउ भूमितल निपट मलीना ॥
लेइ उसासु सोच एहि भाँती । सुरपुर तें जनु खँसेउ जजाती ॥
लेत सोच भरि छिनु छिनु छाती । जनु जरि पंख परेउ संपाती ॥
राम राम कह राम सनेही । पुनि कह राम लखन वैदेही ॥

दो०—देखि सचिवैं जय जीव कहि कीन्हेउ दंड प्रनासु ।

सुनत उठेउ व्याकुल नृपति कहु सुमंत्र कहँ रामु ॥१४८॥

भूप सुमंत्रु लीन्ह उर लाई । बूड़त कछु अधार जनु पाई ॥
सहित सनेह निकट बैठारी । पूँछत राउ नयन भरि वारी ॥
राम कुसल कहु सखा सनेही । कहँ रघुनाथु लखनु वैदेही ॥
आने फेरि कि बनहि सिधाए । सुनत सचिव लोचन जल छाए ॥
सोक विकल पुनि पूँछ नरेखु । कहु सिय राम लखन संदेखु ॥
राम रूप गुन सील सुभाऊ । सुमिरि सुमिरि उर सोचत राऊ ॥
राउ सुनाइ दीन्ह बनवासु । सुनि मन भयउ न हरपु हराँखु ॥
सो सुत विछुरत गए न प्राणा । को पापी बड़ मोहि समाना ॥

दो०-सखा रामु सिय लखनु जहँ तहाँ मोहि पहुँचाउ ।

नाहिं त चाहत चलन अब प्रान कहउँ सतिभाउ ॥१४९॥

पुनि पुनि पूँछत मंत्रिहि राऊ । प्रियतम सुअन मँदेस सुनाऊ ॥
 करहि सखा सोइ बेगि उपाऊ । रामु लखनु सिय नयन देखाऊ ॥
 सचिव धीर धरि कह सृदु बानी । महाराज तुम्ह पंडित ग्यानी ॥
 वीर सुधीर धुरंधर देवा । साधु समाजु सदा तुम्ह सेवा ॥
 जनम मरन सब दुख सुख भोगा । हानि लाभु प्रिय मिलन वियोगा
 काल करम बस होहिं गोसाईं । बरबस राति दिवस की नाईं ॥
 सुख हरपहिं जड़ दुख बिलखाहीं । दोउ सम धीर धरहिं मन माहीं ॥
 धीरज धरहु विवेकु विचारी । छाड़िअ सोच सकल हितकारी ॥

दो०-प्रथम बासु तमसा भयउ दूसर सुरसरि तीर ।

न्हाइ रहे जलपानु करि सिय समेत दोउ वीर ॥१५०॥

केवट कीन्हि बहुत सेवकाई । सो जामिनि सिंगरौरु गवाँई ॥
 होत प्रात बट छीरु भगावा । जटा मुकुट निज सीस बनावा ॥
 राम सखाँ तव नाव मगाई । प्रिया चढ़ाइ चढ़े रघुराई ॥
 लखन बान धनु धरे बनाई । आपु चढ़े प्रभु आयसु पाई ॥
 विकल विलोकि माँहि रघुवीरा । बोले मधुर बचन धरि धीरा ॥
 तात प्रनामु तात सन कहेहु । बार बार पद पंकज गहेहु ॥
 करवि पायँ परि विनय बहोरी । तात करिअ जनि चिंता मोरी ॥
 बन भग मंगल कुसल हमारे । कृपा अनुग्रह पुन्य तुम्हारे ॥

छं०-तुम्हरे अनुग्रह तात कानन जात सब सुखु पाइही

प्रतिपालि आयसु कुसल देखन पाय पुनि ।

जननीं सकल परितोषि परि परि पायँ करि बिनती धनी ।

तुलसी करेहु सोइ जतनु जेहि कुसली रहहि कोसलधनी ॥

सो०—गुर सन कहव सँदेसु वार वार पद पदुम गहि ।

करव सोइ उपदेसु जेहि न सोच मोहि अवधपति ॥१५१॥

पुरजन परिजन सकल निहोरी । तात सुनाएहु बिनती मोरी ॥

सोइ सब भाँति मोर हितकारी । जातें रह नरनाहु सुखारी ॥

कहव सँदेसु भरत के आएँ । नीति न तजिअ राजपदु पाएँ ॥

पालेहु प्रजहि करम मन बानी । सेएहु मातु सकल सम जानी ॥

ओर निबाहेहु भायप भाई । करि पितु मातु सुजन सेवकाई ॥

तात भाँति तेहि राखव राऊ । सोच मोर जेहि करै न काऊ ॥

लखन कहे कछु बचन कठोरा । बरजिराम पुनि मोहि निहोरा ॥

वार वार निज सपथ देवाई । कहवि न तात लखन लरिकाई ॥

दो०—कहि प्रनासु कछु कहन लिय सिय भइ सिथिल सनेह ।

थकित बचन लोचन सजल पुलक पल्लवित देह ॥१५२॥

तेहि अवसर रघुवर रुख पाई । केवट पारहि नाव चलाई ॥

रघुकुलतिलक चले एहि भाँती । देखउँ ठाढ़ कुलिस धरि छाती ॥

मैं आपन किमि कहाँ कलेसू । जिअत फिरेउँ लेइ राम सँदेसू ॥

अस कहि सचिव बचन रहि गयऊ । हानि गलानि सोचवस भयऊ ॥

सत बचन सुनतहिं तरनाहू । परेउ धरनि उर दारुन दाहू ॥

तलफत विपम मोह मन मापा । माजा मनहुँ मीन कहूँ व्यापा ॥

करि विलाप सब रोवहिं रानी । महा विपति किमि जाइ बखानी ॥

सुनि विलाप दुखहू दुखु लागा । धीरजहू कर धीरजु भागा ॥

दो०—भयउ कोलाहलु अवध अति सुनि नृप राउर सोरु ।

विपुल विहग वन परेउ निसि मानहुँ कुलिस कठोरु ॥१५३॥

प्राण कंठगत भयउ भुआलु । मनि विहीन जनु व्याकुल व्यालु ॥
 इंद्रौ सकल विकल भई भारी । जनु सर सरसिज वनु विनु वारी ॥
 कौसल्याँ नृपु दीख मलाना । रविकुल रविअँथयउ जियँ जाना ॥
 उर धरि धीर राम महतारी । बोली वचन समय अनुसारी ॥
 नाथ समुझि मन करिअ विचारू । राम वियोग पयोधि अपारू ॥
 करनधार तुम्ह अवध जहाजू । चढ़ेउ सकल प्रिय पथिक समाजू ॥
 धीरजु धरिअ त पाइअं पारू । नाहिँ त बूढ़िहि सघु परिवारू ॥
 जौँ जियँ धरिअ विनय पिय मोरी । रामु लखनु सिय मिलहिँ बहोरी ॥

दो०—प्रिया वचन मृदु सुनत नृपु पितयउ आँखि उधारि ।

तलफत मीन मलीन जनु सींचत सीतल वारि ॥१५४॥

धरि धीरजु उठि बैठ भुआलु । कहु सुमंत्र कहँ राम कृपालु ॥
 कहाँ लखनु कहँ रामु सनेही । कहँ प्रिय पुत्रवधू बैदेही ॥
 बिलपत राउ विकल बहु भाँती । भइ जुग सरिस सिराति न राती ॥
 तापस अंध साप मुधि आई । कौसल्यहि सब कथा सुनाई ॥
 भयउ विकल वरनत इतिहासा । राम रहित धिग जीवन आसा ॥
 सो तनु राखि करव मैँ काहा । जेहि न प्रेम पनु मोर निवाहा ॥
 हा रघुनंदन ग्रान पिरीते । तुम्ह विनु जिअत बहुत दिन धीते ॥
 हा जानकी लखन हा रघुवर । हा पितु हित चित चातक जलधर ॥

दो०—राम राम कहि राम कहि राम राम कहि राम ।

तनु परिहरि रघुवर विरहँ राउ गयउ सुरधाम ॥१५५॥

जिअन मरन फलु दसरथ पावा । अंड अनेक अमल जसु छावा ॥
 जिअत राम विधु वदनु निहारा । राम विरह करि मरनु सँवारा ॥
 सोक विकल सब रोवहिं रानी । रूपु सीलु बलु तेजु वरवानी ॥
 करहिं विलाप अनेक प्रकारा । परहिं भूमितल बारहिं बारा ॥
 विलपहिं विकल दास अरु दासी । घर घर रुदनु करहिं पुरवासी ॥
 अँथयउ आजु भानुकुल भानू । धरम अवधि गुन रूप निधानू ॥
 गारीं सकल कैंकड़हि देहीं । नयन विहीन कीन्ह जग जेहीं ॥
 एहि विधि विलपत रैन विहानी । आए सकल महामुनि ग्यानी ॥

दो०—तत्र वसिष्ठ मुनि समय सम कहि अनेक इतिहास ।

सोक नेवारेउ सवहि कर निज विग्यान प्रकास ॥१५६॥

तेल नावँ भरि नृप तनु राखा । दूत बोलाइ बहुरि अस भापा ॥
 धावहु वेगि भरत पहिं जाहू । नृप सुधि कतहुँ कहहु जनि काहू ॥
 एतनेइ कहेहु भरत सन जाई । गुर बोलाइ पठयउ दोउ भाई ॥
 सुनि मुनि आयसु धावन धाए । चले वेग वर वाजि लजाए ॥
 अनरथु अवध अरंभेउ जव तें । कुसगुन होहिं भरत कहुँ तत्र तें ॥
 देखहिं राति भयानक सपना । जागि करहिं कहु कोटिकल्पना ॥
 विप्र जेवाँइ देहिं दिन दाना । सिव अभिषेक करहिं विधि नाना ॥
 मागहिं हृदयँ महेस मनाई । कुसल मातु पितु परिजन भाई ॥
 दो०—एहि विधि सोचत भरत मन धावन पहुँचे आइ ।

गुर अनुसासन श्रवन सुनि चले गनेसु मनाइ ॥१५७॥

चले समीर वेग हय हाँके । नाघत सरित सैल बन वाँके ॥
 हृदयँ सोचु वड कलु न सोहाई । अस जानहिं जियँ जाउँ उड़ाई ॥

एक निमेष वरप सम जाई। एहि विधि भरत नगर निअराई ॥
 असगुन होहि नगर पँठारा। रटहि कुभाँति कुखेत करारा ॥
 खर सिआर बोलहि प्रतिकूला। सुनि सुनि होइ भरत मन सूला ॥
 श्रीहत सर सरिता वन वागा। नगरु विसेपि भयावनु लागा ॥
 खग मृग हय गय जाहि न जोए। राम वियोग कुरोग विगोए ॥
 नगर नारि नर निपट दुखारी। मनहुँ सवन्हि सव संपति हारी ॥

दो०—पुरजन मिलहि न कहहि कछु गवैहि जोहारहि जाहि ।

भरत कुसल पूँछि न सकहि भय विपाद मन माहि ॥१५८॥

हाट वाट नहि जाइ निहारी। जनु पुर दहँ दिसि लागि दवारी ॥
 आवत सुत सुनि कैकयनंदिनि। हरपी रविकुल जलरुह चंदिनि ॥
 सजि आरती मुदित उठि धाई। द्वारेहिं भेंटि भवन लेइ आई ॥
 भरत दुखित परिवारु निहारा। मानहुँ तुहिन वनज वनु मारा ॥
 कैकेई हरपित एहि भाँती। मनहुँ मुदित दव लाइ किराती ॥
 सुतहि ससोच देखि मनु मारें। पूँछति नैहर कुसल हमारें ॥
 सकल कुसल कहि भरत सुनाई। पूँछी निज कुल कुसल भलाई ॥
 कहु कहुँ तात कहाँ सव माता। कहुँ सिय राम लखन प्रिय आता ॥

दो०—सुनि सुत वचन सनेहमय कपट नीर भरि नैन ।

भरत धवन मन सूल सम पापिनि बोली वैन ॥१५९॥

तात वात मैं सकल सँवारी। मैं मंथरा सहाय विचारी ॥
 कछुक काज विधि बीच विगारेउ। भूपति सुरपति पुर पगु धारेउ ॥
 सुनत भरतु भए विषस विषादा। जनु सहमेउ करि केहरि नादा ॥
 तात तात हा तात पुकारी। परे भूमितल न्याकुल भारी ॥

चलत न देखन पायउँ तोही । तात न रामहि सौँपेहु मोही ॥
 बहुरि धीर धरि उठे सँभारी । कहु पितु मरन हेतु महतारी ॥
 सुनि सुत वचन कहति कैकेई । मरमु पाँछि जनु माहुर देई ॥
 आदिहु तैं सब आपनि करनी । कुटिल कठोर मुदित मन बरनी ॥

दो०—भरतहि विसरेउँ पितु मरन सुनत राम वन गौनु ।

हेतु अपनपउ जानि जियँ थकित रहे धरि मौनु ॥१६०॥

विकल बिलोकि सुतहि समुझावति । मनहुँ जरे पर लोनु लगावति ॥
 तात राउ नहिँ सोचै जोगू । विदइ सुकृत जसु कीन्हेउ भोगू ॥
 जीवत सकल जनम फल पाए । अंत अमरपति सदन सिधाए ॥
 अस अनुमानि सोच परिहरहू । सहित समाज राज पुर करहू ॥
 सुनि सुठि सहमेउ राजकुमारू । पाकें छत जनु लाग अँगारू ॥
 धीरज धरि भरि लेहिँ उसासा । पापिनि सबहि भाँति कुल नासा ॥
 जौँ पै कुरुचि रही अति तोही । जनमत काहे न मारे मोही ॥
 पेड़ काटि तैं पालउ सींचा । मीन जिअन निति वारि उलीचा ॥

दो०—हंसवंसु दसरथु जनकु राम लखन से भाइ ।

जननी तूँ जननी भई विधि सन कछु न बसाइ ॥१६१॥

मे अति अहित रामु तेउ तोही । को तू अहसि सत्य कहु मोही ॥
जो हसि सो हसि मुहँ मसि लाई । आँखि ओट उठि बैठहि जाई ॥

दो०—राम विरोधी हृदय ते प्रगट कीन्ह विधि मोहि ।

मो समान को पातकी यदि कहउँ कछु तोहि ॥१६२॥

सुनि सधुघुन मातु कुटिलाई । जरहिं गात रिस कछु न बसाई ॥
तेहि अवसर कुवरी नहँ आई । बसन विभूषन विविध बनाई ॥
लखि रिस भरेउ लखनलघु भाई । वरत अनल घृन आहुति पाई ॥
हुमगि लात तकि कृपार मारा । परि गुह भर महि करत पुकारा ॥
कृपार दूटेउ फूट कपारु । दलित दमन मुख रुधिर प्रचारु ॥
आह दइअ मैं काह नसावा । करत नीक फलु अनइस पावा ॥
सुनि रिपुहन लखि नखसिख खोटी । लगे घभीटन धरि धरि झोटी
भरत दपानिधि दीन्हि छड़ाई । कौसल्या पहिं गे दाउ भाई ॥

दो०—मलिन बसन विवरन विकल हस सरीर दुख भार ।

कनक घलप घर बेलि बन मानहुँ हनी तुसार ॥१६३॥

भरतहि देखि मातु उठि धाई । मुरुछित अत्रनि परी झई आई ॥
देखत भरतु विकल भए भारी । परे चरन तन दसा बिसारी ॥
मातु तात कहँ देहि देखाई । कहँ सिय रामु लखनु दोउ भाई ॥
कैकइ कत जनमी जग माझा । जीं जनमि त भइ काहं न घाँझा ॥
कुल कलंकु जेहिं जनमेउ मोही । अपजस भाजन प्रिय जन द्रोही ॥
को तिभुवन मोहि सरिस अभागी । गति असि तोरि मातु जेहि लागी
पितु सुरपुर बन रघुवर केतु । मैं केवल सब अनरथ हेतु ॥
धिग मोहि भयउँ बेनु बन आगी । दुसह दाह दुख दूषन भागी ॥

दो०—गातु भरत के वचन मृदु सुनि पुनि उठी सँभारि ।

लिए उठाइ लगाइ उर लोचन मोचति वारि ॥१६४॥

सरल सुभाय मायँ हियँ लाए । अति हित मनहुँ राम फिरि आए ॥

भँटेउ बहुरि लखन लघु भाई । सोकु सनेहु न हृदयँ समाई ॥

देखि सुभाउ कहत सबु कोई । राम मातु अस काहे न होई ॥

माताँ भरतु गोद वैठारे । आँसु पोंछि मृदु वचन उचारे ॥

अजहुँ बच्छ बलि धीरज धरहू । कुसमउ समुझि सोक परिहरहू ॥

जनि मानहु हियँ हानि गलानी । काल करम गति अघटित जानी ॥

काहुहि दोसु देहु जनि ताता । भा मोहि सब विधि बाम विधाता ॥

जो एतेहुँ दुख मोहि जिआवा । अजहुँ को जानइ का तेहि भावा ॥

दो०—पितु आयस भूषन वसन तात तजे रघुवीर ।

विसमउ हरपु न हृदयँ कछु पहिरे बलकल चीर ॥१६५॥

मुख प्रसन्न मन रंग न रोषू । सब करसब विधि करि परितोषू ॥

चले विपिन सुनि सिध संग लागी । रहइ न राम चरन अनुरागी ॥

सुनतहिँ लखनु चले उठि साथा । रहहिँ न जतन किए रघुनाथा ॥

तव रघुपति सबही सिरु नाई । चले संग सिध अरु लघु भाई ॥

रामु लखनु सिध वनहि सिधाए । गइउँ न संग न प्रान पठाए ॥

यहु सबु भा इन्ह आँखिन्ह आगें । तउ न तजा तनु जीव अभागें ॥

मोहि न लाज निज नेहु निहारी । राम सरिस सुत में महतारी ॥

जिए मरै भल भूपति जाना । मोर हृदय सत कुलिस समाना ॥

दो०—कौसल्या के वचन सुनि भरत सहित रनिवासु ।

व्याकुल विलपत राजगृह मानहुँ सोक नेवासु ॥१६६॥

विलपहि विकल भरत दोउ भाई। कौसल्याँ लिए हृदयँ लगाई ॥
 भाँति अनेक भरत समुझाए। कहि विवेकमय वचन सुनाए ॥
 भरतहुँ मातु सकल समुझाई। कहि पुरान श्रुति कथा सुहाई ॥
 छल विहीन सुचि सरल सुवानी। बोले भरत जोरि जुग पानी ॥
 जे अघ मातु पिता सुन मारें। गाइ गोठ महिसुर पुर जारें ॥
 जे अघ तिय बालक बध कीन्हें। भीत महीपति माहुर दीन्हें ॥
 जे पातक उपपातक अहहीं। करम वचन मन भय कवि कहहीं ॥
 ते पातक मोहि होहुँ विधाता। जाँ यहु होइ मोर मत माता ॥

दो०—जे परिहरि हरि हर चरन भजहि भूतगन घोर ।

तेहि कइ गति मोहि देउ विधि जाँ जननी मत मोर ॥१६७॥

बेचहि वेदु धरमु दुहि लेहीं। पिसुन पराय पाप कहि देहीं ॥
 कपटी कुटिल कलहप्रिय क्रोधी। वेद विदूषक विख विरोधी ॥
 लोभी लंपट लोलुपचारा। जे ताकहिं परधनु परदारा ॥
 पार्वी में तिन्ह कै गति घोरा। जाँ जननी यहु संमत मोरा ॥
 जे नहिं साधुसंग अनुरागे। परमारथ पथ विमुख अभागे ॥
 जे न भजहि हरि नरतनु पाई। जिन्हहि न हरि हर सुजसु सोहाई ॥
 तजि श्रुति पंथु वाम पथ चलहीं। बंचक विरचि बेप जगु छलहीं ॥
 तिन्ह कै गति मोहि संकर देऊ। जननी जाँ यहु जानीं भेऊ ॥

दो०—मातु भरत के वचन सुनि साँचे सरल सुभायें ।

कहति राम प्रिय तात तुम्ह सदा वचन मन कायें ॥१६८॥

राम प्रानहु तें प्रान तुम्हारे। तुम्ह रघुपतिहि प्रानहु तें प्यारे ॥
 विधु विप चवै स्रवै हिमु आगी। होइ वारिचर वारि विरागी ॥

यानु बरु मिटै न मोहू । तुम्ह रामहि प्रतिकूल न होहू ॥
 तुम्हार यहु जो जग कहहीं । सो सपनेहुँ सुख सुगति न लहहीं ॥
 कहि मातु भरतु हियँ लाए । थन पय स्रवहिँ नयन जल छाए ॥
 त बिलाप बहुत यहि भाँती । बैठेहिँ वीति गई सब राती ॥
 मदेउ बसिष्ठ तब आए । सचिव महाजन सकल बोलाए ॥
 नि बहु भाँति भरत उपदेसे । कहि परमारथ वचन सुदेसे ॥

दो०-तात हृदयँ धीरजु घरहु करहु जो अवसर आजु ।
 उठे भरत गुर वचन सुनि करन कहेउ सबु साजु ॥१६९॥

नृपतनु वेद विदित अन्हवावा । परम विचित्र विमानु बनावा ॥
 गहि पद भरत मातु सब राखी । रहीं रानि दरसन अभिराषी ॥
 चंदन अगर भार बहु आए । अमित अनेक सुगंध सुहाए ॥
 सरजु तीर रचि चिता बनाई । जनु सुरपुर सोपान सुहाई ॥
 एहि विधि दाह क्रिया सब कीन्ही । विधिवत न्हइ तिलांजुलि दीन्ही ॥
 सोधि सुमृति सब वेद पुराना । कीन्ह भरत दसगात विधाना ॥
 जहँ जस मुनिवर आयसु दीन्हा । तहँ तस सहस्र भाँति सबु कोन्हा ॥
 भए विसुद्ध दिए सब दाना । धेनु बाजि गज वाहन नाना ॥

दो०-सिंघासन भूषन बसन अन्न घरनि धन धाम ।
 दिए भरत लहि भूमिसुर मे परिपूरन काम ॥१७०॥

पितु हित भरत कीन्हिँ जसि करनी । सो मुख लाख जाइ नहिँ बर
 सुदिनु सोधि मुनिवर तब आए । सचिव महाजन सकल बोला
 बैठे राजसभाँ सब जाई । पठए बोलिँ भरत दोउ
 भरतु बसिष्ठ निकट बैठारे । नीति धरममय वचन उच

प्रथम कथा सब मुनिवर बरनी । कैकड़ कुटिल कीन्हि जसि करनी
भूप धरम ब्रतु सत्य सराहा । जेहिं तनु परिहरि प्रेमु निवाहा ॥
कहत राम गुन सील सुभाऊ । सजल नयन पुलकेउ मुनिराऊ ॥
बहुरि लखन सिय प्रीति बखानी । सोक सनेह मगन मुनि ग्यानी ॥
दो०—सुनहु भरत भावी प्रबल बिलखि कहेउ मुनिनाथ ।

हानि लाभु जीवनु मरनु जसु अपजसु विधि हाथ ॥१७१॥

अस विचारि केहि देइअ दोसू । व्यरथ काहि पर कीजिअ रोसू ॥
तात विचारु करहु मन माहीं । सोच जोगु दसरथु नृपु नाहीं ॥
सोचिअ विप्र जो वेद विहीना । तजि निज धरमु विषय लयलीना
सोचिअ नृपति जो नीति न जाना । जेहि न प्रजा प्रिय प्रान समाना
सोचिअ बयसु कृपन धनवान् । जो न अतिथि सिय भगति सुजान्
सोचिअ छद्दु विप्र अवमानी । मुखर मानप्रिय ग्यान गुमानी ॥
सोचिअ पुनि पति बंचक नारी । कुटिल कलहप्रिय इच्छाचारी ॥
सोचिअ बटु निज ब्रतु परिहरई । जो नहिं गुर आयसु अनुसरई ॥

दो०—सोचिअ गृही जो मोहबस करइ करम पथ त्याग ।

सोचिअ जती प्रपंच रत विगत विवेक विराग ॥१७२॥

बैखानस सोइ सोच जोगू । तपु विहाइ जेहि भावइ भोगू ॥
सोचिअ पिसुन अकारन क्रोधी । जननि जनक गुर बंधु विरोधी ॥
सब विधि सोचिअ पर अपकारी । निज तनु पोषक निरदय भारी ॥
सोचनीय सबहीं विधि सोई । जो न छाड़ि छलु हरि जन होई ॥
सोचनीय नहिं कोसलराऊ । भुवन चारिदस प्रगट प्रभाऊ ॥
भयउ न अहइ न अब होनिहारा । भूप भरत जस पिता तुम्हारा ॥

विधि हरि हरु सुरपति दिसानथा । वरनहिं सब दसरथ गुन गाथा

दो०—कहहु तात केहि भाँति कोउ करिहि बड़ाई तासु ।

राम लखन तुम्ह सनुहन सरिस सुअन सुचि जासु ॥१७३॥

सब प्रकार भूपति बड़भागी । बादि विपादु करिअ तेहि लागी ॥

यहु सुनि समुझि सोचु परिहरहु । सिर धरि राज रजायसु करहु ॥

रायँ राजपदु तुम्ह कहँ दीन्हा । पिता बचनु फुर चाहिअ कीन्हा ॥

तजे रामु जेहिं वचनहि लागी । तनु परिहरेउ राम विरहागी ॥

नृपहि वचन प्रिय नहिं प्रिय प्राना । करहु तात पितु वचन प्रवाना

करहु सीस धरि भूप रजाई । हइ तुम्ह कहँ सब भाँति भलाई ॥

परसुराम पितु अग्या राखी । मारी मातु लोक सब साखी ॥

तनय जजातिहि जौवनु दयऊ । पितु अग्याँ अघ अजसु न भयऊ ॥

दो०—अनुचित उचित विचारु तजि जे पालहिं पितु बैन ।

ते भाजन सुख सुजस के बसहिं अमरपति ऐन ॥१७४॥

अवसि नरेस वचन फुर करहु । पालहु प्रजा सोकु परिहरहु ॥

सुरपुर नृपु पाइहि परितोषु । तुम्ह कहँ सुकृत सुजसु नहिं दोषु

बैद विदित संमत सबही का । जेहि पितु देइ सो पावइ टीका ॥

करहु राजु परिहरहु गलानी । मानहु मोर वचन हित जानी ॥

सुनि सुखु लहव राम वैदेहीं । अनुचित कहव न पंडित केहीं ॥

कौसल्यादि सकल महतारीं । तेउ प्रजा सुख होहिं सुखारीं ॥

परम तुम्हार राम कर जानिहि । सो सब विधि तुम्ह सन भल मानिहि

सौपेहु राजु राम के आएँ । सेवा करेहु सनेह सुहाएँ ॥

दो०—कीजिअ गुर आयसु अवसि कहहि सचिव कर जोरि ।

रघुपति आएँ उचित जस तस तब करव बहोरि ॥१७५॥

कौसल्या धरि धीरजु कहई । पूत पथ्य गुर आयसु अहई ॥
सो आदरिअ करिअ हित मानी । तजिअ त्रिपादु काल गति जानी ॥
वन रघुपति सुरपति नरनाहू । तुम्ह एहि भाँति तात कदराहू ॥
परिजन प्रजा सचिव सब अंबा । तुम्हही सुत सब कहँ अवलंबा ॥
लखि विधि वाम कालु कठिनाई । धीरजु धरहु मातु बलि जाई ॥
सिर धरि गुर आयसु अनुसरहू । प्रजा पालि परिजन दुखु हरहू ॥
गुर के बचन सचिव अभिनंदनु । सुने भरत हिय हित जनु चंदनु ॥
सुनी बहोरि मातु मृदु बानी । सील सनेह सरल रस सानी ॥

छं०—सानी सरल रस मातु बानी सुनि भरतु व्याकुल भए ।

लोचन सरोरुह स्रवत सींचत विरह उर अंकुर नए ॥

सो दत्ता देखत समय तेहि बिसरी सबहि सुधि देह की ।

तुलसी सराहत सकल सादर सीवै सहज सनेह की ॥

सो०—भरतु कमल कर जोरि धीर धुरंधर धीर धरि ।

बचन अमिअँ जनु धोरि देत उचित उत्तर सबहि ॥१७६॥

मासपारायण, अठारहवाँ विश्राम

मोहि उपदेसु दीन्ह गुर नीका । प्रजा सचिव संमत सबही का ॥
मातु उचित धरि आयसु दीन्हा । अवसि सीस धरि चाहउँ कीन्हा
गुर पितु मातु स्वामि हित बानी । सुनि मन मुदित करिअ भलि जानी
उचित कि अनुचित किएँ विचारू । धरमु जाइ सिर पातक भारू ॥
तुम्ह तौ देहु सरल सिख सोई । जो आचरत मोर भल होई ।

जद्यपि यह समुझत हउँ नीकें। तदपि होत परितोपु न जी कें।
अब तुम्ह विनय मोरि सुनि लेहू। मोहि अनुहरत सिखावनु देहू ॥
रुतरु देउँ छमत्र अपराधू। दुखित दोष गुन गनहिं न साधू ॥

दो०—पितु सुरपुर सिय रामु वन करन कहहु मोहि राजु ।

एहि तें जानहु मोर हित कै आपन वड़ काजु ॥१७७॥

हित हमार सियपति सेवकाईं। सो हरि लीन्ह मातु कुटिलाईं ॥
मैं अनुमानि दीख मन माहीं। आन उपायँ मोर हित नाहीं ॥
स्नेक समाजु राजु केहि लेखें। लखन राम सिय विनु पद देखें ॥
बादि वसन विनु भूपन भारू। बादि विरति विनु ब्रह्मविचारू ॥
सरुज सरीर बादि बहु भोगा। विनु हरिभगति जायँ जप जोगा ॥
जायँ जीव विनु देह सुहाई। बादि मोर सबु विनु रघुराई ॥
जाउँ राम पहिं आयसु देहू। एकहिं आँक मोर हित एहू ॥
मोहि नृप करि भल आपन चहहू। सोउ सनेह जड़ता बस कहहू ॥

दो०—कैकई सुअ कुटिलमति राम विमुख गतलाज ।

तुम्ह चाहत सुखु मोहवस मोहि से अधम कें राज ॥१७८॥

कहउँ साँचु सब सुनि पतिआहू। चाहिअ धरमसील नरनाहू ॥
मोहि राजु हठि देइहहु जवहीं। रसा रसातल जाइहि तवहीं ॥
मोहि समान को पाप निवासू। जेहिलगि सीय राम वनवासू ॥
रायँ राम कहूँ काननु दीन्हा। विछुरत गमनु अमरपुर कीन्हा ॥
मैं सठु सब अनरथ कर हेतू। बैठ बात सब सुनउँ सचेतू ॥
विनु रघुवीर विलोकि अवासू। रहे प्राण सहि जग उपहासू ॥
राम पुनीत विषय रस रूखे। लोलुप भूमि भोग के भूखे ॥

कहँ लागि कहों हृदय कठिनाई। निदरि कुलिसु जेहिं लही बड़ाई ॥

दो०—कारन तें कारजु कठिन होइ दोसु नहि मोर ।

कुलिस अस्थि तें उपल तें लोह कराल कठोर ॥१७९॥

कैकई भव तनु अनुरागे। पावँर प्रान अघाइ-अभागे ॥
 जीं प्रिय विरहँ प्रान प्रिय लागे। देखव मुनव बहुत अब आगे ॥
 लखन राम सिय कहँ वनु दीन्हा। पठइ अमरपुर पति हित कीन्हा ॥
 लीन्ह विधवपन अपजसु आपू। दीन्हेउ प्रजहि सोकु संतापू ॥
 मोहि दीन्ह सुखु सुजसु सुराजू। कीन्ह कैकई सय कर काजू ॥
 एहि तें मोर काह अब नीका। तेहि पर देन कहहु तुम्ह टीका ॥
 कैकइ जठर जनमि जग माहीं। यह मोहि कहँ कछु अनुचित नाहीं ॥
 मोरि बात सय विधिहिं घनाई। प्रजा पाँच कत करहु सहाई ॥

दो०—प्रह प्रहीत पुनि घात घस तेहि पुनि बीछी मार ।

तेहि पिआइअ धारुनी कहहु काह उपचार ॥१८०॥

कैकइ सुअन जोगु जग जोई। चतुर विरंचि दीन्ह मोहि सोई ॥
 दसरथ तनय राम लघु भाई। दीन्हि मोहि विधि घादि बड़ाई ॥
 तुम्ह सब कहहु कड़ावन टीका। राय रजायसु सब कहँ नीका ॥
 उतरु देउँ केहि विधि केहि केही। कहहु मुखेन जथा रुचि जेही ॥
 मोहि कुमातु समेत विहाई। कहहु कहिहि के कीन्ह भलाई ॥
 मो धिनु को सचराचर माहीं। जेहि सिय रामु प्रानप्रिय नाहीं ॥
 परम हानि सब कहँ बड़ लाहू। अदिनु मोर नहिं दूपन काहू ॥
 संसय सील प्रेम बस अहहू। सबुइउचित सब जो कछु कहहू ॥

दो०—राम मातु सुठि सरलचित मो पर प्रेमु विसेपि ।

कहइ सुभाय सनेह वस मोरि दीनता देखि ॥१८१॥

गुर विवेक सागर जगु जाना । जिन्हहि बिस्व कर वदर समाना ॥
मो कहँ तिलक साज सज सोऊ । भएँ विधि विमुख विमुख सबु कोऊ
परिहरि रामु सीय जग माहीं । कोउ न कहिहि मोर मत नाहीं ॥
सो मैं सुनव सहव सुखु मानी । अंतहुँ कीच तहाँ जहँ पानी ॥
डरुन मोहि जग कहिहि कि पोचू । परलो कहू कर नाहिन सोचू ॥
एकइ उर वस दुसह दवारी । मोहिलगि भे सिय रामु दुखारी ॥
जीवन लाहु लखन भल पावा । सबु तजि राम चरन मनु लावा ॥
मोर जनम रघुवर बन लागी । झूठ काह पछिताउँ अभागी ॥

दो०—आपनि दारुन दीनता कहउँ सबहि सिरु नाइ ।

देखें विनु रघुनाथ पद जिय कै जरनि न जाइ ॥१८२॥

आन उपाउ मोहि नहिँ सूझा । को जिय कै रघुवर विनु बूझा ॥
एकहिँ आँक इहइ मन माहीं । प्रातकाल चलिहउँ प्रभु पाहीं ॥
जद्यपि मैं अनभल अपराधी । भै मोहि कारन सकल उपाधी ॥
तदपि सरन सनमुख मोहि देखी । छमि सब करिहहिँ कृपा विसेयी ॥
सील सकुच सुठि सरल सुभाऊ । कृपा सनेह सदन रघुराऊ ॥
अरिहुक अनभल कीन्ह न रामा । मैं सिसु सेवक जद्यपि वामा ॥
तुम्ह पै पाँच मोर भल मानी । आयसु आसिप देहु सुवानी ॥
जेहिँ सुनि विनय मोहि जनु जानी । आइहिँ बहुरि रामु रजधानी ॥

दो०—जद्यपि जनमु कुपातु तें मैं सटु सदा सदोस ।

भरत बचन सब कहँ प्रिय लागे । राम सनेह सुधाँ जनु पागे ॥
लोग वियोग विषम विष दागे । मंत्र सबीज सुनत जनु जागे ॥
मातु सचिव गुर पुर नर नारी । सकल सनेहँ विकल भए भारी ॥
भरतहि कहहिं सराहि सराही । राम प्रेम मूरति तनु आही ॥
तात भरत अस काहे न कहहू । प्राण समान राम प्रिय अहहू ॥
जो पायँरु अपनी जड़ताई । तुम्हहि सुगाइ मातु कुटिलाई ॥
सो सठु कोटिक पुरुष समेता । बसिहि कल्प सत नरक निकेता ॥
अहि अघ अवगुन नहिं मनि गहई । हरइ गरल दुख दारिद दहई ॥

दो०—अवसि चलिअ वन रामु जहँ भरत मंत्रु भल कीन्ह ।

सोक सिंधु बूझत सबहि तुम्ह अवलंबनु दीन्ह ॥१८४॥

भा सब केँ मन मोदु न थोरा । जनु धन धुनि सुनि चातक मोरा ॥
चलत प्रात लखि निरनउ नीके । भरतु प्राणप्रिय मे सबही के ॥
मुनिहि बंदि भरतहि सिरु नाई । चले सकल घर विदा कराई ॥
धन्य भरत जीवनु जग माहीं । सीलु सनेहु सराहत जाहीं ॥
कहहिं परसपर भा वड काजू । सकल चलँ कर साजहिं साजू ॥
जेहि राखहिं रहु घर रखवारी । सो जानइ जनु गरदनि मारी ॥
फाँउ कह रहन कहिअ नहिं काहू । को न चहइ जग जीवन लाहू ॥

दो०—जरउ सो संपति सदन सुखु सुहृद मातु पितु भाइ ।

सनमुख होत जो राम पद करै न सहस सहाइ ॥१८५॥

घर घर साजहिं वाहन नाना । हरपु हृदयँ परभात पयाना ॥
भरत जाइ घर कीन्ह विचारू । नगरु वाजि गज भवन भँडारू ॥
संपति सब रघुपति केँ आही । जाँ विनु जतन चलौं तजि ताही ॥

तौ परिनाम न मोरि भलाई । पाप सिरोमनि साँ दौहाई ॥
 करइ स्वामि हित सेवकु सोई । दूपन कोटि देइ किन कोई ॥
 अस विचारि सुचि सेवक बोले । जे सपनेहुँ निज धरम न डोले ॥
 कहि सबु मरमु धरमु भल भाषा । जो जेहि लायक सो तेहिं राखा ॥
 करि सबु जतनु राखि रखवारे । राम मातु पहिं भरतु सिधारे ॥

दो०—आरत जननी जानि सब भरत सनेह सुजान ।

कहेउ वनावन पालकीं सजन सुखासन जान ॥१८६॥

चक्र चकि जिमि पुर नर नारी । चहत प्रात उर आरत भारी ॥
 जागत सब निसि भयउ विहाना । भरत बोलाए सचिव सुजाना ॥
 कहेउ लेहु सबु तिलक समाजू । बनहिं देव मुनि रामहि राजू ॥
 वेगि चलहु सुनि सचिव जोहारे । तुरत तुरग रथ नाग सँवारे ॥
 अरुंधती अरु अगिनि समाऊ । रथ चढ़ि चले प्रथम मुनिराऊ ॥
 विप्र वृंद चढ़ि वाहन नाना । चले सकल तप तेज निधाना ॥
 नगर लोग सब सजिसजि जाना । चित्रकूट कहँ कीन्ह पयाना ॥
 सिविका सुभग न जाहिं बखानी । चढ़ि चढ़ि चलत भई सब रानी ॥

दो०—सौं पि नगर सुचि सेवकनि सादर सकल चलाइ ।

सुमिरि राम सिय चरन तव चले भरत दोउ भाइ ॥१८७॥

राम दरस बस सब नर नारी । जनु करि करिनि चले तकि वारी ॥
 बन सिय रामु समुझि मन माहीं । सानुज भरत पयादेहिं जाहीं ॥
 देखि सनेहु लोग अनुरागे । उतरि चले हय गय रथ त्यागे ॥
 जाइ समीप राखि निज डोली । राम मातु मृदु बानी बोली ॥
 तात चढ़हु रथ बलि महतारी । होइहि प्रिय परिवारु दुखारी ॥

तुम्हरेँ चलत चलिहि सयु लोगू । सकल सोक कृस नहिँ मग जोगू
सिर धरि वचन चरन सिरु नाई । रथ चढ़ि चलत भए दोउ भाई ॥
तमसा प्रथम दिवस करि वासू । दूसर गोमति तीर निवासू ॥

दो०—पय अहार फल असन एक निसि भोजन एक लोग ।

करत राम हित नम वत परिहरि भूपन भोग ॥१८८॥

सई तीर वसि चले विहाने । संगवेरपुर सब निअराने ॥
समाचार सब सुने निपादा । हृदयँ विचार करइ सधिपादा ॥
कारन कवन भरतु बन जाहीं । है कछु कपट भाउ मन माहीं ॥
जाँ यँ जियँ न होति कुटिलाई । तौ कत लीन्ह संग कटकाई ॥
जानहिँ सानुज रामहि मारी । करउँ अकंटक राजु मुखारी ॥
भरत न राजनीति उर आनी । तव कलंकु अब जीवन हानी ॥
सकल मुरासुर जु रहिँ जुझारा । रामहि समर न जीतनिहारा ॥
का आचरजु भरतु अस करहीं । नहिँ धिप बेलि अमिअ फल फरहीं ॥

दो०—अस धिचारि गुहँ ग्याति सन कहेउ सजग सब होहु ।

हथपाँसहु घोरहु तरनि कीजिअ घाटारोहु ॥१८९॥

होहु मँजोइल रोकहु घाटा । ठाटहु सकल मरै के टाटा ॥
सनमुख लोह भरत सन लेऊँ । जिअत न मुरसरि उतरन देऊँ ॥
समर मरनु पुनि मुरसरि तीरा । राम काजु छनभंगु सरीरा ॥
भरत भाइ नृपु मँ जन नीचू । बहें भाग असि पाइअ मीचू ॥
म्यामि काज करिहउँ रन रारी । जस धवलिहउँ भुवन दम चारी ॥
तजउँ प्रान रघुनाथ निहोरें । दुहँ हाथ मुद मोदक मोरें ॥
साधु समाज न जाकर लेखा । राम भगत महुँ जासु न रेखा ॥

तौ परिनाम न मोरि भलाई। पाप सिरोमनि साईं दोहाई ॥
 करइ स्वामि हित सेवकु सोई। दूपन कोटि देइ किन कोई ॥
 अस विचारि सुचि सेवक बोले। जे सपनेहुँ निज धरम न डोले ॥
 कहि सवु मरमु धरमु भल भापा। जो जेहि लायक सो तेहिं राखा ॥
 करि सवु जतनु राखि रखवारे। राम मातु पहिं भरतु सिधारे ॥

दो०—आरत जननी जानि सब भरत सनेह सुजान ।

कहेउ वनावन पालकीं सजन सुखासन जान ॥१८६॥

चक चकि जिमि पुर नर नारी। चहत प्रात उर आरत भारी ॥
 जागत सब निसि भयउ बिहाना। भरत बोलाए सचिव सुजाना ॥
 कहेउ लेहु सवु तिलक समाजू। वनहिं देव मुनि रामहि राजू ॥
 वेगि चलहु सुनि सचिव जोहारे। तुरत तुरग रथ नाग सँवारे ॥
 अरुंधती अरु अगिनि समाऊ। रथ चढ़ि चले प्रथम मुनिराऊ ॥
 विप्र वृंद चढ़ि वाहन नाना। चले सकल तप तेज निधाना ॥
 नगर लोग सब सजि सजि जाना। चित्रकूट कहँ कीन्ह पयाना ॥
 सिविका सुभग न जाहिं बखानी। चढ़ि चढ़ि चलत भई सव रानी ॥
 दो०—सौंषि नगर सुचि सेवकनि सादर सकल चलाइ ।

सुमिरि राम सिय चरन तव चले भरत दोउ भाइ ॥१८७॥

राम दरस बस सब नर नारी। जनु करि करिनि चले तकि वारी ॥
 वन सिय रामु समुझि मन माहीं। सानुज भरत पयादेहिं जाहीं ॥
 देखि सनेहु लोग अनुरागे। उतरि चले हय गय रथ त्यागे ॥
 जाइ समीप राखि निज डोली। राम मातु मृदु बानी बोली ॥
 तात चढ़हु रथ बलि महतारी। होइहि प्रिय परिवारु दखारी ॥

तुम्हरे चलत चलिहि सबु लोगू । सकल सोक कृस नहिं मग जोगू
सिर धरि वचन चरन सिरु नाई । रथ चढ़ि चलत भए दोउ भाई ॥
तमसा प्रथम दिवस करि वास । दूसर गोमति तीर निवास ॥

दो०—पय अहार फल असन एक निसि भोजन एक लोग ।

करत राम हित नेम वत परिहरि भूपन भोग ॥१८८॥

सई तीर वसि चले विहाने । सुंगवेरपुर सब निअराने ॥
समाचार सब सुने निपादा । हृदयँ विचार करइ सविपादा ॥
कारन कवन भरतु वन जाहीं । है कछु कपट भाउ मन माहीं ॥
जाँ पै जियँ न होति कुटिलाई । तौ कत लीन्ह मंग कटकाई ॥
जानहिं सानुज रामहि मारी । करउँ अकंटक राजु सुखारी ॥
भरत न राजनीति उर आनी । तव कलंकु अब जीवन हानी ॥
मकल मुरासुर जु रहिं जुझारा । रामहि समर न जीतनिहारा ॥
का आचरजु भरतु अस करहीं । नहिं विप बेलि अमिअ फल फरहीं ॥

दो०—अस विचारि गुहँ ग्याति सन कहेउ सजग सब होहु ।

हथवाँसहु घोरहु तरनि कीजिअ घाटारोहु ॥१८९॥

होहु मैजोइल रोकहु घाटा । ठाटहु सकल मरै के टाटा ॥
सनमुख लोह भरत सन लेऊँ । जिअत न सुरसरि उतरन देऊँ ॥
समर मरनु पुनि सुरसरि तीरा । राम काजु छनभंगु सरीरा ॥
भरत भाइ नृपु मै जन नीचू । वढेँ भागँ असि पाइअ मीचू ॥
ग्यामि काज करिहउँ रन रारी । जस धवलिहउँ भुवन दम चारी ॥
तजउँ प्रान रघुनाथ निहोरें । दुहँ हाथ मुद् मोदक मोरें ॥
साधु समाज न जाकर लेखा । राम भगत महुँ जामु न रेखा ॥

दो०—गहहु घाट भट समिटि सब लेउँ मरम मिलि जाइ ।

बूझि मित्र अरि मध्य गति तस तब करिहउँ जाइ ॥१९२॥

लखव सनेहु सुभायँ मुहाएँ । वैरु प्रीति नहिँ दुरइँ दुराएँ ॥

अस कहि भेंट सँजोवन लागे । कंद मूल फल खग मृग मागे ॥

मीन पीन पाठीन पुराने । भरि भरि भार कहारन्ह आने ॥

मिलन साजु सजि मिलन सिधाए । मंगल मूल सगुन सुभ पाए ॥

देखि दूरि तें कहि निज नामू । कीन्ह मुनीसहि दंड प्रनामू ॥

जानि रामप्रिय दीन्हि असीसा । भरतहि कहेउ बुझाइ मुनीसा ॥

राम सखा सुनि संदनु त्यागा । चलेउ उतरि उमगत अनुरागा ॥

गाउँ जाति गुहँ नाउँ सुनाई । कीन्ह जोहारु माथ महि लाई ॥

दो०—करत दंडवत देखि तेहि भरत लीन्ह उर लाइ ।

मनहुँ लखन सन भेंट भइ प्रेमु न हृदयें समाइ ॥१९३॥

भेंटत भरतु ताहि अति प्रीती । लोग सिहाहिँ प्रेम कै रीती ॥

धन्य धन्य धुनि मंगल मूला । सुर सराहि तेहि वरिसहिँ फूला ॥

लोक वेद सब भाँतिहिँ नीचा । जासु छाँह छुइ लेइअ सींचा ॥

तेहि भरि अंक राम लघु भ्राता । मिलत पुलक परिपूरित गाता ॥

राम राम कहि जे जमुहाहीं । तिन्हहि न पाप पुंज समुहाहीं ॥

यह तौ राम लाइ उर लीन्हा । कुल समेत जगु पावन कीन्हा ॥

करमनास जलु सुरसरि परई । तेहि को कहहु सीस नहिँ धरई ॥

उलटा नामु जपत जगु जाना । बालमीकि भए ब्रह्म समाना ॥

दो०—स्वपच सवर खस जमन जहँ पावँर कोल किरात ।

रामु कहत पावन परम होत मुवन विख्यात ॥१९४॥

नहिं अचिरिजु जुग जुग चलि आई । केहि न दीन्हि रघुवीर वड़ाई ॥
 राम नाम महिमा सुर कहहीं । सुनि सुनि अवध लोग सुखु लहहीं
 रामसखहि मिलि भरत सप्रेमा । पूछी कुसल सुमंगल खेमा ॥
 देखि भरत कर सीलु सनेह । भा निषाद तेहि समय विदेह ॥
 सकुच सनेहु मोटु मन बाढ़ा । भरतहि चितवत एकटक ठाढ़ा ॥
 धरि धीरजु पद बंदि बहोरी । विनय सप्रेम करत कर जोरी ॥
 कुसल मूल पद पंकज पेखी । मै तिहुँ काल कुसल निज लेखी ॥
 अब प्रभु परम अनुग्रह तो । सहित कोटि कुल मंगल मोरें ॥
 दो०—समुझि मोरि करतूति कुलु प्रभु महिमा जियँ जोड़ ।

जो न भजइ रघुवीर पद जग विधि बंचित सोइ ॥१९५॥

कपटी कायर कुमति कुजाती । लोक वेद बाहेर सब भाँती ॥
 राम कोन्ह आपन जवही तें । भयउँ भुवन भूपन तवही तें ॥
 देखि प्रीति सुनि विनय सुहाई । मिलेउ बहोरि भरत लघु भाई ॥
 कहि निषाद निज नाम सुबानी । सादर सकल जोहारी रानी ॥
 जानि लखन सम देहिं असीसा । जिअहु सुखी सय लाख बरीसा ॥
 निरखि निषादु नगर नर नारी । भए सुखी जनु लखनु निहारी ॥
 कहहिं लहेउ एहिं जीवन लाहू । भेंटेउ रामभद्र भरि बाहू ॥
 सुनि निषादु निज भाग वड़ाई । प्रमुदित मन लइ चलेउ लेवाई ॥

दो०—सनकारे सेवक सकल चले स्वामि रुख पाइ ।

वर तरु तर सर बाग बन वास बनाएन्हि जाइ ॥१९६॥

सृंगवेरपुर भरत दीख जव । भे सनेहँ सब अंग सिथिल तव
 सोहत दिएँ निषादहि लागू । जनु तनु धरें विनय अनुराग ॥

एहि विधि भरत सेनु सबु संग्गा । दीखि जाइ जग पावनि गंगा ॥
 रामघाट कहँ कीन्ह प्रनाम । भामनु मगनु मिले जनु रामू ॥
 करहि प्रनाम नगर नर नारी । मुदित ब्रह्ममय वारि निहारी ॥
 करि मज्जनु मागहिं कर जोरी । रामचंद्र पद प्रीति न थोरी ॥
 भरत कहेउ सुरसरि तव रेनु । सकल सुखद सेवक सुरधेनु ॥
 जोरि पानि घर मागउँ एह । सीय राम पद सहज सनेह ॥

दो०—एहि विधि मज्जनु भरतु करि गुर अनुसासन पाइ ।

मातु नहानी जानि सब डेरा चलें लवाइ ॥१९७॥

जहँ तहँ लोगन्ह डेरा कीन्हा । भरत सोधु सबही कर लीन्हा ॥
 सुर सेवा करि आयसु पाई । राम मातु पहिं गे दोउ भाई ॥
 चरन चाँपि कहि कहि मृदु बानी । जननीं सकल भरत सनमानी ॥
 भाइहि साँपि मातु सेवकाई । आपु निपादहि लीन्ह बोलाई ॥
 चले सखा कर साँ कर जोरें । सिथिल सरीरु सनेह न थोरें ॥
 पूँछत सखहि सो ठाउँ देखाऊ । नेकु नयन मन जरनि जुड़ाऊ ॥
 जहँ सिय रामु लखनु निसि साँए । कहत भरे जल लोचन कोए ॥
 भरत बचन सुनि भयउ विपाद् । तुरत तहाँ लइ गयउ निपाद् ॥

दो०—जहँ तिसुपा पुनीत तर रघुवर किय विश्रामु ।

अति सनेहँ सादर भरत कीन्हेउ दंड प्रनामु ॥१९८॥

कुस साँथरी निहारि सुहाई । कीन्ह प्रनामु प्रदच्छिन जाई ॥
 चरन रेख रज आँखिन्ह लाई । वनइन कहत प्रीति अधिकाई ॥
 कनक बिंदु दुइ चारिक देखे । राखे सीस सीय सम लेखे ॥
 सजल विलोचन हृदयँ गलानी । कहत सखा सन बचन सुबानी ।

श्रीहत सीय बिरहँ दुतिहीना । जथा अवध नर नारि बिलीना ॥
 पिता जनक देउँ पटतर केही । करतल भोगु जोगु जग जेही ॥
 ससुर भानुकुल भानु भुआल । जेहि सिहात अमरावतिपाल ॥
 प्राननाथु रघुनाथ गोसाई । जो बड़ होत सो राम बड़ाई ॥
 दो०—पति देवता सुतीय मनि सीय साँथरी देखि ।

बिहरत हृदउ न हहरि हर पवि तें कठिन विसेषि ॥१९९॥

लालन जोगु लखन लघु लोने । मे न भाइ अस अहहिं न होने ॥
 पुरजन प्रिय पितु मातु दुलारे । सिय रघुवीरहि प्रानपिआरे ॥
 मृदु मूरति सुकुमार सुभाऊ । तात वाड तन लाग न काऊ ॥
 ते वन सहहिं विपति सब भाँती । निदरे कोटि कुलिस एहिं छाती ॥
 राम जनमि जगु कीन्ह उजागर । रूप सील सुख सब गुन सागर ॥
 पुरजन परिजन गुर पितु माता । राम सुभाउ सबहि सुखदाता ॥
 बैरिउ राम बड़ाई करहीं । बोलनि मिलनि विनय मन हरहीं ॥
 सारद कोटि कोटि सत सेपा । करि न सकहिं प्रभु गुन गन लेखा ॥
 दो०—सुखस्वरूप रघुवंसमनि मंगल मोद निधान ।

ते सोवत कुस ड़ासि महि विधि गति अति बलवान ॥२००॥

राम सुना दुखु कान न काऊ । जीवनतरु जिमि जोगवइ राऊ ॥
 पलक नयन फनि मनि जेहि भाँती । जोगवहिं जननि सकल दिन राती ॥
 ते अत्र फिरत विपिन पदचारी । कंद मूल फल फूल अहारी ॥
 धिग कैकई अमंगल मूला । भइसि प्रान प्रियतम प्रतिकूला ॥
 मैं धिग धिग अघ उदधि अभागी । सबु उतपातु भयउ जेहि लागी ॥
 कुल कलंकु करि सृजेउ विधाताँ । साइँदोह मोहि कीन्ह कुमाताँ ॥

सुनि सप्रेम समुझाव निपाद् । नाथ करिअ कत वादि विपाद् ॥
राम तुम्हहि प्रिय तुम्ह प्रिय रामहि। यह निरजोसु दोसु विधि वामहि

हं०—विधि वाम की करनी कठिन जेहि मातु कीन्ही वावरी ।

तेहि राति पुनि पुनि करहि प्रभु सादर सरहना रावरी ॥

तुलसी न तुम्ह सो राम प्रीनमु कहतु हौं सोहो किएँ ।

परिनाम मंगल जानि अपने आनिण धीरजु हितें ॥

सो०—अंतरजामी रामु सकुच सप्रेम कृपायतन ।

चलिअ करिअ विश्रामु यह विचारि दह आनि मन ॥२०१॥

सखा बचन सुनि उर धरि धीरा । बास चले सुमिरत रघुवीरा ॥

यह सुधि पाइ नगर नर नारी । चले विलोकन आरत भारी ॥

परदखिना करि करहिं प्रनामा । देहिं कंकड़हि खोरि निकामा ॥

भरि भरि धारि विलांचन लेहीं । वाम विधातहि दूपन देहीं ॥

एक सराहहिं भरत सनेह । कोउ कह नृपति निबाहेउ नेह ॥

निंदहिं आपु सराहि निपादहि । को कहि सकइ विमोह विपादहि ॥

एहि विधिराति लोगु सबु जागा । भा भिनुसार गुदारा लागा ॥

गुरहि मुनायँ चढ़ाइ सुहाई । नई नाव सब मातु चढ़ाई ॥

दंड चारि महँ भा सबु पारा । उतरि भरत तब सवहि संभारा ॥

शे०—प्रातक्रिया करि मातु पद बंदि गुरहि सिरु नाइ ।

आगे किए निपाद गन दीन्हेउ कटकु चलाइ ॥२०२॥

क्रियउ निपादनाथु अगुआई । मातु पालकीं सकल चलाई ॥

साथ बोलाइ भाइ लघु दीन्हा । विप्रन्ह सहित गवनु गुर कीन्हा ॥

आपु मुरसरिहि कीन्ह प्रनामू । सुमिरे लखन सहित सियर

गवने भरत पयादेहिं पाए । कोतल संग जाहिं डोरिआए ॥
 कहहिं सुसेवक वारहिं वारा । होइअ नाथ अस्य असवारा ॥
 रामु पयादेहि पायँ सिधाए । हम कहँ रथ गज वाजि बनाए ॥
 सिर भर जाउँ उचित अस मोरा । सब तें सेवक धरमु कठोरा ॥
 देखि भरत गति सुनि मृदु बानी । सब सेवक गन गरहिं गलानी ॥

दो०—भरत तीसरे पहर कहँ कीन्ह प्रवेशु प्रयाग ।

कहत राम सिय राम सिय उमगि उमगि अनुराग ॥२०३॥

झलका झलकत पायन्ह कैसँ । पंकज कोस ओस कन जैसँ ॥
 भरत पयादेहिं आए आजू । भयउ दुखित सुनि सकल समाजू ॥
 खवरि लीन्ह सब लोग नहाए । कीन्ह प्रनामु त्रिवेनिहिं आए ॥
 सविधि सितासित नीर नहाने । दिए दान महिसुर सनमाने ॥
 देखत स्यामल धवल हलोरे । पुलकि सरीर भरत कर जोरे ॥
 सकल काम प्रद तीरथराऊ । वेद विदित जग प्रगट प्रभाऊ ॥
 मागउँ भीख त्यागि निज धरमू । आरत काह न करइ कुकरमू ॥
 अस जियँ जानि सुजान सुदानी । सफल करहिं जग जाचक बानी ॥

दो०—अरथ न धरम न काम रुचि गति न चहउँ निरवान ।

जनम जनम रति राम पद यह वरदानु न आन ॥२०४॥

जानहुँ राम कुटिल करि मोही । लोग कहउ गुर साहिव द्रोही ॥
 सीता राम चरन रति मोरें । अनुदिन बढ़उ अनुग्रह तोरें ॥
 जलदु जनम भरि सुरति विसारउ । जाचत जल पवि पाहन डारउ ॥
 चातकु रटनि घटें घटि जाई । बढ़ें प्रेमु सब भाँति भलाई ॥
 कनकहिं वान चढ़इ जिमि दाहें । तिमि प्रियतम पद नेम निवाहें ॥

भरत वचन सुनि माझ त्रिवेनी । भइ मृदु वानि सुमंगल देनी ॥
तात भरत तुम्ह सब विधि साधू । राम चरन अनुराग अगाधू ॥
वादि गलानि करहु मन माहीं । तुम्ह सम रामहि कोउ प्रिय नाहीं
दो०—तनु पुलकेंउ हियँ हरपु सुनि वेनि वचन अनुकूल ।

भरत धन्य कहि धन्य मुर हरपिन वरपहि फूल ॥२०५॥

प्रमुदित तीरथराज निवासी । बँखानस वटु गृही उदासी ॥
कहहिँ परसपर मिलि दस पाँचा । भरत सनेहु सीलु सुचि साँचा ॥
सुनत राम गुन ग्राम सुहाए । भरद्वाज मुनिवर पहिँ आए ॥
दंड प्रनाम करत मुनि देखे । मूरतिमंत भाग्य निज लेखे ॥
धाइ उठाइ लाइ उर लीन्हें । दीन्हि असीस कृतारथ कीन्हें ॥
आसनु दीन्ह नाइ सिरु बँटे । चहत सकुच गृहँ जनु भजि पँटे ॥
मुनि पूँछव कछु यह वड सोचू । बोले रिपि लखि सीलु सँकोचू ॥
सुनहु भरत हम सब सुधि पाई । विधि करतव पर किलु न बसाई ॥

दो०—तुम्ह गलानि जियँ जनि करहु समुझि मातु करतूति ।

तात कैकइहि दोसु नहिँ गई गिरा मति धूति ॥२०६॥

यहउ कहत भल कहिहि न काँऊ । लोकु बँदु बुध संमत दाँऊ ॥
तात तुम्हार विमल जसु गाई । पाइहि लोकउ बँदु बडाई ॥
लोक बँदु संमत सबु कहई । जेहि पितु देइ राजु सो लहई ॥
राउ सत्यव्रत तुम्हहि बोलाई । देत राजु सुसु धर ॥
राम गवनु वन अनरथ मूला । जो मुनि सकल बिस ॥
सो भावी बस रानि अयानी । करि कुचालि बंतहुँ ॥
तहँउँ तुम्हार अल्प अपराधू । कहँ सो अथम अवान ॥

करतेहु राजु त तुम्हहि न दोषु । रामहि होत सुनत संतोषु ॥

दो०—अव अति कीन्हेहु भरत भल तुम्हहि उचित मत एहु ।

सकल सुमंगल मूल जग रघुवर चरन सनेहु ॥२०७॥

सो तुम्हार धनु जीवन्तु प्राणा । भूरि भाग को तुम्हहि समाना ॥

यह तुम्हार आचरजु न ताता । दसरथ सुअन राम प्रिय भ्राता ॥

सुनहु भरत रघुवर मन माहीं । पेम पात्रु तुम्ह सम कोउ नाहीं ॥

लखन राम सीतहि अति प्रीती । निसि सब तुम्हहि सराहत वीती ॥

जाना मरमु नहांत प्रयागा । मंगन होहिं तुम्हरें अनुरागा ॥

तुम्ह पर अस सनेहु रघुवर कें । सुख जीवन जग जस जड़ नर कें ॥

यह न अधिक रघुवीर बड़ाई । प्रनत कुटुंब पाल रघुराई ॥

ह तौ भरत मोर मत एहु । धरें देह जनु राम सनेहु ॥

दो०—तुम्ह कहैं भरत कलंक यह हम सब कहैं उपदेसु ।

राम भगति रस सिद्धि हित भा यह समउ गनेसु ॥२०८॥

नव विधु विमल तात जसु तोरा । रघुवर किंकर कुमुद चकोरा ॥

उदित सदा अँथइहि कबहूँ ना । घटिहि न जग नभ दिन दिन दूना ॥

कोक तिलोक प्रीति अतिकरिही । प्रभु प्रताप रवि छविहि न हरिही ॥

निसि दिन सुखद सदा सब काहू । ग्रसिहि न कैकड़ करतबु राहू ॥

पूरन राम सुपेम पियूपा । गुर अवमान दोष नहिं दूपा ॥

राम भगत अव अमिअँ अघाहूँ । कीन्हेहु सुलभ सुधा वसुधाहूँ ॥

भूप भगीरथ सुरसरि आनी । सुमिरत सकल सुमंगल खानी ॥

दसरथ गुन गन वरनि न जाहीं । अधिकु कहा जेहि सम जग नाहीं ॥

दो०—जामु सनेह सकोच बस राम प्रगट भण जाइ ।

जे हर हिय नयननि कबहुं निरखे नहीं अघाइ ॥२०९॥

कीरति विधु तुम्ह कीन्ह अनूपा । जहँ बस राम पेम मृगरूपा ॥
 तात गलानि करहु जियँ जाएँ । डरहु दरिद्रहि पारसु पाएँ ॥
 सुनहु भरत हम झूठ न कहहीं । उदासीन तापस बन रहहीं ॥
 सब साधन कर सुफल सुहावा । लखन राम सिय दरसनु पावा ॥
 तेहि फल कर फलु दरस तुम्हारा । सहित पयाग सुभाग हमारा ॥
 भरत धन्य तुम्ह जमु जगु जयऊ । कहि अस पेम मगन मुनि भयऊ
 सुनि मुनि बचन सभासद हरपे । साधु सराहि सुमन सुर वरपे ॥
 धन्य धन्य धुनि गगन पयागा । सुनि सुनि भरतु मगन अनुरागा

दो०—पुलक गात हियें रामु सिय सबल सरोरुह नैन ।

करि प्रनामु मुनि मंडलिहि बोले गदगद बैन ॥२१०॥

मुनि समाजु अरु तीरथराजू । साँचिहुँ सपथ अघाइ अकाजू ॥
 एहि थल जाँ किलु कहिअ बनाई । एहि सम अधिक न अघ अधमाई
 तुम्ह सर्वग्य कहउँ सतिभाऊ । उर अंतरजामी रघुराऊ ॥
 मोहि न मातु करतव कर सोचू । नहिँ दुखु जियँ जगु जानिहि पोचू
 नाहिन डरु विगरिहि परलोकु । पितहु मरन कर मोहि न सोचू ॥
 मुकृत सुजस भरि भुअन सुहाए । लछिमन राम सरिस सुत पाए ॥
 राम विरहँ तजि तनु छनभंगू । भूप सोच कर कवन प्रसंगू ॥
 राम लखन सिय विनु पग पनहीं । करि मुनि वेप फिरहिँ बन बनहीं

दो०—अजिन बसन फल असन महि सयन डासि कुस पात ।

बसि तरु तर नित सहत हिम आतप बरपा चात ॥२११॥

हि दुख दाहँ दहइ दिन छाती । भूख न बासर नीद न राती ॥
 एहि कुरोग कर औषधु नाहीं । सोधेउँ सकल विस्व मन माहीं ॥
 मातु कुमत बढ़ई अघ मूला । तेहिं हमार हित कीन्ह बँसला ॥
 कलि कुकाठ कर कीन्ह कुजंत्र । गाड़ि अवधि पढ़ि कठिन कुमंत्र ॥
 मोहि लागि यहु कुठाडु तेहिं ठाटा । घालेसि सब जगु बारह बाटा ॥
 मिटइ कुजोगु राम फिरि आएँ । बसइ अवध नहिं आन उपाएँ ।
 भरत वचन सुनि मुनि सुखु पाई । सबहिं कीन्हि बहु भाँति बड़ई ।
 तात करहु जनि सोचु बिसेपी । सब दुखु मिटिहि राम पग देखी ॥

दो०—करि प्रबोधु मुनिवर कहेउ अतिथि पेमप्रिय होहु ।
 कंद मूल फल फूल हम देहिं लेहु करि छोहु ॥२१२॥

मुनि मुनि वचन भरत हियँ सोचू । भयउ कुअवसर कठिन सँकोचू ॥
 जानि गरुड़ गुर गिरा बहोरी । चरन बंदि बोले कर जोरी ।
 सिर धरि आयसु करिअ तुम्हारा । परम धरम यहु नाथ हमारा ।
 भरत वचन मुनिवर मन भाए । सुचि सेवक सिष निकट बोला ।
 चाहिअ कीन्हि भरत पहुनाई । कंद मूल फल आनहु जाई ।
 भलेहिं नाथ कहि तिन्ह सिर नाए । प्रमुदित निज निज काज सि ।
 मुनिहि सोच पाहुन बड़ नेवता । तसि पूजा चाहिअ जस देव ।
 सुनि रिधि सिधि अनिमादिक आई । आयसु होइ सो करहिं स ।

दो०—राम विरह व्याकुल भरतु सानुज सहित समाज ।
 पहुनाई करि हरहु श्रम कहा मुदित मुनिराज ॥२१३॥

रिधि सिधि सिर धरि मुनिवर बानी । बड़भागिनि आपुहि ।
 कहिं परसपर सिधि समुदाई । अतुलित अतिथि राम ल ।

मुनि पद वंदि करिअ सोइ आजू । होइ सुखी सब राज समाजू ॥
 अस कहि रचेउ रुचिर गृह नाना । जेहि विलोकि विलखाहि विमाना
 भोग विभूति भूरि भरि राखे । देखत जिन्हहि अमर अभिलाषे
 दासों दास साजु सब लीन्हें । जोगवत रहहि मनहि मनु दीन्हें ॥
 सब समाजु सजि सिधि पल माहीं । जे सुख सुरपुर सपनेहुँ नाहीं ॥
 प्रथमहि वास दिए सब केही । सुंदर मुखद जथा रुचि जेही ॥

दो०—बहुरि सपरिजन भरत कहूँ रिपि अस जायमु दीन्ह ।

विधि विसमय दायकु विभव मुनिवर तपबल कीन्ह ॥२१४॥

मुनि प्रभाउ जय भरत विलोका । सब लघु लगे लोकपति लोका ॥
 सुख समाजु नहिं जाइ बखानी । देखत विरति विसारहिं ग्यानी ॥
 आसन सयन सुवसन विताना । बन वाटिका विहग मृग नाना ॥
 सुरभि फूल फल अमिअ समाना । विमल जलासय विविध विधाना
 अमनपान सुचि अमिअ अमीसे । देखि लोग सकुचात जमी से ॥
 सुर सुरभी सुरतरु सबही कें । लखि अभिलापु सुरेस सबी कें ॥
 तितु धर्मन बहूँ त्रिविध वयारी । सब कहँ सुलभ पदारथ चारी ॥
 मृक चंदन वनितादिक भोगा । देखि हरप विसमय वम लोगा ॥

दो०—सांगति चकई भरतु चक्र मुनि आयस तेलवार ।

तंहि निसि आश्रम पित्रों राते भा भिनुमार ॥२१५॥

मासपारायण, उन्नीसवाँ विश्राम

कौन्द निमज्जनु तीरथराजा । नाइ मुनिहि सिरु महित समाजा ॥
 रिपि आयमु असीस सिर राखी । करि दंडवत वितय बहु

पथ गति कुसल साथ सब लीन्हें । चले चित्रकूटहिं चितु दीन्हें ॥
 रामसखा कर दीन्हें लागू । चलत देह धरि जनु अनुरागू ॥
 नहीं पद त्रान सीस नहीं छाया । पेसु नेसु त्रतु धरसु अमाया ॥
 लखन राम सिय पंथ कहानी । पूँछत सखहि कहत मृदु बानी ॥
 राम वास थल विटप विलोकें । उर अनुराग रहत नहीं रोक्कें ॥
 देखि दसा सुर वरिसहिं फूला । भइ मृदु महि मगु संगल मूला ॥
 दो०—किँ जाहि छाया जलद सुखद वहइ वर वात ।

तस मगु भयउ न राम कहँ जस भा भरतहि जात ॥२१६॥
 जइ चेतन मग जीव घनेरे । जे चितए प्रभु जिन्ह प्रभु हेरे ।
 ते सब भए परम पद जोगू । भरत दरस मेटा भव रोगू ।
 यह वड़ि वात भरत कइ नाहीं । सुमिरत जिनहि रामु मन माहीं ।
 वारक राम कहत जग जेऊ । होत तरन तारन नर तेर ।
 भरतु राम प्रिय पुनि लघु भ्राता । कस न होइ मगु संगलदाता ।
 सिद्ध साधु मुनिवर अस कहहीं । भरतहि निरखि हरपु हियँ ।
 देखि प्रभाउ सुरेसहि सोचू । जगु भल भलेहि पोच कहँ प ।
 गुर सन कहेउ करिअ प्रभु सोई । रामहि भरतहि भेट न ।
 दो०—रामु सँकोची प्रेम वस भरत सपेम पयोधि ।
 वनी वात वेगरन चहति करिअ जतनु छलु सोधि ॥

वचन सुनत सुरगुरु मुसुकाने । सहसनयन विनु लोचन ।
 मायापति सेवक सन माया । करइ त उलटि परइ स ।
 तब किलु कीन्ह राम रुख जानी । अब कुचालि करि होइ ।
 तस सरेस रघुनाथ सुभाऊ । निज अपराध रिसाहिं ।

जो अपराधु भगत कर करई । राम रोष पावक सो जरई ॥
 लोकहुँ वेद विदित इतिहासा । यह महिमा जानहिँ दुरवासा ॥
 भरत सरिस को राम सनेही । जगु जप राम रामु जप जेही ॥
 दो०—मनहुँ न आनिअ अमरपति रघुवर भगत अकाजु ।

अजसु लोक परलोक दुख दिन दिन सोक समाजु ॥२१८॥

मुनु सुरेस उपदेसु हमारा । रामहि सेवकु परम पिआरा ॥
 मानत सुखु सेवक सेवकाई । सेवक बैर वैरु अधिकाई ॥
 जद्यपि संम नहिँ राग न रोषू । गहहिँ न पाप पूनु गुन दोषू ॥
 करम प्रधान विस्व करि राखा । जो जस करइ सो तस फलु चाखा ॥
 तदपि करहिँ सम धिपम विहारा । भगत अभगत हृदय अनुसार ॥
 अगुन अलेप अमान एकरस । रामुसगुन भए भगत पैम घस ॥
 राम सदा सेवक रुचि राखी । वेद पुरान साधु सुर साखी ॥
 अस जियँ जानि तजहु कुटिलाई । करहु भरत पद प्रीति सुहाई ॥

दो०—राम भगत परहित निरत पर दुख दुखी दयाल ।

भगत सिरोमनि भरत ते जनि डरपहु सुरपाल ॥२१९॥

सत्यसंध प्रभु सुर हितकारी । भरत राम आयस अनुसारी ॥
 ध्यारथ विवस विकल तुम्ह होह । भरत दोसु नहिँ राउर मोह ॥
 मुनि सुरवर सुरगुर बर बानी । भा प्रमोदु मन मिटी गलानी ॥
 बरपि प्रसून हरपि सुरराऊ । लगे सराहन भरत सुभाऊ ॥
 एहि विधि भरत चले मग जाहीं । दसा देखि मुनि सिद्ध सिहाहीं ॥
 जत्रहिँ रामु कहि लेहिँ उसासा । उमगत पैमु मनहुँ चहु पासा ॥
 द्रवहिँ बचन मुनि कुलिस पपाना । पुरजन पैमु न

वीच वास करि जमुनहिं आए । निरखि नीरु लोचन जल छाए ॥

दो०—रघुवर वरन बिलोकि वर बारि समेत समाज ।

होत मगन वारिधि विरह चढ़े विवेक जहाज ॥२२०॥

जमुन तीर तेहि दिन करि बास । भयउ समय सम सवहि सुपास ॥
 रातिहिं घाट घाट की तरनी । आई अगनित जाहिं न वरनी ॥
 प्रात पार भए एकहि खेवाँ । तोपे रामसखा की सेवाँ ॥
 चले नहाइ नदिहि सिर नाई । साथ निषादनाथ दोउ भाई ॥
 आगे मुनिवर वाहन आछें । राजसमाज जाइ सबु पाछें ॥
 तेहि पाछें दोउ बंधु पयादें । भूपन वसन वेप सुठि सादें ॥
 सेवक सुहृद सचिवसुत साथा । सुमिरत लखनु सीय रघुनाथा ॥
 जहँ जहँ राम वास विश्रामा । तहँ तहँ करहिं सप्रेम प्रनामा ॥

दो०—मगवासी नर नारि सुनि धाम काम तजि धाइ ।

देखि सरूप सनेह सब मुदित जनम फलु पाइ ॥२२१॥

कहहिं सपेम एक एक पाहीं । रामु लखनु सखि होहिं कि नाहीं ॥
 वय वपु वरन रूपु सोइ आली । सीलु सनेहु सरिस सम चाली ॥
 वेपु न सो सखि सीय न संगी । आगे अनी चली चतुरंगा ॥
 नहिं प्रसन्न मुख मानस खेदा । सखि संदेहु होइ एहिं भेदा ॥
 तासु तरक तियगन मन मानी । कहहिं सकल तेहि सम न सयानी ॥
 तेहि सराहि बानी फुरि पूजी । बोली मधुर वचन तिय दूजी ॥
 कहि सपेम सब कथा प्रसंगु । जेहि विधि राम राज रस भंगु ॥
 भरतहि बहुरि सराहन लागी । सील सनेह सुभाय सुभागी ॥

दो०—चलत पयादें खात फल पिता दीन्ह तजि राजु ।

जात मनावन रघुवरहि भरत सरिस को आजु ॥२२२॥

भायप भगति भरत आचरनू। कहत सुनत दुख दूपन हरनू ॥
जो किछु कहव थोरसखिसोई। राम बंधु अस काहे न होई ॥
हम सब सानुज भरतहि देखें। भइन्ह धन्य जुवती जन लेखें ॥
सुनि गुन देखि दसा पछिताहीं। कैंकड़ जननि जोगु सुतु नाहीं ॥
कोउ कह दूपनु रानिहि नाहिन। विधि सघु कीन्ह हमहि जो दाहिन
कहँ हम लोक वेद विधि हीनी। लघु तिय कुल करतूति मलीनी ॥
बसहिं कुदेस कुगाँव कुयामा। कहँ यह दरसु पुन्य परिनामा ॥
अस अनंदु अचिरिजु प्रति ग्रामा। जनु मरुभूमि कलपतरु जामा ॥

दो०—भरत दरसु देखत खुलेउ मग लोगन्ह कर भागु ।

जनु सिवलघासिन्ह भयउ विधि वत सुलभ प्रयागु ॥२२३॥

निज गुन सहित राम गुन गाथा। सुनत जाहिं सुमिरत रघुनाथा ॥
तीरथ मुनि आश्रम मुरधामा। निरखि निमज्जहिं करहिं प्रनामा ॥
मनहीं मन मागहिं वरु एहू। सीय राम पद पदुम सनेहू ॥
मिलहिं किरात कोल वनवासी। धँखानस बटु जती उदासी ॥
करि प्रनामु पूछहिं जेहि तेही। केहि वन लखनु रामु वैदेही ॥
ते प्रभु समाचार सब कहहीं। भरतहि देखि जनम फलु लहहीं ॥
जे जन कहहिं कुसल हम देखे। ते प्रिय राम लखन सम लेखे ॥
एहि विधि वृझत सबहि सुवानी। सुनत राम वनवास कहानी ॥

दो०—तेहि वासर बसि प्रातहीं चले सुमिरि रघुन

राम दरस की लालसा भरत सरिस तब =

मंगल सगुन होहिं सब काहू । फरकहिं सुखद बिलोचन बाहू ।
 भरतहि सहित समाज उछाहू । मिलिहहिं रामु मिटिहि दुखदाहू ।
 करत मनोरथ जस जियँ जाके । जाहिं सनेह सुराँ सब छाके ॥
 सिथिल अंग पग मग डगि डोलहिं । विहबल बचन पेम बस बोलहि
 रामसखाँ तेहि समय देखावा । सैल सिरोमनि सहज सुहावा ।
 जासु समीप सरित पय तीरा । सीय समेत बसहिं दोउ बीरा ॥
 देखि करहिं सब दंड प्रनामा । कहि जय जानकि जीवन रामा ।
 प्रेम मगन अस राजसमाजू । जनु फिरि अवध चले रघुराजू ।

दो०—भरत प्रेमु तेहि समय जस तस कहि सकइ न सेषु ।

कबिहि अगम जिमि ब्रह्मसुखु अह मम मलिन जनेपु ॥२२५॥

सकल सनेह सिथिल रघुबर कें । गए कोस दुइ दिनकर ढर कें ।
 जलु थलु देखि बसे निसि बीतें । कीन्ह गवन रघुनाथ पिरीतें ।
 उहाँ रामु रजनी अवसेषा । जागे सीयँ सपन अस देखा ।
 सहित समाज भरत जनु आए । नाथ बियोग ताप तन ताए ।
 सकल मलिन मन दीन दुखारी । देखीं सासु आन अनुहारी ।
 सुनि सिय सपन भरे जल लोचन । भए सोच बस सोच विमोचन ।
 लखन सपन यह नीक न होई । कठिन कुचाह सुनाइहि कोई ।
 अस कहि बंधु समेत नहाने । पूजि पुरारि साधु सनमाने ।

छं०—सनमानि सुर मुनि बंदि बैठे उतर दिसि देखत भए
 नभ धूरि खग मृग भूरि भागे विकल प्रभु आश्रम गए
 तुलसी उठे अवलोकि कारनु काह चित सचकित रहे
 सत्र समाचार किरात कोलन्हि आइ तेहि अवसर कहे

सो०—सुनत सुमंगल वैन मन प्रमोद तन पुलक भर ।

सरद सरोरुह नैन तुलसी भरे सनेह जल ॥२२६॥

बहुंरि सोचबस मे सियरवनू । कारन कवन भरत आगवनू ॥
 एक आइ अस कहा बहोरी । सेन संग चतुरंग न थोरी ॥
 सो सुनि रामहि भा अति सोचू । इत पितु बच इत वंधु सकोचू ॥
 भरत सुभाउ समुझि मन माहीं । प्रभु चित हित धिति पावत नाहीं ॥
 समाधान तय भा यह जाने । भरतु कहे महुँ साधु सयाने ॥
 लखन लखेउ प्रभु हृदयँ स्वभारू । कहत समय सम नीति विचारू ॥
 यितु पूछे कलु कहउँ गोसाईं । सेवकु समयँ न ढीठ ढिठाईं ॥
 तुम्ह सर्वग्य सिरोमनि स्वामी । आपनि समुझि कहउँ अनुगामी ॥

दो०—नाथ सुहृद सुठि सरल चित सील सनेह निघान ।

सय पर प्रीति प्रतीति जियँ जानिअ आपु समान ॥२२७॥

विपई जीव पाइ प्रभुताई । मूढ़ मोह बस होहिं जनाई ॥
 भरतु नीति रत साधु सुजाना । प्रभु पद प्रेमु सकल जगु जाना ॥
 तेऊ आजु राम पदु पाई । चले धरम मरजाद मेटाई ॥
 कुटिल कुबंधु कुअवसरु ताकी । जानि राम बनवास एकाकी ॥
 करि कुमंत्रु मन साजि समाजू । आए करै अकंटक राजू ॥
 कोटि प्रकार कलपि कुटिलाई । आए दल बटोरि दोउ भाई ॥
 जाँ जियँ होति न कपट कुचाली । केहि सोहाति रथ वाजि गजाली ॥
 भरतहि दोसु देइ को जाएँ । जग वौराई राज पदु पाएँ ॥

दो०—ससि गुर तिय गामी नपुपु चढ़ेउ भूमिसुर जान ।

लोक बेद तें विमुख भा अधम न बेन समान ॥२२८॥

सवाहु सुरनाथु त्रिसंकू। केहि न राजमद दीन्ह कलंकू ॥
 त कीन्ह यह उचित उपाऊ। रिपु रिन रंच न राखन काऊ ॥
 क कीन्हि नहिं भरत भलाई। निदरे राघु जानि असहाई ॥
 मुझि परिहि सोउ आजु बिसेधी। समर सरोष राम मुखु पेखी ॥
 इतना कहत नीति रस भूला। रन रस विटपु पुलक मिस फूला ॥
 प्रभु पद बंदि सीस रज राखी। बोले सत्य सहज बलु भाषी ॥
 अनुचित नाथ न मानब मोरा। भरत हमहि उपचार न थोरा ॥
 कहँ लगि सहिअ रहिअ मनु मारें। नाथ साथ धनु हाथ हमारें ॥

दो०—छत्रि जाति रघुकुल जनमु राम अनुग जगु जान ।
 लातहुँ मारें चढ़ति सिर नीच को धूरि समान ॥२२९॥

उठि कर जोरि रजायसु मागा। मनहुँ वीर रस सोवत जागा
 बाँधि जटा सिर कसि कटि भाथा। साजि सरासनु सायकु हाथा ॥
 आजु राम सेवक जसु लेऊँ। भरतहि समर सिखावन देऊँ ॥
 राम निरादर कर फलु पाई। सोवहुँ समर सेज दोउ भाई ॥
 आइ बना भल सकल समाजू। प्रगट करउँ रिस पाछिल आजू ॥
 जिमि करि निकर दलइ मृगराजू। लेइ लपेटि लवा जिमि बाजू ॥
 तैसेहिं भरतहि सेन समेता। सानुज निदरि निपातउँ खेता ॥
 जौँ सहाय कर संकरु आई। तौ मारउँ रन राम दोहाई ॥

दो०—अति सरोष माखे लखनु लखि सुनि सपथ प्रवान ।
 समय लोक सब लोकपति चाहत भभरि भगान ॥२०॥

जगु भय मगन गगन भइ बानी। लखन बाहुबलु विपुल बरवा
 तात प्रताप प्रभाउ तुम्हारा। को कहि सकइ को जाननि

अनुचित उचित काजु किछु हांऊ । समुझि करिअ भल कह सधु कोऊ ॥
 सहसा करि पाछें पछिताहीं । कहहिं वेद बुध ते बुध नहीं ॥
 सुनि सुर वचन लखन सकुचाने । राम भीयँ मादर सनमाने ॥
 कही तात तुम्ह नीति सुहाई । सब तें कठिन राजमदु भाई ॥
 जो अचवँत नृप मातहिं तेई । नाहिन साधुसभा जेहिं सेई ॥
 सुनहु लखन भल भरत सरीसा । विधि प्रपंच महँ सुना न दीमा ॥
 दो०—भरतहि होइ न राजमदु विधि हरि हर पद पाइ ।

कबहुँ कि काँजी सीकरनि छीरसिंधु विनसाइ ॥२३१॥

तिमिरु तरुन तरनिहि मकु गिलई । गगनु मगन मकु मेघहिं मिलई ॥
 गोपद जल बूझहिं घटजोनी । सहज छमा बरु छाड़ै छोनी ॥
 मसक फूँक मकु मेरु उड़ाई । होइ न नृपमदु भरतहि भाई ॥
 लखन तुम्हार सपथ पितु आना । सुचि सुषंधु नहिं भरत समाना ॥
 सगुनु खीरु अवगुन जलु ताता । मिलइ रचइ परपंचु विधाता ॥
 भरतु हंस रविवंस तड़ागा । जनमि कीन्ह गुन दोष विभागा ॥
 गहि गुन पय तजि अवगुन बारी । निज जस जगत कीन्हि उजिआरी ॥
 कहत भरत गुन सीलु सुभाऊ । पेम पयोधि मगन रघुराऊ ॥
 दो०—सुनि रघुवर बानी विबुध देखि भरत पर हेतु ।

सफल सराहत राम सो प्रभु को रूपानिकेतु ॥२३२॥

जौ न होत जग जनम भरत को । सकल धरम धुर धरनि धरत को ॥
 कवि कुल अगम भरत गुन गाथा । को जानइ तुम्ह धिनु रघुनाथा ॥
 लखन राम सिँयँ सुनि सुर बानी । अति सुखु लहेउ न जाइ चखानी ॥
 इहाँ भरतु सब सहित सहाए । मंदाकिनी पुनीत नहाए ॥

सरित समीप राखि सब लोगा । मागि मातु गुर सचिव नियोगा ॥
 चले भरतु जहँ सिय रघुराई । साथ निपादनाथु लघु भाई ॥
 समुझि मातु करतव सकुचार्हीं । करत कुतरक कोटि मन माहीं ॥
 रामु लखनु सिय सुनि मम नाऊँ । उठि जनि अनत जाहिँ तजि ठाऊँ
 दो०—मातु मते महँ मानि मोहि जो कछु करहिँ सो थोर ।

अघ अवगुन छमि आदरहिँ समुझि आपनी ओर ॥२३३॥

जौं परिहरहिँ मलिन मनु जानी । जौं सनमानहिँ सेवकु मानी ॥
 मोरें सरन रामहि की पनही । राम सुखामि दोसु सब जनही ॥
 जगजस भाजन चातक मीना । नेम पेम निज निपुन नवीना ॥
 अस मन गुनत चले मग जाता । सकुच सनेहँ सिथिल सब गाता ॥
 फेरति मनहुँ मातु कृत खोरी । चलत भगति बल धीरज धोरी ॥
 जब समुझत रघुनाथ सुभाऊ । तब पथ परत उताइल पाऊ ॥
 भरत दसा तेहि अवसर कंसी । जल प्रवाहँ जल अलि गति जंसी ॥
 देखि भरत कर सोचु सनेह । भा निषाद तेहि समयँ विदेह ॥

दो०—लगे होन मंगल सगुन सुनि गुनि कहत निपादु ।

मिटिहि सोचु होइहि हरपु पुनि परिनाम विपादु ॥२३४॥

सेवक वचन सत्य सब जाने । आश्रम निकट जाइ निअराने ॥
 भरत दीख वन सैल समाजू । मुदित छुधित जनु पाइ सुनाजू ॥
 ईति भीति जनु प्रजा दुखारो । त्रिविध ताप पीड़ित ग्रह मारी ॥
 जाइ सुराज सुदेस सुखारी । होहिँ भरत गति तेहि अनुहारी ॥
 राम वास वन संपति भ्राजा । सुखी प्रजा जनु पाइ सुराजा ॥
 सचिव विरागु विवेकु नरेसु । विपिन सुहावन पावन देसु ॥

भट जम नियम सैल रजधानी । सांति सुमति सुचि सुंदर रानी ॥
सकल अंग संपन्न सुराऊ । राम चरन आश्रित चित चाऊ ॥

दो०—जीति मोह महिपालु दल सहित विवेक मुआलु ।

करत अकंटक राजु पुरे सुख संपदा सुकालु ॥२३५॥

वन प्रदेश मुनि वास घनेरे । जनु पुर नगर गाउँ गन खेरे ॥
विपुल विचित्र विहग भृग नाना । प्रजा समाजु न जाइ यखाना ॥
खगहा करि हरि बाघ बराहा । देखि महिष वृष साजु सराहा ॥
वयरु विहाइ चरहिँ एक संगी । जहँ तहँ मनहुँ सेन चतुरंगी ॥
झरना झरहिँ मत्त गज गाजहिँ । मनहुँ निसान विविधि विधि बाजहिँ
चक्र चक्रोर चातक सुक पिक गन । कूजत मंजु मराल मुदित मन ॥
अलिगन गावत नाचत मोरा । जनु सुराज मंगल चहु ओरा ॥
बेलि विटप तुन सफल सफूला । सब समाजु मुद मंगल मूला ॥

दो०—राम सैल सोभा निरखि भरत हृदयैँ अति पेम ।

तापस तप फलु पाइ जिमि सुखी सिरानेँ नेमु ॥२३६॥

मासपारायण, दोसवाँ विश्राम

नवाह्नपारायण, पाँचवाँ विश्राम

तव केवट ऊँचें चढ़ि धाई । कहेउ भरत सन भुजा उठाई ॥
नाथ देखिअहिँ विटप विसाला । पाकरि जंबु रसाल तमाला ॥
जिन्ह तरुवरन्ह मध्य बडु सोहा । मंजु विसाल देखि मनु मोहा ॥
नील सघन पल्लव फल लाला । अचिरल छाहँ सुखद सब काला ॥
मानहुँ तिमिर अरुनमय रासी । विरची विधि सँकेलि सुपमा

ए तरु सरित समीप गोसाँई । रघुवर परनकुटी जहँ छाई ॥
तुलसी तरुवर विविध सुहाए । कहँ कहँ सियँ कहँ लखन लगाए ॥
बट छायाँ वेदिका बनाई । सियँ निज पानि सरोज सुहाई ॥

दो०—जहाँ बैठि मुनिगन सहित नित सिय रामु सुजान ।

सुनहिं कथा इतिहास सब आगम निगम पुरान ॥२३७॥

सखा वचन सुनि विटप निहारी । उमगे भरत विलोचन वारी ॥
करत प्रनाम चले दोड भाई । कहत ग्रीति सारद सकुचाई ॥
हरपहिं निरखि राम पद अंका । मानहुँ पारसु पायउ रंका ॥
रज सिर धरि द्वियँ मयनन्हि लावहिं । रघुवर मिलन सरिस सुख पावहिं ॥
देखि भरत गति अकथ अतीवा । प्रेम मगन मृग खग जड़ जीवा ॥
सखहि सनेह विवस मग धूला । कहि सुपंथ सुर बरपहिं फूला ॥
निरखि सिद्ध साधक अनुरागे । सहज सनेहु सराहन लागे ॥
होत न भूतल भाउ भरत को । अचर सचर चर अचर करत को ॥

दो०—पेम अमिअ मंदरु विरहु भरतु पयोधि गँभीर ।

मधि प्रगटेउ सुर साधु हित कृपासिंधु रघुवीर ॥२३८॥

सखा समेत मनोहर जोटा । लखेउ न लखन सघन वन ओटा ॥
भरत दीख प्रभु आश्रमु पावन । सकल सुमंगल सदनु सुहावन ॥
करत प्रवेश मिटे दुख दावा । जनु जोगीं परमारथु पावा ॥
देखे भरत लखन प्रभु आगे । पूँछे वचन कहत अनुरागे ॥
सीस जटा कटि मुनि पट वाँधे । तून कसैं कर सरु धनु काँधे ॥
वेदी पर मुनि साधु समाजू । सीय सहित राजत रघुराजू ॥
बलकल वसन जटिल तनु स्यामा । जनु मुनिवेष कीन्ह रति कामा ॥

कर कमलनि धनु सायकु फेरत । जिय की जरनि हरत हँसि हेरत ॥

दो०—लसत मंजु मुनि मंडली मय्य सीय रघुचंद्र ।

न्यान सभों जनु तनु धरें भगति सच्चिदानंद ॥२३९॥

सानुज सखा समेत मगन मन । विसरे हरप सोक मुख दुख गन ॥

पाहि नाथ कहि पाहि गोसाईं । भूतल परं लकुट की नाई ॥

बचन सपेम लखन पहिचाने । कंरत प्रनाम भरत जियँ जाने ॥

बंधु सनेह सरस एहि ओरा । उत साहिब सेवा बस जोरा ॥

मिलि न जाइ नहिं गुदरत धनई । सुकवि लखन मन की गति भनई ॥

रहे राखि सेवा पर भारू । चढ़ी चंग जनु खँच खेलारू ॥

कहत सप्रेम नाइ महि माथा । भरत प्रनाम करत रघुनाथा ॥

उठे रामु सुनि पेम अधीरा । कहँ पट कहँ निपंग भनु तीरा ॥

दो०—धरपस लिए उठाइ उर लाए रूपानिधान ।

भरत राम की मिलनि लखि विसरे सबहि अपान ॥२४०॥

मिलनि प्रीति किमि जाइ बखानी । कबिकुल अगम करम मन बानी

परम पेम पूरन दोड भाई । मन बुधि चित अहमिति विसराई ॥

कहहु सुपेम प्रगट को करई । केहि छाया कवि मति अनुसरई ॥

कविहि अरथ आखर बलु साँचा । अनुहरि ताल गतिहि नहु नाचा

अगम सनेह भरत रघुवर को । जहँ न जाइ मनु विधि हरि हर को ॥

सो में कुमति कहाँ केहि भाँती । बाज सुराग कि गाँडर ताँती ॥

मिलनि त्रिलोकि भरत रघुवर की । सुरगन सभय धकधकी धरकी ॥

समुझाए सुरगुरु जड़ जागे । वरपि प्रसन्न प्रसंसन लागे ॥

दो०—मिलि सपेम रिपुसूदनहि केवटु भेंटेउ राम ।

भूरि भायँ भेंटे भरत लछिमन करत प्रनाम ॥२४१॥

भेंटेउ लखन ललकि लघु भाई । वहुरि निपादु लीन्ह उर लाई ।

पुनि मुनिगन दुहुँ भाइन्ह वंदे । अभिमत आसिप पाइ अनंदे ।

सानुज भरत उमगि अनुरागा । धरिसिरसिय पद पदुम परागा ।

पुनि पुनि करत प्रनाम उठाए । सिर कर कमल परसि वैठाए ।

सीयँ असीस दीन्ह मन माहीं । भगन सनेहँ देह सुधि नाहीं ।

सब विधि सानुकूल लखि सीता । भे निसोच उर अपडर वीता ।

कोउ किलु कहइ न कोउ किलु पूँछा । प्रेम भरा मन निज गति छूँछा ।

तेहि अवसर केवटु धीरजु धरि । जोरि पानि विनवत प्रनामु करि ।

दो०—नाथ साथ मुनिनाथ के मातु सकल पुर लोग ।

सेवक सेनप सचिव सब आए विकल वियोग ॥२४२॥

सीलसिंधु सुनि गुर आगवनू । सिय समीप राखे रिपुदवनू ।

चले सबेग रामु तेहि काला । धीर धरम धुर दीनदयाला ।

गुरहि देखि सानुज अनुरागे । दंड प्रनाम करन प्रभु लागे ।

मुनिवर धाइ लिए उर लाई । प्रेम उमगि भेंटे दोउ भाई ।

प्रेम पुलकि केवट कहि नामू । कीन्ह दूरि तें दंड प्रनामू ।

रामसखा रिषि वरवस भेंटा । जनु महि लुठत सनेह समेटा ।

रघुपति भगति सुमंगल मूला । नभ सराहि सुर वरिसहिं फूला ।

एहि सम निपट नीच कोउ नाहीं । वड़ वसिष्ठ सम को जग माहीं ।

दो०—जेहि लखि लखनहु तें अधिक मिले मुदित मुनिराउ ।

सो सीतापति भजन को प्रगट प्रताप प्रभाउ ॥२४३॥

आरत लोग राम सबु जाना । करुनाकर मुजान भगवाना ॥
 जो जेहि भायँ रहा अभिलापी । तेहि तेहि कै तसि तसि रुख राखी
 सानुज मिलि पल महुँ सब काहू । कीन्ह दूरि दुखु दारुन दाहू ॥
 यह बड़ि बात राम कै नाहीं । जिमि घट कोटि एकर वि छाहीं ॥
 मिलि केवटहि उमगि अनुरागा । पुरजन सकल सराहहि भागा ॥
 देखीं राम दुखित महातारों । जनु सुबेलि अवलों हिम मारीं ॥
 प्रथम राम भेंटी कैकेई । सरल सुभायँ भगति मति मेई ॥
 पग परि कीन्ह प्रबोधु वहोरी । काल करम विधि सिर धरि खोरी ॥

दो०—भेंटी रघुवर मातु सब करि प्रबोधु परितोपु ।

अंब ईत आधीन जगु काहु न देखै दोपु ॥२४४॥

गुरतिय पद बंदे दुहु भाई । सहित विप्रतिय जे सँग आई ॥
 गंग गौरि सम सब सनमानां । देहिं असीस मुदित मृदु चानीं ॥
 गहि पद लगे सुमित्रा अंका । जनु भेंटी संपति अति रंका ॥
 पुनि जननी चरननि दौउ भ्राता । परं पैम व्याकुल सब गाता ॥
 अति अनुराग अंब उर लाए । नयन सनेह सलिल अन्हवाए ॥
 तेहि अवसर कर हरप विपाद । किमि कवि कहँ मूक जिमि स्वाद ॥
 मिलि जननिहिं सानुज रघुराऊ । गुर सन कहेउ कि धारिअ पाऊ ॥
 पुरजन पाइ मुनीस नयोगू । जल थल तकितकि उतरेउ लोगू ॥

दो०—महिसुर मंत्री मातु गुर गने लोग लिए साथ ।

पावन आश्रम गवनु किय भरत लखन रघुनाथ ॥२४५॥

सीय आइ मुनिवर पग लागी । उचित असीस लही मन
 गुरपतिनिहि मुनितियन्ह समेता । मिली

* रामचरितमानस *

वन्दि पग सिय सबही के। आसिरवचन लहे प्रियजी के॥
 सकल जब सीयँ निहारीं। मूदे नयन सहमि सुकुमारीं॥
 अधिक बस मनहुँ मरालीं। काह कीन्ह करतार कुचालीं॥
 न्ह सिय निरखि निपट दुखु पावा। सो सत्रु सहिअ जो दैउ सहावा
 नकसुता तब उर धरि धीरा। नील नलिन लोयन भरि नीरा॥
 मेली सकल सासुन्ह सिय जाई। तेहि अवसर करुना महि छाई॥

दो०—लागि लागि पग सबनि सिय भेंटति अति अनुराग।
 हृदयँ असीसहि पेम बस रहिअहु भरी सोहाग ॥२४६॥

विकल सनेहँ सीय सब रानीं। वैठन सवहि कहेउ गुर ग्यानीं॥
 कहि जग गति मायिक मुनि नाथा। कहे कलुक परमारथ गाथा॥
 नृप कर सुरपुर गवनु सुनावा। सुनि रघुनाथ दुसह दुखु पावा॥
 मरन हेतु निज नेहु त्रिचारी। मे अति विकल धीर धुर धारी॥
 लिस कठोर सुनत कटु बानी। विलपत लखन सीय सब रानी॥
 जोक विकल अति सकल समाजू। मानहुँ राजु अकाजेउ आजू॥
 मुनिवर बहुरि राम समुझाए। सहित समाज सुसरित नहाए॥
 त्रतु निरंबु तेहि दिन प्रभु कीन्हा। मुनिहुँ कहँ जलु काहुँ न लीन्हा॥
 दो०—भोरु भएँ रघुनंदनहि जां मुनि आयसु दीन्ह।
 श्रद्धा भगति समेत प्रभु सो सवु सादरु कीन्ह ॥२४७॥

करि पितु क्रिया वेद जसि बरनी। मे पुनीत पातक तम तरनी
 जासु नाम पावक अघ तूला। सुमिरत सकल सुमंगल मूल
 सुद्ध सो भयउ साधु संमत अस। तीरथ आवाहन सुरसरि ज
 मरु भएँ दुइ वासर बीते। बोले गुर सन राम पिर

नाथ लोग सब निपट दुखारी। कंद मूल फल अंबु अहारी ॥
मानुज भरतु सचिव सब माता। देखि मोहि पल जिमि जुग जाता ॥
सब समेत पुर धारिअ पाऊ। आपु इहाँ अमरावति राऊ ॥
बहुत कहेउँ सब कियउँ ढिठाई। उचित होइ तस करिअ गोसाँई ॥

दो०—धर्म सेतु करुनायतन कस न कहहु अस राम ।

लोग दुखित दिन दुइ दरस देखि लहहु विश्राम ॥२४८॥

राम बचन सुनि सभय समाजू। जनु जलनिधि महुँ विकल जहाजू
सुनि गुर गिरा सुमंगल मूला। भयउ मनहुँ मारुत अनुकूला ॥
पावन पर्यँ तिहुँ काल नहाहीं। जो विलोकि अब ओष नसाहीं ॥
मंगलमूरति लोचन भरि भरि। निरखहि हरयि दंडवत करि करि ॥
राम मूल बन देखन जाहीं। जहँ सुख सकल सकल दुख नाहीं ॥
झरना झरहि सुधासम वारी। त्रिविध तापहर त्रिविध बयारी ॥
घिटप बेलि वृन अगनित जाती। फल प्रसून पद्मत्र बहु भाँती ॥
गुंदर सिला मुखद तरु छाहीं। जाइ बरनि बन छपि केहि पाहीं ॥

दो०—सरनि सरोरुह जल विहग कूजत गुंजत भुंग ।

बैर विगत विहरत बिपिन मृग विहंग बहुरंग ॥२४९॥

कोल किरात भिछे बनवासी। मधु सुचि सुंदर स्वादु सुधा सी ॥
भरि भरि परन पुटों रचि रूरी। कंद मूल फल अंकुर जूरी ॥
सबहि देहिं करि विनय प्रनामा। कहि कहि स्वाद भेद गुन नामा ॥
देहिं लोग बहु मोल न लेहों। फेरत राम दोहाई देहीं ॥
कहहिं सनेह मगन मृदु बानी। मानत साधु पेम पहिचानी ॥
तुम्ह सुकृती हम नीच निपादा। पावा दरसनु राम प्रसादा ॥

* रामचरितमानस *

अगम अति दरसु तुम्हारा। जस मरु धरनि देवधुनि धारा।।
कृपाल निषाद नेवाजा। परिजन प्रजउ चहिअ जस राजा।।

—यह जियँ जानि सँकोचु तजि करिअ छोडु लखि नेहु।
हमहि कृतारथ करन लगि फल तृन अंकुर लेहु ॥२५०

मह प्रिय पाहुने बन पगु धारे। सेवा जोगु न भाग हमारे
ब काह हम तुम्हहि गोसाँई। ईधनु पात किरात मितार्ई ॥
यह हमारि अति बड़ि सेवकाई। लेहिँ न बासन बसन चोराई ॥
हम जड़ जीव जीव गन घाती। कुटिल कुचाली कुमति कुजाती ॥
पाप करत निसि बासर जाहीं। नहिँ पटकटि नहिँ पेट अघाहीं ॥
सपनेहुँ धरम बुद्धि कस काऊ। यह रघुनंदन दरस प्रभाऊ ॥
जब तैं प्रभु पद पदुम निहारे। मिटे दुसह दुख दोष हमारे ॥
बचन सुनत पुरजन अनुरागे। तिन्ह के भाग सराहन लागे ॥

छं०—लागे सराहन भाग सब अनुराग बचन सुनावहीं।
बोलनि मिलनि सिय राम चरन सनेहु लखि सुखु पावहीं ॥

नर नारि निदरहिँ नेहु निज सुनिकोल भिल्लनि की गिरा।
तुलसी कृपा रघुवंसमनि की लोह लै लौका तिरा ॥

सो०—बिहरहिँ बन चहु ओर प्रति दिन प्रमुदित लोग सब।
जल ज्यौ दादुर मोर भए पीन पावस प्रथम ॥२५१

पुर जन नारि मगन अति प्रीती। बासर जाहिँ पलक सम बीती
सीय सासु प्रति वेष बनाई। सादर करइ सरिस सेवकाई
लखान मरमु राम बिनु काहूँ। माया सब सिय माया मा
सीयँ सासु सेवा बस कीन्हीं। तिन्ह लहि सुख सिख आसिपद

लखि सिय सहित सरल दोउ भाई । कुटिल रानि पछितानि अघाई ॥
 अवनि जमहि जाचति कैकेई । महि न वीचु विधि मीचु न देई ॥
 लोकहुँ वेद विदित कबि कहहीं । राम विमुख थलु नरक न लहहीं ॥
 यहु संसउ सब के मन माहीं । राम गवनु विधि अवध कि नाहीं
 दो०—निसि न नीद नहि मूख दिन भरतु विकल सुचि सोच ।

नीच कीच विच मगन जस मीनहि सलिल सँकोच ॥२५२॥

कीन्हि मातु मिस काल कुचाली । ईति भीति जस पाकत साली ॥
 केहि विधि होइ राम अभिषेक । मोहि अक्कलत उपाउ न एक ॥
 अवासि फिरहिं गुर आयसु मानी । मुनि पुनि कहव राम रुचि जानी
 मातु कहेहुँ यहुरहिं रघुराज । राम जननि हठ करयि कि काज ॥
 मोहि अनुचर कर केतिक वाता । तेहि महुँ कुसमउ वाम विधाता ॥
 जाँ हठ करउँ त निपट कुकरमू । हरगिरि तें गुरु सेवक धरमू ॥
 एकउ जुगुति न मन ठहरानी । सोचत भरतहि रैनि विहानी ॥
 प्रात नहाइ प्रभुहि सिर नाई । बैठत पठए रिपयँ बोलाई ॥
 दो०—गुर पद कमल प्रनामु करि बैठे आयसु पाइ ।

विप्र महाजन सचिय सब जुरे सभासद आइ ॥२५३॥

बोले मुनिवरु समय समाना । सुनहु सभासद भरत सुजाना ॥
 धरम धुरीन भानुकुल भानू । राजा रामु स्वयस भगवानू ॥
 सत्यसंध पालक श्रुति सेतू । राम जनमु जग मंगल हेतू ॥
 गुर पितु मातु वचन अनुसारी । खल दलु दलन देव हितकारी ॥
 नीति प्रीति परमारथ स्वारथु । कोउ न राम सम जान जथारथु ॥
 विधि हरि हरु ससि रवि दिसिपाला । माया जीव करम कुलि काला

अहिय महिप जहँ लगि ग्रभुताई । जोग सिद्धि निगमागम गाई ॥
करि विचार जियँ देखहु नीकें । राम रजाइ सीस सबही कें ॥

दो०—राखें राम रजाइ रुख हम सब कर हित होइ ।

समुझि सयाने करहु अब सब मिलि संमत सोइ ॥२५४॥

सब कहँ सुखद राम अभिषेकू । मंगल मोद मूल मग एकू ॥
केहि विधि अवध चलहिं रघुराऊ । कहहु समुझि सोइ करिअ उपाऊ ॥
सब सादर सुनि मुनिवर बानी । नय परमारथ स्वारथ सानी ॥
उतरु न आव लोग भए भोरे । तब सिरु नाइ भरत कर जोरे ॥
भानुवंस भए भूप घनेरे । अधिक एक तें एक बड़ेरे ॥
जनम हेतु सब कहँ पितु माता । करम सुभासुभ देइ विधाता ॥
दलि दुख सजइ सकल कल्याना । अस असीस राउरि जगु जाना ॥
सो गोसाइँ विधि गति जेहिं छेंक्री । सकइ को टारि टेक जो टेकी ॥

दो०—बूझिअ मोहि उपाउ अब सो सब मोर अभागु ।

सुनि सनेहमय वचन गुर उर उमगा अनुरागु ॥२५५॥

तात वात फुरि राम कृपाहीं । राम विमुख सिधि सपनेहुँ नाहीं ॥
सकुचउँ तात कहत एक वाता । अरध तजहिं बुध सरवस जाता ॥
तुम्ह कानन गवनहु दोउ भाई । फेरिअहिं लखन सीय रघुराई ॥
सुनि सुवचन हरपे दोउ भ्राता । भे प्रमोद परिपूरन गाता ॥

दो०—अंतरजामी रामु सिय तुम्ह सरवग्य मुजान ।

जौं फुर कहहु त नाथ निज कीजिअ बचनु प्रवान ॥२५६॥

भरत बचन सुनि देखि सनेह । सभा सहित मुनि भए विदेह ॥
 भरत महा महिमा जलरासी । मुनि मति ठाढ़ि तीर अवलासी ॥
 गा चह पार जतनु हियँ हेरा । पावति नाथ न बोहितु बेरा ॥
 औरु करिहि को भरत बड़ाई । सरसी सीपि कि मिधु समाई ॥
 भरतु मुनिहि मन भीतर भाए । सहित ममाज राम पहिं आए ॥
 प्रभु प्रनामु करि दीन्ह मुआसनु । घटे सय सुनि मुनि अनुसागनु ॥
 चोले मुनिवरु बचन विचारी । देम काल अगसर अनुहारी ॥
 सुनहु राम सरवग्य सुजाना । धरम नीति गुन ग्यान निधाना ॥

दो०—सय के उर अंतर बसहु जानहु भाउ कुभाउ ।

पुरजन जननी भरत हित होइ सो कहिअ उपाउ ॥२५७॥

आरत कहहिं विचारि न काऊ । सख जुआरिहि आपन दाऊ ॥
 सुनि मुनि बचन कइत रघुराऊ । नाथ तुम्हारेहि हाथ उपाऊ ॥
 सय कर हित रुख राउरि राखें । आयसु किणँ मुदित फुर भापें ॥
 अथम जो आयसु मो कहँ होई । माथें मानि करैं मिग्व सोई ॥
 पुनि जेहि कहँ जस कहब गोसाई । सो सब भाँति घटिहि सेवकाई ॥
 कह मुनि राम मृत्य तुम्ह भापा । भरत सनेहँ विचारु न राखा ॥
 तेहि तें कहउँ बहोरि बहोरी । भरत भगति बस भइ मति मोरी ॥
 मोरें जान भरत रुचि राखी । जो कीजिअ मो सुभ सिय साखी ॥

दो०—भरत विनय सादर सुनिअ करिअ विचारु बहोरि ।

करय साधुमत लोकमत नृपनय निगम निचोरि ॥२५८॥

गुर अनुरागु भरत पर देखी। राम हृदयँ आनंदु विसेपी ॥
 भरतहि धरम धुरंधर जानी। निज सेवक तन मानस बानी ॥
 बोले गुर आयस अनुकूला। बचन मंजु मृदु मंगलमूला ॥
 नाथ सपथ पितु चरन दोहाई। भयउ न भुअन भरत सम भाई ॥
 जे गुर पद अंबुज अनुरागी। ते लोकहुँ वेदहुँ बड़भागी ॥
 राउर जा पर अस अनुरागू। को कहि सकइ भरत कर भागू ॥
 लखि लघु बंधु बुद्धि सकुचाई। करत वदन पर भरत बड़ाई ॥
 भरतु कहहिं सोइ किएँ भलाई। अस कहि राम रहे अरगाई ॥
 दो०—तव मुनि बोले भरत सन सब सँकोचु तजि तात ।

कृपासिंधु प्रिय बंधु सन कहहु हृदय के बात ॥२५९॥

मुनि मुनि बचन राम रुख पाई। गुरु साहिव अनुकूल अघाई ॥
 लखि अपनेँ सिर सद्यु छरु भारू। कहि न सकहिं कलु करहिं विचारू ॥
 पुलकि सरीर सभाँ भए ठाढ़े। नीरज नयन नेह जल वाढ़े ॥
 कहब मोर मुनिनाथ निवाहा। एहि तें अधिक कहौं मैं काहा ॥
 मैं जानउँ निज नाथ सुभाऊ। अपराधिहु पर कोह न काऊ ॥
 मो पर कृपा सनेहु विसेपी। खेलत खुनिस न कबहुँ देखी ॥
 सिसुपन तें परिहरेउँ न संगू। कबहुँ न कीन्ह मोर मन भंगू ॥
 मैं प्रभु कृपा रीति जियँ जोही। हारेहुँ खेल जितावहिं मोही ॥

दो०—महँ सनेह सकोच बस सनमुख कही न वैन ।

दरसन तृपित न आजु लगि पेम पिआसे नैन ॥२६०॥

विधि न सकेउ सहि मोर दुलारा। नीच वीचु जननी मिस पारा ॥
 यहउ कहत मोहि आजु न सोभा। अपनीं समुझि साधु सुचि को भ

मातु मंदि में साधु सुचाली । उर अस आनत कोटि कुचाली ॥
 फरइ कि कोदव वालि सुमाली । मुकता प्रसव कि संवुक काली ॥
 सपनेहुँ दोसक लेसु न काहू । मोर अभाग उदधि अवगाहू ॥
 विनु समुसँ निज अध परिपाकू । जारिउँ जायँ जननि कहि काकू ॥
 हृदयँ हेरि हारेउँ सब ओरा । एकहि भाँति भलेहिँ भल मोरा ॥
 गुर गोसाइँ साहिब सिय रामू । लागत मोहि नीक परिनामू ॥

दो०—साधु सभाँ गुर प्रभु निकट कहउँ सुयल सति भाउ ।

प्रेम प्रपंचु कि मूठ फुर जानहिँ मुनि रघुराउ ॥२६१॥

भूपति मरन पैम पनु राखी । जननी कुमति जगतु सधु साखी ॥
 देखि न जाहिँ विकल महतारीं । जरहिँ दुसह जर पुर नर नारीं ॥
 महीं सकल अनरथ कर मूला । सो सुनि समुझि सहिउँ सब छला ॥
 सुनि मन गवनु कीन्ह रघुनाथा । करि मुनि बेप लखन सिय साथी ॥
 विनु पानहिन्ह पयादेहि पाएँ । संकरु साखि रहेउँ एहि घाएँ ॥
 चहुरि निहारि निपाद सनेहू । कुलिस कठिन उर भयउ न बेहू ॥
 अब सधु आँखिन्ह देखेउँ आई । जिअत जीव जइ सबइ सहाई ॥
 जिन्हहि निरखि मग साँपिनि वीछी । तजहिँ त्रिपम विधु तामस तीछी ॥

दो०—तेइ रघुनंदनु लखनु सिय अनहित लागे जाहि ।

तासु तनय तजि दुसह दुख दैउ सहावइ काहि ॥२६२॥

सुनि अति विकल भरत बर बानी । आरति प्रीति विनय नय सानी ॥
 सोक मंगन सब सभाँ खभारू । मनहुँ कमल बन परेउ तुसारू ॥
 कहि अनेक विधि कथा पुरानी । भरत प्रबोधु कीन्ह मुनि ग्यानी ॥
 चोले उचित वचन रघुनंदू । दिनकर कुल कैरव बन चंद्र ॥

* रामचरितमानस *

त जायँ जियँ करहु गलानी। ईस अधीन जीव गति जानी ॥
 नि काल तिभुअन मत मोरें। पुन्यसिलोक तात तर तोरें ॥
 र आनत तुम्ह पर कुटिलाई। जाइ लोक परलोक नसाई ॥
 दो०—देहि जननिहि जड़ तेई। जिन्ह गुर साधु सभा नहिं सेई ॥
 मिटिहहि पाप प्रपंच सब अखिल अमंगल भार ।
 लोक सुजसु परलोक सुख सुमिरत नामु तुम्हार ॥२६३॥

कहउँ सुभाउ सत्य सिव साखी। भरत भूमि रह राउरि राखी ॥
 तात कुतरक करहु जनि जाँ। बैर पेम नहिं दुरइ दुराँ ॥
 मुनि गन निकट बिहग मृग जाहीं। बाधक बधिक बिलोकि पराहीं ॥
 हित अनहित पसु पच्छिउ जाना। मानुष तनु गुन ग्यान निधाना ॥
 तात तुम्हहि मैं जानउँ नीकें। करौं काह असमंजस जी कें ॥
 राखेउ रायँ सत्य मोहि त्यागी। तनु परिहरेउ पेम पन लागी ॥
 तासु बचन भेटत मन सोचू। तेहि तँ अधिक तुम्हार संकोचू ॥
 ता पर गुर मोहि आयसु दीन्हा। अवसि जो कहहु चहउँ सोइ कीन्हा ॥

दो०—मनु प्रसन्न करि सकुच तजि कहहु करौं सोइ आजु ।
 सत्यसंघ रघुवर बचन सुनि भा सुखी समाजु ॥२६४॥

सुर गन सहित सभय सुरराजू। सोचहिं चाहत होन अकाजू ॥
 बनत उपाउ करत कछु नाहीं। राम सरन सब गे मन माहीं ॥
 बहुरि बिचारि परस्पर कहहीं। रघुपति भगत भगति बस अहीं ॥
 सुधि करि अंबरीष दुरवासा। भे सुर सुरपति निपट निरा ॥
 सहे सुरन्ह बहु काल विषादा। नरहरि किए प्रगट प्रहल ॥
 लगि लगि कान कहहिं धुनि माथा। अब सुर काज भगत के ॥

आन उपाउ न देखिअ देवा । मानत राम सुसेवक सेवा ॥
हियँ सपेम सुमिरहु सब भरतहि । निज गुन सील राम वस करतहि
दो०—सुनि सुर मत सुरगुर कहेउ भल तुम्हार बड़ भागु ।

सकल सुमंगल मूल जग भरत चरन अनुरागु ॥२६५॥

सीतापति सेवक सेवकाई । कामयेनु सय सरिस सुहाई ॥
भरत भगति तुम्हरेँ मन आई । तजहु सोचु विधि घात घनाई ॥
देखु देवपति भरत प्रभाऊ । सहज सुभायँ विवस रघुराऊ ॥
मन धिर करहु देव डरु नाहीं । भरतहि जानि राम परिछाहीं ॥
सुनि सुरगुर सुर संमत सोचू । अंतरजामी प्रभुहि सकोचू ॥
निज सिर भारु भरत जियँ जाना । करत कोटि विधि उर अनुमाना ॥
करि विचारु मन दीन्ही ठीका । राम रजायस आपन नीका ॥
निज पन तजि राखेउ पनु मोरा । छोहु सनेहु कीन्ह नहि थोरा ॥

दो०—कीन्ह अनुमह अमित अति सघ विधि सीतानाय ।

करि प्रनामु बोले भरतु जोरि जलज जुग हाय ॥२६६॥

कहाँ कहायों का अब स्वामी । कृपा अंचुनिधि अंतरजामी ॥
गुर प्रसन्न साहिव अनुकूला । मिटी मलिन मन कलपित छला ॥
अपडर डरेउँ नं सोच समूलें । रविहि न दोसु देव दिसि मूलें ॥
मोर अभागु मातु कुटिलाई । विधिगति विषम काल कठिनाई ॥
पाउ रोपि सब मिलि मोहि घाला । ग्रन्तपाल पन आपन पाला ॥
यह नइ रीति न राउरि होई । लोकहुँ वेद विदित नहिँ गोई ॥
जगु अनभल भल एकु गोसाई । कहिअ होइ भल कासु भलाई ॥
देउ देवतरु सरिस सुभाऊ । सनमुख विमुख न काहुहि काऊ ॥

दो०—जाइ निकट पहिचानि तरु छाहँ समनि सब सोच ।

मागत अभिमत पाव जग राउ रंकु भल पोच ॥२६७॥

लखि सब विधि गुर स्वामि सनेह । मिटेउ छोभु नहिं मन संदेह ॥
 अब करुनाकर कीजिअ सोई । जन हित प्रभु चित छोभु न होई ॥
 जो सेवकु साहिवहि सँकोची । निज हित चहइ तासु मति पोची ॥
 सेवक हित साहिव सेवकाई । करै सकल सुख लोभ विहाई ॥
 स्वारथु नाथ फिरें सबही का । किएँ रजाइ कोटि विधि नीका ॥
 यह स्वारथ परमारथ सारू । सकल सुकृत फल सुगति सिंगारू ॥
 देव एक विनती सुनि मोरी । उचित होइ तस करव बहोरी ॥
 तिलक समाजु साजि सबु आना । करिअ सुफल प्रभु जाँ मनु माना

दो०—सानुज पठइअ मोहि वन कीजिअ सबहि सनाथ ।

नतरु फेरिअहि वंधु दोउ नाथ चलोँ मैं साथ ॥२६८॥

नतरु जाहिं वन तीनिउ भाई । बहुरिअ सीय सहित रघुराई ॥
 जेहि विधि प्रभु प्रसन्न मन होई । कहना सागर कीजिअ सोई ॥
 देवँ दीन्ह सबु मोहि अभारू । मोरें नीति न धरम विचारू ॥
 कहँ वचन सब स्वारथ हेतू । रहत न आरत कें चित चेतू ॥
 उतरु देइ सुनि स्वामि रजाई । सो सेवकु लखि लाज लजाई ॥
 अस मैं अवगुन उदधि अगाधू । स्वामि सनेहँ सराहत साधू ॥
 अब कृपाल मोहि सो मत भावा । सकुच स्वामि मन जाई न पावा ॥
 प्रभु पद सपथ कहँ सति भाऊ । जग मंगल हित एक उपाऊ ॥

दो०—प्रभु प्रसन्न मन सकुच तजि जो जेहि आयसु देव ।

सो सिर धरि धरि करिहि सबु मिटिहि अनट अत्रेव ॥२६९॥

भरत वचन सुचि सुनि सुर हरपे । साधु सराहि मुमन सुर वरपे ॥
 असमंजस वस अवध नेवासी । प्रमुदित मन तापस धनवासी ॥
 चुपहिं रहे रघुनाथ सँकोची । प्रभु गति देखि सभा सब सोची ॥
 जनक दूत तेहि अवसर आए । मुनि वसिष्ठँ मुनि वेगि बोलाए ॥
 करि प्रनाम तिन्ह रामु निहारे । वेपु देखि भए निपट दुखारे ॥
 दूतन्ह मुनियर बूझी वाता । कहहु विदेह भूप कुसलाता ॥
 मुनि सकुचाइ नाइ महि माथा । बोले चर वर जोरें हाथा ॥
 बूझय राउर सादर साई । कुसल हेतु सो भयउ गोसाई ॥

दो०—नाहिं त कोसल नाय केँ साय कुसल गइ नाथ ।

मिथिला अवध वितेप तें जगु सब भयउ अनाथ ॥२७०॥
 कोसलपति गति सुनि जनकौरा । भे सब लोक सोक वस घौरा ॥
 जेहिं देखे तेहि समय विदेह । नामु सत्य अस लाग न केहू ॥
 रानि कुचालि सुनत नरपालहि । बूझ न कछु जस मनि विनु ब्यालहि ॥
 भरत राज रघुवर बनयाम् । भा मिथिलेसहि हृदयँ हराँम् ॥
 नृप बूझे बुध सचिव समाजू । कहहु विचारि उचित का आजू ॥
 समुझि अवध असमंजस दोऊ । चलिअ किरहिअ न कह कछु कोऊ ॥
 नृपहिं धीर धरि हृदयँ विचारी । पठए अवध चतुर चर चारी ॥
 बूझि भरत सति भाउ कुभाऊ । आएहु वेगि न होइ लखाऊ ॥

दो०—गए अवध चर भरत गति बूझि देखि करतूति ।

चले चित्रकूटहि भरतु चार चले तेरहति ॥२७१॥
 दूतन्ह आइ भरत कइ करनी । जनक समाज जथामति धरनी ॥
 सुनि गुर परिजन सचिव महीपति । भे सब सोच मनेहँ विरुल अति ॥

धरि धीरजु करि भरत बड़ाई। लिए सुभट साहनी बोलाई ॥
 घर पुर देस राखि रखवारे। हय गय रथ बहु जान सँवारे ॥
 दुधरी साधि चले ततकाला। किए विश्रामु नमग महिपाला ॥
 भोरहिं आजु नहाइ प्रयागा। चले जमुन उतरन सबु लागा ॥
 खवरि लेन हम पठए नाथा। तिन्ह कहि अस महि नायउ माथा ॥
 साथ किरात छ सातक दीन्हे। मुनिवर तुरत विदा चर कीन्हे ॥

दो०—सुनत जनक आगवनु सबु हरषेउ अवध समाजु ।

रघुनंदनहि सकोचु बड़ सोच विवस सुरराजु ॥२७२॥

गरइ गलानि कुटिल कैकेई। काहि कहै केहि दूपनु देई ॥
 अस मन आनि मुदित नर नारी। भयउ बहोरि रहव दिन चारी ॥
 एहि प्रकार गत वासर सोऊ। प्रात नहान लाग सबु कोऊ ॥
 करि मज्जनु पूजहिं नर नारी। गनप गौरि तिपुरारि तमारी ॥
 रमारमन पद बंदि बहोरी। बिनवहिं अंजुलि अंचल जोरी ॥
 राजा रामु जानकी रानी। आनंद अवधि अवध रजधानी ॥
 सुवस बसउ फिरि सहित समाजा। भरतहि रामु करहुँ जुवराजा ॥
 एहि सुख सुधाँसींचिसब काहू। देव देहु जग जीवन लाहू ॥

दो०—गुर समाज भाइन्ह सहित राम राजु पुर होउ ।

अछत राम राजा अवध मरिअ मांग सबु कोउ ॥२७३॥

सुनि सनेहमय पुरजन बानी। निंदहिं जोग विरति मुनि ग्यानी ॥
 एहि विधिनित्य करम करि पुरजन। रामहि करहिं प्रनाम पुलकि तन
 ऊँच नीच मध्यम नर नारी। लहहिं दरसु निज निज अनुहारी ॥
 सावधान सबही सनमानहिं। सकल सराहत कृपानिधानहिं ॥

उरिकाइहि तैं रघुवर चानी। पालत नीति प्रीति पहिचानी ॥
सील सफ़ोच सिंधु रघुराऊ। सुमुख सुलोचन सरल सुभाऊ ॥
कहत राम गुन गन अनुरागे। सब निज भाग सराहन लागे ॥
हम सम पुन्य पुंज जग थोरे। जिन्हहि रामु जानत करि मोरे ॥

दो०—प्रेम मगन तेहि समय सब सुनि आवत मिथिलेसु ।

सहित सभा संप्रम उठैउ रविकुल कमल दिनेसु ॥२७४॥

भाइ सचिव गुर पुरजन साथी। आगें गवनु कीन्ह रघुनाथा ॥
गिरिवरु दीख जनकपति जत्रहीं। करि प्रनामु रथ त्यागेउ तत्रहीं ॥
राम दरस लालसा उछाह। पथ श्रम लेसु कलेसु न काह ॥
मन तहँ जहँ रघुवर बँदेही। विनु मन तन दुख सुख सुधि केंही ॥
आवत जनकु चले एहि भाँती। सहित समाज प्रेम मति माती ॥
आए निकट देखि अनुरागे। सादर मिलन परसपर लागे ॥
लगे जनक मुनिजन पद बंदन। रिपिन्ह प्रनामु कीन्ह रघुनंदन ॥
भाइन्ह सहित रामु मिलि राजहि। चले लवाइ समेत समाजहि ॥

दो०—आश्रम सागर साति रस पूरन पावन पाथु ।

सैन मनहुँ करुना सरित लिएँ जाहि रघुनाथु ॥२७५॥

बोरति ग्यान विराग करारे। वचन ससोक मिलत नद नारे ॥
सोच उसास समीर तरंगा। धीरज तट तरुवर कर भंगा ॥
विषम विपाद तोरावति धारा। भय भ्रम भवँर अवर्त अपारा ॥
केवट बुध विद्या बड़ि नावा। सकहिं न खेइ ऐक नहिँ आवा ।
बनचर कोल किरात विचारे। थके गिलोकि पथिक हियँ हारे ।
आश्रम उदधि मिली जव जाई। मनहुँ उठैउ अंबुधि अऊ

सोक विकल दोउ राज समाजा । रहा न ग्यानु न धीरजु लाजा ॥
भूप रूप गुन सील सराही । रोवहिं सोक सिंधु अवगाही ॥

छं०—अवगाहि सोक समुद्र सोचहिं नारि नर व्याकुल महा ।

दे दांप सकल सरोप बोलहिं वाम विधि कीन्हो कहां ॥

सुर सिद्ध तापस जोगिजन मुनि देखि दसा विदेह की ।

तुलसी न समरथु कांड जो तरि सकै सरित सनेह की ॥

सो०—किए अमित उपदेस जहँ तहँ लोगन्ह मुनिवरन्ह ।

धीरजु धरिअ नरेस कहेउ बसिष्ठ विदेह सन ॥२७६॥

जामु ग्यानु रवि भव निमि नासा । वचन किरन मुनि कमल विकासा

तेहि कि मोह ममता निअरई । यह सिय राम सनेह बड़ाई ॥

विपई साधक सिद्ध सयाने । त्रिविध जीव जग वेद बखाने ॥

राम सनेह सरस मन जासू । साधु सभाँ बड़ आदर तासू ॥

सोह न राम पेम विनु ग्यानु । करनधार विनु जिमि जलजानू ॥

मुनि बहुविधि विदेहु समुझाए । राम घाट सब लोग नहाए ॥

सकल सोक संकुल नर नारी । सो वासरु वीतेउ विनु वारी ॥

पसु खग मृगन्ह न कीन्ह अहारू । प्रिय परिजन कर कौन विचारू ॥

दो०—दोउ समाज निमिराजु रघुराजु नहाने प्रात ।

बैटे सब बट विटप तर मन मलीन कस गात ॥२७७॥

जे महिसुर दसरथ पुर वासी । जे मिथिलापति नगर निवासी ॥

हंस बंस गुर जनक पुरोध । जिन्ह जग मगु परमारथु सोधा ॥

लगे कहन उपदेस अनेका । सहित धरम नय विरति विवेका ॥

कौसिक कहि कहि कथा पुरानी । समुझाई सब सभा सुवानी ॥

तत्र रघुनाथ कौसिकहि कहेऊ । नाथ कालि जल विनु सधु रहेऊ ॥
 मुनि कह उचित कहत रघुराई । गण्ड वीति दिन पहर अढ़ाई ॥
 रिपि रुख लखि कह तेरहुतिराजू । इहाँ उचित नहिँ असन अनाजू ॥
 कहा भूप भल सबहि सोहाना । पाइ रजायसु चले नहाना ॥
 दो०—तेहि अवसर फल फूल दल मूल अनेक प्रकार ।

लइ आए वनचर विपुल भरि भरि काँवरि भार ॥२७८॥

कामद भे गिरि राम प्रसादा । अवलोकत अपहरत विपादा ॥
 सर सरिता वन भूमि विभागा । जनु उमगत आनंद अनुरागा ॥
 बेलि विटप सत्र सफल सफूला । बोलत स्वग मृग अलि अनुकूला ॥
 तेहि अवसर वन अधिक उछाहू । त्रिविध समीर सुखद सघ काहू ॥
 जाइ न वरनि मनोहरताई । जनु महि करति जनक पहुनाई ॥
 तब सव लोग नहाइ नहाई । राम जनक मुनि आपसु पाई ॥
 देखि देखि तरुवर अनुरागे । जहँ तहँ पुरजन उतरन लागे ॥
 दल फल मूल कंद विधि नाना । पावन सुंदर मुधा ममाना ॥
 दो०—सादर सब कहँ रामगुर परण भरि भरि भार ।

पूजि पितर सुर अतिथि गुर लगे करन फरहार ॥२७९॥

एहि विधि वासर वीते चरी । रामु निरखि नर नारि सुवारी ॥
 दुहु समाज अस्मि रुचि मन माहीं । विनु सिय राम फिरव भल नाहीं ॥
 सीता राम संग वनवास । कोटि अमरपुर मरिस मुपास ॥
 परिहारि लखन रामु बँदेही । जेहि घरु भाव बाम विधि तेही ॥
 बाहिन दइड होइ जय सवही । गम समीप बसिअ वन तपही ॥
 मंदाकिनि मज्जनु तिहु काला । राम दरमु मुद मंगल मान्य ॥

अटनु राम गिरि वन तापस थल । असनु अमिअ सम कंद मूल फल
सुख समेत संवत दुइ साता । पल सम होहिं न जनिअहिं जाता

दो०—एहि सुख जोग न लोग सब कहहिं कहाँ अस भागु ।

सहज सुभायँ समाज दुहु राम चरन अनुरागु ॥२८०॥

एहि विधि सकल मनोरथ करहीं । बचन सप्रेम सुनत मन हरहीं ॥

सीय मातु तेहि समय पठाई । दासीं देखि सुअवसरु आई ॥

सावकास सुनि सब सिय सास्र । आयउ जनकराज रनिवास्र ॥

कौसल्याँ सादर सनमानी । आसन दिए समय सम आनी ॥

सीलु सनेहु सकल दुहु ओरा । द्रवहिं देखि सुनि कुलिस कठोरा ॥

पुलक सिथिल तन वारि बिलोचना । महि नख लिखन लगीं सब सोचन

सब सिय राम प्रीति कि सि मूरति । जनु करुना बहु बेष बिसरति ॥

सीय मातु कह विधि बुधि बाँकी । जो पय फेनु फोर पवि टाँकी ॥

दो०—सुनिअ सुधा देखिअहिं गरल सब करतूति कराल ।

जहँ तहँ काक उलूक बक मानस सकृत मराल ॥२८१॥

सुनि ससोच कह देवि सुमित्रा । विधि गति वडि विपरीत विचित्रा

जो सृजि पालइ हरइ बहोरी । बाल केलि सम विधि मति भोरी ॥

कौसल्या कह दोसु न काहू । करम चिबस दुख सुख छति लाहू ॥

कठिन करम गति जान विधाता । जो सुभ असुभ सकल फल दाता ॥

ईस रजाइ सीस सबही कें । उतपति थिति लय बिपहु अमी कें ॥

देवि मोह बस सोचिअ वादी । विधि प्रपंचु अस अचल अनादी ॥

भूपति जिअब मरव उर आनी । सोचिअ सखि लखि निज हित हान

सीय मात कह सत्य सबानी । सकृती अवधि अवधपति रानी ॥

दो०—लखनु रामु सिय जाहुँ वन भल परिनाम न पोबु ।

गहवरि हियँ कह कौसिला मोहि भरत कर सोबु ॥२८२॥

ईस प्रसाद असीस तुम्हारी। सुत सुतवधू देवसरि बारी ॥

राम सपथ मैं कीन्हि न काऊ। सो करि कहउँ सखी सति भाऊ ॥

भरत सील गुन विनय बढ़ाई। भायप भगति भरोस भलाई ॥

कहत सारदहु कर मति हीचे। सागर सीप कि जाहिँ उलीचे ॥

जानउँ सदा भरत कुलदीपा। चार चार मोहि कहेउ महीपा ॥

कमें कनकु मनि पारिखि पाएँ। पुरुष परिखिअहिँ समयँ सुभाएँ ॥

अनुचित आजु कह्य अस मोरा। सोक सनेहँ सयानप थोरा ॥

मुनि सुरसरि सम पावनि वानी। भई सनेह विकल सब रानी ॥

दो०—कौसल्या कह धीर धरि सुनहु देवि मिथिलेसि ।

को विवेकनिधि पल्लभहि तुम्हहि सकइ उपदेसि ॥२८३॥

रानि राय सन अवसरु पाई। अपनी भाँति कह्य समुझाई ॥

रखिअहिँ लखनु भरतु गवनहिँ वन। जीं यह मत मानै महीप मन ॥

तौ भल जतनु करम सुविचारी। मोरें सोचु भरत कर भारी ॥

गूढ़ सनेह भरत मन माहीं। रहें नीक मोहि लागत नाहीं ॥

लखि सुभाउ मुनि सरल सुवानी। सब भइ मगन करुन रस रानी ॥

नभ प्रसन्न झरि धन्य धन्य धुनि। सिथिल सनेहँ सिद्ध जोगी मुनि ॥

सबु रनिवासु विधकि लखि रहेऊ। तव धरि धीर सुमित्राँ कहेऊ ॥

देवि दंड जुग जामिनि वीती। राम मातु मुनि उठी सप्रीती ॥

दो०—वेगि पाउ धरिअ थलहि कह सनेहँ सतिमान ।

हमरे तौ अब ईस गति कै मिथिलेस सहान ॥

लखि सनेह सुनि वचन विनीता । जनकप्रिया गह पाय पुनीता ॥
 देवि उचित असि विनय तुम्हारी । दसरथ धरिनि राम महतारी ॥
 प्रभु अपने नीचहु आदरहीं । अग्नि धूम गिरि सिर तिनु धरहीं ॥
 सेवकु राउ करम मन बानी । सदा सहाय महेसु भवानी ॥
 रउरे अंग जोगु जग को है । दीप सहाय कि दिनकर सोहै ॥
 रामु जाइ वनु करि सुर काजू । अचल अवधपुर करिहहिं राजू ॥
 अमर नाग नर राम बाहुबल । सुख बसिहहिं अपने अपने थल ॥
 यह सब जागवलिक कहि राखा । देवि न होइ मुधा मुनि भाषा ॥
 दो०—अस कहि पग परि पेम अति सिय हित विनय सुनाइ ।

सिय समेत सियमातु तव चली सुआयसु पाइ ॥२८५॥

प्रिय परिजनहि मिली वैदेही । जो जेहि जोगु भाँति तेहि तेही ॥
 तापस वेप :जानकी देखी । भा सबु विकल विषाद विसेपी ॥
 जनक राम गुर आयसु पाई । चले थलहि सिय देखी आई ॥
 लीन्हि लाइ उर जनक जानकी । पाहुनि पावन पेम प्रान की ॥
 उर उमगेउ अंबुधि अनुरागू । भयउ भूप मनु मनहुँ पयागू ॥
 सिय सनेह बटु बाढ़त जोहा । ता पर राम पेम सिसु सोहा ॥
 चिरजीवी मुनि ग्यान विकल जनु । बूढ़त लहेउ बाल अवलंबनु ॥
 मोह मगन मति नहिं विदेह की । महिमा सिय रघुवर सनेह की ॥

दो०—सिय पितु मातु सनेह वस विकल न सकी सँभारि ।

धरनिसुताँ धीरजु धरेउ समउ सुधरमु विचारि ।

तापस वेप जनक सिय देखी । भयउ पेम परितोषु
 पुत्रि पवित्र किए कुल दोऊ । सुजस धवल जगु कह

जिति सुरसरि कीरति सरि तोरी । गवनु कीन्ह विधि अंड करोरी ॥
 गंग अवनि थल तीनि वड़ेरे । एहिं किए साधु समाज घनेरे ॥
 पितु कह सत्य सनेहँ सुवानी । सीय सकुच महँ मनहुँ समानी ॥
 पुनि पितु मातु लीन्हि उर लाई । सिख आसिप हित दीन्हि सुहाई ॥
 कहति न सीय सकुचि मन माहीं । इहाँ बसव रजनीं भल नाहीं ॥
 लखि रुख रानि जनायउ राऊ । हृदयँ सराहत सीलु सुभाऊ ॥
 दो०—बार बार मिलि भेंटि सिय विदा कीन्हि सनमानि ।

कही समय सिर भरत गति रानि सुवानि सयानि ॥२८७॥

सुनि भूपाल भरत व्यवहारू । सोन सुगंध सुधा ससि सारू ॥
 मूदे सजल नयन पुलके तन । सुजसु सराहन लगे मुदित मन ॥
 सावधान सुनु सुमुखि सुलोचनि । भरत कथा भव बंध विमोचनि ॥
 धरम राजनय ब्रह्मविचारू । इहाँ जथामति मोर प्रचारू ॥
 सो मति मोरि भरत महिमाही । कहँ काह छलि छुअति न छाँही ॥
 विधि गनपति अहिपति सिव सारद । कवि कोविद बुध बुद्धि विसारद ॥
 भरत चरित कीरति करतूती । धरम सील गुन विमल विभूती ॥
 समुझत सुनत सुखद सब काह । मुचि सुरसरि रुचि निदर सुधाह ॥

दो०—निरवधि गुन निरुपम पुरुषु भरतु भरत सम जानि ।

कहिअ सुमेरु कि सेर सम कविकुल मति सकुचानि ॥२८८॥

अगम सवहि वरनत वरवरनी । जिमि जलहीन मीन गमु धरनी ॥
 भरत अमित महिमा सुनु रानी । जानहिं रामु न सकहिं बखानी ॥
 वरनि सप्रेम भरत अनुभाऊ । तिय जिय की रुचि लखि कह राऊ ॥
 बहुरहिं लखनु भरतु वन जाहीं । सब कर भल सब के मन माहीं ॥

वि परंतु भरत रघुवर की। प्रीति प्रतीति जाइ नहिं तरकी ॥
 भरतु अवधि सनेह समता की। जद्यपि रामु सीम समता की।
 परमारथ स्वारथ सुख सारे। भरत न सपनेहुँ मनहुँ निहारे।
 साधन सिद्धि राग पग नेहू। मोहि लखि परत भरत मत एहू

दो०—भोरेहुँ भरत न पेलिहहि मनसहुँ राम रजाइ।
 करिअ न सोचु सनेह बस कहेउ भूप बिलखाइ ॥२८९॥

राम भरत गुन गनत सप्रीती। निसि दंपतिहि पलक सम वीती।
 राज समाज प्रात जुग जागे। न्हाइ न्हाइ सुर पूजन लागे।
 गे नहाइ गुर पहिं रघुराई। वंदि चरन बोले रुख पाई ॥
 नाथ भरतु पुरजन महतारी। सोक बिकल बनवास दुखारी ॥
 सहित समाज राउ मिथिलेसु। बहुत दिवस भए सहत कलेसु ॥
 उचित होइ सोइ कीजिअ नाथा। हित सबही कर रौरें हाथा ॥
 अस कहि अति सकुचे रघुराऊ। मुनि पुलके लखि सीलु सुभाऊ ॥
 तुम्ह बिनु राम सकल सुख साजा। नरक सरिस दुहु राज समाजा ॥

दो०—प्राण प्राण के जीव के जिव सुख के सुख राम।
 तुम्ह तजि तात सोहात गृह जिन्हहि तिन्हहि विधि वाम ॥२९॥

सो सुखु करमु धरमु जरि जाऊ। जहँ न राम पद पंकज भाऊ
 जोगु कुजोगु ग्यानु अग्यानु। जहँ नहिं राम पैम परधानु
 तुम्ह बिनु दुखी सुखी तुम्ह तेहीं। तुम्ह जानहु जिय जो जेहि वे
 राउर आयसु सिर सबही कें। विदित कृपालहि गति सब नी
 आपु आश्रमहि धारिअ पाऊ। भयउ सनेह सिथिल मुनिरा
 करि प्रनामु तब रामु सिधाए। रिपि धरिअ जिनक पहिं आ

राम वचन गुरु नृपहि सुनाए । सील सनेह सुभायँ सुहाए ॥
महाराज अब कीजिअ सोई । सब कर धरम सहित हित होई ॥

दो०—ग्यान निधान सुजान सुचि धरम धीर नरपाल ।

तुम्ह बिनु असमंजस समन को समरथ एहि काल ॥२९१॥

सुनि मुनि वचन जनक अनुरागे । लखि गति ग्यानु विरागु विरागे ॥
सिथिल सनेहँ गुनत मन माहीं । आए इहाँ कीन्ह भल नाहीं ॥
रामहि रायँ कहेउ बन जाना । कीन्ह आपु प्रिय प्रेम प्रवाना ॥
हम-अब बन तें बनहि पठाई । प्रमुदित फिरव विवेक बढ़ाई ॥
तापस मुनि महिसुर सुनि देखी । भए प्रेम बस विकल विसेपी ॥
समउ समुझि धरि धीरजु राजा । चले भरत पहिँ सहित समाजा ॥
भरत आइ आगें भइ लीन्हे । अबसर सरिस सुआसन दीन्हे ॥
तात भरत कह तेरहुति राज । तुम्हहि विदित रघुधीर सुभाऊ ॥

दो०—राम सत्यमत धरम रत सब कर सीलु सनेहु ।

संकट सहत सकोच बस कहिअ जो आयसु देहु ॥२९२॥

सुनि तन पुलकि नयन भरि घारी । बोले भरतु धीर धरि भारी ॥
प्रभु प्रिय पृज्य पिता सम आपू । कुलगुरु सम हित माय न बापू ॥
कौंसिकादि मुनि सचिव समाजू । ग्यान अंबुनिधि आपुनु आजू ॥
सिसु सेवकु आयसु अनुगामी । जानि मोहि सिख देइअ स्वामी ॥
एहिँ समाज थल वृझव राउर । मौन मलिन र्म बोलव बाउर ॥
छोटे घदन कहउँ बड़ि चाता । छमव तात लखि वाम विधाता ॥
आगम निगम प्रसिद्ध पुराना । सेवाधरमु कठिन जगु जाना ॥
स्वामि धरम स्वारथहि विरोधू । वैरु अंध प्रेमहि नै प्रेबा ॥

दो०—राखि राम रुख घरमु व्रतु पराधीन मोहि जानि ।

सब कें संमत सर्व हित करिअ पेमु पहिचानि ॥२९३॥

भरत वचन सुनि देखि सुभाऊ । सहित समाज सराहत राऊ ॥

सुगम अगमं मृदु संजु कठोरे । अरथु अमित अति आखर थोरे ॥

ज्यों मुखु मुकुर मुकुरु निज पानी । गहि न जाइ अस अदभुत बानी ॥

भूप भरतु मुनि सहित समाजू । गे जहँ विबुध कुमुद द्विजराजू ॥

सुनि सुधि सोच विकल सब लोगा । मनहुँ मीन गन नव जल जोगा

देवँ प्रथम कुलगुर गति देखी । निरखि विदेह सनेह विसेपी ॥

राम भगतिमय भरतु निहारे । सुर स्वारथी हहरि हियँ हारे ॥

सब कोउ राम पेममय पेखा । भए अलेख सोच वस लेखा ॥

दो०—रामु सनेह सकोच वस कह ससोच सुरराजु ।

रचहु. प्रपंचहि पंच मिलि नाहिं त भयउ अकाजु ॥२९४॥

सुरन्ह सुमिरि सारदा सराही । देवि देव सरनागत पाही ॥

फेरि भरत मति करि निज माया । पालु विबुध कुल करि छल छाया ॥

विबुध बिनय सुनि देवि सयानी । बोली सुर स्वारथ जड़ जानी ॥

मो सन कहहु भरत मति फेरु । लोचन सहस न सझ सुमेरु ॥

विधि हरि हर माया बड़ि भारी । सोउ न भरत मति सकइ निहारी ॥

सो मति मोहि कहत करु भोरी । चंदिनि कर कि चंडकर चोरी ॥

भरत हृदयँ श्रिय राम निवास । तहँ कि तिमिर जहँ तरनि प्रकास ॥

अस कहि सारद गइ विधि लोका । विबुध विकल निसि मानहुँ कोका

दो०—सुर स्वारथी मलीन मन कीन्ह कुमंत्र कुठाटु ।

रचि प्रपंच माया प्रबल भय भ्रम अरति उचाटु ॥२९५॥

करि कुचालि सोचत सुरराजू । भरत हाथ सत्रु काजु अकाजू ॥
 गए जनकु रघुनाथ समीपा । सनमाने सब रत्रिकुल दीपा ॥
 समय समाज धरम अविरोधा । बोले तव रघुवंस पुरोधा ॥
 जनक भरत संवादु मुनाई । भरत कहाउति कही मुहाई ॥
 तात राम जस आयसु देह । सो सचु कर मोर मत एह ॥
 मुनि रघुनाथ जोरि जुग पानी । बोले सत्य मरल मृदु घानी ॥
 विद्यमान आपुनि मिथिलेय । मोर कहव मव भाँनि भदेय ॥
 राउर राय रजायसु होई । गउरि सपथ मही सिर सोई ॥

दो०—राम सपथ मुनि मुनि जनकु सकुचे सभा समेत ।

सकल विलोक्त भरत मुखु बनइ न जनरु देत ॥२९६॥

सभा सकुच बस भरत निहारी । रामबंधु धरि धीरजु भारी ॥
 कुसमउ देखि सनेहु सँभारा । बढत विधि जिमि घटज निवारा ॥
 सोक कनकलोचन मति छोनी । हरी विमल गुन गन जगजोनी ॥
 भरत विवेक बराहँ विसाला । अनायास उधरी तेहि काला ॥
 करि प्रनाम सव कहँ कर जोरे । रामु राउ गुर साधु निहोरे ॥
 छमव आजु अति अनुचित मोरा । कहउँ वदन मृदु वचन फठोरा ॥
 हियँ सुमिरी सारदा मुहाई । मानस ते मुख पंकज आई ॥
 विमल विवेक धरम नय साली । भरत भारती मंजु मराली ॥

दो०—निरखि विवेक विलोचनहि सिधिल सनेहँ समाजु ।

करि प्रनाम बोले भरतु सुमिरि सीय रघुराजु ॥२९७॥

प्रभु पितु मातु सुहृद गुर स्वामी । पूज्य परम हित अंतरजामी ॥
 सरल सुसाहिबु सील निधानु । प्रनतपाल सर्वग्य मुजानु ॥

समरथ सरनागत हितकारी । गुनगाहकु अवगुन अघ हारी ॥
 स्वामिगोसाँइहिसरिस गोसाँइ । मोहि समान में साँइ दोहाँइ ॥
 प्रभु पितु वचन मोह वस पेली । आयउँ इहाँ समाजु सकेली ॥
 जग भल पोच ऊँच अरु नीचू । अमिअ अमरपद माहुरु मीचू ॥
 राम रजाइ मेट मन माहीं । देखा सुना कतहुँ कोउ नाहीं ॥
 सो मैं सब विधिकीन्हि ठिठाई । प्रभु मानी सनेह सेवकाई ॥

दो०—कृपाँ भलाई आपनी नाथ कीन्ह भल मोर ।

दूषन भे भूपन सरिस सुजसु चारु चहु ओर ॥२९८॥

राउरि रीति सुवानि बड़ाई । जगत विदित निगमागम गाई ॥
 कूरकुटिल खल कुमति कलंकी । नीच निसील निरीस निसंकी ॥
 तेउ सुनि सरन सामुहें आए । सकृत प्रनामु किहें अपनाए ॥
 देखि दोष कबहुँ न उर आने । सुनि गुन साधु समाज बखाने ॥
 को साहिव सेवकहि नेवाजी । आपु समाज साज सब साजी ॥
 निज करतूतिन समुझिअ सपनें । सेवक सकुच सोचु उर अपनें ॥
 सो गोसाँइ नहिँ दूसर कोपी । भुजा उठाइ कहउँ पन रोपी ॥
 पसु नाचत सुक पाठ प्रवीना । गुन गति नट पाठक आधीना ॥

दो०—यो सुधारि सनमानि जन किए साधु सिरमोर ।

को कृपाल विनु पालिहै विरिदावलि वरजोर ॥२९९॥

सोक सनेहँ कि वाल सुभाएँ । आयउँ लाइ रजायसु वाएँ ॥
 तबहुँ कृपाल हेरि निज ओरा । सबहि भाँति भल मानेउ सोरा ॥
 देखेउँ पात्र सुमंगल मूला । जानेउँ स्वामि सहज अनुकूला ॥
 बडेँ समाज विलोकेउँ भाग । वडीँ चक्र साहिव अक्षराग ॥

कृपा अनुग्रह अंगु अघाई। कीन्हि कृपानिधि सत्र अधिकारै ॥
 राखा मोर दुलार गोसाईं। अपने सील सुभायँ भलाई ॥
 नाथ निपट भैं कीन्हि ढिठारै। स्वामि समाज सकोच विहारै ॥
 अचिनय चिनय जथा रुचि वानी। छमिहि देउ अति आरति जानी ॥

दो०—सुहृद सुजान सुसाहिबहि बहून कहव बडि खोरि ।

आयसु देइअ देव अच सबड सुधारी मोरि ॥३००॥

प्रभु पद पदुम पराग दोहारै। सत्य सुकृत सुख सीवँ सुहारै ॥
 सो करि कहउँ हिए अपने की। रुचि जागत सोवत सपने की ॥
 सहज सनेहँ स्वामि सेवकारै। स्वारथ छल फल चारि विहारै ॥
 अग्या सम न सुसाहिब सेवा। सो प्रसादु जन पायँ देवा ॥
 अम्र कहि प्रेम विवस भए भारी। पुलक सरीर बिलोचन वारी ॥
 प्रभु पद कमल गहे अकुलाई। समउ सनेहु न सो कहि जाई ॥
 कृपासिंधु सनमानि सुवानी। बैठाए समीप गहि पानी ॥
 भरत चिनय मुनि देखि सुभाऊ। सिधिल सनेहँ सभा रघुराऊ ॥

छं०—रघुराउ सिधिल सनेहँ साधु समाज मुनि विथिला घनी ।

मन महुँ सराहत भरत भावप भगति की महिया घनी ॥

भरतहि प्रसंसत विबुध बरपत सुमन मानस मलिन से ।

तुलसी चिकल सब लोग सुनि सकुचे निसागम नलिन से ॥

सो०—देखि हुगारी दीन दुहु समाज नर नारि सब ।

मघना महा मलीन मुए मारि मंगल चहत ॥३०१॥

कपट कुचालि सीवँ मुरराजू। पर अकाज प्रिय आपन काजू ॥

काक समान पाकरिपु रीती। छली मलीन

समरथ सरनागत हितकारी । गुनगाहकु अवगुन अघ हारी ॥
 स्वामिगोसाँइहिसरिस गोसाँइ । मोहि समान में साँइ दोहाँइ ॥
 प्रभु पितु वचन मोह बस पेली । आयउँ इहाँ समाजु सकेली ॥
 जग भल पोच ऊँच अरु नीचू । अमिअ अमरपद माहुरु मीचू ॥
 राम रजाइ भेट मन माहीं । देखा सुना कतहुँ कोउ नाहीं ॥
 सो में सब विधिकीन्हि ठिठाई । प्रभु मानी सनेह सेवकाई ॥

दो०—कृपाँ भलाई आपनी नाथ कीन्ह भल मोर ।

दूपन भे भूपन सरिस सुजसु चारु चहु ओर ॥२९८॥

राउरि रीति सुत्रानि बड़ाई । जगत विदित निगमागम गाई ॥
 क्रूरकुटिल खल कुमति कलंकी । नीच निसील निरीस निसंकी ॥
 तेउ सुनि सरन सामुहें आए । सकृत प्रनामु किहें अपनाए ॥
 देखि दोष कवहुँ न उर आने । सुनि गुन साधु समाज बखाने ॥
 को साहिव सेवकहि नेवाजी । आपु समाज साज सब साजी ॥
 निज करतूति न समुझिअ सपनें । सेवक सकुच सोचु उर अपनें ॥
 सो गोसाँइ नहिं दूसर कोपी । भुजा उठाइ कहउँ पन रोपी ॥
 पसु नाचत सुक पाठ प्रवीना । गुन गति नट पाठक आधीना ॥

दो०—यो सुधारि सनमानि जन किए साधु सिरमोर ।

को कृपाल विनु पालिहें विरिदावलि बरजोर ॥२९९॥

सोक सनेहँ कि वाल सुभाँएँ । आयउँ लाइ रजायसु वाँएँ ॥
 तवहुँ कृपाल हेरि निज ओरा । सवहि भाँति भल मानेउ मोरा ॥
 देखेउँ पाव सुमंगल मूला । जानेउँ स्वामि सहज अनुकूला ॥
 बडेँ समाज विलोकेउँ भागू । बडीं चूक साहिव अनुरागू ॥

कृपा अनुग्रह अंगु अघाई। कीन्हि कृपानिधिसव अधिकारई ॥
 राखा मोर दुलार गोसाईं। अपने सील सुभायँ भलाई ॥
 नाथ निपट मैं कीन्हि ठिठारई। स्वामि समाज सक्रोच विहारई ॥
 अचिनय बिनय जथा रुचि वानी। छमिहि देउ अति आरति जानी ॥

दो०—सुहृद सुजान सुसाहिवहि बहुत कहव बड़ि खोरि ।

आयसु देइअ देव अथ सबइ सुघारी मोरि ॥३००॥

प्रभु पद पदुम पराग दांहाई। सत्य सुकृत सुख सीयँ सुहाई ॥
 सो करि कहउँ हिए अपने की। रुचि जागत सोवत सपने की ॥
 सहज सनेहँ स्वामि सेवकाई। स्वारथ छल फल चारि विहाई ॥
 अग्या सम न सुसाहिष सेवा। सो प्रसादु जन पावँ देवा ॥
 अस कहि प्रेम विवस भए भारी। पुलक सरीर त्रिलोचन घारी ॥
 प्रभु पद कमल गहे अकुलाई। समउ सनेहु न सो कहि जाई ॥
 कृपासिंधु सनमानि सुवानी। बैठाए समीप गहि पानी ॥
 भरत बिनय मुनि देखि सुभाऊ। सिथिल सनेहँ सभा रघुराऊ ॥

छं०—रघुराउ सिथिल सनेहँ साधु समाज मुनि मिथिला घनी ।

मन महुँ सराहत भरत भायप भगति की महिमा घनी ॥

भरतहि प्रसंसत विबुध बरपत सुमन मानस मलिन से ।

तुलसी विकल सब लोग सुनि सकुचे निसागम नलिन से ॥

सो०—देखि दुग्वारी दीन दुहु समाज नर नारि सब ।

मघरा महा मलीन मुए मारि मंगल चहत ॥३००॥

कपट कुचालि सीयँ मुरराजू। पर अकाज प्रिय आपन काज
 काक समान पाकरिपु रीती। छली मलीन कतहुँ न प्रतीत

अमरथ सरनागत हितकारी। गुनगाहकु अवगुन अघ हारी ॥
 स्वामि गोसाँइहिसरिस गोसाँइ। मोहि समान में साँइ दोहाँइ ॥
 प्रभु पितु वचन मोह वस पेली। आयउँ इहाँ समाजु सकेली ॥
 जग भल पोच ऊँच अरु नीचू। अमिअ अमरपद माहुरु मीचू ॥
 राम रजाइ मेट मन माहीं। देखा सुना कतहुँ क्रोड नाहीं ॥
 सो मैं सब विधिकीन्हि डिठाई। प्रभु मानी सनेह सेवकाई ॥

दो०—कृपाँ भलाई आपनी नाथ कीन्ह भल मोर ।
 दूपन भे भूपन सरिस सुजसु चारु चहु ओर ॥२९८॥

राउरि रीति सुवानि बड़ाई। जगत विदित निगमागम गाई ॥
 क्रूरकुटिल खल कुमति कलंकी। नीच निसील निरीस निसंकी ॥
 तेउ सुनि सरन सामुहें आए। सकृत प्रनामु किहें अपनाए ॥
 देखि दोष कबहुँ न उर आने। सुनि गुन साधु समाज वखाने ॥
 को साहिब सेवकहि नेवाजी। आपु समाज साज सब साजी ॥
 निज करतूतिन समुझिअ सपनें। सेवक सकुच सोचु उर अपने ॥
 सो गोसाँइ नहिँ दूसर कोपी। भुजा उठाइ कहउँ पन रोपी ॥
 पसु नाचत सुक पाठ प्रवीना। गुन गति नट पाठक अधीना ॥

दो०—यों सुधारि सनमानि जन किए साधु सिरमोर ।
 को कृपाल विनु पालिहै विरिदावलि वरजोर ॥२९९॥

सोक सनेहँ कि वाल सुभाएँ। आयउँ लाइ रजायसु वा
 तवहुँ कृपाल हेरि निज ओरा। सवहि भाँति भल मानेउ मो
 देखेउँ पाव सुमंगल मूला। जानेउँ स्वामि सहज अनुक
 नें मगाज विलोकैउँ भागू। बड़ीं चूक साहिब अनु

कृपा अनुग्रह अंगु अघाई। कीन्हि कृपानिधिसत्र अधिकारै ॥
 राखा मोर दुलार गोसाईं। अपने सील सुभायँ भलाई ॥
 नाथ निपट मैं कीन्हि ढिठारै। स्वामि समाज सक्रोच विहारै ॥
 अचिनय चिनय जथा रुचि वानी। छमिहि देउ अति आरति जानी ॥

दो०—सुहृद सुजान सुसाहिबहि बहुत कहव बड़ि खोरि ।

आयसु देइअ देव अब सबइ सुधारी मोरि ॥३००॥

प्रभु पद पदुम पराग दोहारै। सत्य सुकृत सुख सीयँ सुहारै ॥
 सो करि कहउँ हिए अपने की। रुचि जागत सोत्रत सपने की ॥
 सहज सनेहँ स्वामि सेवकारै। स्वारथ छल फल चारि विहारै ॥
 अग्या सम न सुसाहिब सेवा। सो प्रसादु जन पावँ देवा ॥
 अस कहि प्रेम विवस भए भारी। पुलक सरौर विलोचन वारी ॥
 प्रभु पद कमल गहे अकुलाई। समउ सनेहु न सो कहि जाई ॥
 कृपासिंधु सनमानि सुवानी। बँठाए समीप गहि पानी ॥
 भरत चिनय मुनि देखि सुभाऊ। सिथिल सनेहँ सभा रघुराऊ ॥

छं०—रघुराउ सिथिल सनेहँ साधु समाज मुनि मिथिला घनी ।

मन महुँ सराहत भरत भायप भगति की महिमा घनी ॥

भरतहि प्रसंसत विबुध धरपत सुमन मानस मलिन से ।

तुलसी चिकल सब लोग सुनि सकुचे निसागम नलिन से ॥

सं०—देखि दुखारी दीन दुहु समान नर नारि सष ।

मघया महा मलीन मुए मारि मंगल चहत ॥३०१॥

कपट कुचालि सीयँ सुरराजू। पर अकाज प्रिय आपन काजू ॥

काक समान पाकरिपु रीती। छली मलीन कतहुँ न प्रतीती ॥

समरथ सरनागत हितकारी । गुनगाहकु अवगुन अध हारी ॥
 स्वामिगोसाँइहिसरिस गोसाँइ । मोहि समान मैं साँइ दोहाँइ ॥
 प्रभु पितु बचन मोह वस पेली । आयउँ इहाँ समाजु सकेली ॥
 जग भल पोच ऊँच अरु नीचू । अमिअ अमरपद माहुरु मीचू ॥
 राम रजाइ मेट मन माहीं । देखा सुना कतहुँ कोउ नाहीं ॥
 सो मैं सब विधिकीन्हि ढिठाई । प्रभु मानी सनेह सेवकाई ॥

दो०—कृपाँ भलाई आपनी नाथ कीन्ह भल मोर ।

दूपन मे भूषन सरिस सुजसु चारु चहु ओर ॥२९८॥

राउरि रीति सुवानि बड़ाई । जगत विदित निगमागम गाई ॥
 कूरकुटिल खल कुमति कलंकी । नीच निसील निरीस निसंकी ॥
 तेउ सुनि सरन सामुहें आए । सकृत प्रनामु किहें अपनाए ॥
 देखि दोष कबहुँ न उर आने । सुनि गुन साधु समाज बखाने ॥
 को साहिब सेवकहि नेवाजी । आपु समाज साज सब साजी ॥
 निज करतूति न समुझिअ सपनें । सेवक सकुच सोचु उर अपनें ॥
 सो गोसाँइ नहिँ दूसर कोपी । भुजा उठाइ कहउँ पन रोपी ॥
 पसु नाचत सुक पाठ प्रवीना । गुन गति नट पाठक आधीना ॥

दो०—यों सुधारि सनमानि जन किए साधु सिरमोर ।

को कृपाल विनु पालिहें विरिदावलि वरजोर ॥२९९॥

सोक सनेहँ कि बाल सुभाएँ । आयउँ लाइ रजायसु बाएँ ॥
 तबहुँ कृपाल हेरि निज ओरा । सबहि भाँति भल मानेउ सोरा ॥
 देखेउँ पावः सुमंगल मूला । जानेउँ स्वामि सहज अनुकूला ॥

कृपा अनुग्रह अंगु अघाई। कीन्हि कृपानिधि सब अधिकारी ॥
 राखा मोर दुलार गोसाईं। अपने सील सुभायँ भलाई ॥
 नाथ निपट मैं कीन्हि ढिठाई। स्वामि समाज सकोच विहाई ॥
 अविनय विनय जथा रुचि बानी। छमिहि देउ अति आरति जानी ॥
 दो०—सुहृद सुजान सुसाहिबहि बहुत कहय बडि खोरि ।

आयसु देइअ देव अथ सबइ सुधारी मोरि ॥३००॥

प्रभु पद पदुम पराग दोहाई। सत्य सुकृत सुख सीवँ सुहाई ॥
 सो करि कहउँ हिए अपने की। रुचि जागत सोवत सपने की ॥
 सहज सनेहँ स्वामि सेवकाई। स्वारथ छल फल चारि विहाई ॥
 अग्या सम न सुसाहिब सेवा। सो प्रसादु जन पावँ देवा ॥
 अस कहि प्रेम विवस भए भारी। पुलक सरीर विलोचन बारी ॥
 प्रभु पद कमल गहे अकुलाई। समउ सनेहु न सो कहि जाई ॥
 कृपासिंधु सनमानि सुबानी। बैठाए समीप गहि पानी ॥
 भरत विनय मुनि देखि सुभाऊ। सिथिल सनेहँ सभा रघुराउ ॥

छं०—रघुराउ सिथिल सनेहँ साधु समाज मुनि मिथिला बनी ।

मन महुँ सराहत भरत भायप भगति की महिना बनी ॥

भरतहि प्रसंसन विबुध वरपत सुमन मानस नदिने ॥

तुलसी विकल सप्रलोग सुनि सकुचे निजानन नदिने ॥

सो०—देसि दुगारी दीन दुहु सनाउ न नदि नदि ॥

मयग महा मलीन मुए भारि नन्द चहुँ ॥३०१॥

कपट कुचालि सीवँ सुराजु। पर अज्ञान द्विज अज्ञान कजु ॥

काक समान, पाकरिपु रीती। छली मलीन कन्दू न प्रतीती ॥

म कुमत करि कपटु सँकेला । सो उचाटु सब कें सिर मेला ॥
 मायाँ सब लोग विमोहे । राम प्रेम अतिसय न विछोहे ॥
 य उचाट वस मन थिर नाहीं । छनवन रुचि छन सदन सोहाहीं
 दुविध मनोगति प्रजा दुखारी । सरित सिंधु संगम जनु वारी ॥
 दुचित कतहुँ परितोषु न लहहीं । एक एक सन मरमु न कहहीं ।
 लखि हियँ हंसि कह कृपानिधानू । सरिस खान मघवान जुवानू ॥

दो०—भरतु जनकु मुनिजन सचिव साधु सचेत विहाइ ।
 लागि देवमाया सबहि जथाजोगु जनु पाइ ॥३०२॥

कृपासिंधु लखि लोग दुखारे । निज सनेहँ सुरपति छल भारे ॥
 सभा राउ गुर महिसुर मंत्री । भरत भगति सब कै मति जंत्री ॥
 रामहि चितवत चित्र लिखे से । सकुचत बोलत बचन सिखे से ॥
 भरत प्रीति नति विनय बड़ाई । सुनत सुखद वरनत कठिनाई ॥
 जासु बिलोकि भगति लवलेसू । प्रेम मगन मुनिगन मिथिलेसू ॥
 महिमा तासु कहै किमि तुलसी । भगति सुभायँ सुमति हियँ हुलसी ॥
 आपु छोटि महिमा बड़ि जानी । कबिकुल कानि मानि सकुचानी ॥
 कहि न सकति गुन रुचि अधिकारै । मति गति बाल बचन की न ॥

दो०—भरत विमल जसु विमल विधु सुमति चकोरकुमारि ।
 उदित विमल जन हृदय नभ एकटकरही निहारि ॥३०॥

भरत सुभाउ न सुगम निगमहँ । लघु मति चापलता कवि छ
 कहत सुनत सति भाउ भरत को । सीय राम पद होइ न रत
 सुमिरत भरतहि प्रेमु राम को । जेहि न सुलभु, तेहिसरिस
 देखि दयाल दसा सबही की । राम सुजान जानि जन ज

धरम धुरीन धीर नय नागर । सत्य सनेह सील सुख सागर ॥
 देसु कालु लखि समउ समाज् । नीति प्रीति पालक रघुराज् ॥
 बोलै बचन बानि सरवसु से । हित परिनाम सुनत ससि रसु से ॥
 तात भरत तुम्ह धरम धुरीना । लोक वेद विद प्रेम प्रवीना ॥

दो०—करम बचन मानस विमल तुम्ह समान तुम्ह तात ।

गुर समाज लघु बंधु गुन कुसमयँ किमि कहि जात ॥३०४॥

जानहु तात तरनि कुल रीती । सत्यसंध पितु कीरति प्रीती ॥
 समउ समाजु लाज गुरजन की । उदासीन हित अनहित मन की ॥
 तुम्हहि विदित सबही कर करमू । आपन मोर परम हित धरमू ॥
 मोहि सब भाँति भरोस तुम्हारा । तदपि कहउँ अवसर अनुसार ॥
 तात तात विनु चात हमारी । केवल गुरकुल कृपाँ सँभारी ॥
 नतरु प्रजा परिजन परिवारू । हमहि सहित सयु होत खुआरू ॥
 जाँ विनु अवसर अथवँ दिनेसू । जग केहि कहहु न होइ कलेसू ॥
 तस उतपातु तात विधि कीन्हा । मुनि मिथिलेस राखि सबु लीन्हा ॥

दो०—राज काज सब लाज पति धरम धरनि धन धाम ।

गुर प्रभाउ पालिहि सबहि भल होइहि परिनाम ॥३०५॥

सहित समाज तुम्हार हमारा । घर बन गुर प्रसाद रखवारा ॥
 मातु पिता गुर स्वामि निदेसू । सकल धरम धरनीधर सेसू ॥
 सो तुम्ह करहु करावहु मोह । तात तरनिकुल पालक होहू ॥
 साधक एक सकल सिधि देनी । कीरति सुगति भूतिमय बेनी ॥
 सो विचारि सहि संकटु भारी । करहु प्रजा परिवारु सुखारी ॥
 बाँटी विपति सबहिँ मोहि भाई । तुम्हहि अवधि भरि बड़ि कठिनाई ॥

पानि तुम्हहि मृदु कहउँ कठोरा । कुसमयँ तात न अनुचित मोरा ॥
 ओहिँ कुठायँ सुबंधु सहाए । ओड़िअहिँ हाथ असनिहु के घाए ॥

दो०—सेवक कर पद नयन से मुख सो साहिबु होइ ।
 तुलसी प्रीति कि रीति सुनि सुकवि सराहहि सोइ ॥ ३०६ ॥

सभा सकल सुनि रघुवर बानी । प्रेम पयोधि अमिअँ जनु सानी ।
 सिथिल समाज सनेह समाधी । देखि दसा चुप सारद साधी ।
 भरतहि भयउ परम संतोषू । सनमुख स्वामि विमुख दुख दोषू ।
 मुख प्रसन्न मन मिटा विपादू । भा जनु गूँगेहि गिरा प्रसादू ॥
 कीन्ह सप्रेम प्रनामु बहोरी । बोले पानि पंकरुह जोरी ।
 नाथ भयउ सुखु साथ गए को । लहेउँ लाहु जग जनमु भए को ।
 अब कृपाल जस आयसु होई । करौं सीस धरि सादर सोई ।
 सो अवलंब देव मोहि देई । अवधि पारु पावौं जेहि सेई ।

दो०—देव देव अभिषेक हित गुर अनुसासनु पाइ ।
 आनेउँ सब तीरथ सलिलु तेहि कहँ काह रजाइ ॥ ३०७ ॥

एकु मनोरथु बड़ मन माहीं । सभयँ सकोच जात कहि नाहीं ॥
 कहहु तात प्रभु आयसु पाई । बोले वानि सनेह सुहाई ॥
 चित्रकूट सुचि थल तीरथ बन । खग मृग सर सरि निर्झर गिरिगन ॥
 प्रभु पद अंकित अवनि विसेपी । आयसु होइ त आवौं देखी ।
 अवसि अत्रि आयसु सिर धरहू । तात विगतभय कानन चरहू ।
 मुनि प्रसाद बनु मंगल दाता । पावन परम सुहावन भ्राता ।
 रिपिनायकु जहँ आयसु देहीं । राखेहु तीरथ जलु थल तेहीं ।
 सनि प्रभु वचन भरत सुखु पावा । मुनिपद कमल मृदित सिरुन ॥

दो०—भरत राम संवादु सुनि सकल सुमंगल मूल ।

सुर स्वारथी सराहि कुल वरषत सुरतरु फूल । ३०८॥

धन्य भरत जय राम गोसाईं । कहत देव हरपत धरिआईं ॥

मुनि मिथिलेस सभाँ सब काह । भरत बचन सुनि भयउ उछाह ॥

भरत राम गुन ग्राम सनेह । पुलकि प्रसंसत राउ विदेह ॥

सेवक स्वामि सुभाउ मुहावन । नेमु पेम अति पावन पावन ॥

मति अनुसार सराहन लागे । सचिव सभासद सब अनुरागे ॥

मुनि मुनि राम भरत संवाद । दुहु समाज हियँ हरपु विपाद ॥

राम मातु दुखु सुखु सम जानी । कहि गुन राम प्रबोधीं रानी ॥

एक कहहिं रघुवीर वड़ाई । एक सराहत भरत भलाई ॥

दो०—अत्रि कहेउ तव भरत सन सैल समीप सुकूप ।

राखिअ तीरथ तोष तहँ पावन अमिअ अनूप ॥ ३०९॥

भरत अत्रि अनुशासन पाई । जल भाजन सब दिए चलाई ॥

सानुज आपु अत्रि मुनि साधू । सहित गए जहँ कूप अगाधू ॥

पावन पाथ पुन्यथल राखा । प्रमुदित प्रेम अत्रि अस भाषा ॥

तात अनादि सिद्ध थल एहू । लोपेउ काल विदित नहिं केहू ॥

तय सेवकन्ह सरस धलु देखा । कीन्ह सुजल हित कूप विसेषा ॥

विधिवस भयउ विस्त्र उपकारु । सुगम अगम अति धरम विचारु ॥

भरतकूप अब कहिहहिं लोगा । अति पावन तीरथ जल जोगा ॥

प्रेम सनेम निमज्जत प्राणी । होइहहिं विमल करम मन बानी ॥

दो०—कहत कूप महिमा सकल गए जहँ ।

अत्रि सुनायउ रघुवरहि तीरथ पुन्यं

नि तुम्हहि मृदु कहउँ कठोरा । कुसमयँ तात न अनुचित मोरा ॥
हिं कुठायँ सुबंधु सहाए । ओड़िअहिं हाथ असनिहु के घाए ॥

दो०—सेवक कर पद नयन से मुख सो साहिवु होइ ।
तुलसी प्रीति कि रीति सुनि सुकवि सराहहि सोइ ॥३०६॥

सभा सकल सुनि रघुवर बानी । प्रेम पयोधि अमिअँ जनु सानी ॥
सिथिल समाज सनेह समाधी । देखि दसा चुप सारद साथी ॥
भरतहि भयउ परम संतोषू । सनमुख स्वामि विमुख दुख दोषू ॥
मुख प्रसन्न मन मिटा विपादू । भा जनु गूँगेहि गिरा प्रसादू ॥
कीन्ह सप्रेम प्रनामु बहोरी । बोले पानि पंकरुह जोरी ॥
नाथ भयउ सुखु साथ गए को । लहेउँ लाहु जग जनसु भए को ॥
अब कृपाल जस आयसु होई । करौं सीस धरि सादर सोई ॥
सो अवलंब देव मोहि देई । अवधि पारु पावौं जेहि सेई ॥

दो०—देव देव अभिषेक हित गुर अनुसासनु पाइ ।
आनेउँ सब तीरथ सलिलु तेहि कहँ काह रजाइ ॥३०७॥

एकु मनोरथु बड़ मन माहीं । सभयँ सकोच जात कहि नहिं ॥
कहहु तात प्रभु आयसु पाई । बोले वानि सनेह सुहा ॥
चित्रकूट सुचि थल तीरथ बन । खग मृग सर सरि निर्झर गिनि ॥
प्रभु पद अंकित अवनि बिसेपी । आयसु होइ त आवौं दे ॥
अवसि अत्रि आयसु सिर धरहू । तात विगतभय कानन च ॥
मुनि प्रसाद वनु मंगल दाता । पावन परम सुहावन ॥
रिपिनायकु जहँ आयसु देहीं । राखेहु तीरथ जलु थल ॥
एनि पत्र वचन भरत सुखु पावा । मुनिपद कमल मुदित ॥

दो०—भरत राम संवादु सुनि सकल सुमंगल मूल ।

सुर स्वारथी सराहि कुल वरपत सुरतरु फूल । ३०८॥

धन्य भरत जय राम गोसाईं । कहत देव हरपत वरिआईं ॥

मुनि मिथिलेस मभाँ सब काह । भरत वचन सुनि भयउ उछाह ॥

भरत राम गुन ग्राम सनेह । पुलकि प्रमंसन राउ विदेह ॥

सेवक स्वामि मुभाउ मुहावन । नेमु पंमु अति पावन पावन ॥

मति अनुसार सराहन लागे । सचिव सभासद सब अनुरागे ॥

मुनि मुनि राम भरत संवादु । दुहु समाज हियँ हरपु विपादु ॥

राम मातु दुखु सुखु सम जानी । कहि गुन राम प्रयोधीं रानी ॥

एक कहहिं रघुवीर बड़ाई । एक सराहत भरत भलाई ॥

दो०—अत्रि कहेउ तव भरत सन सैल समीप सुकूप ।

राखिअ तीरथ तोय तहें पावन अमिअ अनूप ॥ ३०९॥

भरत अत्रि अनुभासन पाई । जल भाजन सब दिए चलाई ॥

सानुज आपु अत्रि मुनि साधू । सहित गए जहँ कूप अगाधू ॥

पावन पाथ पुन्यथल राखा । प्रमुदित प्रेम अत्रि अस भापा ॥

तात अनादि सिद्ध थल एह । लोपेउ काल विदित नहिं केह ॥

तव सेवकन्ह सरस थलु देखा । कीन्ह सुजल हित कूप विसेपा ॥

विधि वस भयउ विस्त्र उपकारु । सुगम अगम अति धरम विचारु ॥

भरतकूप अब कहिहहिं लोगा । अति पावन तीरथ जल जोगा ॥

प्रेम सनेम निमज्जत प्राणी । होइहहिं विमल करम मन वानी ॥

दो०—कहत कूप महिमा सकल गए जहाँ रघुराउ ।

अत्रि सुनायउ रघुवरहि तीरथ पुन्य । प्रभाउ ॥ ३१०॥

कहत धरम इतिहास सप्रीती । भयउ भोरु निसि सो सुख वीती ॥
 नित्य निवाहि भरत दोउ भाई । राम अत्रि गुर आयसु पाई ॥
 सहित समाज साज सब सादें । चले राम वन अटन पयादें ॥
 क्रोमल चरन चलत त्रिनु पनहीं । भइ मृदु भूमि सकुचि मन मनहीं ॥
 कुस कंटक काँकरी कुराई । कटुक कठोर कुवस्तु दुराई ॥
 महि संजुल मृदु मारग कीन्हे । बहत समीर त्रिविध सुख लीन्हे ॥
 सुमन वरपि सुर धन करि छाहीं । विटप फूलि फलि तन मृदुताहीं ॥
 मृग विलोकि खग बोलि सुवानी । सेवहिँ सकल राम प्रिय जानी ॥
 दो०—सुलभ सिद्धि सब प्राकृतहु राम कहत जमुहात ।

राम प्रानप्रिय भरत कहँ यह न होइ बडि बात ॥३११॥

एहि विधि भरतु फिरत वन माहीं । नेमु प्रेमु लखि मुनि सकुचाहीं
 पुन्य जलाश्रय भूमि विभागा । खग मृग तरु तन गिरि वन वागा
 चारु विचित्र पवित्र विसेपी । वृद्धत भरतु दिव्य सब देखी ॥
 मुनि मन मुदित कहत रिपिराऊ । हेतु नाम गुन पुन्य प्रभाऊ ॥
 कतहुँ निमज्जन कतहुँ प्रनामा । कतहुँ विलोकत मन अभिरामा ॥
 कतहुँ बैठि मुनि आयसु पाई । सुमिरत सीय सहित दोउ भाई ॥
 देखि सुभाउ सनेहु गुसेवा । देहिँ असीस मुदित वनदेवा ॥
 फिरहिँ गएँ दिनु पहर अढ़ाई । प्रभु पद कमल विलोकहिँ आई ॥

दो०—देखे थल तीरथ सकल भरत पाँच दिन माझ ।

कहत सुनत हरि हर मुजसु गयउ दिवसु भइ साँझ ॥३१२॥

भोर न्हाइ सबु जुरा समाजू । भरत भूमिसुर तेरहुति राजू ॥
 थल दिन आज्ञ जानि मन माहीं । रामु कृपाल कहत सकुचाहीं ॥

गुर नृप भरत सभा अवलोकी । सकुचि राम फिरि अवनि विलोकी
 सील सराहि सभा मव सांची । कहँ न राम सम स्वामि सँकोची ॥
 भरत सुजान राम रुख देखी । उठि सप्रेम धरि धीर विसेपी ॥
 करि दंडवत कहत कर जोरी । राखीं नाथ सकल रुचि मोरी ॥
 मोहिलगि सहेउ सबहिं संतापू । बहुत भाँति दुग्नु पाया आपू ॥
 अब गोसाईं मोहि देउ रजाई । सेवां अवध अवधि भरि जाई ॥
 दो०—जेहि उपाय पुनि पाय जनु देखे दीनदयाल ।

सो सिख देख्य अवधि लगी कोसलपाल कृपाल ॥३१३॥

पुरजन परिजन प्रजा गोसाइ । सब मुचि सरस सनेहँ सगाई ॥
 राउर बदि भल भव दुख दाह । प्रभु विनु वादि परम पद लाह ॥
 स्वामि सुजानु जानि सबही की । रुचि लालसा रहनि जन जी की ॥
 प्रनतपालु पालिहि सब कह । देउ दुहू दिसि ओर निवाह ॥
 अस मोहि सब विधिभूरि भरोसो । किएँ विचारु न सोचु खरो सो ॥
 आरति मोर नाथ कर छोह । दुहुँ मिलि कीन्ह ढीठु हठि मोह ॥
 यह बड़ दोष दूरि करि म्यामी । तजि सकोच सिखइअ अनुगामी ॥
 भरत विनय सुनि सबहिं प्रसंसी । खीर नीर विचरन गति हंसी ॥
 दो०—दीनबंधु सुनि बंधु के बचन दीन छलहीन ।

देस काल अवसर सरिस बोलें रामु प्रवीन ॥३१४॥

तात तुम्हारि मोरि परिजन की । चिंता गुरहि नृपहि घर बन की ॥
 माथे पर गुर मुनि मिथिलेस । हमहि तुम्हहि सपनेहुँ न कलेस ॥
 मोर तुम्हार परम पुरुषारथु । म्यारथु गुजसु धरसु परमारथु ॥
 पितु आयसु पालिहिं दुहु भाई । लोक वेद भल भूप भलाई ॥

गुर पितु मातु स्वामि सिख पालें । चलेहुँ कुमग पग परहिं न खालें ॥
 अस विचारि सब सोच बिहाई । पालहु अवध अवधि भरि जाई ॥
 देसु कोसु परिजन परिवारु । गुर पद रजहिं लाग छरु भारु ॥
 तुम्ह मुनि मातु सचिव सिख मानी । पालेहु पुहुमि प्रजा रजधानी ॥

दो०—मुखिआ मुखु सो चाहिए खान पान कहूँ एक ।

पालइ पोपइ सकल अँग तुलसी सहित विवेक ॥३१५॥

राजधरम सरबसु एतनोई । जिमि मन माहँ मनोरथ गोई ॥
 बंधु प्रबोधु कीन्ह बहु भाँती । बिनु अधार मन तोषु न साँती ॥
 भरत सील गुर सचिव समाजू । सकुच सनेह विवस रघुराजू ॥
 प्रभु करि कृपा पाँवरीं दीन्हीं । सादर भरत सीस धरि लीन्हीं ॥
 चरनपीठ करुनानिधान के । जनु जुग जामिक प्रजा प्रान के ॥
 संपुट भरत सनेह रतन के । आखर जुग जनु जीव जतन के ॥
 कुल कपाट कर कुसल करम के । विमल नयन सेवा सुधरम के ॥
 भरत मुदित अबलंब लहे तें । अस सुख जस सिय रामु रहे तें ॥

दो०—मागेउ विदा प्रनामु करि राम लिए उर लाइ ।

लोग उचाटे अमरपति कुटिल कुअवसरु पाइ ॥३१६॥

सो कुचालि सब कहँ भइ नीकी । अवधि आस सम जीवन जी की ॥
 नतरु लखन सिय राम वियोगा । हहरि मरत सब लोग कुरोगा ॥
 रामकृपाँ अवरैव सुधारी । विबुध धारि भइ गुनद गोहारी ॥
 भेंटत भुज भरि भाइ भरत सो । राम प्रेमु रसु कहि न परत सो ॥
 तन मन वचन उमग अनुरागा । धीर धुरंधर धीरजु त्यागा ॥
 वारिज लोचन मोचत वारी । देखि दसा सुर सभा दुखारी ॥

मुनिगन गुर धुर धीर जनक से । ग्यान अनल मन कसें कनक से ॥
जे विरंचि निरलेप उपाए । पदुम पत्र जिमि जग जल जाए ॥

दो०—तेउ विलोकि रघुवर भरत प्रीति अनूप अपार ।

भए मगन मन तन वचन सहित विराग विचार ॥३१७॥

जहाँ जनक गुर गति मति भोरी । प्राकृत प्रीति कहत वडि खोरी ॥
घरनत रघुवर भरत वियोगू । मुनि कठोर कवि जानिहि लागू ॥
सौ सकोच रसु अकथ सुचानी । समउ सनेहु मुमिरि मकुचानी ॥
भेंटि भरतु रघुवर समुझाए । पुनि रिपुदवनु हरपि द्वियँ लाए ॥
सेवक सचिव भरत रुख पाई । निज निज काज लगे सब जाई ॥
मुनि दारुन दुखु दुहँ समाजा । लगे चलन के माजन साजा ॥
प्रभु पद पदुम वंदि दोउ भाई । चले मीस धरि राम रजाई ॥
मुनि तापस वनदेव निहोरी । मत्र सनमानि बहोरि बहोरी ॥

दो०—लखनहि भेंटि प्रनामु करि सिर धरि सिय पद धूरि ।

चले सप्रेम असीस मुनि सकल सुमगल मूरि ॥३१८॥

सानुज राम नृपहि सिर नाई । कीन्हि बहुत विधि विनय बढाई ॥
देव दया बस बड़ दुखु पायउ । सहित समाज काननहिं आयउ ॥
पुर पगु धारिअ टेंइ असीसा । कीन्ह धीर धरि गवनु महीसा ॥
मुनि महिदेव साधु सनमाने । विदा किए हरि हर सम जाने ॥
सासु समीप गए दोउ भाई । फिरे वंदि पग आसिप पाई ॥
कौमिक वामदेव जावाली । पुरजन परिजन सचिव सुचाली ॥
जथा जोगु करि विनय प्रनामा । विदा किए सब सानुज रामा ॥
नारि पुरुष लघु मध्य बड़ेरे । सब सनमानि कृपानिधि फेरे ॥

भरत मातु पद बंदि प्रभु सुचि सनेहँ मिलि भेंटि ।
 विदा कीन्ह सजि पालकी सकुच सोच सब भेंटि ॥३१॥

रिजन मातु पितहि मिलि सीता । फिरी प्रानप्रिय प्रेम पुनीता ॥
 करि प्रनामु भेंटौं सब साम् । प्रीति कहत कवि हियँ न हुलाम् ॥
 सुनि सिख अभिमत आसिप पाई । रही सीय दुहु प्रीति समाई ॥
 रघुपति पट्ट पालकीं मगाई । करि प्रबोधु सब मातु चढ़ाई ॥
 बार बार हिलि मिलि दुहु भाई । सम सनेहँ जननीं पहुँचाई ॥
 साजि बाजि गज वाहन नाना । भरत भूप दल कीन्ह पयाना ॥
 हृदयँ रामु मिय लखन समेता । चले जाहिँ सब लोग अचेता ॥
 वसह बाजि गज पसु हियँ हारें । चले जाहिँ परवस मन मारें ॥

दो०—गुर गुरनिय पद बंदि प्रभु सीता लखन समेत ।
 फिरे हरप विसमय सहित आए परन निकेत ॥३२०॥

विदा कीन्ह सनमानि निपाडू । चलेउ हृदयँ बड़ विरह विपाडू ।
 क्रोल किरात भिल्ल वनचारी । फेरे फिरे जोहारि जोहारी ।
 प्रभु सिय लखन वैठि बट छाहीं । प्रिय परिजन वियोग विलखाहीं ।
 भरत सनेह सुभाउ सुबानी । प्रिया अनुज सन कहत बखानी ।
 प्रीति प्रतीति वचन मन करनी । श्रीमुख राम प्रेम बस वरनी ।
 तेहि अवसर खग मृग जल मीना । चित्रकूट चर अचर मली ।
 विबुध त्रिलोकि दसा रघुवर की । वरपि सुमन कहि गति घर ।
 प्रभु प्रनामु करि दीन्ह भरोसो । चले मुदित मन डर न खरो ।
 दो०—सानुज सीय समेत प्रभु राजत परन कुटीर ।
 भगति न्यानु वैराग्य जनु सोहत धरें तरीर ।

मुनि महिसुर गुर भरत शुआलू । राम बिरहँ सबु साजु विहालू ॥
 प्रभु गुन ग्राम गनत मन माहों । सब चुप चाप चले मग जाहीं ॥
 जमुना उतरि पार सबु भयऊ । सो वासरु बिनु भोजन गयऊ ॥
 उतरि देवसरि दूसर बास । रामसखाँ सब कीन्ह सुपास ॥
 सई उतरि गोमती नहाए । चौथें दिवस अवधपुर आए ॥
 जनकु रहे पुर वासर चारी । राज काज सब साज सँभारी ॥
 साँपि सचिव गुर भरतहि राजू । तैरहुति चले साजि सबु साजू ॥
 नगर नारि नर गुर सिख मानी । वसे सुखेन राम रजधानी ॥

दो०—राम दरस लागि लोग सब करत नेम उपवास ।

तजि तजि भूपन भोग सुख जियत अथपि कीँ आस ॥३२२॥

सचिव सुसेवक भरत प्रबोधे । निज निज काज पाइ सिख ओधे ॥
 पुनि सिख दीन्हि बोलि लघु भाई । साँपी सकल मातु सेवकाई ॥
 भूसुर बोलि भरत कर जोरे । करि प्रनाम बय विनय निहोरे ॥
 ऊँच नीच कारजु भल पोचू । आयसु देव न करव सँकोचू ॥
 परिजन पुरजन प्रजा बोलाए । समाधानु करि सुवस बसाए ॥
 सानुज गे गुर गेहँ बहोरी । करि दंडवत कहत कर जोरी ॥
 आयसु होइ त रहों सनेमा । बोले मुनि तन पुलक सपेमा ॥
 समुझव कहव करव तुम्ह जोई । धरम सारु जग होइहि सोई ॥

दो०—मुनि सिख पाइ असीस बढ़ि । गनक बोलि दिनु साधि ।

सिधासन प्रभु पादुका . वैठारे निरुपाधि ॥३२३॥

राम मातु गुर पद सिरु नाई । प्रभु पद पीठ रजायसु पाई ॥
 नंदिगावँ करि परनकुटीरा । कीन्ह निवासु धरम धुर धीरा ॥

जटाजूट सिर मुनिपट धारी । महि खनि कुस साँथरी सँवारी ॥
 असन बसन वासन व्रत नेमा । करत कठिन रिपिधरम सप्रेमा ॥
 भूपन बसन भोग सुख भूरी । मन तन वचन तजे तिन तूरी ॥
 अवध राजु सुर राजु सिहाई । दसरथ धनु सुनि धनदु लजाई ॥
 तेहिं पुर बसत भरत विनुरागा । चंचरीक जिमि चंपक वागा ॥
 रमा विलासु राम अनुरागी । तजत वमन जिमिजन बड़भागी ॥

दो०—राम पेम भाजन भरतु बड़े न एहिं करतूति ।

चातक हंस सराहिअत टेक विवेक विभूति ॥३२४॥

देह दिनहुँ दिन दूवरि होई । घटइ तेजु बलु मुखछवि सोई ॥
 नित नव राम प्रेम पनु पीना । बढ़त धरम दलु मनु न मलीना ॥
 जिमिजलु निघटत सरद प्रकासे । बिलसत वेतस बनज विकासे ॥
 सम दम संजम नियम उपासा । नखत भरत हिय विमल अकासा ॥
 ध्रुव विस्वासु अवधि राका सी । स्वामि सुरति सुरवीधि विकासी ॥
 राम पेम विधु अचल अदोपा । सहित समाज सोह नित चोखा ॥
 भरत रहनि समुझनि करतूती । भगति विरति गुन विमल विभूती ॥
 वरनत सकल सुकवि सकुचाहीं । सेस गनेस गिरा गमु नाहीं ॥

दो०—नित पूजत प्रमु पाँवरी प्रीति न हृदयँ समाति ।

मागि मागि आयसु करत राज काज बहु भाँति ॥३२५॥

पुलक गात हियँ सिय रघुवीरु । जीह नामु जप लोचन नीरु ॥
 लखन राम सिय कानन बसहीं । भरतु भवन बसि तप तनु कसहीं ॥
 दोउ दिसि समुझि कहत सबु लोगू । सब विधि भरत सराहन जोगू ॥
 सुनि व्रत नेम साधु सकुचाहीं । देखि दसा मुनिराज लजाहीं ॥

परम पुनीत भरत आचरन्। मधुर मंजु मुद मंगल करन्॥
हरन कठिन कलिकल्प कलेस्र। महामोह निसि दलन दिनेस्र॥
पाप पुंज कुंजर मृगराजू। समन सकल संताप समाजू॥
जन जन भंजन भव भारू। राम सनेह सुधाकर सारू॥

छं०—सिय राम प्रेम पियूप पूरन होत जनमु न भरत को ।

मुनि मनअगम जमनियमसमदमविपमप्रत आचरत को॥

दुख दाह दारिद दंभ दूपन सुजस मिस अपहरत को ।

कलिकाल तुलसी से सठन्हि हठि राम सनमुख करत को ॥

सौ०—भरत चरित करि नेमु तुलसी जो सार सुनहिं ।

सीय राम पद पेमु अवसि होइ भव रस विरति ॥३२६॥

मासपारायण, इक्कीसवाँ विश्राम

इति श्रीमद्रामचरितमानसे सकलकलिकल्पविध्वंसने

द्वितीयः सोपानः समाप्तः ।

(अयोध्याकाण्ड समाप्त)

सुतीक्ष्णजी रामके ध्यानमें



अतिसय प्रीति देखि रघुवीरा ।
प्रगटे हृदयँ हरन भव भीरा ॥

श्रीगणेशाय नमः

श्रीजानकीवल्लभो विजयते

श्रीरामचरितमानस

तृतीय सोपान

(अरण्यकाण्ड)

श्लोक

मूलं धर्मतरोर्विवेकजलधेः पूर्णेन्दुमानन्ददं
वैराग्याम्युजभास्करं ह्यघघनघ्वान्तापहं तापहम् ।
मोहाम्भोधरपूगपाटनविधौ स्वःसम्भवं शङ्करं
वन्दे ब्रह्मकुलं कलङ्कशमनं श्रीरामभूप्रियम् ॥ १ ॥
सान्द्रानन्दपयोदसौभगतनुं पीताम्बरं सुन्दरं
पाणौ वाणशरासनं कटिलसत्तूणीरभारं वरम् ।
राजीत्रायतलोचनं धृतजटाजूटेन संशोभितं
सीतालक्ष्मणसंयुतं पथिगतं रामाभिरामं भजे ॥ २ ॥

श्लो०—उमा राम गुन गूढ पंडित मुनि पावहि विरति ।

पावहि मोह विमूढ जे हरि विमुख न धर्म रति ॥

नर भरत प्रीति में गाई । मति अनुरूप अनूप सुहाई ॥
अब प्रभु चरित सुनहु अति पावन । करत जेवन सुर नर मुनि भावन

सुतीक्ष्णजी रामके ध्यानमें



अतिसय प्रीति देखि रघुवीरा ।
प्रगटे हृदयँ हरन भव भीरा ॥

श्रीगणेशाय नमः

श्रीजानकीबहुभो विजयते

श्रीरामचरितमानस

तृतीय सोपान

(अरण्यकाण्ड)

श्लोक

मूलं धर्मतरोर्विवेकजलधेः पूर्णेन्दुमानन्ददं
वैराग्याम्बुजभास्करं ह्यघघनध्वान्तापहं तापहम् ।
मोहाम्भोधरपूगपाटनविधौ स्वःसम्भवं शङ्करं
वन्दे ब्रह्मकुलं कलङ्कशमनं श्रीराममूपप्रियम् ॥ १ ॥
सान्द्रानन्दपयोदसौभगतनुं पीताम्बरं सुन्दरं
पाणौ घ्राणशरासनं कटिलसत्तूपीरभारं वरम् ।
राजीवापतलोचनं धृतजटाजूटेन संशोभितं
सीतालक्ष्मणसंयुतं पथिगतं रामाभिरामं भजे ॥ २ ॥

सो०—उमा राम गुन गूढ पंडित मुनि पात्रहि विरति ।

पात्रहि मोह विमूढ जे हरि विमुख न धर्म रति ॥

नर भरत प्रीति में गाई । मति अनुरूप अनूप मुहाई ॥

अन प्रभु चरित सुनहु अति पावन । करत जेवन सुर नर शुनि

बार चुनि कुसुम सुहाए। निज कर भूपन राम बनाए॥
 ताहि पहिराए प्रभु सादर। बैठे फटिक सिला पर सुंदर॥
 पुरपति सुत धरि बायस बेपा। सठ चाहत रघुपति बल देखा॥
 जिमि पिपीलिका सागर थाहा। महा मंदमति पावन चाहा॥
 सीता चरन चोंच हति भागा। मूढ़ मंदमति कारन कागा॥
 चला रुधिर रघुनायक जाना। सीक धनुष सायक संधाना॥

दो०—अति कृपाल रघुनायक सदा दीन पर नेह।
 ता सन आइ कीन्ह छलु मूरख अवगुन गेह ॥

प्रेरित मंत्र ब्रह्मसर धावा। चला भाजि बायस भय पावा॥
 धरि निज रूप गयउ पितु पाहीं। राम विमुख राखा तेहि नाहीं॥
 भा निरास उपजी मन त्रासा। जथा चक्र भय रिषि दुर्वासा॥
 ब्रह्मधाम सिवपुर सब लोका। फिरा श्रमित ब्याकुल भय सोका॥
 काहूँ बैठन कहा न ओही। राखि को सकइ राम कर द्रोही॥
 मातु मृत्यु पितु समन समाना। सुधा होइ बिपसुनु हरिजाना॥
 मित्र करइ सत रिपु कै करनी। ता कहूँ बिबुधनदी वैतरनी॥
 सब जगु ताहि अनलहु ते ताता। जो रघुवीर विमुख सुनु भ्रा॥
 नारद देखा विकल जयंता। लागि दया कोमल चित्त स॥
 पठवा तुरत राम पहिं ताही। कहेसि पुकारि प्रनत हित॥
 आतुर सभय गहेसि पद जाई। त्राहि त्राहि दयाल र॥
 अतुलित बल अतुलित प्रभुताई। मै मतिमंद जानि नहि॥
 निज कृत कर्म जनित फल पायउँ। अब प्रभु पाहि सरन त॥
 सुनि कृपाल अति आरत बानी। एरु नयन करि तजा॥

सो०—कीन्ह मोह बस द्रोह जद्यपि तेहि कर बध उचित ।

प्रभु छाड़ेउ करि छोह को कृपाल खुवीर सम ॥ २ ॥

रघुपति चित्रकूट वसि नाना । चरित किए श्रुति सुधासमाना ॥
बहुरि राम अस मन अनुमाना । होइहि भीरसवहिं मोहि जाना ॥
सकल मुनिन्ह सन विदा कराई । सीता सहित चले द्वौ भाई ॥
अत्रि के आश्रम जब प्रभु गयऊ । सुनत महामुनि हरपित भयऊ ॥
पुलकित गात अत्रि उठि धाए । देखि राम आतुर चलि आए ॥
करत दंडवत मुनि उर लाए । प्रेम वारि द्वौ जन अन्हवाए ॥
देखि राम छावि नयन जुड़ाने । सादर निज आश्रम तय आने ॥
करि पूजा कहि बचन सुहाए । दिए मूल फल प्रभु मन भाए ॥

सो०—प्रभु आसन आसीन भरि लोचन सोभा निरखि ।

मुनिघर परम प्रवीन जोरि पानि अस्तुति करत ॥ ३ ॥

छं०—नमामि भक्त धत्सलं । कृपालु शील कोमलं ॥

भजामि ते पदांबुजं । अकामिना स्वधामदं ॥

निकाम श्याम सुंदरं । भवाम्बुनाथ मंदरं ॥

प्रफुल्ल कंज लोचनं । मदादि दोष मोचनं ॥

प्रलंब बाहु विक्रमं । प्रभोऽप्रमेय वैभवं ॥

निपंग चाप सायकं । धरं त्रिलोक नायकं ॥

दिनेश वंश मंडनं । महेश चाप खंडनं ॥

मुनींद्र संत रंजनं । सुरारि वृंद भंजनं ॥

मनोज वैरि वंदितं । अजादि देव सेवितं ॥

विशुद्ध बोध चिप्रहं । समस्त

* रामचरितमानस *

मामि इंदिरा पति । सुखाकरं सतां गति ॥
 जे सशक्ति सानुज । शची पति प्रियानुज ॥
 त्वदंघ्रि मूल ये नराः । भजंति हीन मत्सराः ॥
 पतंति नो भवार्णवे । वितर्क वीचि संकुले ।
 विविक्त वासिनः सदा । भजंति मुक्तये मुदा ॥
 निरस्य इन्द्रियादिकं । प्रयांति ते गति स्वकं ॥

तमेकमद्भुतं प्रभुं । निरीहमीश्वरं विभुं ॥
 जगद्गुरुं च शाश्वतं । तुरीयमेव केवलं ॥
 भजामि भाव बल्लभं । कुयोगिनां सुदुर्लभं ।
 स्वभक्त कल्प पादपं । समं सुसेव्यमन्वहं ॥
 अनूप रूप भूपति । नतोऽहमुर्विजा पति ॥
 प्रसीद मे नमामि ते । पदाब्ज भक्ति देहि मे ॥
 पठंति ये स्तवं इदं । नरादरेण ते पदं ॥
 ब्रजंति नात्र संशयं । त्वदीय भक्ति संयुताः ॥

दो०-बिनती करि मुनि नाइ सिरु कह कर जोरि बहोरि ।
 चरन संरोरुह नाथ जनि कबहुँ तजै मति मोरि ॥ ४ ॥
 अनुसुइया के पद गहि सीता । मिली बहोरि सुसील विनीता ।
 रिपिपतिनी मन सुख अधिकारि । आसिप देइ निकट बैठाई
 दिव्य बसन भूषन पहिराए । जे नित नूतन अमल सुहाए
 कह रिषिवधू सरस मृदु बानी । नारिधर्म कछु व्याज बखानि
 मातु पिता आता हितकारी । मितप्रद सब सुनु राजकुमार
 अमित दानि भर्ता बयदेही । अधम सो नारि जो सेव न ते
 धर्म मित्र अरु नारी । आपद काल परिखिअहि न

वृद्ध रोगवस जड़ धनहीना। अंध वधिर क्रोधी अति दीना ॥
 ऐसेहु पति कर किएँ अपमाना। नारि पाव जमपुर दुख नाना ॥
 एकद्व धर्म एक व्रत नेमा। कायँवचन मन पति पद प्रेमा ॥
 जग पतिव्रता चारि विधि अहर्ही। वेद पुरान संत सब कहर्ही ॥
 उत्तम के अस बस मन माहीं। सपनेहुँ आन पुरुष जग नाहीं ॥
 मध्यम परपति देखइ कैसैं। भ्राता पिता पुत्र निज जैसेँ ॥
 धर्म विचारि समुझि कुल रहई। सो निकिष्ट त्रिय श्रुति अस कहई
 बिनु अवसर भय तें रह जोई। जानेहु अथम नारि जग सोई ॥
 पति बंचक परपति रति करई। रौरव नरक कल्प सत परई ॥
 छन सुख लागि जनम सत कोटी। दुख न समुझ तेहि सम को खोटी
 बिनु श्रम नारि परम गति लहई। पतिव्रत धर्म छाड़ि छल गहई ॥
 पति प्रतिकूल जनम जहँ जाई। विधवा होइ पाइ तरुनाई ॥

सो०—संहज अपावनि नारि पति सेवत सुभ गति लहइ ।

जसु गावतं श्रुति चारि अजहुँ तुलसिका हरिहि प्रिय ॥५(क)॥

सुनु सीता तव नाम सुमिरि नारि पतिव्रत करहि ।

तोहि प्रानप्रिय राम कहिउँ कथा संसार हित ॥५(ख)॥

सुनि जानकीं परम सुखु पावा। सादर तासु चरन सिरु नावा ॥

तव मुनि सन कह कृपानिधाना। आयसु होइ जाउँ बन शाना ॥

संतत मो पर कृपा करेह। सेवक जानि तजेहु जनि नेह ॥

धर्म धुरंधर प्रभु कै बानी। सुनि तजेन बोले मुनि ग्य

जासु कृपा अज सिव सनकादी। चहत सकल परमारथ

ते तुम्ह राम अकाम पिबारे। दीन बंधु मृदु बचन

अब जानी मैं श्री चतुराई । भजी तुम्हहि सब देव विहाई ॥
 जेहि समान अतिसय नहिं कोई । ताकर सील कस न अस होई ॥
 केहि विधिकहाँ जाहु अब स्वामी । कहहु नाथ तुम्ह अंतरजामी ॥
 अस कहि प्रभु विलोकि मुनि धीरा । लोचन जल बह पुलक सरीरा ॥

छं०—तन पुलक निर्भर प्रेम पूरन नयन मुख पंकज दिए ।

मन ग्यान गुन गोतीत प्रभु मैं दीख जप तप का किए ॥

जप जोग धर्म समूह तें नर भगति अनुपम पावई ।

रघुवीर चरित पुनीत निसि दिन दास तुलसी गावई ॥

दो०—कलिमल समन दमन मन राम सुजस सुखमूल ।

सादर सुनहिं जे तिन्ह पर राम रहहिं अनुकूल ॥६(क)॥

सो०—कठिन काल मल कोस धर्म न ग्यान न जोग जप ।

परिहरि सकल भरोस रामहि भजहिं ते चतुर नर ॥६(ख)॥

मुनि पद कमल नाइ करि सीसा । चले वनहि सुर नर मुनि ईसा ॥

आगें राम अनुज पुनि पाछें । मुनि वर वेष वने अति काछें ॥

उभय बीच श्री सोहइ कैसी । ब्रह्म जीव विच माया जैसी ॥

सरिता वन गिरि अवघट घाटा । पति पहिचानि देहिं वर वाटा ॥

जहँ जहँ जाहिं देव रघुराया । करहिं मेघ तहँ तहँ नभ छाया ॥

मिला असुर विराध मग जाता । आवतहीं रघुवीर निपाता ॥

तुरतहिं रुचिर रूप तेहिं पावा । देखि दुरवी निज धाम पठावा ॥

पुनि आए जहँ मुनि सरभंगा । सुंदर अनुज जानकी संगी ॥

दो०—देखि राम मुख पंकज मुनिवर लोचन भुंग ।

सादर पान करत अति घन्य जन्म सरभंग ॥ ७ ॥

कह मुनि सुनु रघुवीर कृपाला। भंकर मानस राजनराला ॥
जात रहेउं विरंचि के धामा। मुनेउं श्रवन बन ऐहहि राना ॥
चितवत पंथ रहेउं दिन राती। अब प्रभु देखि लुङ्गली छाती ॥
नाथ सकल साधन में हीना। कीन्ही कृपा जानि बन दीना ॥
सो कछु देव न मोहि निहोरा। निज पन राखेउ बन नन चोरा ॥
तब लागि रहहु दीन हित लागी। अब लागि निजो तुम्हहि तनु त्यागी ॥
जोग जग्य जप तप व्रत कीन्हा। प्रभु कहँ देख भगति बर उन्हा ॥
एहि विधि सर रचि मुनि सरभंगा। बँडे हृदय छाडि नव मंगा ॥

दो०—सीता अनुज समेत प्रभु कील बद्रद ननु लखन ।

मम हियँ बसहु निरंतर सगुनरूप श्रीगण ॥ ८ ॥

अस कहि जोग अगिनितनु जारा। रान करौ बँट्ट सिधारा ॥
ताते मुनि हरि लीन न भयडा। प्रथमहि भेद भगति बर लयऊ ॥
रिपि निकाय मुनिवर गति देखी। मुनी भय निज हृदय विसेपी ॥
अस्तुति करहि सकल मुनि बृंदा। जयति प्रनत हित करुना कंदा ॥
पुनि रघुनाथ चले बन आगे। मुनिवर बृंद विपुल संग लागे ॥
असि समूह देखि खुराया। पूछी मुनिन्ह लागि अति दाया ॥
जानतहुँ पूछिय कस म्यामी। सुबदरसी तुम्ह अंतरजामी ॥
निसिचर निकर सकल मुनि खाण। मुनि रघुवीर नयन जल छाए ॥

दो०—निसिचर हीन करउँ यहि मुज उटाइ पन कीन्ह ।

सकल मुनिन्ह के आयमन्हि जाइ जाइ सुख दीन्ह ॥ ९ ॥

मुनि अगस्ति कर सिष्य मुजाना। नाम सुतीछन रति भगवाना ॥
मन क्रम बचन राम पद सेवक। सपनेहुँ आन भरोस न देवक ॥

* रामचरितमानस *

आगवनु श्रवन सुनि पावा । करत मनोरथ आतुर धावा ॥
 वेधि दीनबंधु रघुराया । सो से सठ पर करिहहिं दया ॥
 हेत अनुज मोहि राम गोसाईं । मिलिहहिं निज सेवक की नाई ॥
 रे जियँ भरोस दृढ़ नाहीं । भगति विरति न ग्यान मन माहीं ॥
 हिं सतसंग जोग जप जागा । नहिं दृढ़ चरन कमल अनुरागा ॥
 एक वानि करुनानिधान की । सो प्रिय जाकें गति न आन की ॥
 होइहैं सुफल आजु मम लोचन । देखि बदन पंकज भव मोचन ॥
 निर्भर प्रेम मगन मुनि ग्यानी । कहि न जाइ सो दसा भवानी ॥
 दिसि अरु विदिसि पंथ नहिं सूझा । को मैं चलेउँ कहाँ नहिं वूझा ॥
 कवहुँक फिरि पाछें पुनि जाई । कवहुँक नृत्य करइ गुन गाई ॥
 प्रेम भगति मुनि पाई । प्रभु देखै तरु ओट लुकाई ॥
 प्रीति देखि रघुवीरा । प्रगटे हृदयँ हरन भव भीरा ॥
 मग माझ अचल होइ वैसा । पुलक सरीर पनस फल जैसा ॥
 तब रघुनाथ निकट चलि आए । देखि दसानिज जन मन भाए ॥
 मुनिहि राम बहु भाँति जगावा । जाग न ध्यान जनित सुख पाव ॥
 भूप रूप तब राम दुरावा । हृदयँ चतुर्भुज रूप देखाव ॥
 मुनि अकुलाइ उठा तब कैसैं । विकल हीन मनि फनिबर ॥
 आगें देखि राम तन स्यामा । सीता अनुज सहित सुख ध ॥
 परेउलकुटइ चरनन्हि लागी । प्रेम मगन मुनिवर बड ॥
 भुज विसाल गहि लिए उठाई । परम प्रीति राखे उर ॥
 मुनिहि मिलत अस सोह कृपाला । कनक तरुहि जनु भेंट ॥
 निरुक्त मुनि ठाढ़ा । मानहुँ चित्र माझ लि ॥

दो०—तव मुनि हृदयें धीर धरि गहि पद बारहि बार ।

निज आश्रम प्रभु आनि करि पूजा विविध प्रकार ॥ १० ॥

कह मुनि प्रभु सुनु बिनती मोरी । अस्तुति करौं कवन विधि तोरी ॥
 महिमा अमित मोरि मति थोरी । रवि सन्मुख खद्योत अँजोरी ॥
 श्याम तामरस दाम शरीरं । जटा मुकुट परिधन मुनिचीरं ॥
 पाणि चाप शर कटि तूणीरं । नौमि निरंतर श्रीरघुवीरं ॥
 मोह विपिन घन दहन कृशानुः । संत सरोरुह कानन भानुः ॥
 निशिचर करि वरूथ मृगराजः । त्रातु सदा नो भव खग वाजः ॥
 अरुण नयन राजीव सुवेशं । सीता नयन चकोर निशेशं ॥
 हर हृदि मानस बाल मरालं । नौमि राम उर बाहु विशालं ॥
 संशय सर्प ग्रसन उरगादः । शमन सुकूर्केश तर्क विपादः ॥
 भव भंजन रंजन सुर यूथः । त्रातु सदा नो कृपा वरूथः ॥
 निर्गुण सगुण विषम सम रूपं । ज्ञान गिरा गोतीतमनूपं ॥
 अमलमखिलमनवद्यमपारं । नौमि राम भंजन महि भारं ॥
 भक्त कल्पपादय आरामः । तर्जन क्रोध लोभ मद कामः ॥
 अति नागर भव सागर सेतुः । त्रातु सदा दिनकर कुल केतुः ॥
 अतुलित भुज प्रतापबल धामः । कलि मल विपुल विभंजन नामः ॥
 धर्म वर्म नर्मद गुण ग्रामः । संतत शं तनोतु मम रामः ॥
 जदपि विरज व्यापक अविनासी । सब के हृदयें निरंतर बासी ॥
 तदपि अनुज श्री सहित खरारी । बसतु मनसि मम काननचारी ॥
 जे जानहिं ते जानहुँ स्वामी । सगुन अगुन उर अंतरजामी ॥
 जो कोसल पति राजिव नयना । करउ सो राम हृदय मम अ-

अभिमान जाइ जनि भोरे । मैं सेवक रघुपति पति मोरे ॥
 मुनि वचन राम मन भाए । बहुरि हरपि मुनिवर उर लाए ॥
 प्रसन्न जानु मुनि मोही । जो बर मागहु देउँ सो तोही ॥
 ने कह मैं बर कबहुँ न जाचा । समुझिन परइ झूठ का साचा ॥
 न्हहि नीक लागै रघुराई । सो मोहि देहु दास सुखदाई ॥
 विरल भगति विरति विग्याना । होहु सकल गुन ग्यान निधाना ॥
 प्रभु जो दीन्ह सो वरु मैं पावा । अब सो देहु मोहि जो भावा ॥

दो०—अनुज जानकी सहित प्रभु चाप वान धर राम ।
 मम हिय गगन इंदु इव वसहु सदा निहकाम ॥ ११ ॥

एवमस्तु करि रमानिवासा । हरपि चले कुंभज रिपि पास ॥
 दिवस गुर दरसनु पाएँ । भए मोहि एहिं आश्रम आएँ ॥
 प्रभु संग जाउँ गुर पाहीं । तुम्ह कहँ नाथ निहोरा नाहीं ॥
 देखि कृपानिधि मुनि चतुराई । लिए संग बिहसे द्रौ भाई ॥
 पंथ कहत निज भगति अनूपा । मुनि आश्रम पहुँचे सुरभूपा ॥
 तुरत सुतीछन गुर पहिँ गयऊ । करि दंडवत कहत अस भयऊ ॥
 नाथ कोसलाधीस कुमारा । आए मिलन जगत आधारा ॥
 राम अनुज समेत वैदेही । निसि दिनु देव जपत हहु जेही ॥
 सुनत अगस्ति तुरत उठि धाए । हरि विलोकि लोचन जल छाए ॥
 मुनि पद कमल परे द्रौ भाई । रिपि अति प्रीति लिए उर लाई ॥
 सादर कुसल पूछि मुनिग्यानी । आसन बर बैठारे आनी ॥
 पुनि करि बहु प्रकार प्रभु पूजा । मोहि सम भाग्यवंत नहिँ दूजा ॥
 जहँ लगि रहे अपर मुनि वृंदा । हरपे सब विलोकि सुखकंदा ॥

दो०—मुनि समूह महँ बैठे सन्मुख सब की ओर ।

सरद इंदु तन वितवत मानहुँ निकर चकोर ॥ १२ ॥

तव रघुवीर कहा मुनि पाहीं । तुम्ह सन प्रभु दुराव कछु नाहीं ॥
 तुम्ह जानहु जेहि कारन आयउँ । ताते तात न कहि समुझायउँ ॥
 अग्र सो मंत्र देहु प्रभु मोही । जेहि प्रकार मारौं मुनिद्रोही ॥
 मुनि मुसुकाने सुनि प्रभु बानी । पूछेहु नाथ मोहि का जानी ॥
 तुम्हरेहँ भजन प्रभाव अघारी । जानउँ महिमा कछुक तुम्हारी ॥
 ऊमरि तरु विसाल तव माया । फल ब्रह्मांड अनेक निकाया ॥
 जीव चराचर जंतु समाना । भीतर बसहिं न जानहिं आना ॥
 ते फल भच्छक कठिन कराला । तव भयँ डरत सदा सोउ काला ॥
 ते तुम्ह सकल लोकपति साई । पूछेहु मोहि मनुज की नाई ॥
 यह वर मागउँ कृपानिकेता । बसहु हृदयँ श्री अनुज समेता ॥
 अघिरल भगति बिरति सतसंगा । चरन सरोरुह प्रीति अभंगा ॥
 जद्यपि ब्रह्म अखंड अनंता । अनुभव गम्य भजहिं जेहि संता ॥
 अस तव रूप धखानउँ जानउँ । फिरि फिरि सगुन ब्रह्म रति मानउँ
 संतत दासन्ह देहु बड़ाई । तातें मोहि पूछेहु रघुराई ॥
 हे प्रभु परम मनोहर ठाऊँ । पावन पंचवटी तेहि नाऊँ ॥
 दंडक वन पुनीत प्रभु करहु । उग्र साप मुनिवर कर हरहु ॥
 चास करहु तहँ रघुकुल राया । कीजे सकल मुनिन्ह पर दाया ॥
 चले राम मुनि आयसु पाई । तुरतहिं पंचवटी निअराई ॥

दो०—जीधराज सैं भेंट भइ बहु विधि प्रीति बदा ।

गोदावरी निकट प्रभु रहे मन्व यह छँ

जब ते राम कीन्ह तहँ वासा । सुखी भए मुनि बीती त्रासा ॥
 गिरि वन नदीं ताल छवि छाए । दिन दिन प्रति अति होहिं सुहाए ॥
 खग मृग वृंद अनंदित रहहीं । मधुप मधुर गुंजत छवि लहहीं ॥
 सो वन वरनि न सक अहिराजा । जहाँ प्रगट रघुबीर विराजा ॥
 एक वार प्रभु सुख आसीना । लछिमन वचन कहे छलहीना ॥
 सुर नर मुनि सचराचर साईं । मैं पूछउँ निज प्रभु की नाईं ॥
 मोहि समुझाइ कहहु सोइ देवा । सब तजि करौं चरन रज सेवा ॥
 कहहु ग्यान विराग अरु माया । कहहु सो भगति करहु जेहिं दायः
 दो०—ईस्वर जीव भेद प्रभु सकल कहौं समुझाइ ।

जातें होइ चरन रति सोक मोह भ्रम जाइ ॥ १४ ॥

थोरेहि महँ सब कहउँ बुझाई । सुनहु तात मति मन चित लाई ॥
 मैं अरु मोर तोर तैं माया । जेहिं वस कीन्हे जीव निकाया ॥
 गो गोचर जहँ लगि मन जाई । सो सब माया जानेहु भाई ॥
 तेहि कर भेद सुनहु तुम्ह सोऊ । विद्या अपर अविद्या दोऊ ॥
 एक दुष्ट अतिसय दुखरूपा । जा वस जीव परा भवकूपा ॥
 एक रचइ जग गुन वस जाकें । प्रभु प्रेरित नहिं निज बल ताकें ॥
 ग्यान मान जहँ एकउ नाहीं । देख ब्रह्म समान सब माहीं ॥
 कहिय तात सो परम विरागी । तून सम सिद्धि तीनि गुन त्यागी ॥
 दो०—माया ईस न आपु कहूँ जान कहिय सो जीव ।

बंध मोच्छ प्रद सर्वपर माया प्रेरक सीव ॥ १५ ॥

धर्म तें विरति जोग तें ग्याना । ग्यान मोच्छप्रद वेद बखाना ॥
 जातें वेगि द्रवउँ मैं भाई । सो मम भगति भगत सुखदाई ॥

सो सुतंत्र अवलंब न आना । तेहि आधीन ग्यान विग्याना ॥
 भगति तात अनुपम सुखमूला । मिलइ जो संत होई अनुकूला ॥
 भगति कि साधन कहउँ बखानी । सुगम पंथ मोहि पावहिं प्रानी ॥
 प्रथमहिं विप्र चरन अति प्रीती । निज निज कर्म निरत श्रुति रीती ॥
 एहि कर फल पुनि विषय विरागा । तब मम धर्म उपज अनुरागा ॥
 श्रवनादिक नव भक्ति दृढ़ाहीं । मम लीला रति अति मन माहीं ॥
 संत चरन पंकज अति प्रेमा । मन क्रम वचन भजन दृढ़ नेमा ॥
 गुरु पितृ मातु बंधु पति देवा । सब मोहि कहँ जानै दृढ़ सेवा ॥
 मम गुन गावत पुलक सरीरा । गदगद गिरा नयन बह नीरा ॥
 काम आदि मद दंभ न जाकें । तात निरंतर बस मैं ताकें ॥

दो०-बचन कर्म मन मोरि गति भजनु करहिं निःकाम ।

तिन्ह के हृदय कमल महुँ करउँ सदा विश्राम ॥ १६ ॥

भगति जोग मुनि अति सुख पावा । लडिमन प्रभु चरनन्हि सिरु नावा
 एहि विधि गए कष्टुक दिन बीती । कहत विराग ग्यान गुन नीती ॥
 सपनखा रावन कै बहिनी । दुष्ट हृदय दारुन जस अहिनी ॥
 पंचवटी सो गइ एक वारा । देखि विकल भइ जुगल कुमारा ॥
 भ्राता पिता पुत्र उरगारी । पुरुष मनोहर निरखत नारी ॥
 होइ विकल सक मनहि न रोकी । जिमि रविमनि द्रव रविहि बिलोकी
 रुचिर रूप धरि प्रभु पहिं जाई । बोली बचन बहुत सुसुकाई ॥
 तुम्ह सम पुरुष न मो सम नारी । यह संजोग विधि रचा विचारी ॥
 मम अनुरूप पुरुष जग माहीं । देखेउँ खोजि लोक विहु
 तातें अब लगि रहिउँ कुमारी । मनु माना कछु

सीतहि चितइ कही प्रभु बाता । अहइ कुआर मोर लघु आता ॥
 गइ लछिमन रिपु भगिनी जानी । प्रभु बिलोकि बोले मृदु बानी ॥
 सुंदरि सुनु मै उन्ह कर दासा । पराधीन नहिं तोर सुपासा ॥
 प्रभु समर्थ कोसलपुर राजा । जो कछु करहिं उनहि सब छाजा ॥
 सेवक सुख चह मान भिखारी । व्यसनी धन सुभ गति विभिचारी ॥
 लोभी जसु चह चार गुमानी । नभ दुहि दूध चहत ए प्रानी ॥
 पुनि फिरि राम निकट सो आई । प्रभु लछिमन पहिं बहुरि पठाई ॥
 लछिमन कहा तोहि सो बरई । जो तृन तोरि लाज परिहरई ॥
 तत्र खिसिआनि राम पहिं गई । रूप भयंकर प्रगटत भई ॥
 सीतहि सभय देखि रघुराई । कहा अनुज सन सयन बुझाई ॥

दो०—लछिमन अति लाघवँ सो नाक कान विनु कीन्हि ।

ताके कर रावन कहँ मनौ चुनौती दीन्हि ॥ १७ ॥

नाक कान विनु भइ विकरारा । जनु सब सैल गेरु कै धारा ॥
 खर दूषन पहिं गइ बिलपाता । धिग धिग तव पौरुष बल आता ॥
 तेहिं पूछा सब कहेसि बुझाई । जातुधान सुनि सेन बनाई ॥
 धाए निसिचर निकर बरूथा । जनु सपच्छ कजल गिरिजूथा ॥
 नाना वाहन नानाकारा । नानायुध धर घोर अपारा ॥
 स्रपनखा आगें करि लीनी । असुभ रूप श्रुति नासा हीनी ॥
 असगुन अमित होहिं भयकारी । गनहिं न मृत्यु बिबस सब झारी ॥
 गर्जहिं तर्जहिं गगन उड़ाहीं । देखि कटकु भट अति हरपाहीं ॥
 कोउ कह जिअत धरहु द्रौ भाई । धरि मारहु तिय लेहु छड़ाई ॥
 धूरि पूरि नभ मंडल रहा । राम बोलाइ अनुज सन कहा ॥

लै जानकिहि जाहु गिरि कंदर । आवां निसिचर कटक भयंकर ॥
 रहेहु सजग सुनि प्रभु कै वानी । चले सहित श्री सर धनु पानी ॥
 देखि राम रिपुदल चलि आवा । विहसि कठिन कोदंड चढ़ावा ॥

छं०—कोदंड कठिन चढ़ाइ सिर जट जूट बाँधत सोह ज्यो ।
 मरकत सयल पर लरत दामिनि कोटि सौं जुग मुजग ज्यो ॥
 कटि कसि निपंग विसाल मुज गहि चाप विसिख सुधारि कै ।
 चितवत मनहुँ मृगराज प्रभु गजराज घटा निहारि कै ॥

सो०—आइ गए धगमेल धरहु धरहु धावत सुभट ।
 जथा विलोकि अकेल बाल रबिहि घेरत दनुज ॥ १८ ॥

प्रभु विलोकि सर सकहिं न डारी । थकित भई रजनीचर धारी ॥
 सचिव बोलि बोले खर दूपन । यह कोउ नृपबालक नर भूपन ॥
 नाग असुर सुर नर मुनि जेते । देखे जिते हते हम कैते ॥
 हम भरि जन्म सुनहु सब भाई । देखी नहिं असि सुंदरताई ॥
 जद्यपि भगिनी कीन्हि कुरुपा । बध लायक नहिं पुरुष अनूपा ॥
 देहु तुरत निज नारि दुराई । जीअत भवन जाहु द्वौ भाई ॥
 मोर कहा तुम्ह ताहि सुनावहु । तासु वचन सुनि आतुर आवहु ॥
 दूतन्ह कहा राम सन जाई । सुनत राम बोले मुसुकाई ॥
 हम छत्री मृगया बन करहीं । तुम्ह से खल मृग खोजत फिरहीं ॥
 रिपु बलवंत देखि नहिं डरहीं । एक वार कालहु सन लरहीं ॥
 जद्यपि मनुज दनुज कुल धालक । मुनि पालक खल सालक बालक
 ज्यों न होइ बल धर फिरि जाह । समर विमुख मैं हतउं न काह ॥
 रन चढ़ि करिअ कपट चतुराई । रिपु पर

दूतन्ह जाइ तुरत सव कहेऊ। सुनि खर दूयन उर अति दहेऊ ॥

छं०—उर दहेउ कहेउ कि घरहु घाए बिकट भट रजनीचरा ।
सर चाप तोमर सक्ति सूल कृपान परिघ परसु घरा ॥
प्रभु कीन्हि घनुष टकोर प्रथम कठोर घोर भयावहा ।
भए बधिर व्याकुल जातुधान न ग्यान तेहि अवसर रहा ॥

दो०—सावधान होइ घाए जानि सबल आराति ।
लागे बरषन राम पर अस्त्र सस्त्र बहु भाँति ॥१९(क)॥
तिन्ह के आयुध तिल सम करि काटे रघुबीर ।
तानि सरासन श्रवन लागि पुनि छाँड़े निज तीर ॥१९(ख)॥

छं०—तव चले बान कराल । फुंकरत जनु बहु ब्याल ॥
कोपेउ समर श्रीराम । चले विसिख निसित निकाम ॥
अवलोकि खरतर तीर । मुरि चले निसिचर बीर ॥
भए क्रुद्ध तीनिउ भाइ । जो भागि रन ते जाइ ॥
तेहि बधव हम निज पानि । फिरे मरन मन महुँ ठानि ॥
आयुध अनेक प्रकार । सनमुख ते करहि प्रहार ॥
रिपु परम कोपे जानि । प्रभु घनुष सर संघानि ॥
छाँड़े विपुल नाराच । लगे कटन बिकट पिसाच ॥
उर सीस भुज कर चरन । जहँ तहँ लगे महि परन ॥
चिक्करत लागत बान । धर परत कुघर समान ॥
भट कटत तन सत खंड । पुनि उठत करि पाषंड ॥
नभ उड़त बहु भुज मुंड । विनु मौलि धावत रुंड ॥
खग कंक काक सकाल । कटकटहि कठिन कराल ॥

छं०—कटकटहि जंबुक भूत प्रेत पिशाच खर्पर संचही ।
 बेताल घोर कपाल ताल बजाइ जोगिनि नंचही ॥
 रघुवीर बान प्रचंड खंडहि भटन्ह के उर भुज सिरा ।
 जहँ तहँ परहि उठि लरहि घर घरु घरु करहि भयकर गिरा ॥
 अंतावरी गहि उड़त गीघ पिशाच कर गहि धावही ।
 संग्राम पुर यासी मनहुँ बहु बाल गुड़ी उड़ावही ॥
 मारे पछारे उर बिदारे विपुल भट कहँरत परे ।
 अबलोकि निज दल बिकल भट तिसिरादि खर दूपन फिरे ॥
 सर सक्ति तोमर परमु सूल कृपान एकहि बारही ।
 करि कोप श्रीरघुवीर पर अगनित निसाचर डारही ॥
 प्रभु निमिष महुँ रिपु सर नियारि पचारि डारे सायका ।
 दस दस बिसिल उर माझ मारे सकल निसिचर नायका ॥
 महि परत उठि भट भिरत मरत न करत माया अति घनी ।
 सुर डरत चौदह सहस प्रेत बिलोकि एक अबघ घनी ॥
 सुर मुनि सभय प्रभु देखि मायानाथ अति कौतुक करथो ।
 देखहि परसपर राम करि संग्राम रिपुदल लरि मरथो ॥

दो०—राम राम कहि तनु तजहि पावहि पद निर्बान ।
 करि उपाय रिपु मारे छन महुँ कृपानिधान ॥२०(क)॥
 हरपित बरपहि सुमन सुर बाजहि गगन निसान ।
 अस्तुति करि करि सब चले सोभित त्रिविध विमान ॥२०(ख)॥
 जब रघुनाथ समर रिपु जीते । सुर नर मुनि सब के भय वीते ॥
 तब लछिमन सीतहि लै आए । प्रभु पद परत हरिपि ।
 सीता चितव स्याम मृदु गाता । परम प्रेम लोचन ।

घटीं बसि श्रीरघुनायक। करत चरित सुर मुनि सुखदायक।
 ाँ देखि खरदूपन केरा। जाइ सुपनवाँ रावन प्रेरा ॥
 ली बचन क्रोध करि भारी। देस कोस कै सुरति बिसारी ॥
 रसि पान सोवसि दिनु राती। सुधि नहिं तव सिर पर आराती ॥
 राज नीति विनु धन विनु धर्मा। हरिहि समर्थे विनु सतकर्म ॥
 विद्या विनु विवेक उपजाएँ। श्रम फल पढ़ें किएँ अरु पाएँ ॥
 संग तें जती कुमंत्र ते राजा। मान ते ग्यान पान तें लाजा ॥
 प्रीति प्रनय विनु मद ते गुनी। नासहिं बेगि नीति अस सुनी ॥

सो०—रिपु रुज पावक पाप प्रभु अहि गनिअ न छोट करि ।
 अस कहि विविध विलाप करि लागी रोदन करन ॥२१(क)

दो०—सभा माझ परि व्याकुल बहु प्रकार कह रोइ ।
 तोहि जिअत दसकंधर मोरि कि असि गति होइ ॥२१(ख)॥
 सुनत सभासद उठे अकुलाई। समुझाई गहि बाँह उठाई ॥
 कह लंकेस कहसि निज बाता। केइँ तव नासा कान निपाता ।
 अवध नृपति दसरथ के जाए। पुरुष सिंघ वन खेलन आए
 समुझि परी मोहि उन्ह कै करनी। रहित निसाचर करिहि धरनी
 जिन्ह कर भुजबल पाइ दसानन। अभय भए बिचरत मुनि कान
 देखत बालक काल समाना। परम धीर धन्वी गुन नान
 अतुलित बल प्रताप द्वौ आता। खल बधरत सुर मुनि सुखद
 सोभा धाम राम अस नामा। तिन्ह के संग नारि एक स्य
 रूप रासि विधि नारि सँवारी। रति सत कोटि तासु बलि
 तासु अनुज काटे श्रुति नासा। सुनि तव भग्नि करहि प

खर दूपन सुनि लगे पुकारा । छन महँ सकल कटकउन्ह मारा ॥
खर दूपन तिसिरा कर घाता । सुनि दससीस जरे सब गाता ॥

दो०—सूपनखहि समुझाइ करि बल बोलेसि बहु भॉति ।

गयउ भवन अति सोचवस नीद परइ नहि राति ॥ २२ ॥

सुर नर असुर नाग खग माहीं । मोरे अनुचर कहँ कोउ नाहीं ॥
खर दूपन मोहि सम चलवंता । तिन्हहि को मारइ विनु भगवंता ॥
सुर रंजन भंजन महि भारा । जाँ भगवंत लीन्ह अवतारा ॥
तौ मैं जाइ वैरु हठि करऊँ । प्रभु सर प्रान तजें भय तरऊँ ॥
होइहि भजनु न तामस देहा । मन क्रम बचन मंत्र दृढ़ एहा ॥
जाँ नररूप भूपसुत कोऊ । हरिहउँ नारि जीति रन दोऊ ॥
चला अकेल जान चढ़ि तहवाँ । बस मारीच सिंधु तट जहवाँ ॥
इहाँ राम जसि जुगुति बनाई । सुनहु उमा सो कथा सुहाई ॥

दो०—लछिमन गए बनहिँ अब लेन मूल फल कंद ।

जनकसुता सन बोले विहसि कृपा सुख वृंद ॥ २३ ॥

सुनहु प्रिया व्रत रुचिर सुसीला । मैं कछु करबि ललित नरलीला ॥
तुम्ह पावक महँ करहु निवासा । जाँ लगि करौं निसाचर नासा ॥
जबहिँ राम सत्र कहा बखानी । प्रभुपद धरि हिँअनल समानी ॥
निज प्रतिविंब राखि तहँ सीता । तैसइ सील रूप सुविनीता ॥
लछिमनहुँ यह मरमु न जाना । जो कछु चरित रचा भगवाना ॥
दसमुख गयउ जहाँ मारीचा । नाइ माथ स्वारथ रत नीचा ॥
नवनि नीच कै अति दुखदाई । जिमि अंकुस धनु उरग बिलाई ॥
भयदायक खल कै प्रिय बानी । जिमि अकाल के कुसुम भवानी ॥

करि पूजा मारीच तब सादर पूछी बात ।

कवन हेतु मन व्यग्र अति अकसर आयहु तात ॥ २४ ॥

समुख सकल कथा तेहि आगें । कही सहित अभिमान अभागें ॥
 तेहु कपट मृग तुम्ह छलकारी । जेहि बिधि हरि आनों नृपनारी ॥
 तेहिं पुनि कहा सुनहु दससीसा । ते नररूप चराचर ईसा ॥
 तासों तात बयरु नहिं कीजै । मारें मरिअ जिआएँ जीजै ॥
 मुनि मख राखन गयउ कुमारा । विनु फर सर रघुपति मोहि मारा ॥
 सत जोजन आयउँ छन माहीं । तिन्ह सन बयरु किएँ भल नाहीं ॥
 भइ मम कीट भृंग की नाई । जहँ तहँ मैं देखउँ दोउ भाई ॥
 जौ नर तात तदपि अति सरा । तिन्हहि विरोधिन आइहि पूरा ॥

दो०—जेहिं ताड़का सुबाहु हति खंडेउ हर कोदंड ।
 खर दूषन तिसिरा बधेउ मनुज कि अस बरिबंड ॥ २५ ॥

जाहु भवन कुल कुसल बिचारी । सुनत जरा दीन्हिसि बहु गारी ॥
 गुरुजिमि मूढ़ करसि मम बोधा । कहु जग मोहि समान को जोधा ॥
 तब मारीच हृदयँ अनुमाना । नवहि विरोधें नहिं कल्याना ॥
 सखी मर्मा प्रभु सठ धनी । वैद बंदि कवि भानस गुनी ॥
 उभय भाँति देखा निज मरना । तब ताकिसि रघुनायक सरना ॥
 उतरु देत मोहि बधव अभागें । कस न मरौँ रघुपति सर लाव ॥
 अस जियँ जानि दसानन संगी । चला राम पद प्रेम अमर ॥
 मन अति हरष जनाव न तेही । आजु देखिहउँ परम सने ॥

छं०—निज परम प्रीतम देखि लोचन सुफल करि सुख पाइहौ ।
 श्री महित अनुज समेत कृपा

निर्घान दायक क्रोध जा कर भगति अवसहि बसकरी ।

निज पानि सर संधानि सो मोहि बधिहि सुख सागर हरी ॥

दो०—मम पाछे घर घावत घरे सरासन वान ।

फिरि फिरि प्रभुहि बिलोकिहउँ धन्य न मो सम आन ॥ २६ ॥

तेहि वन निकट दसानन गयऊ । तब मारीच कपट मृग भयऊ ॥
 अति विचित्र कछु वरनि न जाई । कनक देह मनि रचित वनाई ॥
 सीता परम रुचिर मृग देखा । अंग अंग सुमनोहर बेया ॥
 सुनहु देव रघुवीर कृपाला । एहि मृग कर अति सुंदर छाला ॥
 सत्यसंध प्रभु बधि करि एही । आनहु चर्म कहति पैदेही ॥
 तब रघुपति जानत सब कारन । उठे हरपि सुर काजु सँवारन ॥
 मृग बिलोकि कटि परिकर घाँधा । करतल चाप रुचिर सर साँधा ॥
 प्रभु लछिमनहि कहा समुझाई । फिरत विपिन निसिचर बहु भाई ॥
 सीता केरि करेहु रखवारी । युधि विवेकबल समप विचारी ॥
 प्रभुहि बिलोकि चला मृग भाजी । धाए रामु सरासन साजी ॥
 निगमनेति सिव ध्यान न पावा । माया मृग पाछे सो धावा ॥
 कवहुँ निकट पुनि दूरि पराई । कवहुँक प्रगटइ कवहुँ छपाई ॥
 प्रगटत दुरत करत छल भूरी । एहि विधि प्रभुहि गयउ लँदूरी ॥
 तब तकि राम कठिन सर मारा । धरनि परेउ करि धोर दूरी ॥
 लछिमन कर प्रथमहि लै नामा । पाछे सुमिरेसि मन नदूरी ॥
 प्रान तजत प्रगटेसि निज देहा । सुमिरेसि रामु लँदूरी ॥
 अंतर प्रेम तासु पहिचाना । मुनि दुर्लभ

दो०—विपुल सुमन सुर वर्षहिं गावहिं अमु गुन गाथ ।

निज पद दीन्ह असुर कहँ दीनवंधु रघुनाथ ॥ २७ ॥

खल बधि तुरत फिरे रघुबीरा । सोह चाप कर कटि तूनीरा ।

आरत गिरा सुनी जब सीता । कह लछिमन सन परम समीता ॥

जाहु बेगि संकट अति भ्राता । लछिमन विहसि कहा सुनु माता

भृकुटि विलास सृष्टि लय होई । सपनेहुँ संकट परइ कि सोई ॥

मरम बचन जब सीता बोला । हरि प्रेरित लछिमन मन डोला ॥

बन दिसि देव सौँपि सब काहू । चले जहाँ रावन ससि राहू ॥

सून बीच दसकंधर देखा । आवा निकट जती कें वेषा ॥

जाकें डर सुर असुर डेराहीं । निसि न नीद दिन अन्न न खहीं ॥

सो दससीस खान की नाई । इत उत चितइ चला भडिहाई ॥

इमि कुपंथ पग देत खगेसा । रह न तेज तन बुधि बल लेसा ॥

नाना विधि करि कथा सुहाई । राजनीति भय प्रीति देखाई ॥

कह सीता सुनु जती गोसाई । बोलेहु वचन दुष्ट की नाई ॥

तब रावन निज रूप देखावा । भई सभय जब नाम सुनावा ॥

कह सीता धरि धीरजु गाढ़ा । आइ गयउ प्रभु रहु खल ठाढ़ा ॥

जिमि हरिवधुहि छुद्र सस चाहा । भएसि कालवस निसिचर नाहा

सुनत बचन दससीस रिसाना । मन महुँ चरन बंदि सुख माना ॥

दो०—क्रोधवंत तब रावन लीन्हिसि रथ बैठाइ ।

चला गगनपथ आतुर भयँ रथ हाँकि न जाइ ॥ २८ ॥

हा जग एक वीर रघुराया । केहि अपराध बिसारेहु दाया ॥

आरति हरन सरन सुखदायक । हा रघुकूल सरोज दिननायक ॥

हा लछिमन तुम्हारे नहिं दोसा । सो फलु पायउँ कीन्हेउँ रोसा ॥
 विविध विलाप करति वंदेही । भूरि कृपा प्रभु दूरि सनेही ॥
 विपति मोरि को प्रभुहि सुनावा । पुरोडास चह रासभ खावा ॥
 सीता के विलाप सुनि भारी । भए चराचर जीव दुखारी ॥
 गीधराज सुनि आरत घानी । रघुकुलतिलक नारि पहिचानी ॥
 अधम निसाचर लीन्हें जाई । जिमि मलेछ वस कपिला गाई ॥
 सीते पुत्रि करसि जनि त्रासा । करिहउँ जातुधान कर नासा ॥
 धारा क्रोधवत खग कैसें । छूटइ पवि परवत कहूँ जैसें ॥
 रे रे दुष्ट ठाढ़ किन होही । निर्भयचलेसिन जानेहि मोही ॥
 आवत देखि कृतांत समाना । फिरि दसकंधर कर अनुमाना ॥
 की मैनाक कि खगपति होई । मम बल जान सहित पति सोई ॥
 जाना जरठ जटायू एहा । मम कर तीरथ छाँड़िहि देहा ॥
 सुनत गीध क्रोधातुर धावा । कह सुनु रावन मोर सिखावा ॥
 तजि जानकिहि कुसल गृह जाहू । नाहिं न अस होइहि बहुबाहू ॥
 राम रोष पावक अति घोरा । होइहि सकल सलभ कुल तोरा ॥
 उतरु न देत दसानन जोधा । तवहिं गीध धावा करि क्रोधा ॥
 धरि कच विरथ कीन्ह महि गिरा । सीतहि राखि गीध पुनि फिरा ॥
 चोचन्ह मारि विदारेसि देही । दंड एक भइ मुरुछा तेही ॥
 तव सक्रोध निसिचर खिसिआना । काढ़ेसि परम कराल कृपाना ॥
 काटेसि पंख परा खग धरनी । सुमिरि राम करि अदभुत करनी ॥
 सीतहि जान चढ़ाइ बहोरी । चला उताइल त्रास न थोरी ॥
 करति विलाप जाति नभ सीता । व्याध विवस जनु मृगी सभित् ॥

गिरि पर बैठे कपिन्ह निहारी । कहि हरि नाम दीन्ह पट डारी ॥
एहि विधि सीतहि सो लै गयऊ । वन असोक महँ राखत भयऊ ॥

दो०—हारि परा खल बहु विधि भय अरु प्रीति देखाइ ।

तव असोक पादप तर राखिसि जतन कराइ ॥२९(क)॥

नवाह्नपारायण, छठा विश्राम

जेहि विधि कपट कुरंग सँग घाइ चले श्रीराम ।

सो छवि सीता राखि उर रटति रहति हरिनाम ॥२९(ख)॥

रघुपति अनुजहि आवत देखी । वाहिज चिंता कीन्हि विसेपी ॥
जनकसुता परिहरिहु अकेली । आयहु तात वचन मम पेली ॥
निसिचर निकर फिरहिँ वन माहीं । मम मन सीता आश्रम नाहीं ॥
गहि पद कमल अनुज कर जोरी । कहेउ नाथ कछु मोहि न खोरी ॥
अनुज समेत गए प्रभु तहवाँ । गोदावरि तट आश्रम जहवाँ ॥
आश्रम देखि जानकी हीना । भए विकल जस प्राकृत दीना ॥
हा गुन खानि जानकी सीता । रूप सील व्रत नेम पुनीता ॥
लछिमन समुझाए बहु भाँती । पूछत चले लता तरु पाँती ॥
हे खग मृग हे मधुकर श्रेणी । तुम्ह देखी सीता मृगनैनी ॥
खंजन सुक कपोत मृग मीना । मधुप निकर कोकिला प्रवीना ॥
कुंद कली दाडिम दामिनी । कमल सरद ससि अहिभामिनी ॥
वरुन पास मनोज धनु हंसा । गज केहरि निज सुनत प्रसंसा ॥
श्रीफल कनक कदलि हरषाहीं । नेकु न संक सकुच मन माहीं ॥
सुनु जानकी तोहि विनु आजू । हरषे सकल पाइ जनु राजू ॥

किमि सहि जात अनख तोहि पाहीं । प्रिया बेगि प्रगटसि कम नाहीं
एहि विधि खोजत बिलपत स्वामी । मनहुँ महा विरही अति कामी ॥
पूरनकाम राम सुख रासी । मनुजचरित कर अज अविनासी ॥
आगें परा गीधपति देखा । सुमिरत राम चरन जिन्ह रेखा ॥

दो०—कर सरोज सिर परसेउ कृपासिंधु रघुवीर ।

निरखि राम छवि घाम मुख विगत भई सब पीर ॥ ३० ॥

तब कह गीध बचन धरि धीरा । सुनहु राम भंजन भव भीरा ॥
नाथ दसानन यह गति कीन्ही । तेहिं खल जनकसुता हरि लीन्ही
लै दच्छिन दिसि गयउ गोसाई । बिलपति अति कुररी की नाई ॥
दरस लागि प्रभु राखेउँ प्राणा । चलन चहत अब कृपानिधाना ॥
राम कहा तनु राखहु ताता । मुख मुसुकाइ कही तेहिं वाता ॥
जा कर नाम मरत मुख आवा । अधमउ मुकुत होइ श्रुति गावा ॥
सो मम लोचन गोचर आगें । राखीं देह नाथ केहि खाँगें ॥
जल भरि नयन कहहिं रघुराई । तात कर्म निज तें गति पाई ॥
परहित बस जिन्ह के मन माहों । तिन्ह कहूँ जग दुर्लभ कछु नाहीं ॥
तनु तजि तात जाहु ममधामा । देउँ काह तुम्ह पूरनकामा ॥

दो०—सीता हरन तात जनि कहहु पिता सन जाइ ।

जौं मैं राम त कुल सहित कहिहि दसानन आइ ॥ ३१ ॥

गीध देह तजि धरि हरि रूपा । भूपन बहु पट पीत अनूपा ॥
स्याम गात विसाल भुज चारी । अस्तुति करत नयन भरि वारी

छं०—जय राम रूप अनूप निर्गुन सगुन गुन प्रेरक सही ।

दससीस षाहु प्रचंड खंडन चंड सर मंडन मही ॥

पायोद गात संरोज मुख राजीव जायत लोचन ।
 नित नौमि राम कृपाल बाहु विसाल भव भय मोचन ॥ १ ॥
 बलमप्रमेयमनादिमजमव्यक्तमेकमगोचरं
 गोविंद गोपर द्वंद्वहर विग्यानघन घरनीघरं ॥
 जे राम मंत्र जपंत संत अनंत जन मन रंजनं ।
 नित नौमि राम अकाम प्रिय कामादि खल दल गंजनं ॥ २ ॥
 जेहि श्रुति निरंजन ब्रह्म व्यापक बिरज अज कहि गावहीं ।
 करि ध्यान ग्यान विराग जोग अनेक मुनि जेहि पावहीं ॥
 सो प्रगट करुना कंद सोभा बृंद अग जग मोहई ।
 मम हृदय पंकज भृंग अंग अनंग बहु छवि सोहई ॥ ३ ॥
 जो अगम सुगम सुभाव निर्मल असम सम सीतल सदा ।
 पस्यंति जं जोगी जतन करि करत मन गो बस सदा ॥
 सो राम रमा निवास संतत दास बस त्रिभुवन घनी ।
 मम उर बसउ सो समन संसृति जासु कीरति पावनी ॥ ४ ॥

दो०—अविरल भगति मागि बर गीघ गयउ हरिधाम ।
 तेहि की क्रिया जथोचित निज कर कीन्ही राम ॥ ३२ ॥
 कोमल चित अति दीनदयाला । कारन विनु रघुनाथ कृपाला ॥
 गीघ अधम खग आमिष भोगी । गति दीन्ही जो जाचत जोगी ॥
 सुनहु उमा ते लोग अभागी । हरितजि होहिं विषय अनुरागी ॥
 पुनि सीतहि खोजत द्रौ भाई । चले विलोकत बन बहुताई ॥
 संकुल लता विटप घन कानन । बहु खग मृग तहँ गज पंचानन ॥
 आवत पंथ कबंध निपाता । तेहिं सब कही साप कै बात ॥

दुरवासा मोहि दीन्ही सापा। प्रभु पद पेखि मिटा सो पापा ॥
सुनु गंधर्व कह्यँ मैं तोही। मोहि न सोहाइ ब्रह्मकुल द्रोही ॥

दो०—मन क्रम बचन कपट तजि जो कर मूसुर सेव ।

मोहि समेत विरंचि सिव बस ताके सब देव ॥ ३३ ॥

सापत ताइत परुष कहंता। विप्र पूज्य अस गावहि संता ॥
पूजिअ विप्र सील गुन हीना। सुद्र न गुन गन ग्यान प्रवीना ॥
कहि निज धर्म ताहि समुझावा। निज पद प्रीति देखि मन भावा ॥
रघुपति चरन कमल सिरु नाई। गयउ गगन आपनि गति पाई ॥
ताहि देइ गति राम उदारा। सचरी के आश्रम पशु धारा ॥
सचरी देखि राम गृहँ आए। मुनि के बचन समुझि जियँ भाए ॥
सरसिज लोचन बाहु विसाला। जटा मुकुट सिर उर धनमाला ॥
स्याम गौर सुंदर दोउ भाई। सचरी परी चरन लपटाई ॥
प्रेम मगन मुख बचन न आवा। पुनि पुनि पद सरोज सिर नावा ॥
सादरं जल लै चरन पखारे। पुनि सुंदर आसन बैठारे ॥

दो०—कंद मूल फल सुरस अति दिए राम कहँ आनि ।

प्रेम सहित प्रभु खाए बारंवार बखानि ॥ ३४ ॥

पानि जोरि आगें भइ ठाढ़ी। प्रभुहि विलोकि प्रीति अति चाढ़ी ॥
केहि विधि अस्तुति करौं तुम्हारी। अधम जाति मैं जइ मति भारी ॥
अधम ते अधम अधम अति नारी। तिन्ह महुँ मैं मतिमंद अघारी ॥
कह रघुपति सुनु भामिनि वाता। मानउँ एक भगति कर नाता ॥
जाति पाँति कुल धर्म बढ़ाई। धन बल परिजन गुन चतुराई ॥
भगति हीन नर सोहइ कैसा। बिनु जल वारिद देखिअ जैसा ॥

नवधा भगति कहउँ तोहि पाहीं । सावधान सुनु धरु मन माहीं ॥
प्रथम भगति संतन्ह कर संगी । दूसरि रति मम कथा प्रसंगी ॥

दो०—गुर पद पंकज सेवा तीसरि भगति अमान ।

चौथि भगति मम गुन गन करइ कपट तजि गान ॥ ३५ ॥

मंत्र जाप मम दृढ़ बिखासा । पंचम भजन सो वेद प्रकासा ॥
छठ दम सील विरति बहु करमा । निरत निरंतर सज्जन धरमा ॥
सातवँ सम मोहि मय जग देखा । मोतें संत अधिक करि लेखा ॥
आठवँ जथालाभ संतोषा । सपनेहुँ नहि देखइ पर दोषा ॥
नवम सरल सब सन छलहीना । मम भरोस हियँ हरष न दीना ॥
नव महुँ एकउ जिन्ह कें होई । नारि पुरुष सचराचर कोई ॥
सोइ अतिसय प्रिय भामिनि मोरें । सकल प्रकार भगति दृढ़ तोरें ॥
जोगि वृंद दुरलभ गति जोई । तो कहूँ आजु सुलभ भइ सोई ॥
मम दरसन फल परम अनूपा । जीव पाव निज सहज सरूपा ॥
जनकसुता कइ सुधि भामिनी । जानहि कहु करिवरगामिनी ॥
पंया सरहि जाहु रघुराई । तहँ होइहि सुग्रीव मितारै ॥
सो सब कहिहि देव रघुबीरा । जानतहुँ पूछहु मतिधीरा ॥
वार वार प्रभु पद सिरु नाई । प्रेम सहित सब कथा सुनाई ॥

छं०—कहि कथा सकल विलोकि हरि मुख हृदयें पद पंकज घरे ।

तजि जोग पावक देह हरि पद लीन भइ जहँ नहि फिरे ॥

नर विविध कर्म अधर्म बहु मत सोकप्रद सब त्यागहू ।

विस्वास करि कह दास तुलसी राम पद अनुरागहू ॥

दो०—जाति हीन अध जन्म महि भुक्त कीन्हि असि नारि ।

महामंद मन सुख चहसि ऐसे प्रभुहि बिसारि ॥ ३६ ॥

चले राम त्यागा बन सोऊ। अतुलित बल नर केहरि दोऊ ॥

विरही इव प्रभु करत विपादा। कहत कथा अनेक संवादा ॥

लछिमन देखु विपिन कइ सोभा। देखत केहि कर मन नहि छोभा ॥

नारि सहित सब खग मृग वृंदा। मानहुँ मोरि करत हहि निंदा ॥

हमहि देखि मृग निकर पराहीं। मृगी कहहि तुम्ह कहँ भय नाही ॥

तुम्ह आनंद करहु मृग जाए। कंचन मृग खोजन ए आए ॥

संग लाइ करिनीं करि लेहीं। मानहुँ मोहि सिखावनु देहीं ॥

सास्र सुचिंतित पुनि पुनि देखिअ। भूप सुसेवित बस नहि लेखिअ

राखिअ नारि जदपि उर माहीं। जुपती सास्र नृपति बस नाही ॥

देखहु तात यसंत सुहावा। प्रिया हीन मोहि भय उपजावा ॥

दो०—विरह विकल बलहीन मोहि जानेसि निपट अकेल ।

सहित विपिन मधुकर खग मदन कीन्ह बगमेल ॥ ३७(क) ॥

देखि गयउ प्राता सहित तांसु दूत सुनि यात ।

डेरा कीन्हेउ मनहुँ तब कटकु हटकि मनजात ॥ ३७(ख) ॥

विटप बिसाल लता अरुझानी। विविध बितान दिए जनु तानी ॥

कदलि ताल वर घुजापताका। देखि न मोह धीर मन जाका ॥

विविध भाँति फूले तरु नाना। जनु चानैत बने बहु घाना ॥

कहुँ कहुँ सुंदर विटप सुहाए। जनु भट विलग विलग ~~विलग~~ ...

कूजत पिक मानहुँ गज माते । ढेक महोख ऊँट बिसराते ॥
 मोर चकोर कीर बर बाजी । पारावत मराल सब ताजी ॥
 तीतिर लावक पदचर जूथा । बरनि न जाइ मनोज बरूथा ॥
 रथ गिरि सिला दुंदुभीं झरना । चातक बंदी गुन गन बरना ॥
 मधुकर मुखर भेरि सहनाई । त्रिविध बयारि बसीठीं आई ॥
 चतुरंगिनी सेन सँग लीन्हें । बिचरत सबहि चुनौती दीन्हें ॥
 लछिमन देखत काम अनीका । रहहिं धीर तिन्ह कै जग लीका ॥
 एहि कें एक परम बल नारी । तेहि तें उबर सुभट सोइ भारी ॥

दो०—तात तीनि अति प्रबल खल काम क्रोध अरु लोभ ।

मुनि विग्यान घाम मन करहिं निमिषमहुँ छोभ ॥ ३८ (क) ॥

लोभ कें इच्छा दंभ बल काम कें केवल नारि ।

क्रोध कें परुष बचन बल मुनिवर कहहिं बिचारि ॥ ३८ (ख) ॥

गुनातीत सचराचर स्वामी । राम उमा सब अंतरजामी ॥
 कामिन्ह कै दीनता देखाई । धीरन्ह कें मन विरति दृढ़ाई ॥
 क्रोध मनोज लोभ मद माया । छूटहिं सकल राम कीं दाया ॥
 सो नर इंद्रजाल नहिं भूला । जा पर होइ सो नट अनुकूला ॥
 उमा कहउँ मैं अनुभव अपना । सत हरि भजनु जगत सब सपना ॥
 पुनि प्रभु गए सरोबर तीरा । पंपा नाम सुभग गंभीरा ॥
 संत हृदय जस निर्मल बारी । बाँधे घाट मनोहर चारी ॥
 जहँ तहँ पिअहिं विविध मृग नीरा । जनु उदार गृह जाचक भीरा ॥

दो०—पुरइनि सघन ओट जल बेगि न पाइअ मर्म ।

मायाछव न देखिऐ जैसे निर्गुन ब्रह्म ॥३९(क)॥

सुखी मीन सब एकरस अति अगाध जल माहि ।

जथा धर्मसौलन्ह के दिन सुख संजुत आहि ॥३९(ख)॥

विकसे सरसिज नाना रंगा । मधुर मुखर गुंजत बहु भृंगा ॥

घोलत जलकुवकुट कलहंसा । प्रभु विलोकि जनु करत प्रसंसा ॥

चक्रवाक बक खग समुदाई । देखत बनइ वरनि नहिं जाई ॥

सुंदर खग गन गिरा सुहाई । जात पथिक जनु लेत घोलाई ॥

ताल समीप मुनिन्ह गृह छाए । चहु दिसि कानन विटप सुहाए ॥

चंपक बकुल कदंब तमाला । पाटल पनस परास रसाला ॥

नव पल्लव कुसुमित तरुनाना । चंचरीक पटली कर गाना ॥

सीतल मंद सुगंध सुभाऊ । संतत बहइ मनोहर वाऊ ॥

कुहू कुहू कोकिल घुनि करहीं । सुनि रव सरस ध्यान मुनि टरहीं ॥

दा०—फल भारन नमि विटप सब रहे भूमि निजराइ ।

पर उपकारी पुरुष जिमि नवहिं सुसंपत्ति पाइ ॥ ४० ॥

देखि राम अति रुचिर तलावा । मज्जनु कीन्ह परम सुख पावा ॥

देखी सुंदर तरुवर छाया । बैठे अनुज सहित रघुराया ॥

तहँ पुनि सकल देव मुनि आए । अस्तुति करि निज धाम सिधाए ॥

बैठे परम प्रसन्न कृपाला । कहत अनुज सन कथा रसाला ॥

विरहवंत भगवंतहि देखी । नारद मन भा सोच विसेए ॥

* रामचरितमानस *

र साप करि अंगीकारा । सहत राम नाना दुख भारा ॥
 से प्रभुहि बिलोकउँ जाई । पुनि नबनिहि अस अवसरु आई ॥
 यह विचारि नारद कर वीना । गए जहाँ प्रभु सुख आसीना ॥
 गावत राम चरित मृदु वानी । प्रेम सहित बहु भँति बखानी ॥
 करत दंडवत लिए उठाई । राखे बहुत वार उर लाई ॥
 स्वागत पूँछि निकट बैठारे । लछिमन सादर चरन परवारे ॥
 दो०—नाना विधि बिनती करि प्रभु प्रसन्न जियँ जानि ।
 नारद बोले वचन तव जोरि सरोरुह पानि ॥ ४१ ॥

सुनहु उदार सहज रघुनायक । सुंदर अगम सुगम बर दायक ॥
 देहु एक बर मागउँ स्वामी । जद्यपि जानत अंतरजामी ॥
 जानहु मुनि तुम्ह मोर सुभाऊ । जन सन कबहुँ कि करउँ दुराऊ ॥
 कवन वस्तु असि प्रिय मोहि लागी । जो मुनिवरन सकहु तुम्ह मागी ॥
 जन कहूँ कछु अदेय नहिँ मोरें । अस विस्वास तजहु जनि भोरें ॥
 तव नारद बोले हरपाई । अस बर मागउँ करउँ ठिठारें ॥
 जद्यपि प्रभु के नाम अनेका । श्रुति कह अधिक एक तें ए ॥
 राम सकल नामन्ह ते अधिका । होउ नाथ अघ खग गन ब ॥

[दो०—राका रजनी भगति तव राम नाम सोइ सोम ।
 अपर नाम उडगन विमल बसहुँ भगत उर व्योम ॥४
 एवमस्तु मुनि सन कहेउ कृपासिधु रघुनाथ ।
 तव नारद मन हरष अति प्रभु पद नायउ माथ ॥

अति प्रसन्न रघुनाथहि जानी। पुनि नारद बोले मृदु बानी ॥
 राम जबहिं प्रेरेउ निज माया। मोहेहु मोहि सुनहु रघुराया ॥
 तव विवाह में चाहउँ कीन्हा। प्रभु केहि कारन करै न दीन्हा ॥
 सुनु मुनि तोहि कहउँ सहरोसा। भजहिं जे मोहि तजि सकल भरोसा
 करउँ सदा तिन्ह कै रखवारी। जिमि बालक राखइ महतारी ॥
 गह सिमु बच्छ अनल अहि धाई। तहँ राखइ जननी अरगाई ॥
 प्रौढ़ भएँ तेहि सुत पर माता। शीति करइ नहिं पाछिलि वाता ॥
 मोरे प्रौढ़ तनय सम ग्यानी। बालक सुत सम दास अमानी ॥
 जनहि मोर बल निज बल ताही। दुहु कहँ काम क्रोध रिपु आही ॥
 यह विचारि पंडित मोहि भजहौं। पाएहुँ ग्यान भगति नहिं तजहीं ॥

दो०—काम क्रोध लोभादि मद प्रबल मोह कै धारि ।

तिन्ह महँ अति दारुन दुखइ मायारूपी नारि ॥ ४३ ॥

सुनु मुनि कह पुरान श्रुति संता। मोह विपिन कहूँ नारि बसंता ॥
 जप तप नेमु जलाश्रय क्षारी। होइ शीपम सोपइ सब नारी ॥
 काम क्रोध मद मत्सर भेका। इन्हहि हरपप्रद बरपा एका ॥
 दुर्वासना कुमुद समुदाई। तिन्ह कहँ सरद सदा सुखदाई ॥
 धर्म सकल सरसीरुह वृंदा। होइ हिम तिन्हहि दहइ सुख मंदा ॥
 पुनि भमता जवास बहुताई। पलुहइ नारि सिसिर गित्-पाई ॥
 पाप उलूक निकर सुखकारी। नारि
 बुधि बल सील सत्य सब मीना। वनसी

दो०—अवगुन मूल सूत्रप्रद प्रमदा सब दुख खानि ।

ताते कीन्ह निवारन मुनि मैं यह जियँ जानि ॥ ४४

मुनि रघुपति के बचन सुहाए । मुनितन पुलकनयन भरि आए ।
कहहु कवन प्रभु कै असि रीती । सेवक पर ममता अरु प्रीती ।
जेन भजहिँ अस प्रभु भ्रम त्यागी । ग्यान रंक नर मंद अभागी ।
पुनि सादर बोले मुनि नारद । सुनहु राम विग्यान विसारद ।
संतन्ह के लच्छन रघुवीरा । कहहु नाथ भव भंजन भीरा ।
सुनु मुनि संतन्ह के गुन कहऊँ । जिन्ह ते मैं उन्ह केँ वस रहऊँ ।
षट विकार जित अनघ अकामा । अचल अकिंचन सुचि सुखधामा ।
अमितबोध अनीह मित भोगी । सत्यसार कवि कोविद जोगी ।
सावधान मानद मदहीना । धीर धर्म गति परम प्रवीना ।

दो०—गुनागार संसार दुख रहित विगत संदेह ।

तजि मम चरन सरोज प्रिय तिन्ह कहूँ देह न गेह ॥ ४५

निज गुन श्रवन सुनत सकुचाहीं । पर गुन सुनत अधिक हरपाहीं ।
सम सीतल नहिँ त्यागहिँ नीती । सरल सुभाउ सबहि सन प्रीती ।
जप तप व्रत दम संजम नेमा । गुरु गोविंद विप्र पद प्रेमा ।
श्रद्धा छमा मयत्री दाया । मुदिता मम पद प्रीति अमाया ।
विरति विवेक विनय विग्याना । बोध जथारथ वेद पुराना ।
दंभ मान मद करहिँ न काऊ । भूलि न देहिँ कुमारग पाऊ ।
गावहिँ सुनहिँ सदा मम लीला । हेतु रहित परहित रत सीला ।

मुनि सुनु साधुन्ह के गुन जेते । कहि न सकहि सारद थ्रुति तेते ॥

छं०—कहि सक न सारद सेप नारद सुनत पद पंक्ज गहे ।

अस दीन बंधु कृपाल अपने भगत गुन निज मुख कहे ॥

सिरु नाइ वारहि बार चरनन्हि ब्रह्मपुर नारद गए ।

ते घन्य तुलसीदास आस बिहाइ जे हरि रँग रँए ॥

दो०—रावनारि जसु पावन गावहि सुनहि जे लोग ।

राम भगति दृढ पायहि विनु बिराग जप जोग ॥५६(क)॥

दीप सिखा सम जुवति तन मन जनि होसि पतंग ।

भजहि राम तजि काम मद करहि सदा सतसंग ॥५६(ख)॥

भासपारायण, बाईसवाँ विश्राम

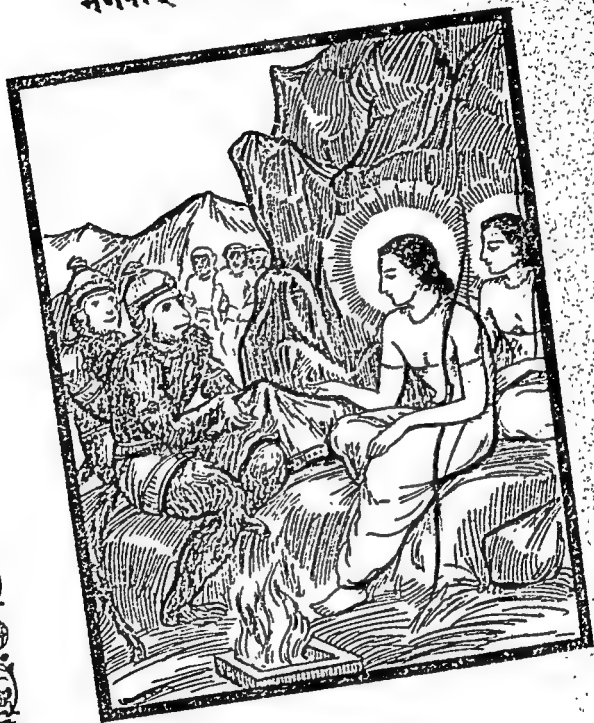
इति श्रीमद्रामचरितमानसे सकलकलिकल्पविध्वंसने

तृतीयः सोपानः समाप्तः ।

(अरण्यकाण्ड समाप्त)



भगवान् रामकी सुग्रीवसे मैत्री



सखा सोच त्यागहु बल मोरें ।
सब विधि घटव काज मैं तोरें ॥

श्रीरामचरितमानस

चतुर्थ सोपान

(किष्किन्धाकाण्ड)

श्लोक

कुन्देन्दीवरसुन्दरावतिवलयौ विज्ञानधामाद्युभौ
शोभाद्भ्यौ वरधन्विनी श्रुतिनुतौ गोविप्रवृन्दप्रियौ ।
सायामानुषरूपिणां रघुवरी सद्वर्मवर्मो हितौ
सीतान्वेषणतत्परा पथिगता भक्तिप्रदा तौ हिनः ॥ १ ॥
ब्रह्मान्भोधिसमुद्भवं कलिमलप्रध्वंसनं चाव्ययं
श्रीमच्छम्भुमुखेन्दुमुन्दरवरे संशोभितं सर्वदा ।
संसारामयमेपजं सुखकरं श्रीजानकीजीवनं
धन्यास्ते कृतिनः पिवन्ति सततं श्रीरामनामामृतम् ॥ २ ॥

सो०—मुक्ति जन्म महि जानि ग्यान स्वानि अघ हानि कर ।
जहँ वस संभु भवानि सो कासी सेइअ कस न ॥
जरत सकल भुर बृंद विपम गरल जेहि पान किय ।
तेहि न भजसि मन मंद को इपाल संकर सरिस ॥

चले बहुरि रघुराया। रिष्यमूक पर्वत निअराया ॥
ह सचिव सहित सुग्रीवा। आवत देखि अतुल बल सीवा ॥
सभीत कह सुनु हनुमाना। पुरुष जुगल बल रूप निधाना।
बहु रूप देखु तैं जाई। कहेसु जानि जियँ सयन बुझाई ॥
ए बालि होहिं मन मैला। भागौं तुरत तजौं यह सैला ॥
प्र रूप धरि कपि तहँ गयऊ। माथ नाइ पूछत अस भयऊ ॥
तुम्ह स्यामल गौर सरीरा। छत्री रूप फिरहु बन बीरा ॥
ठिन भूमि कोमल पद गामी। कवन हेतु विचरहु बन स्वामी ॥
मृदुल मनोहर सुंदर गाता। सहत दुसह बन आतप बाता ॥
की तुम्ह तीनि देव मँहँ कोऊ। नर नारायन की तुम्ह दोऊ ॥

दो०—जग कारन तारन भव भंजन घरनी भार।
की तुम्ह अखिल भुवन पति लीन्ह मनुज अवतार ॥ ?

कोसलेस दसरथ के जाए। हम पितु वचन मानि बन आए ॥
नाम राम लछिमन दोउ भाई। संग नारि सुकुमारि सुहाई ॥
इहाँ हरी निसिचर बैदेही। विप्र फिरहिं हम खोजत तेही ॥
आपन चरित कहा हम गाई। कहहु विप्र निज कथा बुझाई ॥
प्रभु पहिचानि परेउ गहि चरना। सो सुख उमा जाइ नहिं बरना ॥
पुलकित तन मुख आव न बचना। देखत रुचिर वेष कै रचना ॥
पुनि धीरजु धरि अस्तुति कीन्ही। हरष हृदयँ निज नाथहि चीन्ही ॥
मोर न्याउ मैं पूछा साई। तुम्ह पूछहु कस नर की नाई ॥
तव माया बस फिरउँ भुलाना। ता ते मैं नहिं प्रभु पहिचाना ॥

दो०—एकु मै मंद मोहवस कुटिल हृदय अग्यान ।

पुनि प्रभु मोहि विसारेउ दीनबंधु भगवान ॥ २ ॥

जदपि नाथ बहु अवगुन मोरें । सेवक प्रभुहि परै जनि भोरें ॥
 नाथ जीव तव मायाँ मोहा । सो निस्तरइ तुम्हारेहिँ छोहा ॥
 ता पर मै रघुवीर दोहाई । जानउँ नहिँ कछु भजन उपाई ॥
 सेवक सुत पति मातु भरोसैं । रहइ असोच बनइ प्रभु पोसैं ॥
 अस कहि परेउ चरन अकुलाई । निज तनु प्रगटि प्रीति उर छाई ॥
 तव रघुपति उठाइ उर लावा । निज लोचन जल सींचि जुड़ावा ॥
 सुनु कपि जियँ मानसि जनि ऊना । तैं मम प्रिय लछिमन ते दूना ॥
 समदरसी मोहि कह सब कोऊ । सेवक प्रिय अनन्यगति सोऊ ॥
 दो०—सो अनन्य जाकेँ असि मति न टरइ हनुमंत ।

मै सेवक सचराचर रूप स्वामि भगवंत ॥ ३ ॥

देखि पवनसुत पति अनुकूला । हृदयँ हरप बीती सब छला ॥
 नाथ सैल पर कपिपति रहई । सो सुग्रीव दास तव अहई ॥
 तेहि सन नाथ मयत्री कीजे । दीन जानि तेहि अभय करीजे ॥
 सो सीता कर खोज कराइहि । जहँ तहँ मरकट कोटि पठाइहि ॥
 एहि विधि सकल कथा समुझाई । लिएँ दुऔँ जन पीठि चढ़ाई ॥
 जव सुग्रीवँ राम कहँ देखा । अतिसय जन्म धन्य करि लेखा ॥
 सादर मिलेउ नाइ पद माथा । भेटेउ अनुज सहित रघुनाथा ॥
 कपि कर मन बिचार एहि रीती । करिहहिँ विधि मो सन ए प्रीती ॥
 दो०—तव हनुमंत उभय दिसि की सब कथा सुनाइ ।

पावक सास्त्री देइ करि जोरी प्रीति ददाइ ॥ ४ ॥

मोन्हि प्रीति कछु वीच न राखा । लछिमन राम चरित सब भाषा ॥
 कह सुग्रीव नयन भरि बारी । मिलिहि नाथ मिथिलेस कुमारी ॥
 मंत्रिन्ह सहित इहाँ एक बारा । बैठ रहेउँ मैं करत विचारा ॥
 गगन पंथ देखी मैं जाता । परबस परी बहुत विलपाता ॥
 राम राम हा राम पुकारी । हमहि देखि दीन्हैउ पट डारी ॥
 मागा राम तुरत तेहिं दीन्हा । पट उर लाइ सोच अति कीन्हा ॥
 कह सुग्रीव सुनहु रघुवीरा । तजहु सोच मन आनहु धीरा ॥
 सब प्रकार करिहउँ सेवकाई । जेहि विधि मिलिहि जानकी आई

दो०—सखा बचन सुनि हरषे कृपासिधु बलसीव ।

कारन कवन वसहु वन मोहि कहहु सुग्रीव ॥ ५ ॥

नाथ बालि अरु मैं द्रौ भाई । प्रीति रही कछु वरनि न जाई ॥
 मय सुत मायावी तेहि नाऊँ । आवा सो प्रभु हमरें गाऊँ ॥
 अर्ध राति पुर द्वार पुकारा । वाली रिपु बल सहै न पारा ॥
 धावा बालि देखि सो भागा । मैं पुनि गयउँ बंधु संग लगा ॥
 गिरिवर गुहाँ पैठ सो जाई । तव वालीं मोहि कहा बुझाई ॥
 परिखेसु मोहि एक पखवारा । नहिं आवौं तब जानेसु मारा ॥
 मास दिवस तहँ रहेउँ खरारी । निसरी रुधिर धार तहँ भारी ॥
 बालि हतेसि मोहि मारिहि आई । सिला देइ तहँ चलेउँ परा ॥
 मंत्रिन्ह पुर देखा बिनु साई । दीन्हैउ मोहि राज वरिआ ॥
 वाली ताहि मारि गृह आवा । देखि मोहि जियँ भेद बढ़ा ॥
 रिपु सम मोहि मारेसि अति भारी । हरि लीन्हैसि सर्वसु अरु न ॥
 ताकें भय रघुवीर कृपाला । सकल भुवन मैं फिरेउँ विहा ॥

इहाँ साप बस आवत नाहीं। तदपि सभित रहउँ मन माहीं ॥
मुनि सेवक दुख दीनदयाला। फरकि उठीं द्वै भुजा विसाला ॥

दो०—मुनु मुग्रीव मारिहउँ बालिहि एकहि वान ।

मय रुद्र सरनागत गएँ न उवरिहि प्रान ॥ ६ ॥

जे न मित्र दुख होहि दुखारी। तिन्हहि विलोकत पातक भारी ॥
निज दुख गिरि सम रज करि जाना। मित्रक दुख रज मेरु समाना
जिन्ह केँ असि मति सहज न आई। ते सठ कत हठि करत मितार्ई ॥
कुपथ निवारि सुपंथ चलावा। गुन प्रगटै अवगुनन्हि दुरावा ॥
देव लेत मन संक न धरई। बल अनुमान सदा हित करई ॥
धिपति काल कर सतगुन नेहा। श्रुति कह संत मित्र गुन एहा ॥
आगेँ कह मृदु वचन वनाई। पाछेँ अनहित मन कुटिलाई ॥
जा कर चित अहि गति सभ भाई। अस कुमित्र परिहरेहि भलाई ॥
सेवक सठ नृप कृपन कुनारी। कपटी मित्र सब सम चारी ॥
सखा सोच त्यागहु बल मोरें। सब विधि घटव काज मै तोरें ॥
कह सुग्रीव मुनहु रघुवीरा। बालि महाबल अति रनधीरा ॥
हुँदुभि अस्थि ताल देखराए। विनु प्रयास रघुनाथ दहाए ॥
देखि अमित बल बाढ़ी प्रीती। बालि बधव इन्ह भइ परतीती ॥
बार बार नावइ पद सीसा। प्रभुहि जानि मन हरप कपीसा ॥
उपजा ग्यान वचन तब घोला। नाथ कृपाँ मन भयउ अलोला ॥
मुख संपति परिवार बढाई। सब परिहरि करिहउँ सेवकाई ॥
ए सब रामभगति के बाधक। कहहि संत तब पद अवराधक ॥
सनु मित्र मुख दुख जग माहीं। माया कृत परमाग्रथ नाहीं ।

बालि परम हित जासु प्रसादा । मिलेहु राम तुम्ह समन विषादा ॥
 सपनें जेहि सन होइ लराई । जागें समुझत मन सकुचाई ॥
 अब प्रभु कृपा करहु एहि भाँती । सब तजि भजनु करौं दिन राती ॥
 सुनि विराग संजुत कपि बानी । बोले विहँसि रामु धनुपानी ॥
 जो कछु कहेहु सत्य सब सोई । सखा बचन मम मृषा न होई ॥
 नट मरकट इव सवहि नचावत । रामु खगेस बेद अस गावत ॥
 लै सुग्रीव संग रघुनाथा । चले चाप सायक गहि हाथा ॥
 तव रघुपति सुग्रीव पठावा । गर्जेसि जाइ निकट बल पावा ॥
 सुनत बालि क्रोधातुर धावा । गहि कर चरन नारि समुझावा ॥
 सुनु पति जिन्हहि मिलेउ सुग्रीवा । ते द्वौ बंधु तेज बल सीवां ॥
 कोसलेस सुत लछिमन रामा । कालहु जीति सकहि संग्रामा ॥

दो०—कह बाली सुनु भीरु प्रिय समदरसी रघुनाथ ।

जौ कदाचि मोहि मारहिं तौ पुनि होउँ सनाथ ॥ ७ ॥

अस कहि चला महा अभिमानी । तून समान सुग्रीवहि जानी ॥
 भिरे उभौ बाली अति तर्जा । मुठिका मारि महाधुनि गर्जा ॥
 तव सुग्रीव विकल होइ भागा । मुष्टि प्रहार बज्र सम लागा ॥
 मैं जो कहा रघुवीर कृपाला । बंधु न होइ मोर यह काला ॥
 एकरूप तुम्ह भ्राता दोऊ । तेहि भ्रम तें नहिं मारेउँ सोऊ ॥
 कर परसा सुग्रीव सरीरा । तनु भा कुलिस गई सब पीरा ॥
 मेली कंठ सुमन कै माला । पठवा पुनि बल देइ बिसाला ॥
 पुनि नाना विधि भई लराई । विटप ओट देखहिं रघुराई ॥

दो०—बहु छल बल सुग्रीव कर हिये हारा भय मानि ।

मारा बालि राम तब हृदय माझ सर तानि ॥ ८ ॥

परा विकल महि सर के लागे । पुनि उठि बैठ देखि प्रभु आगे ॥
 स्याम गात सिर जटा बनाएँ । अरु नयन सर चाप चढ़ाएँ ॥
 पुनि पुनि चितइ चरन चित दीन्हा । सुफल जन्म माना प्रभु चीन्हा
 हृदय प्रीति मुख बचन कठोरा । बोला चितइ राम की ओरा ॥
 धर्म हेतु अवतरेहु गोसाई । मारेहु मोहि व्याध की नाई ॥
 मैं वरी सुग्रीव पिआरा । अवगुन कवन नाथ मोहि मारा ॥
 अनुज बधू भगिनी सुत नारी । मुनु सठ कन्या सम ए चारी ॥
 इन्हहि कुट्टि विलोकइ जोई । ताहि बधे कछु पाप न होई ॥
 मूढ़ तोहि अतिसय अभिमाना । नारि सिखावन करसि न काना ॥
 मम भुज बल आश्रित तेहि जानी । मारा चहसि अधम अभिमानो ॥

दो०—सुनहु राम स्वामी सन चल न चातुरी मोरि ।

प्रभु अजहूँ मैं पापी अंतकाल गति तोरि ॥ ९ ॥

सुनत राम अति कोमल बानी । बालि सीस परसेउ निज पानी ॥
 अचल करी तनु राखहु प्राणा । बालि कहा सुनु कृपानिधाना ॥
 जन्म जन्म मुनि जतनु कराहीं । अंत राम कहि आवत नाहीं ॥
 जासु नाम बल संकर कासी । देत सबहि सम गति अविनासी ॥
 मम लोचन गोचर सोइ आवा । बहुरि कि प्रभु अस बनिहि बनावा

छं०—सो नयन गोचर जासु गुन नित नेति कहि श्रुति गावहीं ।

जिति पवन मन गो निरस करि मुनि ध्यान कबहुँ क पावहीं ॥

बालि परम हित जासु प्रसादा । मिलेहु राम तुम्ह समन विषादा ॥
 सपनें जेहि सन होइ लराई । जागें समुझत मन सकुचार्ई ॥
 अब प्रभु कृपा करहु एहि भाँती । सब तजि भजनु करौं दिन राती ॥
 सुनि विराग संजुत कपि बानी । बोले विहँसि रामु धनुपानी ॥
 जो कछु कहेहु सत्य सब सोई । सखा बचन मम मृषा न होई ॥
 नट मरकट इव सबहि नचावत । रामु खगेस वेद अस गावत ॥
 लै सुग्रीव संग रघुनाथा । चले चाप सायक गहि हाथा ॥
 तब रघुपति सुग्रीव पठावा । गर्जेसि जाइ निकट बल पावा ॥
 सुनत बालि क्रोधातुर धावा । गहि कर चरन नारि समुझावा ॥
 सुनु पति जिन्हहि मिलेउ सुग्रीवा । ते द्रौ बंधु तेज बल सीवा ॥
 कोसलेस सुत लछिमन रामा । कालहु जीति सकहि संग्रामा ॥

दो०—कह बाली सुनु भीरु प्रिय समदरसी रघुनाथ ।

जौ कदाचि मोहि मारहि तौ पुनि होउँ सनाथ ॥ ७ ॥

अस कहि चला महा अभिमानी । तन समान सुग्रीवहि जानी ॥
 भिरे उभौ बाली अति तर्जा । मुठिका मारि महाधुनि गर्जा ॥
 तब सुग्रीव बिकल होइ भागा । मुष्टि प्रहार बज्र सम लागा ॥
 मैं जो कहा रघुवीर कृपाला । बंधु न होइ मोर यह काला ॥
 एकरूप तुम्ह भ्राता दोऊ । तेहि भ्रम तें नहिं मारेउँ सोऊ ॥
 कर परसा सुग्रीव सरीरा । तनु भा कुलिस गई सब पीरा ॥
 मेली कंठ सुमन कै माला । पठवा पुनि बल देइ बिसाला ॥
 पुनि नाना विधि भई लराई । बिटप ओट देखहिं रघुराई ॥

दो०—बहु छल बल सुग्रीव कर हियें हारा भय मानि ।

मारा बालि राम तब हृदय भाग सर तानि ॥ ८ ॥

परा विकल महि सर के लागें । पुनि उठि बैठ देखि प्रभु आगें ॥
 स्याम गात सिर जटा बनाएँ । अरुन नयन सर चाप चढ़ाएँ ॥
 पुनि पुनि चितइ चरन चित दीन्हा । सुफल जन्म माना प्रभु चीन्हा
 हृदयें प्रीति मुख बचन कठोरा । बोला चितइ राम की ओरा ॥
 धर्म हेतु अवतरेहु गोसाईं । मारेहु मोहि व्याध की नाईं ॥
 मैं वरी सुग्रीव पिआरा । अवगुन कवन नाथ मोहि मारा ॥
 अनुज बधू भगिनी सुत नारी । सुनु सठ कन्या सम ए चारी ॥
 इन्हहि कुदृष्टि विलोकइ जोई । ताहि बघें कलु पाप न होई ॥
 मूढ़ तोहि अतिसय अभिमाना । नारि सिखावन करसि न काना ॥
 मम भुज बल आश्रित तेहि जानी । मारा चहसि अधम अभिमानी ॥

दो०—सुनहु राम स्वामी सन चल न चातुरी मोरि ।

प्रभु अगहैं मैं पापी अंतकाल गति तोरि ॥ ९ ॥

सुनत राम अति कोमल बानी । बालि सीस परसेउ निज पानी ॥
 अचल करीं तनु राखहु प्राणा । बालि कहा सुनु कृपानिधाना ॥
 जन्म जन्म मुनि जतनु करार्हीं । अंत राम कहि आवत नार्हीं ॥
 जासु नाम बल संकर कासी । देत सबहि सम गति अविनासी ॥
 मम लोचन गोचर सोइ आवा । बहुरि कि प्रभु अस बनिहि बनावा

छं०—सो नयन गोचर जासु गुन नित नेति कहि श्रुति गायहीं ।

जिति पवन मन गो निरस करि मुनि ध्यान कबहूँ कूपावहीं ।

* रामचरितमानस *

मोहि जानि अति अभिमान बस प्रभु कहे उराखु सरीरही ।
 अस कवन सठ हठि काटि सुरतरु वारि करिहि बवूरही ॥ १ ॥
 अब नाथ करि करुना बिलोकहु देहु जो बर मागऊँ ।
 जेहि जोनि जन्मौँ कर्म बस तहँ राम पद अनुरागऊँ ।
 यह तनय मम सम विनय बल कल्याणप्रद प्रभु लीजिए ।
 गहि बाँह सुर नर नाह आपन दास अंगद कीजिए ॥ २ ॥

दो०—राम चरन दृढ़ प्रीति करि बालि कीन्ह तनु त्याग ।
 सुमन माल जिमि कंठ ते गिरत न जानइ नाग ॥ १० ॥
 राम बालि निज धाम पठावा । नगर लोग सब व्याकुल धावा ॥
 नाना विधि विलाप कर तारा । छूटे केस न देह सँभारा ॥
 तारा विकल देखि रघुराया । दीन्ह ग्यान हरि लीन्ही माया ॥
 छिति जल पावक गगन समीरा । पंच रचित अति अधम सरीरा ॥
 प्रगट सो तनु तव आगें सोवा । जीव नित्य केहि लागि तुम्ह रोवा ॥
 उपजा ग्यान चरन तव लागी । लीन्हेसि परम भगति बर मागी ॥
 उमा दारु जोपित कीं नाई । सबहि नचावत रामु गोसाईं ॥
 तब सुग्रीवहि आयसु दीन्हा । मृतक कर्म विधिवत सब कीन्हा ॥
 राम कहा अनुजहि समुझाई । राज देहु सुग्रीवहि जा ॥
 रघुपति चरन नाइ करि माथा । चले सकल प्रेरित रघुनाथ ॥

दो०—लछिमन तुरत बोलाए पुरजन विप्र समाज ।
 राजु दीन्ह सुग्रीव कहँ अंगद कहँ जुवराज ॥

उमा राम सम हित जग माहीं । गुरु पितु मातु बंधु प्रभु न
 मर नर मुनि सब कै यह रीती । स्वारथ लागि करहि सब

बालि त्रास व्याकुल दिन राती । तन बहु व्रन चिंताँ जर छाती ॥
 सोइ सुग्रीव कीन्ह कपिराऊ । अति कृपाल रघुवीर सुभाऊ ॥
 जानतहुँ अस प्रभु परिहरहीं । काहे न विपति जाल नर परहीं ॥
 पुनि सुग्रीवहि लीन्ह बोलाई । बहु प्रकार नृपनीति सिखाई ॥
 कह प्रभु सुनु सुग्रीव हरीसा । पुर न जाउँ दस चारि बरीसा ॥
 गत ग्रीषम वरपा रित्तु आई । रहिहउँ निकट सल पर छाई ॥
 अंगद सहित करहु तुम्ह राजू । संतत हृदयँ धरेहु मम काजू ॥
 जय सुग्रीव भवन फिरि आए । रामु प्रवरपन गिरि पर छाए ॥

दो०—प्रथमहि देवन्ह गिरि गुहा राखँउ रुचिर बनाइ ।

राम कृपानिधि कछु दिन वास करहिगें आइ ॥ १२ ॥

सुंदर वन कुसुमित अति सोभा । गुंजत मधुप निकर मधु लोभा ॥
 कंद मूल फल पत्र सुहाए । भए बहुत जय ते प्रभु आए ॥
 देखि मनोहर सैल अनूपा । रहे तहुँ अनुज सहित सुरमूपा ॥
 मधुकर खग मृग तनु धरि देवा । करहि सिद्ध मुनि प्रभु कँ सेवा ॥
 मंगलरूप भयउ वन तब ते । कीन्ह निवास रमापति जय ते ॥
 फटिक सिला अति सुभ्रं सुहाई । सुख आसीन तहाँ द्रौ भाई ॥
 कहत अनुज सन कथा अनेका । भगति विरति नृपनीति विवेका ॥
 वरपा काल मेघ नभ छाए । गरजत लागत परम सुहाए ॥

दो०—लछिमन देखु मोर गन - नाचत चारिदि वेति ।

गृही विरति रत हरप जस विष्णुभगत कहुँ देखि ॥ १३ ॥

घन घमंड नभ गरजत घोरा । प्रिया हीन डरपत मन मोरा ॥
 दामिनि दमक रह न घनं माहीं । खल कँ प्रीति जथा धिर नाहीं ॥

बरपहिं जलद भूमि निअराएँ । जथा नवहिं बुध विद्या पाएँ ॥
 बूँद अघात सहहिं गिरि कैसैं । खल के वचन संत सह जैसैं ॥
 छुद्र नदीं भरि चलीं तोराई । जस थोरेहुँ धन खल इतराई ॥
 भूमि परत भा ढाबर पानी । जनु जीवहि माया लपटानी ॥
 समिटि समिटि जल भरहिं तलावा । जिमि सदगुन सज्जन पहिं आवा
 सरिता जल जलनिधि महुँ जाई । होइ अचल जिमि जिव हरि पाई ॥

दो०—हरित भूमि तृन संकुल समुल्लि परहिं नहिं पंथ ।

जिमि पाखंड वाद तें गुप्त होहिं सदग्रंथ ॥ १४ ॥

दादुर धुनि चहु दिसा सुहाई । वेद पढ़हिं जनु बडु समुदाई ॥
 नव पल्लव भए विटप अनेका । साधक मन जस मिलें विवेका ॥
 अर्क जवास पात विनु भयऊ । जस सुराज खल उद्यम गयऊ ॥
 खोजत कतहुँ मिलइ नहिं धूरी । करइ क्रोध जिमि धरमहि दूरी ॥
 ससि संपन्न सोह महि कैसी । उपकारी कै संपति जैसी ॥
 निमि तम घन खद्योत विराजा । जनु दंभिन्ह कर मिला समाजा ॥
 महावृष्टि चलि फूटि क्रिआरीं । जिमि सुतंत्र भएँ विगारहिं नारीं ॥
 कृपी निरावहिं चतुर किसाना । जिमि बुध तजहिं मोह मद माना ॥
 देखिअत चक्रवाक खग नाहीं । कलिहि पाइ जिमि धर्म पराहीं ॥
 ऊपर बरपइ तृन नहिं जामा । जिमि हरिजन हियँ उपजन कामा
 विविध जंतु संकुल महि भ्राजा । प्रजा वाढ़ जिमि पाइ सुराजा ॥
 जहँ तहँ रहे पथिक थकि नाना । जिमि इंद्रिय गन उपजें ग्याना ॥

दो०—कवहुँ प्रबल वह मारुत जहँ तहँ मेघ विलाहि ।

जिमि कपत के उपजें कल सद्धर्म नसाहि ॥ १५ (क) ॥

कचहुँ दिवस महँ निविड़ तम कचहुँक प्रगट पतंग ।

धिनसइ उपजइ ग्यान जिमि पाइ कुसंग सुसंग ॥१५(स)॥

वरपा विगत सरद रित्तु आई। लडिमन देग्वहु परम सुहाई ॥
 फूलें कास सकल महि छाई। जनु वरपाँ कृत प्रगट बुढ़ाई ॥
 उदित अगस्ति पंथ जल सोपा। जिमि लोभहि सोपइ मंतोपा ॥
 सरिता सर निर्मल जल सोहा। संत हृदय जस गत मद मोहा ॥
 रस रस सुख सरित सर पानी। ममता त्याग करहि जिमि ग्यानी ॥
 जानि सरद रित्तु खंजन आए। पाइ समय जिमि मुकृत सुहाए ॥
 पंक न रेनु सोह असि धरनी। नीति निपुन नृप कँजसि करनी ॥
 जल संकोच विकल भई मीना। अनुध कुडुंथी जिमि धनहीना ॥
 विनु घन निर्मल सोह अकासा। हरिजन इव परिहरि सब आसा ॥
 कहूँ कहूँ वृष्टि सारदी थोरी। कोउ एक पाव भगति जिमि मोरी
 दो०—चलं हरषि तजि नगर नृप तापस धनिक भिखारि ।

जिमि हरिभगति पाइ श्रम तजहि आभमी चारि ॥ १६ ॥

सुखी मीन जे नीर अगाधा। जिमि हरि सरन न एकउ बाधा ॥
 फूलें कमल सोह सर कँसा। निर्गुन ब्रह्म सगुन भएँ जँसा ॥
 गुंजत मधुकर मुखर अनूषा। सुंदर स्वग स्व नाना रूपा ॥
 चक्रवाक मन दुख निसि पेंखी। जिमि दुर्जन पर संपति देखी ॥
 चातक रटत तृपा अति ओही। जिमि सुख लहइ न संकरद्रोही ॥
 सरदातप निसि ससि अपहरई। संत दरस जिमि पातक टरई ॥
 देखि इंदु चकोर समुदाई। चितवहिं जिमि हरिजन हरि पाई ॥
 मसक दंस वीते हिम त्रासा। जिमि द्विजद्रोह

दो०—भूमि जीव संकुल रहे गए सरद रितु पाइ ।

सदगुर मिलें जाहि जिनि संसय अम समुदाइ ॥ १७ ॥

वरपा गत निर्मल रितु आई। सुधि न तात सीता कै पाई ॥

एक वार कैसेहुँ सुधि जानौ। कालहु जीति निमिष महुँ आनौ ॥

कतहुँ रहउ जाँ जीवति होई। तात जतन करि आनउँ सोई ॥

सुग्रीवहुँ सुधि मोरि बिसारी। पावा राज कोस पुर नारी ॥

जेहिं सायक मारा मैं बाली। तेहिं सर हतौं मूढ़ कहँ काली ॥

जासु कृपाँ छूटहिं मद मोहा। ता कहँ उमा कि सपनेहुँ कोहा ॥

जानहिं यह चरित्र मुनि ग्यानी। जिन्ह रघुवीर चरन रति मानी ॥

लछिमन क्रोधवंत प्रभु जाना। धनुष चढ़ाइ गहे कर वाना ॥

दो०—तव अनुजहि समुझावा रघुपति करुना सीव ।

भय देखाइ लै आवहु तात सखा सुग्रीव ॥ १८ ॥

इहाँ पवनसुत हृदयँ बिचारा। राम काजु सुग्रीवँ बिसारा ॥

निकट जाइ चरनन्हि सिरुनावा। चारिहु विधि तेहि कहि समुझावा

सुनि सुग्रीवँ परम भय माना। बिषयँ मोर हरि लीन्हेउ ग्याना ॥

अब मारुतसुत दूत समूहा। पठवहु जहँ तहँ वानर जूहा ॥

कहहु पाख महुँ आव न जोई। मोरें कर ता कर बध होई ॥

तव हनुमंत बोलाए दूता। सब कर करि सनमान बहूता ॥

भय अरु प्रीति नीति देखराई। चले सकल चरनन्हि सिर नाई ॥

एहि अवसर लछिमन पुर आए। क्रोध देखि जहँ तहँ कपि धाए ॥

दो०—धनुष चढ़ाइ कहा तव जारि करउँ पुर छार ।

ब्याकुल नगर देखि तव आयउ वालिकुमार ॥ १९ ॥

चरन नाइ सिरु विनती कीन्ही । लछिमन अभय बाँह तेहि दीन्ही ॥
 क्रोधवत लछिमन मुनि काना । कह कपीस अति भयँ अकुलाना ॥
 सुनु हनुमंत संग ल तारा । करि विनती समुझाउ कुमारा ॥
 तारा सहित जाइ हनुमाना । चरन वंदि प्रभु सुजस बखाना ॥
 करि विनती मंदिर ल आए । चरन पखारि पलंग बैठाए ॥
 तब कपीस चरनन्हि सिरु नावा । गहि भुज लछिमन कंठ लगावा ॥
 नाथ त्रिपय सम मद कछु नाहीं । मुनि मन मोह काइ छन माहीं ॥
 सुनत विनीत वचन मुख पावा । लछिमन तेहि बद्धु विधि समुझावा
 पवन तनय सब कथा सुनाई । जेहि विधि गए दूत समुदाई ॥

श्लो०—हरपि चल सुधीव तब अंगदादि कपि साथ ।

रामानुज आगे करि आए जहें रघुनाथ ॥ २० ॥

नाइ चरन सिरु कह कर जोरी । नाथ मोहि कछु नाहिन खोरी ॥
 अतिसय प्रबल देव तब माया । छट्टइ राम करहु जो दाया ॥
 विपय बस्य सुर नर मुनि म्यामी । मैं पावैर पगु कपि अति कामी ॥
 नारि नयन सर जाहि न लागी । घोर क्रोध तम निमि जो जागी ॥
 लोभ पाँस जेहि गर न बैधाया । सो नर तुम्ह समान रघुराया ॥
 यह गुन साधन तें नहि होई । तुम्हरी कृपाँ पाव कोई कोई ॥
 तब रघुपति बोले मुमुकाई । तुम्ह प्रिय मोहि भरत जिमि भाई ॥
 अब सोइ जतनु करहु मन लाई । जेहि विधि सीता कें सुधि पाई ॥

श्लो०—एहि विधि होत बतकही आए वानर जूथ ।

नाना बरन सकल निसि देखिअ कोस बरूय ॥ २१ ॥

वानर कटक उमा में देखा । सो मूरख जो कब ~~क~~ देख

आइ राम पद नावहिं माथा । निरखि वदनु सब होहिं सनाथा ॥
 अस कपि एक न सेना माहीं । राम कुपलु जेहि पूछी नाहीं ॥
 यह कह्यु नहिं प्रभु कइ अधिकाई । विस्वरूप व्यापक रघुराई ॥
 ठाढ़े जहँ तहँ आयसु पाई । कह सुग्रीव सबहि समुझाई ॥
 राम काजु अरु मोर निहोरा । वानर जूथ जाहु चहुँ ओरा ॥
 जनकसुता कहँ खोजहु जाई । मास दिवस महुँ आएहु भाई ॥
 अवधि मेदि जो विनु सुधि पाएँ । आवइ बनिहि सो मोहि मराएँ ॥

दो०-वचन सुनत सब वानर जहँ तहँ चले तुरंत ।

तव सुग्रीवँ बोलाए अंगद नल हनुमंत ॥ २२ ॥

सुनहु नील अंगद हनुमाना । जामवंत मतिधीर सुजाना ॥
 सकल सुभट मिलिदच्छिन जाहु । सीता सुधि पूछेहु सब काहु ॥
 मन क्रमवचन सो जतन विचारेहु । रामचंद्र कर काजु सँवारेहु ॥
 भानु पीठि सेइअ उर आंगी । स्वामिहि सर्व भाव छल त्यागी ॥
 तजि माया सेइअ परलोका । मिटहिं सकल भवसंभव सोका ॥
 देह धरे कर यह फलु भाई । भजिअ राम सब काम विहाई ॥
 सोइ गुनग्य सोई बड़भागी । जो रघुवीर चरन अनुरागी ॥
 आयसु मागि चरन सिरु नाई । चले हरपि सुमिरत रघुराई ॥
 पाछें पवन तनय सिरु नावा । जानि काज प्रभु निकट बोलावा ॥
 परसा सीस सरोरुह पानी । कर मुद्रिका दीन्हि जन जानी ॥
 बहु प्रकार सीतहि समुझाएहु । कहि बल विरहवेगि तुम्ह आएहु ॥
 हनुमत जन्म सुफल करि माना । चलेउ हृदयँ धरि कृपानिधाना ॥
 जद्यपि प्रभु जानत सब बाता । राजनीति राखत सुरवाता ॥

दो०—चले सकल वन खोजत सरिता सर गिरि खोह ।

राम काज लयलीन मन बिसरा तन कर छोह ॥ २३ ॥
 कतहुँ होइ निसिचर सँ भेटा । प्रान लेहिँ एक एक चपेटा ॥
 बहु प्रकार गिरि कानन हेरहिँ । कोउ मुनि मिलइ ताहि सब घेरहिँ
 लागि तृपा अतिसय अकुलाने । मिलइ न जल धन गहन भुलाने ॥
 मन हनुमान कीन्ह अनुमाना । मरन चहत सब विनु जल पाना ॥
 चढ़ि गिरि सिखर चहुँ दिसि देखा । भूमि विवर एक कौतुक पंखा ॥
 चक्रवाक बक हंस उड़ार्हीं । बहुतक स्वर्ग प्रबिसहिँ तेहि माहीं ॥
 गिरि ते उतरि पवनसुत आवा । सब कहूँ लँ सोइ विवर देखावा ॥
 आगेँ केँ हनुमंतहि लीन्हा । पंठेँ विवर विलंबु न कीन्हा ॥

दो०—तीत जाइ उपवन घर सर विगसित बहु कंज ।

मंदिर एक रुचिर तहँ बैठि नारि तप पुंज ॥ २४ ॥

दूरि ते ताहि सपन्हि सिरु नावा । पूछेँ निज वृत्तांत सुनावा ॥
 तेहिँ तब कहा करहु जल पाना । खाहु सुरस सुंदर फल नाना ॥
 मञ्जु कीन्ह मधुर फल खाए । तामु निक्कट पुनिसब चलि आए
 तेहिँ सब आपनि कथा सुनाई । मँ अब जाव जहाँ रघुराई ॥
 भूदहु नयन विवर तजि जाहू । पँहहु सीतहि जनि पछिनाहू ॥
 नयन भूदि पुनि देखहिँ वीरा । ठाढ़े सकल सिंधु केँ तीरा ॥
 सो पुनि गई जहाँ रघुनाथा । जाइ कमल पद नाएसि माथा ॥
 नाना भाँति विनय तेहिँ कीन्ही । अनपायनी भगति प्रभु दीन्ही ॥

दो०—बदरीवन कहूँ सो गई प्रभु अग्या घरि सीस ।

उर धरि राम धरन जुग जे बंदत अब ईस ॥ २५ ॥

विचारहिं कपि मन माहीं । वीती अवधि काज कछु नाहीं ॥
 मिलि कहहिं परस्पर वाता । बिनु सुधि लएँ करब का भ्राता ॥
 अंगद लोचन भरि बारी । दुहुँ प्रकार भइ मृत्यु हमारी ॥
 न सुधि सीता कै पाई । उहाँ गएँ मारिहि कपिराई ॥
 मता वधे पर मारत मोही । राखा राम निहोर न ओही ॥
 पुनि पुनि अंगद कह सब पाहीं । मरन भयउ कछु संसय नाहीं ॥
 अंगद बचन सुनत कपि वीरा । बोलि न सकहिं नयन वह नीरा ॥
 छन एक सोच मगन होइ रहे । पुनि अस बचन कहत सब भए ॥
 हम सीता कै सुधि लीन्हें विना । नहिं जैहें जुबराज प्रवीना ॥
 अस कहि लवन सिंधु तट जाई । बैठे कपि सब दर्भ डसाई ॥
 जामवंत अंगद दुख देखी । कहीं कथा उपदेस बिसेपी ॥
 तात राम कहूँ नर जनि मानहु । निर्गुन ब्रह्म अजित अज जानहु ॥
 हम सब सेवक अति बड़भागी । संतत सगुन ब्रह्म अनुरागी ॥

दो०—निज इच्छाँ प्रभु अवतरइ सुर महि गो द्विज लागि ।
 सगुन उपासक संग तहँ रहहिं मोच्छ सब त्यागि ॥ २६ ॥

एहि विधि कथा कहहिं बहु भाँती । गिरि कंदराँ सुनी संपाती ॥
 बाहेर होइ देखि बहु कीसा । मोहि अहार दीन्ह जगदीसा ।
 आजु सबहि कहँ भच्छन करऊँ । दिन बहु चले अहार बिनु मरऊँ ॥
 कबहुँ न मिल भरि उदर अहारा । आजु दीन्ह विधि एकहिं बारा ॥
 डरपे गीध बचन सुनि काना । अब भा मरन सत्य हम जाना ॥
 कपि सब उठे गीध कहँ देखी । जामवंत मन सोच बिसेपी ॥
 कह अंगद विचारि मन माहीं । धन्य जटायू सम कोउ नाहीं ॥

राम काज कारन तनु त्यागी । हरि पुर गयउ परम वढ़भागी ॥
 मुनि खग हरप सोक जुत बानी । आवा निकट कपिन्ह भय मानी ॥
 तिन्हहि अभय करि पृछेसि जाई । कथा सकल तिन्ह ताहि सुनाई ॥
 मुनि संपाति बंधु कं करनी । रघुपति महिमा बहुविधि बरनी ॥

दो०—मोहि लै जाहु सिंधुतट देउं तिलाप्रलि ताहि ।

बचन सहाइ करवि मैं पंहुहु खोजहु जाहि ॥ २७ ॥

अनुज क्रियां करि सागर तीरा । कहि निज कथा सुनहु कपि वीरा ॥
 हम द्वौ बंधु प्रथम तरुनाई । गगन गए रधि निकट उड़ाई ॥
 तेज न सहि सक सो फिरि आवा । मैं अभिमानी रधि निअरावा ॥
 जरे पंख अति तेज अपारा । परेउं भूमि करि घोर चिकारा ॥
 मुनि एक नाम चंद्रमा ओही । लागी दया देखि करि मोही ॥
 बहु प्रकार तेहिं ग्यान सुनावा । देह जनित अभिमान छड़ाया ॥
 त्रेतां ब्रह्म मनुज तनु धरिही । तासु नारि निसिचर पति हरिही ॥
 तासु खोज पठइहि प्रभु दूता । तिन्हहि मिले तं होय पुनीता ॥
 जमिहहि पंख करसिं जनि चिंता । तिन्हहि देखाइ देहेसु तं सीता ॥
 मुनि कइ गिरा सत्य भइ आजू । मुनि मम बचन करहु प्रभु काजू ॥
 गिरि त्रिकूट ऊपर बस लंका । तहँ रह रावन सहज असंका ॥
 तहँ असोक उपवन जहँ रहई । सीता बैठि सोच रत अहई ॥

दो०—मैं देखेउं तुम्ह नाहीं गीषहि दृष्टि अपार ।

बूढ़ भयेंउं न त करतेउं कछुक सहाय तुम्हार ॥ २८ ॥

जो नाघइ सत जोजन सागर । कइ सो राम काज मति आगर ॥
 मोहि विलोकि धरहु मन धीरा । राम कृपां कसु

पापिउ जा कर नाम सुमिरहीं । अति अपार भवसागर तरहीं ॥
 तासु दूत तुम्ह तजि कदराई । राम हृदयँ धरि करहु उपाई ॥
 अस कहि गरुड़ गीधजव गयऊ । तिन्ह कें मन अति विसमय भयऊ ॥
 निज निज बल सब काहँ भापा । पार जाइ कर संसय राखा ॥
 जरठ भयउँ अब कहइ रिछेसा । नहिँ तन रहा प्रथम बल लेसा ॥
 जबहिँ त्रिविक्रम भए खरारी । तब मैं तरुन रहेउँ बल भारी ॥

दो०—बलि बाँधत प्रभु बाढ़ेउ सो तनु वरनि न जाइ ।

उभय घरी महँ दीन्हों सात प्रदच्छिन घाइ ॥ २९ ॥

अंगद कहइ जाउँ मैं पारा । जियँ संसय कछु फिरती बारा ॥
 जामवंत कह तुम्ह सब लायक । पठइअ किमि सबही कर नायक ॥
 कहइ रीछपति सुनु हनुमाना । का चुप साधि रहेहु बलवाना ॥
 पवन तनय बल पवन समाना । बुधि विवेक विग्यान निधाना ॥
 कवन सो काज कठिन जग माहीं । जो नहिँ होइ तात तुम्ह पाहीं ॥
 राम काज लागि तब अवतारा । सुनतहिँ भयउ पर्वताकारा ॥
 कनक वरन तन तेज विराजा । मानहुँ अपर गिरिन्ह कर राजा ॥
 सिंहनाद करि वारहिँ बारा । लीलहिँ नाघउँ जलनिधि खारा ॥
 सहित सहाय रावनहि मारी । आनउँ इहाँ त्रिकूट उपारी ॥
 जामवंत मैं पूँछउँ तोही । उचित सिखावनु दीजहु मोही ॥
 एतना करहु तात तुम्ह जाई । सीतहि देखि कहहु सुधि आई ॥
 तब निज भुजबल राजिव नैना । कौतुक लागि संग कपि सेना ॥

छं०—कपि सेन संग सँघारि निसिचर रामु सीतहि आनिहैं ।

त्रैलोक पावन सुत्रसु सुर मुनि नारदादि बखानिहैं ॥

जो सुनत गावन कहन समुजन परम पद नर पावट ।

रघुवीर पद पाथोज मधुकर दास नुलमी गावई ॥

दो०—भय भेषज रघुनाथ जमु सुनहि जे नर अरु नारि ।

तिन्ह कर सकल मनोगथ सिद्ध कहि त्रिसिरारि ॥ ३०(क) ॥

सो०—नीलोत्पल तन स्याम काम कोटि सांभा अधिक ।

सुनिअ तामु गुन ग्राम जामु नाम अघ खग अधिक ॥ ३०(ख) ॥

मासपारायण, तेईसवाँ विश्राम

इति श्रीमद्रामचरितमानसे सकलकलिकलुपविध्यंशने

चतुर्थः सांपानः समाप्तः ।

(किष्किन्धाकाण्ड समाप्त)



शरणागत विभीषण



श्रवन सुजसु सुनि आयउँ प्रभु भंजन भवभीर ।
त्राहि त्राहि आरति हसन सरन सुखद रघुवीर ॥

श्रीरामचरितमानस

पञ्चम सोपान

(सुन्दरकाण्ड)

श्लोक

शान्तं शाश्वतमप्रमेयमनघं निर्वाणशान्तिप्रदं
ब्रह्माशम्भुफणीन्द्रसेव्यमनिशं वेदान्तवेद्यं विभुम् ।
रामाख्यं जगदीश्वरं सुरगुरुं मायामनुष्यं हरिं
वन्देऽहं करुणाकरं रघुवरं भूपालचूडामणिम् ॥ १ ॥
नान्या स्पृहा रघुपते हृदयेऽस्मदीये
सन्धं वदामि च भवानखिलान्तरात्मा ।
भक्तिं प्रयच्छ रघुपुङ्गव निर्भरां मे
कामादिदोषरहितं कुरु मानसं च ॥ २ ॥
अतुलितबलधामं हेमशलाभद्रहं
दनुजवनकृशानुं क्षानिनामग्रगण्यम् ।

सकलगुणनिधानं
रघुपतिप्रियभक्तं
वातजातं
नमामि ॥ ३ ॥

वंत के वचन सुहाए। सुनि हनुमंत हृदय अति भाए ॥
लगि मोहि परिखेहु तुम्ह भाई। सहि दुख कंद मूल फल खाई ॥
ब लगि आवौं सीतहि देखी। होइहि काजु मोहि हरप बिसेपी ॥
ह कहि नाइ सबन्हि कहूँ माथा। चलेउ हरपि हियँ धरि रघुनाथा ॥
सँधु तीर एक भूधर सुंदर। कौतुक कूदि चढ़ेउ ता ऊपर ॥
बार बार रघुवीर सँभारी। तरकेउ पवनतनय बल भारी ॥
जेहि गिरि.चरन देइ हनुमंता। चलेउ सो गा पाताल तुरंता ॥
जिमि अमोघ रघुपति करवाना। एही भाँति चलेउ हनुमाना ॥
जलनिधि रघुपति दूत विचारी। तैं मैनाक होहि श्रमहारी ॥

दो०-हनुमान तेहि परसा कर पुनि कोन्ह प्रनाम।
राम काजु कीन्हें विनु मोहि कहाँ विश्राम ॥ १ ॥

जात पवनसुत देवन्ह देखा। जानैं कहूँ बल बुद्धि बिसेपा ॥
सुरसा नाम अहिन्ह कै मर्ता। पठइन्हि आइ कही तेहि वाता ॥
आजु सुरन्ह मोहि दीन्ह अहारा। सुनत वचन कह पवनकुमारा ॥
राम काजु करि फिरि मैं आवौं। सीता कइ सुधि प्रभुहि सुनावौं ॥
तब तब बदन पैठिहउँ आई। सत्य कहउँ मोहि जान दे माई ॥
कवनेहुँ जतन देइ नहिं जाना। ग्रससि न मोहि कहेउ हनुमाना ॥
जोजन भरि तेहि बदनु पसारा। कपि तनु कीन्ह दुगुन बिस्तारा ॥
सोरह जोजन मुख तेहिं ठयऊ। तुरत पवनसुत वत्तिस भयऊ ॥
जस जस सुरसा बदनु बढ़ावा। तासु दून कपि रूप देखाव ॥

सत जोजन तेहि आनन कीन्हा । अति लघु रूप पवनसुत लीन्हा ॥
 वदन पड़िठि पुनि बाहर आवा । मागा विदा ताहि सिरु नावा ॥
 मोहि मुरन्ह जेहि लागि पठावा । बुधि बल मरमु तोर में पावा ॥

शं०-राम काजु सधु करिहहु तुम्ह बल बुद्धि निधान ।

आसिप देह गई सो हरषि चलेउ हनुमान ॥ २ ॥

निसिचरि एक सिंधु महुँ रहई । करि माया नभु के खग गहई ॥
 जीव जंतु जे गगन उड़ाहीं । जल विलोकि तिन्ह कै परिछाहीं
 गहइ छाहँ सक सो न उड़ाई । एहि विधि सदा गगनचर खाई ॥
 सोइ छल हनुमान कहँ कीन्हा । तासु कपडु कपि तुरतहिं चीन्हा ॥
 ताहि मारि मारुतसुत बीरा । धारिधि पार गयउ मतिधीरा ॥
 तहाँ जाइ देखी वन सोभा । गुंजत चंचरीक मधु लोभा ॥
 नाना तरु फल फूल मुहाए । खग मृग वृंद देखि मन भाए ॥
 मूल बिसाल देखि एक आगें । ता पर धाइ चढ़ेठ भय त्यागें ॥
 उमान कछु कपि कै अधिकाई । प्रभु प्रताप जो कालहि खाई ॥
 गिरि पर चढ़ि लंका तेहि देखी । कहि न जाइ अति दुर्ग बिसेपी ॥
 अति उतंग जलनिधि चहु पासा । कनक कोट कर परम प्रकासा ॥

छं०-कनक कोट विचित्र मनि श्रुत सुंदरायतना घना ।

चउहट्ट हट्ट सुवट्ट बीथी चारु पुर बहु विधि घना ॥

गज धाजि खचर निकर पदचर रथ वरूयग्हि को गने ।

बहुरूप निसिचर जूथ अतिबल सेन बरनत नहिं घने ॥ १ ॥

वन बाग उपवन घाटिका सर कूप बापी सोहहो ।

नर नाग मुर गंधर्व कन्या रूप मुनि मन मोहहो ॥

कहुँ माल देह विसाल सैल समान अतिबल गर्जहीं ।
 नाना अखारेन्ह भिरहिँ बहुविधि एक एकन्ह तर्जहीं ॥ २ ॥
 करि जतन भट कोटिन्ह विकट तन नगर चहुँ निसिरच्छहीं
 कहुँ महिष मानुष धेनु खर अज खल निसाचर भच्छहीं ॥
 एहि लागि तुलसीदास इन्ह की कथा कछु एक हे कही ।
 रघुवीर सर तीरथ सरीरन्हि त्यागि गति पैहहिँ सही ॥ ३ ॥

दो०—पुर रखवारे देखि बहु कपि मन कीन्ह विचार ।
 अति लघु रूप धरौँ निसि नगर करौँ पइसार ॥ ३ ॥

मसक समान रूप कपि धरी । लंकहि चलेउ सुमिरिनरहरी ॥
 नाम लंकिनी एक निसिचरी । सो कह चलेसि मोहि निंदरी ॥
 जानेहि नहीं मरसु सठ मोरा । मोर अहार जहाँ लगि चोरा ॥
 मुठिका एक महा कपि हनी । रुधिर वमत धरनीँ ढनमनी ॥
 पुनि संभारि उठी सो लंका । जोरि पानि कर विनय ससंका ॥
 जब रावनहि ब्रह्म वर दीन्हा । चलत विरंचि कहा मोहि चीन्हा ॥
 बिकल होसि तैं कपि कें मारे । तब जानेसु निसिचर संघारे ॥
 तात मोर अति पुन्य बहूता । देखेउँ नयन राम कर दूता ॥

दो०—तात स्वर्ग अपवर्ग सुख धरिअ तुला एक अंग ।
 तूल न ताहि सकल मिलि जो सुख लव सतसंग ॥ ४ ॥

प्रविसि नगर कीजे सब काजा । हृदयँ राखि कोसलपुर राज
 गरल सुधा रिपु करहिँ मितार्ई । गोपद सिंधु अनल सितल
 गरुड़ सुमेरु रेनु सम ताही । राम कृपा करि चितवा ज
 अति लघु रूप धरेउ हनुमाना । पैठा नगर सुमिरि भगवा

मंदिर मंदिर प्रति करि सोधा । देखे जहँ तहँ अगनित जोधा ॥
 गयउ दसानन मंदिर माहीं । अति विचित्र कहि जात सोनाहीं ॥
 सयन किएँ देखा कपि तेही । मंदिर महुँ न दीखि बँदेही ॥
 भवन एक पुनि दीख सुहावा । हरि मंदिर तहँ भिन्न बनावा ॥

दो०—रामायुध अंकित गृह सोभा वरनि न जाइ ।

नव तुलसिका बृंद तहँ देखि हरप कपिराइ ॥ ५ ॥

लंका निसिचर निकर निवासा । इहाँ कहाँ सज्जन कर वासा ॥
 मन महुँ तरक करैँ कपि लागा । तेहीं समय विभीषनु जागा ॥
 राम राम तेहिँ सुमिरन कीन्हा । हृदयँ हरप कपि सज्जन चीन्हा ॥
 एहिसन दृढि करिहउँ पहिचानी । साधु ते होइ न कारज हानी ॥
 विप्र रूप धरि वचन सुनाए । सुनत विभीषन उठि तहँ आए ॥
 करि प्रनाम पूँछी कुसलाई । विप्र कहइ निज कथा पुझाई ॥
 की तुम्ह हरि दासन्ह महँ कोई । मोरें हृदय प्रीति अति होई ॥
 की तुम्ह रामु दीन अनुरागी । आयहु मोहि करन बड़भागी ॥

दो०—तव हनुमंत फही सब राम कथा निज नाम ।

सुनत जुगल तन पुलक मन मगन सुमिरि गुन ग्राम ॥ ६ ॥

सुनहु पवनसुत रहनि हमारी । जिमिदसनन्हि महुँ जीभ विचारी ॥
 तात कबहुँ मोहि जानि अनाथा । करिहहिँ कृपा भानुकुल नाथा ॥
 तामम तनु कछु साधन नाहीं । प्रीति न पद सरोज मन माहीं ॥
 अब मोहि भा भरोस हनुमंता । विनु हरिकृपा मिलहिँ नहिँ संता ॥
 जाँ रघुवीर अनुग्रह कीन्हा । तौ तुम्ह मोहि दरसु दृढि दीन्हा ॥
 सुनहु विभीषन प्रभु कैँ रीती । करहिँ सदा सेवक पर प्रीती ॥

हु कवन मैं परम कुलीना । कपि चंचल सवहीं विधि हीना ॥
त लेइ जो नाम हमारा । तेहि दिन ताहि न मिलै अहारा ॥

१०-अस मैं अधम सखा सुनु मोह पर खुबीर ।
कीन्ही कृपा सुमिरि गुन भरे विलोचन नीर ॥ ७ ॥

जानतहूँ अस स्वामि विसारी । फिरहिं ते काहे न होहिं दुखारी ॥
एहि विधि कहत राम गुन ग्रामा । पावा अनिर्वाच्य विश्रामा ॥
पुनि सब कथा विभीषन कही । जेहि विधि जनकसुता तहँ रही ॥
तव हनुमंत कहा सुनु भ्राता । देखी चहँ जानकी माता ॥
जुगुति विभीषन सकल सुनाई । चलेउ पवनसुत विदा कराई ॥
करि सोइ रूप गयउ पुनि तहवाँ । बन असोक सीता रह जहवाँ ॥
देखि मनहि महुँ कीन्ह प्रनामा । बैठेहिं वीति जात निसि जामा ॥
कृस तनु सीस जटा एक वेनी । जपति हृदयँ रघुपति गुन श्रेनी ॥
दो०-निज पद नयन दिँ मन राम पद कमल लीन ।

परम दुखी भा पवनसुत देखि जानकी दीन ॥ ८ ॥
तरु पल्लव महुँ रहा लुकाई । करइ विचार करौ का भाई ।
तेहि अवसर रावनु तहँ आवा । संग नारि बहु किए बनावा ।
वहु विधिखल सीतहि समुझावा । साम दान भय भेद देखावा ।
कह रावनु सुनु सुमुखि सयानी । मंदोदरी आदि सब रानी ।
तव अनुचरीं करउँ पन मोरा । एक वार विलोकु मम ओ ।
तुन धरि ओट कहति वैदेही । सुमिरि अवधपति परम सने ।
सुनु दसमुख खद्योत प्रकासा । क्यहूँ कि नलिनी करइ वि ।
अस मन समुझ कहति जानकी । खल सुधि नहिं रघुबीर वा ।

सठ सनें हरि आनेहि मोही । अधम निलज लाज नहिं तोही ॥

दो०—आपुहि सुनि सघोत सम रामहि भानु समान ।

परुष वचन सुनि कादि असि बोला अति खिसिआन ॥ ९ ॥

सीता तें मम कृत अपमाना । कटिहउँ तव सिर कठिन कृपाना ॥

नाहिं त सपदि मानु मम धानी । सुमुखि होति न त जीवन हानी ॥

स्याम सगोज दाम सम सुंदर । प्रभु भुज करि कर सम दसकंधर ॥

सो भुज कंठ कि तव असि घोरा । सुनु सठ अस प्रवान पन मोरा ॥

चंद्रहास हरु मम परितापं । रघुपति विरह अनल संजातं ॥

सीतल निसित बहसि धर धारा । कह सीता हरु मम दुख भारा ॥

सुनत वचन पुनि मारन धावा । मयवनयाँ कहि नीति बुझावा ॥

फहेसि सकल निसि चरिन्ह बोलाई । सीतहि घेहुषिधि त्रासहु जाई ॥

मास दिवस महुँ कहा न माना । तौ में मारवि कादि कृपाना ॥

दो०—भयत गयउ दसकंधर इहाँ पिताविनि वृंद ।

सीतहि प्राप्त देखावहि धरहि रूप बहु मंद ॥ १० ॥

त्रिजटा नाम राच्छसी एका । राम चरन रति निपुन विवेका ॥

मयन्हौ बोलि सुनाएमि सपना । सीतहि सेह करहु हित अपना ॥

सपनें धानर लंका जारी । जातुधान सेना मय मारी ॥

खर आरुढ़ नगन दससीसा । मुंडित सिर खंडित भुज वीसा ॥

एहि विधि सो दच्छिन दिसि जाई । लंका मनहुँ त्रिभीषन पाई ॥

नगर किरी रघुवीर दोहाई । तव प्रभु सीता बोलि पठाई ॥

यह सपना में कहउँ पुकारी । होइहि सत्य गएँ दिन चारी ॥

तासु वचन सुनि ते सब डरीं । जनकमुना के चरनन्हि परीं ॥

दो०—जहँ तहँ गई सकल तव सीता कर मन सोच ।

मास दिवस बीते मोहि मारिहि निसिचर पोच ॥ ११ ॥

त्रिजटा सन बोलीं कर जोरी । मातु विपति संगिनि तैं मोरी ॥
 तजौं देह करु वेगि उपाई । दुसह विरहु अब नहिँ सहि जाई ॥
 आनि काठ रचु चिता बनाई । मातु अनल पुनि देहि लगाई ॥
 सत्य करहि मम प्रीति सयानी । सुनै को श्रवन सुल सम बानी ॥
 सुनत वचन पद गहि समुझाएसि । प्रभु प्रताप बल सुजसु सुनाएसि
 निसिन अनल मिल सुनु सुकुमारी । अस कहि सो निज भवन सिधारी
 कह सीता विधि भा प्रतिकूला । मिलिहि न पावक मिटिहि न सुला
 देखिअत प्रगट गगन अंगारा । अविनि न आवत एकड तारा ॥
 पावकमयससि स्रवत न आगी । मानहुँ मोहि जानि हतभागी ॥
 सुनहि विनय मम विटप असोका । सत्य नाम करु हरु मम सोका ॥
 नूतन किसलय अनल समाना । देहि अग्निनि जनि करहि निदाना
 देखि परम विरहाकुल सीता । सो छन कपिहि कल्प सम बीता ॥

सो०—कपि करि हृदयँ विचार दीन्हि मुद्रिका डारि तव ।

जनु असोक अंगार दीन्ह हरपि उठि कर गहेउ ॥ १२ ॥

तव देखी मुद्रिका मनोहर । राम नाम अंकित अति सुंदर ॥
 चकित चितव मुदरी पहिचानी । हरप त्रिपाद हृदयँ अङ्गुलानी ॥
 जीति को सकइ अजय रघुराई । माया तैं असि रचि नहिँ जाई ॥
 सीता मन विचार कर नाना । मधुर वचन बोलेउ हनुमाना ॥
 रामचंद्र गुन बरनैँ लागा । सुनतहिँ सीता कर दुख भागा ॥
 लागीं सुनैँ श्रवन मन लाई । आदिहु तैं सब कथा सुनाई ॥

श्रवनामृत जेहि कथा सुहाई । कही सो प्रगट होति किन भाई ॥
 तव हनुमंत निकट चलि गयऊ । फिरि बँठीं मन विममय भयऊ ॥
 राम दूत मैं मातु जानकी । सत्य सपथ करुनानिधान की ॥
 यह मुद्रिका मातु मैं आनी । दीन्हिराम तुम्ह कहँ सहिदानी ॥
 नर धानरहि संग कहु कैगें । कही कथा भइ संगति जैसैं ॥

दो०—कपि के वचन सप्रेम सुनि उपजा मन विस्वास ।

जाना मन क्रम वचन यह कृपासिंधु कर दास ॥ १३ ॥

हरिजन जानि प्रीति अति गाढ़ी । सजल नयन पुलकावलि गाढ़ी ॥
 यूढ़त धिरह जलधि हनुमाना । भयहु तात मो कहँ जलजाना ॥
 अय कहु कुसल जाउँ बलिहारी । अनुज सहित सुख भवन खरारी ॥
 कोमलचित कृपाल रघुराई । कपि केहि हेतु धरी निठुराई ॥
 सहज दानि सेवक सुखदायक । कबहुँक सुरति करत रघुनायक ॥
 कबहुँ नयन मम सीतल ताता । होइहहि निरखि स्याम मृदु गाता ॥
 वचनु न आव नयन भरे घारी । अहह नाथ हाँ निषट विसारी ॥
 देखि परम धिरहाकुल सीता । घोला कपि मृदु वचन विनीता ॥
 मातु कुसल प्रभु अनुज समेता । तव दुख दुखी सुकृपा निकेता ॥
 जनि जननी मानहु जियँऊता । तुम्ह ते प्रेम्नु राम केँ दूना ॥

दो०—रघुपति फर संदेसु अब सुनु जननी धरि धीर ।

अस कहि कपि गदगद भयउ भरे विलोचन नीर ॥ १४ ॥

कहेउ राम पियोग तव सीता । मो कहँ सकल भए विपरीता ॥
 नव तरु किसलय मनहुँ कृसान् । कालनिशा सम निसि ससि भान् ॥
 कुचलय विपिन कुंत वन सरिसा । वारिद तपत तेल जनु धरिसा ॥

जे हित रहे करत तेइ पीरा । उरग स्वास सम त्रिविध समीरा ॥
 कहेहू तें कछु दुख घटि होई । काहि कहौ यह जान न कोई ॥
 तत्व प्रेम कर मम अरु तोरा । जानत प्रिया एकु मनु मोरा ॥
 सो मनु सदा रहत तोहि पाहीं । जानु प्रीति रसु एतनेहि माहीं ॥
 प्रभु संदेसु सुनत बैदेही । मगन प्रेम तन सुधि नहिं तेही ॥
 कह कपि हृदयँ धीर धरु माता । सुमिरु राम सेवक सुखदाता ॥
 उर आनहु रघुपति प्रभुताई । सुनि मम वचन तजहु कदराई ॥
 दो०—निसिचर निकर पतंग सम रघुपति वान कसानु ।

जननी हृदयँ धीर धरु जरे निसाचर जानु ॥ १५ ॥

जौं रघुवीर होति सुधि पाई । करते नहिं विलंबु रघुराई ॥
 राम वान रवि उएँ जानकी । तस बरूथ कहँ जातुधान की ॥
 अबहिं मातु मैं जाऊँ लवाई । प्रभु आयसु नहिं राम दोहाई ॥
 कछुक दिवस जननी धरु धीरा । कपिन्ह सहित अइहहिं रघुवीरा ॥
 निसिचर मारि तोहि लै जैहहिं । तिहुँ पुर नारदादि जसु गैहहिं ॥
 हैं सुत कपि सब तुन्हहि समाना । जातुधान अति भट बलवाना ॥
 मोरें हृदय परम संदेहा । सुनि कपि प्रगट क्रीन्हि निज देहा ॥
 कनक भूधराकार सरीरा । समर भयंकर अतिबल वीरा ॥
 सीता मन भरोस तव भयेऊ । पुनि लघु रूप पवनसुत लयेऊ ॥
 दो०—सुनु माता साखामृग नहिं बल बुद्धि विसाल ।

प्रभु प्रताप तें गरुडहि खाइ परम लघु व्याल ॥ १६ ॥

मन संतोष सुनत कपि वानी । भगति प्रताप तेज बल सानी ॥
 आसिप दीन्हि रामप्रिय जाना । होहु तात बल सील निधाना ॥

अजर अमर गुननिधि सुत होह । करहुँ बहुत रघुनायक छोह ॥
 करहुँ कृपा प्रभु अस सुनि काना । निर्भर प्रेम भगन हनुमाना ॥
 वार वार नाएसि पद सीसा । बोला वचन जोरि कर कीसा ॥
 अब कृतकृत्य भयउँ मैं माता । आसिप तव अमोघ धिग्याता ॥
 सुनहु मातु मोहि अतिसय भूखा । लागि देखि सुंदर फल रूखा ॥
 सुनु सुत करहिं पिपिन रखवारी । परम सुभट रजनीचर भारी ॥
 तिन्ह कर भय माता मोहि नाहीं । जाँ तुम्ह सुख मानहु मन माहीं ॥

दो०—देखि बुद्धि बल निपुन कपि कहेउ जानकी जाहु ।

रघुपति चरन हृदयें धरि तात मधुर फल खाहु ॥ १७ ॥

चलैउ नाइ सिरु पंठैउ वागा । फल खाएसि तरु तोरें लागा ॥
 रहे तहाँ बहु भट रखवारे । कछु मारेसि कछु जाइ पुकारे ॥
 नाथ एक आत्रा कपि भारी । तेहिं अमोक वाटिका उजारी ॥
 खाएसि फल अरु चिटप उपारे । रच्छक मर्दि मर्दि महि डारे ॥
 सुनि रावन पठए भट नाना । तिन्हहि देखि गर्जेउ हनुमाना ॥
 सय रजनीचर कपि संधारे । गए पुकारत कछु अधमारे ॥
 पुनि पठयउ तेहिं अच्छकुमारा । चला संग लै सुभट अपारा ॥
 आवत देखि चिटप गहि तर्जा । ताहि निपाति महापुनि गर्जा ॥

दो०—कछु मारेसि कछु मर्देसि कछु धिलएसि धरि धूरि ।

कछु पुनि जाइ पुकारे प्रभु मर्कट बल भूरि ॥ १८ ॥

सुनि सुत वध लंकैस रिसाना । पठएसि मेघनाद चलवाना ॥
 मारसि जनि सुत वाँधेसु ताही । देखिअ कपिहि कहाँ कर आही ॥
 चला इंद्रजित अतुलित जोधा । वंधु निधन सुनि उपजा क्रोधा ॥

पि देखा दारुन भट आवा । कटकटाइ गर्जा अरु धावा ॥
 ति बिसाल तरु एक उपारा । विरथ कीन्ह लंकेस कुमारा ॥
 हे महाभट ताके संगी । गहि गहि कपि मर्दइ निज अंगा ॥
 तेन्हहि निपाति ताहि संन बाजा । भिरे जुगल मानहुँ गजराजा ॥
 मुठिका मारि चढ़ा तरु जाई । ताहि एक छन मुरुछा आई ॥
 उठि बहोरि कीन्हिसि बहु माया । जीति न जाइ प्रभंजन जाया ॥

दो०—ब्रह्म अस्त्र तेहिँ साँधा कपि मन कीन्ह विचार ।
 जौ न ब्रह्मसर मानउँ महिमा भिटइ अपार ॥ १९ ॥

ब्रह्मबान कपि कहुँ तेहिँ मारा । परतिहुँ बार कटक संघारा ॥
 तेहिँ देखा कपि मुरुछित भयऊ । नागपास बाँधेसि लै गयऊ ॥
 जासु नाम जपि सुनहु भवानी । भव बंधन काटहिँ नर ग्यानी ॥
 तासु दूत कि बंध तरु आवा । प्रभु कारज लागि कपिहिँ बँधावा ॥
 कपि बंधन सुनि निसिचर धाए । कौतुक लागि सभाँ सब आए ॥
 दसमुख सभा दीखि कपि जाई । कहिन जाइ कछु अति प्रभुताई ॥
 कर जोरें सुर दिसिप विनीता । भृकुटि विलोकत सकल सभैता ॥
 देखि प्रताप न कपि मन संका । जिमि अहिगन महुँ गरुड असंक

दो०—कपिहि विलोकि दसानन विहसा कहि दुवाँद ।
 सुत बध सुरति कीन्हि पुनि उपजा हृदयँ विपाद ॥ २० ॥

कह लंकेस कवन तैं कीसा । केहि केंबल घालेहि वन खी
 की धौँ श्रवन सुनेहि नहिँ मोही । देखउँ अति असंक सठ तो
 मारे निसिचर केहिँ अपराधा । कहु सठ तोहि न प्रान कइ व
 सुनु रावन ब्रह्मांडु निकाया । पाइ जासु बल विरचति म

जाके बल विरांचि हरि ईसा । पालत सृजत हरत दससीसा ॥
जा बल सीस धरत सहसानन । अंडकोस समेत गिरि कानन ॥
धरइ जो विविध देह सुरवाता । तुम्ह से सठन्ह सिखावनु दाता ॥
हर कोदंड कठिन जेहिं भंजा । तेहि समेत नृप दल मद गंजा ॥
खर दूपन त्रिसिरा अरु वाली । वधे सकल अतुलित बलशाली ॥

दो०—जाके बल लपलेस तें जितेहु चराचर धारि ।

तासु दूत में जा करि हरि आनेहु प्रिय नारि ॥ २१ ॥

जानउँ मैं तुम्हारि प्रभुताई । सहसबाहु सन परी लराई ॥
समरपालि सन करि जसु पावा । सुनि कपि वचन बिहसि बिहरावा
खायउँ फल प्रभु लागी भूखा । कपि सुभाष तें तोरेउँ रूखा ॥
सब कें देह परम प्रिय म्यामी । मारहि मोहि कुमास्य गामी ॥
जिन्ह मोहि मारा ते मैं मारे । तेहि पर बाँधेउँ तनयँ तुम्हारे ॥
मोहि न फलु बाँधे कइ लाजा । कोन्ह चहउँ निज प्रभु कर काजा ॥
बिनती करउँ जोरि कर रावन । सुनहु मान तजि मार सिखावन ॥
देखहु तुम्ह निज कुलहि बिचारी । अम तजि भजहु भगत भय हारी
जाके डर अति काल डेराई । जो सुर असुर चराचर खाई ॥
तासों धयरु कवहुँ नहिं कीजै । मारे कहें जानकी दीजै ॥

दो०—प्रनतपाल रघुनायक करुना सिंधु सरारि ।

गएँ तरन प्रभु राखिहैं तय अपराध बिसारि ॥ २२ ॥

राम चरन पंकज उर धरह । लंका अचल राजु तुम्ह करह ॥
रिपि पुलस्ति जसु विमल मयंका । तेहि ससि महुँ जनि होहु कलंका
राम नाम बिनु गिरा न सोहा । देखु जिनाबिभ्यागि ॥

वसन हीन नहिं सोह सुरारी। सब भूपन भूपित बर नारी ॥
 राम विमुख संपति प्रभुताई। जाइ रही पाई विनु पाई ॥
 सजल मूल जिन्ह सरितन्ह नाहीं। बरपि गएँ पुनि तवहिं सुखाहीं ॥
 सुनु दसकंठ कहउँ पन रोपी। विमुख राम त्राता नहिं कोपी ॥
 संकर सहस विष्णु अज तोही। सकहिं न राखि राम कर द्रोही ॥

दो०—मोहमूल बहु सूल प्रद त्यागहु तम अभिमान ।

भजहु राम रघुनायक कृपा सिंधु भगवान ॥ २३ ॥

जदपि कही कपि अति हित वानी। भगति विवेक बिरति नय सानी
 बोला विहसि महा अभिमानी। मिलाहमहि कपि गुर वड ग्यानी
 मृत्यु निकट आई खल तोही। लागेसि अधम सिखावन मोही ॥
 उलटा होइहि कह हनुमाना। मतिभ्रम तोर प्रगट मैं जाना ॥
 सुनि कपि वचन बहुत खिसिआना। बेगि न हरहु मूढ़ कर प्राणा ॥
 सुनत निसाचर मारन धाए। सचिवन्ह सहित विभीषनु आए ॥
 नाइ सीस करि विनय बहुता। नीति विरोध न मारिअ दूता ॥
 आन दंड कछु करिअ गोसाँई। सबहीं कहा मंत्र भल भाई ॥
 सुनत विहसि बोला दसकंधर। अंग भंग करि पठइअ चंद्र ॥

दो०—कपि के समता पूँछ पर सबहि कहउँ समुझाइ ।

तेल बोरि पट बाँधि पुनि पावक देहु लगाइ ॥ २४ ॥

पूँछहीन वानर तहँ जाइहि। तब सठ निज नाथहि लइ आइहि ॥
 जिन्ह के कीन्हिसि बहुत बड़ाई। देखउँ मैं तिन्ह के प्रभुताई ॥
 वचन सुनत कपि मन मुसुकाना। भइ सहाय सारद मैं जाना ॥
 जातुधान सुनि रावन वचना। लागे रचैं मूढ़ सोइ रचना ॥

रहा न नगर बसन घृत तेला। बाढ़ी पूँछ कीन्ह कपि खेला ॥
 कौतुक कहँ आए पुरवासी। मारहिँ चरन करहिँ बहु हाँसी ॥
 बाजहिँ ढोल देहिँ सब तारी। नगर फेरि पुनि पूँछ प्रजारी ॥
 पावक जरत देखि हनुमंता। भयउ परम लघुरूप तुगंता ॥
 निशुक्ति चढ़ेउ कपि कनक अटारी। भई सभित निसाचर नारी ॥

दो०—हरि प्रेरित तेहि अवसर चलं मरुत उनचास ।

अटहास करि गर्जा कपि यदि लाग अकास ॥ २५ ॥

देह विषाल परम हरुआई। मंदिर तें मंदिर चढ़ धाई ॥
 जरइ नगर भा लोग विहाला। झपट लपट बहु कोटि कराला ॥
 तात मातु हा मुनिअ पुकारा। एहिँ अवसर को हमहि उवारा ॥
 हम जो कहा यह कपि नहिँ होई। बानर रूप धरें सुर कोई ॥
 साधु अवग्या कर फलु ऐसा। जरइ नगर अनाथ कर जैसा ॥
 जारा नगरु निमिष एक माहीं। एक विभीषन कर गृह नाहीं ॥
 ता फर दूत अनल जेहिँ सिरिजा। जरा न सो तेहि कारण गिरिजा ॥
 उलटि पलटि लंका सब जारी। कृदि परा पुनि सिंधु मझारी ॥

दो०—पूँछ बुझाई खोई श्रम धरि लघु रूप बहोरि ।

जनकसुता कें आगे टाढ़ भयउ कर जोरि ॥ २६ ॥

मातु मोहि दीजे कलु चीन्हा। जसैं रघुनायक मोहि दीन्हा ॥
 चूड़ामनि उतारि तव दयऊ। हरप समेत पवनसुत लयऊ ॥
 कहेंहु तात अस मोर प्रनामा। सब प्रकार प्रभु पूजनकामा ॥
 दीन दयाल विरिहु संधारी। हरहु नाथ मम संकट भारी ॥
 तात सकसुत कथा सुनाएहु। बान प्रताप प्रभु सग

मास दिवस महँ नाथु न आवा । तौ पुनि मोहि जिअत नहिं पावा ॥
 कहु कपि केहि विधि राखैं प्राणा । तुम्हह तात कहत अब जाना ॥
 तोहि देखि सीतलि भइ छाती । पुनि मो कहँ सोइ दिनु सो राती ॥

दो०—जनकसुतहि समुझाइ करि बहु विधि धीरजु दीन्ह ।

चरन कमल सिरु नाइ कपि गवनु राम पहिं कीन्ह ॥ २७ ॥

चलत महाधुनि गर्जेसि भारी । गर्भ स्रवहिं सुनि निसिचर नारी ॥
 नाधि सिंधु एहि पारहि आवा । स्रवद किलिकिला कपिन्ह सुनावा
 हरपे सब विलोकि हनुमाना । नूतन जन्म कपिन्ह तत्र जाना ॥
 मुख प्रसन्न तन तेज विराजा । कीन्हेसि रामचंद्र कर काजा ॥
 मिले सकल अति भए सुखारी । तलफत मीन पाव जिमि वारी ॥
 चले हरपि रघुनायक पासा । पूँछत कहत नवल इतिहासा ॥
 तत्र मधुवन भीतर सब आए । अंगद संमत मधु फल खाए ॥
 रखवारे जब वरजन लागे । मुष्टि प्रहार हनत नव भागे ॥

दो०—जाइ पुकारे ते सब वन उजार जुवराज ।

सुनि सुग्रीव हरप कपि करिं आए प्रभु काज ॥ २८ ॥

जौं न होति सीता सुधि पाई । मधुवन के फल सकहिं कि खाई ॥
 एहि विधि मन विचार कर राजा । आइ गए कपि सहित समाजा ॥
 आइ स्रवन्हि नावा पद सीसा । मिलेउ स्रवन्हि अति प्रेम कपीसा ॥
 पूँछी कुसल कुसल पद देखी । राम कृपाँ भा काजु बिसेपी ॥
 नाथ काजु कीन्हेउ हनुमाना । राखे सकल कपिन्ह के प्राणा ॥
 सुनि सुग्रीव बहुरि तेहि मिलेऊ कपिन्ह सहित रघुपति पहिं चलेऊ
 राम कपिन्ह जब आवत देखा । किएँ काजु मन हरप बिसेपा ॥

फटिक सिला बँटे डौं भाई। परे सकल कपि चरनन्हि जाई ॥

दो०—प्रीति सहित सब भेटे रघुपति करुना पुंज ।

पूँछी कुसल नाथ अब कुसल देगि पद कंज ॥ २९ ॥

जामवंत कह सुनु रघुराया। जा पर नाथ करहु तुम्ह दाया ॥

ताहि सदा सुभ कुसल निरंतर। सुर नर मुनि प्रसन्न ता ऊपर ॥

सोइ बिजई यिनई गुन सागर। तासु मुजसु त्रैलोक उजागर ॥

प्रभु की कृपा भयउ सबु काजू। जन्म हमार सुफल भा आजू ॥

नाथ पवनसुत कीन्हि जो करनी। सहसहुँ मुख न जाइ सो बरनी ॥

पवनतनय के चरित सुहाए। जामवंत रघुपतिहि मुनाए ॥

सुनत कृपानिधि मन अति भाए। पुनि हनुमान हरपि हियँ लाए ॥

कहहु तात केहि भाँति जानकी। रहति करति रच्छाम्यप्रान की ॥

दो०—नाम पाहरू दिवस निसि प्यान तुम्हार कराट ।

लोचन निज पद जंत्रित जाहि प्रान केहि बाट ॥ ३० ॥

चलत मोहि चूड़ामनि दीन्ही। रघुपति हृदयँ लाइ सोइ लीन्ही ॥

नाथ जुगल लोचन भरि वारी। बचन कहे कलु जनककुमारी ॥

अनुज समेत गहेहु प्रभु चरना। दीन बंधु प्रनतारति हरना ॥

मन क्रम बचन चरन अनुरागी। केहि अपराधनाथ हँ त्यागी ॥

अग्रगुन एक मोर में माना। विछुरत प्रान नकीन्ह पयाना ॥

नाथ सो नयनन्हि को अपराधा। निसरत प्रान करहिं हठि बाधा ॥

विरह अगिनि तनु तूल समीरा। स्वास जरइ छन माहिं सरीरा ॥

नयन स्रवहिं जलु निज हित लागी। जरँ न पाव देह विरहागी ॥

सीता के अति विपति विसाला। यिनहिं कहँ भलि

दो०--गिगिगि गिगिगि करुनानिधि जाहि कल्प सम वीति ।

धेगि चलिअ प्रभु आनिअ भुज बल खल दल जीति ॥ ३१ ॥

सुनि सीता दुख प्रभु सुख अयना । भरि आए जलराजिव नयना ॥
 वचन कायँ मन मम गति जाही । सपनेहुँ वृद्धिअ विपति किताही ॥
 कह हनुमंत विपति प्रभु सोई । जव तव सुमिरन भजन न होई ॥
 कैतिक वात प्रभु जातुधान की । रिपुहि जीति आनिवी जानकी ॥
 सुनु कपि तोहि समान उपकारी । नहिँ कोउ सुर नर मुनि तनुधारी
 प्रति उपकार करीं का तोरा । सनमुख होइ न सकत मन मोरा ॥
 सुनु सुन तोहि उरिन मैं नाहीं । देखेउँ करि विचार मन माहीं ॥
 पुनि पुनि कपिहि चितव सुरत्राता । लोचन नीर पुलक अति गाता ॥

दो०--सुनि प्रभु वचन विलोकि मुख गात हरपि हनुमंत ।

चरन परेउ प्रेमाकुल चाहि चाहि भगवंत ॥ ३२ ॥

वार वार प्रभु चहइ उठावा । प्रेम मगन तेहि उठवन भावा ॥
 प्रभु कर पंकज कपि कै सीसा । सुमिरि सो दसा मगन गौरीसा ॥
 सावधान मन करि पुनि नंकर । लागे कहन कथा अति सुंदर ॥
 कपि उठाइ प्रभु हृदयँ लगावा । कर गहि परम निकट बैठावा ॥
 कहु कपिरावन पालित लंका । कहि विधि दहेउ दुर्ग अति वंका ॥
 प्रभु प्रसन्न जाना हनुमाना । बोला वचन विगत अभिमाना ॥
 साखामृग कै वडि मनुसाई । साखा तें साखा पर जाई ॥
 नाधि सिंधु हाटकपुर जारा । निसिचर मन बधि विपिन उजारा ॥
 सो सब तव प्रताप रघुराई । नाथ न कछु मोरि प्रभुताई ॥

श्री०—ता कहूँ प्रभु कछु अगम नहि जा पर तुम्ह अनुकूल ।

तव प्रभावेँ बड़वानलहि जाँरि सकइ खलु, तूल ॥ ३३ ॥

नाथ भगति अति सुखदायनी । देहु कृपा करि अनपायनी ॥

सुनि प्रभु परम सरल कपि बानी । एवमस्तु तव कहैउ भवानी ॥

उमा राम सुभाउ जेहि जाना । ताहि भजनु तजि भाव न आना ॥

यह संवाद जासु उर आवा । रघुपति चरन भगति सोइ पावा ॥

सुनि प्रभु वचन कहहि कपिचूँदा । जय जय जय कृपाल सुखकंदा ॥

तव रघुपति कपिपतिहि बोलावा । कहा चलँ कर करहु बनावा ॥

अब विलंबु केहि कारन कीजे । तुरत कपिन्ह कहूँ आयसुदीजे ॥

कौंतुक देखि सुमन बहु बरपी । नभ तें भवन चले सुर हरपी ॥

श्री०—कपिपति वेगि बोलाए आए जूथप जूथ ।

नाना धरन अतुल बल धार भालु बरूथ ॥ ३४ ॥

प्रभु पद पंकज नावहिं सीसा । गर्जहिं भालु महाबल कीसा ॥

देखी राम सकल कपि सेना । चितइ कृपा करि राजिव नना ॥

राम कृपा बल पाइ कपिंदा । भए पच्छजुत मनहुँ गिरिंदा ॥

हरपि राम तव कीन्ह पयाना । सगुन भए सुंदर सुभ नाना ॥

जासु सकल मंगलमय कीती । तामु पयान सगुन यह नीती ॥

प्रभु पयान जाना वैदेहीं । फरकि वाम अँग जनु कहि देहीं ॥

जोइ जोइ सगुन जानिकहि होई । असगुन भयउ रावनहि सोई ॥

चला कटकु को धरनँ पारा । गर्जहिं वानर भालु अपारा ॥

नख आयुध गिरि पादपधारी । चले गगन महि इच्छाचारी ॥

केहरिनाद भालु कपि करहीं । दगमगाहिं दिग्गज चितरहीं ॥

छं०-चिकरहि दिग्गज डोल महि गिरि लोल सागर खरभरे ।
 मन हरप सभ गंधर्व मुर मुनि नाग किंनर दुख टरे ॥
 कटकटहि मर्कट विकट भट बहु कोटि कोटिन्ह धावहीं ।
 जय राम प्रवल प्रताप कोसलनाथ गुन गन गावहीं ॥ ? ॥
 सहि सक न भार उदार अहिपति वार वारहि मोहई ।
 गह दसन पुनि पुनि कमठ पृष्ट कठोर सो किमि सोहई ॥
 रघुवीर रुचिर प्रयान प्रस्थिति जानि परम सुहावनी ।
 जनु कमठ खर्पर सर्पराज सो लिखत अविचल पावनी ॥ २ ॥

दो०-एहि विधि जाइ कृपानिधि उतरे सागर तीर ।
 जहँ तहँ लागे खान फल भालु विपुल कपिवीर ॥ ३५ ॥

उहाँ निसाचर रहहि ससंका । जव तें जाति गयउ कपि लंका ॥
 निज निज गृहँ सत्र करहि विचारा । नहिं निसिचर कुल केर उचारा
 जासु दूत बल वरनि न जाई । तेहि आएँ पुर कवन भलाई ॥
 दूतिन्ह सन सुनि पुरजन बानी । मंदोदरी अधिक अकुलानी ॥
 रहसि जोरि कर पति पग लागी । बोली बचन नीति रस पागी ॥
 कंत करप हरि सन परिहरहू । मोर कहा अति हित हियँ धरहू ॥
 समुझत जासु दूत कइ करनी । स्रवहिं गर्भ रजनीचर घरनी ॥
 तासु नारि निज सचिव बोलाई । पठवहु कंत जो चहहू भलाई ॥
 तव कुल कमल विपिन दुखदाई । सीता सीत निसा सम आई ॥
 सुनहु नाथ सीता विनु दीन्हें । हित न तुम्हार संभु अज कीन्हें ॥

दो०-राम वान अहि गन सरिस निकर निसाचर भेक ।

जव लागि प्रसत न तव लागि जतन करह तजि टेक ॥ ३६ ॥

श्रवन सुनी सठ ता करि वानी । विहसा जगत विदित अभिमानी
 सभय सुभाउ नारि कर साचा । मंगलमहुँ भयमन अति काचा ॥
 जौ आवइ मर्कट कटकाई । जिअहिं विचारे निसिचरखाई ॥
 कंपहिं लोकप जाकीं घासा । तामु नारि सभित वढ़ि हासा ॥
 अस कहि विहसि ताहि उरलाई । चलेउ सभाँ ममता अधिकारी ॥
 मंदोदरी हृदयँ कर विंता । भयउ कंत पर विधि विपरीता ॥
 बँटेउ सभाँ खवरि असि पाई । सिंधु पार सेना सय आई ॥
 बृहसिसचिव उचित मत कहहू । ते सब हँसे मष्ट करि रहहू ॥
 जितेहु सुरासुर तब श्रम नार्हीं । नर वानर केहि लेखे मारहीं ॥

दो०—सचिव वैद गुर तीनि जौ प्रिय बोलहिं भय आस ।

राज धर्म तन तीनि कर होइ बेगिहीं नास ॥ ३७ ॥

सोइ रावन कहूँ वनी सहाई । अस्तुति करहिं सुनाइ सुनाई ॥
 अवसर जानि विभीषनु आया । भ्राता चरन सीसु वैहिं नाया ॥
 पुनि सिरुनाइ बैठ निज आसन । बोला वचन पाइ अनुसासन ॥
 जौ कृपाल पूँछिहु मोहि वाता । मति अनुरूप कहउँ हित वाता ॥
 जो आपन चाहै कल्याना । सुजसु सुमति सुभगति सुख नाना ॥
 सो पर नारि लिलार गोसाई । तजउ चउथि के चंद कि नाई ॥
 चौदह भुवन एक पति होई । भूत द्रोह तिष्टइ नहिं सोई ॥
 गुन सागर नागर नर जोऊ । अल्प लोभ भल कहइ न कोऊ ॥

दो०—काम क्रोध मद लोभ सब नाथ नरक के पंथ ।

सब परिहरि रघुवीरहि भजहु भजहिं बेहि संत ॥ ३८ ॥

तात राम नहिं नर भूपाला । भुवनेश्वर काल

ब्रह्म अनामय अज भगवंता । व्यापक अजित अनादि अनंता ॥
 गो द्विज धेनु देव हितकारी । कृपा सिंधु मानुष तनुधारी ॥
 जन रंजन भंजन खल व्राता । वेद धर्म रच्छक सुनु भ्राता ॥
 ताहि वयरु तजि नाइअ माथा । प्रनतारति भंजन रघुनाथा ॥
 देहु नाथ प्रभु कहँ वैदेही । भजहु राम विनु हेतु सनेही ॥
 सरन गाँ प्रभु ताहु न त्यागा । विस्व द्रोह कृत अघ जेहि लागा ॥
 जासु नाम त्रय ताप नसावन । सोइ प्रभु प्रगट समुझु जियँ रावन ॥
 दो०—बार बार पद लागउँ विनय करउँ दससीस ।

परिहरि मान मोह मद भजहु कोसलाधीस ॥ ३९ (क) ॥

मुनि पुलस्ति निज सिष्य सन कहि पठई यह वात ।

तुरत सो मैं प्रभु सन कही पाइ सुअवसरु तात ॥ ३९ (ख) ॥

माल्यवंत अति सचिव सयाना । तासु वचन सुनि अति सुख माना
 तात अनुज तव नीति विभूषन । सो उर धरहु जो कहत विभीषन ॥
 रिपु उतकरप कहत सठ दोऊ । दूरि न करहु इहाँ हइ कोऊ ॥
 माल्यवंत गृह गयउ बहोरी । कहइ विभीषनु पुनि कर जोरी ॥
 सुमति कुमति सब कें उर रहहीं । नाथ पुरान निगम अस कहहीं ॥
 जहाँ सुमति तहँ संपति नाना । जहाँ कुमति तहँ विपति निदाना ॥
 तव उर कुमति बसी विपरीता । हित अनहित मानहु रिपु प्रीता ॥
 कालराति निमिचर कुल केरी । तेहि सीता पर प्रीति घनेरी ॥

दो०—तात चरन गहि मागउँ राखहु मोर दुलार ।

सीता देहु राम कहँ अहित न होइ तुम्हार ॥ ४० ॥

बुध पुरान श्रुति संमत बानी । कही विभीषन नीति बखानी ॥

सुनत दसानन उठा रिसाई । खल तोहि निकट मृत्यु अब आई
जिअसि सदा सठ मोर जिआवा । रिपु कर पच्छ मूढ़ तोहि भावा ॥
कहसि न खल अस को जग माहीं । भुज बल जाहि जिता में नाहीं ॥
मम पुर वसि तपसिन्ह पर प्रीती । सठ मिलु जाइ तिन्हहि कहु नीती
अस कहि कीन्हेसि चरन प्रहारा । अनुज गहे पद वारहिं वारा ॥
उमा संत कइ इहइ बड़ाई । मंद करत जो करइ भलाई ॥
तुम्ह पितु सरिस भलेहिं मोहि मारा । रामु भजे हित नाथ तुम्हारा ॥
सचिव संग लै नभ पथ गवऊ । सबहि सुनाइ कहत अस भयऊ ॥

दो०—रामु सत्यसंकल्प प्रभु सभा कालवस तोरि ।

मैं रघुबीर सरन अब जाउँ देहु जनि सोरि ॥ ४१ ॥

अस कहि चला विभीषनु जयहीं । आगूहीन भए सब तयहीं ॥
साधु अग्या तुरत भवानी । कर कल्याण अखिल कहानी ॥
रावन जयहिं विभीषन त्यागा । भयउ विभव विनु तयाहि अभागा
चलेउ हरपि रघुनायक पाहीं । करत मनोरथ बहु मन माहीं ॥
देखिहउँ जाइ चरन जलजाता । अरुन मृदूल सेवक सुख दाता ॥
जे पद परसि तरी रिपिनारी । दंडक कानन पावनकारी ॥
जे पद जनकसुताँ उर लाए । कपट दुरंग संग धर धाए ॥
हर उर सर सरोज पद जेई । अहोभाग्य मैं देखिहउँ तेई ॥

दो०—जिन्ह पायन्ह के पादुकिन्ह भरतु रहे मन लाइ ।

ते पद आजु विलोकिहउँ इन्ह नयनन्हि अब जाइ ॥ ४२ ॥

एहि विधि करत सप्रेम विचारा । आयउ सपदि सिंधु एहिं
कपिन्ह विभीषनु आवत देखा । जाना कोउ रिपु दूत

ताहि राखि कपीस पहिं आए। समाचार सब ताहि सुनाए ॥
 कह सुग्रीव सुनहु रघुराई। आवा मिलन दसानन भई ॥
 कह प्रभु सखा वृद्धिऐ काहा। कहइ कपीस सुनहु नरनाहा ॥
 जानि न जाइ निसाचर माया। कामरूप केहि कारन आया ॥
 भेद हमारं लेन सठ आवा। राखिअ बाँधि मोहि अस भावा ॥
 सखा नीति तुम्ह नीकि विचारी। मम पन सरनागत भयहारी ॥
 सुनि प्रभु वचन हरप हनुमाना। सरनागत बच्छल भगवाना ॥

दो०—सरनागत कहूँ जे तजहिं निज अनहित अनुमानि ।
 ते नर पावैर पापमय तिन्हहि विलोकत हानि ॥ ४३ ॥

कोटि विप्र बध लागहिं जाहूँ। आएँ सरन तजउँ नहिं ताहूँ।
 सनमुख होइ जीव मोहि जबहीं। जन्म कोटि अघ नासहिं तवहीं।
 पापवंत कर सहज सुभाऊ। भजनु मोर तेहि भाव न काऊ
 जौं पै दुष्टहृदय सोइ होई। मोरें सनमुख आव कि सोई
 निर्मल मन जनसो मोहि पावा। मोहि कपट छल छिद्र न भाव
 भेद लेन पठवा दससीसा। तबहुँ न कछु भय हानि कपी
 जग महुँ सखा निसाचर जेते। लछिमनु हनइ निमित्त महुँ ते
 जौं सभीत आवा सरनाई। राखिहउँ ताहि प्रान की

दो०—उभय भाँति तेहि आनहु हँसि कह कृपानिकेत ।
 जय कृपाल कहि कपि चले अंगद हनू समेत ॥

सादर तेहि आगें करि वानर। चले जहाँ रघुपति कर
 दूरिहि ते देखे द्वौ आता। नयनानंद दान के
 विद्या लविधाम विलोकी। रहेउ ठडुकि एकटक प

भुज प्रलंघ कंजारुन लोचन । स्यामल गात प्रनत भय मोचन ॥
 सिंघ कंध आयत उर सोहा । आनन अमित मदन मन मोहा ॥
 नयन नीर पुलकित अतिगाता । मन धरि धीर कही मृदु वाता ॥
 नाथ दसानन कर मैं भ्राता । निसिचर वंस जनम सुरत्राता ॥
 सहज पापप्रिय तामस देहा । जथा उत्कृह तम पर नेहा ॥

दो०—श्रवन सुजसु सुनि आयउँ प्रभु भंजन भय भीर ।

प्राहि प्राहि आरति हरन सरन सुखद रघुवीर ॥ ४५ ॥

अस कहि करत दंडवत देखा । तुरत उठे प्रभु हरप विसेपा ॥
 दीन वचन सुनि प्रभु मन भावा । भुज विसाल गहि हृदयँ लगाया ॥
 अनुज सहित मिलि ढिग वंठारी । चोले वचन भगत भय हारी ॥
 कह्यु लंकैस सहित परिवारा । कुसल कुठाहर पास तुम्हारा ॥
 खल मंडलीँ वसहु दिनु राती । सखा धरम निवहइ केहि भाँती ॥
 मैं जानउँ तुम्हारि सब रीती । अति नयनिपुन न भाव अनीती ॥
 यरु भल पास नरक कर ताता । दुष्ट संग जनि देइ विधाता ॥
 अथ पद देखि कुसल रघुराया । जाँ तुम्ह कीन्दि जानि जन दाया

दो०—तव लागि कुसल न जीव कहँ सपनेहुँ मन विश्राम ।

जय लागि भजत न राम कहँ सोक घाम तजि काम ॥ ४६ ॥

तव लागि हृदयँ वसत खल नाना । लोभ मोह मच्छर मद माना ॥
 जव लागि उरन वसत रघुनाथा । धरँ चाप सायक कटि भाधा ॥
 ममता तरुन तर्मा अँधिअरी । राग द्वेष उत्कृक मुखकारी ॥
 तव लागि वसति जीव मन माहीं । जव लागि प्रभु प्रव्रप रवि
 अथ मैं कुसल मिटे भय भारे । देखि राम

तुम्ह कृपाल जा पर अनुकूला । ताहि न व्याप त्रिविध भव सूला ॥
 मैं निसिचर अति अधम सुभाऊ । सुभ आचरनु कीन्ह नहिं काऊ ॥
 जासु रूप मुनि ध्यान न आवा । तेहिं प्रभु हरपि हृदयँ मोहि लावा ॥

दो०—अहोभाग्य मम अमित अति राम कृपा सुख पुंज ।

देखेउँ नयन विरंचि सिव सेव्य जुगल पद कंज ॥ ४७ ॥

सुनहु सखा निज कहउँ सुभाऊ । जान भुसुंड़ि संभु गिरिजाऊ ॥
 जाँ नर होइ चराचर द्रोही । आवै सभय सरन तकि मोही ॥
 तजि मद मोह कपट छल नाना । करउँ सद्य तेहि साधु समाना ॥
 जननी जनक बंधु सुत दारा । तनु धनु भवन सुहृद परिवारा ॥
 सब कै समता ताग बटोरी । मम पद मनहि बाँध वरि डोरी ॥
 समदरसी इच्छा कछु नाहीं । हरप सोक भय नहिं मन माहीं ॥
 अस सजन मम उर बस कैसें । लोभी हृदयँ बसइ धनु जैसें ॥
 तुम्ह सारिखे संत प्रिय मोरें । धरउँ देह नहिं आन निहोरें ॥

दो०—सगुन उपासक परहित निरत नीति दृढ़ नेम ।

ते नर प्राण समान मम जिन्ह कै द्विज पद प्रेम ॥ ४८ ॥

सुनु लंकेस सकल गुन तोरें । तातें तुम्ह अतिसय प्रिय मोरें ॥
 राम वचन सुनि वानर जूथा । सकल कहहिं जय कृपा बरूथा ॥
 सुनत विभीषनु प्रभु कै वानी । नहिं अघात श्रवनामृत जानी ॥
 पद अंबुज गहि वारहिं वारा । हृदयँ समात न प्रेमु अपारा ॥
 सुनहु देव सचराचर स्वामी । प्रनतपाल उर अंतरजामी ॥
 उर कछु प्रथम बाजना रही । प्रभु पद प्रीति सरित सो बही ॥
 अब कृपाल निज भगति पावनी । देहु सदा सिव मन भावनी ॥

एवमस्तु कहि प्रभु रनधीरा। मागा तुरत सिंधु कर नीरा ॥
जदपि सखा तव इच्छा नाहीं। मोर दरसु अमोघ जग माहीं ॥
अस कहि राम तिलक तेहि सारा। सुमन चृष्टि नभ भई अशरा ॥
दो०—रावन क्रोध अनल निज स्वास समोर प्रचंड ।

जरत विभीषनु राखेउ दीन्हेउ राजु असड ॥ ४९(क) ॥

जो संपति सिध रावनहि दोन्हि दिऐ दस माथ ।

सोइ संपदा विभीषनहि सकुचि दीन्हि रघुनाथ ॥ ४९(ख) ॥

अस प्रभु छाड़ि भजहिं जे आना। ते नर पसु बिनु पूँछ विषाना ॥
निज जन जानि ताहि अपनावा। प्रभु सुभाव कपि कुल मन भावा ॥
पुनि सर्वग्य सर्व उर वासी। सर्वरूप सब रहित उदासी ॥
बोले बचन नीति प्रतिपालक। कारन मनुज दनुज कुल घालक ॥
सुनु कपीस लंकापति धीरा। केहि विधितरिअ जलधिगंभीरा ॥
संकुल मकर उरग झप जाती। अति अगाध दुस्तर सब भाँती ॥
कह लंकेस सुनहु रघुनायक। कोटि सिंधु सोपक तव सायक ॥
जद्यपि तदपि नीति असि गाई। विनय करिअ सागर सन जाई ॥
दो०—प्रभु तुम्हार कुलगुर जलधि कहिहि उपाय विचारि ।

बिनु प्रयास सागर तरिहि सकल भातु कपि धारि ॥ ५० ॥

सखा कही तुम्ह नीकि उपाई। करिअ दैव जौं होइ सहाई ॥
मंत्र न यह लछिमन मन भावा। राम बचन सुनि अति दुख पावा ॥
नाथ दैव कर कवन भरोसा। सोपिअ सिंधु करिअ मन रोपा ॥
कादर मन कहूँ एक अधारा। दैव दैव आलसी पुकारा ॥
गुनत विहसि बोले रघुवीरा। ऐसेहिं करव धरु

अस कहि प्रभु अनुजहि समुझाई। सिंधु समीप गए रघुराई ॥
 प्रथम प्रनाम कीन्ह सिरु नाई। बैठे पुनि तट दर्भ डसाई ॥
 जवहिं विभीषन प्रभु पहिं आए। पाछें रावन दूत पठाए ॥

दो०—सकल चरित तिन्ह देखे धरें कपट कपि देह ।

प्रभु गुन हृदयँ सराहहि सरनागत पर नेह ॥ ५१ ॥

प्रगट बखानहिं राम सुभाऊ। अति सप्रेम गा विसरि दुराऊ ॥
 रिपु के दूत कपिन्ह तव जाने। सकल बाँधि कपीस पहिं आने ॥
 कह सुग्रीव सुनहु सब वानर। अंग भंग करि पठवहु निसिचर ॥
 सुनि सुग्रीव वचन कपि धाए। बाँधि कटक चहु पास फिराए ॥
 बहु प्रकार मारन कपि लागे। दीन पुकारत तदपि न त्यागे ॥
 जो हमार हर नासा काना। तेहि कोसलाधीस कै आना ॥
 सुनि लछिमन सब निकट बोलाए। दया लागि हँसि तुरत छोड़ाए ॥
 रावन कर दीजहु यह पाती। लछिमन वचन बाचु कुलघाती ॥

दो०—कहेहु मुखागर मूढ़ सन मम संदेसु उदार ।

सीता देखे मिलहु न त आवा कालु तुम्हार ॥ ५२ ॥

तुरत नाइ लछिमन पद माथा। चले दूत वरनत गुन गाथा ॥
 कहत राम जसु लंकाँ आए। रावन चरन सीस तिन्ह नाए ॥
 विहसि दसानन पूँछी वाता। कहसि न सुक आपनि कुसलाता ॥
 पुनि कहु खवरि विभीषन केरी। जाहि मृत्यु आई अति नेरी ॥
 करत राज लंका सठ त्यागी। होइहि जव कर कीट अभागी ॥
 पुनि कहु भालु कीस कटकाई। कठिन काल प्रेरित चलि आई ॥
 जिन्हके जीवन कर रखवारा। भयउ मृदुल चित सिंधु विचारा ॥

कहु तपसिन्ह कै बात बहोरी । जिन्ह के हृदयँ त्रास अति मोरी ॥

दो०—की भइ भेंट कि फिरि गए श्रवन सुजसु सुनि मोर ।

कहसि न रिपु दल तेज बल बहुत चकित चित तोर ॥ ५३ ॥

नाथ कृपा करि पूँछेहु जैसे । मानहु कहा क्रोध तजि तैसे ॥

मिला जाइ जब अनुज तुम्हारा । जातहिं राम तिलक तेहि सारा ॥

रावन दूत हमहि मुनि काना । कपिन्ह बाँधि दीन्हे दुख नाना ॥

श्रवन नासिका काँटें लागे । राम सपथ दीन्हें हम त्यागे ॥

पूँछिहु नाथ राम कटकाई । यदन कोटि सत वरनि न जाई ॥

नाना वरन भालु कपि धारी । विकटानन बिसाल भयकारी ॥

जेहिं पुर दहेउ हतेउ सुत तोरा । सकल कपिन्ह महँ तेहि बलु थोरा ॥

अमित नाम भट कठिन कराला । अमित नाग बल विपुल बिसाला ॥

दो०—द्विविद मयंद नील नल अंगद गद विकटासि ।

दधिमुख केहरि निसठ सठ जामवंत बलरासि ॥ ५४ ॥

ए कपि सब सुग्रीव समाना । इन्ह सम कोटिन्ह गनइ को नाना ॥

राम कृपाँ अतुलित बल तिन्हहीं । तून समान त्रैलोकहि गनहीं ॥

अस मैं सुना श्रवन दसकंधर । पदुम अठारह जूथप पंदर ॥

नाथ कटक महँ सो कपि नाहीं । जो न तुम्हहि जीत रन माहीं ॥

परम क्रोध मीजहिं सब हाथा । आयसु पं न देहिं रघुनाथा ॥

मोपहिं सिंधु सहित झप व्याला । पूरहिं न त भरि कुधर बिसाला ॥

मर्दि गर्द मिलवहिं दससीसा । गेसेइ वचन कहहिं सब कीसा ॥

गर्जहिं तर्जहिं सहज अमंका । मानहुँ ग्रसन चहुँ लंका ॥

दो०—सहज सूर कपि भालु सब पुनि सिर पर प्रभु राम ।

रावन काल कोटि कहँ जीति सकहि संग्राम ॥ ५५ ॥
 राम तेज बल बुधि विपुलाई । सेप सहस सत सकहि न गाई ॥
 सकसर एक सोपि सत सागर । तव आतहि पूँछेउ नय नागर ॥
 तासु वचन मुनि सागर पाहीं । मागत पंथ कृपा मन माहीं ॥
 सुनत वचन विहसा दससीसा । जौं अस्मि मति सहाय कृत कीसा
 सहज भीरु कर वचन दढ़ाई । सागर सन ठानी मचलाई ॥
 मृढ़ मृषा का करसि बड़ाई । रिपु बल बुद्धि थाह में पाई ॥
 सचिव सभित विभीषन जाकें । विजय विभूति कहाँ जग ताकें ॥
 सुनि खल वचन दूत रिम वाढ़ी । समय विचारि पत्रिका काढ़ी ॥
 रामानुज दीन्ही यह पाती । नाथ वचाइ जुड़ावहु छाती ॥
 विहसि वाम कर लीन्ही रावन । सचिव बोलि सठ लाग वचावन ॥

दो०—घातन्ह मनहि रिसाइ सठ जनि घालसि कुल खीस ।

राम विरोध न उवरसि सरन विष्णु अज ईस ॥ ५६ (क) ॥

की तजि मान अनुज इव प्रभु पद पंकज भृंग ।

होहि कि राम सरानल खल कुल सहित पतंग ॥ ५६ (ख) ॥

सुनत सभय मन मुख मुमुकाई । कहत दसानन सबहि सुनाई ॥
 भूमि परा कर गहत अकासा । लघु तापस कर वाग विलासा ॥
 कह सुक नाथ सत्य सब बानी । समुझहु छाड़ि प्रकृति अभिमानी ॥
 सुनहु वचन मम परिहरि क्रोधा । नाथ राम सन तजहु विरोधा ॥
 अति कोमल रघुवीर सुभाऊ । जद्यपि अखिल लोक कर राऊ ॥

मिलत कृपा तुम्ह पर प्रभु करिहीं । उर अपराध न एकउ धरिहीं ॥
 जनकसुता रघुनाथहि दीजे । एतना कहा मोर प्रभु कीजे ॥
 जय तेहि कहा देन बंदेही । चरन प्रहार कीन्ह सठ तेही ॥
 नाइ चरन सिरु चला सो तहाँ । कृपासिंधु रघुनाथक जहाँ ॥
 करि प्रनामु निज कथा सुनाई । राम कृपाँ आपनि गति पाई ॥
 रिपि अगस्ति कीं साप भवानी । राछस भयउ रहा मुनि ग्यानी ॥
 बंदि राम पद वारहि वारा । मुनिनिज आश्रम कहूँ पगु धारा ॥

दो०—बिनय न मानत जलधि जइ गए तीनि दिन घीति ।

बोले राम सक्रोप तय भय विनु होइ न प्रीति ॥ ५७ ॥

लछिमन धान सरासन आनू । साँपों वारिधि विसिख कृसानू ॥
 सठ सन बिनय कुटिल सन प्रीती । सहज कृपन सन सुंदर नीती ॥
 ममता रत सन ग्यान कहानी । अति लोभी सन विरति बखानी ॥
 क्रोधिहि सम कामिहि हरि कथा । ऊसर बीज बएँ फल जथा ॥
 अस कहि रघुपति चाप चढ़ावा । यह मत लछिमन के मन भाया ॥
 संधानेउ प्रभु विसिख कराला । उठी उदधि उर अंतर ज्वाला ॥
 मकर उरग क्षप गन अकुलाने । जरत जंतु जलनिधि जय जाने ॥
 कनक धार भरि मनि गन नाना । विप्र रूप आयउ तजि माना ॥

दो०—काटेहि पइ कदरी फरइ कोटि जतन कीउ सीच ।

बिनय न मान सगेस सुनु हाटेहि पइ नव नीच ॥ ५८ ॥

राभय सिंधु गाहि पद प्रभु केरे । छमहु नाथ सब अवगुनेरे ॥
 गगन समीर अतल जल धरनी । इन्ह कइ नाथ ~~सुख~~ ~~अ~~

प्रेरित मायाँ उपजाए। सृष्टि हेतु सब ग्रंथनि गाए ॥
 प्रभु आयसु जेहि कहँ जस अहई। सो तेहि भाँति रहें सुख लहई ॥
 प्रभु भल कीन्ह मोहि सिख दीन्ही। मरजादा पुनि तुम्हरी कीन्ही ॥
 ढोल गवाँर मृद्र पसु नारी। सकल ताड़ना के अधिकारी ॥
 प्रभु प्रताप में जात्र सुखाई। उतरिहि कटकु न मोरि बड़ाई ॥
 प्रभु अग्या अपेल श्रुति गाई। करौं सो वेगिजां तुम्हहि सोहाई ॥

दो०—सुनत विनीत वचन अति कह कृपाल मुसुकाइ ।

जेहि विधि उतरै कपि कटकु तात सो कहहु उपाइ ॥ ५९ ॥

नाथ नील नल कपि द्वौ भाई। लरिकाई रिपि आसिप पाई ॥
 तिन्ह कें परस किँ गिरि भारे। तरिहिहिं जलधि प्रताप तुम्हारे ॥
 मैं पुनि उर धरि प्रभु प्रभुताई। करिहउँ बल अनुमान सहाई ॥
 एहि विधि नाथ पयोधि बँधाइअ। जेहिं यह सुजसु लोक तिहुँ गाइअ ॥
 एहिं सर मम उत्तर तट वासी। हतहु नाथ खल नर अघ रासी ॥
 सुनि कृपाल सागर मन पीरा। तुरतहिं हरी राम रनधीरा ॥
 देखि राम बल पौरुष भारी। हरपि पयोनिधि भयउ सुखरी ॥
 सकल चरित कहि प्रभुहि सुनावा। चरन बंदि पाथोधि सिधावा ॥

छं०—निज भवन गवनेउ सिंधु श्रीरघुपतिहि यह मत भायऊ ।

यह चरित कलि मलहर जथामति दास तुलसी गायऊ ॥

सुख भवन संसय समन दवन विपाद रघुपति गुन गना ।

तजि सकल आस भरोस गावहि सुनहि संतत सट मना ॥

दो०—सकल सुमंगल दायक रघुनायक गुण गान ।

सादर सुनहिं ते तरहिं भव सिंधु विना जलजान ॥ ६० ॥

मासपारायण, चौबीसवाँ विश्राम

इति श्रीमद्रामचरितमानसे सकलकलिकल्पविष्वंसने

पञ्चमः सोपानः समाप्तः ।

(सुन्दरकाण्ड समाप्त)



सो०—सिंधु वचन सुनि राम सचिव बोलि प्रभु अस कहेउ ।
 अब विलंबु केहि काम करहु सेतु उतरै कटकु ॥
 सुनहु भानुकुल केतु जामवंत कर जोरि कह ।
 नाथ नाम तव सेतु नर चदि भव सागर तरहि ॥

यह लघु जलधि तरत कति बारा । अस सुनि पुनि कह पवनकुमारा
 प्रभु प्रताप बड़वानल भारी । सोपेउ प्रथम पयोनिधि वारी ॥
 तव रिपु नारि रुदन जल धारा । भरेउ बहोरि भयउ तेहि खारा ॥
 सुनि अति उकुति पवनसुत केरी । हरपे कपि रघुपति तन हेरी ॥
 जामवंत बोले दोउ भाई । नल नीलहि सब कथा सुनाई ॥
 राम प्रताप सुमिरि मन माहीं । करहु सेतु प्रयास कछु नाहीं ॥
 बोलि लिए कपि निकर बहोरी । सकल सुनहु विनती कछु मोरी ॥
 राम चरन पंकज उर धरहु । कौतुक एक भालु कपि करहु ॥
 धावहु मर्कट विकट बरूथा । आनहु विटप गिरिन्ह के जूथा ॥
 सुनि कपि भालु चले करि दूहा । जय रघुवीर प्रताप समूहा ॥

दो०—अति उत्तंग गिरि पादप लीलहि लेहि उठाइ ।

आनि देहि नल नीलहि रचहि ते सेतु बनाइ ॥ १ ॥

सैल त्रिसाल आनि कपि देहीं । कंदुक इव नल नील ते लेहीं ॥
 देखि सेतु अति सुंदर रचना । विहसि कृपानिधि बोले वचना ॥
 परम रम्य उत्तम यह धरनी । महिमा अमित जाइ नहिं वरनी ॥
 करिहउँ इहाँ संभु थापना । मोरे हृदयँ परम कल्पना ॥
 सुनि कपीस बहु दूत पठाए । मुनिवर सकल बोलि लै आए ॥
 लिंग थापि विधिबत करि पूजा । सिव समान प्रिय मोहि न दूजा ॥

सिव द्रोही मम भगत कदावा ! सो नर सपनेहुँ मोहि न पावा ॥
संकर विमुख भगति चह मोरी । सो नारकी मूढ़ मति थोरी ॥

दो०—संकरप्रिय मम द्रोही सिव द्रोही मम दास ।

ते नर करहि कल्प भरि घोर नरक महु वास ॥ २ ॥

जे रामेश्वर दरसनु करिहहि । ते तनु तजि मम लोक सिधरिहहि
जो गंगाजलु आनि चढ़ाइहि । सो साजुज्य भुक्ति नर पाइहि ॥
होइ अकाम जो छलतजि सेइहि । भगति मोरि तेहि संकर देइहि ॥
मम कृत सेतु जो दरसनु करिही । सो विनु श्रम भवसागर तरिही ॥
राम वचन सब के जिय भाए । मुनिवर निज निज आश्रम आए ॥
गिरिजा रघुपति के यह रीती । संतत करहि प्रनत पर प्रीती ॥
बाँधा सेतु नील नल नागर । राम कृपाँ जसु भयउ उजागर ॥
बूढ़हि आनहि चोरहि जेई । भए उपल बोहित मम तेई ॥
महिमा यह न जलधिकइ घरनी । पाहन गुन न कपिन्ह कइ करनी ॥

दो०—श्री रघुवीर प्रताप ते सिंधु तरं पापान ।

ते मतिमंद जे राम तजि भजहि जाइ प्रभु आन ॥ ३ ॥

बाँधि सेतु अति सुटइ बनावा । देखि कृपानिधि के मन भावा ॥
चली सेन कलु घरनि न जाई । गर्जहि मर्कट भट समुदाई ॥
सेतुबंध डिग चढ़ि रघुराई । चितव कृपाल सिंधु बहुताई ॥
देखन कहँ प्रभु करुना कंदा । प्रगट भए सब जलचर वृंदा ॥
मकर नक्र नाना शय व्याला । सत जोजन तन परम विसाला ॥
अइसेउ एक तिन्हहि जे खाहों । एकन्ह के डर तेपि डेराहीं ॥
प्रभुहि विलोकहि टरहि न थारे । मन हरपित सब भए सुखारे ॥

तिन्ह कीं ओट न देखिअ वारी । मगन भए हरि रूप निहारी ॥
चला कटकु प्रभु आयसु पाई । को कहि सक कपि दल विपुलाई ॥

दो०—सेतुबंध भइ भीर अति कपि नभ पंथ उड़ाहि ।

अपर जलचरन्हि ऊपर चढ़ि चढ़ि पारहि जाहि ॥ ४ ॥

अस कौतुक विलोकि द्वौ भाई । विहँसि चले कृपाल रघुराई ॥
सेन सहित उतरे रघुवीरा । कहि न जाइ कपि जूथप भीरा ॥
सिंधु पार प्रभु डेरा कीन्हा । सकल कपिन्ह कहँ आयसु दीन्हा
खाहु जाइ फल मूल सुहाए । सुनत भालु कपि जहँ तहँ ध्राए ॥
सब तरु फरे राम हित लागी । रितु अरु कुरितु काल गति त्यागी
खाहिं मधुर फल पिटप हलावहिं । लंका सन्मुख सिखर चलावहिं ॥
जहँ कहँ फिरत निसाचर पावहिं । घेरि सकल बहु नाच नचावहिं ॥
दसनन्हि काटि नासिका काना । कहि प्रभु सुजसु देहिं तब जाना ॥
जिन्ह कर नासा कान निपाता । तिन्ह रावनहि कही सब वाता ॥
सुनत श्रवन वारिधि बंधाना । दस मुख बोलि उठा अकुलाना ॥

दो०—बाँध्यो वननिधि नीरनिधि जलधि सिंधु वारीस ।

सत्य तोयनिधि कंपति उदधि पयोधि नदीस ॥ ५ ॥

निज विकलता विचारि वहोरी । विहँसि गयउ गृह करि भय भोरी
मंदोदरीं सुन्यो प्रभु आयो । कौतुकहीं पाथोधि बंधायो ॥
कर गहि पतिहि भवन निज आनी । बोली परम मनोहर बानी ॥
चरन नाइ सिरु अंचलु रोपा । सुनहु बचन पिय परिहरि कोपा ॥
नाथ वयरु कीजे ताही सों । बुधि बल सक्रिअ जीति जाही सों
तुन्हहि रघुपतिहि अंतर कैसा । खलु खद्योत दिनकरहि जैसा ॥

अतिबल मधु कैटभ जेहिं मारे। महावीर दितिमुत संघारे ॥
जेहिं बलि बाँधि सहस्रभुज मारा। सोइ अवतरेउ हरन महि भारा ॥
तासु विरोध न कीजिअ नाथा। काल करम जिव जाके हाथा ॥

दो०—रामहि सौं पि जानकी नाइ कमल पद माथ ।

सुत कहूँ राज समर्पि बन जाइ भजिअ रघुनाथ ॥ ६ ॥

नाथ दीनदयाल रघुराई। बाघउ सनमुख गएँ न खाई ॥
चाहिअ करन सो सब करि घीते। तुम्ह मुर असुर चराचर जीते ॥
संत कहहिं असि नीति दसानन। चौथेपन जाइहि नृप कानन ॥
तासु भजनु कीजिअ तहँ भर्ता। जो कर्ता पालक संहर्ता ॥
सोइ रघुवीर प्रनत अनुरागी। भजहु नाथ ममता सब त्यागी ॥
मुनिपर जतनु करहिं जेहि लागी। भूप राजु तजि होहिं विरागी ॥
सोइ कौसलाधीस रघुराया। आयउ करन तोहि पर दाया ॥
जौं पिय मानहु मोर सिखावन। मुजसु होइ तिहुँ पुर अति पावन ॥

दो०—अस कहि नथन नीर भरि गहि पद कंपित गात ।

नाथ भजहु रघुनाथहि अवल होइ अहिचात ॥ ७ ॥

तब रावन मयमुता उठाई। कहँ लाग खल निज प्रभुताई ॥
सुनु तँ प्रिया वृथा भय माना। लग जोधा को मोहि समाना ॥
घरुन कुबेर पवन जम काला। भुज बल जितेउँ सकल दिगपाला ॥
देव दनुज नर सब बस मोरे। कवन हेतु उपजा भय तोरे ॥
नाना विधि तेहि कहेसि चुसाई। सभाँ बहोरि बैठ सो जाई ॥
मंदोदरीं हृदयँ अस जाना। काल वस्य उपजा अभिमाना ॥
सभाँ आइ मंत्रिन्ह तेहि वृक्षा। करव कवन विधिरिपुँ सुँ जूझा ॥

* रामचरितमानस *

हिं सचिव सुनु निसिचर नाहा । वार वार प्रभु पूछहु काहा ॥
हु कवन भय करिअ विचारा । नर कपि भालु अहार हमारा ॥

०-सच के बचन श्रवन सुनि कह प्रहस्त कर जोरि ।
नीति विरोध न करिअ प्रभु मंत्रिन्ह मति अति थोरि ॥ ८ ॥

कहहिं सचिव सठ ठकुरसोहाती । नाथ न पूर आव एहि भौंती ॥
वारिधि नाधि एक कपि आवा । तासु चरित मन महुँ सबु गावा ॥
छुधान रही तुम्हहि तव काहू । जारत नगरु कस न धरि खाहू ॥
सुनत नीक आगें दुख पावा । सचिवन अस मत प्रभुहि सुनावा ॥
जेहिं वारीस बँधायउ हेला । उतरेउ सेन समेत सुवेला ॥
सो भनु मनुज खाव हम भाई । वचन कहहिं सब गाल फुलाई ॥
तात वचन मम सुनु अति आदर । जनि मन गुनहु मोहि करि कादर ॥
प्रिय वानी जे सुनहिं जे कहहीं । ऐसे नर निकाय जग अहहीं ॥
वचन परम हित सुनत कठोरे । सुनहिं जे कहहिं ते नर प्रभु थोरे ॥
प्रथम बसीठ पठउ सुनु नीती । सीता देख करहु पुनि प्रीती ॥
दो०-नारि पाइ फिरि जाहि जौं ती न बढाइअ रारि ।
नाहिं त सन्मुख समर महि तात करिअ हठि मारि ॥ ९ ॥

यह मत जौं मानहु प्रभु मोरा । उभय प्रकार सुजसु जग तोर
सुत सन कह दसकंठ रिसाई । असि मति सठ केहिं तोहि सि
अवहीं ते उर संसय होई । बेनुमूल सुत भयहु घम
सुनि पितु गिरा परुष अति घोरा । चला भवन कहि वचन क
हित मत तोहि न लागत कैसें । काल विवस कहूँ भेषज
मंध्य्या समय जानि दससीसा । भवन चलेउ निरखत भु

लंका सिखर उपर आगारा। अति विचित्र तहँ होइ अखारा ॥
 बैठ जाइ तेहि मंदिर रावन। लागे किंनर गुन गर्न गावन ॥
 बाजहि ताल पखाउज धीना। नृत्य करहि अपछरा प्रवीना ॥

दो०—सुनासीर सत सरिस सो संतन करइ विलास।

परम प्रबल रिपु सीस पर तद्यपि मोच न प्राप्त ॥ १० ॥

इहाँ सुबेल सँल रघुवीरा। उत्तरे सेन महित अति भीरा ॥
 सिखर एक उतंग अति देखी। परम रम्य सम सुभ्र विसेपी ॥
 तहँ तरु किसलय सुमन सुहाए। लछिमन रचि निज हाथ डसाए ॥
 ता पर रुचिर मृदुल मृगछाला। तेहि आसन आसीन कृपाला ॥
 प्रभु कृत सीस कपीस उछंगा। बाम दहिन दिसि चाप निपंगा ॥
 दुहुँ कर कमल सुधारत बाना। कह लंकेश मंत्र लगि काना ॥
 बड़भागी अंगद हनुमाना। चरन कमल चापत विधि नाना ॥
 प्रभु पाछे लछिमन बीरासन। कटि निपंग कर बान सरासन ॥

दो०—एहि विधि कृपा न्य गुन धाम राम आसीन।

धन्य ते नर एहि ध्यान जे रहत सदा लयलीन ॥ ११ (क) ॥

पूरव दिसा बिलोकि प्रभु देखा उदित मयंक।

कहत सबहि देखहु ससिहि भृग पति सरिस असंक ॥ ११ (ख) ॥

पूरव दिसि गिरिगुहा निवासी। परम प्रताप तेज बल रासी ॥
 मत्त नाग तम कुंभ विदारी। ससि केसरी भगन वन चारी ॥
 विधुरे नभ मुकुटाहल तारा। निसि सुंदरी-कर ॥
 कह प्रभु ससि महुँ मेचकताई। कहहु काहँ विच विच ॥
 कह सुग्रीव सुनहु रघुराई। ससि ॥

मारेउ राहु ससिहि कह कोई । उर महँ परी स्यामता सोई ॥
 कोउ कह जव विधिरति मुख कीन्हा । सार भाग ससि कर हरि लीन्हा
 छिद्र सो प्रगट इंदु उर माहीं । तेहि मग देखिअ नभ परिछाहीं ॥
 प्रभु कह गरल बंधु ससि केरा । अति प्रिय निज उर दीन्ह वसेरा ॥
 विप संजुत कर निकर पसारी । जारत विरहवंत नर नारी ॥
 दो०—कह हनुमंत सुनहु प्रभु ससि तुम्हार प्रिय दास ।

तव मूरति विघु उर वसति सोइ स्यामता अभास ॥१२(क)॥

नवाह्नपारायण, सातवाँ विश्राम

पवन तनय के वचन सुनि विहँसे रामु सुजान ।

दच्छिन दिसि अवलोकि प्रभु बोले कृपानिधान ॥१२(ख)॥

देखु विभीषन दच्छिन आसा । घन घमंड दामिनी विलासा ॥
 मधुर मधुर गरजइ वन घोरा । होइ वृष्टि जनि उपल कठोरा ॥
 कहत विभीषन सुनहु कृपाला । होइ न तड़ित न वारिद माला ॥
 लंका सिखर उपर आगारा । तहँ दसकंधर देख अखारा ॥
 छत्र मेघडंबर सिर धारी । सोइ जनु जलद घटा अति कारी ॥
 मंदोदरी श्रवन ताटंका । सोइ प्रभु जनु दामिनी दमंका ॥
 वाजहिं ताल मृदंग अनूपा । सोइ रव मधुर सुनहु सुरभूपा ॥
 प्रभु मुसुकान समुझि अभिमाना । चाप चढ़ाइ वान संधाना ॥

दो०—छत्र मुकुट ताटंक तत्र हते एकहीं वान ।

सत्र के देखत महि परे मरमु न कोऊ जान ॥१३(क)॥

अस कौतुक करि राम सर प्रविसेउ आइ निपंग ।

रावन सभा ससंक सत्र देखि महा रसभंग ॥१३(ख)॥

कंप न भूमि न मरुत विसेपा । अस्त्र सस्त्र कलु नयन न देखा ॥
 सोचहिं सत्र निज हृदय मझारी । असगुन भयउ भयंकर भारी ॥
 दसमुख देखि सभा भय पाई । विहसि वचन कह जुगुति वनाई ॥
 सिरउ गिरे संतत सुभ जाही । मुकुट परे कस असगुन ताही ॥
 सयन करहु निज निज गृह जाई । गवने भवन सकल सिर नाई ॥
 मंदोदरी सोच उर वसेऊ । जब ते श्रवनपूर महि खसेऊ ॥
 सजल नयन कह जुग कर जोरी । सुनहु प्रानपति विनती मोरी ॥
 फंत राम विरोध परिहरहु । जानि मनुज जनि हठ मन धरहु ॥

दो०—विस्वरूप रघुवंस मनि करहु यवन विस्वासु ।

लोक फल्यना घेद कर अंग अंग प्रति जासु ॥ १४ ॥

पद पाताल सीस अज धामा । अपरलोक अंग अंग विश्रामा ॥
 भृकुटि विलास भयंकर काला । नयन दिवाकर कच घन माला ॥
 जासु घान अस्थिनीकुमारा । निसि अरु दिवस निमेष अपारा ॥
 श्रवन दिसा दस वेद बखानी । मारुत खास निगम निज घानी ॥
 अधरलोभ जम दसन कराला । माया हास बाहु दिगपाला ॥
 आनन अनल अंधुपति जीहा । उतपति पालन प्रलय समीहा ॥
 राम राजि अष्टादस भारा । अस्थि सैल सरिता नस जारा ॥
 उदर उदधि अधगो जातना । जगमय प्रभु कावहु कल्पना ॥

दो०—अहंकार सिव बुद्धि अज मन ससि चित्त महान ।

मनुज चास . सचराचर रूप राम भगवान ॥ १५(क) ॥

अस विचारि सुनु प्रानपति प्रभु सन चयरु विहाइ ।

प्रीति करहु रघुवीर पद मम अहिवात न जाइ ॥ १५(ख) ॥

विहँसानारि वचन सुनिकाना । अहो मोह महिमा बलवाना ॥
 नारि सुभाउ सत्य सब कहहीं । अवगुन आठ सदा उर रहहीं ॥
 साहस अनृत चपलता माया । भय अत्रिवेक असौच अदाया ॥
 रिपु कर रूप सकल तैं गावा । अति विसाल भय मोहि सुनावा ॥
 सो सब प्रिया सहज बस मोरें । समुझि परा प्रसाद अब तोरें ॥
 जानिउँ प्रिया तोरि चतुराई । एहि विधि कहहु मोरि प्रभुताई ॥
 तव वतकही गूढ़ मृगलोचनि । समुझत सुखद सुनत भय मोचनि ॥
 मंदोदरि मन महँ अस ठयऊ । पियहि काल बस मतिभ्रम भयऊ ॥

दो०—एहि विधि करत विनोद बहु प्रात प्रगट दसकंध ।

सहज असंक लंकपति सभौ गयउ मद अंध ॥१६(क)॥

सो०—फूलइ फरइ न चेत जदपि सुधा वरपहि जलद ।

मूरख हृदयँ न चेत जौ गुर मिलहि विरंचि सम ॥१६(ख)॥

इहाँ प्रात जागे रघुराई । पृछा मत सब सचिव बोलाई ॥
 कहहु बेगि का करिअ उपाई । जामवंत कह पद सिरु नाई ॥
 सुनु सर्वग्य सकल उर वासी । बुधि बल तेज धर्म गुन रासी ॥
 मंत्र कहउँ निज मति अनुसार । दूत पठाइअ वालिकुमारा ॥
 नीक मंत्र सब के मन माना । अंगद सन कह कृपानिधाना ॥
 वालितनय बुधिबल गुन धामा । लंका जाहु तात मम कामा ॥
 बहुत बुझाइ तुम्हहि का कहऊँ । परम चतुर मैं जानत अहऊँ ॥
 काजु हमार तासु हित होई । रिपु सन करेहु वतकही सोई ॥

सो०—प्रभु अग्या धरि सीस चरन बंदि अंगद उठेउ ।

सोइ गुन सागर ईस राम कृपा जा पर करहु ॥१७(क)॥

स्वयंसिद्ध सब काज नाथ मोहि आदरु दियउ ।

अस विचारि जुवरात्र तन पुलकित हरपित हियउ ॥ १७ (ख) ॥

बंदि चरन उर धरि प्रभुताई । अंगद चलेउ सबहि सिरु नाई ॥
 प्रभु प्रताप उर सहज असंका । रन बाँकुरा वालिमुत बंका ॥
 पुर पैठत रावन कर बेटा । खेलत रहा सो होइ गँ भेटा ॥
 वातहिं वात करप वढ़ि आई । जुगल अतुल बल पुनि तरुनाई ॥
 तेहिं अंगद कहँ लात उठाई । गहि पद पटकेउ भूमि भवाँई ॥
 निसिचर निकर देखि भट भारी । जहँ तहँ चलेन मकहिं पुकारी ॥
 एक एक सन मरगु न कहहीं । समुझि तासु बध चुप करि रहहीं ॥
 भयउ कोलाहल नगर मझारी । आवा कपि लंका जेहिं जारी ॥
 अब धौं कहा करिहि करतारा । अतिसभीत सब करहिं विचारा ॥
 विनु पूछें मगु देहिं दिखाई । जेहि बिलोक सोइ जाइ मुख्वाँई ॥

दो०—गयउ सभा दरवार तब सुमिरि राम पद कंज ।

सिंह उबनि इत उत चितव धीर वीर बल पुंज ॥ १८ ॥

तुरत निसाचर एक पठावा । समाचार रावनाहि जनावा ॥
 मुनत विहँसि बोला दससीसा । आनहु बोलि कहाँ कर कीसा ॥
 आयसु पाइ दूत बहु धाए । कपिकुंजरहि बोलि लँ आए ॥
 अंगद दीख दसानन वैसे । सहित प्रान कजलगिरि जैसे ॥
 भुजा विटप सिर सृंग समाना । रोमावली लता जनु नाना ॥
 मुख नासिका नयन अरुकाना । गिरि कंदरा खोह अनुमाना ॥
 गयउ सभाँ मन नेकु न मुरा । बालितनय अतिबल बाँकुरा ॥
 उठे सभासद कपि कहँ देखी । रावन उर भा ~~कोष~~

* रामचरितमानस *

जथा मत्त गज जूथ महुँ पंचानन चलि जाइ ।
राम प्रताप सुमिरि मन बैठ सभाँ सिरु नाइ ॥ १९ ॥

दसकंठ कवन तैं वंदर । मैं रघुवीर दूत दसकंधर ॥
जनकहि तोहि रही मितार्ई । तव हित कारन आयउँ भाई ॥
त्तम कुल पुलस्ति कर नाती । सिव विरंचि पूजेहु बहु भाँती ॥
पर पायहु कीन्हेहु सब काजा । जीतेहु लोकपाल सब राजा ॥
नृप अभिमान मोह बस किंवा । हरि आनिहु सीता जगदंबा ॥
दसन गहहु तृन कंठ कुठारी । परिजन सहित संग निज नारी ॥
सादर जनकसुता करि आगें । एहि विधि चलहु सकल भय त्यागें ॥
दो०—प्रनतपाल रघुवंसमनि त्राहि त्राहि अब मोहि ।
आरत गिरा सुनत प्रभु अभय करैगो तोहि ॥ २० ॥

कपिपोत बोलु संभारी । मूढ़ न जानेहि मोहि सुरारी ॥
कहु निज नाम जनक कर भाई । केहि नातें मानिये मितार्ई ॥
अंगद नाम वालि कर बेटा । तासों कवहुँ भई ही भेटा ॥
अंगद वचन सुनत सकुचाना । रहा वालि वानर मैं जाना
अंगद तहीं वालि कर वालक । उपजेहु बंस अनल कुल वालक
गर्भ न गयहु व्यर्थ तुम्ह जायहु । निज मुख तापस दूत कहायहु
अब कहु कुसल वालि कहँ अहई । विहँसि वचन तब अंगद क
दिन दस गएँ वालि पहिँ जाई । बूझेहु कुसल सखा उर ल
राम विरोध कुसल जसि होई । सो सब तोहि सुनाइहि
मन सठ भेद होइ मन ताकें । श्रीरघुवीर हृदय नहिँ

दो०—हम कुल घालक सत्य तुम्ह कुल पालक दससीस ।

अंधउ बधिर न अस कहहि नयन कान तव बीस ॥ २१ ॥

सिव विरंचि मुर मुनि समुदाई । चाहत जासु चरन सेवकाई ॥
तासु दूत होइ हम कुल वारा । अइसिहुँ मति उर विहर न तोरा ॥
मुनि कठोर बानी कपि केरी । कहत दसानन नयन तरेरी ॥
खल तव कठिन वचन सब सहऊँ । नीति धर्म मैं जानत अहऊँ ॥
कह कपि धर्मसीलता तोरी । हमहुँ सुनी कृत पर त्रिय चोरी ॥
देखी नयन दूत रखवारी । बूढ़ि न मरहु धर्म व्रतधारी ॥
कान नाक विनु भगिनि निहारी । छमा कीन्हि तुम्ह धर्म विचारी ॥
धर्मसीलता तव जग जागी । पावा दरमु हमहुँ बड़भागी ॥

दो०—जनि जल्पसि जड़ जंतु कपि सठ बिलोकु मम बाहु ।

लोकपाल बल विपुल ससि घसन हेतु सब राहु ॥२२(क)॥

पुनि नभ सर मम कर निकर कमलन्हि पर करि बास ।

सोभत भयउ मराल इव संमु सहित कैलास ॥२२(ख)॥

तुम्हरे कटक माझ सुनु अंगद । मो सन भिरिहि कवन जोधा बद ॥
तव प्रभु नारि विरहँ बलहीना । अनुज तासु दुख दुखी मलीना ॥
तुम्ह सुग्रीव कूलद्रुम दोऊ । अनुज हमार भीरु अति सोऊ ॥
जामवंत मंत्री अति बूढ़ा । सो कि होइ अब समरारूढ़ा ॥
सिल्लिप कर्म जानहिं नलनीला । है कपि एक महा बलसीला ॥
आवा प्रथम नगरु जेहिं जारा । मुनत वचन कह बालिकुमारा ॥
सत्य वचन कहु निसिचर नाहा । साँचेहुँ कीस कीन्ह पुर दाहा ॥
रावन नगर अल्प कपि दहई । मुनिअस वचन सत्य को कहई ॥

जो अति सुभट सराहेहु रावन । सो सुग्रीव केर लघु धावन ॥
चलइ बहुत सो वीर न होई । पठवा खवरि लेन हम सोई ॥

दो०—सत्य नगरु कपि जारेउ विनु प्रभु आयसु पाइ ।

फिरि न गयउ सुग्रीव पहिं तेहि भय रहा लुकाइ ॥ २३(क) ॥

सत्य कहहि दसकंठ सब मोहि न सुनि कछु कोह ।

कोउ न हमारें कटक अस तो सन लरत जो सोह ॥ २३(ख) ॥

प्रीति विरोध समान सन करिअ नीति असि आहि ।

जौ मृगपति बध मेडुकन्हि भल कि कहइ कोउ ताहि ॥ २३(ग) ॥

जद्यपि लघुता राम कहुं तोहि बधे बड़ दोष ।

तदपि कठिन दसकंठ सुनु छत्र जाति कर रोष ॥ २३(घ) ॥

बक उक्ति धनु बचन सर हृदय दहेउ रिपु कीस ।

प्रतिउत्तर नहु काढत भट दससीस ॥ २३(ङ) ॥

जो असि मति पितु खाए कीसा । कहि अस बचन हँसा दससीसा
 पितहि खाइ खानेउँ पुनि तोही । अबहीं समुझि परा कलु मोही ॥
 बालि विमल जस भाजन जानी । हतउँ न तोहि अधम अभिमानी
 कहु रावन रावन जग केते । मैं निज श्रवन सुने सुनु जेते ॥
 बलिहि जितन एक गयउ पताला । गखेउ बाँधि सिसुन्ह हयसाला
 खेलहि बालक मारहि जाई । दया लागि बलि दीन्ह छोड़ाई ॥
 एक बहोरि सहसभुज देखा । धाइ धरा जिमि जंतु बिसेपा ॥
 कौतुक लागि भवन लँ आवा । मां पुलन्ति मुनि जाइ छोड़ावा ॥

दो०—एक कहत मोहि सकुच अनि रहा बालि की कौल ।

इन्ह महुँ रावन तँ कवन सत्य बदाहि तजि माख ॥ २४ ॥

सुनु सठ सोइ रावन बलसीला । हरगिरि जान जासु भुज लीला ॥
 जान उमापति जासु सुराई । पूजेउँ जेहि सिर सुमन चढ़ाई ॥
 सिर सरोज निज करन्हि उतारी । पूजेउँ अमित बार त्रिपुरारी ॥
 भुज विक्रम जानहि दिगपाला । सठ अजहूँ जिन्ह कें उर साला ॥
 जानहि दिग्गज उर कठिनाई । जय जय भिरउँ जाइ धरिआई ॥
 जिन्ह के दसन कराल न कूटे । उर लागत मूलक इव दूटे ॥
 जासु चलत डोलति इमि धरनी । चढ़त मत्त गज जिमि लघु तरनी ॥
 सोइ रावन जग विदित प्रतापी । मुनेहि न श्रवन अलीक प्रलापी ॥

दो०—तेहि रावन कहें लघु कहसि नर कर करसि बखान ।

रे कषि बरंर सर्व खल अब जाना तव ग्यान ॥ २५ ॥

मुनि अंगद सकांप कह बानी । बोलु सँभारि अधम अभिमानी ॥
 सहसबाहु भुज गहन अपारा । दहन अनल सम जासु

जो अति सुभट सराहेहु रावन । सो सुग्रीव केर लघु धावन ॥
चलइ बहुत सो वीर न होई । पठवा खवरि लेन हम सोई ॥

दो०—सत्य नगरु कपि जारेउ विनु प्रभु आयसु पाइ ।

फिरि न गयउ सुग्रीव पहिं तेहिं भय रहा लुकाइ ॥ २३(क) ॥

सत्य कहहि दसकंठ सब मोहि न सुनि कछु कोह ।

कोउ न हमारे कटक अस तो सन लरत जो सोह ॥ २३(ख) ॥

प्रीति विरोध समान सन करिअ नीति असि आहि ।

जौं मृगपति बध भेडुकन्हि भल कि कहइ कोउ ताहि ॥ २३(ग) ॥

जद्यपि लघुता राम कहूँ तोहि बधे बड़ दोष ।

तदपि कठिन दसकंठ सुनु छत्र जाति कर रोष ॥ २३(घ) ॥

बक्र उक्ति धनु बचन सर हृदय दहेउ रिपु कीस ।

प्रतिउत्तर सड़सिन्ह मनहु काढत भट दससीस ॥ २३(ङ) ॥

हँसि बोलेउ दसमौलि तव कपि कर बड़ गुन एक ।

जो प्रतिपालइ तामु हित करइ उपाय अनेक ॥ २३(च) ॥

धन्य कीस जो निज प्रभु काजा । जहँ तहँ नाचइ परिहरि लाजा ॥

नाचि कूटि करि लोग रिझाई । पति हित करइ धर्म निपुनाई ॥

अंगद स्वामिभक्त तव जाती । प्रभु गुन कस न कहसि एहि भाँती

मैं गुन गाहक परम सुजाना । तव कहु स्टनि करउँ नहिं काना ॥

कह कपि तव गुन गाहकताई । सत्य पवनसुत मोहि सुनाई ॥

वन विधंसि सुत बधि पुर जारा । तदपि न तेहिं कछु कृत अपकारा ॥

सोइ विचारि तव प्रकृति सुहाई । दसकंधर मैं कीन्हि ठिठाई ॥

देखेउँ आइ जो कछु कपि भापा । तुम्हरे लाज न रोष न माखा ॥

जौं असि मति पितु खाए कीसा । कहि अस वचन हँसा दससीसा
 पितहि खाइ खातेउँ पुनि तोही । अवहीं समुझि परा कछु मोही ॥
 बालि विमल जस भाजन जानी । हतउँ न ताहि अधम अभिमानी
 कहु रावन रावन जग केते । मैं निज श्रवन सुने सुनु जेने ॥
 बलिहि जितन एक गयउ पताला । गखेउ बाँधि सिसुन्ह हयमाला
 खेलहि बालक मारहि जाई । दया लागि बलि दीन्ह छोड़ाई ॥
 एक बहोरि सहसभुज देखा । धाइ धरा जिमि जंतु बिसेपा ॥
 कौतुक लागि भवन लँ आवा । माँ पुलन्ति मुनि जाइ छोड़ावा ॥

दो०—एक कहत मोहि सकुच अनि रहा बालि की कौल ।

इन्ह महुँ रावन तँ कवन सत्य बरहि तजि माख ॥ २४ ॥

मुनु सठ सोइ रावन बलसीला । हरगिरि जान जासु भुज लीला ॥
 जान उमापति जासु सुराई । पूजेउँ जेहि सिर सुमन चढ़ाई ॥
 सिर सरोज निज करन्हि उतारी । पूजेउँ अमित बार त्रिपुरारी ॥
 भुज विक्रम जानहि दिगपाला । सठ अजहूँ जिन्ह कें उर साला ॥
 जानहि दिग्गज उर कठिनाई । जब जब भिरउँ जाइ बरिआई ॥
 जिन्ह कें दसन कराल न फूटे । उर लागत मूलक इव टूटे ॥
 जासु चलत डोलति इमि धरनी । चढ़त मत्त गज जिमि लघु तरनी ॥
 सोइ रावन जग बिदित प्रतापी । मुनेहि न श्रवन अलीक प्रलापी ॥

दो०—तेहि रावन कहें लघु कहसि नर कर करसि चखान ।

रे कपि चर्वर खर्व खल अब जाना तव ग्यान ॥ २५ ॥

मुनि अंगद सक्रोप कह वानी । बोलु सँभारि अधम अभिमानी ॥
 सहसबाहु भुज गहन अपारा । दहन अनल सम जासु कुठारा ॥

जासु परसु सागर सर धारा । वृड़े नृप अगनित बहु वारा ॥
 तासु गर्व जेहि देखत भागा । सो नर क्यों दससीस अभागा ॥
 राम मनुज कस रे सठ वंगा । धन्वी कामु नदी पुनि गंगा ॥
 पसु सुरधेनु कल्पतरु रूखा । अन्न दान अरु रस पीयूषा ॥
 वैनतेय स्वर्ग अहि सहसासन । चिंतामनि पुनि उपल दसानन ॥
 सुनु मतिमंद लोक वेंकुंठा । लाभ कि रघुपति भगति अकुंठा ॥

दो०—सेन सहित तव मान मथि वन उजारि पुर जारि ।

कस रे सठ हनुमान कपि गयउ जो तव सुत मारि ॥ २६ ॥

सुनु रावन परिहरि चतुराई । भजसि न कृपासिंधु रघुराई ॥
 जाँखल भएमि राम कर द्रोही । ब्रह्म रुद्र सक राखि न तोही ॥
 मूढ़ वृथा जनि मारसि गाला । राम वयर अस होइहि हाला ॥
 तव सिर निकर कपिन्ह के आगें । परिहहिं धरनि राम सर लागें ॥
 ते तव सिर कंदुक मम नाना । खेलिहहिं भालु कीस चौगाना ॥
 जवहिं समर कोपिहि रघुनायक । छुटिहहिं अति कराल बहु सायक ॥
 तव कि चलिहि अस गाल तुम्हारा । अस विचारि भजु राम उदारा ॥
 सुनत वचन रावन परजरा । जरत महानल जनु वृत परा ॥

दो०—कुंभकरन अस वंधु मम सुत प्रसिद्ध सकारि ।

मोर पराक्रम नहि सुनेहि जितेउँ चराचर झारि ॥ २७ ॥

सठ साखामृग जोरि सहाई । वाँधा सिंधु इहइ प्रभुताई ॥
 नावहिं स्वर्ग अनेक वारीसा । सर न होहिं ते सुनु सब कीसा ॥
 मम भुज सागर बल जल पूरा । जहँ वृड़े बहु सुर नर सारा ॥

दीप्त पयोधि अमाश्र आमाश्र । न्ये अश्वतीर जो पावति सारा ॥

दिगपालन्ह मैं नीर भरावा । भूप मुजस खल मोहि मुनावा ॥
 जाँ पै समर मुभट तव नाथा । पुनि पुनि कहसि जासु गुन गाथा ॥
 तौ वसीठ पठवत केहि काजा । रिपु सन प्रीति करत नहिं लाजा ॥
 हरगिरि मथन निरखु मम वाह्य । पुनि सठ कपि निज प्रभुहि मगह्य ॥

दा०—सूर कवन रावन सरिस स्वकर काटि जेहि सीस ।

हुने अनल अति हरप बहु वार साखि गौरीस ॥ २८ ॥

जरत बिलोकेउँ जग्रहिं कपाला । विधि के लिखे अंक निज भाला ॥
 नर केँ कर आपन वध चाँची । हसेउँ जानि विधि गिरा असाँची ॥
 साँउ मन समुझि त्रास नहिं मोरें । लिखा विरंचि जरठ मति भोरें ॥
 आन वीर बल सठ मम आगें । पुनि पुनि कहसि लाज पति त्यागें ॥
 कह अंगद सलज्ज जग माहीं । रावन तोहि समान काँउ नाहीं ॥
 लाजवंत तव सहज सुभाऊ । निज मुख निज गुन कहसि न काऊ ॥
 सिर अरु सैल कथा चित रही । ताते वार बीस तँ कही ॥
 साँ भुजबल राखेहु उर घाली । जीतेहु सहसबाहु बलि बाली ॥
 सुनु मतिमंद देहि अब पूरा । काटें सीस कि होइअ सारा ॥
 इंद्रजालि कहँ कहिअ न वीरा । काटइ निज कर सकल सरीरा ॥

दा०—जरहि पतंग मोह बस भार बहहिं खर वृद ।

ते नहिं सूर कहावहिं समुझि देखु मतिमंद ॥ २९ ॥

अब जनि वतवदाव खल करही । सुनु मम वचन मान परिहरही ॥
 दसमुख मैं न वसीठीं आयउँ । अस विचारि रघुवीर पटायउँ ॥
 वार वार अस कहइ कृपाला । नहिं गजारि जसु वधें सृकाला ॥
 मन महुँ समुझि वचन प्रभु केरे । सहेउँ कठोर वचन सठ तेरे ॥

* रामचरितमानस *

हैं त करि मुख भंजन तोरा । लै जातेउँ सीतहि बरजोरा ॥
 नेउँ तव बल अधम सुरारी । सनेँ हरि आनिहि परनारी ॥
 निसिचर पति गर्व बहता । मैं रघुपति सेवक कर दूता ॥
 न राम अपमानहि डरऊँ । तोहि देखत अस कौतुक करऊँ ॥

१०-तोहि पटक महि सेन हति चौपट करि तव गाउँ ।
 तव जुवतिन्ह समेत सठ जनकसुतहि लै जाउँ ॥ ३० ॥

जौं अस करौं तदपि न बड़ाई । मुएहि बधेँ नहिँ कलु मनुसाई ॥
 कौल कामवस कृपिन विमूढ़ा । अति दरिद्र अजसी अति बूढ़ा ॥
 सदा रोगवस संतत क्रोधी । विष्णु विमुख श्रुति संत विरोधी ॥
 तनु पोपक निंदक अध खानी । जीवत सब सम चौदह प्रानी ॥
 अस विचारि खल बधेँन तोही । अब जनि रिस उपजावसि मोही ॥
 सुनि सकोप कह निसिचर नाथा । अधर दसन दसि मीजत हाथा ॥
 रे कपि अधम मरन अब चहसी । छोटे वदन बात बड़ि कहसी ॥
 कटु जल्पसि जड़ कपि बल जाकेँ । बल प्रताप बुधि तेज न ताकेँ ॥
 दो०-अगुन अमान जानि तेहि दीन्ह पिता वनवास ।

सो दुख अरु जुवती विरह पुनि निसि दिन मम त्रास ॥ ३१ (क) ॥

जिन्ह के बल कर गर्व तोहि अइसे मनुज अनेक ।

खाहि निसाचर दिवस निसि मूढ़ समुझु तजि टेक ॥ ३१ (ख) ॥

जब तेहिं कीन्हि राम कै निंदा । क्रोधवंत अति भयउ कपिंदा ।
 हरि हर निंदा सुनइ जो काना । होइ पाप गोघात समाना ।
 कटकटान कपिकुंजर भारी । दुहु भुजदंड तमकि महि मारी ।
 डोलत धरनि सभासद खसे । चले भाजि भय मारुत ग्रसे ॥

गिरत सँभारि उठा दसकंधर। भूतल परे मुकुट अति सुंदर ॥
 कलु तेहि लै निज सिरन्हि सँवारे। कलु अंगद प्रभु पास पवारे ॥
 आवत मुकुट देखि कपि भागे। दिनहीं लूक परन विधि लागे ॥
 की रावन करि कोप चलाए। कुलिस चारि आवत अति धाए ॥
 कह प्रभु हँसि जनि हृदयँ डेराहू। लूक न असनि केतु नहिँ राहू ॥
 ए किरीट दसकंधर केरे। आवत वालितनय के प्रेरे ॥

दो०—तरकि पवनसुत कर गहे आनि धरे प्रभु पास ।

कौतुक देखहिँ भालु कपि दिनरु सरिस प्रह्लास ॥३२(क)॥

उहाँ सकोपि दसानन सब सन कहत रिसाइ ।

धरहु कपिहिँ धरि मारहु सुनि अंगद मुसुकाइ ॥३२(ख)॥

एहि वधि वेगि सुभट सब धावहु। स्वाहु भालु कपि जहँ जहँ पावहु
 मर्कटहीन करहु महि जाई। जिअत धरहु तापस द्वौ भाई ॥
 पुनि सकोप बोलेउ जुवराजा। गाल बजावत तोहि न लाजा ॥
 मरु गर काटि निलज कुलघाती। बल विलोकि बिहरति नहिँ छाती
 रे त्रिय चोर कुमारग गामी। खलमल रासि मंदमति कामी ॥
 मन्यपात जल्पसि दुर्वादा। भएसि कालवस खल मनुजादा ॥
 याको फलु पावहिगो आगें। वानर भालु चपेटन्हि लागें ॥
 रामु मनुज बोलत असि चानी। गिरहिँ न तव रसना अभिमानी ॥
 गिरिहहिँ रसना संसय नाहीं। सिरन्हि समेत समर महि माहीं ॥

सो०—सो नर क्यों दसकंध वालि क्यो जेहिँ एक सर ।

बीसहुँ लोचन अंध धिग तव जन्म कुजाति जइ ।

* रामचरितमानस *

तव सोनित कीं प्यास तृपित राम सायक निकर ।
 तजउँ तोहि तेहि त्रास कटु जल्पक निसिचर अधम ॥ ३३ (ख) ॥
 तव दसन तोरिबे लायक । आयसु मोहि न दीन्ह रघुनायक ॥
 असि रिस होति दसउ मुखतोरौं । लंका गहि समुद्र मँ वोरौं ॥
 गूलरि फल समान तव लंका । वसहु मध्य तुम्ह जंतु असंका ॥
 मँ वानर फल खात न वारा । आयसु दीन्ह न राम उदारा ॥
 जुगुति सुनत रावन मुसुकाई । मूढ़ सिखिहि कहँ बहुत झुठाई ॥
 बालि न कवहुँ गाल अस मारा । मिलि तपसिन्ह तँ भएसि लवारा ॥
 साँचेहुँ मँ लवार भुज बीहा । जौं न उपारिउँ तव दस जीहा ॥
 समुझि राम प्रताप कपि क्रोपा । सभा माझ पन करि पद रोपा ॥
 जौं मम चरन सकसि सठ टारी । फिरहिँ रामु सीता मँ हारी ॥
 सुनहु सुभट सब कह दससीसा । पद गहि धरनि पछारहु कीसा ॥
 इंद्रजीत आदिक बलवाना । हरपि उठे जहँ तहँ भट नाना ॥
 झपटहिँ करि बल विपुल उपाई । पद न टरइ बैठहिँ सिरु नाई ॥
 पुनि उठि झपटहिँ सुर आराती । टरइ न कीस चरन एहि भाँती ॥
 पुरुष कुजोगी जिमि उरगारी । मोह बिटप नहिँ सकहिँ उपारी ॥
 दो०—कोटिन्ह मेघनाद सम सुभट उठे हरपाइ ।
 झपटहिँ टरै न कपि चरन पुनि बैठहिँ सिर नाइ ॥ ३४ ॥
 भूमि न छाँड़त कपि चरन देखत रिपु मद भाग ।
 कोटि विघ्न ते संत कर मन जिमि नीति न त्याग ॥ ३४ ॥
 कपि बल देखि सकल हियँ हारे । उठा आपु कपि कें पर
 गहत चरन कह बालिकुमारा । मम पद गहँ न तोर

गहसि न राम चरन सठ जाई । सुनत फिरा मन अति सकुचाई ॥
 भयउ तेजहत श्री सब गई । मध्य दिवस जिमि ससि सोहई ॥
 सिंघासन बैठेउ सिर नाई । मानहुँ संपति सकल गँवाई ॥
 जगदातमा प्रानपति रामा । तासु त्रिमुख किमिलह विश्रामा ॥
 उमारा मकी भृकुटि चिलासा । होइ विश्व पुनि पावइ नासा ॥
 तृनते कुलिस कुलिस तृन करई । तासु दूत पन कहु किमि टरई ॥
 पुनि कपि कही नीति विधि नाना । मान न ताहि कालु निअराना ॥
 रिपु मद मथि प्रभु मुजसु सुनायो । यह कहि चलयो बालि नृप जायो
 हर्ता न खेत खेलाइ खेलाई । तोहि अयहिं का करीं बड़ाई ॥
 प्रथमहिं तासु तनय कपि मारा । सो मुनि रावन भयउ दुखारा ॥
 जातुधान अंगद पन देखी । भयव्याकुल सब भए विसैपी ॥

दो०—रिपु धल धरपि हरपि कपि बालितनय धल पुंज ।

पुलक सरीर नयन जल गहे राम पद कंज ॥३५(क)॥

सौंल जानि दसकंधर भवन गयउ बिलखाड ।

मंदोदरी रावनहि बहुरि कहा समुझाइ ॥३५(ख)॥

कंत समुझि मन तजहु कुमतिही । सोह न समर तुम्हहि रघुपतिही ॥
 रामानुज लघु रेख खचाई । सोउ नहिं नाघेहु असि मनुसाई ॥
 पिय तुम्ह ताहि जितव संग्रामा । जाके दूत केर यह कामा ॥
 कौतुक सिंधु नाधि तव लंका । आयउ कपि केहरी असंका ॥
 रग्वारे हति विपिन उजारा । देखत तोहि अच्छ तेहिं मारा ॥
 जारि सकल पुर कीन्हेसि छारा । कहाँ रहा बल गर्व,
 अब पति मृपा गाल जनि मारहु । मोर कहा कछु

* रामचरितमानस *

रघुपतिहि नृपति जनि मानहु । अग जग नाथ अतुलबल जानहु
 न प्रताप जान मारीचा । तासु कहा नहि मानेहि नीचा ॥
 निक सभाँ अगनित भूपाला । रहे तुम्हउ बल अतुल विसाला ॥
 भंजि धनुष जानकी विआही । तव संग्राम जितेहु किन ताही ।
 सुरपति सुत जानइ बल थोरा । राखा जित अँखि गहि फोरा
 सूपनखा कै गति तुम्ह देखी । तदपि हृदयँ नहिँ लाज विसेपी
 दो०—बधि विराघ खर दूपनहि लीलाँ हत्यो कबंध ।
 बालि एक सर मारयो तेहि जानहु दसकंध ॥ ३५ ॥

जेहिँ जलनाथ बंधायउ हेला । उतरे प्रभु दल सहित सुबेला ॥
 कारुणीक दिनकर कुल केतू । दूत पठायउ तव हित हेतू ॥
 सभा माझ जेहिँ तव बल मथा । करि वरूथ महुँ मृगपति जथा ॥
 अंगद हनुमत अनुचर जाके । रन बाँकुरे वीर अति बाँके ॥
 तेहि कहँ पिय पुनि पुनि नर कहहू । मुधा मान ममता मद बहहू ॥
 अहह कंत कृत राम विरोधा । काल विवस मन उपज न बोधा ।
 काल दंड गहि काहु न मारा । हरइ धर्म बल बुद्धि विचारा
 निकट काल जेहि आवत साई । तेहि भ्रम होइ तुम्हारिहि नाई
 दो०—दुइ सुत मरे दहेउ पुर अजहुँ पूर पिय देहु ।
 कृपासिंधु रघुनाथ भजि नाथ विमल जसु लेहु ॥

नारिवचन सुनि विसिख समाना । सभाँ गयउ उठि होत वि
 बैठ जाइ सिंघासन फूली । अति अभिमान त्रास सब
 इहाँ राम अंगदहि बोलावा । आइ चरन पंकज सिरु
 नि आदर समीप बैठारी । बोले विहँसि कृपाल

वालितनय कौतुक अति मोही । तात सत्य कहूँ पूछउँ तोही ॥
 रावनु जातुधान कुल टीका । भुजबल अतुल जामु जग लीका ॥
 तासु मुकुट तुम्ह चारि चलाए । कहहुँ तात कवनी विधि पाए ॥
 मुनु सर्वग्य प्रनत मुखकारी । मुकुट नहोहिँ भूप गुन चारी ॥
 साम दान अरु दंड विभेदा । नृप उर बसहिँ नाथ कह वेदा ॥
 नीति धर्म के चरन सुहाए । अस जियँ जानि नाथ पहिँ आए ॥

दो०—धर्महीन प्रभु पद विमुख काल बियस दससीस ।

तेहि परिहरि गुन आए सुनहुँ कोसलाधीस ॥३८(क)॥

परम चतुरता श्रयन मुनि विहँसे रामु उदार ।

समाचार पुनि सब कहे गद के बालिकुमार ॥३८(ख)॥

रिपु के समाचार जब पाए । रामसचिव सब निकट बोलाए ॥
 लंका बाँके चारि दुआरा । केहि विधिलागिअ करहुँ विचारा ॥
 तब कपीस रिच्छेस विभीषन । मुमिरि हृदयँ दिनकर कुल भूपन ॥
 करि विचार तिन्ह मंत्र दृढावा । चारि अनी कपि कटकु घनावा ॥
 जथाजोग सेनापति कीन्हे । जूथप सकल बोलि तब लीन्हे ॥
 प्रभु प्रताप कहि सब समुझाए । मुनि कपि सिंघनाद करि धाए ॥
 हरपित राम चरन सिर नावहिँ । गहि गिरि सिखर वीर सब धावहिँ ॥
 गर्जहिँ तर्जहिँ भालु कपीसा । जय रघुवीर कोसलाधीसा ॥
 जानत परम दुर्ग अति लंका । प्रभु प्रताप कपि चले असंका ॥
 घटाटोप करि चहुँ दिसि घेरी । मुखहिँ निसान बजावहिँ भेरी ॥

दो०—जयति राम जय लछिमन जय कपीस सुधीव ।

गर्जहिँ सिंघनाद कपि भालु महा चल सीव ॥ ३९ ॥

लंकाँ भयउ कोलाहल भारी । सुना दसानन अति अहँकारी ॥
 देखहु वनरन्ह केरि ढिठाई । विहँसि निसाचर सेन बोलाई ॥
 आए कीस काल के प्रेरे । छुधावत सब निसिचर मेरे ॥
 अस कहि अट्टहास सठ कीन्हा । गृह बैठे अहार बिधि दीन्हा ॥
 सुभट सकल चारिहुँ दिसि जाहू । धरि धरि भालु कीस सब खाहू ॥
 उमा रावनहि अस अभिमाना । जिमि टिट्टिभ खग सत उताना ॥
 चले निसाचर आयसु मागी । गहि कर भिडिपाल वर साँगी ॥
 तोमर सुदर परसु प्रचंडा । सल कृपान परिघ गिरिखंडा ॥
 जिमि अरुनोपल निकर निहारी । धावहिँ सठ खग मांस अहारी ॥
 चोंच भंग दुख तिन्हहि न सझा । तिमि धाए मनुजाद अबूझा ॥

दो०—नानायुध सर चाप धर जातुधान बल वीर ।

कोट कँगूरन्हि चढ़ि गए कोटि कोटि रनधीर ॥ ४० ॥

कोट कँगूरन्हि सोहहिँ कैसे । मेरु के सृंगनि जनु घन वैसे ॥
 वाजहिँ ढोल निसान जुझाऊ । सुनि धुनि होइ भटन्हि मन चाऊ ॥
 वाजहिँ भेरि नफीरि अपारा । सुनि कादर उर जाहिँ दरारा ॥
 देखिन्ह जाइ कपिन्ह के ठट्टा । अति विसाल तनु भालु सुभट्टा ॥
 धावहिँ गनहिँ न अवघट घाटा । पर्वत फोरि करहिँ गहि वाटा ॥
 कटकटाहिँ कोटिन्ह भट गर्जहिँ । दसन ओठ काटहिँ अति तर्जहिँ ॥
 उत रावन इत राम दोहाई । जयति जयति जय परी लराई ॥
 निसिचर सिखर समूह ढहावहिँ । कूदि धरहिँ कपि फेरि चलावहिँ ॥

छं०—धरि कुधरे खंड प्रचंड मर्कट भालु गढ़ पर डारही ।

झपटहिँ चरन गहि पटक महि भजि चलत बहुरि पचारही ॥

अति तरल तरुन प्रताप तरपहि तमकि गढ चदि चदि गए ।
कपि भालु चदि मंदिरन्ह जहँ तहँ राम जसु गायत भए ॥

दो०—एकु एकु निसिचर गहि पुनि कपि चले पराइ ।

ऊपर आपु हेठ भट गिरहि धरनि पर आइ ॥ ४१ ॥

राम प्रताप प्रबल कपिजूथा । मर्दहिं निसिचर सुभट वरूथा ॥
चढ़े दुर्ग पुनि जहँ तहँ वानर । जय रघुबीर प्रताप दिवाकर ॥
चले निसाचर निकर पराई । प्रबल पवन जिमि घन समुदाई ॥
हाहाकार भयउ पुर भारी । रोवहिं बालक आतुर नारी ॥
सब मिलि देहिं रावनहि गारी । राज करत एहिं मृत्यु हँकारी ॥
निज दल विचल सुनी तेहिं काना । फेरि सुभट लंकैस रिसाना ॥
जो रन विमुख सुना में काना । सो मैं हतब कराल कृपाना ॥
सर्वसु खाइ भोग करि नाना । समर भूमि भए बह्मभ प्राना ॥
उग्र वचन गुनि सकल डेराने । चले क्रोध करि सुभट लजाने ॥
सन्मुख मरन वीर कै सोभा । तब तिन्ह तजा प्रान कर लोभा ॥

दो०—बहु आयुध धर सुभट सब भिरहि पचारि पचारि ।

ब्याकुल किए भालु कपि परिध त्रिसूलन्हि मारि ॥ ४२ ॥

भय आतुर कपि भागन लागे । जद्यपि उमा जीतिहहिं आगे ॥
कोउ कह कहँ अंगद हनुमंता । कहँ नल नील दुचिद बलवंता ॥
निज दल विकल सुना हनुमाना । पच्छिम द्वार रहा चलवाना ॥
मेघनाद तहँ करइ लराई । टूट न द्वार परम कठिनाई ॥
पवन तनय मन भा अति क्रोधा । गर्जेउ प्रबल काल सम जोधा ॥
कूदि लंक गढ़ ऊपर आवा । गहि गिरि मेघनाद कहुँ धावा ॥

भंजेउ रथ सारथी निपाता। ताहि हृदय महुँ मारेसि लाता ॥
दुसरें सत विकल तेहि जाना। स्यंदन घालि तुरत गृह आना ॥

दो०—अंगद सुना पवनसुत गढ़ पर गयउ अकेल ।

रन बाँकुरा बालिसुत तरकि चढ़ेउ कपि खेल ॥ ४३ ॥

जुद्ध विरुद्ध क्रुद्ध द्वौ बंदर। राम प्रताप सुमिरि उर अंतर ॥
रावन भवन चढ़े द्वौ धाई। करहिं कोसलाधीस दोहाई ॥
कलस सहित गहि भवनु ढहावा। देखि निसाचर पति भय पावा ॥
नारि बृंद कर पीटहिं छाती। अब दुइ कपि आए उतपाती ॥
कपिलीला करि तिन्हहि डेरावहिं। रामचंद्र कर सुजसु सुनावहिं ॥
पुनि कर गहि कंचन के खंभा। कहेन्हि करिअ उतपात अरंभा ॥
गर्जि परे रिपु कटक मझारी। लागे मदै भुज बल भारी ॥
काहुहि लात चपेटन्हि केहू। भजहु न रामहि सो फल लेहू ॥

दो०—एक एक सों मर्दहिं तोरि चलावहिं मुंड ।

रावन आगे परहिं ते जनु फूटहिं दधि कुंड ॥ ४४ ॥

महा महा मुखिआ जे पावहिं। ते पद गहि प्रभु पास चलावहिं ॥
कहइ विभीषनु तिन्ह के नामा। देहिं राम तिन्हहू निज धामा ॥
खल मनुजाद द्विजामिप भोगी। पावहिं गति जो जाचत जोगी ॥
उमा राम मृदुचित करुनाकर। बयर भाव सुमिरत मोहि निसिचर ॥
देहिं परम गति सो जियँ जानी। अस कृपाल को कहहु भवानी ॥
अस प्रभु सुनि न भजहिं भ्रम त्यागी। नर मतिमंद ते परम अभागी ॥
अंगद अरु हनुमंत प्रवेशा। कीन्ह दुर्ग अस कह अवघेसा ॥
लंकाँ द्वौ कपि सोहहिं कैसें। मथहिं सिंधु दुइ मंदर जैसें ॥

दो०—भुज बल रिपु दल दलमलि देखि दिवस कर अंत ।

कूदे जुगल विगत श्रम आए जहँ भगवंत ॥४५॥

प्रभु पद कमल सीस तिन्ह नाए । देखि सुभट रघुपति मन भाए ॥
 राम कृपा करि जुगल निहारे । भए विगतश्रम परम सुखारे ॥
 गए जानि अंगद हनुमाना । फिरे भालु मर्कट भट नाना ॥
 जातुधान प्रदोष बल पाई । धाए करि दससीस दोहाई ॥
 निसिचर अनी देखि कपि फिरे । जहँ तहँ कटकटाइ भट भिरे ॥
 डौ दल प्रबल पचारि पचारी । लरत सुभट नहिँ मानहिँ हारी ॥
 महावीर निसिचर सब कारे । नाना बरन बलीमुख भारे ॥
 सबल जुगल दल समयल जोधा । कौतुक करत लरत करि क्रोधा ॥
 प्राविट सरद पयोद धनेरे । लरत मनहुँ मारुत के भेरे ॥
 अनिय अकंपन अरु अतिक्राया । विचलत सेन कीन्हि इन्ह माया ॥
 भयउ निमिष महँ अति अधिआरा । वृष्टि होइ रुधिरांपल छारा ॥

दो०—देखि निविड तम दसहुँ दिसि कपिशल भयउ स्वभार ।

एकहि एक न देखई जहँ तहँ करहिँ पुकार ॥४६॥

सकल मरमु रघुनायक जाना । लिए बोलि अंगद हनुमाना ॥
 समाचार सब कहि समुझाए । सुनत कोपि कपिकुंजर धाए ॥
 पुनि कृपाल हंसि चाप चढ़ावा । पावक सायक सपदि चलावा ॥
 भयउ प्रकास कतहुँ तम नाहीं । ग्यान उदयँ जिमि संसय जाहीं ॥
 भालु बलीमुख पाइ प्रकासा । धाए हरप विगत श्रम त्रासा ॥
 हनुमान अंगद रन गाजे । हाँक सुनत रजनीचर भाजे ॥
 भागत भट पटकहिँ धरि धरना । करहिँ भालु कपि अद्भुत करनी ॥

भंजेउ रथ सारथी निपाता। ताहि हृदय महुँ मारेसि लाता।
दुसरें स्रुत विकल तेहि जाना। स्यंदन घालि तुरत गृह आना।

दो०—अंगद सुना पवनसुत गढ़ पर गयउ अकेल।

रन बाँकुरा बालिसुत तरकि चढ़ेउ कपि खेल ॥ ४३

जुद्ध बिरुद्ध क्रुद्ध द्वौ बंदर। राम प्रताप सुमिरि उर अंतर।
रावन भवन चढ़े द्वौ धाई। करहि कोसलाधीस दोहाई।
कलस सहित गहि भवनु ढहावा। देखि निसाचर पति भय पावा।
नारि वृंद कर पीटहि छाती। अब दुइ कपि आए उतपाती।
कपिलीला करि तिन्हहि डेरावहि। रामचंद्र कर सुजसु सुनावहि।
पुनि कर गहि कंचन के खंभा। कहेन्हि करिअ उतपात अरंभा।
गर्जि परे रिपु कटक मझारी। लागे मदै भुज बल भारी।
काहुहि लात चपेटन्हि केहू। भजहु न रामहि सो फल लेहू।

दो०—एक एक सों मर्दहि तोरि चलावहि मुंड।

रावन आगें परहिं ते जनु फूटहिं दधि कुंड ॥ ४४

महा महा मुखिआ जे पावहिं। ते पद गहि प्रभु पास चलावहिं।
कहइ विभीषनु तिन्ह के नामा। देहिं राम तिन्हहू निज धामा।
खल मनुजाद द्विजामिष भोगी। पावहिं गति जो जाचत जोगी।
उमा राम मृदुचित करुनाकर। बयर भाव सुमिरत मोहि निसिच।
देहिं परम गति सो जियँ जानी। अस कृपाल को कहहु भवानी।
अस प्रभु सुनि न भजहिं भ्रम त्यागी। नर मतिमंद ते परम अभा।
अंगद अरु हनुमंत प्रबेसा। कीन्ह दुर्ग अस कह अवधेसा।
लंकाँ द्वौ कपि सोहहिं कैसैं। मथहिं सिंधु दुइ मंदर जैसैं।

दो०—भुज बल रिपु दल दलमलि देखि दिवस कर अंत ।

कूदे जुगल विगत श्रम आप जहँ भगवंत ॥४५॥

प्रभु पद कमल सीस तिन्ह नाए । देखि सुभट रघुपति मन भाए ॥
 राम कृपा करि जुगल निहारे । भए विगतश्रम परम सुखारे ॥
 गए जानि अंगद हनुमाना । फिरे भालु मर्कट भट नाना ॥
 जातुधान प्रदोष चल पाई । धाए करि दससीस दोहाई ॥
 निसिचर अनी देखि कपि फिरे । जहँ तहँ कटकटाइ भट भिरे ॥
 ठौं दल प्रबल पचारि पचारी । लरत सुभट नहिँ मानहिँ हारी ॥
 महावीर निसिचर सब कारे । नाना बरन बलीमुख भारे ॥
 सबल जुगल दल समबल जोधा । कौतुक करत लरत करि क्रोधा ॥
 प्राघिठ सरद पयोद घनेरे । लरत मनहुँ मारुत के प्रेरे ॥
 अनिप अकंपन अरु अतिकाया । पिचलत सेन कीन्हि इन्ह माया ॥
 भयउ निमिप महँ अति अंधिआरा । बृष्टि होइ रुधिरापल छारा ॥

दो०—देखि निविड़ तम दसहुँ दिसि कपिदल भयउ खभार ।

एकहि एक न देखई जहँ तहँ करहि पुकार ॥४६॥

सकल मरमु रघुनायक जाना । लिए बोलि अंगद हनुमाना ॥
 समाचार सब कहि समुझाए । सुनत कोपि कपिकुंजर धाए ॥
 पुनि कृपाल हँसि चाप चढ़ावा । पावक सायक सपदि चलावा ॥
 भयउ प्रकास कतहुँ तम नाहों । ग्यान उदयँ जिमि संसय जाहों ॥
 भालु बलीमुख पाइ प्रकासा । धाए हरप विगत श्रम त्रासा ॥
 हनुमान अंगद रन गाजे । हाँक सुनत रजनीचर भाजे ॥
 भागत भट पटकहिँ धरि धरनी । करहिँ भालु कपि अद्भुत करनी ॥

गहि पद डारहिं सागर माहीं । मकर उरग झप धरि धरि खाहीं ॥

दो०—कछु मारे कछु घायल कछु गढ़ चढ़े पराइ ।

गर्जहिं भालु बलीमुख रिपु दल बल विचलाइ ॥ ४७ ॥

निसा जानि कपि चारिउ अनी । आए जहाँ कोसला धनी ॥
राम कृपा करि चितवा सबही । भए बिगतश्रम बानर तवही ॥
उहाँ दसानन सचिव हँकारे । सब सन कहेसि सुभट जे मारे ॥
आधा कटकु कपिन्ह संहारा । कहहु बेगि का करिअ विचारा ॥
माल्यवंत अति जरठ निसाचर । रावन मातु पिता मंत्री वर ॥
बोला बचन नीति अति पावन । सुनहु तात कछु मोर सिखावन ॥
जव ते तुम्ह सीता हरि आनी । असगुन होहिं न जाहिं बखानी ॥
वेद पुरान जासु जसु गायो । राम विमुख काहुँ न सुख पायो ॥

दो०—हिरन्याच्छ भ्राता सहित मधु कैटभ बलवान ।

जेहिं मारे सोइ अवतरेउ कृपासिंधु भगवान ॥ ४८(क) ॥

मासपारायण, पचीसवाँ विश्राम

कालरूप खल वन दहन गुनागार घनबोध ।

सिव बिरंचि जेहि सेवहिं तासो कवन विरोध ॥ ४८(ख) ॥

परिहरि बयरु देहु वैदेही । भजहु कृपानिधि परम सनेही ॥
ताके बचन वान सम लागे । करिआ मुह करि जाहि अभागे ॥
बूढ़ भएसि न त मरतेउँ तोही । अब जनि नयन देखावसि मोही ॥
तेहिं अपने मन अस अनुमाना । बध्यो चहत एहि कृपानिधाना ॥
सो उठि गयउ कहत दुर्बादा । तव सक्रोप बोलेउ घननादा ॥

कौतुक प्रात देखिअहु मोरा । करिहउँ बहुत कहीं का थोरा ॥
 सुनि सुत वचन भरोसा आवा । प्रीति समेत अंक घँठावा ॥
 करत विचार भयउ भिनुसारा । लागे कपि पुनि चहँ दुआरा ॥
 कोपि कपिन्ह दुर्घट गढ़ घेरा । नगर कोलाहलु भयउ घनेरा ॥
 विविधायुधधर निसिचरं धाए । गढ़ ते पर्वत सिखर ढहाए ॥

छं०—दाहे महीधर सिखर कोटिन्ह विविध विधि गांला चले ।
 घहरात ज्जिमि पविपात गर्जत जनु प्रलय के बादले ॥
 मर्कट विकट भट जुटत कटत न लटत तन जर्जर भए ।
 गहि सैल तेहि गढ़ पर चलावहि जहँ सो तहँ निसिचर हए ॥

दो०—मेघनाद सुनि श्रवन अस गढ़ पुनि छेका आइ ।
 उतरयो वीर दुर्ग ते सन्मुख चत्यो वजाइ ॥४९॥

फहँ कोसलाधीस द्वौ भ्राता । धन्वी सकल लोक विख्याता ॥
 फहँ नल नील दुचिद सुग्रीवा । अंगद हनूमंत बल सींवा ॥
 कहाँ विभीषनु भ्राताद्रोही । आजु सबहि हठि मारउँ ओही ॥
 अस कहि कठिन वान संधाने । अतिसय क्रोध श्रवन लगि ताने ॥
 सर समूह सो छाड़ै लागा । जनु सपच्छ धावहि बहु नागा ॥
 जहँतहँ परत देखिअहि बानर । सन्मुख होइ न सकेतेहि अवसर ॥
 जहँतहँ भागि चले कपि रीछा । विसरी सबहि जुद्ध के ईछा ॥
 सो कपि भालु न रन महँ देखा । कीन्हेंसि जेहि न प्रान अवसेषा ॥

दो०—दस दस सर सब मारेसि परे मूषि कपि वीर ।
 सिंहनाद करि गर्जा मेघनाद चल घीर ॥ ५०

देखि पवनसुत कटक विहाला । क्रोधवंत जनु धायउ काला ॥

महासैल एक तुरत उपारा। अति रिस मेघनाद पर डारा ॥
 आवत देखि गयउ नभ सोई। रथ सारथी तुरग सब खोई ॥
 बार बार पचार हनुमाना। निकट न आव मरमु सो जाना ॥
 रघुपति निकट गयउ घननादा। नाना भाँति करेसि दुर्बादा ॥
 अस्त्र सस्त्र आयुध सब डारे। कौतुकहीं प्रभु काटि निवारे ॥
 देखि प्रताप मूढ़ खिसिआना। करै लाग माया विधि नाना ॥
 जिमिकोउ करै गरुडसँ खेला। डरपावै गहि स्वल्प सपेला ॥
 दो०—जासु प्रबल माया बस सिव विरंचि बड़ छोट ।

ताहि दिखावइ निसिचर निज माया मति खोट ॥ ५१ ॥

नभ चढ़ि वरप विपुल अंगारा। महि ते प्रगट होंहि जल धारा ॥
 नाना भाँति पिसाच पिस्त्रची। मारु काडु धुनि बोलहि नाची ॥
 विष्टा पूय रुधिर कच हाड़ा। वरपइ कबहुँ उपल बहु छाड़ा ॥
 वरपि धूरि कीन्हेसि अँधिआरा। सृज्ज न आपन हाथ पसारा ॥
 कपि अकुलाने माया देखें। सब कर मरन बना एहि लेखें ॥
 कौतुक देखि राम मुसुकाने। भए सभीत सकल कपि जाने ॥
 एक वान काटी सब माया। जिमि दिनकर हरतिमिर निकाया ॥
 कृपादृष्टि कपि भालु बिलोके। भए प्रबल रन रहहि न रोके ॥

दो०—आयसु मागि राम पहिँ अंगदादि कपि साथ ।

लछिमन चले क्रुद्ध होइ वान सरासन हाथ ॥ ५२ ॥

छतजनयन उर बाहु बिसाला। हिमगिरि निभ तनु कछु एकलाला ॥
 इहाँ दसानन सुभट पठाए। नाना अस्त्र सस्त्र गहि धाए ॥
 भूधर नख बिटपायुध धारी। धाए कपि जय राम पुकारी ॥

भिरे सकल जोरिहि सन जोरी । इत उत जय इच्छा नहिं थोरी ॥
 मुठिकन्ह लातन्ह दातन्ह काटहिं । कपि जयसील मारि पुनि डाटहिं
 मारु मारु धरु धरु धरु मारु । सीस तोरि गहि भुजा उपारु ॥
 असि रव पूरि रही नव खंडा । धावहिं जहँ तहँ रुंड प्रचंडा ॥
 देखहिं कौतुक नभ सुर घुंदा । कबहुँक विसमय कबहुँ अनंदा ॥

दो०—रुधिर गाइ भरि भरि जम्यो ऊपर धूरि उड़ाइ ।

जनु अँगार रासिन्ह पर मृनक घूम रह्यो छाइ ॥ ५३ ॥

घायल धीर विराजहिं कैसे । कुसुमित किंसुक के तरु जैसे ॥
 लछिमन मेघनाद द्वौ जोधा । भिरहिं परसपर करि अतिक्रोधा ॥
 एकहि एक सकइ नहिं जीती । निसिचर छल बल करइ अनीती ॥
 क्रोधवंत तब भयउ अनंता । भंजेउ रथ सारथी तुरंता ॥
 नाना विधि प्रहार कर सेपा । राञ्छस भयउ ग्रान अवसेपा ॥
 रायन सुत निज मन अनुमाना । संकठ भयउ हरिहि मम ग्राना ॥
 धीरघातिनी छाड़िसि साँगी । तेज पुंज लछिमन उर लागी ॥
 मुरुछा भई सक्ति के लागे । तब चलि गयउ निकट भय त्यागे ॥

दो०—मेघनाद 'सम कोटि सत जोधा रहे उटाइ ।

जगदाधार सेव किमि उठे चले खिसिआइ ॥ ५४ ॥

सुनु गिरिजा क्रोधानल जासु । जारइ भुवन चारिदस आसु ॥
 सक संग्राम जीति को ताही । सेवहिं सुरनर अग जग जाही ॥
 यह कौतूहल जानइ सोई । जा पर कृपा राम के होई ॥
 संध्या भइ फिरि द्वौ बाहनी । लगे सँभारन निज निज अनी ॥
 व्यापक ब्रह्म अजित भुवनेस्वर । लछिमन कहाँ ब्रह्म करुणाकर ॥

तव लगि लै आयउ हनुमाना । अनुज देखि प्रभु अति दुख माना ॥
 जामवंत कह वैद सुपेना । लंकाँ रहइ को पठई लेना ॥
 धरि लघु रूप गयउ हनुमंता । आनेउ भवन समेत तुरंता ॥
 दो०—राम पदारविंद सिर नायउ आइ सुपेन ।

कहा नाम गिरि औपधी जाहु पवनसुत लेन ॥ ५५ ॥

राम चरन सरसिज उर राखी । चला प्रभंजनसुत बल भापी ॥
 उहाँ दूत एक मरमु जनावा । रावनु कालनेमि गृह आवा ॥
 दसमुख कहा मरमु तेहि सुना । पुनि पुनि कालनेमि सिरधुना ॥
 देखत तुम्हहि नगरु जेहि जारा । तासु पंथ को रोकन पारा ॥
 भजि रघुपति करु हित आपना । छाँड़हु नाथ मृषा जल्पना ॥
 नील कंज तनु मुंदर स्यामा । हृदयँ राखु लोचन भिरामा ॥
 मैं तैं मोर मूढ़ता त्यागू । महा मोह निसि छूतत जागू ॥
 काल व्याल कर भच्छक जोई । सपनेहुँ समर कि जीतिअ सोई ॥

दो०—सुनि दसकंड रिसान अति तेहि मन कीन्ह विचार ।

राम दूत कर मरौ बरु यह खल रत मल भार ॥ ५६ ॥

अस कहि चला रचिसि मग माया । सर मंदिर वर वाग बनाया ॥
 मारुतसुत देखा सुभ आश्रम । मुनिहि वृद्धि जल पियौं जाइ श्रम ॥
 राच्छस कपट वेप तहँ सोहा । मायापति दूतहि चह मोहा ॥
 जाइ पवनसुत नायउ माथा । लाग सौ कहै राम गुन गाथा ॥
 होत महा रन रावन रामहिं । जितिहहिं रामन संसय या महिं ॥
 इहाँ भएँ मैं देखउँ भाई । ग्यानदृष्टि बल मोहि अधिकारि ॥
 सागा जल तेहिं दीन्ह कमंडल । कह कपि नहिं अघाउँ थोरें जला ॥

सर मजन करि आतुर आवहु । दिच्छा देउँ ग्यान जेहिं पावहु ॥

दो०—सर पैठत कपि पद गहा मकरी तव अकुलान ।

मारी सो धरि दिव्य तनु चली गगन चदि जान ॥ ५७ ॥

कपि तव दरस भइँ निष्पापा । मिटा तात मुनिवर कर सापा ॥
 मुनि न होइ यह निसिचर घोरा । मानहु सत्य वचन कपि मोरा ॥
 अस कहि गई अपञ्जरा जवहों । निसिचर निकट गयउ कपि तवहीं ॥
 कह कपि मुनि गुरदछिना लेह । पाछें हमहि मंत्र तुम्ह देह ॥
 सिर लंगूर लपेटि पछारा । निज तनु प्रगटेसि मरती बारा ॥
 राम राम कहि छाड़ेसि प्राणा । सुनि मन हरपि चलेउ हनुमाना ॥
 देखा सँल न औषध चीन्हा । सहसा कपि उपारि गिरि लीन्हा ॥
 गहि गिरि निसि नभ धावत भयऊ । अवधपुरी ऊपर कपि गयऊ ॥

दो०—देखा भरत बिसाल अति निसिचर मन अनुमानि ।

बिनु फर सायक मारेउ चाप श्रवन लगि तानि ॥ ५८ ॥

परेउ मुरुछि महि लागत सायक । सुमिरत राम राम रघुनायक ॥
 सुनि प्रिय वचन भरत तव धाए । कपि समीप अति आतुर आए ॥
 विकल बिलोकि कीस उर लावा । जागत नहिं बहु भाँति जगावा ॥
 मुख मलीन मन भए दुखारी । कहत वचन भरि लोचन वारी ॥
 जेहिं विधि राम विमुख मोहि कीन्हा । तेहिं पुनि यह दारुन दुख दीन्हा ॥
 जाँ मोरें मन वच अरु काया । प्रीति राम पद कमल अमाया ॥
 ताँ कपि होउ विगत श्रम सला । जाँ मो पर रघुपति अनुकूला ॥
 मुनत वचन उठि बैठ कपीसा । कहि जय जयति कोसलाधीसा ॥

सो०—लीन्ह कपिहि उर लाइ पुलकित तनु लोचन सजल ।

प्रीति न हृदयँ समाइ सुमिरि राम रघुकुल तिलकं ॥ ५९ ॥

तात कुसल कहु सुखनिधानकी । सहित अनुज अरु मातु जानकी ॥
 कपि सब चरित समास बखाने । भए दुखी मन महुँ पछिताने ॥
 अहह दैव मैं कत जग जायउँ । प्रभु के एकहु काज न आयउँ ॥
 जानि कुअवसरु मन धरि धीरा । पुनि कपि सन बोले बलबीरा ॥
 तात गहरु होइहि तोहि जाता । काजु नसाइहि होत प्रभाता ॥
 चहु मम सायक सैल समेता । पठवाँ तोहि जहँ कृपानिकेता ॥
 सुनि कपि मन उपजा अभिमाना । मोरें भार चलिहि किमि वाना ॥
 राम प्रभाव विचारि बहोरी । बंदि चरन कह कपि कर जोरी ॥

दो०—तव प्रताप उर राखि प्रभु जैहउँ नाथ तुरंत ।

अस कहि आयसु पाइ पद बंदि चलेउ हनुमंत ॥ ६० (क) ॥

भरत बाहु बल सील गुन प्रभु पद प्रीति अपार ।

मन महुँ जात सराहत पुनि पुनि पवनकुमार ॥ ६० (ख) ॥

उहाँ राम लछिमनहि निहारी । बोले वचन मनुज अनुसारी ॥
 अर्धराति गइ कपि नहिं आयउ । राम उठाइ अनुज उर लायउ ॥
 सकहु न दुखित देखि मोहि काऊ । बंधु सदा तव मृदुल सुभाऊ ॥
 मम हित लागि तजेहु पितु माता । सहेहु विपिन हिम आतप बाता ॥
 सो अनुराग कहाँ अब भाई । उठहु न सुनि मम वच विकलाई ॥
 जाँ जनतेउँ बन बंधु बिछोहू । पिता वचन मनतेउँ नहिं ओहू ॥
 सुत वित नारि भवन परिवारा । होहिं जाहिं जग बारहिं बारा ॥
 अस विचारि जियँ जागहु ताता । मिलइ न जगत सहोदर भ्राता ॥

जथा पंख बिनु खग अति दीना । मनि बिनु फनि करिवर कर हीना
 असमम भिवन वंधु बिनु तोही । जौं जड़ दैव विआवै मोही ॥
 जैहउँ अवध कौन मुहु लाई । नारि हेतु प्रिय भाइ गँवाई ॥
 घरु अपनस सहतेउँ जग माहीं । नारि हानि विसेप छतिनाहीं ॥
 अत्र अपलोकु सोकु सुत तोरा । सहिहि निठुर कठोर उर मोरा ॥
 निज जननी के एक कुमारा । तात तासु तुम्ह प्रान अधारा ॥
 सौंपेसि मोहि तुम्हहि गहि पानी । सब विधि सुखद परम हित जानी ॥
 उतरु फाह दँइउँ तेहि जाई । उठि किन मोहि सिखावहु भाई ॥
 बहु विधि सोचत सोच विमोचन । स्रगत सलिल राजिव दल लोचन
 उमा एक अखंड रघुराई । नर गति भगत कृपाल देख्राई ॥

सो०—प्रभु प्रलाप सुनि कान विकल भए धानर निकर ।

आइ गयउ हनुमान जिमि करुना महँ बीर रस ॥ ६१ ॥

हरपि राम भेटेउ हनुमाना । अति कृतग्य प्रभु परम सुजाना ॥
 तुरत बँद तव कीन्हि उपाई । उठि बँठे लछिमन हरपाई ॥
 हृदयँ लाइ प्रभु भेटेउ आता । हरपे सकल भालु कपि माता ॥
 कपि पुनि बँद तहाँ पहुँचावा । जेहि विधि तबहिं ताहि लइ आवा ॥
 यह घृत्तांत दसानन मुनेऊ । अति विपाद पुनि पुनि सिर घुनेऊ ॥
 व्याकुल कुंभकरन पहिँ आवा । बिबिध जतन करि ताहि जगावा ॥
 जागा निसिचर देखिअ कैसा । मानहुँ कालु देह धरि बँसा ॥
 कुंभकरन यूझा कहु भाई । काहे तव मुख रहे सुखाई ॥
 कथा कही सच तेहिं अभिमानी । जेहि प्रकार सीता हरि आनी ॥
 तात कपिन्ह सब निसिचर मारे । महा , महा जोधा संधारे ॥

दुर्मुख सुररिपु मनुज अहारी । भट अतिकाय अकंपन भारी ॥
 अपर महोदर आदिक वीरा । परे समर महि सब रनधीरा ॥
 दो०—सुनि० दसकंधर वचन तव कुंभकरन विलखान ।

जगदंबा हरि आनि अब सठ चाहत कल्यान ॥ ६२ ॥

भल न कीन्ह तैं निसिचर नाहा । अब मोहि आइ जगाएहि काहा ॥
 अजहूँ तात त्यागि अभिमाना । भजहु राम होइहि कल्याना ॥
 हैं दससीस मनुज रघुनायक । जाके हनुमान से पायक ॥
 अहह बंधु तैं कीन्हि खोटाई । प्रथमहिं मोहि न सुनाएहि आई ॥
 कीन्हेहु प्रभु विरोध तेहि देवक । सिव त्रिरंत्रि सुर जाके सेवक ॥
 नारद मुनि मोहि ग्यान जो कहा । कहतेउँ तोहि समय निरवहा ॥
 अब भरि अंक भेंडु मोहि भाई । लोचन सुफल करौं मैं जाई ॥
 स्यास गात सरसीरुह लोचन । देखौं जाइ ताप त्रय मोचन ॥

दो०—राम रूप गुन सुमिरत मगन भयउ छन एक ।

रावन मागेउ कोटि घट मद अरु महिष अनेक ॥ ६३ ॥

महिष खाइ करि मदिरा पाना । गर्जा वज्राघात समाना ॥
 कुंभकरन दुर्मद रन रंगा । चला दुर्ग तजि सेन नसंगा ॥
 देखि विभीषनु आगे आयउ । परेउ चरन निज नाम सुनायउ ॥
 अनुज उठाइ हृदय तेहि लायो । रघुपति भक्त जानि मन भायो ॥
 तात लात रावन मोहि मारा । कहत परम हित मंत्र विचारा ॥
 तेहिं गलानि रघुपति पहिं आयउ । देखि दीन प्रभु के मन भायउ ॥
 सुनु सुत भयउ कालवस रावन । सो कि मान अब परम सिखावन ॥
 धन्य धन्य तैं धन्य विभीषन । भयहु तात निसिचर कुल भूपन ॥

बंधु बंस तैं कीन्ह उजागर। भजेहु राम सोभा सुख सागर ॥

दो०-बचन कर्म मन कपट . तजि भजेहु राम रनधीर ।

जाहु न निज पर सुझ योहि भयउँ कालवत्स वीर ॥ ६४ ॥

बंधु बचन सुनि चला विभीषन। आयउ जहँ त्रैलोक्य विभूषन ॥

नाथ भूधराकार सरीरा। कुंभकरन आवत रनधीरा ॥

एतना कपिन्ह सुना जय काना। किलकिलाइ धाए चलवाना ॥

लिए उठाइ शिटप अरु भूधर। कटकटाइ डारहिं ता ऊपर ॥

कोटि कोटि गिरि सिखर प्रहारा। करहिं भालु कपि एक एक वारा ॥

मुरयो न मनु तनु टरयो न टारयो। जिमि गज अर्क फलनि को मारयो ॥

तब मारुतसुत मुठिका हन्यो। परयो धरनि व्याकुल सिर धुन्यो ॥

पुनि उठि तेहिं मारेउ हनुमंता। घुमिंत भूतल परेउ तुरंता ॥

पुनि नल नीलहि अवनि पट्यारेसि। जहँ तहँ पटक पटक भट डारेसि ॥

चली चलीमुख सेत पराई। अति भय त्रसित न फोउ सहहाई ॥

दो०-अंगदादि कपि मुरुछिन करि समेत सुग्रीव ।

काँस दावि कपिराज कहँ चला अमित बल सीव ॥ ६५ ॥

उमा करत रघुपति नरलीला। खेलत गरुड़ जिमि अहिगन मीला ॥

भृकृटि भंग जो कालहि खाई। ताहि कि सोहइ ऐसि लराई ॥

जग पावनि कीरति विस्तरिहहिं। गाइ गाइ भवनिधि नर तरिहहिं ॥

मुरुछा गइ मारुतसुत जागा। सुग्रीवहि तब खोजन लागा ॥

सुग्रीवहु कै मुरुछा वीवी। निबुकि गयउ तेहि मृतक प्रतीती ॥

काटेसि दसन नासिका काना। गरजि अकास चलेउ तेहिं धाना ॥

गहेउ चरन गहि भूमि पछारा। अति लाषवँ उठि पुनि तेहि मारा ॥

पुनि आयउ प्रभु पहि बलवाना । जयति जयति जय कृपानिधाना ॥
नाक कान काटे जियँ जानी । फिरा क्रोध करि भइ मन ग्लानी ॥
सहज भीम पुनि बिनु श्रुति नासा । देखत कपि दल उपजी त्रासा ॥

दो०—जय जय जय रघुवंस मनि घाए कपि दै हूह ।

एकहि वार तासु पर छाड़ेन्हि गिरि तरु जूह ॥ ६६ ॥

कुंभकरन रन रंग विरुद्धा । सन्मुख चला काल जनु क्रुद्धा ॥
कोटि कोटि कपि धरि धरि खाई । जनु टीड़ी गिरि गुहाँ समाई ॥
कोटिन्ह गहि सरीर सन मर्दा । कोटिन्ह मीजि मिलव महि गर्दा ॥
मुख नासा श्रवनन्हि कीं वाटा । निसरि पराहिं भालु कपि ठाटा ॥
रन मद मत्त निसाचर दर्पा । विस्व ग्रसिहि जनु एहि विधि अर्पा ॥
सुरे सुभट सब फिरहिं न फेरे । सृज न नयन सुनहिं नहिं टेरे ॥
कुंभकरन कपि फौज बिडारी । सुनिं धाई रजनीचर धारी ॥
देखी राम विकल कटकाई । रिपु अनीक नाना विधि आई ॥

दो०—सुनु सुग्रीव विभीषन अनुज सँभारेहु सैन ।

मैं देखउँ खल बल दलहि बोले राजिवनैन ॥ ६७ ॥

कर सारंग साजि कटि भाथा । अरि दल दलन चले रघुनाथा ॥
प्रथम कीन्हि प्रभु धनुष टँकोरा । रिपु दल बधिर भयउ सुनि सोरा ॥
सत्यसंध छाँड़े सर लच्छा । कालसर्प जनु चले सपच्छा ॥
जहँ तहँ चले विपुल नाराचा । लगे कटन भट विकट पिसाचा ॥
कटहिं चरन उर सिर भुजदंडा । बहुतक वीर होहिं सत खंडा ॥
घुमिं घुमिं घायल महि परहीं । उठिसंभारि सुभट पुनि लरहीं ॥
लागत वान जलद जिमि गाजहिं । बहुतक देखि कठिन सर भाजहिं ॥

रुंड प्रचंड मुंड विनु धावहिं । धरु धरु मारु मारु घुनि गावहिं ॥

दो०—छन महुँ प्रमु के सायकन्हि काटे विकट पिताच ।

पुनि रघुचीर निपंग महुँ प्रविसे सब नाराच ॥ ६८ ॥

कुंभकरन मन दीख विचारी । इति छन माझ निसाचर धारी ॥

भा अति क्रुद्ध महाबल वीरा । कियो मृगनायकनाद गँभीरा ॥

कोपि महीधर लेइ उपारी । डारइ जहँ मरुट भट भारी ॥

आवत देखि मैल प्रभु भारे । सरन्हि काटि रजसम करि डारे ॥

पुनि धनु तानि कोपि रघुनायक । छाँड़े अति कराल घहु सायक ॥

तनु महुँ प्रविमि निमरि सर जाहीं । जिमि दामिनि घन माझ समाहीं ॥

सोनित स्रवत सोह तनु कारे । जनु कजल गिरि गेरु पनारे ॥

विकल पिलांकि भालुकपिधाए । विहँसा जबहिं निकट कपि आए

दो०—महानाद करि गर्जा कोटि कोटि गहि कीस ।

महि पटकइ गजराज इव सपथ करइ दससीस ॥ ६९ ॥

भागै भालु घलीमुख जूथा । घृकु विलोकि जिमि भेष बरूथा ॥

चले भागि कपि भालु भवानी । विकल पुकारत आरत बानी ॥

यह निसिचर दुकाल समअहई । कपिकुल देस परन अब चहई ॥

कृपा धारिधर राम खरारी । पाहि पाहि प्रनतारति हारी ॥

सकरुन वचन सुनत भगवाना । चले सुधारि सरासन बाना ॥

राम सेन निज पाछे घाली । चले सकोप महा बलसाली ॥

खँधि धनुष सर सत संधाने । छूटे तीर सरीर समाने ॥

लागत सर धावा रिस भरा । कुधर डगमगत डोलति धरा ॥

लीन्ह एक तेहिँ सैल उपाटी । रघुकुलतिलक भुजा सोइ काटी ॥

धावा वाम बाहु गिरि धारी । प्रभु सोउ भुजा काटि महि पारी ॥
 काटें भुजा सोह खल कैसा । पच्छहीन मंदर गिरि जैसा ॥
 उग्र विलोकनि प्रभुहि विलोका । ग्रसन चहत मानहुँ त्रैलोका ॥

दो०—करि चिक्कार घोर अति धावा वदनु पसारि ।

गगन सिद्ध सुर त्रासित हा हा हेति पुकारि ॥ ७० ॥

सभय देव करुनानिधि जान्यो । श्रवन प्रजंत सरासनु तान्यो ॥
 विसिख निकर निसिचर मुख भरेऊ । तदपि महाबल भूमि न परेऊ ॥
 सरन्हि भरा मुख सन्मुख धावा । काल त्रोन सजीव जनु आवा ॥
 तव प्रभु कोपि तीव्र सर लीन्हा । धर ते गिन तासु सिर कीन्हा ॥
 सो सिर परेउ दसानन आगें । विकरु भयउ जिमि फनि मनि त्यागें ॥
 धरनि धसइ धर धाव प्रचंडा । तव प्रभु काटि कीन्ह दुइ खंडा ॥
 परे भूमि जिमि नभ तें भूधर । हेठ दावि कपि भालु निसाचर ॥
 तासु तेज प्रभु वदन समाना । सुर गुनि सबहिं अचंभ्रमाना ॥
 सुर दुंदुभीं वजावहिं हरपहिं । अस्तुतिकरहिं सुमन बहुवरपहिं ॥
 करि विनती सुर सकल सिधाए । तेही समय देवरिपि आए ॥
 गगनोपरि हरि गुन गन गाए । रुचिर वीररस प्रभु मन भाए ॥
 वेगि हतहु खल कहि मुनि गए । राम समर महि सोभत भए ॥

छं०—संग्राम भूमि विराज रघुपति अतुल बल कोसल धनी ।

श्रम बिंदु मुख राजीव लोचन अरुन तन सोनित कनी ॥

भुज जुगल फेरत सर सरासन भालु कपि चहु दिसि बने ।

कह दास तुलसी कहि न सक छवि सेष जेहि आनन घने ॥

दो०—निसिचर अघम मलाकर ताहि दीन्ह निज घाम ।

गिरिजा ते नर मंदमति जे न भजहि श्रीराम ॥ ७१ ॥

दिन के अंत फिरीं द्यौं अनी । समर भई मुभटन्ह श्रम घनी ॥
 राम कृपाँ कपि दल बल बाढ़ा । जिमितून पाइ लाग अति डाढ़ा ॥
 छोजहि निसिचर दिनु अरु राती । निज मुख कहे सुकृत जेहि भौंती ॥
 बहु धिलाप दसकंधर करई । बंधु सीस पुनि पुनि उर धरई ॥
 रोवहिं नारि हृदय हति पानी । तामु तेज बल विपूल बखानी ॥
 मेघनाद तेहि अवसर आयउ । कहि बहु कथा पिता समुझायउ ॥
 देखेहु कालि मारि मनुमाई । अत्रहिं बहुत का करीं बड़ाई ॥
 इष्टदेव मैं बल रथ पायउँ । मो बल तात न तोहि देखायउँ ॥
 एहि विधि जल्पत भयउ विहाना । चहुँ दुआर लागे कपि नाना ॥
 इत कपि भालु काल सम वीरा । उत रजनीचर अति रनधीरा ॥
 लरहिं मुभट निज निज जय हेतू । यरनि न जाइ समर खगफेतू ॥

दो०—मेघनाद मायामय रथ चदि गयउ अकास ।

गजेंउ अट्टहासु करि भइ कपि कटकहि प्रास ॥ ७२ ॥

सक्ति छल तरवागि कृपाना । अस्त्र सस्त्र कुलिसायुध नाना ॥
 डारइ परसु परिघ पापाना । लागेउ घृष्ट करै बहु वाना ॥
 दस दिसि रहे वान नभ छाई । मानहुँ मघा मेघ झरि लाई ॥
 धरुधरुमारुमुनिअ घुनि काना । जो मारइ तेहि कोउ न जाना ॥
 गहि गिरि तरु अकास कपि धावहिं । देखहिं तेहि न दुखित फिरि आवहिं ॥
 अवघट घाट बाट गिरि कंदर । माया बल किन्हेसि सर पंजर ॥
 जाहिं कहाँ व्याकुल भए वंदर । सुरपति वंदि परे जनु मंदर ॥

मारुतसुत अंगद नल नीला । कीन्हेसि विकल सकल बलसीला ॥
 पुनि लछिमन सुग्रीव बिभीषन । सरन्हि मारि कीन्हेसि जर्जरतन ॥
 पुनि रघुपति सैं जूझैं लागा । सर छाँड़इ होइ लागहिं नागा ॥
 व्याल पास बस भए खरारी । खबस अनंत एक अविकारी ॥
 नटइव कपट चरित कर नाना । सदा स्वतंत्र एक भगवाना ॥
 रन सोभा लागि प्रभुहिं बँधायो । नागपास देवन्ह भय पायो ॥
 दो०—गिरिजा जासु नाम जपि मुनि काटहि भव पास ।

सो कि बंध तर आवइ व्यापक विस्व निवास ॥ ७३ ॥
 चरित राम के सगुन भवानी । तकिं न जाहि बुद्धि बलवानी ॥
 अस बिचारि जे तग्य विरागी । रामहि भजहिं तर्क सब त्यागी ॥
 व्याकुल कटकु कीन्ह घननादा । पुनि भा प्रगट कहइ दुर्वादा ॥
 जामवंत कह खल रहु ठाढ़ा । सुनिकरिताहि क्रोध अतिवाढ़ा ॥
 बूढ़ जानि सठ छाँड़ेउं तोही । लागेसि अधम पचारै मोही ॥
 अस कहि तरल त्रिसूल चलायो । जामवंत कर गहि सोइ धायो ॥
 मारिसि मेघनाद कै छाती । परा भूमि घुमिंत सुरघाती ॥
 पुनि रिसान गहि चरन फिरायो । महि पछारिं निज बल देखरायो ॥
 वर प्रसाद सो मरइ न मारा । तव गहि पद लंका पर डारा ॥
 इहाँ देवरिषि गरुड़ पठायो । राम समीप सपदि सो आयो ॥

दो०—खगपति सब धरि खाए माया नाग बरूथ ।

माया विगत भए सब हरये वानर जूथ ॥ ७४(क) ॥

गहि गिरि पादप उपल नख धाए कीस रिसाइ ।

चले तमीचर विकलतर गढ़ पर चढ़े पराइ ॥ ७४(ख) ॥

मेघनाद कै मुरछा जागी । पितहि बिलोकिलाज अति लागी ॥
 तुरत गयउ गिरिवर कंदरा । करौं अजय मख अस मन धरा ॥
 इहाँ विभीषन मंत्र विचारा । सुनहु नाथ बल अतुल उदारा ॥
 मेघनाद मख करइ अपावन । खल मायावी देव सतावन ॥
 जौं प्रभु सिद्ध होइ सो पाइहि । नाथ बेगि पुनि जीति न जाइहि ॥
 सुनि रघुपति अतिसय सुख माना । बोले अंगदादि कपि नाना ॥
 लछिमन संग जाहु सब भाई । करहु विधंस जग्य कर जाई ॥
 तुम्ह लछिमन मारेहु रन ओही । देखि सभय सुर दुख अति मोही ॥
 मारेहु तेहि बल बुद्धि उपाई । जेहिं छीजै निसिचर सुनु भाई ॥
 जामवंत सुग्रीव विभीषन । सेन समेत रहेहु तीनिउ जन ॥
 जब रघुवीर दीन्हि अनुसासन । कटि निपंग कसि साजि सरासन ॥
 प्रभु प्रताप उर धरि रनधीरा । बोले घन इव गिरा गँभीरा ॥
 जौं तेहि आजु यधे विनु आवों । तौ रघुपति सेवक न कहावों ॥
 जौं सत संकर करहिं सहाई । तदपि हतउ रघुवीर दोहाई ॥

दो०—रघुपति चरन नाइ सिरु चलेउ तुरंत अनंत ।

अंगद नील मयंद नल संग सुभट हनुमंत ॥ ७५ ॥

जाइ कपिन्ह सो देखा वैसा । आहुति देत रुधिर अरु भैंसा ॥
 कीन्ह कपिन्ह सत्र जग्य विधंसा । जव न उठइ तव करहिं प्रसंसा ॥
 तदपि न उठइ धरेन्हि कच जाई । लातन्हि हति हति चले पराई ॥
 लै त्रिसूल धावा कपि भागे । आए जहँ रामानुज आगे ॥
 आवा परम क्रोध कर मारा । गर्ज घोर ख चारहिं घारा ॥
 कोपि मरुत सुत अंगद धाए । हति त्रिसूल उर धरनि गिराए

मारुतसुत अंगद नल नीला । कीन्हेसि विकल सकल बल सीला ॥
 पुनि लछिमन सुग्रीव विभीषन । सरन्हि मारि कीन्हेसि जर्जर तन ॥
 पुनि रघुपति सैं जूझै लागा । सर छाँड़इ होइ लागहिं नागा ॥
 ब्याल पास बस भए खरारी । खत्रस अनंत एक अविकारी ॥
 नटइव कपट चरित कर नाना । सदा स्वतंत्र एक भगवाना ॥
 रन सोभा लगि ग्रभुहिं बँधायो । नागपास देवन्ह भय पायो ॥
 दो०—गिरिजा जासु नाम जपि मुनि काटहिं भव पास ।

सो कि बंध तर आवइ ब्यापक विस्व निवास ॥ ७३ ॥
 चरित राम के सगुन भवानी । तर्कि न जाहि बुद्ध बल बानी ॥
 अस विचारि जे तग्य विरागी । रामहि भजहिं तर्क सब त्यागी ॥
 व्याकुल कटकु कीन्ह घननादा । पुनि भा प्रगट कहइ दुर्वादा ॥
 जामवंत कह खल रहु ठाढ़ा । सुनिकरिताहि क्रोध अति बाढ़ा ॥
 बूढ़ जानि सठ छाँड़ेउं तोही । लागेसि अधम पचारै मोही ॥
 अस कहि तरल त्रिसल चलायो । जामवंत कर गहि सोइ धायो ॥
 मारिसि मेघनाद कै छाती । परा भूमि घुर्मित सुरघाती ॥
 पुनि रिसान गहि चरन फिरायो । महि पछारि निज बल देखरायो ॥
 वर प्रसाद सो मरइ न मारा । तब गहि पद लंका पर डारा ॥
 इहाँ देवरिपि गरुड़ पठायो । राम समीप सपदि सो आयो ॥

दो०—खगपति सब धरि खाए माया नाग बरूथ ।

माया विगत भए सब हरये वानर जूथ ॥ ७४(क) ॥

गहि गिरि पादप उपल नख घाए कीस रिसाइ ।

चले तमीचर विकलतर गढ़ पर चढ़े पराइ ॥ ७४(ख) ॥

मेघनाद कै मुरछा जागी । पितहि बिलोकिलज अति लागी ॥
 तुरत गयउ गिरिवर कंदरा । करौं अजय मख अस मन धरा ॥
 इहाँ विभीषन मंत्र विचारा । सुनहु नाथ बल अतुल उदारा ॥
 मेघनाद मख करइ अपावन । खल मायावी देव सतावन ॥
 जौं प्रभु सिद्ध होइ सो पाइहि । नाथ बेगि पुनि जीति न जाइहि ॥
 सुनि रघुपति अतिसय सुख माना । बोले अंगदादि कपि नाना ॥
 लछिमन संग जाहु सब भाई । करहु विधंस जग्य कर जाई ॥
 तुम्ह लछिमन मारेहु रन ओही । देखि सभय सुर दुख अति मोही ॥
 मारेहु तेहि बल बुद्धि उपाई । जेहि छीजै निसिचर सुनु भाई ॥
 जामवंत सुग्रीव विभीषन । सेन समेत रहेहु तीनिउ जन ॥
 जब रघुवीर दीन्हि अनुसासन । कटि निपंग कसि साजि सरासन ॥
 प्रभु प्रताप उर धरि रनधीरा । बोले घन इव गिरा गंभीरा ॥
 जौं तेहि आजु बधे विनु आवाँ । तौ रघुपति सेवक न कहावाँ ॥
 जौं सत संकर करहिं सहाई । तदपि हतउं रघुवीर दोहाई ॥

दो०—रघुपति चरन नाइ सिरु चलेउ तुरंत अनंत ।

अंगद नील मयंद नल संग सुभट हनुमंत ॥ ७५ ॥

जाइ कपिन्ह सो देखा वैसा । आहुति देत रुधिर अरु भंसां ॥
 कीन्ह कपिन्ह सब जग्य विधंसा । जब न उठइ तब करहिं प्रसंसा ॥
 तदपि न उठइ धरेन्हि कच जाई । लातन्हि हति हति चले पराई ॥
 लं त्रिसूल धावा कपि भागे । आए जहँ रामानुज आगे ॥
 आवा परम क्रोध कर मारा । गर्ज घोर ख बारहिं घारा ॥
 कोपि मरुत सुत अंगद धाए । हति त्रिसूल उर धरनि गिराए ॥

प्रभु कहँ छाँड़ेसि मूल प्रचंडा । सर हति कृत अनंत जुग खंडा ॥
 उठि बहोरि मारुति जुवराजा । हतहिं कोपि तेहि घाउ न वाजा ॥
 फिरे वीर रिपु मरइ न मारा । तब धावा करि घोर चिकारा ॥
 आवत देखि क्रुद्ध जनु काला । लछिमन छाड़े विसिख कराला ॥
 देखेसि आवत पवि ससवाना । तुरत भयउ खल अंतरधाना ॥
 विविध बेप धरि करइ लराई । कबहुँक प्रगट कबहुँ दुरि जाई ॥
 देखि अजय रिपु डरपे कीसा । परम क्रुद्ध तब भयउ अहीसा ॥
 लछिमन मन अम्र मंत्र दृढ़ाया । एहि पापिहि मै बहुत खेलावा ॥
 सुमिरि कोसलाधीस प्रतापा । सर संधान कीन्ह करि दापा ॥
 छाड़ा वान माझ उर लागा । सरती वार कपटु सब त्यागा ॥

दो०—रामानुज कहँ रामु कहँ अस कहि छाँड़ेसि प्रान ।

घन्य घन्य तव जननी कह अंगद हनुमान ॥ ७६ ॥

विनु प्रयास हनुमान उठायो । लंका द्वार राखि पुनि आयो ॥
 तासु मरन सुनि सुर गंधर्वा । चढ़ि विमान आए नभ सर्वा ॥
 बरपि सुमन दुंदुभीं बजावहिं । श्रीरघुनाथ विमल जसु गावहिं ॥
 जय अनंत जय जगदाधारा । तुम्ह प्रभु सब देवन्हि निस्तारा ॥
 अस्तुति करि सुर सिद्ध सिधाए । लछिमन कृपासिंधु पहिं आए ॥
 सुत बध सुना दसानन जबहीं । मुरुछित भयउ परेउ महि तबहीं ॥
 मंदोदरी रुदन कर भारी । उर ताड़न बहु भाँति पुकारी ॥
 नगर लोग सब व्याकुल सोचा । सकल कहहिं दसकंधर पोचा ॥

दो०—तब दसकंठ विविधि विधि समुझाई सब नारि ।

नस्वर रूप जगत सब देखहु हृदय विचारि ॥ ७७ ॥

तिन्हहि ग्यान उपदेसा रावन । आपुन मंद कथा सुभ पावन ॥
 पर उपदेस कुसल बहुतेरे । जे आचरहिं ते नर न घनेरे ॥
 निसासिरानि भयउ भिनुमारा । लगे भालु कपि चारिहुँ द्वारा ॥
 सुभट बोलाइ दसानन बोला । रन सन्मुख जाकर मन डोला ॥
 सो अचहीं वरु जाउ पराई । संजुग विमुख भएँ न भलाई ॥
 निज भुज बल मैं बयरु बढावा । देहउँ उतरुजो रिपु चढ़ि आया ॥
 अस कहि मरुत वेग रथ साजा । बाजे सकल जुझारु बाजा ॥
 चले वीर सब अतुलित बली । जनु कजल कँ आँधी चली ॥
 असगुन अमित हाँहिं तेहि काला । गनइन भुजबल गर्घ्र विसाला ॥

छं०—अति गर्व गनइ न सगुन असगुन सबहि आयुधहाथ ते ।
 भट गिरत रथ ते बाजि गज चिह्नरस भाजहिं साथ ते ॥
 गोमाय गीघ कराल खर ख स्नान बोलहि अति घने ।
 जनु कालदूत उत्क बोलहि वचन परम भयावने ॥

दो०—ताहि कि संपति सगुन सुभ सपनेहुँ मन विश्राम ।
 भूत द्रोह रत मोह बस राम विमुक्त रति काम ॥ ७८ ॥

चलेउ निसाचर कटक अशारा । चतुरंगिनी अनी बहु धारा ॥
 विविधि भाँति वाहन रथ जाना । विपुल वरन पताक ध्वज नाना ॥
 चले मत्त गज जूथ घनेरे । प्राविट जलद मरुत जनु प्रेरे ॥
 वरन वरन विरदत निकाया । समर सर जानहिं चहु माया ॥
 अति विचित्र बाहिनी विराजी । वीर बसंत सेन जनु साजी ॥
 चलत कटक दिगसिंधुरडगहीं । छुभित पयोधि कुधर दगमगहीं ॥
 उठी रेनु रवि गयउ छपाई । मरुत

पनव निसान घोर रव बाजहिं । प्रलय समय के घन जनु गाजहिं ।
 भेरि नफीरि बाज सहनाई । मारू राग सुभट सुखदाई ।
 केहरि नाद बीर सब करहीं । निज निज बल पौरुष उचरहीं ।
 कहइ दसानन सुनहु सुभट्टा । मर्दहु भालु कपिन्ह के ठट्टा ।
 हौं मारिहउं भूप द्वौ भाई । अस कहि सन्मुख फौज रेंगाई ।
 यह सुधिसकल कपिन्ह जब पाई । धाए करि रघुबीर दोहाई ।

छं०—धाए विसाल कराल मर्कट भालु काल समान ते ।
 मानहुँ सपच्छ उड़ाहिं भूधर बृंद नाना बान ते ॥
 नख दसन सैल महाद्रुमायुध सबल संक न मानहीं ।
 जय राम रावन मत्त गज मृगराज सुजसु बखानहीं ॥

दो०—दुहु दिसि जय जयकार करि निज निज जोरी जानि ।

भिरे वीर इत रामहि उत रावनहि बखानि ॥ ७९ ॥

रावनु रथी विरथ रघुबीरा । देखि बिभीषन भयउ अधीरा ।
 अधिक प्रीति मन भा संदेहा । वंदि चरन कह सहित सनेहा ।
 नाथ नरथ नहिं तन पद त्राना । केहि बिधि जितब वीर बलवाना ।
 सुनहु सखा कह कृपानिधाना । जेहिं जय होइ सो स्यंदन आना ।
 सौरज धीरज तेहि रथ चाका । सत्य सील दृढ़ ध्वजा पताका ।
 बल विवेक दम परहित घोरे । छमा कृपा समता रजु जोरे ।
 ईस भजनु सारथी सुजाना । विरति चर्म संतोष कृपाना ।
 दान परसु बुधिसक्ति प्रचंडा । बर विग्यान कठिन कोदंडा ।
 अमल अचल मन त्रोन समाना । सम जम नियम सिलीमुख नाना ।
 कवच अभेद बिप्र गुर पूजा । एहि सम विजय उपाय न दूजा ।

सखा धर्ममय अस रथ जाकें। जीतन कहँ न कतहुँ रिपु ताकें॥

दो०—महा अजय संसार रिपु जीति सकइ सो बीर ।

जाकें अस रथ होइ दृढ़ सुनहु सखा मतिधीर ॥८०(क)॥

मुनि प्रभु बचन विभीषन हरपि गहे पद कंज ।

एहि मिस मोहि उपदेसेहु राम कृपा सुख पुंज ॥८०(ख)॥

उत पचार दसकंधर इत अंगद हनुमान ।

छरत निसाचर भालु कपि करि निज निज प्रभु आन ॥८०(ग)॥

सुर ब्रह्मादि सिद्ध मुनि नाना । देखत रत्न नभ चढ़े विमाना ॥

हमह उमा रहे तेहि संगी । देखत राम चरित रत्न रंगा ॥

सुभट समर रस दुहु दिसि माते । कपि जयसील राम बल ताते ॥

एक एक सन भिरहि पचारहि । एकन्ह एक मर्दि महि पारहि ॥

मारहि काटहि भरहि पछारहि । सीस तोरि सीसन्ह सन मारहि ॥

उदर बिदारहि भुजा उपारहि । गहि पद अवनि पटक भट डारहि ॥

निसिचर भट महि गाड़हि भालू । ऊपर डारि देहि बहु बालू ॥

बीर बलीमुख जुद्ध विरुद्धे । देखिअत विपुल काल जनु क्रुद्धे ॥

छं०—क्रुद्धे शूतात समान कपि तन सवत सोनित राजही ।

मर्दिहि निसाचर कटक भट बलवंत घन जिमि गाजही ॥

मारहि चपेटन्हि डाटि दान्ह काटि लातन्ह मीजही ।

चिफरहि मर्कट भालु छल बल करहि जेहि खल छोडही ॥

घरि गाल फरहि उर बिदारहि गल अँतावरि मेलही ।

प्रह्लादपति जनु विविध तनु घरि समर अंगन खेलही ।

* रामचरितमानस *

धरु मारु काटु पछारु घोर गिरा गगन महि भरि रही ।
 जय राम जो तून ते कुलिस कर कुलिस ते कर तून सही ॥
 दो०—निज दल विचलत देखेसि वीस मुजाँ दस चाप ।
 रथ चढ़ि चलेउ दक्षानन फिरहु फिरहु करि दाप ॥ ८१ ॥
 धायउ परम क्रुद्ध दसकंधर । सन्मुख चले हूह दै वंदर ॥
 गहि कर पादप उपल पहारा । डारेन्हि ता पर एकहि वारा ॥
 लागहि सैल वज्र तन तास्य । खंड खंड होइ फूटहि आस्य ॥
 चला न अचल रहा रथ रोपी । रन दुर्मद रावन अति क्रोपी ॥
 इत उत झपटि दपटि कपि जोधा । मरै लाग भयउ अति क्रोधा ॥
 चले पराइ भालु कपि नाना । त्राहि त्राहि अंगद हनुमाना ॥
 पाहि पाहि रघुवीर गोसाईं । यह खल खाइ काल की नाई ॥
 तेहि देखे कपि सकल पराने । दसहुँ चाप सायक संधाने ॥
 —संधानि धनु सर निकर छाड़ेसि उरग जिमि उड़ि लागहीं ।
 रहे पूरि सर धरनी गगन दिसि विदिसि कहँ कपि भागहीं ॥
 भयो अति कोलाहल विकल कपि दल भालु बोलहि आतुरे ।
 रघुवीर करुना सिंधु आरत वंधु जन रच्छक हरे ॥
 —निज दल विकल देखि कटि कसि निपंग धनु हाथ ।
 लछिमन चले क्रुद्ध होइ नाइ राम पद माथ ॥ ८२ ॥
 का मारसि कपि भालु । मोहि विलोकु तोर मैं कालु ॥
 रहेउँ तोहि सुतघाती । आजु निपाति जुड़ावउँ छाती ॥
 हे छाड़ेसि वान प्रचंडा । लछिमन किए सकल सत खंडा ॥
 आयुंध रावन डारे । तिल प्रवान करि काटि निवाडे ॥

पुनि निज वानन्ह कीन्ह प्रशारा । स्यंदनु भंजि मारथी मारा ॥
 सत सत सर मारे दम भाला । गिरि सृंगन्ह जनु प्रविसहिं व्याला ॥
 पुनि सत सर मारा उर माहीं । परेउ धरनि तल सुधि कछु नाहीं ॥
 उठा प्रचल पुनि गुरुछा जागी । छाड़िसि ब्रह्म दीन्हि जो साँगी ॥

छं०—सो ब्रह्म दत्त प्रचंड सक्ति अनंत उर लागी नही ।

परधो धीर विकल उडाव दसमुख अतुल बल महिमा रही ॥

ब्रह्मांड भवन विराज जाके एक सिर जिमि रज कनी ।

तेहि चह उठावन मूढ़ रावन जान नहिं त्रिभुवन धनी ॥

दो०—देखि पवनसुत धायउ बोलत बचन कठोर ।

आवत कपिहि हन्यो तेहिं मुष्टि प्रहार प्रघोर ॥ ८३ ॥

जानु टेकि कपि भूमि न गिरा । उठा सँभारि बहुत गिस भरा ॥
 मुठिका एक ताहि कपि मारा । परेउ सैल जनु बज्र प्रहारा ॥
 गुरुछा गँ बहोरि सो जागा । कपि बल विपुल सराहन लाग़ा ॥
 धिग धिग मम पौरुष धिग मोही । जांते जिअत रहेसि सुरद्रोही ॥
 अस कहि लछिमन कहूँ कपि ल्यायो । देखि दसानन विममय पायो ॥
 कह रघुवीर समुझु जियँ आवा । तुम्ह कृतांत भच्छक सुर त्राता ॥
 सुनत बचन उठि बैठ कृपाला । गई गगन सो सकति कराला ॥
 पुनि कोदंड वान गहि धाए । रिपु सन्मुख अति आतुर आए ॥

छं०—आतुर बहोरि विभंजि स्यंदन सूत हति व्याकुल कियो ।

गिरयां धरनि दत्तकंधर विकलतर वान सत वेध्यां हियो ॥

सारथी दूसर घालि रथ तेहि तुरत लंका लै गयो ।

रघुवीर बंधु प्रताप पुंज बहोरि प्रभु चरनन्हि नयो ॥

दो०—उहाँ दसानन जागि करि करै लागं कछु जग्य ।

राम विरोध विजय चह सठ हठ वस अति अग्य ॥ ८४ ॥

इहाँ विभीषन सब सुधि पाई । सपदि जाइ रघुपतिहि सुनाई ॥

नाथ करइ रावन एक जागा । सिद्ध भएँ नहिँ मरिहि अभागा ॥

पठवहु नाथ वेगि भट बंदर । करहिँ विधंस आव दसकंधर ॥

प्रात होत प्रभु सुभट पठाए । हनुमदादि अंगद सब धाए ॥

कौतुक कूदि चढ़े कपि लंका । पैठे रावन भवन असंका ॥

जग्य फरत जबहीं सो देखा । सकल कपिन्ह भा क्रोध विसेपा ॥

रन ते निलज भाजि गृह आवा । इहाँ आइ बक्र ध्यान लगावा ॥

अस कहि अंगद मारा लाता । चितवन सठ स्वारथ मन राता ॥

छं०—नहिँ चितव जब करि कोप कपि गहि दसन लातन्ह मारहीं ।

घरि केस नारि निकारि बाहेर तेऽतिदीन पुकारहीं ॥

तव उठेउ क्रुद्ध कृतांत सम गहि चरन वानर डारई ।

एहि बीच कपिन्ह विधंस फल मख देखि मन महुँ हारई ॥

दो०—जग्य विधंसि कुसल कपि आए रघुपति पास ।

चलेउ निसाचर क्रुद्ध होइ त्यागि जिवन कै आस ॥ ८५ ॥

चलत होहिँ अति असुभ भयंकर । बैठहिँ गीध उड़ाइ सिरन्ह परा ॥

भयउ कालवस काहु न माना । कहेसि बजावहु जुद्ध निसाना ॥

चली तमीचर अनीं अपारा । बहु गज रथ पदाति असवारा ॥

प्रभु सन्मुख धाए खल कैसें । सलभ समूह अनल कहँ जैसें ॥

इहाँ देवतन्ह अस्तुति कीन्ही । दारुन विपति हमहि एहिँ दीन्ही ॥

अब जनि राम खेलावहु एही । अतिसय दुखित होति बैदेही ॥

देव वचन सुनि प्रभु मुसुकाना । उठि रघुवीर सुधारे वाना ॥
जटा जूट दृढ़ बाँधे माथे । सोहहिं सुमन बीच विच गाथे ॥
अरुन नयन वारिद तनु स्यामा । अखिल लोक लोचनाभिरामा ॥
कटितट परिकर कस्यो निपंगा । कर कोदंड कठिन सारंगा ॥

छं०—सारंग कर सुंदर निपंग सिलीमुखाकर कटि कस्यो ।

मुजदंड पीन मनोहरायत उर धरासुर पद लस्यो ॥

कह दास तुलसी जबहिं प्रभु सर चाप कर फेरन लगें ।

मह्लांड दिग्गज कमठ अहि महि सिंधु भूषर डगमगें ॥

दो०—सोभा देखि हरपि सुर धरपहिं सुमन अपार ।

जय जय जय करुनानिधि छवि बल गुन आगार ॥ ८६ ॥

एहीं बीच निसाचर अनी । कसमसात आई अति धनी ॥
देखि चले सन्मुख कपि भट्टा । प्रलयकाल के जनु घन घट्टा ॥
बहु कृपान तरवारि चर्मकहिं । जनु दहँदिसि दामिनीं दर्मकहिं ॥
गज रथ तुरग चिकार कठोरा । गर्जहिं मनहुँ बलाहक घोरा ॥
कपि लंगूर त्रिपुल नभ छाए । मनहुँ इंद्रधनु उए सुहाए ॥
उठइ धूरि मानहुँ जलधारा । वान बुंद भँ वृष्टि अपारा ॥
दुहुँ दिसि पर्वत करहिं प्रहारा । बज्रपात जनु बारहिं धारा ॥
रघुपति कोपि वान शरि लाई । घायल भँ निसिचर समुदाई ॥
लागत वान वीर चिक्करहीं । घुमिं घुमिं जहँतहँ महि परहीं ॥
सबहिं सैल जनु निर्झर भारी । सोनित सरि कादर भयकारी ॥

छं०—कादर भयंकर रुधिर सरिता चली परम अपावनी ।

दोउ फूल दल रथ रेत चक्र अवर्त बहति भयावनी ॥

* रामचरितमानस *

जलजंतु गज पदचर तुरग खर विविध वाहन को गने ।
सर सक्ति तोमर सर्प चाप तरंग चर्म कमठ घने ॥
दो०—बीर परहिं जनु तीर तरु मज्जा बहु वह फेन ।
कादर देखि डरहिं तहँ सुभटन्ह के मन चैन ॥ ८७ ॥

मज्जहिं भूत पिसाच वेताला । प्रमथ महा झोटिंग कराला ॥
काक कंक लै भुजा उड़ाहीं । एक ते छीनि एक लै खाहीं ॥
एक कहहिं ऐसिउ सौंघाई । सठहु तुम्हार दरिद्र न जाई ॥
कहरत भट घायल तट गिरे । जहँ तहँ मनहुँ अर्थजल परे ॥
खैचहिं गीध आँत तट भए । जनु बंसी खेलत चित दए ॥
बहु भट बहहिं चढ़े खग जाहीं । जनु नावारि खेलहिं सरि माहीं ॥
जोगिनि भरि भरि खप्पर संचहिं । भूत पिसाच वधू नभ नंचहिं ॥
भट कपाल करताल बजावहिं । चामुंडा नाना विधि गावहिं ॥
जंबुक निकर कटकट कइहिं । खाहिं हुआहिं अघाहिं दपइहिं ॥
कोटिन्ह रुंड मुंड विनु डोल्लहिं । सीस परे महि जय जय बोल्लहिं ॥
०—बोल्लहिं जो जय जय मुंड रुंड प्रचंड सिर विनु धावहीं ।
खप्परिन्ह खग अलुज्जि जुज्जहिं सुभट भटन्ह ढहावहीं ॥
वानर निसाचर निकर मर्दहिं राम बल दर्पित भए ।
संग्राम अंगन सुभट सोवहिं राम सर निकरन्हि हए ॥
-रावन हृदयँ विचारा भा निसिचर संघार ।
मैं अकेल कपि भालु बहु माया करौ अपार ॥ ८८ ॥
प्रभुहि पयादें देखा । उपजा उर अति छोभ बिसेपा ॥
निज रथ तुरत पठावा । हरष सहित मातलि लै आवा ॥

तेज पुंज रथ दिव्य अनूपा । हरपि चढ़े कोसलपुर भूपा ॥
 चंचल तुरग मनोहर चारी । अजर अमर मन सम गतिकारी ॥
 रथारूढ़ रघुनाथहि देखी । धाए कपि बलु पाइ बिसेपी ॥
 सही न जाइ कपिन्ह कै मारी । तब रावन माया विस्तारी ॥
 सो माया रघुवीरहि साँची । लछिमन कपिन्ह सो मानी साँची ॥
 देखी कपिन्ह निसाचर अनी । अनुज सहित बहु कोसलधनी ॥

दं०—यहु राम लछिमन देखि मर्कट भालु मन अति अपदरे ।

जनु चित्र लिखित समेत लछिमन जहँ सो तहँ चितवहि खरे ॥

निज सेन चकित धिलोकि हैसि सर चाप सजि कोसल धनी ।

माया हरी हरि निमित्त महुँ हरपी सकल मर्कट अनी ॥

दो०—यहुरि राम सब तन चितइ बोले बचन गंभीर ।

दंशजुइ देखहु सकल श्रमित भए अति घोर ॥ ८९ ॥

अस कहि रथ रघुनाथ चलावा । विप्र चरन पंकज सिरु नावा ॥

तब लंकैस क्रोध उर छावा । गर्जत तर्जत सन्मुख धावा ॥

जीतेहु जे भट संजुग माहीं । सुनु तापस में तिन्ह सम नाहीं ॥

रावन नाम जगत जस जाना । लोकप जाके वंदीखाना ॥

खर दूपन विराध तुम्ह मारा । वधेहु व्याधइव वालि विचारा ॥

निसिचर निकर सुभट संधारेहु । कुंभकरन धननादहि मारेहु ॥

आजु वयरु सयु लेउँ नियाही । जां रन भूप भाजि नहिं जाही ॥

आजु करउँ खलु काल हवाले । परेहु कठिन रावन के पाले ॥

सुनि दुर्बचन कालवस जाना । विहँसि बचन कह कृपानिधाना ॥

सत्य सत्य सब तब प्रभुताई । जल्पसि जनि देखाउ मनुसाई ॥

जलजंतु गज पदचर तुरग खर विविध वाहन को गने ।

सर सक्ति तोमर सर्प चाप तरंग चर्म कमठ घने ॥

दो०—वीर परहिं जनु तीर तरु मज्जा बहु वह फेन ।

कादर देखि डरहिं तहँ सुभटन्ह के मन चैन ॥ ८७ ॥

मज्जहिं भूत पिसाच वेताला । प्रमथ महा झोटिंग कराला ॥

काक कंक लै भुजा उड़ाहीं । एक ते छीनि एक लै खाहीं ॥

एक कहहिं ऐसिउ सौंधाई । सठहु तुम्हार दरिद्र न जाई ॥

कहरत भट घायल तट गिरे । जहँ तहँ मनहुँ अर्धजल परे ॥

खैचहिं गीध आँत तट भए । जनु वंसी खेलत चित दए ॥

बहु भट वहहिं चढ़े खग जाहीं । जनु नावरि खेलहिं सरि माहीं ॥

जोगिनि भरि भरि खप्पर संचहिं । भूत पिसाच वधू नभ नंचहिं ॥

भट कपाल करताल बजावहिं । चामुंडा नाना विधि गावहिं ॥

जंबुक निकर कटकट कट्टहिं । खाहिं हुआहिं अघाहिं दपट्टहिं ॥

कोटिन्ह रुंड मुंड विनु डोल्लहिं । सीस परे महि जय जय बोल्लहिं ॥

छं०—बोल्लहिं जो जय जय मुंड रुंड प्रचंड सिर विनु धावहीं ।

खप्परिन्ह खग अलुज्झि जुज्झहिं सुभट भटन्ह ढहावहीं ॥

वानर निसाचर निकर मर्दहिं राम बल दर्पित भए ।

संयाम अंगन सुभट सोवहिं राम सर निकरन्हि हए ॥

दो०—रावन हृदयँ विचारा भा निसिचर संघार ।

मैं अकेल कपि भालु बहु माया करौ अपार ॥ ८८ ॥

देवन्ह प्रभुहि पयादें देखां । उपजा उर अति छोभ बिसेपा ॥

सुरपति निज रथ तुरत पठावा । हरष सहित मातलि लै आवा ॥

तेज पुंज रथ दिव्य अनूपा। हरपि चढ़े कोसलपुर भूपा ॥
 चंचल तुरग मनोहर चारी। अजर अमर मन सम गतिकारी ॥
 रथारूढ़ रघुनाथहि देखी। धाए कपि बलु पाइ विसेपी ॥
 सही न जाइ कपिन्ह कँ मारी। तत्र रावन माया विस्तारी ॥
 सो माया रघुवीरहि बाँची। लछिमन कपिन्ह सो मानी साँची ॥
 देखी कपिन्ह निसाचर अनी। अनुज सहित बहु कोसलधनी ॥

छं०—यहु राम लछिमन देखि मर्कट भालु मन अति अपहरे ।
 जनु चित्र लिखित समेत लछिमन जहँ सो तहँ चितवहि खरे ॥
 निज सेन चकित विलोकि हँसि सर चाप सजि कोसल धनी ।
 माया हरी हरि निमिष महँ हरपी सकल मर्कट अनी ॥

दो०—यहुरि राम सब तन चितइ बोले बचन गँभीर ।

द्वंद्वजुद्ध देखहु सकल श्रमित भए अति वीर ॥ ८९ ॥

अस कहि रथ रघुनाथ चलावा। विप्र चरन पंक्रज सिरु नावा ॥
 तब लंकैस क्रोध उर छावा। गर्जत तर्जत सन्मुख धावा ॥
 जीतेहु जे भट संजुग माहीं। मुनु तापस में तिन्ह सम नाहीं ॥
 रावन नाम जगत जस जाना। लोकप जाके वंदीखाना ॥
 खर दूपन विराध तुम्ह मारा। वधेहु व्याधइव वालि विचारा ॥
 निसिचर निकर सुभट संघारेहु। कुंभकरन घननादहि मारेहु ॥
 आजु वयरु सबु लेउँ निवाही। जाँ रन भूप भाजि नहि जाही ॥
 आजु करउँ खलु काल हवाले। परेहु कठिन रावन के पाले ॥
 सुनि दुर्धचन कालवस जाना। विहँसि बचन कह कृपानिधाना ॥
 सत्य सत्य सब तव श्रभुताई। जल्पसि जनि देखाउ मनुसाई ॥

जलजंतु गज पदचर तुरग खर विविध वाहन को गने ।

सर सक्ति तोमर सर्प चाप तरंग चर्म कमठ घने ॥

दो०—वीर परहिं जनु तीर तरु मज्जा बहु वह फेन ।

कादर देखि डरहिं तहँ सुभटन्ह के मन चैन ॥ ८७ ॥

मज्जहिं भूत पिसाच वेताला । प्रमथ महा झोटिंग कराला ॥

काक कंक लै भुजा उड़ाहीं । एक ते छीनि एक लै खाहीं ॥

एक कहहिं ऐसिउ सौंघाई । सठहु तुम्हार दरिद्र न जाई ॥

कहँरत भट घायल तट गिरे । जहँ तहँ मनहुँ अर्धजल परे ॥

खँचहिं गीध आँत तट भए । जनु बंसी खेलत चित दए ॥

बहु भट बहहिं चढ़े खग जाहीं । जनु नावरि खेलहिं सरि माहीं ॥

जोगिनि भरि भरि खप्पर संचहिं । भूत पिसाच बधू नभ नंचहिं ॥

भट कपाल करताल वजावहिं । चाभुंडा नाना विधि गावहिं ॥

जंबुक निकर कटकट कट्टहिं । खाहिं हुआहिं अघाहिं दपट्टहिं ॥

कोटिन्ह रुंड मुंड विनु डोल्लहिं । सीस परे महि जय जय बोल्लहिं ॥

छं०—बोल्लहिं जो जय जय मुंड रुंड प्रचंड सिर विनु घावहीं ।

खप्परिन्ह खग अलुज्झि जुज्झहिं सुभट भटन्ह ढहावहीं ॥

बानर निसाचर निकर मर्दहिं राम बल दर्पित भए ।

संग्राम अंगन सुभट सोवहिं राम सर निकरन्हि हए ॥

दो०—रावन हृदयँ विचारा भा निसिचर संघार ।

मैं अकेल कपि भालु बहु माया करौ अपार ॥ ८८ ॥

देवन्ह प्रभुहि पयादें देखा । उपजा उर अति छोभ बिसेषा ॥

सुरपति निज रथ तुरत पठावा । हरष सहित मातलि लै आवा ॥

तेज पुंज रथ दिव्य अनूपा । हरपि चढ़े कोसलपुर भूपा ॥
 चंचल तुरग मनोहर चारी । अजर अमर मन सम गतिकारी ॥
 रथारूढ़ रघुनाथहि देखी । धाए कपि बलु पाइ बिसेपी ॥
 सही न जाइ कपिन्ह कै मारी । तव रावन माया विस्तारी ॥
 सो माया रघुवीरहि साँची । लछिमन कपिन्ह सो मानी साँची ॥
 देखी कपिन्ह निसाचर अनी । अनुज सहित घहु कोसलधनी ॥

छं०—यहु राम लछिमन देखि मर्कट भालु मन अति अपहरे ।

जनु चित्र लिखित समेत लछिमन जहँ सो तहँ चितवहि खरे ॥

निज सेन चकित बिलोकि हँसि सर चाप सजि कोसल धनी ।

माया हरी हरि निमिष महँ हरपी सकल मर्कट अनी ॥

दो०—यहुरि राम सब तन चितइ बोले वचन गँभीर ।

इंद्रजुड देखहु सकल अमित भए अति बीर ॥ ८९ ॥

अस कहि रथ रघुनाथ चलावा । विप्र चरन पंक्रज सिरु नावा ॥

तब लंकेस क्रोध उर छाया । गर्जत तर्जत सन्मुख धावा ॥

जीतेहु जे भट संजुग माहीं । सुनु तापस भँ तिन्ह सम नाहीं ॥

रावन नाम जगत जस जाना । लोकप जाके बंदीखाना ॥

खर दूपन विराध तुम्ह मारा । वधेहु ब्याधइ बालि विचारा ॥

निसिचर निकर सुभट संधारेहु । कुंभकरन घननादहि मारेहु ॥

आजु वयरु सबु लेउँ निवाही । जां रन भूप भाजि नहिं जाही ॥

आजु करउँ खलु काल हवाले । परेहु कठिन रावन के पाले ॥

सुनि दुर्बचन कालवस जाना । विहँसि वचन कह कृपानिधाना ॥

सत्य सत्य सब तव प्रभुताई । जल्पसि जनि देखाउ मनुसाई ॥

जलजंतु गज पदचर तुरग खर विविध बाहन को गने ।

सर सक्ति तोमर सर्प चाप तरंग चर्म कमठ घने ॥

दो०—त्रीर परहिं जनु तीर तरु मज्जा बहु वह फेन ।

कादर देखि डरहिं तहँ सुभटन्ह के मन चैन ॥ ८७ ॥

मज्जहिं भूत पिसाच बेताला । प्रमथ महा झोटिंग कराला ॥

काक कंक लै भुजा उड़ाहीं । एक ते छीनि एक लै खाहीं ॥

एक कहहिं ऐसिउ सौंधाई । सठहु तुम्हार दरिद्र न जाई ॥

कहँरत भट घायल तट गिरे । जहँ तहँ मनहुँ अर्धजल परे ॥

खैचहिं गीध आँत तट भए । जनु बंसी खेलत चित दए ॥

बहु भट वहहिं चढ़े खग जाहीं । जनु नावरि खेलहिं सरि माहीं ॥

जोगिनि भरि भरि खप्पर संचहिं । भूत पिसाच बधू नभ नंचहिं ॥

भट कपाल करताल बजावहिं । चामुंडा नाना विधि गावहिं ॥

जंबुक निकर कटकट कट्टहिं । खाहिं हुआहिं अघाहिं दपट्टहिं ॥

कोटिन्ह रुंड मुंड विनु डोल्लहिं । सीस परे महि जय जय बोल्लहिं ॥

छं०—बोल्लहिं जो जय जय मुंड रुंड प्रचंड सिर विनु धावहीं ।

खप्परिन्ह खग अलुज्झि जुज्झहिं सुभट भटन्ह ढहावहीं ॥

वानर निसाचर निकर मर्दहिं राम बल दर्पित भए ।

संग्राम अंगन सुभट सोवहिं राम सर निकरन्हि हए ॥

दो०—रावन हृदयँ विचारा भा निसिचर संघार ।

मैं अकेल कपि भालु बहु माया करौ अपार ॥ ८८ ॥

देवन्ह प्रभुहि पयादें देखां । उपजा उर अति छोभ विसेषा ॥

सुरपति निज रथ तुरत पठावा । हरप सहित मातलि लै आवा ॥

तेज पुंज रथ दिव्य अनूपा । हरपि चढ़े कोसलपुर भूपा ॥
 चंचल तुरग मनोहर चारी । अजर अमर मन सम गतिकारी ॥
 रथारूढ़ रघुनाथहि देखी । धाए कपि बलु पाइ विसेपी ॥
 सही न जाइ कपिन्ह कै मारी । तव रावन माया विस्तारी ॥
 सो माया रघुवीरहि बाँची । लछिमन कपिन्ह सो मानी साँची ॥
 देखी कपिन्ह निसाचर अनी । अनुज सहित बहु कोसलधनी ॥

छं०—बहु राम लछिमन देखि मर्कट भालु मन अति अपडरे ।
 जनु चित्र लिखित समेत लछिमन जहँ सो तहँ चितवहि खरे ॥
 निज सेन चर्कित बिलोकि हैसि सर चाप सजि कोसल धनी ।
 माया हरी हरि निमिष महुँ हरपी सकल मर्कट अनी ॥

दो०—बहुरि राम सब तन चितइ बोले वचन गँभीर ।

द्वंद्वजुद्ध देखहु सकल श्रमित भए अति वीर ॥ ८९ ॥

अस कहि रथ रघुनाथ चलावा । विप्र चरन पंक्रज सिरु नावा ॥
 तब लंकैस क्रोध उर छावा । गर्जत तर्जत सन्मुख धावा ॥
 जीतेहु जे भट संजुग माहीं । सुनु तापस मैं तिन्ह सम नाही ॥
 रावन नाम जगत जस जाना । लोकप जाकें बंदीखाना ॥
 खर दूपन विराध तुम्ह मारा । वधेहु व्याधइव वालि विचारा ॥
 निसिचर निकर सुभट संघारेहु । कुंभकरन घननादहि मारेहु ॥
 आजु वयरु सबु लेउँ निवाही । जाँ रन भूप भाजि नहिं जाही ॥
 आजु करउँ खलु काल हवाले । परेहु कठिन रावन के पाले ॥
 सुनि दुर्बचन कालघस जाना । विहँसि वचन कह कृपानिधाना ॥
 सत्य मत्य सब तव प्रभुताई । जल्पसि जनि देखाउ मनुसाई ॥

जलजंतु गज पदचर तुरग खर विविध वाहन को गने ।

सर सक्ति तोमर सर्प चाप तरंग चर्म कमठ घने ॥

दो०—वीर परहिं जनु तीर तरु मज्जा बहु वह फेन ।

कादर देखि डरहिं तहँ सुभटन्ह के मन चेन ॥ ८७ ॥

मज्जहिं भूत पिसाच वेताला । प्रमथ महा झोटिंग कराला ॥

काक कंक लै भुजा उड़ाहीं । एक ते छीनि एक लै खाहीं ॥

एक कहहिं ऐसिउ सौंघाई । सठहु तुम्हार दरिद्र न जाई ॥

कहरत भट घायल तट गिरे । जहँ तहँ मनहुँ अर्धजल परे ॥

खैचहिं गीध आँत तट भए । जनु बंसी खेलत चित दए ॥

बहु भट बहहिं चढ़े खग जाहीं । जनु नावरि खेलहिं सरि माहीं ॥

जोगिनि भरि भरि खप्पर संचहिं । भूत पिसाच बधू नभ नंचहिं ॥

भट कपाल करताल बजावहिं । चामुंडा नाना विधि गावहिं ॥

जंबुक निकर कटकट कट्टहिं । खाहिं हुआहिं अघाहिं दपट्टहिं ॥

कोटिन्ह रुंड मुंड विनु डोछहिं । सीस परे महि जय जय बोछहिं ॥

छं०—बोछहिं जो जय जय मुंड रुंड प्रचंड सिर विनु धावहीं ।

खप्परिन्ह खग्ग अलुज्झि जुज्झहिं सुभट भटन्ह ढहावहीं ॥

वानर निसाचर निकर मर्दहिं राम बल दर्पित भए ।

संग्राम अंगन सुभट सोवहिं राम सर निकरन्हि हए ॥

दो०—रावन हृदयँ विचारा भा निसिचर संघार ।

मैं अकेल कपि भालु बहु माया करौ अपार ॥ ८८ ॥

देवन्ह प्रभुहि पयादें देखा । उपजा उर अति छोभ विसेषा ॥

सुरपति निज रथ तुरत पठावा । हरष सहित मातलि लै आवा ॥

तेज पुंज रथ दिव्य अनूपा । हरपि चढ़े कोसलपुर भूपा ॥
 चंचल तुरग मनोहर चारी । अजर अमर मन सम गतिकारी ॥
 रथारूढ़ रघुनाथहि देखी । धाए कपि बलु पाइ विसेपी ॥
 सही न जाइ कपिन्ह कँ मारी । तब रावन माया विस्तारी ॥
 सो माया रघुवीरहि बाँची । लछिमन कपिन्ह सो मानी साँची ॥
 देखी कपिन्ह निसाचर अनी । अनुज सहित बहु कोसलधनी ॥

छं०—यहु राम लछिमन देखि मर्कट भालु मन अति अपडरे ।
 जनु चित्र लिखित समेत लछिमन जहँ सो तहँ चितवहि ररे ॥
 निज सेन चकित बिलोकि हँसि सर चाप सजि कोसल घनी ।
 माया हरी हरि निमिष महँ हरपी सकल मर्कट अनी ॥

दो०—बहुरि राम सब तन चितइ योले बचन गँभीर ।
 इंद्रजुड देखहु सकल श्रमित भए अति घीर ॥ ८९ ॥

अस कहि रथ रघुनाथ चलावा । विप्र चरन पंक्रुज सिरु नावा ॥
 तब लंकैस क्रोध उर छावा । गर्जत तर्जत सन्मुख धावा ॥
 जीतेहु जे भट संजुग माहीं । मुनु तापस में तिन्ह सम नाहीं ॥
 रावन नाम जगत अस जाना । लोकप जाके वंदीखाना ॥
 खर दूपन विराध तुम्ह मारा । वघेहु व्याधइ बालि विचारा ॥
 निसिचर निकर सुभट संघारेहु । कुंभकरन घननादहि मारेहु ॥
 आजु वयरु सबु लेउँ निवाही । जाँ रन भूष भाजि नहि जाही ॥
 आजु करउँ खलु काल हवाले । परेहु कठिन रावन के पाले ॥
 मुनि दुर्बचन कालवस जाना । विहँसि बचन कह कृपानिधाना ॥
 सत्य सत्य सब तव प्रभुताई । जल्पसि जनि देखाउ मनुसाई ॥

जलजंतु गज पदचर तुरग खर विविध वाहन को गने ।

सर सक्ति तोमर सर्प चाप तरंग चर्म कमठ घने ॥

दो०—वीर परहिं जनु तीर तरु मज्जा बहु वह फेन ।

कादर देखि डरहिं तहँ सुभटन्ह के मन चैन ॥ ८७ ॥

मज्जहिं भूत पिसाच वेताला । प्रमथ महा झोटिंग कराला ॥

काक कंक लै भुजा उड़ाहीं । एक ते छीनि एक लै खाहीं ॥

एक कहहिं ऐसिउ सौंघाई । सठहु तुम्हार दरिद्र न जाई ॥

कहरत भट घायल तट गिरे । जहँ तहँ मनहुँ अर्धजल परे ॥

खैचहिं गीध आँत तट भए । जनु बंसी खेलत चित दए ॥

बहु भट वहहिं चढ़े खग जाहीं । जनु नावरि खेलहिं सरि माहीं ॥

जोगिनि भरि भरि खप्पर संचहिं । भूत पिसाच बधू नभ नंचहिं ॥

भट कपाल करताल बजावहिं । चामुंडा नाना विधि गावहिं ॥

जंबुक निकर कटकट कट्टहिं । खाहिं हुआहिं अघाहिं दपट्टहिं ॥

कोटिन्ह रुंड मुंड विनु डोल्लहिं । सीस परे महि जय जय बोल्लहिं ॥

छं०—बोल्लहिं जो जय जय मुंड रुंड प्रचंड सिर विनु धावहीं ।

खप्परिन्ह खग अलुञ्जि जुञ्जहिं सुभट भटन्ह ढहावहीं ॥

बानर निसाचर निकर मर्दहिं राम बल दर्पित भए ।

संग्राम अंगन सुभट सोवहिं राम सर निकरन्हि हए ॥

दो०—रावन हृदयँ विचारा भा निसिचर संघार ।

मैं अकेल कपि भालु बहु माया करौं अपार ॥ ८८ ॥

देवन्ह प्रभुहि पयादें देखा । उपजा उर अति छोभ विसेपा ॥

सुरपति निज रथ तुरत पठावा । हरष सहित मातलि लै आवा ॥

तेज पुंज रथ दिव्य अनूपा।हरपि चढ़े कांसलपुर भूपा ॥
चंचल तुरग मनोहर चारी।अजर अमर मन सम गतिकारी ॥
रथारूढ़ रघुनाथहि देखी।धाए कपि बलु पाइ विसेपी ॥
सही न जाइ कपिन्ह कै मारी।तव रावन माया विस्तारी ॥
सो माया रघुवीरहि बाँची।लछिमन कपिन्ह सो मानी साँची ॥
देखी कपिन्ह निसाचर अनी।अनुज सहित बहु कोसलधनी ॥

छं०—बहु राम लछिमन देखि मर्कट भालु मन अति अपहरे ।
जनु चित्र लिखित समेत लछिमन जहँ सो तहँ चितवहि खरे ॥
निज सेन चकित बिलोकि हँसि सर चाप सजि कोसल धनी ।
माया हरी हरि निमिप महँ हरपी सकल मर्कट अनी ॥

दो०—बहुरि राम सब तन चितइ थोले बचन गँभीर ।
द्वंदजुद्ध देखहु सकल शमित भए अति चीर ॥ ८९ ॥

अस कहि रथ रघुनाथ चलावा।विप्र चरन पंरुज सिरु नावा ॥
तव लंकेंस क्रोध उर छावा।गर्जत तर्जत सन्मुख धावा ॥
जीतेहु जे भट संजुग माहीं।सुनु तापस मैं तिन्ह सम नाहीं ॥
रावन नाम जगत जस जाना।लोकप जाके बंदीखाना ॥
खर दूपन विराध तुम्ह मारा।बधेहु व्याधइव बालि विचारा ॥
निसिचर निकर सुभट संधारेहु।कुंभकरन घननादहि मारेहु ॥
आजु वयरु सबु लेउँ निबाही।जां रन भूप भाजि नहिं जाही ॥
आजु करउँ खलु काल हवाले।परेहु कठिन रावन के वा ॥
सुनि दुर्बचन कालवस जाना।विहँसि
सत्य सत्य सप तव प्रभुताई ।

छं०—जनि जल्पना करि सुजसु नासहि नीति सुनहि करहि छमा ।
 संसार महँ पुरुष त्रिविध पाटल रसाल पनस समा ॥
 एक सुमनप्रद एक सुमन फल एक फलइ केवल लागहीं ।
 एक कहहि कहहिं करहिं अपर एक करहिं कहत न वागहीं ॥

दो०—राम वचन सुनि बिहँसा मोहि सिखावत ग्यान ।

वयरु करत नहिं तव डरे अब लागे प्रिय प्रान ॥ ९० ॥

कहि दुर्वचन क्रुद्ध दसकंधर । कुलिस समान लाग छाँडै सर ॥
 नानाकार सिलीमुख धाए । दिसि अरु विदिसि गगनमहि छाए ॥
 पावक सर छाँडेउ रघुवीरा । छन महँ जरे निसाचर तीरा ॥
 छाड़िसि तीत्र सक्ति खिसि आई । वान संग प्रभु फेरि चलाई ॥
 कोटिन्ह चक्र त्रिसूल पवारै । विनु प्रयास प्रभु काटि निवारै ॥
 निफल होहिं रावन सर कैसैं । खल के सकल मनोरथ जैसैं ॥
 तव सत वान सारथी मारेसि । परेउ भूमि जय राम पुकारेसि ॥
 राम कृपा करि सूत उठावा । तव प्रभु परम क्रोध कहँ पावा ॥

छं०—भए क्रुद्ध जुद्ध विरुद्ध रघुपति त्रोन सायक कसमसे ।

कोदंड धुनि अति चंड सुनि मनुजाद सब मारुत प्रसे ॥

मंदोदरी उर कंप कंपति कमठ भू भूधर प्रसे ।

चिक्करहिं दिग्गज दसन गहि महि देखि कौतुक सुर हँसे ॥

दो०—तानेउ चाप श्रवन लागि छाँडे त्रिसिख कराल ।

राम मारगन गन चले लहलहात जनु व्याल ॥ ९१ ॥

चले वान सपच्छ जनु उरगा । प्रथमहिं हतेउ सारथी तुरगा ।

रथ विभंजि हति केत पताका । गर्जा अति अंतर बल थाका ।

तुरत आनरथ चढ़ि खिसिआना । अस्त्र सस्त्र छाँड़ेसि विधि नाना ॥
 विफल होहिं सब उद्यम ताके । जिमि परद्रोह निरत मनसा के ॥
 तब रावन दस झूल चलावा । बाजि चारि महि मारि गिरावा ॥
 तुरग उठाइ कोपि रघुनायक । खँचि सरासन छाँड़े सायक ॥
 रावन सिर सरोज बनचारी । चलि रघुवीर सिलीमुख धारी ॥
 दस दस बान भाल दस मारे । निसरि गए चले रुधिर पनारे ॥
 स्रवत रुधिर धायउ बलवाना । प्रभु पुनि कृत धनु सर संधाना ॥
 तीस तीर रघुवीर पवारे । भुजन्हि समेत सीस महि पारे ॥
 काटतहीं पुनि भए नवीने । राम बहोरि भुजा सिर छीने ॥
 प्रभु बहु बार बाहु सिर हए । कटत झटिति पुनि नूतन भए ॥
 पुनि पुनि प्रभु काटत भुज सीसा । अति कौतुकी कोसलाधीसा ॥
 रहे छाइ नभ सिर अरु बाहू । मानहुँ अमित केतु अरु राहू ॥

छं०—जनु राहु केतु अनेक नभ पथ स्रवत सोनित धायहीं ।
 रघुवीर तीर प्रचंड लागहिं भूमि गिरन न पावहीं ॥
 एक एक सर सिर निकर छेदे नभ उड़त श्मि सोहहीं ।
 जनु कोपि दिनकर कर निकर जहँ तहँ बिधुंतुद पोहहीं ॥

दो०—जिमि जिमि प्रभु हर तासु सिर तिमि तिमि होहिं अपार ।
 स्रवत विषय विवर्ध जिमि नित नित नूतन मार ॥ ९२ ॥

दसमुख देखि सिरन्ह कै बाढ़ी । विसरा मरन भई रिस गाढ़ी ॥
 गर्जेउ मूढ़ महा अभिमानी । धायउ दसहु सरासन तानी ॥
 समर भूमि दसकंधर कोप्यो । वरपि बान रघुपति रथ तोप्यो ॥
 दंड एक रथ देखि न परेऊ । जनु निहार महुँ दिनकर दुरेऊ ॥

* रामचरितमानस *

छं०—जनि जल्पना करि सुजसु नासहि नीति सुनहि करहि छमा ।
संसार महँ पूरुप त्रिविध पाटल रसाल पनस समा ॥
एक सुमनप्रद एक सुमन फल एक फलइ केवल लागहीं ।
एक कहहि कहहिं करहिं अपर एक करहिं कहत न वागहीं ॥

दो०—राम वचन सुनि विहँसा मोहि सिखावत ग्यान ।
वयरु करत नहिं तव डरे अब लागे प्रियं प्रान ॥ ९० ॥

कहि दुर्वचन क्रुद्ध दसकंधर । कुलिस समान लाग छौं डै सर ॥
नानाकार सिलीमुख धाए । दिसि अरु विदिसि गगन महि छाए ॥
पावक सर छौं डेउ रघुबीरा । छन महँ जरे निसाचर तीरा ॥
छाड़िसि तीव्र सक्ति खिसि आई । बान संग प्रभु फेरि चलाई ॥
गोटिन्ह चक्र त्रिसूल पवारै । विनु प्रयास प्रभु काटि निवारै ॥
फल होहिं रावन सर कैसैं । खल के सकल मनोरथ जैसैं ॥
सत बान सारथी मारेसि । परेउ भूमि जय राम पुकारेसि ॥
कृपा करि सूत उठावा । तब प्रभु परम क्रोध कहँ पावा ॥

—भए क्रुद्ध जुद्ध विरुद्ध रघुपति त्रोन सायक कसमसे ।

कोदंड धुनि अति चंड सुनि मनुजाद सब मारुत त्रसे ॥

मंदोदरी उर कंप कंपति कमठ भू भूधर त्रसे ।

चिकरहिं दिग्गज दसन गहि महि देखि कौतुक सुर हँसे ॥

तानेउ चाप श्रवन लागि छौं डे विसिख कराल ।

राम मारगन गन चले लहलहात जनु ब्याल ॥ ९१ ॥

न सपच्छ जनु उरगा । प्रथमहिं हतेउ सारथी तुरगा ॥

जि हति केतु पताका । गर्जा अति अंतर बज ॥

तुरत आनरथ चढ़ि खिसिआना । अस्र सख छाँड़ेसि विधि नाना ॥
 विफल होहिं सब उद्यम ताके । जिमि परद्रोह निरत मनसा के ॥
 तब रावन दस छल चलावा । बाजि चारि महि भारि गिरावा ॥
 तुरग उठाइ कोषि रघुनायक । खँचि सरासन छाँड़े सायक ॥
 रावन सिर सरांज बनचारी । चलि रघुवीर सिलीमुख धारी ॥
 दस दस बान भाल दस मारे । निसरि गए चले रुधिर पनारे ॥
 स्रवत रुधिर धायउ बलवाना । प्रभु पुनि कृत धनु सर संधाना ॥
 तीस तीर रघुवीर पवारे । भुजन्हि समेत सीस महि पारे ॥
 काटतहीं पुनि भए नवीने । राम बहोरि भुजा सिर छीने ॥
 प्रभु बहु बार बाहु सिर हए । कटत झटिति पुनि नूतन भए ॥
 पुनि पुनि प्रभु काटत भुज सीसा । अति कौतुकी कोसलाधीसा ॥
 रहे छाइ नभ सिर अरु बाहू । मानहुँ अमित केतु अरु राहू ॥

छं०—जनु राहु केतु अनेक नभ पथ स्रवत सोनित धावहीं ।
 रघुवीर तीर प्रचंड लागहि भूमि गिरन न पावहीं ॥
 एक एक सर सिर निकर छेदे नभ उदत इमि सोहहीं ।
 जनु कोषि दिनकर कर निकर जहँ तहँ बिधुंतुद पोहहीं ॥

दो०—जिमि जिमि प्रभु हर तासु सिर तिमि तिमि होहि अपार ।
 सेवत विषय विवर्ध जिमि नित नित नूतन मार ॥ ९२ ॥

दसमुख देखि सिरन्ह कै बाढ़ी । बिसरा मरन भई रिस गाढ़ी ॥
 गर्जेउ मूढ़ महा अभिमानी । धायउ दसहु सरासन तानी ॥
 समर भूमि दसकंधर कोप्यो । वरपि बान रघुपति रथ तोप्यो ॥
 दंड एक रथ देखि न परेऊ । जनु निहार भहुँ दिन्कर दुरेऊ ॥

हाहाकार सुरन्ह जब कीन्हा। तब प्रभु कोपि कारमुक लीन्ह
सर निवारि रिपु के सिर काटे। ते दिसि विदिसि गगन सहि पात
काटे सिर नभ मारग धावहिं। जय जय धुनि करि भय उपजावहि
कहँ लछिमन सुग्रीव कपीसा। कहँ रघुवीर कोसलाधीसा।

छं०—कहँ रामु कहि सिर निकर धाए देखि मर्कट भजि चले।
संधानि धनु रघुवंसमनि हँसि सरन्हि सिर बेधे भले ॥

सिर मालिका कर कालिका गहि वृंद वृंदन्हि बहु मिलीं।
करि रुधिर सरि मज्जनु मनहुँ संग्राम वट पूजन चलीं ॥

दो०—पुनि दसकंठ क्रुद्ध होइ छोड़ी सक्ति प्रचंड।
चली विभीषन सन्मुख मनहुँ काल कर दंड ॥ ९३ ॥

आवत देखि सक्ति अति घोरा। प्रनतारति भंजन पन मोरा ॥
तुरत विभीषन पाछें मेला। सन्मुख राम सहेउ सोइ सेला ॥

लागि सक्ति मुरुछा कछु भई। प्रभु कृत खेल सुरन्ह विकलई ॥
देखि विभीषन प्रभु श्रम पायो। गहि कर गदा क्रुद्ध होइ धायो ॥

रे कुभाग्य सठ मंद कुबुद्धे। तैं सुर नर मुनि नाग विरुद्धे ॥
सादर सिव कहँ सीस चढ़ाए। एक एक के कोटिन्ह पाए ॥

हि कारन खल अब लागि बाँच्यो। अब तव कालु सीस पर नाच्यो ॥
म विमुख सठ चहसि संपदा। अस कहि हनेसि माझ उर गदा ॥

०—उर माझ गदा प्रहार घोर कठोर लागत माह परचो।
दस बदन सोनित सवत पुनि संभारि धायो रिस भरचो ॥

द्वौ भिरे अतिबल मल्लजुद्ध विरुद्ध एकु एकहि हनै।
रघुवीर बल दर्पित विभीषनु घालि नहिं ता कहँ ननै ॥

दो०—उमा विभीषणु रावनहि सम्मुख चित्तव कि काउ ।

सो अब भिरत काल ज्यो श्रीरघुवीर प्रभाउ ॥ ९४ ॥

देखा श्रमित विभीषणु भारी । धायउ हनुमान गिरि धारी ॥
 रथ तुरंग सारथी निपाता । हृदय माझ तेहि मारेसि लाता ॥
 ठाढ़ रहा अति कंपित गाता । गयउ विभीषणु जहँ जनत्राता ॥
 पुनि रावन कपि हतेउ पचारी । चलेउ गगन कपि पूँछ पतारी ॥
 गहिसि पूँछ कपि सहित उड़ाना । पुनि फिरि भिरेउ प्रबल हनुमाना ॥
 लरत अकास जुगल समजोधा । एकहि एकु हनत करि क्रोधा ॥
 सोहहिं नभ छल बल बहु करहीं । कज्जलगिरि सुमेरु जनु लरहीं ॥
 बुधि बल निसिचर परइ न पारयो । तय मारुतसुत प्रभु संभारयो ॥

छं०—संभारि श्रीरघुवीर धीर पचारि कपि रावनु हन्यो ।

महि परत पुनि उठि लरत देवन्ह जुगल कहँ जय जय मन्यो ॥

हनुमंत संकट देखि मर्कट भालु क्रोधानुर चले ।

रन मत्त रावन सकल सुभट प्रचंड भुज बल दलमलें ॥

दो०—तब रघुवीर पचारे घाए कीस प्रचंड ।

कपि बल प्रबल देखि तेहिं कीन्ह प्रगट पापंड ॥ ९५ ॥

अंतरधान भयउ छन एका । पुनि प्रगटे खल रूप अनेका ॥
 रघुपति कटक भालु कपि जेते । जहँ तहँ प्रगट दसानन तेते ॥
 देखे कपिन्ह अमित दससीसा । जहँ तहँ भजे भालु अरु कीसा ॥
 भागे बानर धरहिं न धीरा । त्राहि त्राहि लछिमन रघुवीरा ॥
 दहँ दिसि धायहिं कोटिन्ह रावन । गर्जहिं घोर कठोर भयावन ॥
 डरे सकल सुर चले पराई । जय कै

हाहाकार सुरन्ह जब कीन्हा। तब प्रभु कोपि कारमुक लीन्हा ॥
सर निवारि रिपु के सिर काटे। ते दिसि विदिसि गगन महि पाटे ॥
काटे सिर नभ मारग धावहिं। जय जय धुनि करि भय उपजावहिं ॥
कहँ लछिमन सुग्रीव कपीसा। कहँ रघुवीर कोसलाधीसा ॥

छं०—कहँ रामु कहि सिर निकर धाए देखि मर्कट भजि चले।

संधानि धनु रघुवंसमनि हँसि सरन्हि सिर वेधे भले ॥

सिर मालिका कर कालिका गहि वृंद वृंदन्हि बहु मिलीं।

करि रुधिर सरि मज्जनु मनहुँ संग्राम वट पूजन चली ॥

दो०—पुनि दसकंठ क्रुद्ध होइ छाँड़ी सक्ति प्रचंड।

चली विभीषन सन्मुख मनहुँ काल कर दंड ॥ ९३ ॥

आवत देखि सक्ति अति घोरा। प्रनतारति भंजन पन शोरा ॥

तुरत विभीषन पाछें मेला। सन्मुख राम सहेउ सोइ सेला ॥

लागि सक्ति मुरुछा कलु भई। प्रभु कृत खेल सुरन्ह विकलई ॥

देखि विभीषन प्रभु श्रम पायो। गहि कर गदा क्रुद्ध होइ धायो ॥

रे कुभाग्य सठ मंद कुबुद्धे। तैं सुर नर मुनि नाग विरुद्धे ॥

सादर सिव कहँ सीस चढ़ाए। एक एक के कोटिन्ह पाए ॥

तेहि कारन खल अब लागि बाँच्यो। अब तव कालु सीस पर नाच्यो ॥

राम विमुख सठ चहसि संपदा। अस कहि हनेसि माझ उर गदा ॥

छं०—उर माझ गदा प्रहार घोर कठोर लागत माह परयो।

दस वदन सोनित स्रवत पुनि संभारि धायो रिस भरयो ॥

द्वौ भिरे अतिबल मल्लजुद्ध विरुद्ध एकु एकहि हनै।

रघुवीर बल दर्पित विभीषनु घालि नहिं ता कहँ गनै ॥

दो०—उमा विभीषणु रावनहि सम्मुख चितव कि काउ ।

सो अब भिरत काल ज्यो श्रीरघुवीर प्रभाउ ॥ ९४ ॥

देखा श्रमित विभीषणु भारी । धायउ हनुमान गिरि धारी ॥
 रथ तुरंग सारथी निपाता । हृदय माझ तेहि मारेसि लाता ॥
 ठाढ़ रहा अति कंपित गाता । गयउ विभीषणु जहँ जनत्राता ॥
 पुनि रावन कपि हतेउ पचारी । चलेउ गगन कपि पूँछ पसारी ॥
 गहिसि पूँछ कपि सहित उड़ाना । पुनि फिरि भिरेउ प्रबल हनुमाना
 लरत अकास जुगल सम जोधा । एकहि एकु हनत करि क्रोधा ॥
 सोहहिं नभ छल बल बहु करहीं । कज्जलगिरि सुमेरु जनु लरहीं ॥
 बुधि बल निसिचर परह न पारयो । तव मारुतसुत प्रभु संभारयो ॥

छं०—संभारि श्रीरघुवीर धीर पचारि कपि रावनु हन्यो ।

महि परत पुनि उठि लरत देवन्ह जुगल कहँ जय जय मन्यो ॥

हनुमंत संकट देखि मर्कट भालु क्रोधानुर चले ।

रन मत्त रावन सकल सुभट प्रचंड भुज बल दलमले ॥

दो०—तव रघुवीर पचारे घाए कीस प्रचंड ।

कपि बल प्रबल देखि तेहि कीन्ह प्रगट पापंड ॥ ९५ ॥

अंतरधान भयउ छन एका । पुनि प्रगटे खल रूप अनेका ॥
 रघुपति कटक भालु कपि जेते । जहँ तहँ प्रगट दसानन तेते ॥
 देखे कपिन्ह अमित दससीसा । जहँ तहँ भजे भालु अरु कीसा ॥
 भागे बानर धरहिं न धीरा । त्राहि त्राहिलछिमन रघुवीरा ॥
 दहँ दिसि धायहिं कोटिन्ह रावन । गर्जहिं घोर कठोर भयावन ॥
 डरे सकल सुर चले पराई । जय कै आस तजहु अब भाई ॥

सब सुर जिते एक दसकंधर। अब बहु भए तकहु गिरि कंदर ॥
रहे विरंचि संभु मुनि ग्यानी। जिन्ह जिन्ह प्रभु महिमा कछु जानी ॥

छं०—जाना प्रताप ते रहे निर्भय कपिन्ह रिपु माने फुरे ।

चले विचलि मर्कट भालु सकल कृपाल पाहि भयातुरे ॥

हनुमंत अंगद नील नल अतिबल लरत रन बाँकुरे ।

मर्दहिं दसानन कोटि कोटिन्ह कपट भू भट अंकुरे ॥

दो०—सुर वानर देखे विकल हँस्यो कोसलाधीस ।

सजि सारंग एक सर हते सकल दससीस ॥ ९६ ॥

प्रभु छन महँ माया सब काटी। जिमि रवि उएँ जाहिं तम फाटी ॥

रावनु एकु देखि सुर हरषे। फिरे सुमन बहु प्रभु पर वरषे ॥

भुज उठाइ रघुपति कपि फेरे। फिरे एक एकन्ह तब टेरे ॥

प्रभु बलु पाइ भालु कपि धाए। तरल तमकि संजुग महि आए ॥

अस्तुति करत देवतन्हि देखें। भयउँ एक मै इन्ह के लेखें ॥

सठहु सदा तुम्ह मोर मरायल। अस कहि कोपि गगन पर धायल ॥

हाहाकार करत सुर भागे। खलहु जाहु कहँ मोरें आगे ॥

देखि विकल सुर अंगद धायो। कूदि चरन गहि भूमि गिरायो ॥

छं०—गहि भूमि पारयो लात मारयो बालिसुत प्रभु पहि गयो ।

संभारि उठि दसकंठ घोर कठोर रव गर्जत भयो ॥

करि दाप चाप चढ़ाइ दस संधानि सर बहु वरषई ।

किए सकल भट घायल भयाकुल देखि निज बल हरषई ॥

दो०—तव रघुपति रावन के सीस भुजा सर चाप ।

काटे बहुत बड़े पुनि जिमि तीरथ कर पाप ॥ ९७ ॥

सिर भुज चाढ़ि देखि रिपु केरी । भालु कपिन्ह रिस भई घनेरी ॥
 मरत न मूढ़ं कटेहुँ भुज सीसा । धाए कोपि भालु भट कीसा ॥
 बालितनय मारुति नल नीला । वानरराज दुविद बलसीला ॥
 विटप महीधर करहिं प्रहारा । सोइ गिरितरु गहि कपिन्ह सो मारा ॥
 एक नखन्हि रिपु वपुष विदारी । भागि चलहिं एक लातन्ह मारी ॥
 तव नल नील सिरन्हि चढ़ि गयऊ । नखन्हि लिलार विदारत भयऊ
 रुधिर देखि त्रिपाद उर भारी । तिन्हहि धरन कहुँ भुजा पसारी ॥
 गहे न जाहिं करन्हि पर फिरहीं । जनु जुग मधुप कमल धन चरहीं ॥
 कोपि कूदि द्रौ धरेसि बहोरी । महि पटकत भजे भुजा मरोरी ॥
 पुनि सक्रोप दस धनु कर लीन्हे । सरन्हि मारि घायल कपि कीन्हे ॥
 हनुमदादि मुरुछित करि बंदर । पाइ प्रदोष हरप दसकंधर ॥
 मुरुछित देखि सकल कपि बीरा । जामवंत धायउ रनधीरा ॥
 संग भालु भूधर तरु धारी । मारन लगे पचारि पचारी ॥
 भयउ क्रुद्ध रावन बलवाना । गहिपद महिपदकइ भटनाना ॥
 देखि भालुपति निज दल घाता । कोपि माझ उर मारेसि लाता ॥

छं०—उर लात घात प्रचंड लागत विकल रथ ते महि परा ।

गहि भालु धीसहुँ कर मनहुँ कमलन्हि बसे निसि मधुकरा ॥

मुरुछित विलोकि बहोरि पद हति भालुपति प्रभु पहिं गयो ।

निसि जानि स्यंदन घालि तेहि तव सूत जतनु करत भयो ॥

दो०—मुरुछा विगत भालु कपि सब आए प्रभु पास ।

निसिचर सकल रावनहि घेरि रहे अति आस ॥ ९८ ॥

भासपारायण, छब्बीसवाँ विश्राम

तेही निसि सीता पहिं जाई । त्रिजटा कहि सब कथा सुनाई ॥
 सिर भुज वाढ़ि सुनत रिपु केरी । सीता उर भइ त्रास घनेरी ॥
 मुख मलीन उपजी मन चिंता । त्रिजटा सन बोली तब सीता ॥
 होइहि कहा कहसि किन माता । केहि विधि मरिहि विख दुखदाता
 रघुपति सर सिर कटेहुँ न मरई । विधि विपरीत चरित सब करई ॥
 मोर अभाग्य जि आवत ओही । जेहिं हौं हरि पद कमल विछोही
 जेहिं कृत कपट कनक मृग झूठा । अजहुँ सो दैव मोहि पर रूठा ॥
 जेहिं विधि मोहि दुख दुसह सहाए । लछिमन कहुँ कटु वचन कहाए
 रघुपति विरह सविष सर भारी । तकि तकि मार बार बहु मारी ॥
 ऐसेहुँ दुख जो राख मम प्राना । सोइ विधि ताहि जि आव न आना
 तहु विधि कर बिलाप जानकी । करि करि सुरति कृपानिधान की
 तहु त्रिजटा सुनु राजकुमारी । उर सर लागत मरइ सुरारी ॥
 भु ताते उर हतइ न तेही । एहि के हृदयँ बसति बैदेही ॥
 ०—एहि के हृदयँ बस जानकी जानकी उर मम वास है ।
 मम उदर भुअन अनेक लागत बान सब कर नास है ॥
 सुनि वचन हरष विपाद मन अति देखि पुनि त्रिजटाँ कहा ।
 अब मरिहि रिपु एहि विधि सुनहि सुंदरि तजहि संसय महा ॥
 काटत सिर होइहि विकल छुटि जाइहि तव ध्यान ।
 तव रावनहि हृदय महुँ मरिहहि रामु सुजान ॥९९॥
 हे बहुत भाँति समुझाई । पुनि त्रिजटा निज भवन सिधाई ॥
 भाउ सुमिरि बैदेही । उपजी विरह बिथा अति तेही ॥
 मसिहि निंदति बहु भाँती । जुग सम भई सिराति नराती ॥

करति विलाप मनहिं मन भारी । राम विरहँ जानकी दुखारो ॥
जब अति भयउ विरह उर दाह । फरकेउ वाम नयन अरु बाह ॥
सगुन विचारि धरी मन धीरा । अब मिलिहहिं कृपाल रघुवीरा ॥
इहाँ अर्धनिसि रावनु जागा । निज सारधिसन ग्वीजन लागा ॥
सठ रनभूमि छड़ाइसि मोही । धिग धिग अधम मंदमति तोही ॥
तेहि पद गहि बहुधिधिसमुझावा । भोरु भएँ रथ चढ़ि पुनि धावा ॥
सुनि आगवनु दसानन केरा । कपि दल खरभर भयउ घनेरा ॥
जहँ तहँ भूधर घिटप उपारी । धाए कटकटाइ भट भारी ॥

छं०—धाए जो मर्कट बिकट भालु कराल कर भूधर धरा ।
अति कोप करहिं प्रहार मारत भजि चलें रजनीचरा ॥
बिचलाइ दल बलवंत कीसन्ह घेरि पुनि रावनु लियो ।
चहुँ दिसि चपेटन्हि मारि नखन्हि बिदारि तनुच्याकुल कियो ॥

दो०—देखि महा मर्कट प्रबल रावन कीन्ह विचार ।
अंतरहित होइ निमिप महुँ कृत माया विस्तार ॥ १०० ॥

छं०—जब कीन्ह तेहि पापंड । भर प्रगट जंतु प्रवंड ॥
बेताल भूत पिसाच । कर धरें धनु नाराच ॥ १ ॥
जोगिनि गहें करवाल । एक हाथ मनुज कपाल ॥
करि सद्य सोनित पान । नाचहिं करहिं बहु गान ॥ २ ॥
धरु मारु बोलहिं घोर । रहि पूरि धुनि चहुँ ओर ॥
मुस बाइ धावहिं खान । तब लगे कीस परान ॥ ३ ॥
जहें जाहिं मर्कट भागि । तहें बरन देखहिं आगि ॥
भए विकल वानर भालु । पुनि लाग वरपे चाल ॥ ४ ॥

जहँ तहँ थकित करि कीस । गर्जेउ बहुरि दससीस ॥
लछिमन कपीस समेत । भए सकल वीर अचेत ॥ ५ ॥

हा राम हा रघुनाथ । कहि सुभट मीजहि हाथ ॥
एहि विधि सकल बल तोरि । तेहि कीन्ह कपट बहोरि ॥ ६ ॥

प्रगटेसि विपुल हनुमान । घाए गहे पापान ॥
तिन्ह रामु घेरे जाइ । चहुँ दिसि वरूथ बनाइ ॥ ७ ॥

मारहु धरहु जनि जाइ । कटकटहि पूँछ उठाइ ॥
दहँ दिसि लँगूर विराज । तेहि मध्य कोसलराज ॥ ८ ॥

छं०—तेहि मध्य कोसलराज सुंदर स्याम तन सोभा लही ।
जनु इंद्रधनुष अनेक की वर वारि तुंग तमालही ॥

प्रभु देखि हरप विपाद उर सुर बदत जय जय करी ।
रघुवीर एकहि तीर कोपि निमेष महुँ माया हरी ॥ १ ॥

माया विगत कपि भालु हरपे विटप गिरि गहि सब फिरे ।
सर निकर छाड़े राम रावन बाहु सिर पुनि महि गिरे ॥

श्रीराम रावन समर चरित अनेक कल्प जो गावहीं ।
सत सेप सारद निगम कवि तेउ तदपि पार न पावहीं ॥ २ ॥

—ताके गुन गन कछु कहे जड़मति तुलसीदास ।
जिमि निज बल अनुरूप ते माछी उड़इ अकास ॥ १०१ (क) ॥

काटे सिर भुज वार बहु मरत न भट लंकेस ।
प्रभु क्रीड़त सुर सिद्ध मुनि व्याकुल देखि कलेस ॥ १०१ (ख) ॥

बढ़हि सीस समुदाई । जिमि प्रति लाभ लोभ अधिकाई ॥
रिपु श्रम भयउ विसेषा । राम विभीषन तन तन ने

उमा काल मर जाकीं ईछा । सो प्रभु जन कर प्रीति परीछा ॥
 सुनु सरवग्य चराचर नायक । प्रनतपाल मुर मुनि मुखदायक ॥
 नाभिकुंड पिपूष बस याकें । नाथ जिअत रावनु बल ताकें ॥
 सुनत विभीषन बचन कृपाला । हरपि गहे कर बान कराला ॥
 असुभ होन लागे तब नाना । रोवहिं खर सृकाल बहु स्वाना ॥
 बोलहिं खग जग आरति हेतू । प्रगट भए नभ जहँ तहँ केतू ॥
 दस दिसि दाह होन अति लागा । भयउ परब विनु रवि उपरागा ॥
 मंदोदरि उर कंपति भारी । प्रतिमा सखहिं नयन मग धारी ॥

छं०—प्रतिमा रुदहिं पविपात नभ अति घात बह डोलति मही ।
 धरपहिं बलाहक रुधिर कच रज असुभ अति सक फो कही ॥
 उतपात अमित विलोकि नभ सुर विकल बोलहिं जय जए ।
 सुर सभय जानि कृपाल रघुपति चाप सर जोरत भए ॥

दो०—खैचि सरासन श्रवन लागि छाड़े सर एकतीस ।

रघुनायक सायक चले मानहुँ काल फनीस ॥१०२॥

सायक एक नाभि सर सोपा । अपर लगे भुज सिर करि रोपा ॥
 लँ सिर बाहु चले नाराचा । सिर भुज हीन रुंड महि नाचा ॥
 धरनि धसइ धर धाय प्रचंडा । तब सरहति प्रभु कृत दुइ खंडा ॥
 गर्जेउ मरत घोर रव भारी । कहाँ रामु रन हतां पचारी ॥
 डोली भूमि गिरत दसकंधर । छुभित सिंधु सरि दिग्गज भूधर ॥
 धरनि परेउ द्वा खंड बढाई । चापि भालु मकट समुदाई ॥
 मंदोदरि आगें भुज सीसा । धरि सर चले जहाँ जगदीसा ॥
 प्रविसे सब निषंग महुँ जाई । देखि मुग्ध दंढर्म बजाई ॥

तासु तेज समान प्रभु आनन । हरषे देखि संभु चतुरानन ॥
जय जय धुनि पूरी ब्रह्मंडा । जय रघुबीर प्रबल भुजदंडा ॥
बरषहिं सुमन देव मुनि वृंदा । जय कृपाल जय जयति मुकुंदा ॥

छं०—जय कृपा कंद मुकुंद द्वंद हरन सरन सुखप्रद प्रभो ।
खल दल विदारन परम कारन कारुनीक सदा विभो ॥
सुर सुमन बरषहिं हरष संकुल बाज दुंदुभि गहगंही ।
संग्राम अंगन राम अंग अनंग बहु सोभा लही ॥
सिर जटा मुकुट प्रसून विच विच अति मनोहर राजही ।
जनु नीलगिरि पर तड़ित पटल समेत उडुगन भ्राजही ॥
भुजदंड सर कोदंड फेरत रुधिर कन तन अति बने ।
जनु रायमुनी तमाल पर वैठी विपुल सुख आपने ॥

दो०—कृपादृष्टि करि वृष्टि प्रभु अभय किए सुर वृंद ।

भालु कीस सब हरषे जय सुख धाम मुकुंद ॥१०३॥

पति सिर देखत मंदोदरी । मुरुछित विकल धरनि खसि परी ॥
जुबति वृंद रोवत उठि धाई । तेहि उठाइ रावन पहिं आई ॥
पति गति देखि ते करहिं पुकारा । छूटे कच नहिं बपुष संभारा ॥
उर ताड़ना करहिं विधि नाना । रोवत करहिं प्रताप बखाना ॥
तव बल नाथ डोल नित धरनी । तेज हीन पावक ससि तरनी ॥
सेष कमठ सहि सकहिं न भारा । सो तनु भूमि परेउ भरि छारा ॥
बरुन कुबेर सुरेस समीरा । रन सन्मुख धरि काहुँ न धीरा ॥
भुजबल जितेहु काल जमसाई । आजु परेहु अनाथ की नाई ॥
जगत विदित तुम्हारि प्रभुताई । सत परिजन बल बरनि न जाई ॥

राम विमुख अस हाल तुम्हारा । रहा न कोउ कुल रोवनिहारा ॥
 तव वस विधि प्रपंच सब नाथा । सभय दिसिप नित नावहिं माथा ॥
 अब तव सिर भुज जंबुक खाहीं । राम विमुख यह अनुचित नाहीं ॥
 काल विवसपति कहान माना । अग जग नाथु मनुज करि जाना ॥

छं०—जाग्यो मनुज करि दनुज कानन दहन पावक हरि स्वयं ।
 जेहि नमत सिव ब्रह्मादि सुर पिय भजेहु नहिं करुनामयं ॥
 आजन्म ते परद्रोह रत पापौधमय तव तनु अयं ।
 तुम्हहू दियो निज धाम राम नमामि ब्रह्म निरामयं ॥

दो०—अहह नाथ रघुनाथ सम कृपासिंधु नहिं आन ।
 जोगि वृंद दुर्लभ गति तोहि दीन्हि भगवान ॥१०४॥

मंदोदरी वचन मुनि काना । सुर मुनि सिद्ध सबन्हि सुख माना ॥
 अज महेस नारद सनकादी । जे मुनिवर परमारथवादी ॥
 भरिलोचन रघुपतिहि निहारी । प्रेम मगन सब भए सुखारी ॥
 रुदन करत देखीं सब नारी । गयउ विभीषनु मन दुख भारी ॥
 वंधु दसा विलोकि दुख कीन्हा । तव प्रभु अनुजहि आयसु दीन्हा ॥
 लछिमन तेहि बहु विधिसमुझायो । बहुरि विभीषन प्रभु पहिं आयो ॥
 कृपादृष्टि प्रभु ताहि विलोका । करहु क्रिया परिहरि सध सोका ॥
 कीन्हि क्रिया प्रभु आयसु मानी । विधिवत देस काल जियै जानी ॥

दो०—मंदोदरी आदि सब देइ तिलांजलि ताहि ।
 भवन गंडै रघुपति गुन गन बरनत मन माहि ॥१०५॥

आइ विभीषन पुनि सिरु नायो । कृपासिंधु तव अनुज बोलायो ॥
 तुम्ह कपीस अंगद नल नीला । जामवंत मारुति नयसीला ॥

सब मिलि जाहु बिभीषन साथ। सारेहु तिलक कहेउ रघुनाथ
 पिता बचन मैं नगर न आवउँ। आपु सरिस कपि अनुज पठ
 तुरत चले कपिसुनि प्रभु बचना। कीन्ही जाइ तिलक की रचन
 सादर सिंहासन वैठारी। तिलक सारि अस्तुति अनुसारी
 जोरि पानि सबहीं सिर नाए। सहित बिभीषन प्रभु पहिं आए
 तब रघुबीर बोलि कपि लीन्हे। कहि प्रिय बचन सुखी सब कीन्हे।

छं०—किए सुखी कहि बानी सुधा सम बल तुम्हारें रिपु हयो ।
 पायो बिभीषन राज तिहुँ पुर जसु तुम्हारो नित नयो ॥
 मोहि सहित सुभ कीरति तुम्हारी परम प्रीति जो गाइहैं ।
 संसार सिंधु अपार पार प्रयास बिनु नर पाइहैं ॥

दो०—प्रभु के बचन श्रवन सुनि नहिं अघाहिं कपि पुंज ।
 बार बार सिर नावहिं गहहिं सकल पद कंज ॥१०६॥

पुनि प्रभु बोलि लियउ हनुमाना। लंका जाहु कहेउ भगवाना ॥
 समाचार जानकिहि सुनावहु। तासु कुसल लै तुम्ह चलि आवहु ॥
 तब हनुमंत नगर महुँ आए। सुनि निसिचरी निसाचर धाए ॥
 बहु प्रकार तिन्ह पूजा कीन्ही। जनकसुता देखाइ पुनि दीन्ही ॥
 दूरिहि ते प्रनाम कपि कीन्हा। रघुपति दूत जानकीं चीन्हा ॥
 कहहु तात प्रभु कृपानिकेता। कुसल अनुज कपि सेन समेता ॥
 सब विधिकुसल कोसलाधीसा। मातु समर जीत्यो दससीसा ॥
 बिचल राजु बिभीषन पायो। सुनि कपि बचन हरष उर छायो ॥

—अति हरष मन तन पुलक लोचन सजल कह पुनि पुनि रमा ।
 का देउँ तोहि त्रैलोक महुँ कपि सिन्हा ॥

सुनु मातु मै पायो अखिल जग राजु आजु न संसयं ।
रन जीति रिपुदल बंधु जुत पस्यामि राममनामयं ॥

दो०—सुनु सुत सदगुन सकल तव हृदयें वसहुँ हनुमंत ।
सानुकूल कोसलपति रहहुँ समेत अनंत ॥१०७७॥

अब सोइ जतन करहु तुम्ह ताता । देखीं नयन स्याम मृदु गाता ॥
तब हनुमान राम पहिं जाई । जनकमुता कै कुसल सुनाई ॥
सुनि संदेसु भानुकूलभूपन । बोलि लिए जुवराज विभीषन ॥
मारुतसुत के संग सिधावहु । सादर जनकसुतहि लै आवहु ॥
तुरतहिं सकल गए जहँ सीता । सेवहिं सब निसिचरीं विनीता ॥
बेगि विभीषन तिन्हहि सिखायो ॥ तिन्ह बहु विधि मञ्जन करवायो ॥
बहु प्रकार भूपन पहिराए । सित्रिका रुचिर साजि पुनिल्याए ॥
ता पर हरपि चढ़ी बँदेही । सुमिरि राम सुखधाम सनेही ॥
बैतपानि रच्छक चहु पासा । चले सकल मन परम हुलासा ॥
देखन भालु कीस सब आए । रच्छक कोपि निवारन धाए ॥
कह रघुबीर कहा मम मानहु । सीतहि सखा पयादें आनहु ॥
देखहुँ कपि जननी की नाई । बिहसि कहा रघुनाथ गोसाई ॥
सुनि प्रभु वचन भालु कपि हरये । नभ ते सुरन्ह सुमन बहु धरये ॥
सीता प्रथम अनल महुँ राखी । प्रगट कीन्हि चह अंतर साखी ॥

दो०—तेहि कारन करुनानिधि बहे कछुक दुर्बाद ।
सुनत जातुधानी सब लागी करै विपाद ॥१०८१॥

प्रभु के वचन सीस धरि सीता । बोली मन क्रम वचन पुनीता ॥
लछिमन होहु धरम के नेगी । पावक प्रगट करहु तुम्ह बेगी ॥

सुनि लछिमन सीता कै बानी । बिरह विवेक धरम निति सानी ॥
 लोचन सजल जोरि कर दोऊ । प्रभु सन कछु कहि सकत न ओऊ
 देखि राम रुख लछिमन धाए । पावक प्रगटि काठ बहु लाए ॥
 पावक प्रवल देखि वैदेही । हृदयँ हरप नहिँ भय कछु तेही ॥
 जौँ मन बच क्रम मम उर माहीं । तजि रघुवीर आन गति नाहीं ॥
 तौ कृसानु सब कै गति जाना । मो कहूँ होउ श्रीखंड समाना ॥

छं०—श्रीखंड सम पावक प्रवेस कियो सुमिरि प्रभु मैथिली ।
 जय कोसलेस महेस बंदित चरन रति अति निर्मली ॥
 प्रतिबिंब अरु लौकिक कलंक प्रचंड पावक महूँ जरे ।
 प्रभु चरित काहुँ न लखे नभ सुर सिद्ध मुनि देखहिँ खरे ॥ १ ॥
 धरि रूप पावक पानि गहि श्री सत्य श्रुति जग विदित जो ।
 जिमि छीरसागर इंदिरा रामहि समर्पी आनि सो ॥
 सो राम वाम विभाग राजति रूचर अति सोभा भली ।
 नव नील नीरज निकट मानहुँ कनक पंकज की कली ॥ २ ॥

दो०—वरपहिँ सुमन हरषि सुर वाजहिँ गगन निसान ।
 गावहिँ किंनर मुरवधू नाचहिँ चढ़ीँ विमान ॥ १०९(क) ॥
 जनकसुता समेन प्रभु सोभा अमित अपार ।
 देखि भालु कपि हरषे जय रघुपति सुख सार ॥ १०९(ख) ॥
 तव रघुपति अनुसासन पाई । मातलि चलेउ चरन सिरु नाई ॥
 आए देव सदा स्वारथी । बचन कहहिँ जनु परमारथी ॥
 दीन बंधु दयाल रघुराया । देव कीन्हि देवन्ह पर दाया ॥
 बिख द्रोह रत यह खल कामी । निज अघ गयउ कुमारगामी ॥

तुम्ह सम रूप ब्रह्म अत्रिनासी । सदा एकरस सहज उदासी ॥
 अकल अगुन अज अनघ अनामय । अजित अमोवशक्ति करुनामय
 मीन कमठ सूकर नरहती । वामन परमुराम वषु धरी ॥
 जव जव नाथ सुरन्ह दुखु पायो । नाना तनु धरि तुम्हई नसायो ॥
 यह खल मलिन सदा सुरद्रोही । काम लोभ मद रत अति कोही ॥
 अधम सिरोमनि तव पद पावा । यह हमरें मन बिसमय आवा ॥
 हम देवता परम अधिकारी । स्वारथ रत प्रभु भगति बिसारी ॥
 भव प्रवाहँ संतत हम परे । अब प्रभु पाहिसरन अनुसरे ॥

दो०—करि बिनती सुर सिद्ध सब रहे जहें तहें कर जोरि ।

अति सप्रेम तन पुलकि विधि अस्तुति करत बहोरि ॥११०॥

छं०—जयराम सदा सुख धाम हरे । रघुनायक सायक चाप धरे ॥
 भय चारन दारन सिंह प्रभो । गुन सागर नागर नाथ विभो ॥
 तन काम अनेक अनूपछरी । गुन गावत सिद्ध मुनींद्र कबी ॥
 जसु पावन रावन नाग महा । खगनाथ जथा करि कोप गहा ॥
 जन रंजन भंजन सोक भयं । गतक्रोध सदा प्रभु चोषमयं ॥
 अवतार उदार अपार गुनं । महि भार विभंजन ग्यानघनं ॥
 अज व्यापकमेकमनादि सदा । करुनाकर राम नमामि मुदा ॥
 रघुवंस विभूषन दूपन हा । कृत मूप विभीषन दीन रहा ॥
 गुन ग्यान निधान अमान अजं । नित राम नमामि विभुं विरजं ॥
 भुजदंड प्रचंड प्रताप धलं । खल वृद्ध निकंद महा कुसलं ॥
 विनु कारन दीन दयाल हितं । छवि धाम नमामि रमा सहितं ॥
 भव तारन कारन काज परे । मन संभव दारुन दोष हरं ॥

सर चाप मनोहर त्रोन धरं । जलज्जारुन लोचन भूपवरं
 सुख मंदिर सुंदर श्रीरमनं । मद मार मुधा ममता समनं
 अनवद्य अखंड न गोचर गो । सबरूप सदा सब होइ न गो
 इति वेद वदंति न दंत कथा । रवि आतप भिन्नमभिन्न जथा ।
 कृतकृत्य विभो सब बानर ए । निरखंति तवानन सादर ए ॥
 धिग जीवन देव सरीर हरे । तव भक्ति बिना भव भूलि परे ॥
 अब दीनदयाल दया करिए । मति मोरि बिभेदकरी हरिए ॥
 जेहि ते बिपरीत क्रिया करिए । दुख सो सुख मानि सुखी चरिए ॥
 खल खंडन मंडन रम्य छमा । पद पंकज सेवित संभु उमा ॥
 नृप नायक दे वरदानमिदं । चरनांबुज प्रेम सदा सुभदं ॥

दो०—विनय कीन्हि चतुरानन प्रेम पुलक अति गात ।
 सोभासिंधु विलोकत लोचन नहीं अघात ॥१११॥

तेहि अवसर दसरथ तहँ आए । तनय बिलोकि नयन जल छाए ॥
 अनुज सहित प्रभु वंदन कीन्हा । आसिरवाद पिताँ तव दीन्हा ॥
 तात सकल तव पुन्य प्रभाऊ । जीत्यों अजय निसाचर राऊ ॥
 सुनि सुत बचन प्रीति अति बाढ़ी । नयन सलिल रोमावलि ठाढ़ी ॥
 रघुपति प्रथम प्रेम अनुमाना । चितइ पितहि दीन्हेउ दृढ़ ग्याना ॥
 ताते उमा मोच्छ नहिं पायो । दसरथ भेद भगति मन लायो ॥
 सगुनोपासक मोच्छ न लेहीं । तिन्ह कहूँ राम भगति निज देहीं ॥
 बार बार करि प्रभुहि प्रनामा । दसरथ हरषि गए सुरधामा ॥

०—अनुज जानकी सहित प्रभु कुसल कोसलाधीस ।
 सोभा देखि हरषि मन अस्तुति कर सर ईश ॥११२॥

६०-जय राम सोभा धाम । दायक प्रनत विश्राम ॥
 धृत श्रोन वर सर चाप । भुजदंड प्रवल प्रताप ॥
 जय दूपनारि खरारि । मर्दन निसाचर धारि ॥
 यह दुष्ट मारेउ नाथ । भए देव सकल सनाथ ॥
 जय हरन घरनी भार । महिमा उदार अपार ॥
 जय रावनारि कृपाल । किए जातुघान विहाल ॥
 लंकेस अति बल गर्व । किए यस्य सुर गंधर्व ॥
 मुनि सिद्ध नर स्वग नाग । हठि पंथ सब कै लाग ॥
 परद्रोह रत अति दुष्ट । पायो सो फलु पापिष्ट ॥
 अथ सुनहु दीन दयाल । राजीव नयन विसाल ॥
 मोहि रहा अति अभिमान । नहि कोउ मोहि समान ॥
 अथ देखि प्रभु पद कंज । गत मान प्रद दुखपुंज ॥
 कोउ ब्रह्म निर्गुन ध्याव । अच्यकजेहि श्रुति गाव ॥
 मोहि भाव फोसल भूप । श्रीराम सगुन सरूप ॥
 वैदेहि अनुज समेत । मम हृदयें करहु निकेत ॥
 मोहि जानिए निज दास । दे भक्ति रमानिवास ॥

छं०-दे भक्ति रमानिवास प्राप्त हरन सरन सुखदायकं ।
 सुख धाम राम नमामि काम अनेक छवि रघुनायकं ॥
 सुर वृंद रंजन द्वंद भंजन मनुगतनु अतुलितवलं ।
 ब्रह्मादि संकर सेव्य राम नमामि करुना कोमलं ॥

दो०-अथ करि कृपा बिलोकि मोहि आयसु देहु कृपाल ।
 काह करौ सुनि प्रिय वचन बोले दीनदयाल ॥११३॥
 सुनु सुरपति कपि भालु हमारे । परे भूमि निसिचरन्हि जे मारे ॥

मम हित लागि तजे इन्ह प्राना । सकल जिआउ सुरेस सुजाना ॥
 सुनु खगेस प्रभु कै यह बानी । अति अगाध जानहिं मुनि ग्यानी
 प्रभु सक त्रिभुअन मारि जिआई । केवल सक्रहि दीन्ह बड़ाई ॥
 सुधा बरपि कपि भालु जिआए । हरपि उठे सब प्रभु पहिं आए ॥
 सुधावृष्टि भै दुहु दल उपर । जिए भालु कपि नहिं रजनीचर ॥
 रामाकार भए तिन्ह के मन । मुक्त भए छूटे भवं बंधन ॥
 सुर अंसिक सब कपि अरु रीछा । जिए सकल रघुपति कीं ईछा ॥
 राम सरिस को दीन हितकारी । कीन्हे मुकुव निसाचर झारी ॥
 खल मल धाम काम रत रावन । गति पाई जो मुनिवर पाव न ॥

दो०—सुमन बरपि सब सुर चले चदि चदि रुचिर बिमान ।

देखि सुअवसर प्रभु पहिं आयउ संभु सुजान ॥ ११४(क) ॥

परम प्रीति कर जोरि जुग नलिन नयन भरि वारि ।

पुलकित तन गदगद गिराँ चिनय करत त्रिपुरारि ॥ ११४(ख) ॥

छं०—मामभिरक्षय रघुकुल नायक । धृत बर चाप रुचिर कर सायक ॥

मोह महा घन पटल प्रभंजन । संसय विपिन अनल सुर रंजन ॥

अगुन सगुन गुन मंदिर सुंदर । भ्रम तम प्रबल प्रताप दिवाकर ॥

काम क्रोध मद गज पंचानन । बसहु निरंतर जन मन कानन ॥

विषय मनोरथ पुंज कंज बन । प्रवः तुषार उदार पार मन ॥

भव वारिधि मंदर परमं दर । वारय तारय संसृति दुस्तर ॥

स्याम गात राजीव बिलोचन । दीन वंधु प्रनतारति मोचन ॥

अनुज जानकी सहित निरंतर । बसहु राम नृप मम उर अंतर ॥

मुनि रंजन महि मंडल मंडन । तुलसिदास प्रभु त्रास विखंडन ॥

दो०-नाथ जवहि कोसलपुरी होइहि तिलक तुम्हार ।

कृपासिंधु मैं आजव देखन चरित उदार ॥११५॥

करि विनती जय संभु सिधाए । तव प्रभु निकट विभीषनु आए ॥

नाइ चरन सिरु कह मृदु बानी । विनय सुनहु प्रभु सारंग पानी ॥

सकुल सदल प्रभु रावन मारथो । पावन जस त्रिभुवन विस्तारथो ॥

दीन मलीन हीन मति जाती । मो पर कृपा कीन्हि बहु भाँती ॥

अब जन गृह पुनीत प्रभु कीजे । मज्जनु करिअ समर श्रम छीजे ॥

देखि कोस मंदिर संपदा । देहु कृपाल कपिन्ह कहुँ मुदा ॥

सब विधिनाथ मोहि अपनाइअ । पुनि मोहि सहित अवधपुर जाअ ॥

सुनत वचन मृदु दीनदयाला । सजल भए द्रौ नयन विसाला ॥

दो०-तोर कोस एह मोर सब सत्य वचन सुनु प्रात ।

भरत दसा सुमिरत मोहि निमित्त कल्प सम जात ॥११६(क)॥

तापस घेप गात कस जपत निरंतर मोहि ।

देखी बेगि सो जतनु करु सखा निहोरउँ तोहि ॥११६(ख)॥

धीनेँ अबधि जाउँ जौँ जिअत न पावउँ बीर ।

सुमिरत अनुज प्रीति प्रभु पुनि पुनि पुलक सरीर ॥११६(ग)॥

करेहु कल्प भरि राजु तुम्ह मोहि सुमिरेहु मन माहि ।

पुनि मम घाम पाइहहु जहाँ संत सब जाहिँ ॥११६(घ)॥

सुनत विभीषन वचन राम के । हरपि गहे पद कृपाधाम के ॥

बानर भालु सकल हरपाने । गहि प्रभु पद गुन विमल बखाने ॥

बहुरि विभीषन भवन सिधाथो । मनि गन वसन विमान भरागो ॥

लँ पुष्पक प्रभु आगोँ राखा । हँसि करि कृपासिंधु तब भाषा ॥

चढ़ि विमान सुनु सखा विभीषन । गगन जाइ बरपहु पट भूपन ॥
 नभ पर जाइ विभीषन तबही । बरपि दिए मनि अंबर सबही ॥
 जोइ जोइ मन भावइ सोइ लेहीं । मनि मुख मेलि डारि कपि देहीं ॥
 हँसे रामु श्री अनुज समेता । परम कौतुकी कृपा निकेता ॥

दो०—मुनि जेहि ध्यान न पावहि नेति नेति कह वेद ।

कृपासिंधु सोइ कपिन्ह सन करत अनेक विनोद ॥११७(क)॥

उमा जोग जप दान तप नाना मख व्रत नेम ।

राम कृपा नहिं करहिं तसि जसि निष्केवल प्रेम ॥११७(ख)॥

भालु कपिन्ह पट भूपन पाए । पहिरि पहिरि रघुपति पहिं आए
 जाना जिनस देखि सब कीसा । पुनि पुनि हँसत कोसलाधीसा ॥
 चितइ सबन्हि पर कीन्ही दाया । बोले मृदुल वचन रघुराया ॥
 तुम्हरे बल मैं रावनु मारयो । तिलक विभीषन कहूँ पुनि सारयो
 निज निज गृह अब तुम्ह सब जाहू । सुमिरेहु मोहि डरपहु जनि काहू
 सुनत वचन प्रेमाकुल बानर । जोरि पानि बोले सब सादर ॥
 प्रभु जोइ कहहु तुम्हहि सब सोहा । हमरे होत वचन सुनि मोहा ॥
 दीन जानि कपि किए सनाथा । तुम्ह त्रैलोक ईस रघुनाथा ॥
 सुनि प्रभु वचन लाज हम मरहीं । मसक कहूँ खगपति हित करहीं ॥
 देखि राम रुख बानर रीछा । प्रेम मगन नहिं गृह कै ईछा ॥

दो०—प्रभु प्रेरित कपि भालु सब राम रूप उर राखि ।

हरष विषाद सहित चले विनय विविध विधि भापि ॥११८(क)॥

कपिपति नील रीछपति अंगद नल हनुमान ।

सहित विभीषन अपर जे जूथप कपि बलवान ॥११८(ख)॥

कहि न सकहि कछु प्रेम बस भरि भरि लोचन बारि ।

सन्मुख चितवहि राम तन नयन निमेष निवारि ॥११८(ग)॥

अतिसय प्रीति देखि रघुराई । लीन्हें सकल विमान चढ़ाई ॥
 मन महुँ विप्र चरन सिरु नायो । उत्तर दिशिहि विमान चलायो ॥
 चलत विमान कोलाहल होई । जय रघुवीर कहइ सबु कोई ॥
 सिंहासन अति उच्च मनोहर । श्री समेत प्रभु बँठे ता पर ॥
 राजत राम सहित भामिनी । मेरु सृंग जनु घन दामिनी ॥
 रुचिर विमानु चलेउ अति आतुर । कीन्ही सुमन वृष्टि हरपे सुर ॥
 परमसुखद चलि त्रिविध ब्यारो । सागर सर सरि निर्मल वारी ॥
 सगुन होहि सुंदर चहुँ पासा । मन प्रसन्न निर्मल नभ आसा ॥
 कह रघुवीर देखु रन सीता । लछिमन इहाँ हत्यो इंद्रजीता ॥
 हनुमान अंगद के मारे । रन महि परे निसाचर भारे ॥
 कुंभकरन रावन द्वौ भाई । इहाँ हते सुर मुनि दुखदाई ॥

दो०—इहाँ सेतु पाँथ्यो अरु थापेउं सिव सुम्न घाम ।

सीता सहित कृपानिधि संभुहि कीन्ह प्रनाम ॥११९(क)॥

जहँ जहँ कृपासिंधु बन कीन्ह वास विद्याम ।

सकल देखाए जानकिहि कहे सबहि के नाम ॥११९(ख)॥

तुरत विमान तहाँ चलि आवा । दंडक बन जहँ परम गुहावा ॥
 कुंभजादि मुनिनायक नाना । गए रामु सब के अस्थाना ॥
 सकल रिपिन्ह सन पाइ असीमा । चित्रकूट आए जगदीसा ॥
 तहँ करि मुनिन्ह केर संतोषा । चला विमानु तहाँ ते चाखा ॥
 बहुरि राम जानकिहि देखाई । जमुना कलि मल हरनि ॥

पुनि देखी सुरमगी पुनीता । राम कहा प्रनाम करु सीता ॥
 तीरथपति पुनि देखु प्रयागा । निरखत जन्म कोटि अघ भागा ॥
 देखु परम पावनि पुनि वेनी । हरनि सो क हरि लोक निसेनी ॥
 पुनि देखु अवधपुरी अति पावनि । त्रिविध ताप भव रोग नसावनि ॥

दो०—सीता सहित अवध कहँ क्रीन्ह कृपाल प्रनाम ।

सजल नयन तन पुलकित पुनि पुनि हरपित राम ॥ १२० (क) ॥

पुनि प्रभु आइ त्रिवेनी हरपिन मज्जनु क्रीन्ह ।

कपिन्ह सहित विप्रन्ह कहँ दान त्रिविध विधि दीन्ह ॥ १२० (ख) ॥

प्रभु हनुमंतहि कहा बुझाई । धरि वटु रूप अवधपुर जाई ॥
 भरतहि कुसल हमारि सुनाएहु । समाचार लै तुम्ह चलि आएहु ॥
 तुरत पवनसुत गवनत भयऊ । तव प्रभु भरद्वाज पहिं गयऊ ॥
 नाना विधि मुनि पूजा कीन्ही । अस्तुति करि पुनि आसिप दीन्ही ॥
 मुनि पद बंदि जुगल करजारी । चढ़ि विमान प्रभु चले बहोरी ॥
 इहाँ निपाद सुना प्रभु आए । नाव नाव कहँ लोग बोलाए ॥
 सुरसरि नाधि जान तव आयो । उतरेउ तट प्रभु आयसु पायो ॥
 तव सीताँ पूजी सुरसरी । बहु प्रकार पुनि चरनन्हि परी ॥
 दीन्हि असीस हरपि मन गंगा । सुंदरि तव अहिवात अभंगा ॥
 सुनत गुहा धायउ प्रेमाकुल । आयउ निकट परम सुख संकुल ॥
 प्रभुहि सहित विलोकि बँदेही । परेउ अवनितन सुधिनहिं तेही ॥
 प्रीति परम त्रिलोकि रघुराई । हरपि उठाइ लियो उर लाई ॥

छं०—लियो हृदयँ लाइ कृपा निधान सुजान रायँ रमापती ।

बैठारि परम समीप बूझी कुसल सो कर वीनती ॥

अथ कुसल पद पंक्तज विलोकि विरंचि संकर सेव्य जे ।
 सुख धाम पूरनकाम राम नमामि राम नमामि ते ॥ १ ॥
 सद्य भौंति अधम निपाद सो हरि भरत ज्यो उर लाइयो ।
 मतिमंद तुलसीदास सो प्रभु मोह बस बिसराइयो ॥
 यह रावनादि चरित्र पावन राम पद रतिप्रदे सदा ।
 कामादिहर विग्यान कर सुर सिद्ध मुनि गावहि मुदा ॥ २ ॥

दो०—समर विजय रघुबीर के चरित जे सुनहिं सुजान ।
 विजय विचेक बिभूति नित तिन्हहि देहिं भगवान ॥१२१(क)॥
 यह कलिफत्रल मलायतन मन करि देखु विचार ।
 श्रीरघुनाथ नाम तजि नाहिन आन अघार ॥१२१(ख)॥

मासपारायण, सत्ताईसवाँ विश्राम



इति श्रीमद्रामचरितमानसे सकलकलिकलुपविध्वंसने

पद्यः सोपानः समाप्तः ।

(लङ्काकाण्ड समाप्त)



प्रभुका ऐश्वर्य



अमित रूप प्रगटे तेहि काला ।
जथाजोग मिले सबहि कृपाला ॥

श्रीरामेशान नमः

श्रीजानकीवल्लभो विजयते

श्रीरामचरितमानस

सप्तम सोपान

(उत्तरकाण्ड)

श्लोक

कैकीकण्ठाभनीलं सुरवरविलसद्विप्रपादाब्जचिह्नं
शोभाढ्यं पीतवस्त्रं सरसिजनयनं सर्वदा सुप्रसन्नम् ।
पाणौ नाराचचारुं कपिनिकरयुतं बन्धुना सेव्यमानं
नौमीढ्यं जानकीशं रघुवरमनिशं पुष्पकारूढरामम् ॥ १ ॥
कोसलेन्द्रपदकञ्जमञ्जुलौ कोमलावजमहेशवन्दितौ ।
जानकीकरसरोजलालितौ चिन्तकस्य मनमृङ्गसङ्गिनौ ॥ २ ॥
कुन्दइन्दुदरगौरसुन्दरं अम्बिकापतिमभीष्टसिद्धिदम् ।
कारुणीककलकञ्जलोचनं नौमि शङ्करमनङ्गमोचनम् ॥ ३ ॥

* रामचरितमानस *

दो०—रहा एक दिन अवधि कर अति आरत पुर लोग ।
 जहँ तहँ सोचहिं नारि नर कस तन राम वियोग ॥
 सगुन होहिं सुंदर सकल मन प्रसन्न सब केर ।
 प्रभु आगवन जनाव जनु नगर रम्य चहुँ फेर ॥
 कौसल्यादि मातु सब मन अनंद अस होइ ।
 आयउ प्रभु श्री अनुज जुत कहन चहत अत्र कोइ ॥
 भरत नयन भुज दच्छिन फरकत वारहिं वार ।
 जानि सगुन मन हरष अति लागे करन विचार ॥

रहेउ एक दिन अवधि अधारा । समुझत मन दुख भयउ अपारा ॥
 कारन कवन नाथ नहिं आयउ । जानि कुटिल किधौं मोहि विसरायउ ॥
 अहह धन्य लछिमन बड़भागी । राम पदारविंदु अनुरागी ।
 कपटी कुटिल मोहि प्रभु चीन्हा । ताते नाथ संग नहिं लीन्हा ॥
 तौ करनी समुझै प्रभु मोरी । नहिं निस्तार कल्प सत कोरी ॥
 न अवगुन प्रभु मानन काऊ । दीन बंधु अति मृदुल सुभाऊ ॥
 रे जियँ भरोस दृढ़ सोई । मिलिहहिं राम सगुन सुभ होई ॥
 न अवधि रहहिं जौं प्रांना । अधम कवन जग मोहि समाना ॥

—राम विरह सागर महँ भरत मगन मन होत ।
 विप्र रूप धरि पवनसुत आइ गयउ जनु पोत ॥१(क)॥
 बैठे देखि कुसासन जटा मुकुट कस गात ।
 राम राम रघुपति जपत स्रवत नयन जलजात ॥१(ख)॥

इन्मान अति हरषेउ । पुलक गात लोचन जल वरषेउ ॥
 बहुत भाँति सुख मानी । बोलेउ श्रवन सुधा सम बानी ॥

जासु विगहँ सोचहु दिन राती । रटहु निरंतर गुन गन पाती ॥
 रघुकूल तिलक मुजन मुखदाना । आयउ कुसल देव मुनि वाता ॥
 रिपु रन जीति मुजम मुर गावत । सीता सहित अनुज प्रभु आवता ॥
 सुनत वचन विसरे सब दूखा । उपावंत जिमि पाइ पिपुषा ॥
 को तुम्ह तात कहाँ ते आए । मोहि परम प्रिय वचन सुनाए ॥
 मारुत मुत मैं कपि हनुमाना । नाम मोर सुनु कृपानिधाना ॥
 दीनबंधु रघुपति कर किंकर । सुनत भरत भंटेउ उठि सादर ॥
 मिलत प्रेम नहि हृदयँ समाता । नयन स्रवत जल पुलकिन गाता ॥
 कपि तव दरस सकल दुख धोते । मिले आजु मांहि राम पिरीते ॥
 धार धार धूझी कुसल्लता । तो कहँ देउँ काह सुनु आता ॥
 एहि संदेश सरिस जग माहीं । करि विचार देखेउँ कलु नाही ॥
 नाहिन तात उरिन मैं तोही । अब प्रभु चरित सुनायहु मोही ॥
 तब हनुमंत नाइ पद माथा । कहे सकल रघुपति गुन गाथा ॥
 कहु कपि कवहुँ कृपाल गोसाई । सुमिरहिं मोहि दास की नाई ॥

छं०—निज दास ज्यो रघुवंसभूपन कवहुँ मम सुमिरन करघो ।
 सुनि भरत वचन विनीत अति कपि पुलकि तन चरनन्हि परघो ॥
 रघुवीर निज मुख जासु गुन गन कहत अग जग नाथ जो ।
 काहे न होइ विनीत परम पुनीत सदगुन सिधु सो ॥

दो०—राम प्रान श्रिय नाथ तुम्ह सत्य वचन मम तात ।

पुनि पुनि मिलत भरत सुनि हरप न हृदयँ समात ॥२(क)॥

सो०—भरत चरन सिरु नाइ तुरित गयउ कपि राम पहि ।

कही कुसल सब जाइ हरपि चलेउ प्रभु जान चदि ॥२(ख)

हरपि भरत कोसलपुर आए। समाचार सब गुरहि सुनाए ॥
 पुनि मंदिर महँ बात जनाई। आवत नगर कुसल रघुराई ॥
 सुनत सकल जननीं उठि धाई। कहि प्रभु कुसल भरत समुझाई ॥
 समाचार पुरवासिन्ह पाए। नर अरु नारि हरपि सब धाए ॥
 दधि दुर्वा रोचन फल फूला। नव तुलसी दल मंगल मूला ॥
 भरि भरि हेम थार भामिनी। गावत चलि सिंधुरगामिनी ॥
 जे जैसेहिँ तैसेहिँ उठि धावहिँ। बाल वृद्ध कहँ संग न लावहिँ ॥
 एक एकन्ह कहँ बूझहिँ भाई। तुम्ह देखे दयाल रघुराई ॥
 अवधपुरी प्रभु आवत जानी। भई सकल सोभा कै खानी ॥
 वहइ सुहावन त्रिविध समीरा। भइ सरजू अति निर्मल नीरा ॥

दो०—हरपित गुर परिजन अनुज भूसुर वृंद समेत ।

चले भरत मन प्रेम अति सन्मुख कृपानिकेत ॥३(क)॥

बहुतक चढ़ी अटारिन्ह निरखहिँ गगन विमान ।

देखि मवुर सुर हरषिन करहिँ सुमंगल गान ॥३(ख)॥

राका ससि रघुपति पुर सिंधु देखि हरषान ।

वढ़यो कोलाहल करत जनु नारि तरंग समान ॥३(ग)॥

इहाँ भानु कुल कमल दिवाकर । कपिन्ह देखावत नगर मनोहर ॥
 सुनु कपीस अंगद लंकेसा । पावन पुरी रुचिर यह देसा ॥
 जद्यपि सब बैकुंठ बखाना । वेद पुरान विदित जगु जाना ॥
 अवधपुरी सम प्रिय नहिँ सोऊ । यह प्रसंग जानइ कोउ कोऊ ॥
 जन्मभूमि मम पुरी सुहावनि । उत्तर दिसि बह सरजू पावनि ॥
 जा मज्जन ते बिनहिँ प्रयासा । मम समीप नर पावहिँ वासा ॥

अति प्रिय मोहि इहाँ के वासी । मम धामदा पुरी सुख रासी ॥
हरपे सब कपि सुनि प्रभु बानी । धन्य अवध जो राम बखानी ॥

दो०—आयत देखि लोग सब कृपासिंधु भगवान ।

नगर निकट प्रभु प्रेरेउ उतरेउ भूमि विमान ॥ ४ (क) ॥

उतरि कहेउ प्रभु पुष्पकहि तुम्ह कुचेर पहि जाहु ।

प्रेरित राम चलेउ सो हरपु विरहु अति ताहु ॥ ४ (ख) ॥

आए भरत संग सब लोग । कृस तन श्रीरघुवीर वियोगा ॥

धामदेव बसिष्ट मुनिनायक । देखे प्रभु महि धरि धनु सायक ॥

धाइ धरे गुर चरन सरोरुह । अनुज सहित अति पुलक तनोरुह ॥

भेंटि कुसल घृषी मुनिराया । हमरें कुसल तुम्हारिहिं दाया ॥

सकल द्विजन्ह मिलि नायउ माथा । धर्म धुरंधर रघुकुलनाथा ॥

गहं भारत पुनि प्रभु पद पंकज । नमत जिन्हहि सुर मुनि संकर अज

परे भूमि नहिं उठत उठाए । वर करि कृपासिंधु उर लाए ॥

स्यामल गात रोम भए ठाढ़े । नव राजीव नयन जल चाढ़े ॥

दो०—राजीव लोचन स्रवत जल तन ललित पुटकावलि बनी ।

अति प्रेम हृदयें लगाइ अनुजहि मिले प्रभु त्रिभुअन घनी ॥

प्रभु मिलत अनुजहि सोह मो पहि जाति नहि उपमा कही ।

जनु प्रेम अरु सिंगार तनु धरि मिले घर सुपमा लही ॥ १ ॥

घृषत कृपानिधि कुसलं भरतहि बचन वेगि न आवई ।

सुनु मिया सो सुख बचन मन ते भिन्न जान जो पावई ॥

अब कुसल कौसलनाथ आरत जानि जन दरसन दियो ।

घूंड़त विरह बारीस कृपानिधान मोहि कर गहि लियो ॥ २ ॥

दो०—पुनि प्रभु हरषि सत्रुहन भेंटे हृदयँ लंगाइ ।
लछिमन भरत मिले तव परम प्रेम दोउ भाइ ॥ ५ ॥

भरतानुज लछिमन पुनि भेंटे । दुसह विरह संभव दुख भेंटे ॥
सीता चरन भरत सिरु नावा । अनुज समेत परम सुख पावा ॥
प्रभु विलोकि हरषे पुरवासी । जनित वियोग विपति सब नासी ॥
प्रेमातुर सब लोग निहारी । कौतुक कीन्ह कृपाल खरारी ॥
अमित रूप प्रगटे तेहि काला । जथा जोग मिले सबहि कृपाला ॥
कृपादृष्टि रघुबीर विलोकी । किए सकल नर नारि विसोकी ॥
छन महिं सबहि मिले भगवाना । उमा मरम यह काहुँ न जाना ॥
एहि विधि सबहि सुखी करि रामा । आगें चले सील गुन धामा ॥
कौसल्यादि मातु सब धाई । निरखि वच्छ जनु धेनु लवाई ॥

छं०—जनु धेनु वालक वच्छ तजि गृहँ चरन वन परवस गई ।
दिन अंत पुर रुख स्रवत थन हुंकार करि धावत भई ॥
अति प्रेम प्रभु सब मातु भेटौं वचन मृदु बहुविधि कहे ।
गइ विपम विपति वियोगभव तिन्ह हरप सुख अगनित लहे ॥

०—भेंटेउ तनय सुमित्राँ राम चरन रति जानि ।
रामहि मिलत कैकई हृदयँ बहुत सकुचानि ॥ ६ (क) ॥

लछिमन सब मातन्ह मिलि हरषे आसिप पाइ ।
कैकई कहँ पुनि पुनि मिले मन कर छोभु न जाइ ॥ ६ (ख) ॥

न्ह सबनि मिली वैदेही । चरनन्हि लागि हरपु अति तेही ॥
असीस वृद्धि कुसलाता । होइ अचल तुम्हार अहिवाता ॥

पुपति मुख कमल विलोकहिं । मंगल जानि नयन जन सेरि ॥

कनक थार आरती उतारहिं । वार वार प्रभु गात निहारहिं ॥
 नाना भाँति निछावरि करहीं । परमानंद हरप उर भरहीं ॥
 कौसल्या पुनि पुनि रघुवीरहि । चितवति कृपासिंधु रनधीरहि ॥
 हृदयँ विचारति वारहिं वारा । कवन भाँति लंकापति मारा ॥
 अति मुकुमार जुगल मेरे वारे । निसिचर सुभट महाबल भारे ॥

दो०—लछिमन अरु सीता सहित प्रमुहि विलोकति मातु ।

परमानंद मगन मन पुनि पुनि पुलकित गातु ॥ ७ ॥

लंकापति कपीस नल नीला । जामवंत अंगद सुभसीला ॥
 हनुमदादि सब वानर वीरा । धरे मनोहर मनुज सरीरा ॥
 भरत सनेह सील व्रत नेमा । सादर सब चरनहिं अति प्रेमा ॥
 देखि नगरवासिन्ह केँ रीती । सकल सराहहिं प्रभु पद प्रीती ॥
 पुनि रघुपति सब सखा बोलाए । मुनिपद लागहु सकल सिखाए ॥
 गुर वसिष्ठ कुलपूज्य हमारे । इन्ह की कृपाँ दनुज रन मारे ॥
 ए सब सखा मुनहु मुनि मेरे । भए समर सागर कहँ बेरे ॥
 मम हित लागि जन्म इन्ह हारे । भरतहु ते मोहि अधिक पिआरे ॥
 मुनि प्रभु वचन मगन सब भए । निमिप निमिप उपजत सुख नए ॥

दो०—कौसल्या केँ चरनन्हि पुनि तिन्ह नायउ माय ।

आसिप दीन्हे हरपि तुम्ह प्रिय मम जिमि रचुनाय ॥ ८ (क) ॥

सुमग युष्टि नभ संकुल भवन चले सुखकंद ।

पदी अटारिन्ह देखहिं नगर नारि नर वृंद ॥ ८ (ख) ॥

कंचन कलस विचित्र सँवारे । सबहिं धरे सजि निज निज द्वारे ॥
 बंदनवार पताका केतू । सबन्हि घनाए मंगल हेतू ॥

वीथीं सकल सुगंध सिंचाई। गजमनिरचि बहु चौक पुराई ॥
 नाना भाँति सुमंगल साजे। हरपि नगर निसान बहु बाजे ॥
 जहँ तहँ नारि निछावरि करहीं। देहिं असीस हरप उर भरहीं ॥
 कंचन थार आरतीं नाना। जुवतीं सजे करहिं सुभ गाना ॥
 करहिं आरती आरतिहर केँ। रघुकुलकमलविपिनदिनकरकेँ ॥
 पुर सोभा संपति कल्याना। निगम सेप सारदा बखाना ॥
 तेउ यह चरित देखि ठगिरहहीं। उमातासुगुन नर किमि कहहीं ॥

दो०—नारि कुमुदिनीं अवध सर रघुपति विरह दिनेस ।

अस्त भएँ विगसत भईं निरखि राम राकेस ॥९(क)॥

होहिं सगुन सुभ विविधि विधि बाजहिं गगन निसान ।

पुर नर नारि सनाथ करि भवन चले भगवान ॥९(ख)॥

प्रभु जानी कैकई लजानी। प्रथम तासु गृह गए भवानी।
 ताहि प्रबोधि बहुत सुख दीन्हा। पुनि निज भवन गवन हरि कीन्हा
 कृपासिंधु जब मंदिर गए। पुर नर नारि सुखी सब भए।
 गुर बसिष्ट द्विज लिए बुलाई। आजु सुधरी सुदिन समुदाई।
 सब द्विज देहु हरपि अनुसासन। रामचंद्र बैठहिं सिंघासन।
 मुनि बसिष्ट के वचन सुहाए। सुनत सकल विप्रन्ह अति भाए।
 कहहिं वचन मृदु विप्र अनेका। जग अभिराम राम अभिषेका।
 अब मुनिवर विलंब नहिं कीजै। महाराज कहँ तिलक करीजै।

दो०—तव मुनि कहेउ सुमंत्र सन सुनत चलेउ हरपाइ ।

रथ अनेक बहु बाजि गज तरत सँवारे जाइ ॥ १० (क) ॥

ल द्रव्य मगाइ ।

रु नायउ आइ ॥ १०(स) ॥

उवाँ विश्राम

सुमन वृष्टि क्षरि लाई ॥

सखन्ह अन्हवावहु जाई ॥

दि तुरत अन्हवाए ॥

रु राम जटा निरुआरे ॥

बछल कृपाल रघुराई ॥

दि सत सकहिं न गाई ॥

गुसासन मागि नहाए ॥

नंग देखि सत लाजे ॥

तुरत कराइ ।

राजे खनाइ ॥ ११(फ) ॥

गुन खानि ।

नेत्र जानि ॥ ११(स) ॥

नुनि वृंद ।

सुसकंद ॥ ११(ग) ॥

द्रव्य सिंघासन मागा ॥

न द्विजन्ह

वे

वरनि उमापति राम गुन हरषि गए कैलास ।

तत्र प्रभु कपिन्ह दिवाए सब विधि सुखप्रद चास ॥ १४(स) ॥

सुनु खगपति यह कथा पावनी । त्रिविधताप भव भय दावनी ॥

महाराज कर सुभ अभिपेका । सुनत लहहि नर विरति विवेका ॥

जे सकाम नर सुनहिं जे गावहिं । सुख संपति नाना विधि पावहिं ॥

सुर दुर्लभ सुख करि जग माहीं । अंतकाल रघुपति पुर जाहीं ॥

सुनहिं विमुक्त विरत अरु विपई । लहहिं भगति गति संपति नई ॥

खगपति राम कथा मै परनी । स्वमति विलास चास दुख हरनी ॥

विरति विवेक भगति दृढ़ करनी । मोह नदी कहँ सुंदर तरनी ॥

नित नव मंगल कौसलपुरी । हरपित रहहिं लोग सब कुरी ॥

नित नई प्रीति राम पद पंकज । सब कें जिन्हहिं नमत सिव मुनि अज ॥

मंगन बहु प्रकार पहिराए । द्विजन्ह दान नाना विधि पाए ॥

दो०—ब्रह्मानंद मगन कपि सब कें प्रभु पद प्रीति ।

जात न जाने दिवस तिन्ह गए मास पट थीति ॥ १५ ॥

बिसरे गृह सपनेहुँ सुधि नाहीं । जिमि परद्रोह संत मन माहीं ॥

तत्र रघुपति सब सखा बोलाए । आइ सबन्हि सादर सिरु नाए ॥

परम प्रीति समीप बैठारे । भगत सुखद मृदु वचन उचारे ॥

तुम्ह अति कीन्हि मोरि सेवकाई । मुख पर केहि विधि करों बड़ाई ॥

ताते मोहि तुम्ह अति प्रिय लागे । मम हित लागि भवन सुख त्यागे ॥

अनुज राज संपति वैदेही । देह गेह परिवार सनेही ॥

सब मम प्रिय नहिं तुम्हहि समाना । मृषा न कहउँ मोर यह घाना ॥

सब कें प्रिय सेवक यह नीती । मोरें अधिक दास पा

दो०—अब गृह जाहु सखा सब भजेहु मोहि दृढ़ नेम ।

सदा सर्वगत सर्वहित जानि करेहु अति प्रेम ॥ १६ ॥

सुनि प्रभु वचन मगन सब भए । कोहम कहाँ विसरितन गए ॥

एकटक रहे जोरि कर आगे । सकहि न कछु कहि अति अनुरागे ॥

परमप्रेम तिन्ह कर प्रभु देखा । कहा विविधि विधि ग्यान विसेपा ॥

प्रभु सन्मुख कछु कहन न पारहि । पुनि पुनि चरन सरोज निहारहि ॥

तव प्रभु भूपन वसन मगाए । नाना रंग अनूप सुहाए ॥

सुग्रीवहि प्रथमहि पहिराए । वसन भरत निज हाथ बनाए ॥

प्रभु प्रेरित लछिमन पहिराए । लंकापति रघुपति मन भाए ॥

अंगद बैठ रहा नहि डोला । प्रीति देखि प्रभु ताहि न बोला ॥

दो०—जामवंत नीलादि सब पहिराए रघुनाथ ।

हियँ धरि राम रूप सब चले नाइ पद साथ ॥ १७(क) ॥

तव अंगद उठि नाइ सिरु सजल नयन कर जोरि ।

अति विनीत बोलेउ वचन मनहुँ प्रेम रस बोरि ॥ १७(ख) ॥

सुनु सर्वग्य कृपा सुख सिंधो । दीन दयाकर आरत बंधो ॥

मरती बेर नाथ मोहि वाली । गयउ तुम्हारेहि कोँछे घाली ॥

असरन सरन विरदु संभारी । मोहि जनि तजहु भगत हितकारी ॥

मोरें तुम्ह प्रभु गुर पितु माता । जाउँ कहाँ तजि पद जलजाता ॥

तुम्हहि विचारि कहहु नरनाहा । प्रभु तजि भवन काज मम काहा ॥

वालक ग्यान बुद्धि बल हीना । राखहु सरन नाथ जन दीना ॥

नीचि टहल गृह कै सब करिहउँ । पद पंकज विलोकि भव तरिहउँ ॥

अस कहि चरन परेउ प्रभु पाही । अब जनि नाथ कहहु गृह जाही ॥

दो०—अंगद वचन विनीत सुनि रघुपति करुना सीव ।

प्रभु उठाइ उर लायउ सजल नयन राजीव ॥१८(क)॥

निज उर माल बसन मनि बालितनय पहिराड ।

विदा कीन्हि भगवान तब बहु प्रकार समुझाइ ॥१८(ख)॥

भरत अनुज सौमित्रि समेता । पठवन चले भगत कृत चेता ॥

अंगद हृदयँ प्रेम नहिं धोरा । फिरि फिरि चितव राम कीं ओरा ॥

घार घार कर दंड प्रनामा । मन अस रहन कहहिं मोहि रामा ॥

राम बिलोकनि घोलनि चलनी । मुमिरि मुमिरि सोचत हँसि मिछनी ॥

प्रभु स्ख देखि बिनय बहु भापी । चलेउ हृदयँ पद पंकज राखी ॥

अति आदर सब कपि पहुँचाए । भाइन्ह सहित भरत पुनि आए ॥

तब सुग्रीव चरन गहि नाना । भाँति बिनय कीन्हे हनुमाना ॥

दिन दस करि रघुपति पद सेवा । पुनि तब चरन देखिहउँ देवा ॥

पुन्य पुंज तुम्ह पवनकुमारा । सेवहु जाइ कृपा आगारा ॥

अस कहि कपि सब चले तुरंता । अंगद कहइ सुनहु हनुमंता ॥

दो०—कहेहु दंडवत प्रभु सैं तुम्हहि कहउँ कर जोरि ।

घार-घार रघुनायकहि सुरति कराणहु मोरि ॥१९(क)॥

अस कहि चलेउ बालिसुत फिरि आयउ हनुमंत ।

तासु प्रीति प्रभु सन कही मगन भए भगवंत ॥१९(ख)॥

कुलिसहु चाहि कठोर अति कोमल कुसुमहु चाहि ।

चित्त खगंस राम कर समुझि परउ बहु चाहि ॥१९(ग)॥

पुनि कृपाल लियो बोलि निपादा । दीन्हे भूपन बसन प्रसादा ॥

जाहु भवन मम सुमिरन करेह । मन क्रमवचन धर्म अनुसरेह ॥

तुम्ह मम सखा भरत सम भ्राता । सदा रहेहु पुर आवत जाता ॥
 वचन सुनत उपजा सुख भारी । परेउ चरन भरि लोचन वारी ॥
 चरन नलिन उर धरि गृह आवा । प्रभु सुभाउ परिजनन्हि सुनावा ॥
 रघुपति चरित देखि पुरवासी । पुनि पुनि कहहि धन्य सुखरासी ॥
 राम राज बैठे त्रैलोका । हरषित भए गए सब सोका ॥
 वयरु न कर काहू सन कोई । राम प्रताप विपमता खोई ॥

दो०—बरनाश्रम निज निज धरम निरत वेद पथ लोग ।

चलहि सदा पावहि सुखहि नहि भय सोक न रोग ॥ २० ॥

दैहिक दैविक भौतिक तापा । राम राज नहि काहुहि व्यापा ॥
 सब नर करहि परस्पर प्रीती । चलहि स्वधर्म निरत श्रुति नीती ॥
 चारिउ चरन धर्म जग माहीं । पूरि रहा सपनेहुँ अघ नाहीं ॥
 राम भगति रत नर अरु नारी । सकल परम गति के अधिकारी ॥
 अल्पमृत्यु नहि कवनिउ पीरा । सब सुंदर सब विरुज सरीरा ॥
 नहि दरिद्र कोउ दुखी न दीना । नहि कोउ अवुध न लच्छनहीना ॥
 सब निर्दभ धर्मरत पुनी । नर अरु नारि चतुर सब गुनी ॥
 सब गुनग्य पंडित सब ग्यानी । सब कृतग्य नहि कपट स्यानी ॥

दो०—राम राज नभगेस सुनु सचराचर जग माहिं ।

काल कर्म सुभाव गुन कृत दुख काहुहि नाहिं ॥ २१ ॥

भूमि सप्त सागर मेखला । एक भूप रघुपति कोसला ॥
 भुअन अनेक रोम प्रति जास्य । यह प्रभुता कछु बहुत न तास्य ॥
 सो महिमा समुझत प्रभु केरी । यह बरनत हीनता घनेरी ॥
 सोउ महिमा खगेस जिन्ह जानी । फिरि एहिं चरित तिन्हहुँ रति मानी ॥

सोउ जाने कर फल यह लीला । कहहिं महा मुनिवर दमसीला ॥
 राम राज कर सुख संपदा । चरनि न सकइ फनीस सारदा ॥
 सब उदार सब पर उपकारी । विप्र चरन सेवक नर नारी ॥
 एकनारि त्रत रत सब ह्यारी । ते मनवचक्रम पति हितकारी ॥

दो०—दंड अतिन्ह कर भेद जहँ नर्तक नृत्य समाज ।

जीतहु मनहि सुनिअ अस रामचंद्र के राज ॥ २२ ॥

फूलहिं फरहिं सदा तरु कानन । रहहिं एकसंग गज पंचानन ॥
 खग मृग सहज वयर विसराई । सबन्हि परस्पर प्रीति बढ़ाई ॥
 कूजहिं खग मृग नाना वृंदा । अभय चरहिं वन करहिं अनंदा ॥
 सीतल सुरभि पवन बह मंदा । गुंजत अलि लँ चलि मकरंदा ॥
 लता बिटप मागें मधु चवहीं । मनभावतो घेनु पय स्रवहीं ॥
 ससि संपन्न सदा रह धरनी । त्रेताँ भइ कृतजुग कै करनी ॥
 प्रगटीं गिरिन्ह विविधि मनि खानी । जगदातमा भूप जग जानी ॥
 सरिता सकल यहहिं वर बारी । सीतल अमल खाद सुखकारी ॥
 सागर-निज मरजादाँ रहहीं । डारहिं रत्न तटन्हि नरलहहीं ॥
 सरसिज संकुल सकल तड़ागा । अति प्रसन्न दस दिसा विभागा ॥

दो०—त्रिधु महि पूर मयूखन्हि रवि तप जेतनेहि काज ।

मागें चारिद देहिं जल रामचंद्र के राज ॥ २३ ॥

कोटिन्ह वाजिमेध प्रभु कीन्हे । दांन अनेक द्विजन्ह कहै दोन्हे ॥
 श्रुति पथ पालक धर्म घुरंधर । गुनातीत अरु भोग पुरंदर ॥
 पति अनुकूल सदा रह सीता । सोभा खानि सुनील दिनीता ॥
 जानति कृपासिंधु प्रभुताई । सेवति चरन कन्दन नन

जद्यपि गृहँ सेवक सेवकिनी। विपुल सदा सेवा विधि गुनी ॥
 निज कर गृह परिचरजा करई। रामचंद्र आयसु अनुसरई ॥
 जेहि विधि कृपासिंधु सुख मानइ। सोइ कर श्री सेवा विधि जानइ ॥
 कौसल्यादि सासु गृह माहीं। सेवइ सवन्हि मान मद नाहीं ॥
 उमा रमा ब्रह्मादि वंदिता। जगदंबा संततमनिंदिता ॥

दो०—जासु कृपा कटाच्छुं सुर चाहत चितव न सोइ ।

राम पदारविंद रति करति सुभावहि खोइ ॥ २४ ॥

सेवहिं सानकूल सब भाई। राम चरन रति अति अधिकाई ॥
 प्रभु सुख कमल विलोकत रहहीं। कवहुँ कृपाल हमहि कछु कहहीं ॥
 राम करहिं भ्रातन्ह पर प्रीती। नाना भाँति सिखावहिं नीती ॥
 हरपित रहहिं नगर के लोगा। करहिं सकल सुर दुर्लभ भोगा ॥
 अहनिसि विधिहि मनावत रहहीं। श्रीरघुवीर चरन रति चहहीं ॥
 दुइ सुत सुंदर सीताँ जाए। लव कुस बेद पुरानन्ह गाए ॥
 दोउ विजई विनई गुन मंदिर। हरि प्रतिबिंब मनहुँ अति सुंदर ॥
 दुइ दुइ सुत सब भ्रातन्ह केरे। भए रूप गुन सील घनेरे ॥

दो०—ग्यान गिरा गोतीत अज माया मन गुन पार ।

सोइ सच्चिदानंद घन कर नर चरित उंदार ॥ २५ ॥

प्रातकाल सरळ करि मज्जन। वैठहिं सभाँ संग द्विज सज्जन ॥
 वेद पुरान बसिष्ट बखानहिं। सुनहिं राम जद्यपि सब जानहिं ॥
 अनुजन्ह संजुत भोजन करहीं। देखि सकल जननीं सुख भरहीं ॥
 भरत सत्रुहन दोनउ भाई। सहित पवनसुत उपवन जाई ॥
 वृझहिं वैठि राम गुन गाहा। कह हनुमान सुमति अवगाहा ॥

सुनत विमल गुन अति सुख पावहि । बहुरि बहुरि करि विनय कइवहि
सब कें गृह गृह होहि पुराना । राम चरित पावन विधि नाना ॥
नर अरु नारि राम गुन गानहि । करहि द्विषस निसि जात न जानहि ॥

दो०—अवधपुरी वासिन्ह कर सुख संपदा समाज ।

सहस सेप नहि कहि सकहि जहँ नृप राम विराज ॥ २६ ॥

नारदादि सनकादि मुनीसा । दरसन लागि कोसलाधीसा ॥
दिन प्रति सकल अजोध्या आवहि । देखि नगरु विरागु विमरावहि
जातरूप मनि रचित अटारी । नाना रंग रुचिर गच ठारी ॥
पुर चहुँ पास कोट अति सुंदर । रचे कँगूरा रंग रंग वर ॥
नव ग्रह निकर अनीक बनाई । जनु घेरी अमरावति आई ॥
महि बहुरंग रचित गच काचा । जो विलोकि मुनिवर मन नाचा ॥
धवल धाम ऊपर नभ चुंबत । फलस मनहुँ रवि ससि दुति निंदत ॥
बहु मनि रचित झरोखा भ्राजहि । गृह गृह प्रति मनि दीप विराजहि

छं०—मनि दीप, राजहि भवन आजहि देहरी विद्रुम रची ।

मनि खंभ भीति विरंचि विरची कनक मनि मरकत खची ॥

सुंदर मनोहर मंदिरायत अजिर रुचिर फटिक रचे ।

प्रति द्वार द्वार कपाट पुरट बनाइ बहु बज्रन्हि खचे ॥

दो०—चारु चित्रसाला गृह गृह प्रति लिखे बनाइ ।

राम चरित जे निरख मुनि ते मन लेहि चोराड ॥ २७ ॥

सुमन चाटिका सबहि लगाई । विविध भाँति करि जतन बनाई ॥
लता ललित बहु जाति सुहाई । फूलहि सदा वसंत कि नाई ॥
गुंजत मधुकर मुखर मनोहर । मारुत त्रिविधि सदा यह सुंदर ।

नाना खग बालकन्हि जिआए। बोलत मधुर उड़ात सुहाए।
 मोर हंस सारस पारावत। भवननि पर सोभा अति पावत।
 जहँ तहँ देखहिं निज परिछाहीं। बहु विधि कूजहिं नृत्य कराहीं।
 सुक सारिका पदावहिं बालक। कहहु रामरघुपति जनपालक।
 राज दुआर सकल विधि चारू। बीथीं चौहट रुचिर बजारू ॥

छं०—बाजार रुचिर न बनइ वरनत वस्तु बिनु गथ पाइए।
 जहँ भूप रमानिवास तहँ की संपदा किमि गाइए ॥
 बैठे बजाज सराफ बनिक अनेक मनहुँ कुचेर ते।
 सब सुखी सब सचरित सुंदर नारिनर सिसु जरठ जे ॥

दो०—उत्तर दिसि सरजू वह निर्मल जल गंभीर।
 बाँधे घाट मनोहर स्वल्प पंक नहि तीर ॥ २८ ॥

दूरि फराक रुचिर सो घाटा। जहँ जल पिअहिं वाजि गज ठाटा
 पनिघट परम मनोहर नाना। तहाँ न पुरुष करहिं अस्नाना ॥
 राजघाट सब विधि सुंदर वर। मज्जहिं तहाँ वरन चारिउ नर ॥
 तीर तीर देवन्ह के मंदिर। चहुँ दिसि तिन्ह के उपवन सुंदर ॥
 कहँ कहँ सरिता तीर उदासी। बसहिं ग्यान रत मुनि संन्यासी ॥
 तीर तीर तुलसिका सुहाई। वृंद वृंद बहु मुनिन्ह लगाई ॥
 पुर सोभा कछु वरनि न जाई। बाहेर नगर परम रुचिराई ॥
 देखत पुरी अखिल अध भागा। बन उपवन बापिका तड़ागा ॥

छं०—बापीं तड़ाग अनूप कूप मनोहरायत सोहहीं।
 सोपान सुंदर नीर निर्मल देखि सुर मुनि मोहहीं ॥

बहु रंग कंज अनेक खग कूजहि मधुप गुंजारही ।
आराम रम्य पिकादि खग रव जनु पथिक हंकारही ॥
दो०—रमानाथ जहँ राजा सो पुर बरनि कि जाइ ।

अनिमादिक सुख संपदा रही अवध सब छाड ॥ २९ ॥

जहँ तहँ नर रघुपति गुन गावहिं । बैठि परसपर इहइ सिखावहिं ॥
भजहु प्रनत प्रतिपालक रामहि । सोभा सील रूप गुन धामहि ॥
जलज विलोचन स्यामल गातहि । पलक नयन इव सेवक त्रातहि ॥
धृत सर रुचिर चाप तूनीरहि । संत कंज वन रवि रनधीरहि ॥
काल कराल व्याल खगराजहि । नमत राम अकाम ममता जहि ॥
लोभ मोह मृगजूथ किरातहि । मनसिज करि हरि जन मुखदातहि
संसय सोक निबिड़ तम भानुहि । दनुज गहन घन दहन कृसानुहि ॥
जनकसुता समेत रघुधीरहि । कस न भजहु भंजन भव भीरहि ॥
बहु धासना मसक हिम रासिहि । सदा एकरस अज अविनासिहि ॥
मुनि रंजन भंजन महि भारहि । तुलसिदास के प्रभुहि उदारहि ॥

दो०—एहि विधि नगर नारि नर करहि राम गुन गान ।

सानुकूल सब पर रहहि संतत कृपानिधान ॥ ३० ॥

जब ते राम प्रताप खगेसा । उदित भयउ अति प्रबल दिनेसा ॥
पूरि प्रकास रहेउ तिहुँ लोका । बहुतेन्ह सुख बहुतन मन सोका ॥
जिन्हहि सोक ते कहउँ वखानी । प्रथम अविद्या निसा नसानी ॥
अथ उलूक जहँ तहाँ लुकाने । काम क्रोध कँख सकुचाने ॥
विविध कर्म गुन काल सुभाऊ । ए चकोर सुख लहहि न काऊ ॥
मत्सर मान मोह मद चोरा । इन्ह करहुनर न कयनिहुँ ओरा ॥

धरम तड़ाग ग्यान बिग्याना। ए पंकज विकसे बिधि नाना।
सुख संतोष बिराग बिबेका। बिगत सोक ए कोक अनेका।
दो०—यह प्रताप रवि जाके उर जब करइ प्रकास।

पछिले बाढ़हि प्रथम जे कहे ते पावहि नास ॥ ३१ ॥

भ्रातन्ह सहित रामु एक बारा। संग परम प्रिय पवनकुमारा।
सुंदर उपवन देखन गए। सब तरु कुसुमित पल्लव नए।
जानि समय सनकादिक आए। तेज पुंज गुन सील सुहाए।
ब्रह्मानंद सदा लयलीना। देखत वालक बहुकालीना।
रूप धरें जनु चारिउ बेदा। समदरसी मुनि बिगत बिभेदा।
आसावसन व्यसन यह तिन्हहीं। रघुपति चरित होइ तहँ सुनहीं।
तहाँ रहे सनकादि भवानी। जहँ घटसंभव मुनिबर ग्यानी।
राम कथा मुनिबर बहु वरनी। ग्यान जोनि पावक जिमि अरनी

दो०—देखि राम मुनि आवत हरषि दंडवत कीन्ह।

स्वागत पूँछि पीत पट प्रभु बैठन कहँ दीन्ह ॥ ३२ ॥

कीन्ह दंडवत तीनिउँ भाई। सहित पवनसुत सुख अधिकाई।
मुनि रघुपति छबि अतुल बिलोकी। भए मगन मन सके न रोकी।
स्यामल गात सरोरुह लोचन। सुंदरता मंदिर भव मोचन।
एकटक रहे निमेष न लावहिं। प्रभु कर जोरें सीस नवावहिं।
तिन्ह कै दसा देखि रघुबीरा। स्रवत नयन जल पुलक सरीरा।
कर गहि प्रभु मुनिबर वैठारे। परम मनोहर वचन उचारे।
आजु धन्य मैं सुनहु मुनीसा। तुम्हरें दरस जाहिं अघ खीसा।
बड़े भाग पाइव सतसंगा। बिनहिं प्रयास होहिं भव भंगा।

दो०-संत संग अपवर्ग कर कामी भव कर पंथ ।

कहहि संत कवि कोविद धृति पुरान सदपंथ ॥ ३३ ॥

मुनि प्रभु वचन हरपि मुनि चारी । पुलकित तन अस्तुति अनुसारी
जय भगवंत अनंत अनामय । अनघ अनेक एक करुनामय ॥
जय निर्गुन जय जय गुन सागर । सुख मंदिर सुंदर अति नागर ॥
जय इंदिरा रमन जय भूधर । अनुपम अज अनादि सोभाकर ॥
ग्यान निधान अमान मानप्रद । पावन सुजस पुरान वेद वद ॥
तग्य कृतग्य अग्यता भंजन । नाम अनेक अनाम निरंजन ॥
सर्व सर्वगत सर्व उरालय । वससि सदा हम कहूँ परिपालय ॥
द्वंद्व विपति भव फंद विभंजय । हृदि वसि राम काम मद गंजय ॥

दो०-परमानंद कृपायतन मन परिपूरन काम ।

प्रेम भगति अनपायनी देहु हमहि श्रीराम ॥ ३४ ॥

देहु भगति रघुपति अति पावनि । त्रिविधि ताप भव दाप नसावनि ॥
प्रनत काम सुरधेनु कलपतरु । होइ प्रसन्न दीर्ज प्रभु यह वरु ॥
भव वारिधि कुंभज रघुनायक । सेवत मुलभ सकल सुख दायक ॥
मन संभव दारुन दुख दारय । दीनबंधु समता विलारय ॥
आस त्रास इरिपादि निवारक । विनय विवेक चिरति विन्तारक ॥
भूप मौलि मनि मंडन धरनी । देहि भगति संसृति सरि तरनी ॥
मुनि मन मानस हंस निरंतर । चरन कमल वंदित अज संकर ॥
रघुकुल केतु सेतु श्रुति रच्छक । काल करम सुभाउ गुन भच्छक ॥
तारन तरन हरन सब दूपन । तुलसिदास प्रभु त्रिभुवन भूपन ॥

दो०—वार वार अस्तुति करि प्रेम सहित सिरु नाइ ।

ब्रह्म भवन सनकादि गे अति अभीष्ट वर पाइ ॥ ३५ ॥

सनकादिक विधि लोक सिधाए । आतन्ह राम चरन सिरु नाए ॥

पूछतं प्रभुहि सकल सकुचाहीं । चितवहिं सब मारुतसुत पाहीं ॥

सुनी चहहिं प्रभु मुख कै बानी । जो सुनि होइ सकल भ्रम हानी ॥

अंतरजामी प्रभु सभ जाना । बृहत्त कहहु काह हनुमाना ॥

जोरि पानि कह तव हनुमंता । सुनहु दीनदयाल भगवंता ॥

नाथ भरत कछु पूँछन चहहीं । प्रस्न करत मन सकुचत अहहीं ॥

तुम्ह जानहु कपि मोर सुभाऊ । भरतहि मोहि कछु अंतर काऊ ॥

सुनि प्रभु वचन भरत गहे चरना । सुनहु नाथ प्रनतारति हरना ॥

दो०—नाथ न मोहि संदेह कछु सपनेहुँ सोक न मोह ।

केवल कृपा तुम्हारिहि कृपानंद संदोह ॥ ३६ ॥

करउँ कृपानिधि एक ढिठाई । मैं सेवक तुम्ह जन सुखदाई ॥

संतन्ह कै महिमा रघुराई । बहु विधि वेद पुरानन्ह गाई ॥

श्रीमुख तुम्ह पुनि कीन्हि वडाई । तिन्ह पर प्रभुहि प्रीति अधिकाई ॥

सुना चहउँ प्रभु तिन्ह कर लच्छन । कृपासिंधु गुन ग्यान विचच्छन ॥

संत असंत भेद विलगाई । प्रनतपाल मोहि कहहु बुझाई ॥

संतन्ह कै लच्छन सुनु आता । अगनित श्रुति पुरान विख्याता ॥

संत असंतन्हि कै असि करनी । जिमि कुठार चंदन आचरनी ॥

काटइ परसु मलय सुनु भाई । निज गुन देइ सुगंध वसाई ॥

दो०—ताते सुर सीसन्ह चढ़त जग बल्लभ श्रीखंड ।

अनल दाहि पीटत घनहिं परसु बदन यह दंड ॥ ३७ ॥

विषय अलंपट सील गुनाकर । पर दुख दुख सुख सुख देखे पर ॥
 सम अभूतरिपु विमल विरागी । लोभामरप हरप भय त्यागी ॥
 कोमलचित दीनन्ह पर दाया । मन बच क्रममम भगति अमाया ॥
 सवहि मानप्रद आपु अमानी । भरत प्राण सम मम ते प्राणी ॥
 विगत काम मम नाम परायन । सांति विरति विनती मुदितायन ॥
 सीतलता सरलता मयत्री । द्विज पद प्रीति धर्म जनयत्री ॥
 ए सव लच्छन वसहिं जासु उर । जानेहु तान संत संतत फुर ॥
 सम दम नियम नीति नहिं डोलहिं । परुप वचन कवहुं नहिं बोलहिं
 दो०—निदा अस्तुति उभय सम ममता मम पद कंज ।

ते सज्जन मम प्राण प्रिय गुण मंदिर सुरत पुंज ॥ ३८ ॥

सुनहु असंतन्ह केर सुभाऊ । भूलेहुं संगति करिअ न काऊ ॥
 तिन्ह कर संग सदा दुखदाई । जिमि कपिलहि घालइ हरहाई ॥
 खलन्ह हृदय अति ताप विसेपी । जराहिं सदा पर संपति देखी ॥
 जहू कहुं निदा सुनहिं पराई । हरपहिं मनहुं परी निधि पाई ॥
 काम क्रोध मद लोभ परायन । निर्दय कपटी कुटिल मलायन ॥
 वपरु अकारन सब काहू सों । जो कर हित अनहित ताहू सों ॥
 झूठइ लेना झूठइ देना । झूठइ भोजन झूठ चबेना ॥
 बोलहिं मधुर वचन जिमि मोरा । खाइ महा अहि हृदय कठोरा ॥

दो०—पर द्रोही पर दार रत पर घन पर अपवाद ।

ते नर पाँवर पापमय देह घरे मनुजाद ॥ ३९ ॥

लोभइ ओढ़न लोभइ दासन । सिस्नोदर पर जमपुर त्रासन ॥
 काहू की जाँ सुनहिं बढ़ाई । म्हास लेहिं वनु जूड़ी

जब काहू कै देखहिं बिपती । सुखी भए मानहुँ जग नृपती ॥
 खारथ रत परिवार विरोधी । लंपट काम लोभ अति क्रोधी ॥
 मातु पिता गुर बिप्र न मानहिं । आपु गए अरु घालहिं आनहिं ॥
 करहिं मोह बस द्रोह परावा । संत संग हरि कथा न भावा ॥
 अवगुन सिंधु मंदमति कामी । वेद बिदूपक परधन स्वामी ॥
 विप्र द्रोह पर द्रोह विसेपा । दंभ कपट जियँ धरें सुवेपा ॥
 दो०—ऐसे अधम मनुज खल कृतजुग त्रेताँ नाहिं ।

द्वापर कछुक वृंद बहु होइहहिं कलिजुग माहिं ॥ ४० ॥

पर हित सरिस धर्म नहिं भाई । पर पीड़ा सम नहिं अधमाई ॥
 निर्नय सकल पुरान वेद कर । कहेउँ तात जानहिं कोबिद नर ॥
 नर सरीर धरि जे पर पीरा । करहिं ते सहहिं महा भव भीरा ॥
 करहिं मोह बस नर अध नाना । खारथ रत परलोक नसाना ॥
 कालरूप तिन्ह कहँ मै भ्राता । सुभ अरु असुभ कर्म फल दाता ॥
 अस बिचारि जे परम सयाने । भजहिं मोहि संसृत दुख जाने ॥
 त्यागहिं कर्म सुभासुभ दायक । भजहिं मोहि सुर नर मुनि नायक ॥
 संत असंतन्ह के गुन भाषे । ते न परहिं भव जिन्ह लखि राखे ॥

दो०—सुनहु तात माया कृत गुन अरु दोष अनेक ।

गुन यह उभय न देखिअहिं देखिअ सो अबिवेक ॥ ४१ ॥

श्रीमुख बचन सुनत सब भाई । हरषे प्रेम न हृदयँ समाई ॥
 करहिं विनय अति बारहिं बारा । हनूमान हियँ हरष अपारा ॥
 पुनि रघुपति निज मंदिर गए । एहि बिधि चरित करत नित नए ॥
 बार बार नारद मुनि आवहिं । चरित पुनीत राम के गावहिं ॥

नित नव चरित देखि मुनि जाहीं । ब्रह्मलोक सब कथा कहाहीं ॥
सुनि विरंचि अतिसय सुख मानहिं । पुनि पुनि तान करहु गुन गनहिं
सनकादिक नारदहि सराहहिं । जद्यपि ब्रह्म निरत मुनि आहहिं ॥
सुनि गुन गान समाधि विसारी । सादर सुनहिं परम अधिकारी ॥

दो०—जीवनमुक्त मक्षपर चरित सुनहिं तजि ध्यान ।

जे हरि कथों न करहि रति तिन्ह कं हिय पापान ॥ ४२ ॥

एक बार रघुनाथ बोलाए । गुर द्विज पुरवासी मव आए ॥
बँटे गुर मुनि अरु द्विज सजन । बोले वचन भगत भव भंजन ॥
सुनहु सकल पुरजन मम वानी । कहउँ न कछु ममता उर आनी ॥
नहिं अनीति नहिं कछु प्रभुताई । सुनहु करहु जो तुम्हहि सोहाई ॥
सोइ सेवक प्रियतम मम सोई । मम अनुसासन माने जोई ॥
जों अनीति कछु भाषी भाई । तौ मोहि वरजहु भय विसराई ॥
बड़ें भाग मानुष तनु पावा । सुर दुर्लभ सब ग्रंथन्हि गावा ॥
साधन धाम मोच्छ कर द्वारा । पाइ न जेहिं परलोक सँवारा ॥

दो०—सो परत्र दुख पावह सिर धुनि धुनि पछिताइ ।

कालहि कर्महि ईस्वरहि मिथ्या दोष लगाइ ॥ ४३ ॥

एहि तन कर फल विषय न भाई । स्वर्गउ स्वल्प अंत दुखदाई ॥
नर तनु पाइ विषयें मन देहों । पलटि मुधा ते सट विष लेहों ॥
ताहि कवहुँ भल कहइ न कोई । गुंजा ग्रहइ परस मनि खोई ॥
आकर चारि लच्छ चौरासी । जोनि भ्रमत यह जिय अविनासी ॥
फिरत सदा माया कर प्रेरा । काल कर्म सुभाव गुन घेरा ॥
कवहुँक करि करुना नर देही । देत ईस विनु हेतु सनेही ॥

जब काहू कै देखहिं विपती । सुखी भए मानहुँ जग नृपती ॥
 स्वारथ रत परिवार विरोधी । लंपट काम लोभ अति क्रोधी ॥
 मातु पिता गुर विप्र न मानहिं । आपु गए अरु घालहिं आनहिं ॥
 करहिं मोह बस द्रोह परावा । संत संग हरि कथा न भावा ॥
 अवगुन सिंधु मंदमति कामी । वेद विदूषक परधन स्वामी ॥
 विप्र द्रोह पर द्रोह विसेपा । दंभ कपट जियँ धरें सुवेपा ॥
 दो०—ऐसे अधम मनुज खल कृतजुग त्रेताँ नाहिं ।

द्रापर कछुक वृंद बहु होइहहि कलिजुग माहि ॥ ४० ॥

पर हित सरिस धर्म नहिं भाई । पर पीड़ा सम नहिं अधमाई ॥
 निर्णय सकल पुरान बेद कर । कहेउँ तात जानहिं कोविद नर ॥
 नर सरीर धरि जे पर पीरा । करहिं ते सहहिं महा भव भीरा ॥
 करहिं मोह बस नर अध नाना । स्वारथ रत परलोक नसाना ॥
 कालरूप तिन्ह कहँ मैं भ्राता । सुभ अरु असुभ कर्म फल दाता ॥
 अस विचारि जे परम सयाने । भजहिं मोहि संसृत दुखजाने ॥
 त्यागहिं कर्म सुभासुभ दायक । भजहिं मोहि सुरनर मुनिनायक ॥
 संत असंतन्ह के गुन भापे । ते न परहिं भव जिन्ह लखिराखे ॥
 दो०—सुनहु तात माया कृत गुन अरु दोष अनेक ।

गुन यह उभय न देखिअहिं देखिअ सो अविवेक ॥ ४१ ॥

श्रीमुख वचन सुनत सब भाई । हरषे प्रेम न हृदयँ समाई ॥
 करहिं विनय अति वारहिं बारा । हनूमान हियँ हरष अपारा ॥
 पुनि रघुपति निज मंदिर गए । एहि विधि चरित करत नित नए ॥
 बार बार नारद मुनि आवहिं । चरित पुनीत राम के गावहिं ॥

नित नव चरित देखि मुनि जाहीं । ब्रह्मलोक सब कथा कहाहीं ॥
 सुनि विरंचि अतिसय सुख मानहिं । पुनि पुनि तात करहु गुन गानहिं
 सनकादिक नारदहि सराहहिं । जयपि ब्रह्म निरत मुनि आहहिं ॥
 सुनि गुन गान समाधि विसारी । सादर सुनहिं परम अधिकारी ॥

दो०—जीवनमुक्त ब्रह्मपर चरित सुनहिं तजि ध्यान ।

जें हरि क्यों न करहिं रति तिन्ह के हिय पापान ॥ ४२ ॥

एक बार रघुनाथ बोलाए । गुर द्विज पुरवासी सब आए ॥
 बैठे गुर मुनि अरु द्विज सज्जन । बोले वचन भगत भव भंजन ॥
 सुनहु सकल पुरजन मम बानी । कहउँ न कछु ममता उर आनी ॥
 नहिं अनीति नहिं कछु प्रभुताई । सुनहु करहु जो तुम्हहि सोहाई ॥
 सोइ सेवक प्रियतम मम सोई । मम अनुसासन मानै जोई ॥
 जाँ अनीति कछु भाषीं भाई । ताँ मोहि बरजहु भय विसराई ॥
 वडै भाग मानुप तनु पावा । सुर दुर्लभ सब ग्रंथन्हि गावा ॥
 साधन धाम मोच्छ कर डारा । पाइ न जेहिं परलोक सँवारा ॥

दो०—सो पश्य दुख पावइ सिर धुनि धुनि पछिताइ ।

कालहि कर्महि ईस्वरहि मिथ्या दोष लगाइ ॥ ४३ ॥

एहि तन कर फल विषय न भाई । स्वर्गउ स्वल्प अंत दुखदाई ॥
 नर तनु पाइ विषयँ मन देहों । पलटि सुधा ते सठ विष लेहीं ॥
 ताहि कवहुँ भल कहइ न कोई । गुंजा ग्रहइ परस मनि खोई ॥
 आकर चारि लच्छ चौरासी । जोनि भ्रमत यह जिव अविनासी ॥
 फिरत सदा माया कर प्रेरा । काल कर्म सुभाव गुन घेरा ॥
 कवहुँकर करि करुना नर देही । देत ईस विनु हेतु सनेही ॥

नर तनु भव चारिधि कहूँ वेरो । सन्मुख मरुत अनुग्रह मेरो ।
 करनधार सदगुर दृढ़ नावा । दुर्लभ साज सुलभ करि पावा ।
 दो०—जो न तरै भव सागर नर समाज अस पाइ ।
 सो कृत निंदक मंदमति आत्माहन गति जाइ ॥ ४४ ॥

जौ परलोक इहाँ सुख चहहूँ । सुनि मम वचन हृदयँ दृढ़ गहहूँ ॥
 सुलभ सुखद मारग यह भाई । भगति मोरि पुरान श्रुति गाई ॥
 ग्यान अगम प्रत्यूह अनेका । साधन कठिन न मन कहूँ टेका ॥
 करत कष्ट बहु पावइ कोऊ । भक्ति हीन मोहि प्रिय नहिँ सोऊ ॥
 भक्ति सुतंत्र सकल सुख खानी । विनु सतसंग न पावहिँ प्रानी ॥
 पुन्य पुंज विनु मिलहिँ न संता । सतसंगति संसृति कर अंता ॥
 पुन्य एक जग महुँ नहिँ दूजा । मन क्रम वचन विप्र पद पूजा ॥
 सानुकूल तेहि पर मुनि देवा । जो तजि कपडु करइ द्विज सेवा ॥
 दो०—औरउ एक गुपुत मत सवहि कहूँ कर जोरि ।

संकर भजन विना नर भगति न पावइ मोरि ॥ ४५ ॥

हहु भगति पथ कवन प्रयासा । जोग न मख जप तप उपवासा ॥
 ल सुभाव न मन कुटिलाई । जथा लाभ संतोष सदाई ॥
 दास कहाइ नर आसा । करइ तौ कहहु कहा विश्वासा ॥
 कहूँ का कथा बढ़ाई । एहि आचरन वस्य मैं भाई ॥
 न विग्रह आस न त्रासा । सुखमय ताहि सदा सव आसा ॥
 रंभ अनिकेत अमानी । अनघ अरोप दच्छ विग्यानी ॥
 सदा सज्जन संसर्गा । वृन सम विषय स्वर्ग अपवर्गा ॥
 पच्छ हठ नहिँ सठताई । दुष्ट तर्क मरु नहिँ

दो०—मम गुन ग्राम नाम रत गत ममता मः मोह ।

ता कर सुख सोइ जानइ परानंद संदोह ॥ ४६ ॥

सुनत सुधासम वचन राम के । गहे सबनि पद कृपाधाम के ॥

तनि जनक गुर वंधु हमारे । कृपा निधान ग्रान ते प्यारे ॥

तनु धनु धाम राम हितकारी । सबविधि तुम्ह प्रनतारति हारी ॥

अग्नि सिख तुम्ह विनु देइ न कोऊ । मातु पिता म्यारथ रत ओऊ ॥

हेतु रहित जग जुग उपकारी । तुम्ह तुम्हार सेवक असुरारी ॥

स्वारथ मीत सकल जग माहीं । सपनेहुँ प्रभु परमारथ नाहीं ॥

सब के वचन प्रेम रस साने । मुनि रघुनाथ हृदयँ हरपाने ॥

निज निज गृह गए आयसुपाई । वरनत प्रभु बतकही सुहाई ॥

दो०—उमा अवधवासी नर नारि कृतारथ रूप ।

मम सचिदानंद घन रघुनायक जहँ भूप ॥ ४७ ॥

एक वार घसिष्ट मुनि आए । जहाँ राम सुखधाम सुहाए ॥

अति आदर रघुनायक कीन्हा । पद पखारि पादोदक लीन्हा ॥

राम सुनहुँ मुनि कह कर जोरी । कृपासिंधु विनती कछु मोरी ॥

देखि देखि आचरन तुम्हारा । होत मोह मम हृदयँ अपारा ॥

महिमा अभिति वेद नहिँ जाना । मैं केहि भाँति कहउँ भगवाना ॥

उपरोहित्य कर्म अति मंदा । वेद पुरान सुमृति कर निंदा ॥

जब न लेउँ मैं तब विधि मोही । कहा लाभ आगेँ सुत तोही ॥

परमात्मा ब्रह्म नर रूपा । होइहि रघुकुल भूपन भूषा ॥

दो०—तत्र मैं हृदयँ विचारा जोग जग्य व्रत दान ।

जा कहूँ करिज सो पैहउँ धर्म न एहि सम आन ॥ ४८ ॥

जप तप नियम जोग निज धर्मा । श्रुति संभव नाना सुभ कर्मा ॥
 ग्यान दया दम तीरथ मज्जन । जहँ लगि धर्म कहत श्रुति सज्जन ॥
 आगम निगम पुरान अनेका । पढ़े सुने कर फल प्रभु एका ॥
 तव पद पंकज प्रीति निरंतर । सब साधन कर यह फल सुंदर ॥
 छूटइ मल कि मलहि के धोएँ । घृत कि पाव कोइ वारि बिलोएँ ॥
 प्रेम भगति जल बिनु रघुराई । अभिअंतर मल कबहुँ न जाई ॥
 सोइ सर्वग्य तग्य सोइ पंडित । सोइ गुन गृह विग्यान अखंडित ॥
 दच्छ सकल लच्छन जुत सोई । जाकेँ पद सरोज रति होई ॥

दो०—नाथ एक वार मागउँ राम कृपा करि देहु ।

जन्म जन्म प्रभु पद कमल कबहुँ घटै जनि नेहु ॥ ४९ ॥

अस कहि मुनि वसिष्ठ गृह आए । कृपासिंधु के मन अति भाए ॥
 हनूमान भरतादिक भ्राता । संग लिए सेवक सुखदाता ॥
 पुनि कृपाल पुर बाहेर गए । गज रथ तुरग मगावत भए ॥
 देखि कृपा करि सकल सराहे । दिए उचित जिन्ह जिन्ह तेइ चाहे ॥
 हरन सकल श्रम प्रभु श्रम पाई । गए जहाँ सीतल अवर्राई ॥
 भरत दीन्ह निज बसन डसाई । बैठे प्रभु सेवहिँ सब भाई ॥
 मारुतसुत तव मारुत करई । पुलक वपुष लोचन जल भरई ॥
 हनूमान सम नहिँ बड़भागी । नहिँ कोउ राम चरन अनुरागी ॥
 गिरिजा जासु प्रीति सेवकाई । वार वार प्रभु निज मुख गाई ॥

दो०—तेहिँ अवसर मुनि नारद आए करतल चीन ।

गावन लगे राम कल कीरति सदा नवीन ॥ ५० ॥

मामवलोक्य पंकज लोचन । कृपा बिलोकनि सोच विमोचन ॥

नील तामरस स्याम काम अरि । हृदय कंज मकरंद मधुप हरि ॥
जातुधान वरूथ धल भंजन । मुनि मञ्जन रंजन अध गंजन ॥
भूमुर ससि नव वृंद चलाहक । असग्न सग्न दीन जन गाहक ॥
भुज बल विपुल भार महि खंडित । खर दूपन विराध बध पंडित ॥
राधनारि सुखरूप भूपवर । जयदसरथ कुल कुमुद मुधाकर ॥
मुजस पुरान विदित निगमागम । गावत मुर मृनि मंत समागम ॥
कारुणीक व्यलीक मद खंडन । सध विधि कुमल कोमला मंडन ॥
कलि मल मथन नाम ममताहना तुलसिदास प्रभु पाहि प्रनत जन ॥

दो०—प्रेम सहित मुनि नारद चरति राम गुन प्राम ।

सोभासिंधु हृदयें धरि गए जहाँ विधि धाम ॥ ५१ ॥

गिरिजा मुनहु विसद यह कथा । मैं सब कहीं मोरि भनि जथा ॥
राम चरित सत कोटि अपारा । श्रुति सारदा न चरन पाग ॥
राम अनंत अनंत गुनानी । जन्म कर्म अनंत नामानी ॥
जल सीकर महिरज गनि जाहीं । रघुपति चरित न चरनि सिराहीं ॥
विमल कथा हरि पद दायनी । भगनि होइ मुनि अनपायनी ॥
उमा कहिउँ सब कथा सुहाई । जो भ्रमुंडि खगपविहि मुनाई ॥
कलुक राम गुन कहेउँ बखानी । अब का कहीं सो कहइ भवानी ॥
मुनि मुभ कथा उमा हरपानी । बाली अति विनीत मृदु बानी ॥
धन्य धन्य मैं धन्य पुरारी । मुनेउँ राम गुन भव भय हारी ॥

दो०—तुम्हरी कृपाँ कृपायतन अब कनकल्य न मोह ।

जानेउँ राम प्रताप प्रभु चिदानंद संशोह ॥ ५२(क) ॥

नाथ तवानन ससि स्रवत कथा सुधा रघुवीर ।

श्रवन पुटन्हि मन पान करि नहि अघात मति घीर ॥५२(ख)॥

राम चरित जे सुनत अघाहीं । रस विसेप जाना तिन्ह नाहीं ॥
जीवनमुक्त महामुनि जेऊ । हरि गुन सुनहिं निरंतर तेऊ ॥
भव सागर चह पार जो पावा । राम कथा ता कहँ दृढ़ नावा ॥
विषइन्ह कहँ पुनि हरि गुन ग्रामा । श्रवन सुखद अरु मन अभिरामा ॥
श्रवनवंत अस को जग माहीं । जाहि न रघुपति चरित सोहाहीं ॥
ते जड़ जीव निजात्मक घाती । जिन्हहि न रघुपति कथा सोहाती ॥
हरिचरित्र मानस तुम्ह गावा । सुनि मैं नाथ अमिति सुख पावा ॥
तुम्ह जो कही यह कथा सुहाई । कागभसुंड़ि गरुड़ प्रति गाई ॥

दो०—विरति ग्यान विग्यान दृढ़ राम चरन अति नेह ।

त्रायस तन रघुपति भगति मोहि परम संदेह ॥ ५३ ॥

नर सहस्र मँहँ सुनहु पुरारी । कोउ एक होइ धर्म व्रतधारी ॥
धर्मसील कोटिक मँहँ कोई । विषय विमुख विराग रत होई ॥
कोटि विरक्त मध्य श्रुति कहई । सम्यक ग्यान सकृत कोउ लहई ॥
ग्यानवंत कोटिक मँहँ कोऊ । जीवनमुक्त सकृत जग सोऊ ॥
तिन्ह सहस्र मँहँ सब सुख खानी । दुर्लभ ब्रह्म लीन विग्यानी ॥
धर्मसील विरक्त अरु ग्यानी । जीवनमुक्त ब्रह्मपर प्राणी ॥
सब ते सो दुर्लभ सुरराया । राम भगति रत गत मद माया ॥
सो हरिभगति काग किमि पाई । विखनाथ मोहि कहहु बुझाई ॥

दो०—राम परायन ग्यान रत गुनागार मति घीर ।

नाथ कहहु केहि कारन पायउ काक सरीर ॥ ५४ ॥

यह प्रभु चरित पवित्र सुहावा । कहहु कृपाल काग कहँ पावा ॥
 तुम्ह केहि भाँति सुना मदनारी । कहहु मोहि अति कौतुक भारी ॥
 गरुड़ महाग्यानी गुन रासी । हरि सेवक अति निकट निवासी ॥
 तेहिं केहि हेतु काग सन जाई । सुनी कथा मुनि निकर विदाई ॥
 कहहु कवन विधि भा संवादा । दोउ हरिभगत काग उरगादा ॥
 गौरि गिरा सुनि सरल मुहाई । बोले सिव सादर मुख पाई ॥
 धन्य सती पावन मति तोरी । रघुपति चरन प्रीति नहिं धोरी ॥
 सुनहु परम पुनीत इतिहासा । जो सुनि सकल लोक भ्रम नासा ॥
 उपजइ राम चरन बिम्बासा । भव निधि तर नर विनहिं प्रयासा ॥

दो०—नेसिअ प्रन्न विहंगपति कीन्हि काग सन जाइ ।

सो सब सादर कहिहउँ सुनहु उमा मन लाइ ॥ ५५ ॥

मैं जिमि कथा सुनी भव मोचनि । सो प्रसंग सुनु सुमुखि सुलोचनि
 प्रथम दच्छ गृह तव अवतारा । सती नाम तव रहा तुम्हारा ॥
 दच्छ जग्य तव भा अपमाना । तुम्ह अति क्रोध तजे तव प्राणा ॥
 मम अनुचरन्ह कीन्ह मख भंगा । जानहु तुम्ह सो सकल प्रसंगा ॥
 तव अति सोच भयउ मन मोरें । दुग्धी भयउँ वियोग प्रिय तोरें ॥
 सुंदर वन गिरि सरित तड़ागा । कौतुक देखत फिरउँ घेरागा ॥
 गिरि सुमेर उत्तर दिसि दूरी । नील सैल एक सुंदर भूरी ॥
 तामु कनकमय सिखर सुहाण । चारि चारु मोरे मन भाण ॥
 तिन्ह पर एक एक बिटप बिसाला । बट पीपर पाकरी
 सैलोपरि सर सुंदर सोहा । मनि सोपान

दो०—सीतल अमल मधुर जल जलज त्रिपुल बहुरंग ।

कूजत कल रव हंस गन गुंजत मंजुल भृंग ॥ ५६ ॥

तेहिं गिरि रुचिर वसइ खग सोई । तासु नास कल्पांत न होई ॥
 माया कृत गुन दोष अनेका । मोह मनोज आदि अविवेका ॥
 रहे व्यापि समस्त जग माहीं । तेहि गिरि निकट कबहुँ नहिं जाहीं
 तहुँ बसि हरिहि भजइ जिमि कागा । सो सुनु उमा सहित अनुरागा
 पीपर तरु तर ध्यान सो धरई । जाप जग्य पाकरि तर करई ॥
 आँब छाँह कर मानस पूजा । तजि हरि भजनु काजु नहिं दूजा ॥
 वर तर कह हरि कथा प्रसंगा । आवहिं सुनहिं अनेक विहंगा ॥
 राम चरित विचित्र विधि नाना । प्रेम सहित कर सादर गाना ॥
 सुनहिं सकल मति बिमल मराला । बसहिं निरंतर जे तेहिं ताला ॥
 जब मैं जाइ सो कौतुक देखा । उर उपजा आनंद विसेपा ॥

दो०—तब कछु काल मराल तनु धरि तहँ कीन्ह निवास ।

सादर सुनि रघुपति गुन पुनि आयउँ कैलास ॥ ५७ ॥

गिरिजा कहेउँ सो सब इतिहासा । मैं जेहि समय गयउँ खग पासा ॥
 अब सो कथा सुनहु जेहि हेतू । गयउ काग पहिं खग कुल केतू ॥
 जब रघुनाथ कीन्हि रन क्रीड़ा । समुझत चरित होति मोहि व्रीड़ा ॥
 इंद्रजीत कर आपु बंधायो । तब नारद मुनि गरुड़ पठायो ॥
 बंधन काटि गयो उरगादा । उपजा हृदयँ प्रचंड विपादा ॥
 प्रभु बंधन समुझत बहु भाँती । करत विचार उरग आराती ॥
 व्यापक ब्रह्म बिरज बागीसा । माया मोह पार परमीसा ॥
 सो अवतार सुनेउँ जग माहीं । देखेउँ सो प्रभाव कछु नाहीं ॥

दो०—भव वंघन ते छूहि नर जपि जा कर नाम ।

स्वयं निसाचर बाँधेउ नागपास सोइ राम ॥ ५८ ॥

नाना भाँति मनहि समुझावा । प्रगटन ग्यान हृदयँ भ्रम छावा ॥

खेद खिन्न मन तर्क बढ़ाई । भयउ मोहवस तुम्हरिहि नाई ॥

व्याकुल गयउ देवरिपि पार्हीं । कहेसि जो संसय निज मन माहीं ॥

मुनि नारदहि लागि अति दाया । सुनु खग प्रबल राम कै माया ॥

जो ग्यानिन्ह कर चित अपहरई । बरिआई विमोह मन करई ॥

जेहि बहु धार नचाया मोही । सोइ व्यापी विहंगपति तोही ॥

महामोह उपजा उर तारें । मिटिहि न वेगि कहें खग मोरें ॥

चतुरानन पहिँ जाहु खगेसा । सोइ करेहु जेहि होइ निदेसा ॥

दो०—अस कहि चले देवरिपि करत राम गुन गान ।

हरि माया बल धरनत पुनि पुनि परम मुजान ॥ ५९ ॥

तब खगपति विरंचि पहिँ गयऊ । निज संदेह सुनावत भयऊ ॥

मुनि विरंचि रामहि सिरु नावा । समुक्षि प्रताप प्रेम अति छावा ॥

मन महँ करइ विचार विधाता । मायावस कवि कोविद ग्याता ॥

हरि माया कर अमिति प्रभावा । विपुल बार जेहि मोहि नचाया ॥

अग जगमय जग मम उपराजा । नहिँ आचरज मोह खगराजा ॥

तब बोले विधि गिरा सुहाई । जान महेस राम प्रभुताई ॥

बनतेय संकर पहिँ जाह । तात अनत पृच्छहु जनि काह ॥

तहँ होइहि तब संसय हानी । चलेउ विहंग मुनत विधि पानी ॥

दो०—परमातुर विहंगपति आयउ तब मो पास ।

जात रहेउँ कुबेर गृह रहिहु उमा कैलास ॥ ६ ॥

तेहि मम पद सादर सिरु नावा । पुनि आपन संदेह सुनावा ।
 सुनि ता करि विनती मृदु बानी । प्रेम सहित मैं कहेउँ भवानी ।
 मिलेहु गरुड़ मारग महँ मोही । कवन भाँति समुझायौ तोही ।
 तवहि होइ सब संसय भंगा । जब बहु काल करिअ सतसंगा ।
 सुनिअ तहाँ हरि कथा सुहाई । नाना भाँति मुनिन्ह जो गाई ।
 जेहि महँ आदि मध्य अवसाना । प्रभु प्रतिपाद्य राम भगवाना ।
 नित हरि कथा होत जहँ भाई । पठवउँ तहाँ सुनहु तुम्ह जाई ।
 जाइहि सुनत सकल संदेहा । राम चरन होइहि अति नेहा ।

दो०—विनु सतसंग न हरि कथा तेहि विनु मोह न भाग ।
 मोह गएँ विनु राम पद होइ न दृढ़ अनुराग ॥ ६१ ॥

मिलहिं न रघुपति विनु अनुरागा । किएँ जोग तप ग्यान विरागा ।
 उत्तर दिसि सुंदर गिरि नीला । तहँ रह काकभुसुंडि सुसीला ।
 राम भगति पथ परम प्रवीना । ग्यानी गुन गृह बहु कालीना ।
 राम कथा सो कहइ निरंतर । सादर सुनहिं विविध विहंगवर ।
 जाइ सुनहु तहँ हरि गुन भूरी । होइहि मोह जनित दुख दूरी ।
 मैं जब तेहि सब कहा बुझाई । चलेउ हरिपि मम पद सिरु नाई ।
 ताते उमा न मैं समुझावा । रघुपति कृपाँ मरमृ मैं पावा ।
 होइहि कीन्ह कबहुँ अभिमाना । सो खोवै चह कृपानिधाना ।
 कछु तेहि ते पुनि मैं नहिं राखा । समुझइ खग खगही के भापा ।
 प्रभु माया बलवंत भवानी । जाहि न मोह कवन अस ग्यानी ।

दो०—ज्यानी भगत सिरोमनि त्रिमुचनपति कर जान ।

ताहि मोह माया नर पावैर करहि गुमान ॥६२(क)॥

मासपारायण, अट्टाईसवाँ विश्राम

दो०—सिय विरंचि कहूँ मोहड को है वपुरा आन ।

अस जियेँ जानि भजहि मुनि मायापति भगवान ॥६२(ख)॥

गयउ गरुड़ जहँ बसइ भुमुंडा । मति अकुंठ हरि भगति अखंडा ॥

देखि सँल प्रसन्न मन भयऊ । माया मोह सोच सब गयऊ ॥

करि तड़ाग भजन जलपाना । बट तर गयउ हृदयँ हरपाना ॥

बृद्ध बृद्ध विहंग तहँ आए । सुनै राम के चरित मुहाए ॥

कथा अरंभ करै सोइ चाहा । तेही समय गयउ खगनाहा ॥

आवत देखि सकल खगराजा । हरपेउ वायस सहित समाजा ॥

अति आदर खगपति कर कीन्हा । स्वागत पूछि सुआसन दीन्हा ॥

करि पूजा समेत अनुरागा । मधुर बचन तब बोलेउ कागा ॥

दो०—नाथ कृतारथ भयउँ मैं तब दरसन खगराज ।

आयसु देहु सो करौँ अच प्रभु आयहु केहि काज ॥६३(क)॥

सदा कृतारथ रूप तुम्ह कह मृदु बचन खगेस ।

जेहि कै अस्तुति सादर निज मुल कीन्हि महेस ॥६३(ख)॥

सुनहु तात जेहि कारन आयउँ । सो सब भयउ दरस तब पायउँ ॥

देखि परम पावन तब आश्रम । गयउ मोह संसय नाना भ्रम ॥

अब श्रीराम कथा अति पावनि । सदा मुखद दुख पुंज नसावनि ॥

सादर तात मुनावहु मोही । चार चार दिनवउँ प्रभु तोही ॥

सुनत गरुड़ कै गिरा विनीता । सरल मुग्ध मुखद सुपुनीता ॥

तेहिं मम पद सादर सिरु नावा । पुनि आपन संदेह सुनावा ॥
 सुनि ता करि बिनती मृदु बानी । प्रेम सहित मैं कहेउँ भवानी ॥
 मिलेहु गरुड मारग महँ मोही । कवन भाँति समुझावौं तोही ॥
 तबहिं होइ सब संसय भंगा । जब बहु काल करिअ सतसंगा ॥
 सुनिअ तहाँ हरि कथा सुहाई । नाना भाँति मुनिन्ह जो गाई ॥
 जेहि महँ आदि मध्य अवसाना । प्रभु प्रतिपाद्य राम भगवाना ॥
 नित हरि कथा होत जहँ भाई । पठवउँ तहाँ सुनहु तुम्ह जाई ॥
 जाइहि सुनत सकल संदेहा । राम चरन होइहि अति नेहा ॥

दो०—बिनु सतसंग न हरि कथा तेहि बिनु मोह न भाग ।

मोह गएँ बिनु राम पद होइ न दद अनुराग ॥ ६१ ॥

मिलहिं न रघुपति बिनु अनुरागा । किएँ जोग तप ग्यान विरागा ॥
 उत्तर दिसि सुंदर गिरि नीला । तहँ रह काकभुसुंडि सुसीला ॥
 राम भगति पथ परम प्रबीना । ग्यानी गुन गृह बहु कालीना ॥
 राम कथा सो कहइ निरंतर । सादर सुनहिं विविध विहंगवर ॥
 जाइ सुनहु तहँ हरि गुन भूरी । होइहि मोह जनित दुख दूरी ॥
 मैं जब तेहि सब कहा बुझाई । चलेउ हरपि मम पद सिरु नाई ॥
 ताते उमा न मैं समुझावा । रघुपति कृपाँ मरमु मैं पावा ॥
 होइहि कीन्ह कबहुँ अभिमाना । सो खोवै चह कृपानिधाना ॥
 कछु तेहि ते पुनि मैं नहिं राखा । समुझइ खग खगही कै भापा ॥
 प्रभु माया बलवंत भवानी । जाहि न मोह कवन अस ग्यानी ॥

दो०—ग्यानी भगत सिरोमनि त्रिभुवनपनि कर जान ।

ताहि मोह माया नर पावैर कहि गुमान ॥६२(क)॥

मासपारायण, अट्टाईसवाँ विश्राम

दो०—सिय विरेंचि कहूँ मोहड को हे चपुरा आन ।

अस जियै जानि भजहि मुनि नायापति भगवान ॥६२(ख)॥

गयउ गरुड जहँ बसइ भुमुंडा । मति अकुंठ हरि भगति अखंडा ॥

देखि सैल प्रसन्न मन भयऊ । माया मोह सोच सब गयऊ ॥

फरि तड़ाग मज्जन जलपाना । बट तर गयउ हृदयँ हरपाना ॥

पृथ्ठ पृथ्ठ विहंग तहँ आए । मुनै राम के चरित सुहाए ॥

कथा अरंभ करै सोइ चाहा । तेही समय गयउ खगनाहा ॥

आवत देखि सकल खगराजा । हरपेउ वायस सहित समाजा ॥

अति आदर खगपति कर कीन्हा । स्वागत पूछि सुआसन दीन्हा ॥

फरि पूजा समेत अनुरागा । मधुर बचन तब थोलेउ कागा ॥

दो०—नाथ कृतारथ भयउँ मैं तव दरसन रागराज ।

आयसु देहु सो करौं अच प्रभु आयहु केहि काज ॥६३(क)॥

सदा कृतारथ रूप तुम्ह कह मृदु बचन रागेस ।

जेहि कै अस्तुति सादर निज मुत्त कीन्हि महेत ॥६३(ख)॥

सुनहु तात जेहि कारन आयउँ । सो सब भयउ दरस तव पायउँ ॥

देखि परम पावन तव आश्रम । गयउ मोह संसय नाना भ्रम ॥

अब श्रीराम कथा अति पावनि । सदा सुखद दुख पुंज नसावनि ॥

सादर तात मुनावहु मोही । वार वार विनवउँ प्रभु तोही ॥

सुनत गरुड कै गिरा विनीता । सरल सुप्रेम सुखद सुपुनीता ॥

भयउ तासु मन परम उछाहा । लाग कहै रघुपति गुन गाहा ॥
 प्रथमहिं अति अनुराग भवानी । रामचरित सर कहेसि बखानी ॥
 पुनि नारद कर मोह अपारा । कहेसि बहुरि रावन अवतारा ॥
 प्रभु अवतार कथा पुनि गाई । तव सिसुं चरित कहेसि मन लाई ॥
 दो०—वालचरित कहि विविधि विधि मन महँ परम उछाह ।

रिषि आगवन कहेसि पुनि श्रीरघुवीर विवाह ॥ ६४ ॥

बहुरि राम अभिषेक प्रसंगा । पुनि नृप वचन राज रस भंगा ॥
 पुरवासिन्ह कर विरह विपादा । कहेसि राम लछिमन संवादा ॥
 विपिन गवन केवट अनुरागा । सुरसरि उत्तरि निवास प्रयागा ॥
 वालमीकि प्रभु मिलन बखाना । चित्रकूट जिमि वसे भगवाना ॥
 सचिवागवन नगर नृप मरना । भरतागवन प्रेम बहु बरना ॥
 करि नृप क्रिया संग पुरवासी । भरत गए जहँ प्रभु सुखरासी ॥
 पुनि रघुपति बहुविधि समुझाए । लै पादुका अवधपुर आए ॥
 भरत रहनि सुरपति सुत करनी । प्रभु अरु अत्रि भेंट पुनि वरनी ॥
 दो०—कहि विराध वध जेहि विधि देह तजी सरभंग ।

वरनि सुतीछन प्रीति पुनि प्रभु अगस्ति सतसंग ॥ ६५ ॥

कहि दंडक वन पावनताई । गीध मइत्री पुनि तेहिं गाई ॥
 पुनि प्रभु पंचवटीं कृत बासा । भंजी सकल मुनिन्ह की त्रासा ॥
 पुनि लछिमन उपदेस अनूपा । सूपनखा जिमि कीन्हि कुरूपा ॥
 खर दूपन वध बहुरि बखाना । जिमि सब मरमु दसानन जाना ॥
 दसकंधर मारीच बतकही । जेहि विधि भई सो सब तेहिं कही ॥
 पुनि माया सीता कर हरना । श्रीरघुवीर विरह कछु बरना ॥

पुनि प्रभु गीध क्रिया जिमि कीन्ही। वधि कबंध सवरिहि गति दीन्ही
बहुरि विरह बरनन रघुवीरा। जेहि विधि गण सरोवर तीरा ॥

दो०—प्रभु नारद संवाद कहि भारुति मिलन प्रसंग ।

पुनि सुपीन मिताई बालि प्रान कर भंग ॥ ६६(क) ॥

कपिहि तिलक करि प्रभु कुन सैल प्रचरण बास ।

बरनन बरपा सरद अरु राम रोप कपि बास ॥ ६६(ख) ॥

जेहि विधि कपिपति कीस पठाए। सीता खोज सकल दिसि धाए ॥
बिबर प्रवेश कीन्ह जेहि भाँती। कपिन्ह बहोरि मिला संपाती ॥
सुनि सब कथा समीरकुमारा। नाघत भयउ पयोधि अपारा ॥
लंकाँ कपि प्रवेश जिमि कीन्हा। पुनि सीतहि धीरजु जिमि दीन्हा
बन उजारि रावनहि प्रयोधी। पुर दहि नाघेउ बहुरि पयोधी ॥
आए कपि सब जहँ रघुराई। चंद्रेही की कुसल मुनाई ॥
सेन समेति जथा रघुवीरा। उतरे जाइ धारिनिधि तीरा ॥
मिला विभीषन जेहि विधि आई। सागर निग्रह कथा मुनाई ॥

दो०—सेतु पाँधि कपि सेन जिमि उतरी सागर पार ।

गयउ बसीठी धीरबर जेहि विधि बालिकुमार ॥ ६७(क) ॥

निसिचर कीस लराई बरनिसि विविधि प्रकार ।

कुंभकरन घननाद कर बल पीर्य संपार ॥ ६७(ख) ॥

निसिचर निकर मरन विधि नाना। रघुपति रावन समर बखाना ॥
रावन बध मंदोदरि सोका। राज विभीषन देव असोका ॥
सीता रघुपति मिलन बहोरी। गुरन्ह कीन्हि अस्तुतिकर जोरो ॥
पुनि पुष्पक चढ़ि कपिन्ह समेता। अवध चले प्रभु कृपा निवे

जेहि विधि राम नगर निज आए । बायस विसद चरित सब गाए ॥
 कहेसि बहोरि राम अभिषेका । पुर वरनत नृपनीति अनेका ॥
 कथा समस्त भुसुंड बखानी । जो मैं तुम्ह सन कही भवानी ॥
 सुनि सब राम कथा खगनाहा । कहत बचन मन परम उछाहा ॥

सो०—गयउ मोर संदेह सुनेउँ सकल रघुपति चरित ।

भयउ राम पद नेह तव प्रसाद वायस तिलक ॥६८(क)॥

मोहि भयउ अति मोह प्रभु बंधन रन महुँ निरखि ।

धिदानंद संदोह राम विकल कारन कवन ॥६८(ख)॥

देखि चरित अति नर अनुसारी । भयउ हृदयँ मम संसय भारी ॥
 सोइ भ्रम अब हित करि मैं माना । कीन्ह अनुग्रह कृपानिधाना ॥
 जो अति आतप व्याकुल होई । तरु छाया सुख जानइ सोई ॥
 जौं नहिं होत मोह अति मोही । मिलतेउँ तात कवन विधितोही ॥
 सुनतेउँ किमि हरि कथा सुहाई । अति विचित्र बहु विधि तुम्ह गाई ॥
 निगमागम पुरान मत एहा । कहहिं सिद्ध मुनि नहिं संदेहा ॥
 संत विसुद्ध मिलहिं परि तेही । चितवहिं राम कृपा करि जेही ॥
 राम कृपाँ तव दरसन भयऊ । तव प्रसाद सब संसय गयऊ ॥
 दो०—सुनि विहंगपति बानी सहित विनय अनुराग ।

पुलक गात लोचन सजल मन हरपेउ अति काग ॥ ६९(क)॥

श्रोता सुमति सुसील सुचि कथा रसिक हरि दास ।

पाइ उमा अति गोप्यमपि सज्जन करहिं प्रकास ॥६९(ख)॥

बोलेउ काकभसुंड बहोरी । नभग नाथ पर प्रीति न थोरी ॥
 सब विधि नाथ पूज्य तुम्ह मेरे । कृपापात्र रघुनायक केरे ॥

तुम्हहि न संसय मोह न माया । मो परनाथ कीन्हि तुम्ह दाया ॥
 पठइ मोह मिस खगपति तोही । रघुपति दीन्हि बड़ाई मोही ॥
 तुम्ह निज मोह कही खग साई । सो नहिं कछु आचरज गोसाई ॥
 नारद भव विरंचि सनकादी । जे मुनिनायक आतमवादी ॥
 मोह न अंध कीन्ह केहि केही । को जग काम नचाव न जेही ॥
 वस्नां केहि न कीन्ह घौराहा । केहि करहृदय क्रोध नहिं दाहा ॥
 दो०—ग्यानी तापस सूर कवि कोविद गुन आगार ।

केहि कै लोभ विडंबना कीन्हि न एहिं संसार ॥७०(क)॥

श्री मद बक्र न कीन्ह केहि प्रमुता षधिर न काहि ।

मृगलोचनि के नैन सर को अस लाग न जाहि ॥७०(ख)॥

गुन कृत सन्यपात नहिं केही । कोउ न मान मद तजेउ निवेही ॥
 जोधन ज्वर केहि नहिं बलकावा । ममता केहि कर जस न नसावा ॥
 मच्छर काहि कलंक न लावा । काहिन सोक समीर डौलावा ॥
 चिंता साँपिनि को नहिं खाया । को जग जाहि न व्यापी माया ॥
 कीट मनोरथ दारु सरीरा । जेहि न लाग घुन को अस धीरा ॥
 सुत बित लोक ईपना तीनी । केहि कै मति इन्ह कृत न मलीनी ॥
 यह सत्र माया कर परिवारा । प्रबल अभिति को घरनै पारा ॥
 सिव चतुरानन जाहि डेराही । अपर जीव केहि लेखे माही ॥

दो०—ग्यापि रहेउ संसार महै माया कटक प्रचंड ।

सेनापति क्रमादि भट दंभ षपट पापंड ॥७१(क)॥

सो दासी रघुधीर के समुहो मिथ्या सोपि ।

छूट न राम कृपा बिनु नाथ कहउं मद रोषि ॥७१(ख)॥

जो माया सब जगहि नचावा । जासु चरित लखि काहुँ न पावा ॥
 सोइ प्रभु भ्रू विलास खगराजा । नाच नटी इव सहित समाजा ॥
 सोइ सच्चिदानंद घन रामा । अज विग्यान रूप बल धामा ॥
 व्यापक व्याप्य अखंड अनंता । अखिल अमोघसक्ति भगवंता ॥
 अगुन अदभ्र गिरा गोतीता । सबदरसी अनवद्य अजीता ॥
 निर्मम निराकार निरमोहा । नित्य निरंजन सुख संदोहा ॥
 प्रकृति पार प्रभुसत्र उर वासी । ब्रह्म निरीह विरज अविनासी ॥
 इहाँ मोह कर कारन नाहीं । रवि सन्मुख तम कबहुँ कि जाहीं ॥

दो०—भगत हेतु भगवान प्रभु राम धरेउ तनु भूप ।

किए चरित पावन परम प्राकृत नर अनुरूप ॥७२(क)॥

जथा अनेक वेप धरि नृत्य करइ नट कोइ ।

सोइ सोइ भाव देखावइ आपुन होइ न सोइ ॥७२(ख)॥

असि रघुपति लीला उरगारी । दनुज विमोहनि जन सुखकारी ॥
 जे मति मलिन विषयवस कामी । प्रभु पर मोह धरहि इमि स्वामी ॥
 नयन दोष जा कहुँ जव होई । पीत वरन ससि कहुँ कह सोई ॥
 जव जेहि दिसि भ्रम होइ खगोसा । सो कह पच्छिम उयउ दिनेसा
 नौकारूढ़ चलत जग देखा । अचल मोह वस आपुहि लेखा ।
 बालक भ्रमहिं न भ्रमहिं गृहादी । कहहिं परस्पर मिथ्यावादी ।
 हरि विषइक अस मोह विहंगा । सपनेहुँ नहिं अग्यान प्रसंगा ।
 मायावस मतिमंद अभागी । हृदयँ जमनिका बहुबिधि लागी
 ते सठ हठ वस संसय करहीं । निज अग्यान राम पर धरहीं

दो०—काम क्रोध मद लोभ रत गृहासक दुस्वरूप ।

ते किमि जानहि रघुपतिहि मूढ़ परे तम कूप ॥७३(क)॥

निर्गुन रूप सुलभ अति सगुन जान नहि कोइ ।

सुगम अगम नाना चरित सुनि मुनि मन भ्रम होइ ॥७३(ख)॥

सुनु खगेस रघुपति प्रभुताई । कहउँ जथामति कथा गुहाई ॥

जेहि विधि मोह भयउ प्रभु मोही । सोउ सब कथा मुनावउँ तोही ॥

राम कृपा भानन तुम्ह ताता । हरि गुन प्रीति मोहि मुखदाता ॥

ताते नहिं कष्ट तुम्हहिं दुरावउँ । परम रहस्य मनोहर गावउँ ॥

सुनहु राम कर सहज सुभाऊ । जन अभिमान न राखहिं काऊ ॥

संसृत मूल बलप्रद नाना । सकल सोक दायक अभिमाना ॥

ताते करहिं कृपानिधि दूरी । सेवक पर ममता अति भूरी ॥

जिमि सिमु तन व्रन होइ गोश्राई । मातु चिराव कठिन की नाई ॥

दो०—जदपि प्रथम दुख पावइ रोवइ बाल अधीर ।

व्याधि नास हित जननी गनति न सो सिंसु पीर ॥७४(क)॥

तिमि रघुपति निज दास कर हरहिं मान हित लागि ।

तुलसिदास ऐसे प्रभुहि कस न भजहु भ्रम त्यागि ॥७४(ख)॥

राम कृपा आपनि जइताई । कहउँ खगेस सुनहु मन लाई ॥

जब जब राम मनुज तनु धरहीं । भक्त हेतु लीला बहु करहीं ॥

तब तब अवधपुंगु भैं जाऊँ । बालचरित बिलोकि हरपाऊँ ॥

जन्म महोत्सव देखउँ जाई । वरप पाँच तहँ रहउँ लोभाई ॥

इष्टदेव मम बालक रामा । सोभा वषुष कोटि सत कामा ।

निज प्रभु वदन निहारि निहारी । लोचन मुकल करउँ उरगारी ॥

लघुवायस बपु धरि हरि संग। देखउँ बालचरित बहुरंगा ॥

दो०—लरिकाईं जहँ जहँ फिरहिं तहँ तहँ संग उड़ाउँ ।

जूठनि परइ अजिर महँ सो उठाइ करि खाउँ ॥७५(क)॥

एक बार अतिसय सब चरित किए रघुवीर ।

सुमिरत प्रभु लीला सोइ पुलकित भयउ सरार ॥७५(ख)॥

कहइ भसुंड सुनहु खगनायक । राम चरित सेवक सुखदायक ॥

नृप मंदिर सुंदर सब भाँती । खचित कनक मनि नाना जाती ॥

वरनि न जाइ रुचिर अँगनाई । जहँ खेलहिं निते चारिउ भाई ॥

बालबिनोद करत रघुराई । विचरत अजिर जननि सुखदाई ॥

मरकत मृदुल कलेवर स्यामा । अंग अंग प्रति छवि बहु कामा ॥

नव राजीव अरुन मृदु चरना । पदजरुचिर नख ससि दुति हरना ॥

ललित अंक कुलिसादिक चारी । नूपुर चारु मधुर रवकारी ॥

चारु पुरट मनि रचित बनाई । कटि किंकिनि कल मुखर सुहाई ॥

दो०—रेखा त्रय सुंदर उदर नाभी रुचिर गँभीर ।

उर आयत आजत विविधि बाल विभूषन चीर ॥ ७६ ॥

अरुन पानि नख करज मनोहर । बाहु विसाल विभूषन सुंदर ॥

कंध बाल केहरि दर ग्रीवा । चारु चिबुक आनन छवि सींवा ॥

कलवल बचन अधर अरुनारे । दुइ दुइ दसन विसद वर वारे ॥

ललित कपोल मनोहर नासा । सकल सुखद ससि कर समहासा ॥

नील कंज लोचन भव मोचन । आजत भाल तिलक गोरोचन ॥

बिकट भृकुटि सम श्रवन सुहाए । कुंचित कच मेचक छवि छाए ॥

पीत झीनि झगुली तन सोही । किलकनि चितवनि भावति मोही ॥

रूप रासि नृप अजिर विहारी । नाचहिं निज प्रतिविंब निहारी ॥
मोहि सन करहिं विविधि विधिक्रीड़ा । वरनत मोहि होति अति व्रीडा
किलकत मोहि धरन जब धावहिं । चलउँ भागितव पूष देखवावहिं ॥

दो०—आवत निकट हँसहि प्रभु भाजत रुदन कराहि ।

जाउँ समीप गहन पद फिरि फिरि चितइ पराहिं ॥७७(क)॥

प्राहन सिमु इव लीला देखि भयउ मोहि मोह ।

कथन चरित्र करत प्रभु चिदानंद संदोह ॥७७(ख)॥

एतना मन आनत खगराया । रघुपति प्रेरित व्यापी माया ॥
सो माया न दुखद मोहि काहीं । आन जीव इव संसृत नाहीं ॥
नाथ इहाँ कछु कारन आना । सुनहु सों सावधान हरिजाना ॥
ग्यान अखंड एक सीतावर । माया वस्य जीव सचराचर ॥
जों सब कै रह ग्यान एकरस । ईस्वर जीवहि भेद कहहु कम ॥
माया वस्य जीव अभिमानी । ईस वस्य माया गुन स्वानी ॥
परवस जीव स्ववस भगवंता । जीव अनेक एक श्रीकंता ॥
मुधा भेद जद्यपि कृत माया । विनु हरि जाइ न कोटि उपाया ॥

दो०—रामचंद्र के भजन विनु जो चह पद निर्वाण ।

ग्यानवंत अपि सो नर पमु विनु पूँछ विपान ॥७८(क)॥

राकापति षोडस उअहि तारागन समुदाइ ।

सकल गिरिन्ह दर लाइअ विनुरविरानि न जाइ ॥७८(ख)॥

ऐसेहिं हरि विनु भजन खगेसा । मिटइ न जीवन्ह केर कलेसा ॥
हरि सेवकहि न न्याप अविद्या । प्रभु प्रेरित व्यापइ तेहि विद्या ॥
ताते नास न होइ दास कर । भेद भगति, ~~व्यापइ~~ विद्वं

तिन्ह ते पुनि मोहि प्रिय निज दासा । जेहि गति मोरि न दूसरि आसा ॥
 पुनि पुनि सत्य कहउँ तोहि पाहीं । मोहि सेवक सम प्रिय कोउ नाहीं ॥
 भगति हीन बिरंचि किन होई । सब जीवहु सम प्रिय मोहि सोई ॥
 भगतिवंत अति नीचउ प्रानी । मोहि प्रानप्रिय असि मम बानी ॥

दो०—सुचि सुसील सेवक सुमति प्रिय कहु काहि न लाग ।

श्रुति पुरान कह नीति असि सावधान सुनु काग ॥ ८६ ॥

एक पिता के विपुल कुमारा । होहि पृथक गुन सील अचारा ॥
 कोउ पंडित कोउ तापस ग्याता । कोउ धनवंत खर कोउ दाता ॥
 कोउ सर्वग्य धर्मरत कोई । सब पर पितहि प्रीति सम होई ॥
 कोउ पितु भगत बचन मन कर्मा । सपनेहुँ जान न दूसर धर्मा ॥
 सो सुत प्रिय पितु प्रान समाना । जद्यपि सो सब भाँति अयाना ॥
 एहि विधि जीव चराचर जेते । त्रिजग देव नर असुर समेते ॥
 अखिल बिस्व यह मोर उपाया । सब पर मोहि बरावरि दाया ॥
 तिन्ह महँ जो परिहरि मद माया । भजै मोहि मन बच अरु काया ॥

दो०—पुरुष नपुंसक नारि वा जीव चराचर कोइ ।

सर्व भाव भज कपट तजि मोहि परम प्रिय सोइ ॥ ८७(क) ॥

सो०—सत्य कहउँ खग तोहि सुचि सेवक मम प्रानप्रिय ।

अस विचारि भजु मोहि परिहरि आस भरोस सब ॥ ८७(ख) ॥

कबहुँ काल न ब्यापिहि तोही । सुमिरेसु भजेसु निरंतर मोही ॥
 प्रभु बचनामृत सुनि न अघाऊँ । तनु पुलकित मन अति हरपाऊँ ॥
 सो सुख जानइ मन अरु काना । नहिँ रसना पहिँ जाइ बखाना ॥
 प्रभु सोभा सुख जानहिँ नयना । कहि किमि सकहिँ तिन्हहि नहिँ बयना ॥

नर गंधर्व भूत बेताला। किंनरनिसिचरपमुखगव्याला ॥
 देव दनुज गन नाना जाती। सकल जीव तहँ आनहि भाँती ॥
 महिसरिसागरसरगिरिनाना। सब प्रपंच तहँ आनइ आना ॥
 अंडकोस प्रति प्रति निज रूपा। देखेउँ जिनस अनेक अनूपा ॥
 अवधपुरी प्रति भुवन निनारी। सरजू भिन्न भिन्न नर नारी ॥
 दसरथ कौसल्या सुनु ताता। विविध रूप भरतादिक भ्राता ॥
 प्रति ब्रह्मांड राम अवतारा। देखेउँ बालबिनोद अपारा ॥

दो०—भिन्न भिन्न मै दीख सघु अति विचित्र हरिजान ।

अगनित भुवन फिरेउँ प्रभु राम न देखेउँ आन ॥८१(क)॥

सोइ सिसुपन सोइ सोभा सोइ कृपाल रघुबीर ।

भुवन भुवन देखत फिरेउँ प्रेरित मोह समीर ॥८१(ख)॥

अमत मोहि ब्रह्मांड अनेका। धीते मनहुँ कल्प सत एका ॥
 फिरत फिरत निज आश्रम आयउँ। तहँ पुनि रहि कलु काल गवाँयउँ
 निज प्रभु जन्म अवध सुनि पायउँ। निर्भर प्रेम हरषि उठि धायउँ ॥
 देखेउँ जन्म महोत्सव जाई। जेहि विधि प्रथम कहा मँ गाई ॥
 राम उदर देखेउँ जग नाना। देखत बनइ न जाइ बखाना ॥
 तहँ पुनि देखेउँ राम सुजाना। माया पति कृपाल भगवाना ॥
 करेउँ विचार बहोरि बहोरी। मोह कलिल व्यापित मति मोरी ॥
 उभय घरी मँ सव देखा। भयउँ भ्रमित मन मोह विसेपा ॥

दो०—देखि कृपाल विकल मोहि विहँसे तव रघुबीर ।

विहँसतही मुख चाहेर आयउँ सुनु मतिधीर ॥८१(क)॥

भ्रमतेँ चकित राम मोहि देखा । बिहँसे सो सुनु चरित विसेषा ॥
 तेहि कौतुक कर मरमु न काहँ । जाना अनुज न मातु पिताहँ ॥
 जानु पानि धाए मोहि धरना । स्यामल गात अरुन कर चरना ॥
 तव मैं भागि चलेउँ उरगारी । राम गहन कहँ भुजा पसारी ॥
 जिमि जिमि दूरि उड़ाउँ अकासा । तहँ भुज हरि देखउँ निज पासा ॥

दो०—ब्रह्मलोक लागि गयउँ मैं चितयउँ पाछ उड़ात ।

जुग अंगुल कर बीच सब राम भुजहि मोहि तात ॥७९(क)॥

सप्तावरन भेद करि जहाँ लगें गति मोरि ।

गयउँ तहाँ प्रभु भुज निरखि व्याकुल भयउँ बहोरि ॥७९(ख)॥

मूदेउँ नयन त्रसित जव भयऊँ । पुनि चितवत कोसलपुर गयऊँ ॥
 मोहि विलोकि राम मुसुकाहीं । बिहँसत तुरत गयउँ मुख माहीं ॥
 उदर माझ सुनु अंडज राया । देखेउँ बहु ब्रह्मांड निकाया ॥
 अति विचित्र तहँ लोक अनेका । रचना अधिक एक ते एका ॥
 कोटिन्ह चतुरानन गौरीसा । अगनित उडगन रवि रजनीसा ॥
 अगनित लोकपाल जम काला । अगनित भूधर भूमि विसाला ॥
 सागर सरि सर विपिन अपारा । नाना भाँति सृष्टि बिस्तारा ॥
 सुर मुनि सिद्ध नाग नर किंनर । चारि प्रकार जीव सचराचर ॥

दो०—जो नहि देखा नहि सुना जो मनहूँ न समाइ ।

सो सब अद्भुत देखेउँ वरनि कवनि विधि जाइ ॥८०(क)॥

एक एक ब्रह्मांड महुँ रहउँ वरष सत एक ।

एहि विधि देखत फिरउँ मैं अंड कटाह अनेक ॥८०(ख)॥

लोक लोक प्रति भिन्न विधाता । भिन्न विष्णु सिव मनु दिसित्राता ॥

नर गंधर्व भूत वेताला। किंनरनिसिचरपमुखगव्याला ॥
 देव दनुज गन नाना जाती। सकल जीव तहँ आनहि भाँती ॥
 महिसरिसागरसरगिरिनाना। सब प्रपंच तहँ आनइ आना ॥
 अंडकोस प्रति प्रति निज रूपा। देखेउँ जिनस अनेक अनूपा ॥
 अवधपुरी प्रति भुवन निनारी। सरजू भिन्न भिन्न नर नारी ॥
 दसरथ काँसल्या सुनु ताता। विविध रूप भरतादिक भ्राता ॥
 प्रति ब्रह्मांड राम अवतारा। देखेउँ बालविनोद अपारा ॥

दो०—भिन्न भिन्न मैं दीख सबु अति विचित्र हरिजान ।

अगनित भुवन फिरेउँ प्रभु राम न देखेउँ आन ॥८१(क)॥

सोइ सिसुपन सोइ सोभा सोइ कृपाल रघुबीर ।

भुवन भुवन देखत फिरउँ प्रेरित मोह समीर ॥८१(ख)॥

अमर मोहि ब्रह्मांड अनेका। घीते मनहुँ कल्प सत एका ॥
 फिरत फिरत निज आश्रम आयउँ। तहँ पुनि रहि कछु काल गवाँयउँ
 निज प्रभु जन्म अवध सुनि पायउँ। निर्भर प्रेम हरपि उठि धायउँ ॥
 देखेउँ जन्म महोत्सव जाई। जेहि विधि प्रथम कहा मैं गाई ॥
 राम उदर देखेउँ जग नाना। देखत बनइ न जाइ बखाना ॥
 तहँ पुनि देखेउँ राम सुजाना। माया पति कृपाल भगवाना ॥
 करउँ विचार बहोरि बहोरी। मोह कलिल व्यापित मति मोरी ॥
 उभय घरी महँ मैं सब देखा। भयउँ अमित मन मोह विसेपा ॥

दो०—देखि कृपाल विकल मोहि विहँसे तव रघुबीर ।

विहँसतही मुख बाहेर आयउँ सुनु मतिधीर ॥८२(क)॥

सोइ लरिकाई मो सन करन लग्ये पुनि राम ।

कोटि भाँति समुझावउँ मनु न लहइ विश्रान ॥८२(ख)॥

देखि चरित यह सो प्रभुताई । समुझत देह दसा बिसराई ॥

धरनि परेउँ मुख आव न बाता । त्राहि त्राहि आरत जन त्राता ॥

प्रेमाकुल प्रभु मोहि बिलोकी । निज माया प्रभुता तव रोकी ॥

कर सरोज प्रभु मम सिर धरेऊ । दीनदयाल सकल दुख हरेऊ ॥

कीन्ह राम मोहि विगत विमोहा । सेवक सुखद कृपा संदोहा ॥

प्रभुता प्रथम विचारि विचारी । मन महँ होइ हरष अति भारी ॥

भगत बछलता प्रभु कै देखी । उपजी मम उर प्रीति विसेषी ॥

सजलनयन पुलकित कर जोरी । कीन्हिउँ बहु विधि विनय बहोरी ॥

दो०—सुनि सप्रेम मम वानी देखि दीन निज दास ।

बचन सुखद गंभीर मृदु बोले रमानिवास ॥८३(क)॥

काकभसुंडि मागु बर अति प्रसन्न मोहि जानि ।

अनिमादिकसिधि अपर रिधि मोच्छ सकल सुख त्वानि ॥८३(ख)॥

ग्यान विवेक विरति बिग्याना । मुनि दुर्लभ गुन जे जग नाना ॥

आजु देउँ सब संसय नाही । मागु जो तोहि भाव मन माहीं ॥

सुनि प्रभु बचन अधिक अनुरागेउँ । मन अनुमान करन तव लागेउँ ॥

प्रभु कह देन सकल सुख सही । भगति आपनी देन न कही ॥

भगति हीन गुन सब सुख ऐसे । लवन विना बहु बिंजन जैसे ॥

भजन हीन सुख कवने काजा । अस विचारि बोलेउँ स्वगराजा ॥

जौं प्रभु होइ प्रसन्न बर देहू । मो पर करहु कृपा अरु नेहू ॥

मन भावत बर मागउँ स्वामी । तुम्ह उदार उर अंतरजामी ॥

दो०—कर्मिण्ड भवति विन्दु नद शुभ सुख लो वाग ।

जेहे मोवत जेगोत मुनि म्नु क्कण्ट कोट म्नु । ८५ (५) ॥

मन्त क्कण्टल मन्त जेहे ह्य त्तिह् सुख वाग ।

कोट त्तिव म्गनि कोहे म्नु देह् श्य क्कोः ॥ ८५ (६) ॥

एवमन्तु क्कहि रक्कुह्लनापक। कोहे ह्दत म्नु सुख रक्कु ।

मुनु वापम नै सहज म्पला। कोहेन क्कण्टि अन म्पला ।

सुव सुव म्त्वानि भगति ते नामो। नोहे म्नु कोट कोहे म्नु रक्कु म्को

जो मुनि कोटि जवन नहि ल्हहो। जे ज्ज ज्ज म्नु म्नु म्नु म्नु

रीक्षेउं देखि तोरि चतुराई। नोहे म्नु म्नु कोहे म्नु म्नु

मुनु विहंग प्रसाद भव मोरे। नव तुभ म्नु म्नु म्नु म्नु

भगति ग्यान विन्यान विरागा। जेज च्चत्त रक्कु विभागा ॥

जानय ते सबही कर भेदा। मन प्रसाद नहि साधन रोदा ॥

दो०—माया संभव भन सब अथ न म्नु म्नु म्नु म्नु

जानेसु म्नु अनादि अथ अणुन मुनाहर मोहे । ८५ (७) ॥

मोहि भगत प्रिय संतत अन विचारि मुनु वाग ।

कायें वचन मन मम पद करेसु अपल अनुताग ॥ ८५ (८) ॥

अथ मुनु परम विमल मम चानी। सत्य सुगम निगमादि परवानी ॥

निज सिद्धांत सुनावउं तोही। मुनु मन परु सर सभि भजु मोही ॥

मम माया संभव संसारा। जीव पराचर विविधि प्रकारा ॥

सब मम प्रिय सब मम उपजाए। सप ते अभि रु म्नु ज मोहि भाए ॥

तिन्ह महें द्विज द्विज महें श्रुतिधारी। तिन्ह महें निगमभरम

तिन्ह महें प्रिय विरक्त पुनि ग्यानी। ग्यानि म्नु ते अभि प्रिय

तिन्ह ते पुनि मोहि प्रिय निज दासा । जेहि गति मोरि न दूसरि आसा ॥
 पुनि पुनि सत्य कहउँ तोहि पाहीं । मोहि सेवक सम प्रिय कोउ नाहीं ॥
 भगति हीन विरंचि किन होई । सब जीवहु सम प्रिय मोहि सोई ॥
 भगतिवंत अति नीचउ प्राणी । मोहि प्रानप्रिय असि मम बानी ॥
 दो०—सुचि सुसील सेवक सुमति प्रिय कहु काहि न लाग ।

श्रुति पुरान कह नीति असि सावधान सुनु काग ॥ ८६ ॥

एक पिता के विपुल कुमारा । होहिं पृथक गुन सील अचारा ॥
 कोउ पंडित कोउ तापस ग्याता । कोउ धनवंत खर कोउ दाता ॥
 कोउ सर्वग्य धर्मरत कोई । सब पर पितहि प्रीति सम होई ॥
 कोउ पितु भगत वचन मन कर्मा । सपनेहुँ जान न दूसर धर्मा ॥
 सो मुत प्रिय पितु प्रान समाना । जद्यपि सो सब भाँति अयाना ॥
 एहि विधि जीव चराचर जेते । त्रिजग देव नर असुर समेते ॥
 अखिल विश्व यह मोर उपाया । सब पर मोहि बरावरि दाय्या ॥
 तिन्ह महँ जो परिहरि मद माया । भजै मोहि मन बच अरु काया ॥

दो०—पुरुष नपुंसक नारि वा जीव चराचर कोइ ।

सर्व भाव भज कपट तजि मोहि परम प्रिय सोइ ॥ ८७ (क) ॥

सो०—सत्य कहउँ खग तोहि सुचि सेवक मम प्रानप्रिय ।

अम विचारि भजु मोहि परिहरि आस भरोस सब ॥ ८७ (ख) ॥

कबहुँ काल न व्यापिहि तोही । सुमिरेसु भजेसु निरंतर मोही ॥
 प्रभु वचनामृत सुनि न अघाऊँ । तनु पुलकित मन अति हरपाऊँ ॥
 सो सुख जानइ मन अरु काना । नहिं रसना पहिं जाइ बखाना ॥
 प्रभु सोभा सुख जानहिं नयना । कहि किमि सकहिं तिन्हहि नहिं वयना ॥

यहु विधि मोहि प्रबोधि मुख देई । लगे करन सिमु कौतुक तेई ॥
सजल नयन कछु मुख करि रूखा । चितइ मातु लागी अति मूखा ॥
देखि मातु आतुर उठि धाई । कहि मृदु वचन लिए उर लाई ॥
गोद राखि कराव पय पाना । रघुपति चरित ललित कर गाना ॥

सो०—जेहि सुख लागि पुरारि असुभ घेप कृन सिव सुखद ।
अवधपुरी नर नारि तेहि सुख महुँ संतत मगन ॥८८(क)॥
सोई सुख लखलेस जिन्ह धारक सपनेहुँ लहेउ ।
ते नहि गनहि खगेस मक्षसुखहि सज्जन सुमति ॥८८(ख)॥

मैं पुनि अवध रहेउँ कछु काला । देखेउँ बालविनोद रसाला ॥
राम प्रसाद भगति घर पायउँ । प्रभु पद बंदि निजाश्रम आयउँ ॥
तब ते मोहि न व्यापी माया । जब ते रघुनायक अपनाया ॥
यह सय गुप्त चरित मैं गाया । हरि मायाँ जिमि मोहि नचाया ॥
निज अनुभव अब कहउँ खगेसा । बिनु हरि भजन न जाहि कलेसा ॥
राम कृपा बिनु मुनु खगराई । जानि न जाइ राम प्रभुताई ॥
जानेँ बिनु न होइ परतीती । बिनु परतीति होइ नहिँ प्रीती ॥
प्रीति बिना नहिँ भगति दिदाई । जिमि खगपति जल कै चिकनाई ॥

सो०—बिनु गुरहोइ कि ग्यान ग्यान कि होइ बिगग बिनु ।
गावहिँ वेद पुरान सुख कि लहिअ हरि भगति बिनु ॥८९(क)॥
कोउ बिश्राम कि पाव तात सहज संतोष बिनु ।
चलै कि अल बिनु नाथ कोटि जतन पचि पचि मरिज ॥८९(ख)॥

बिनु संतोष न काम नसाही । काम अछत मुख सपनेहुँ नार्ही ॥
राम भजन बिनु मिटाहिँ कि कामा । थल बिहीन तरु क्यहुँ कि जामा ॥

विनु बिग्यान कि समता आवइ । दोउ अवकास कि नभ विनु पावइ
 श्रद्धा बिना धर्म नहि होई । विनु महि गंध कि पावइ कोई ॥
 विनु तप तेज कि कर विस्तारा । जल विनु रस कि होइ संसारा ॥
 सील कि मिल विनु बुध सेवकाई । जिमि विनु तेज न रूप गोसाई ॥
 निज सुख विनु मन होइ कि थीरा । परस कि होइ बिहीन समीरा ॥
 कवनिउ सिद्धि कि विनु बिखासा । विनु हरि भजन न भव भय नासा ॥

दो०—विनु बिस्वास भगति नहि तेहि विनु द्रवहि न रामु ।

राम कृपा विनु सपनेहुँ जीव न लह विश्रामु ॥९०(क)॥

सो०—अस विचारि मतिधीर तजि कुतर्क संसय सकल ।

भजहु राम रघुवीर करुनाकर सुंदर सुखद ॥९०(ख)॥

निज मति सरिस नाथ मैं गाई । प्रभु प्रताप महिमा खगराई ॥
 कहेउँ न कछु करि जुगुति बिसेषी । यह सब मैं निज नयनन्हि देखी ॥
 महिमा नाम रूप गुन गाथां । सकल अमित अनंत रघुनाथा ॥
 निज निज मति मुनि हरि गुन गावहिं । निगमं शेष सिव पार न पावहिं ॥
 तुम्हहि आदि खग मसक प्रजंता । नभ उड़ाहिं नहिं पावहिं अंता ॥
 तिमि रघुपति महिमा अवगाहा । तात कवहुँ कोउ पाव कि थाहा ॥
 रामु काम सत कोटि सुभग तन । दुर्गा कोटि अमित अरि मर्दना ॥
 सक्र कोटि सत सरिस बिलासा । नभ सत कोटि अमित अवकासा ॥
 दो०—मरुत कोटि सत विपुल बल रवि सत कोटि प्रकास ।

ससि सत कोटि सुसीतल समन सकल भव प्रास ॥९१(क)॥

काल कोटि सत सरिस अति दुस्तर दुर्ग दुरंत ।

धूमकेतु सत कोटि सम दुराधरष भगवंत ॥९१(ख)॥

प्रभु अगाध सत कोटि पताला । समन कोटि सत सरिस कराला ॥
 तीरथ अमित कोटि सम पावन । नाम अखिल अघ पृग नसावन ॥
 हिमगिरि कोटि अचल रघुवीरा । सिंधु कोटि सत सम गंभीरा ॥
 कामधेनु सत कोटि समाना । सकल काम दायक भगवाना ॥
 सारद कोटि अमित चतुरार्द्र । विधिसत कोटि सृष्टि निपुनार्द्र ॥
 विष्णु कोटि सम पालन कर्ता । रुद्र कोटि सत सम संहर्ता ॥
 धनद कोटि सत सम धनवाना । माया कोटि प्रपंच निधाना ॥
 भार धरन सत कोटि अहीसा । निरवधि निरुपम प्रभु जगदीसा ॥

छं०—निरुपम न उपमा आन राम समान रामु निगम कहै ।

जिमि कोटि सत खद्योत सम रचि कहत अति लघुता लहै ॥

एहि भौंति निज निज मति विलास मुनीस हरिहि बखानही ।

प्रभु भाय गाहंक अति श्याल सप्रेम सुनि सुख मानही ॥

दो०—रामु अमित गुन सागर गाह कि पाषड कोइ ।

संतन्ह सन जस किछु मुनेउं तुग्हहि सुनायउं सोइ ॥९२(क)॥

सो०—भाय यस्य भगवान सुख निधान करुना भवन ।

तत्रि ममता मद मान भजिअ सदा सीता रवन ॥९२(ख)॥

मुनि भ्रुसुंठि के बचन सुहाए । हरपित खगपति पंख फुलाए ॥

नयन नीर मन अति हरपाना । श्रीरघुपति प्रताप उर आना ॥

पाछिल मोह समुक्षि पछिताना । ब्रह्म अनादि मनुज करि माना ॥

पुनि पुनि काम चरन मिरु नावा । जानि राम सम प्रेम बढ़ावा ॥

गुर विनुभव निधि तरइ न कोई । जाँ विरंचि संकर सम होई ॥

संसय सर्प ग्रसेउ मोहि तावा । दुखद लहरि कुतर्क बहु ब्रावा ॥

तव सरूप गारुडि रघुनायक । मोहि जिआयउ जन सुखदायक ॥
तव प्रसाद मम मोह नसाना । राम रहस्य अनूपम जाना ॥

दो०—ताहि प्रसंसि विविधि विधि सीस नाइ कर जोरि ।

वचन विनीत सप्रेम मृदु बोलेउ गरुड बहोरि ॥९३(क)॥

प्रभु अपने अबिवेक ते बूझउँ स्वामी तोहि ।

कृपासिंधु सादर कहहु जानि दास निज मोहि ॥९३(ख)॥

तुम्ह सर्वग्य तग्य तम पारा । सुमति सुसील सरल आचारा ॥
ग्यान बिरति विग्यान निवासा । रघुनायक के तुम्ह प्रिय दासा ॥
कारन कवन देह यह पाई । तात सकल मोहि कहहु बुझाई ॥
राम चरित सर सुंदर स्वामी । पायहु कहाँ कहहु नभगामी ॥
नाथ सुना मैं अस सिव पाहीं । महा प्रलयहुँ नास तव नाहीं ॥
मुधा बचन नहिं ईस्वर कहई । सोउ मोरें मन संसय अहई ॥
अग जग जीव नाग नर देवा । नाथ सकल जगु काल कलेवा ॥
अंड कटाह अमित लय कारी । कालु सदा दुरतिक्रम भारी ॥

सो०—तुम्हहि न व्यापत काल अति कराल कारन कवन ।

मोहि सो कहहु कृपाल ग्यान प्रभाव कि जोग बल ॥९४(क)॥

दो०—प्रभु तव आश्रम आएँ मोर मोह भ्रम भाग ।

कारन कवन सो नाथ सब कहहु सहित अनुराग ॥९४(ख)॥

गरुड गिरा सुनि हरपेउ कागा । बोलेउ उमा परम अनुरागा ॥
धन्य धन्य तव मति उरगारी । प्रस्न तुम्हारि मोहि अति प्यारी ॥
सुनि तव प्रस्न सप्रेम सुहाई । बहुत जनम कै सुधि मोहि आई ॥
सब निज कथा कहउँ मैं गाई । तात सुनहु सादर मन लाई ॥

जप तप मख सम दम व्रत दाना । विरति विवेक जोग विग्याना ॥
 सब कर फल रघुपति पद प्रेमा । तेहि विनु कोउ न पावइ छेमा ॥
 एहि तन राम भगति में पाई । ताते मोहि ममता अधिकाई ॥
 जेहि तें कछु निज स्वार्थ होई । तेहि पर ममता कर सब कोई ॥

सो०—पद्मगारि अति नीति श्रुति संमत सज्जन कहहि ।

अति नोचहु सन प्रीति करिअ जानि निज परमहित ॥९५(क)॥

पाट कौट तें होइ तेहि तें पाटंबर रुचिर ।

रुमि पालइ सनु कोइ परम अपावन प्राण सम ॥९५(ख)॥

स्वार्थ सौंघ जीव कहूँ एहा । मन क्रम बचन राम पद नेहा ॥
 सोइ पावन सोइ सुभग सरीरा । जो तनु पाइ भजिअ रघुवीरा ॥
 राम विमुख लहि विधि सम देहो । कवि कोविद न प्रसंसहिं तेही ॥
 राम भगति एहि तन उर जामी । ताते मोहि परम प्रिय स्वामी ॥
 तजउँ न तन निज इच्छा भरना । तन विनु वेद भजन नहिं धरना ॥
 प्रथम मोहँ मोहि बहुत विगोवा । राम विमुख मुख कयहुँ न सोवा ॥
 नाना जनम कर्म पुनि नाना । किए जोग जप तप मख दाना ॥
 कवन जोनि जनमेउँ जहँ नाहीं । में स्वगोस भ्रमि भ्रमि जग माहीं ॥
 देखेउँ करि सब काम गांसाइँ । सुखी न भयउँ अबहिं की नाईँ ॥
 सुधि मोहि नाथ जन्म बहु फेरी । सिव प्रसाद मति मोहँ न घेरी ॥

दो०—प्रथम जन्म कें चरित अब कहउँ सुनहु विहंगस ।

सुनि प्रभु पद रति उपग्रह जाते मिटहि कलंस ॥९६(क)॥

पुरुष कल्प एक प्रभु जुग कलिजुग मल मूल ।

नर अरु नारि अधर्म रत सरल निगम प्रतिकूल ॥९६(ख)॥

तेहिं कलिजुग कोसलपुर जाई । जन्मत भयउँ सुद्र तनु पाई ॥
 सिव सेवक मन क्रम अरु वानी । आन देव निंदक अभिमानी ॥
 धन मद मत्त परम वाचाला । उग्रवुद्धि उर दंभ विसाला ॥
 जदपि रहेउँ रघुपति रजधानी । तदपि न कछु महिमा तव जानी ॥
 अब जाना मैं अवध प्रभावा । निगमागम पुरान अस गावा ॥
 कवनेहुँ जन्म अवध वस जोई । राम परायन सो परि होई ॥
 अवध प्रभाव जान तव प्रानी । जब उर वसहिं रामु धनुपानी ॥
 सो कलिकाल कठिन उरगारी । पाप परायन सब नर नारी ॥

दो०—कलिमल ग्रसे धर्म सब लुप्त भए सदग्रंथ ।

दंभिन्ह निज मति कल्पि करि प्रगट किए बहु पंथ ॥९७(क)॥

भए लोग सब मोहवस लोभ ग्रसे सुभ कर्म ।

सुनु हरिजान ग्यान निधि कहउँ कछुक कलिधर्म ॥९७(ख)॥

बरन धर्म नहिं आश्रम चारी । श्रुति विरोध रत सब नर नारी ॥
 द्विज श्रुतिवेचक भूप प्रजासन । कोउ नहिं मान निगम अनुसासन ॥
 मारग सोइ जा कहूँ जोइ भावा । पंडित सोइ जो गाल बजावा ॥
 मिथ्यारम्भ दंभ रत जोई । ता कहूँ संत कहइ सब कोई ॥
 सोइ सयान जो परधन हारी । जो कर दंभ सो बड आचारी ॥
 जो कह झूठ मसखरी जाना । कलिजुग सोइ गुनवंत बखाना ॥
 निराचार जो श्रुति पथ त्यागी । कलिजुग सोइ ग्यानी सो बिरागी ॥
 जाकेनख अरु जटा विसाला । सोइ तापस प्रसिद्ध कलिकाला ॥

दो०—असुभ वेप भूपन धरें मच्छामच्छ जे खाहिं ।

तेइ जोगी तेइ सिद्ध नर पूज्य ते कलिजुग माहिं ॥९८(क)॥

सो०—जे अपमारी पार तिन्ह कर गौरव मान्य तेइ ।

मन कम बचन लबार तेइ बकता कलिकाल महुं ॥९८(स)॥

नारि विवस नर सकल गोसाईं। नाचहिं नट मर्कट की नाईं ॥

सूद्र द्विजन्ह उपदेसहिं ग्याना। मेलि जनेऊ लेहिं बुदाना ॥

सब नर काम लोभ रत क्रोधी। देव विप्र श्रुति संत विरोधी ॥

गुन मंदिर सुंदर पति त्यागी। भजहिं नारि पर पुरुष अभागी ॥

सौभागिनी विभूषन हीना। विधवन्ह के सिंगार नबीना ॥

गुर सिप बधिर अंध का लेखा। एकन मुनइ एक नहिं देखा ॥

हरइ सिप्य धन सोक न हरई। सो गुर घोर नरक महुं परई ॥

मातु पिता धालकन्हि घोलावहिं। उदर भरै सोइ धर्म सिखावहिं ॥

दो०—मझ ग्यान बिनु नारि नर कहहिं न दूसरि घात ।

क्रीड़ी लागि लोभ बस करहिं विप्र गुर घात ॥९९(क)॥

बादहिं सूद्र द्विजन्ह सन हम तुम्ह ते कछु घाटि ।

जानइ मझ सो विप्रवर औंसि देखावहिं बाटि ॥९९(ख)॥

पर त्रिय लंपट कपट सयाने। मोह द्रोह भमता लपटाने ॥

तेइ अभेदबादी ग्यानी नर। देखा भैं चरित्र कलिजुग कर ॥

आपु गए अरु तिन्हह धालहिं। जे कहूँ सत मारग प्रतिपालहिं ॥

कल्प कल्प भरि एक एक नरका। परहिं जे दूषहिं श्रुति करि तरका ॥

जे घरनाधम तेलि कुम्हारा। स्वपच किरात कोल कलवारा ॥

नारि मुई गृह संपति नासी। मूढ़ मुड़ाइ होहिं संन्यासी ॥

ते विप्रन्ह सन आपु पुजावहिं। उभय लोक निज हाथ नसावहिं ॥

विप्र निरच्छर लोलुप कामी। निगचार सठ धृ. ली.

सुद्र करहिं जप तप व्रत नाना । बैठि वरासन कहहिं पुराना ॥
सब नर कल्पित करहिं अचारा । जाइ न वरनि अनीति अपारा ॥

दो०—भए बरन संकर कलि भिन्नसेतु सब लोग ।

करहिं पाप पावहिं दुख भय रुज सोक वियोग ॥१००(क)॥

श्रुति संमत हरि भक्ति पथ संजुत बिरति विवेक ।

तेहि न चलहिं नर मोह बस कल्पहिं पंथ अनेक ॥१००(ख)॥

छं०—बहु दाम सँवारहिं धाम जती । बिषया हरि लीन्हि न रहि बिरती ॥

तपसी धनवंत दरिद्र गृही । कलि कौतुक तात न जात कही ॥

कुलवंति निकारहिं नारि सती । गृह आनहिं चेरि निवेरि गती ॥

सुत मानहिं मातु पिता तब लौ । अबलानन दीख नहीं जब लौ ॥

ससुरारि पिआरि लगी जब तौ । रिपुरूप कुटंब भए तव तौ ॥

नृप पाप परायन धर्म नहीं । करि दंड बिडंब प्रजा नितही ॥

धनवंत कुलीन मलीन अपी । द्विज चिन्ह जनेउ उधार तपी ॥

नहिं मान पुरान न वेदहि जो । हरि सेवक संत सही कलि सो ॥

कवि वृंद उदार दुनी न सुनी । गुन दूषक व्रात न कोपि गुनी ॥

कलि वारहिं बार दुकाल परै । विनु अन्न दुखी सब लोग मरै ॥

दो०—सुनु खगेस कलि कपट हठ दंभ द्वेष पाषंड ।

मान मोह मारादि मद व्यापि रहे ब्रह्मंड ॥१०१(क)॥

तामस धर्म करहिं नर जप तप व्रत मख दान ।

देव न वरषहिं धरनीं बए न जामहिं धान ॥१०१(ख)॥

छं०—अबला कच भूषन भूरि छुधा । धनहीन दुखी ममता बहुधा ॥

सुख चाहहिं मूढ़ न धर्म रता । मति थोरि कठोरि न कोमलता ॥

नर पीडित रोग न भोग कही । अभिमान विरोध अकारनही ॥

लघु जीवन संवतु पंच दसा । कल्पार्त न नास गुमानु असा ॥
 कलिकाल विहाल किए मनुजा । नहि मानत फौ अनुजा तनुजा ॥
 नहि तोष विचार न सीतलता । सब जाति कुजाति भए मगता ॥
 इरिषा परुषाच्छर लोलुपता । भरि पूरि रही समता विगता ॥
 सब लोग वियोग बिसोक हए । चरनाश्रम धर्म अचार गए ॥
 दम दान दया नहि जानपनी । जदता परबंचनताति घनी ॥
 तनु पोषक नारि नरा सगरे । परनिदक जे जग मो धगरे ॥

दो०—मुनु न्यातारि काल कलि मल अवगुन आगार ।

गुनउ बद्धत कलिजुग कर बिनु प्रयास निस्तार ॥१०२(क)॥

कृतजुग त्रेताँ द्वापर पूजा भक्त अरु जोग ।

जो गति होइ सो कलि हरि नाम ते पावहि लोग ॥१०२(ख)॥

कृतजुग सब जोगी विग्यानी । करि हरि ध्यान तरहिं भव प्रानी ॥
 त्रेताँ विविध जग्य नर करही । प्रभुहि समर्पि कर्म भव तरही ॥
 द्वापर करि रघुपति पद पूजा । नर भव तरहिं उपाय न दूजा ॥
 कलिजुग केवल हरि गुन गाहा । गावत नर पावहिं भव थाहा ॥
 कलिजुग जोगन जग्य न ग्याना । एक अधार राम गुन गाना ॥
 सब भरोस तजि जो भज रामहि । प्रेम समेत गाव गुन ग्रामहि ॥
 सोइ भव तर कछु संसय नाहीं । नाम प्रताप प्रगट कलि माहीं ॥
 कलि कर एक पुनीत प्रतापा । मानस पुन्य होहिं नहिं पापा ॥

दो०—कलिजुग सम जुग मान नहिं जौ नर कर विस्वास ।

गाइ राम गुन गन विमल भव तर विनहिं प्रयास ॥१०३(क)

* रामचरितमानस *

प्रगट चारि पद धर्म के कलि महुँ एक प्रधान ।
जेन केन विधि दीन्हें दान करइ कल्याण ॥१०३(ख)॥

नित जुग धर्म होहिं सब केरे । हृदयँ राम माया के प्रेरे ॥
सुद्ध सत्व समता विग्याना । कृत प्रभाव प्रसन्न मन जाना ॥
सत्व बहुत रज कछु रति कर्मा । सब विधि सुख त्रेता कर धर्मा ॥
बहु रज स्वल्प सत्व कछु तामस । द्वापर धर्म हरष भय मानस ॥
तामस बहुत रजोगुन थोरा । कलि प्रभाव विरोध चहुँ ओरा ॥
बुध जुग धर्म जानि मन माहीं । तजि अधर्म रति धर्म कराहीं ॥
काल धर्म नहिं व्यापहिं ताही । रघुपति चरन प्रीति अति जाही ॥
नट कृत विकट कपट खगराया । नट सेवकहि न व्यापइ माया ॥

दो०—हरि माया कृत दोष गुन विनु हरि भजन न जाहिं ।
भजिअ राम तजि काम सब अस विचारि मन माहिं ॥१०४(क)॥
तेहिं कलिकाल बरष बहु बसेउँ अवध विहगेस ।
परेउ दुकाल विपति बस तव मै गयउँ विदेस ॥१०४(ख)॥

यउँ उजेनी सुनु उरगारी । दीन मलीन दरिद्र दुखारी ॥
एँ काल कछु संपति पाई । तहँ पुनि करउँ संभु सेवकाई ॥
एँ एक वैदिक सिव पूजा । करइ सदा तेहि काजु न दूजा ॥
एँ साधु परमारथ विंदक । संभु उपासक नहिं हरि निंदक ॥
सेवउँ मै कपट समेता । द्विज दयाल अति नीति निकेता ॥
ज नम्र देखि मोहि साई । विप्र पढ़ाव पुत्र की नाई ॥
त्र मोहि द्विजवर दीन्हा । सुभ उपदेस विविध विधि कीन्हा ॥
मंत्र सिव मंदिर जाई । हृदयँ दंभ अहमिति अधिकाई ॥

दो०—मैं खल-मल संकुल मति, नीच जाति घस मोह ।

हरि जन द्विज देखें जरउं करउं विष्णु कर द्रोह ॥१०५(क)॥

सो०—गुर नित मोहि प्रबोध दुखित देखि आचरन मम ।

मोहि उपबड़ अति क्रोध दंभिहि नीति कि भाषई ॥१०५(ख)॥

एक बार गुर लीन्ह घोलाई । मोहि नीति बहु भाँति सिखाई ॥

सिव सेवा कर फल सुत सोई । अचिरल भगति राम पद होई ॥

रामहि भजहिं तात सिव धाता । नर पावँर कै केतिक घाता ॥

जासु चरन अज सिव अनुरागी । तासु द्रोहँ सुख चहसि अभागी ॥

हर कहँ हरि सेवक गुर कहेऊ । मुनि खगनाथ हृदय मम दहेऊ ॥

अधम जाति मैं विद्या पाएँ । भयउं जथा अहि दूध पिआएँ ॥

मानी कुटिल कुभाग्य कुजाती । गुर कर द्रोह करउं दिनु राती ॥

अति दयाल गुर खल्प नक्रोधा । पुनि पुनि मोहि सिखाव सुबोधा ॥

जेहि ते नीच बड़ाई पावा । सो प्रथमहिं हति ताहिनसावा ॥

धूम अनल संभव सुनु भाई । तेहि सुझाव घन पदवी पाई ॥

रज मग परी निरादर रहई । सब कर पद प्रहार नित सहई ॥

मरुत उड़ाव प्रथम तेहि भरई । पुनि नृप नयन किरीटन्हि परई ॥

सुनु खगपति अस समुझि प्रसंगा । बुध नहिं करहिं अधम कर संग्गा

कवि कोविद गावहिं असि नीती । खल सन कलह न भल नहिं प्रीती

उदासीन नित रहिअ गोसाई । खल परिहरिअ स्थान की नाई ॥

मैं खल हृदय कपट कुटिलाई । गुर हित कहइ न मोहि सोदाई ॥

दो०—एक बार हर मंदिर जपत रहेउं सिव नाम ।

गुर आयउ अभिमान तें ठठि नहिं फीन्ह प्रनाम ॥१०६(क)॥

प्रगट चारि पद धर्म के कलि महुँ एक प्रधान ।
जेन केन विधि दीन्हें दान करइ कल्याण ॥१०३(स)

नित जुग धर्म होहिं सब केरे । हृदयँ राम माया के प्रेरे ।
सुद्ध सत्व समता विग्याना । कृत प्रभाव प्रसन्न मन जाना ॥
सत्व बहुत रज कछु रति कर्मा । सब विधि सुख त्रेता कर धर्मा ॥
बहु रज स्वल्प सत्व कछु तामस । द्वापर धर्म हरष भय मानस ॥
तामस बहुत रजोगुन थोरा । कलि प्रभाव विरोध चहुँ ओरा ॥
बुध जुग धर्म जानि मन माहीं । तजि अधर्म रति धर्म कराहीं ॥
काल धर्म नहिं व्यापहिं ताही । रघुपति चरन प्रीति अति जाही ॥
नट कृत विकट कपट खगराया । नट सेवकहि न व्यापइ माया ॥

दो०—हरि माया कृत दोष गुन विनु हरि भजन न जाहिं ।

भजिअ राम तजि काम सब अस बिचारि मन माहिं ॥१०४(क)॥
तेहिं कलिकाल वरष बहु बसेउँ अवध त्रिहगेस ।

परेउ दुकाल विपति बस तब मैं गयउँ विदेस ॥१०४(ख)॥

गयउँ उजेनी सुनु उरगारी । दीन मलीन दरिद्र दुखारी ॥
एँ काल कछु संपति पाई । तहँ पुनि करउँ संभु सेवकाई ॥
एँ एक वैदिक सिव पूजा । करइ सदा तेहि काजु न दूजा ॥
म साधु परमारथ बिंदक । संभु उपासक नहिं हरि निंदक ॥
इ सेवउँ मैं कपट समेता । द्विज दयाल अति नीति निकेता ॥
इज नम्र देखि मोहि साई । विप्र पढ़ाव पुत्र की नाई ॥
मंत्र मोहि द्विजवर दीन्हा । सुभ उपदेस विविध विधि कीन्हा ॥
मंत्र सिव मंदिर जाई । हृदयँ दंभ अहमिति अधिकाई ॥

दो०—मैं खल-मल संकुल मति, नीच-जाति बस मोह ।

हरि जन द्विज देखें जरउँ करउँ बिपु कर द्रोह ॥१०५(क)॥

सो०—गुर नित मोहि प्रबोध दुखित देखि आचरन मम ।

मोहि उपअइ अति क्रोध दंभिहि नीति कि भावई ॥१०५(ख)॥

एक बार गुर लीन्ह बोलाई । मोहि नीति बहु भाँति सिखाई ॥

सिख सेवा कर फल सुत सोई । अबिरल भगति राम पद होई ॥

रामहि भजहिं तात सिख धाता । नर पावँर कँ केतिक याता ॥

जासु चरन अज सिख अनुरागी । तासु द्रोहँ सुख चहसि अभागी ॥

हर कहँ हरि सेवक गुर कहेऊ । सुनि खगनाथ हृदय-मम दहेऊ ॥

अधम जाति मैं विद्या पाएँ । भयउँ जथा अहि दूध पिआएँ ॥

मानी कुटिल कुभाग्य कुजाती । गुर कर द्रोह करउँ दिनु राती ॥

अति दयाल गुर स्वल्प नक्रोधा । पुनि पुनि मोहि सिखाव सुबोधा ॥

जेहि ते नीच बढ़ाई पावा । सो प्रथमहिं हति ताहिनसावा ॥

धूम अनल संभव सुनु भाई । तेहि बुझाव घन पदवी पाई ॥

रज मग परी निरादर रहई । सब कर पद प्रहार नित सहई ॥

मरुत उड़ाव प्रथम तेहि भरई । पुनि नृप नयन किरीटन्हि परई ॥

सुनु खगपति अस समुझि प्रसंगा । बुध नहिं करहिं अधम कर संगा ॥

कविकोविद गावहिं असि नीती । खल सन कलह न भल नहिं प्रीती ॥

उदासीन नित रहिअ गोसाई । खल परिहरिअ म्यान की नाई ॥

मैं खल हृदय कपट कुटिलाई । गुर हित कहइ न मोहि सोहाई ॥

दो०—एक बार हर मंदिर जपत रहेउँ सिख नाम ।

गुर आयउ अभिमान तें उठि नहिं कीन्ह प्रनाम ॥१०६(क)॥

सो दयाल नहि कहेउ कछु उर न रोष लवलेस ।

अति अघ गुर अपमानता सहि नहि सके महेस ॥१०६(ख)॥

मंदिर माझ भई नभ वानी । रे हतभाग्य अग्य अभिमानी ॥
 जघपि तव गुर के नहिं क्रोधा । अति कृपाल चित सम्यक बोधा ॥
 तदपि साप सठ दैहउं तोही । नीति विरोध सोहाइ न मोही ॥
 जाँ नहिं दंड करौं खल तोरा । भ्रष्ट होइ श्रुतिमारग मोरा ॥
 जे सठ गुर सन इरिषा करहीं । रौख नरक कोटि जुग परहीं ॥
 त्रिजग जोनि पुनि धरहिं सरीरा । अयुत जन्म भरि पावहिं पीरा ॥
 बैठ रहेसि अजगर इव पापी । सर्प होहि खल मल मति व्यापी ॥
 महा बिटप कोटर महुँ जाई । रहु अधमाधम अधगति पाई ॥

दो०—हाहाकार कीन्ह गुर दारुन सुनि सिव साप ।

कंपित मोहि बिलोकि अति उर उपजा परिताप ॥१०७(क)॥

करि दंडवत सप्रेम द्विज सिव सन्मुख कर जोरि ।

विनय करत गदगद स्वर समुद्धि घोर गति मोरि ॥१०७(ख)॥

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं । विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपं ॥
 निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं । चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहं ॥
 निराकारमोकारमूलं तुरीयं । गिरा ग्यान गोतीतमीशं गिरीशं ॥
 करालं महाकाल कालं कृपालं । गुणागार संसारपारं नतोऽहं ॥
 तुषाराद्रि संकाश गौरं गभीरं । मनोभूत कोटि प्रभा श्री शरीरं ॥
 स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गंगा । लसद्भालवालेन्दु कंठे भुजंगा ॥
 चलत्कुंडलं भ्रू सुनेत्रं विशालं । प्रसन्नाननं नीलकंठं दयालं ॥
 मृगाधीशचर्माश्वरं मुण्डमालं । प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि ॥

प्रचंडं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं । असंख्यं अजं भानुकोटिप्रकाशं ॥
 त्रयः शूल निर्मूलनं शूलपाणि । भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यं ॥
 कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी । सदा सञ्जनानन्ददाता पुरारी ॥
 चिदानन्द संदोह मोहापहारी । प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ॥
 न यावद् उमानाथ पादारविन्दं । भजंतीह लोके परे वा नरार्णा ॥
 न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं । प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासं ॥
 न जानामि योगं जपं नैव पूजां । नतोऽहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यं ॥
 जरा जन्म दुःखीष तातप्यमानं । प्रभो पाहि आपन्नमामीश शंभो ॥
 श्लोक—रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोपये ।

ये पठन्ति भरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति ॥ ९ ॥

दो०—सुनि विनती सर्वग्य सिष देखि विप्र अनुरागु ।

पुनि मंदिर नभवानी भइ द्विजवर वर मागु ॥१०८(क)॥

जौ प्रसन्न प्रभु मो पर नाथ दीन पर नेहु ।

निज पद भगति देइ प्रभु पुनि दूसर वर देहु ॥१०८(ख)॥

तव माया बस जीव जइ संतत फिरइ मुलान ।

तेहि पर क्रोध न करिअ प्रभु कृपासिधु भगवान ॥१०८(ग)॥

संकर दीनदयाल अब एहि पर होहु कृपाल ।

साप अनुग्रह होइ जेहि नाथ थोरेही काल ॥१०८(घ)॥

एहि कर होइ परम कल्याणा । सोइ करहु अब कृपानिधाना ॥

विप्र गिरा सुनि परहित सानी । एवमस्तु इति भइ नभवानी ॥

जदपि कीन्ह एहिं दारुन पापा । भैं पुनिदीन्हि कोप करिसापा ॥

तदपि तुम्हारि साधुता देखी । करिहुँ एहि पर कृपा बिसेपी ॥

छमासील जे पर उपकारी । ते द्विज मोहि प्रियजथास्वरारी ॥

मोर श्राप द्विज व्यर्थ न जाइहि । जन्म सहस अवस्य यह पाइहि ॥
 जनमत मरत दुसह दुख होई । एहि स्वल्प उ नहि व्यापिहि सोई ॥
 कवनेउ जन्म मिटिहि नहि ग्याना । सुनहि सुद्र मम वचन प्रवाना ॥
 रघुपति पुरी जन्म तव भयऊ । पुनि तैं मम सेवाँ मन दयऊ ॥
 पुरी प्रभाव अनुग्रह मोरें । राम भगति उपजिहि उर तोरें ॥
 सुनु मम वचन सत्य अब भाई । हरितोपन व्रत द्विज सेवकाई ॥
 अब जनि करहि विप्र अपमाना । जानेसु संत अनंत समाना ॥
 इंद्र कुलिस मम सुल विसाला । कालदंड हरि चक्र कराला ॥
 जो इन्ह कर मारा नहि मरई । विप्र द्रोह पावक सो जरई ॥
 अस विवेक राखेहु मन माहीं । तुम्ह कहँ जग दुर्लभ कछु नाहीं ॥
 औरउ एक आसिपा मोरी । अप्रतिहत गति होइहि तोरी ॥

दो०—सुनि सिव वचन हरषि गुर एवमस्तु इति भाषि ।

मोहि प्रबोधि गयउ गृह संभु चरन उर राखि ॥ १०९(क) ॥

प्रेरित काल विधि गिरि जाइ भयउँ मैं व्याल ।

पुनि प्रयास विनु सो तनु तजेउँ गएँ कछु काल ॥ १०९(ख) ॥

जोइ तनु धरउँ तजउँ पुनि अनायास हरिजान ।

जिमि नूतन पट पहिरइ नर परिहरइ पुरान ॥ १०९(ग) ॥

सिवँ राखी श्रुति नीति अरु मैं नहि पावा क्लेस ।

एहि विधि घरेउँ विविधि तनु ग्यान न गयउ खगेस ॥ १०९(घ) ॥

त्रिजग देव नर जोइ तनु धरऊँ । तहँ तहँ राम भजन अनुसरऊँ ॥

एक सुल मोहि बिसर न काऊ । गुर कर कोमल सील सुभाऊ ॥

वरम देह द्विज कै मैं पाई । सुर दुर्लभ पुरान श्रुति गाई ॥

खेतउं वहँ बालकन्ह मीला । परउं सकल रघुनाथक लीला ॥
 प्रौढ़ भएँ मोहि पिता पढ़ाया । रामसउं गुनउं गुनउं नहि भःवा ॥
 मन ते सकल वासना भागी । फेरल राम धरन लख तापी ॥
 कहु खगोस अस कान अभागो । खरी रोर सुरभेनुदि तथापी ॥
 प्रेम मगन मोहि कछु न सोहाई । हारेउ पिता पढ़ाइ पढ़ाई ॥
 भए कालचस जब पितु माता । मँ बन गयउं भजन अनथाता ॥
 जहँ जहँ बिपिन मुनीस्वरपावउं । आधम जाइ जाइ सिरु गानउं ॥
 पूझउं तिन्हहि राम गुन गाहा । फरहि गुनउं हरपित स्वगनाहा ॥
 सुनत फिउं हरि गुन अनुपादा । अम्यादस गति रक्षि गगनाहा ॥
 छूटी त्रिविधि ईपना गाढ़ी । एक त्याससा उर अति पाढ़ी ॥
 राम चरन धारिज जब देख्यो । तय निज खनम रागत परि देख्यो ॥
 जेहि पूछउं सोइ मुनि अस कह्यो । ईमर गर्प भूतगम अह्यो ॥
 निरगुन मत नहि मोहि सोहाई । गगुन मत्त रति उर अधिकाई ॥

दो०—गुर के बचन सुरति करि राम चरन गनु लाग ।

रघुपति जस गावत फिउं एन एम मन अनुराग ॥ ११० (१) ॥

मेरु सिकर षट छायो मुनि लोमसा आसीन ।

देखि चरन सिरु नायउं बचन बहंउं अति दीन ॥ ११० (१) ॥

मुनि मम बचन धिनीन मृदु मुनि कृपाद गगनाग ।

मोहि सादर पूछन भए द्विज जागदु बेदि पाथ ॥ ११० (१) ॥

तम मे फहा कृपानिधि तुम्ह मर्धम्य मुजान ।

सगुन मत्त अवशमन मोहि कह्यो भगनाम ॥ ११० (१) ॥

तव मुनीस रघुपति गुन गाथा । कः कः कः कः

ब्रह्मग्यान रत मुनि विग्यानी । मोहि परम अधिकारी जानी ॥
 लागे करन ब्रह्म उपदेसा । अज अद्वैत अगुन हृदयेसा ॥
 अकल अनीह अनाम अरूपा । अनुभव गम्य अखंड अनूपा ॥
 मन गोतीत अमल अविनासी । निर्विकार निरवधि सुख रासी ॥
 सो तैं ताहि तोहि नहिं मेदा । वारि वीचि इव गावहिं वेदा ॥
 विविधि भाँति मोहि मुनि समुझावा । निर्गुन मत मम हृदयेंन आवा
 पुनि मैं कहेउँ नाइ पद सीसा । सगुन उपासन कहहु मुनीसा ॥
 राम भगति जल मम मन मीना । किमि विलगाइ मुनीस प्रवीना ॥
 सोइ उपदेस कहहु करि दाया । निज नयनन्हि देखौं रघुराया ॥
 भरि लोचन विलोकि अवघेसा । तव सुनिहउँ निर्गुन उपदेसा ॥
 मुनि पुनि कहि हरिकथा अनूपा । खंडि सगुन मत अगुन निरूपा ॥
 तव मैं निर्गुन मत कर दूरी । सगुन निरूपउँ करि हठ भूरी ॥
 उत्तर प्रतिउत्तर मैं कीन्हा । मुनि तन भए क्रोध के चीन्हा ॥
 सुनु प्रभु बहुत अवग्या किएँ । उपज क्रोध ग्यानिन्ह के हिएँ ॥
 अति संघरपन जाँ कर कोई । अनल प्रगट चंदन ते होई ॥

दो०—बारंवार सक्रोप मुनि करइ निरूपन ग्यान ।

मैं अपने मन बैठ तव करउँ विविधि अनुमान ॥१११(क)॥

क्रोध कि द्वैतवृद्धि बिनु द्वैत कि बिनु अग्यान ।

मायावस परिछिन जड़ जीव कि ईस समान ॥१११(ख)॥

कबहुँ कि दुख सब कर हित ताकें । तेहि कि दरिद्र परस मनि जाकें
 परद्रोही कि होहिं निसंका । कामी पुनि कि रहहिं अकलंका ॥
 वंस कि रह द्विज अनहित कीन्हें । कर्म कि होहिं स्वरूपहि चीन्हें ॥

काह सुमति कि खल सँग जामी । सुभ गति पाव कि परत्रिय गामी
 भव कि परहिं परमात्मा बिंदक । मुखी कि होहिं क्यहुं हरिनिंदक
 राजु कि रहइ नीति विनु जानें । अघ कि रहहिं हरि चरित बखानें
 पावन जस कि पुन्य विनु होई । विनु अघ अजस कि पावइ कोई ॥
 लाभ कि किलु हरि भगति समाना । जेहि गावहिं श्रुति संत पुराना
 हानि कि जग एहि सम किलु भाई । भजिअ न रामहि नर तनु पाई
 अघ कि पिसुनता सम कछु आना । धर्म कि दया सरिस हरिजाना
 एहि विधिअमिति जुगुति मन गुनऊँ । मुनि उपदेसन सादर सुनऊँ
 पुनि पुनि सगुन पच्छ में रोपा । तव मुनि बोलेउ बचन सकोपा ॥
 मूढ़ परम सिख देउं न मानसि । उत्तर प्रतिउत्तर बहु आनसि ॥
 सत्य बचन बिस्वास न करही । वायस इव सबही ते डरही ॥
 सठ स्वपच्छ तव हृदयँ विसाला । सपदि होहि पच्छी चंडाला ॥
 लीन्ह थाप में सीस चढ़ाई । नहिं कछु भय न दीनता आई ॥

दो०—तुरत भयउं मैं काग तव पुनि मुनि पद सिरु नाइ ।

सुमिरि राम रघुवंस मनि हरपित चलेउं उडाइ ॥११२(क)॥

उमा जे राम चरन रत विगत काम मद क्रोध ।

निज प्रभुमय देखहिं जगत केहि सन करहि बिरोध ॥११२(ख)॥

सुनु खगेस नहिं कछु रिपि दूपन । उर प्रेरक रघुवंस विमूपन ॥
 कृपासिंधु मुनि मति करि भोरी । लीन्ही प्रेम परिच्छा मोरी ॥
 मन बचक्रम मोहि निज जन जाना । मुनि मति पुनि फेरी भगवाना
 रिपि मम महत सोलता देखी । राम चरन बिस्वास धिसेपी ॥
 अति विसमय पुनि पुनि पछिताई । सादर मुनि मोहि लीन्ह घोलाई

परितोष विविधि विधि कीन्हा । हरपित राममंत्र तब दीन्हा ॥
 लकरूप राम कर ध्याना । कहेउ मोहि मुनि कृपानिधाना ॥
 सुंदर सुखद मोहि अति भावा । सो प्रथमहि मैं तुम्हहि सुनावा ॥
 मुनि मोहि कछुक काल तहँ राखा । रामचरितमानस तब भाषा ॥
 सादर मोहि यह कथा सुनाई । पुनि बोले मुनि गिरा सुहाई ॥
 रामचरित सर गुप्त सुहावा । संभु प्रसाद तात मैं पावा ॥
 तोहि निज भगत राम कर जानी । ताते मैं सब कहेउ बखानी ॥
 राम भगति जिन्ह के उर नहीं । कबहुँ न तात कहिअ तिन्ह पाहीं ॥
 मुनि मोहि विविधि भाँति समुझावा । मैं सप्रेम मुनि पद सिरु नावा ॥
 निज कर कमल परसि मम सीसा । हरपित आसिप दीन्ह मुनीसा ॥
 राम भगति अविरल उर तोरें । वसिहि सदा प्रसाद अब मोरें ॥

दो०—सदा राम प्रिय होहु तुम्ह सुभ गुन भवन अमान ।
 कामरूप इच्छामरन ग्यान त्रिराग निधान ॥ ११३ (क) ॥
 जेहि आश्रम तुम्ह बसव पुनि सुमिरत श्रीभगवंत ।
 व्यापिहि तहँ न अविद्या जोजन एक प्रजंत ॥ ११३ (ख) ॥

काल कर्म गुन दोष सुभाऊ । कछु दुख तुम्हहि न व्यापिहि का
 राम रहस्य ललित विधि नाना । गुप्त प्रगट इतिहास पुराना
 विनु श्रम तुम्ह जानव सब सोऊ । नित नव नेह राम पद होऊ
 जो इच्छा करिहहु मन माहीं । हरि प्रसाद कछु दुर्लभ नाहीं
 मुनि मुनि आसिप सुनु मतिधीरा । ब्रह्मगिरा भइ गगन गँभीर
 एवमस्तु तव बच मुनि ग्यानी । यह मम भगत कर्म मन बान
 मनि नभगिरा हरष मोहि भयऊ । प्रेम मगन सब संसय गय

करि विनती मुनि आयसु पाई । पद सरोज पुनि पुनि सिरु नाई ॥
हरप सहित एहि आश्रम आयउं । प्रभु प्रसाद दुर्लभ घर पायउं ॥
इहाँ बसत मोहि मुनु खग ईसा । चीते कल्प सात अरु बीसा ॥
करउं सदा रघुपति गुन गाना । सादर मुनिहिं विहंग मुजाना ॥
जब जब अवधपुरी रघुवीरा । धरहिं भगत हित मनुज सरीरा ॥
तब तब जाइ राम पुर रहऊं । सिमुलीला बिलोकि मुख लहऊं ॥
पुनि उर राखि राम सिसुरूपा । निज आश्रम आयउं खगभूपा ॥
कथा सकल मैं तुम्हहि मुनाई । काग देह जेहिं कारन पाई ॥
कहिउं तात सब प्रस्न तुम्हारी । राम भगति महिमा अति भारी ॥

दो०—ताते यह तन मोहि प्रिय भयउ राम पद नेह ।

निज प्रभु दरसन पायउं गण सकल संदेह ॥११४(क)॥

मासपारायण, उन्तीसवाँ विश्राम

भगति पच्छ हउ करि रहेउं दीन्हि महारिपि साप ।

मुनि दुर्लभ घर पायउं देराहु भजन प्रताप ॥११४(ख)॥

जे अस्मि भगति जानि परिहरहीं । केवल ग्यान हेतु श्रम करहीं ।
ते जड़ कामधेनु गृह त्यागी । खोजत आकु फिरहिं पय लागी ॥
मुनु खगोस हरि भगति विहाई । जे मुख चाहहिं आन उपाई ॥
ते सठ महासिंधु विनु तरनी । परि पार चाहहिं जड़ करनी ॥
मुनि भगुंडि के बचन भवानी । बोलेउ गरुड़ हरपि मृदु बानी ॥
तब प्रसाद प्रभु मम उर माहीं । संसय सोक मोह भ्रम नाहीं ॥
मुनेउं पुनीत राम गुन ग्रामा । तुम्हरी कृपां जेउं विश्राम ॥

एक बात प्रभु पूँछउँ तोही । कहहु बुझाइ कृपानिधि मोही ॥
 कहहि संत मुनि वेद पुराना । नहिं कछु दुर्लभ ग्यान समाना ॥
 सोइ मुनि तुम्ह सन कहेउ गोसाईं । नहिं आदरेहु भगति की नाई ॥
 ग्यानहि भगतिहि अंतर केता । सकल कहहु प्रभु कृपानिकेता ॥
 सुनि उरगारि वचन सुख माना । सादर बोलेउ काग सुजाना ॥
 भगतिहि ग्यानहि नहिं कछु भेदा । उभय हरहिं भव संभव खेदा ॥
 नाथ मुनीस कहहिं कछु अंतर । सावधान सोउ सुनु विहंगवरा ॥
 ग्यान बिराग जोग विग्याना । ए सब पुरुष सुनहु हरिजाना ॥
 पुरुष प्रताप प्रबल सब भाँती । अबला अबल सहज जड़ जाती ॥

दो०—पुरुष त्यागि सक नारिहि जो बिरक्त मति धीर ।

न तु कामी बिपयावस विमुख जो पद रघुवीर ॥११५(क)॥

सो०—सोउ मुनि ग्याननिधान मृगनयनी विधु मुख निरखि ।

बिबस होइ हरिजान नारि बिष्नु माया प्रगट ॥११५(ख)॥

इहाँ न पच्छपात कछु राखउँ । वेद पुरान संत मत भापऊँ ॥
 मोह न नारि नारि कें रूपा । पन्नगारि यह रीति अनूपा ॥
 माया भगति सुनहु तुम्ह दोऊ । नारि बर्ग जानइ सब कोऊ ॥
 पुनि रघुवीरहि भगति पिआरी । माया खलु नर्तकी बिचारी ॥
 भगतिहि सानुकूल रघुराया । ताते तेहि डरपति अति माया ॥
 राम भगति निरुपम निरुपाधी । बसइ जासु उर सदा अबाधी ॥
 तेहि बिलोकि माया सकुचाई । करि न सकइ कछु निज प्रभुताई ॥
 अस बिचारिजे मुनि विग्यानी । जाचहिं भगति सकल सुख खानी ॥

गति कर बेगि न जानइ बोइ ।

ये श्यों सपनेहु मोह न होइ ॥११६(क)॥

गति कर भेद सुनहु मुप्रवीन ।

गन पद प्रीति सदा अविहीन ॥११६(ख)॥

इ कहानी । समुझत बनइ न जाइ चखानी ॥

विनासी । चेतन अमल सहज सुख रासी ॥

गोसाई । बँध्यों कीर मरकट की नाई ॥

परि गई । जदपि मृपा छटत कटिनई ॥

मंसारी । छट न ग्रंथि न होइ मुवारी ॥

उ उपाई । छट न अधिक अधिक अरुझाई ॥

विसेपी । ग्रंथि छट किमि परइ न देखी ॥

तव करई । तबहुँ कदाचित सो निरुअरई ॥

नु मुहाई । जौ हरि कृपाँ हृदयँ यस्त आई ॥

म अपारा । जे श्रुति कह सुभ धर्म अचारा ॥

जय गाई । भाव बच्छ सिमु पाइ पेन्हाई ॥

विम्यासा । निर्मल मन अहीर निज दासा ॥

दुहि भाई । अवटँ अनल अकाम बनाई ॥

जाँ जुड़ाव । घृति सम जावनु देइ जमाव ॥

मथानी । दम अधार रजु सत्य मुवानी ॥

नवनीता । विमल विराग सुभग सु

दि प्रगट

गन

✽ रामचरितमानस ✽

तव विग्यानरूपिनी बुद्धि विसद घृत पाइ ।
चित्त दिआ भरि धरै दृढ़ समता दिअटि वनाइ ॥११७(ख)॥

तीनि अवस्था तीनि गुन तेहि कपास तें कादि ।
तूल तुरीय सँवारि पुनि चाती करै सुगादि ॥११७(ग)॥

१०-एहि विधि लेसै दीप तेज रासि विग्यानमय ।
जातहिं जासु समीप जरहिं गदादिक सलभ सब ॥११७(घ)॥

सोहमस्मि इति वृत्ति अखंडा । दीप सिखा सोइ परम प्रचंडा ॥
आतम अनुभव सुख सुप्रकासा । तव भव मूल भेद भ्रम नासा ॥
प्रबल अविद्या कर परिवारा । मोह आदि तम मिटइ अपारा ॥
तव सोइ बुद्धि पाइ उँजिआरा । उर गृहँ बैठि ग्रंथि निरुआरा ॥
छोरन ग्रंथि पाव जाँ सोई । तव यह जीव कृतारथ होई ॥
छोरत ग्रंथि जानि खगराया । विघ्न अनेक करइ तव माया ॥
रिद्धि सिद्धि प्रेरइ बहु भाई । बुद्धिहि लोभ दिखावहिं आई ॥
कल बल छल करि जाहिं समीपा । अंचल वात बुझावहिं दीपा ॥
होइ बुद्धि जाँ परम सयानी । तिन्ह तन चितव न अनहित जानी ॥
जाँ तेहि विघ्न बुद्धि नहिं बाधी । तौ बहोरि सुर करहिं उपाधी ॥
इंद्री द्वार झरोखा नाना । तहँ तहँ सुर बैठे करि थाना ॥
आवत देखहिं विषय वयारी । ते हठि देहिं कपाट उघारी ॥
जब सो प्रभंजन उर गृहँ जाई । तवहिं दीप विग्यान बुझाई ॥
ग्रंथि न छूटि मिटा सो प्रकासा । बुद्धि विकल भइ विषय बतासा ॥
इंद्रिन्ह सुरन्ह न ग्यान सोहाई । विषय भोग पर प्रीति सदाई ॥
विषय समीर बुद्धि कृत भोरी । तेहि विधि दीप को बार बहोरी ॥

दो०—तव फिरि जीव विविधि त्रिधि पावइ सद्यति बटेस ।

हरि माया अति दुस्तर तरि न जाइ बिहगैस ॥११८(क)॥

कहत कठिन समुझत कठिन साधत कठिन बिबेक ।

होइ घुनाच्छर न्याय जौ पुनि प्रत्यूह अनेक ॥११८(ख)॥

ग्यान पंथ कृपान कै धारा। परत स्वगैस होइ नहिं धारा ॥

जौ निर्बिघ्न पंथ निर्बहई। सो कैवल्य परम पद लहई ॥

अति दुर्लभ कैवल्य परम पद । संत पुरान निगम आगम बद ॥

राम भजत सोइ मुकृति गोसाईं । अनइच्छित आवइ धरिआई ॥

त्रिमि थल बिनु जल रहि न सकाई । कोटि भाँति कोउ करै उपाई ॥

तथा मोच्छ मुख सुनु खगराई । रहि न सकइ हरि भगति बिहाई ॥

अस विचारि हरि भगत सयाने । मुक्ति निरादर भगति लुभाने ॥

भगति करत बिनु जतन प्रयासा । संसृति मूल अविद्या नामा ॥

भोजन करिअ तृपिति हित लागी । त्रिमि सो असन पचवै जठरागी ॥

असि हरि भगति सुगम मुखदाई । को अस मूढ़ न जाहि सोहाई ॥

दो०—संवक सेच्य भाय बिनु भव न तरिअ उरगारि ।

भजहु राम पद पंकज अस सिद्धान बिचारि ॥११९(क)॥

जो चेतन कहँ जइ करइ जइहि करइ चैतन्य ।

अस समर्थ रघुनायकहि भजहि जीव ते धन्य ॥११९(ख)॥

अहं ग्यान सिद्धांत बुझाई। सुनुहु भगति मनि कै प्रभुताई ॥

अस भगति चिंतामनि सुंदर। वसु गरुड जाके उर अंतर ॥

अस प्रकास रूप दिन राती। नहिं क

बल अबिद्या तम मिटि जाई। हारहिं सकल सलभ समुदाई ॥
 बल कामादि निकट नहिं जाहीं। बसइ भगति जाके उर माहीं ॥
 गरल सुधासम अरि हित होई। तेहि मनि विनु सुख पाव न कोई ॥
 व्यापहिं मानस रोग न भारी। जिन्ह के बस सब जीव दुखारी ॥
 राम भगति मनि उर बस जाके। दुख लवलेस न सपनेहुँ ताके ॥
 चतुर सिरोमनि तेइ जग माहीं। जे मनि लागि सुजतन कराहीं ॥
 सो मनि जदपि प्रगट जग अहई। राम कृपा विनु नहिं कोउ लहई ॥
 सुगम उपाय पाइवे केरे। नर हतभाग्य देहिं भटभेरे ॥
 पावन पर्वत वेद पुराना। राम कथा रुचिराकर नाना ॥
 मर्मा सज्जन सुमति कुदारी। ग्यान विराग नयन उरगारी ॥
 भाव सहित खोजइ जो प्रानी। पाव भगति मनि सब सुख खानी ॥
 मोरें मन प्रभु अस बिस्वासा। राम ते अधिक राम कर दासा ॥
 राम सिंधु घन सज्जन धीरा। चंदन तरु हरि संत समीरा ॥
 सब कर फल हरि भगति सुहाई। सो विनु संत न काहुँ पाई ॥
 अस विचारि जोइ कर सतसंगा। राम भगति तेहि सुलभ बिहंगा ॥
 दो०—ब्रह्म पयोनिधि मंदर ग्यान संत सुर आहिं ।

कथा सुधा मथि काढ़हिं भगति मधुरता जाहिं ॥ १२० (क)

विरति चर्म असि ग्यान मद लोभ मोह रिपु मारि ।

जय पाइअ सो हरि भगति देखु खगेस विचारि ॥ १२० (ख)

पुनि सप्रेम बोलेउ खगराऊ। जौं कृपाल मोहि ऊपर भाऊ
 नाथ मोहि निज सेवक जानी। सप्त प्रस्न मम कहहु बखान
 प्रथमहिं कहहु नाथ मतिधीरा। सब ते दुर्लभ कवन सरी

बह दुख कवन कवन सुख भारी । सोउ संछेपहिं कहहु विचारी ॥
 संत असंत मरम तुम्ह जानहु । तिन्ह कर सहज मुभाव बखानहु ॥
 कवन पुन्य श्रुति विदित विमाला । कहहु कवन अध परम कराला ॥
 मानस रोग कहहु समुझाई । तुम्ह मर्त्य कृपा अधिकारै ॥
 तात सुनहु सादर अति प्रीती । मैं संछेप कहउँ यह नीती ॥
 नर तन सम नहिं कवनिउ देही । जीव चराचर जाचत तेही ॥
 नरक स्वर्ग अपवर्ग निसेनी । ग्यान विराग भगति सुभ देनी ॥
 सो तनु धरि हरि भजहिं न जे नर । होहिं विषय रत मंद मंद तर ॥
 काँच किरिष बदलें ते लेहीं । कर ते डारि परस मनि देहीं ॥
 नहिं दरिद्र सम दुख जग माहीं । संत मिलन सम सुख जग नाहीं ॥
 पर उपकार बचन मन काया । संत सहज मुभाउ स्वगराया ॥
 संत सहहिं दुख पर हिन लागी । पर दुख हेतु असंत अभागी ॥
 भूर्ज तरु सम संत कृपाला । परहित निनि मह विपति विमाला ॥
 सन इय खल पर बंधन करई । खाल कदाइ विपति सहि मरई ॥
 खल विनु स्वारथ पर अपकारी । यहि मृषक इव मुनु उरगारी ॥
 पर संपदा बिनासि नसाहीं । जिमिसमि हति हिम उपल बिलाहीं ॥
 दुष्ट उदय जग आरति हेतु । जथा प्रसिद्ध अधम ग्रह फेनु ॥
 संत उदय संतत सुखकारी । विम सुखद जिमि इंदु तमारी ॥
 परमधर्म श्रुति विदित अहिंसा । पर निंदा सम अध न गरीमा ॥
 हर गुर निंदक दादुर हॉई । जन्म महष पाव इन सोई ॥
 द्विजनिंदक बहु नरक भोग करि । जगजनम ~~का~~
 सुरश्रुति निंदक जे अभिमानी । रौरव नर ~~का~~

बल अविद्या तम मिटि जाई। हारहिं सकल सलभ समुदाई ॥
 बल कामादि निकट नहिं जाहीं। बसइ भगति जाके उर माहीं ॥
 गरल सुधासम अरि हित होई। तेहि मनि विनु सुख पाव न कोई ॥
 व्यापहिं मानस रोग न भारी। जिन्ह के बस सब जीव दुखारी ॥
 राम भगति मनि उर बस जाकें। दुख लवलेस न सपनेहुँ ताकें ॥
 चतुर सिरोमनि तेइ जग माहीं। जे मनि लागि सुजतन कराहीं ॥
 सो मनि जदपि प्रगट जग अहई। राम कृपा विनु नहिं कोउ लहई ॥
 सुगम उपाय पाइवे केरे। नर हतभाग्य देहिं भटभेरे ॥
 पावन पर्वत वेद पुराना। राम कथा रुचिराकर नाना ॥
 मर्मी सज्जन सुमति कुदारी। ग्यान विराग नयन उरगारी ॥
 भाव सहित खोजइ जो प्रानी। पाव भगति मनि सब सुख खानी ॥
 मोरें मन प्रभु अस बिखासा। राम ते अधिक राम कर दासा ॥
 राम सिंधु घन सज्जन धीरा। चंदन तरु हरि संत समीरा ॥
 सब कर फल हरि भगति सुहाई। सो विनु संत न काहुँ पाई ॥
 अस विचारि जोइ कर सतसंगा। राम भगति तेहि सुलभ बिहंगा ॥
 दो०—ब्रह्म पयोनिधि मंदर ग्यान संत सुर आहिं ।

कथा सुधा मथि काढ़हिं भगति मधुरता जाहि ॥ १२० (क) ॥

विरति चर्म असि ग्यान मद लोभ मोह रिपु मारि ।

जय पाइअ सो हरि भगति देखु खगेस विचारि ॥ १२० (ख) ॥

पुनि सप्रेम बोलेउ खगराऊ। जौं कृपाल मोहि ऊपर भाऊ ॥
 नाथ मोहि निज सेवक जानी। सप्त प्रस्न मम कहहु बखानी ॥
 प्रथमहिं कहहु नाथ मतिधीरा। सब ते दुर्लभ कवन सरीरा ॥

बड़ दुख कवन कवन मुख भारी । सोउ संछेपहिं कहहु विचारी ॥
 संत असंत मरम तुम्ह जानहु । तिन्ह कर सहज सुभाव बखानहु ॥
 कवन पुन्य श्रुति विदित विसाला । कहहु कवन अघ परम कराला ॥
 मानस रोग कहहु समुझाई । तुम्ह सर्वग्य कृपा अधिकाई ॥
 तात सुनहु सादर अति प्रीती । मैं संछेप कहउँ यह नीती ॥
 नर तन सम नहिं कवनिउ देही । जीव चराचर जाचत तेही ॥
 नरक स्वर्ग अपवर्ग निसेनी । ग्यान विराग भगति सुभ देनी ॥
 सो तनु धरि हरि भजहिं न जे नर । होहिं विषय रत मंद मंद तर ॥
 फाँच किरिच बदलें ते लेहों । कर ते डारि परस मनि देहों ॥
 नहिं दरिद्र सम दुख जग माहीं । संत मिलन सम सुख जग नाहीं ॥
 पर उपकार बचन मन काया । संत सहज सुभाउ खगराया ॥
 संत सहहिं दुख पर हित लागी । पर दुख हेतु असंत अभागी ॥
 भूर्ज तरु सम संत कृपाला । पर हित निति सह विपति विसाला ॥
 सन इव खल पर बंधन करई । खाल कड़ाइ विपति सहि मरई ॥
 खल बिनु स्वारथ पर अपकारी । अहि मूपक इव सुनु उरगारी ॥
 पर संपदा विनासि नसाहीं । जिमिससि हति हिम उपल विलाहीं ॥
 दुष्ट उदय जग आरति हेतु । जथा प्रसिद्ध अधम ग्रह केतु ॥
 संत उदय संतत सुखकारी । बिस्व सुखद जिमि इंदु तमारी ॥
 परमधर्म श्रुति विदित अहिंसा । पर निंदा सम अघ न गरीसा ॥
 हर गुर निंदक दादुर होई । जन्म सहस्र पाव दन सोई ॥
 द्विज निंदक बहु नरक भोग करि । जग जनमइ बायस सरीर धरि ॥
 सुर श्रुति निंदक जे अभिमानी । रौख नरक परहिं ते प्राणी ॥

होहिं उलूक संत निंदा रत । मोह निसा प्रिय ग्यान भानु गता ।
 सब कै निंदा जे जड़ करहीं । ते चमगादुर होइ अवतरहीं ॥
 सुनहु तात अब मानस रोगा । जिन्ह ते दुख पावहिं सब लोगा ॥
 मोह सकल व्याधिन्ह कर मूला । तिन्ह ते पुनि उपजहिं बहु छला ॥
 काम वात कफ लोभ अपारा । क्रोध पित्त नित छाती जारा ॥
 प्रीति करहिं जौं तीनिउ भाई । उपजइ सन्यपात दुखदाई ॥
 विषय मनोरथ दुर्गम नाना । ते सब छल नाम को जाना ॥
 ममता दादु कंडु इरपाई । हरष विपाद गरह बहुताई ॥
 पर सुख देखि जरनि सोइ छई । कुष्ट दुष्टता मन कुटिलई ॥
 अहंकार अति दुखद डमरुआ । दंभ कपट मद मान नेहरुआ ॥
 तृस्ना उदरवृद्धि अति भारी । त्रिविधि ईपना तरुन तिजारी ॥
 जुग विधि ज्वर मत्सर अविवेका । कहँ लगि कहौं कुरोग अनेका ॥
 दो०—एक व्याधि बस नर मरहिं ए असाधि बहु व्याधि ।

पीड़हिं संतत जीव कहँ सो किमि लहै समाधि ॥ १२१ (क) ॥

नेम धर्म आचार तप ग्यान जग्य जप दान ।

भेषज पुनि कोटिन्ह नहिं रोग जाहिं हरिजान ॥ १२१ (ख) ॥

एहि विधि सकल जीव जग रोगी । सोक हरष भय प्रीति बियोगी ॥
 मानस रोग कलुक मैं गाए । हहिं सबकें लखि विरलेन्ह पाए ॥
 जाने ते छीजहिं कलु पापी । नास न पावहिं जन परितापी ॥
 विषय कुपथ्य पाइ अंकुरे । मुनिहु हृदय का नर बापुरे ॥
 राम कृपाँ नासहिं सब रोगा । जौं एहि भाँति वनै संयोगा ॥
 सद्गुर वैद वचन विस्वासा । संजम यह न विषय कै आसा ॥

रघुपति भगति सजीवन मूरी । अनूपान थद्दा मति पूरी ॥
 एहि विधि भलेहि सो रोग नसाहीं । नाहिं तजतन कोटि नहिं जाहीं ॥
 जानिअ तव मन विरुज गोसाँई । जब उर बल विराग अधिकाई ॥
 सुमति छुधा वाढ़इ नित नई । विषय आस दुर्वलता गई ॥
 विमल ग्यान जल जब सो नहाई । तव रह राम भगति उर छाई ॥
 सिय अज मुक सनकादिक नारद । जे मुनि ब्रह्म विचार विसारद ॥
 सब कर मत खगनायक एहा । करिअ राम पद पंकज नेहा ॥
 श्रुति पुरान सब ग्रंथ कहाहीं । रघुपति भगति विना मुख नाहीं ॥
 कमठ पीठ जामहिं बरु वारा । बंध्या मुन बरु काहुहि मारा ॥
 फूलहिं नभ बरु बहुविधि फूला । जीवन लह मुख हरि प्रतिकूला ॥
 वृषा जाइ बरु मृगजल पाना । बरु जामहिं सस सीस विपाना ॥
 अंधकारु बरु रविहि नसावै । राम विमुख न जीव मुख पावै ॥
 हिम ते अनल प्रगट बरु होई । विमुख राम मुख पाव न कोई ॥

दो०—चारि मधे घृत होइ बरु सिकता ते बरु तेल ।

विनु हरि भजन न भव तरिअ यह सिद्धांत अपेल ॥ १२२(क) ॥

मसकहि करइ बिरंवि प्रभु अजहि मसकते हीन ।

अस विचारि तजि संसय रामहि भजहि प्रवीन ॥ १२२(ख) ॥

श्लोक—विनिश्चितं वदामि ते न अन्यथा वचांसि मे ।

हरि नरा भजन्ति येऽतिदुस्तरं तरन्ति ते ॥ १२२(ग) ॥

कहेउँ नाथ हरि चरित अनूपा । व्यास समास स्वमति अनुरूपा ॥

श्रुति सिद्धांत इहइ उरगारी । राम भजिअ सब काज विसारी ॥

प्रभु रघुपति तजि सेइअ काही । मोहि से सठ पर ममता जाही ॥

* रामचरितमानस *

—मुनि दुर्लभ हरि भगति नर पावहिं बिनहिं प्रयास ।
जे यह कथा निरंतर सुनहिं नानि विस्वास ॥ १२६ ॥

इ सर्वग्य गुनी सोइ ग्याता । सोइ महि मंडित पंडित दाता ॥
म परायन सोइ कुल त्राता । राम चरन जा कर मन राता ॥
ति निपुन सोइ परम सयाना । श्रुति सिद्धांत नीक तेहिं जाना ॥
सोइ कवि कोविद सोइ रनधीरा । जो छल छाडि भजइ रघुबीरा ॥
धन्य देस सो जहँ सुरसरी । धन्य नारि पतिव्रत अनुसरी ॥
धन्य सो भूपु नीति जो करई । धन्य सो द्विज निज धर्म न टरई ॥
सो धन धन्य प्रथम गति जाकी । धन्य पुन्य रत मति सोइ पाकी ॥
धन्य घरी सोइ जब सतसंगा । धन्य जन्म द्विज भगति अभंगा ॥

दो०—सो कुल धन्य उमा सुनु जगत पूज्य सुपुनीत ।
श्रीरघुबीर परायन जेहि नर उपज बिनित ॥ १२७ ॥

मति अनुरूप कथा मैं भाषी । जद्यपि प्रथम गुप्त करि राखी ॥
तव मन प्रीति देखि अधिकारई । तव मैं रघुपति कथा सुनाई ॥
यह न कहिअ सठही हठसीलहि । जो मन लाइ न सुन हरि लीलहि ।
कहिअ न लोभिहि क्रोधिहि कामिहि । जो न भजइ सचराचर स्वामिहि ॥
द्विज द्रोहिहि न सुनाइअ कबहूँ । सुरपति सरिस होइ नृप जबहूँ ॥
राम कथा के तेइ अधिकारी । जिन्ह कें सत संगति अति प्यारी ॥
गुर पद प्रीति नीति रत जेई । द्विज सेवक अधिकारी तेई ।
ता कहँ यह विसेष सुखदाई । जाहि प्राण प्रिय श्रीरघुराई ॥

दो०—राम चरन रति जो चह अथवा पद निर्वाण ।
भाव सहित सो यह कथा करउ श्रवन पुट पान ॥ १२८ ॥

राम कथा गिरिजा में बरनी । कलिमल समनि मनोमल हरनी ॥
 संसृति रोग सजीवन मूरी । राम कथा गावहिं श्रुति खरी ॥
 एहि महै रुचिर सप्त सोपाना । रघुपति भगति केर पंथाना ॥
 अति हरि कृपा जाहि पर होई । पाउँ देख एहिं मारग सोई ॥
 मन कामना सिद्धि नर पावा । जे यह कथा कपट तजि गावा ॥
 कहहिं सुनहिं अनुमोदन करहीं । ते गोपद इव भवनिधि तरहीं ॥
 सुनिसव कथा हृदय अति भाई । गिरिजा बोली गिरा मुहाई ॥
 नाथ कृपाँ मम गत संदेहा । राम चरन उपजेउ नव नेहा ॥

दो०—मैं कृतकृत्य भइउँ अब तव प्रसाद विस्वैस ।

उपजी राम भगति दृढ़ चीति सकल कलेस ॥ १२९ ॥

यह सुभ संभु उमा संवादा । सुख संपादन समन विपादा ॥
 भव भंजन गंजन संदेहा । जन रंजन सजन प्रिय एहा ॥
 राम उपासक जे जग माहीं । एहि सम प्रिय तिन्ह कैं कलु नाहीं ॥
 रघुपति कृपाँ जथामति गावा । मैं यह पावन चरित मुहावा ॥
 एहिं कलिकाल न साधन दूजा । जोग जग्य जप तप व्रत पूजा ॥
 रामहि सुमिरिअ गाइअ रामहि । संतत सुनिअ राम गुन ग्रामहि ॥
 जासु पतित पावन बड़ वाना । गावहिं कवि श्रुति संत पुराना ॥
 ताहि भजहि मन तजि कुटिलाई । राम भजे गति केहिं नहिं पाई ॥

छं०—पाई न केहि गति पतित पावन राम भजि सुनु सठ मना ।

गनिका अजामिल व्याघ गीघ गजादि रसल तारे घना ॥

* रामचरितमानस *

जाभीर जमन किरात खस स्वपचादि अति अघरूप जे ।
कहि नाम वारक तेपि पावन होहि राम नमामि ते ॥ १ ॥

रघुवंस भूपन चरित यह नर कहहि सुनहि जे गावहीं ।
कलि मल मनोमल धोइ विनु श्रम राम घाम सिधावहीं ॥

सत पंच चौपाई मनोहर जानि जो नर उर धरै ।
दारुन अविद्या पंच जनित विकार श्री रघुवर हरै ॥ २ ॥

सुंदर सुजान कृपा निधान अनाथ पर कर प्रीति जो ।
सो एक राम अकाम हित निर्वाणप्रद सम आन को ॥

जाकी कृपा लवलेस ते मतिमंद तुलसीदासहूँ ।
पायो परम विश्रामु राम समान प्रभु नाही कहूँ ॥ ३ ॥

दो०—मो सम दीन न दीन हित तुम्ह समान रघुवीर ।
अस विचारि रघुवंस मनि हरहु विपम भव भीर ॥ १ ३ ० (क) ॥

कामिहि नारि पिआरि जिमि लोभिहि प्रिय जिमि दाम ।
तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिय लागहु मोहि राम ॥ १ ३ ० (ख) ॥

श्लोक—यत्पूर्वं प्रभुणा कृतं सुकविना श्रीशम्भुना दुर्गमं
श्रीमद्रामपदाब्जभक्तिमनिशं प्राप्त्यै तु रामायणम् ।

मत्वा तद्रघुनाथनामनिरतं स्वान्तस्तमःशान्तये
भापावद्धमिदं चकार तुलसीदासस्तथा मानसम् ॥ १ ॥

पुण्यं पापहरं सदा शिवकरं विज्ञानभक्तिप्रदं
मायामोहमलापहं सुविमलं प्रेमान्बुधं शुभम् ।

६
* रामचरितमानस *

आभीर जमन किरात खस स्वपचादि अति अधरूप जे ।
कहि नाम बारक तेपि पावन होहि राम नमामि ते ॥ १ ॥

रघुवंस भूपन चरित यह नर कहहि सुनहि जे गावहीं ।
कलि मल मनोमल घोड़ विनु श्रम राम घाम सिधावहीं ॥
सत पंच चौपाई मनोहर जानि जो नर उर धरै ।
दारुन अविद्या पंच जनित विकार श्री रघुवर हरै ॥ २ ॥

सुंदर सुजान कृपा निधान अनाथ पर कर प्रीति जो ।
सो एक राम अकाम हित निर्वाणप्रद सम आन को ॥
जाकी कृपा लवलेस ते मतिमंद तुलसीदासहूँ ।
पायो परम विश्रामु राम समान प्रभु नहीं कहूँ ॥ ३ ॥

श्लोक—मो सम दीन न दीन हित तुम्ह समान रघुवीर ।
अस विचारि रघुवंस मनि हरहु विपम भव भीर ॥ १३० (क) ॥
कामिहि नारि पिआरि जिमिलोभिहि प्रिय जिमि दाम ।
तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिय लागहु मोहि राम ॥ १३० (ख) ॥

श्लोक—यत्पूर्व प्रमुणा कृतं सुकविना श्रीशम्भुना दुर्गमं
श्रीमद्रामपदाब्जभक्तिमनिशं प्राप्त्यै तु रामायणम् ।
मत्वा तद्रघुनाथनामनिरतं स्वान्तस्तमःशान्तये
भापावद्धमिदं चकार तुलसीदासस्तथा मानसम् ॥
पुण्यं पापहरं सदा शिवकरं विज्ञानभक्तिप्रदं

